यह पुस्तक

डाक्टर सुशीला नैयर महात्मा गांधी के साथ कई वर्षों से बराबर रहा करती थीं। जब महात्माजी आगाखां महल में १९४२ से नजरबन्द किये गए, तबसे वह वहां बराबर रहीं। भारत के इतिहास में उन दिनों का बहुत बड़ा स्थान और महत्व है। किस तरह से वहां पर दिन बिताये गए, किस तरह श्री महादेवभाई देसाई और पूज्य बा का देहावसान हुआ और किस तरह जो घटनाएं हो रही थीं उनकी प्रतिक्रिया पूज्य बापू पर हो रही थी, यह सब-कुछ बहुत विस्तारपूर्वक और सुन्दर तरीके से डाक्टर सुशीला ने इन पृष्ठों में लिखा है। यह महात्माजी से संबंध रखनेवाली उन पुस्तकों में से होगी, जो मौलिक सामग्री दे सकेगी। इससे पाठक लाभ उठावेंगे और प्रेरणा पावेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

—राजेन्द्र प्रसाद

सस्ता-साहित्य-प्रकाशन

बापू की कारावास-कहानी

आगाखां-महल में इक्कीस मास की रोचक,
मार्मिक तथा शिक्षाप्रद डायरी

सुशीला नैयर

भूमिका-लेखक
राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९६०
पुस्तकालय संस्करण
मूल्य
साढ़े सात रुपये

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

उन दो पुण्यात्माओं को

जिनका

कारावास में अंतिम बलिदान

अहिंसा के सैनिकों के लिए सदैव को

दीप-स्तंभ बन गया

प्रकाशकीय

डा० सुशीला नैयर को वर्षों बापू के साथ रहने और उनका स्नेह एवं विश्वास पाने का दुर्लभ अवसर मिला था। आग़ाख़ाँ महल के बन्दी-काल में भी वह बापू के साथ थीं। महादेवभाई के देहावसान के बाद बापू ने उनसे कहकर प्रतिदिन की छोटी-बड़ी घटनाओं की डायरी रखवाई। कारावास के उन इक्कीस महीनों की कहानी भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग है और हम बापू के आभारी हैं कि उन्होंने उन पौने दो वर्षों की अनेक शिक्षाप्रद और हृदय-ग्राही घटनाओं को विस्मृति के गर्त्त में विलीन होने से बचा दिया। पुस्तक के अधिकांश भाग को स्वयं देखकर उसमें संशोधन करके उसकी प्रामाणिकता पर उन्होंने अपनी मोहर भी लगा दी।

अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने इस पुस्तक की भूमिका लिख देने की कृपा की, तदर्थ हम उनके आभारी हैं। बापू ने लेखिका को वचन दिया था कि वह स्वयं भूमिका लिख देंगे, लेकिन ईश्वर को वह मंजूर न था।

पुस्तक को 'मण्डल' द्वारा प्रकाशित कराने का श्रेय भाई श्यामलालजी (कस्तूरबा ट्रस्ट, वर्धा) को है। अतः हम उनका तथा पुस्तक को आद्योपांत ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें आवश्यक परिवर्तन-परिवर्द्धन कराने के लिए श्री प्यारेलालभाई का विशेष रूप से आभार स्वीकार करते हैं। डायरी की प्रतिलिपि करने और सम्पादन में योग देने के लिए हम अपने स्नेही मित्र श्री काशिनाथ द्विवेदी तथा श्री भास्कर नाथ मिश्र को भी धन्यवाद देते हैं।

पुस्तक का कलेवर इतना बढ़िया होते हुए भी उसका रूप इतना न चमक पाता, यदि इसमें सर्वश्री धीरेन गांधी, कनु गांधी, ललितगोपाल प्रभृति बन्धुओं और बंबई के 'सेंट्रल फोटोग्राफ़्स' व 'इंटरनेशनल बुक हाउस' तथा लंदन की 'दी एसोशियेटेड प्रेस ऑव ग्रेट ब्रिटेन लिमि०' के सौजन्य से प्राप्त प्रसंगोचित चित्र न दिये गए होते। इस कृपा के लिए हम इन सबके अनुगृहीत हैं।

दूसरा संस्करण

हमें हर्ष है कि पुस्तक का दूसरा संस्करण पाठकों को सुलभ हो रहा है। पहला संस्करण काफी दिन पहले समाप्त होगया था।

पुस्तक की सामग्री को ज्यों-का-त्यों रक्खा है, उसकी छपाई पहले से अधिक अच्छी कराई गई है, फिर भी मूल्य में पर्याप्त कमी कर दी गई है।

हमें विश्वास है कि इस लोकोपयोगी पुस्तक का व्यापक प्रसार होगा।

—मंत्री

भूमिका

डाक्टर सुशीला नैयर महात्मा गांधी के साथ कई वर्षों से बराबर रहा करती थीं। जब महात्माजी आगाखां महल में १९४२ से नज़रबन्द किये गए, तबसे वहां बराबर रहीं। भारत के इतिहास में उन दिनों का बहुत बड़ा स्थान और महत्त्व है। किस तरह से वहांपर दिन बिताये गए, किस तरह महादेवभाई देसाई और पूज्य बा का देहावसान हुआ और किस तरह जो घटनाएं हो रही थीं उनकी प्रतिक्रिया पूज्य बापू पर हो रही थी, यह सबकुछ बहुत विस्तारपूर्वक और सुन्दर तरीके से डाक्टर सुशीला ने इन पृष्ठों में लिखा है।

यह महात्माजी से सम्बन्ध रखनेवाली उन पुस्तकों में से होगी जो मौलिक सामग्री दे सकेगी। इससे पाठक लाभ उठावेंगे और प्रेरणा पावेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

— राजेन्द्र प्रसाद

प्रस्तावना

यह डायरी मुझसे बापू ने लिखाई थी। १५ अगस्त की रात को महादेवभाई की मृत्यु के बाद एक मेज के खाने में से चंद कागज के पुर्जे मिले। उनपर महादेव-भाई ने ६ अगस्त से लेकर रोज दिन की मुख्य घटनाएं अपनी याद ताजी करने के लिए दो-दो, चार-चार लाइनों में लिखी थीं। उसी कागज पर १४ तारीख के नीचे मैंने १५ अगस्त की, महादेवभाई के महाप्रयाण की घटना के बारे में मुख्य बातें नोट कर डालीं।

महादेवभाई के एकाएक चल देने के बाद सारी रात आंखों में कटी। पिछले चार साल की अनेक घटनाओं का विचार करती रही। पास में बापू की खाट थी। वह भी रातभर सो नहीं सके। १६ की सुबह की प्रार्थना के समय उन्होंने मुझसे कहा, "महादेव का जितना बोझ उठा सकती है, उठा ले। आज से तुझे नियमित डायरी रखना होगा। याद रख, एक दिन ये डायरियां छपनेवाली हैं।"

नियमित डायरियां रखने का मैंने प्रयत्न किया। जो भी लिखती थी वह बापू पढ़ जाते थे। जो सुधारने-जैसा लगता सुधार डालते थे। कई बार मुझे बापू का इतना समय लेना खटकता था। मगर उनकी उदारता और प्रेम का पार न था। मुझे सम-झाते, "मैं तुझे इतनी मेहनत से सिखा रहा हूं सो अन्य कारण से नहीं। मैं चाहता हूं कि तू तैयार हो जाय और मेरा और प्यारेलाल का बोझ हलका कर सके।" उन्होंने मेरे लिए अंग्रेजी मुहावरों की मेकमार्डी की किताब मंगाई, नेसफील्ड की ग्रामर, संस्कृत की डिक्शनरी और भंडारकर की पहली और दूसरी किताब और सिखाना शुरू किया। किसी पूर्वजन्म के पुण्य के कारण उस महापुरुष के चरणों की धूलि सिर चढ़ाने का अपूर्व अवसर मिला था। बापू के पास मैं आई तो उनके आसपास के लोगों में सबसे छोटी थी। अपने घर में भी सब भाई-बहनों से छोटी होने के कारण लाड़ में पली थी। बापू ने भी बहुत लाड़ लड़ाया। मेरी लड़कपन की सीधी-सादी बातों का प्यार से जवाब देते। दलील करने में प्रोत्साहन देते और जितना वजन महादेव-

भाई की बात को देते, उतना ही मेरी बात को भी। कई बातें बापू से कहते-पूछते महादेवभाई या भाई को स्वयं संकोच होता तो मुझसे पुछवाते। परिणाम यह कि बापू के जीवनकाल में मैं समझ न पाई कि बापू जैसे महान् आत्मा का मुझ-सी तुच्छ व्यक्ति पर इतना-इतना प्रेम करना और मेहनत लेना उनकी कितनी बड़ी उदारता थी। वह मेरे थे। मैंने पिता की तरह उन्हें माना, उनसे सीखने का, उनकी सेवा करने का प्रयत्न किया, उनसे फ़िज़ूल दलीलें भी कीं, उनका व्यर्थ समय लिया, उन्हें व्यर्थ कष्ट दिया। एक दिन बापू नहीं होंगे, यह कभी खयाल ही नहीं आया। मगर बापू जानते थे, वह हमेशा नहीं रहनेवाले। सो वह मुझे सिखाने का प्रयत्न कर रहे थे कि अब मैं बड़ी होगई हूं। कई बार किसी छोटी-मोटी घटना से मैं उद्विग्न हो जाती तो बापू कहते, "तेरी डाक्टरी की डिगरी छीन लेनी चाहिए। डाक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए।"

दिल्ली में आखिरी दिनों में सुबह प्रार्थना के बाद वह अक्सर हम लोगों से चिट्ठियों का जवाब लिखवाते या लिखने को कहते। एक दिन मुझे कुछ पत्र दिये। एक पत्र था बापू के पुराने साथी के पुत्र का। उन्होंने पूछा था कि अब हिन्द आजाद हो गया है। अब खादी पहनने की जगह बिलायत से लाये कपड़े पहनने में क्या हर्ज, इत्यादि। वे बिलायत से कुछ कपड़े लाये थे। नये खादी के कपड़े खरीदने की जगह बिलायत से लाये कपड़े पहनें तो कपड़े की बचत होगी। देश में कपड़े की कमी है, वगैरा-वगैरा। बापू कहने लगे, "इसे लिखो कि मुझसे पूछ-पूछकर कबतक चलोगे? मैं तो कभी नहीं कहनेवाला कि खादी छोड़ो। सच्ची आजादी तो आई भी नहीं। मगर आजादी आ जाने पर खादी को छोड़ना, जिस सीढ़ी से ऊपर चढ़े, उसे फेंक देने जैसा होगा। मगर मैं कहूं, वह मेरा धर्म है, तुम्हारा नहीं। अपना पिता कहे''वह धर्म पुत्र भी स्वीकार करे, यह आवश्यक नहीं है। अपने आपको सूझे, वही व्यक्ति का धर्म है। हां, अपवाद एक है, गुरु। अगर गुरु कहे तो वह धर्म-पालन आवश्यक है।" मैंने कहा, "बापू, आप तो सबके लिए गुरु के स्थान पर हैं न, इसीलिए सब आपको पूछते हैं।" बापू बोले, "ऐसा हो तो गुरु के साथ दलील नहीं करनी पड़ती। उसका कहना अपने आप हृदय में उतर जाता है।"

इतना कहकर बापू लेट गये। साढ़े तीन बजे उठकर प्रार्थना के बाद कुछ समय काम करके वे आधा-पौना घंटा फिर आराम लिया करते थे। मैंने उन्हें कम्बल ओढ़ाया और पीठ और पांव दबाने लगी। उनकी आंखें बन्द थीं। सिर पर सफ़ेद

खादी का रूमाल ओढ़े थे। मैं समझी सो गये हैं, मगर उनके मन में वही विचार-धारा चल रही थी। क्षण भर बाद धीमेसे बोले :

"तने एकलव्य नी वार्ता याद छे (तुझे एकलव्य की कथा याद है ?)" इस वाक्य में बापू हम सबको जीवन भर का सन्देश दे गये।

मगर डायरी की बात में यह दूसरी ही बात चल पड़ी। जेल से छूटने पर परिस्थिति ऐसी न थी कि जेल की डायरियां छपतीं। मगर १५ अगस्त, १९४७ को परिस्थिति पलट गई। कुछ मित्रों ने डायरियां देखी थीं। उनका आग्रह था उन्हें अब छपाना चाहिए। सस्ता साहित्य मंडल के श्री मार्तण्ड उपाध्याय और हरि-भाऊजी का खास आग्रह था। मैंने बापू से पूछा। उन्होंने 'हां' कहा। मैंने कहा, "मगर आपको प्रस्तावना लिखनी होगी।" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है। मगर जल्दी तो नहीं है न ?" मैंने कहा, "नहीं। दिसम्बर के अन्त तक लिख दें तो बस होगा।"

१३ जनवरी को मैं हवाई जहाज से अमरीका जानेवाली थी। उसी दिन बापू का दिल्लीवाला उपवास शुरू हुआ। मेरा हृदय प्रभु के प्रति कृतज्ञता से भरा था कि मेरा जाना लम्बाया और मुझे रास्ते में से भागते-भागते लौटना नहीं पड़ा। जाना लम्बाने के साथ दूसरा परिणाम यह निकला कि डायरियों का काम और लम्बा गया। बापू प्रस्तावना भी न पढ़ पाये। मुझे पूरी पांडुलिपि को फिर पढ़ जाना था, वह भी न हो सका।

३० जनवरी को वज्रपात हुआ। दुनिया कांप उठी। हम सब बिना खेवट की नौका के यात्री हो गये। जिस काम में जिसे बापू लगा गये थे, उसीमें उसने अपने दुःख को और अपने-आपको भूलने का प्रयत्न किया। डायरियों की तरफ देखने का भी समय न मिला।

मार्च में एक दिन सरदार पटेल से मिलने गई। उन्हें पटियाले का अपने काम का समाचार देना था। मैं पहुंची ही थी कि उन्हें हृदय का दौरा हुआ। ईश्वर को उनसे अभी और काम लेना था। खतरे में से बचाने का उसने मुझे निमित्त बनाया और उनकी थोड़ी-सी सेवा करने का मौका दिया। दौरा कम होने पर सर-दार मुझसे कहने लगे, "मैं बापू के पास जा रहा था। वही शुक्रवार का दिन था। वही समय होनेवाला था। तूने मुझे क्यों रोक लिया।" मैंने कहा, "जी नहीं, मैं रोकनेवाली कौन ! बापू ने ही आपके सामने दरवाजा बन्द कर दिया है।"

सरदार ने बापू की मृत्यु पर आंसू नहीं बहाये थे। अपना दुःख पी गये थे। आखिर वह फूट निकला। सरदार की सेवा में रहने के कारण डायरियों का काम फिर लम्बाया। आखिर २५ जून को मैंने हिन्दुस्तान छोड़ा। कुछ काम रास्ते में किया, कुछ यहां आकर और डायरियां पढ़कर डिप्लोमैटिक बैग में हिन्दुस्तान भेजीं।

डायरियां बापू स्वयं पढ़ गये थे। मगर वह होते तो शायद कई विचार और अधिक स्पष्ट करते। पूंजीवाद और समाजवाद के बारे में उनके विचार खास महत्त्व रखते हैं। वह पूंजीवाद के शत्रु थे, पूंजीवादियों के नहीं। पूंजीपतियों के अनुभव का, ज्ञान का वह उपयोग करना चाहते थे। मगर उनका कहना था कि पूंजीपति अपने-आप ट्रस्टी बन जावें और अपने ज्ञान और अनुभव का उपयोग अपने लिए या अपने कुटुम्ब के लिए नहीं, देश के लिए करें। जो लोग ट्रस्टीशिप को अच्छा न समझते हों या उनको इसकी सफलता के बारे में कुछ शंका हो उन्हें हिन्दुस्तान की रियासतों का उदाहरण देखना चाहिए। एक जमाना था कि राजकोट जैसी छोटी-सी रियासत में लोकसत्ता कायम करने के लिए बापू को उपवास करना पड़ा था। मगर आज पांचसौ रियासतों के लोग अपने देश की खातिर अपनी सत्ता प्रजा के हाथों में दे चुके हैं। बापू का कहना था कि जब जनता एक चीज चाहती है, जनता में जाग्रति आ जाती है और वह दृढ़ता तथा शान्ति से अपनी मांग पेश करती है, तब सत्ताधारी राजा हो या पूंजीपति, विदेशी सरकार हो या देशी सरकार, उसे वह पूरी करनी ही पड़ती है। जो कानून प्रजा की मांग से बनते हैं उनका बोझ प्रजा पर नहीं पड़ता। जब कानून ऊपर से बनाये जाते हैं तब उनका बोझ प्रजा को कुचल सकता है। मगर प्रजा की मांग सच्ची होनी चाहिए। प्रजा को अपना धर्म समझना और उसका पालन करना चाहिए। वह मानते थे, अपना धर्म पालन करनेवालों को ही हक मांगने का अधिकार है।

बापू की कल्पना के आदर्श सत्ताधीश कैसे होने चाहिए, यह विषय भी अत्यन्त रोचक है। बापू की कल्पना में सत्ताधीश लगभग पूर्ण पुरुष होना चाहिए। उसे सर्वथा निःस्वार्थ, सत्यमय, अहिंसामय, सतत जाग्रत, संयमी, अपरिग्रही, आत्मत्यागी, सांसारिक लोभ और सत्ता-मोह से मुक्त, विनम्र और प्रजा का मुख्य चाकर बनकर रहनेवाला होना चाहिए। ऐसे सत्ताधीश को सत्ता खोजनी नहीं पड़ती, सत्ता अपने-आप उसे खोज लेती है।

दिल्ली में आखिरी दिनों में एक दिन सुबह घूमते समय बापू से मैंने पूछा,

"बापू, आपने कहा है, आप दरअसल समाज-सुधारक हैं। विदेशी राज में आप अपना काम नहीं कर सकते थे, इसलिए आपको राजनीति में पड़ना पड़ा। अब विदेशी राज चला गया है। क्या अब आप अपना समय रचनात्मक कार्य में लगावेंगे ? समाजसुधार में अपनी सारी शक्ति खर्च करेंगे ?" उन्होंने उत्तर दिया, "अगर मैं इस अग्नि-परीक्षा में से निकला तो मुझे पहले राजनीति को सुधारना होगा।" राजनीति सत्य और अहिंसा के आधार पर चल सकती है। धर्म से वह अलग या भिन्न नहीं, यह बापू की सबसे बड़ी शोध रही।

अगर जीवन का आधार सत्य और अहिंसा बनाना है तो बचपन से ही बच्चे की तालीम उसी तरह की होनी चाहिए। सो उन्होंने नई तालीम हमारे आगे रखी। जनसाधारण को आजाद होना है, लूट से, शोषण से बचाना है तो विकेन्द्रीकरण का सिद्धान्त स्वीकार करना होगा। छोटे-छोटे उद्योग-धन्धों को बढ़ाना होगा। बड़ी-बड़ी फैक्टरियां बनाने से सत्ता थोड़े लोगों के हाथों में चली जाती है, वे सत्ताधारी भले ही पूंजीपति हों या सरकार। बापू को वह स्वीकार न था। सो उन्होंने हमारे सामने ग्राम्य जीवन, ग्राम्य उद्योग का आदर्श रखा, चर्खा रखा, सारा-का-सारा रचनात्मक कार्यक्रम रखा। अमरीका जैसे देश में, जहां लोग फैक्टरियों के पुजारी रहे हैं, विशाल उत्पादन पर चलते आये हैं आखिर इस रास्ते के दोष देखने लगे हैं। रेडियो पर और दूसरे साधनों द्वारा फिर से देहात बसाने की बातें कर रहे हैं। एटम बम ने उनकी आंखें खोल दी हैं।

मुझे टेन्नेसी वैली अथॉरिटी प्रोजेक्ट (टी० वी० ए०) वालों ने उसकी नई तालीम (प्रोग्रेसिव एजूकेशन) की फिल्म बड़े उत्साह और गर्व से दिखाई। मैंने देखा कि बापू की बताई नई तालीम में इससे बहुत ज्यादा मसाला है। मगर अपने धन की कीमत समझेंगे, या न समझकर पश्चिम के रास्ते बह जायंगे, सो कौन कह सकता है ? एक छोटी-सी मिसाल लीजिये। हमारे देश में करीब-करीब सब माताएं अपने बच्चों को दूध पिलाती हैं। यहां पर वह छोड़ दिया गया था, अब उसके दुष्परिणाम देखकर फिर मां के दूध को वापिस लाने की भारी कोशिश हो रही है। यहां पर सब बच्चों को अस्पताल में मां से अलग नर्सरी में रखा जाता था, अब मां और बच्चे को साथ रखने का प्रयत्न हो रहा है। हम अपने अस्पतालों में आज भी बच्चे को मां से अलग रखने के प्रयत्न में हैं। जिन चीजों को पश्चिम हानिकारक समझ कर छोड़ रहा है, उन्हें हम ग्रहण करने की कोशिश में हैं। बापू

हमारे कान पकड़कर आज रोक नहीं सकते। क्या हम उनके बताये मार्ग को भूल जायंगे? क्या हम पश्चिमी धारा में बह जायंगे, या पश्चिम को और जगत् को रास्ता बतानेवाले बनेंगे? जगत् हमारी तरफ देख रहा है और उसका कारण बापू हैं। बापू आज बुद्ध और ईसा की कोटि में गिने जाते हैं।

बापू की तपश्चर्या हमारी मार्गदर्शक बने। ईश्वर हमें उस महापुरुष के देशवासी होने के लायक बनावे! उनके बताये मार्ग पर चलने की शक्ति दे, यही प्रार्थना है!

बाल्टीमोर, मेरीलैण्ड,
अमरीका

—सुशीला नैयर

विषय-सूची

१. प्रारम्भिक १७
२. 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव २१
३. गिरफ्तारियां २४
४. आर्थर रोड जेल ३१
५. अनोखे अनुभव ३४
६. आगाखां महल में ३६
७. महादेवभाई के साथ चार दिन ४१
८. महादेवभाई का अवसान ५७
९. अग्नि-संस्कार ६४
१०. विषाद की छाया ७६
११. समाधि-यात्रा ८१
१२. पुण्यस्मरण ८५
१३. महादेवभाई के बाद ९१
१४. बा अस्वस्थ ९६
१५. भाई आ पहुंचे १००
१६. अहिंसा की कसौटी १०६
१७. घूमते-फिरते सामान्य शिक्षण १२०
१८. जेल में बापू का पहला जन्म-दिन १२७
१९. ईद का त्यौहार १३८
२०. सत्याग्रह में आत्महत्या? १४१
२१. बा की पहली सख्त बीमारी १४५
२२. सच्ची वैज्ञानिक के प्रति भावना १४८
२३. मीराबहन की सालगिरह १५२
२४. एक और उत्सव १५७
२५. सतयुग की कल्पना १६५
२६. भंसालीभाई का उपवास १६८
२७. ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त १७७
२८. गोलमेज परिषद् के कुछ संस्मरण १८३
२९. चरखा और ग्रामोद्योग १८७
३०. भावी समाज-रचना का आधार १९७
३१. सत्ता और अहिंसा २०६
३२. विविध चर्चाएं २१२
३३. झूठे आरोप २१८
३४. उपवास के बादल २२५
३५. निश्चय और तैयारी २३५
३६. वाइसराय को पत्र २४४
३७. जेल में पहला स्वतन्त्रता-दिवस २५६
३८. उपवास के निश्चय से चिंता २५८
३९. वाइसराय का उत्तर २६८
४०. उपवास : अग्निपरीक्षा २७०
४१. परिचारकों की बिदाई ३०६
४२. सरोजिनी नायडू की बीमारी और रिहाई ३१५

४३. अहिंसा का प्रयोजन ३१७
४४. गुप्त नीति का विरोध ३२१
४५. राष्ट्रीय सप्ताह ३२५
४६. सरकारी आरोप-पत्र और उसका उत्तर (१) ३२७
४७. मैक्सवेल को पत्र ३३४
४८. शैतान व ईश्वर ३३९
४९. सरकारी आरोप-पत्र और उसका उत्तर (२) ३५१
५०. मनोरंजक घटना ३५८
५१. सरकारी आरोपपत्र और उसका उत्तर (३) ३५९
५२. जेलखाना नहीं, सुधार-गृह ३७०
५३. 'हकूमत जाओ'-दिन की संवत्सरी ३७६
५४. महादेवभाई की बरसी ३७८
५५. अहिंसा का बाह्य चिह्न—चरखा ३८२
५६. हिंसा के बीच अहिंसा ३८६
५७. जेल में बापू का दूसरा जन्म-दिन ४०७
५८. सच्चा धर्म ४२२
५९. जेल में दूसरी दीवाली तथा अन्य उत्सव ४३०
६०. भाभी का आपरेशन और मृत्यु ४३५
६१. बा के बारे में चिन्ता ४४४
६२. अहिंसा में विचार-शुद्धि ४५८
६३. बा की निराशा ४६४
६४. हालत और बिगड़ी ४६९
६५. अन्तिम रात्रि ४७९
६६. बा चली गईं ४८८
६७. अंत्येष्टि-क्रिया ४९३
६८. वियोग-वेदना ४९८
६९. सत्याग्रह और सत्ता ५०४
७०. फिर अपने-अपने कर्त्तव्य पर ५०७
७१. मीराबहनकी आश्रम-योजना ५१५
७२. अंग्रेजों की नीति ५१९
७३. जेल में मन-बहलाव ५२२
७४. बा की स्मृति ५२३
७५. असंतोष और प्रगति ५२४
७६. बा के बारे में सरकार की सफाई ५२८
७७. बापू की जागरूकता ५३१
७८. जेल में दूसरा राष्ट्रीय सप्ताह ५३३
७९. बापू को मलेरिया ५४१
८०. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ५४६
८१. सरकार की चिन्ता ५५२
८२. रिहाई की खबर ५५६
८३. रिहाई ५५९

बापू

की

कारावास-कहानी



लेखिका बापू के साथ

: १ :

प्रारंभिक

मुझे बापूजी के प्रथम दर्शन सन् १९२० के बाद हुए थे। असहयोग-आंदोलन र हो चुका था और बापूजी दौरे पर गुजरात गये थे। मेरे पिताजी, मैं जब चंद ष्ने की थी, गुजर गये थे। बड़े भाई (प्यारेलालजी) एम० ए० में असहयोग करके ज़ी के पास साबरमती-आश्रम में चले गये थे। मैं उस समय बहुत छोटी थी और ी माताजी तथा दूसरे भाई के साथ गुजरात के एक देहात में रहती थी। मुझे द है कि एक दिन मैं रास्ते पर खेल रही थी कि वहां से कुछ लोगों को इकट्ठे जाते ा। उनमें हमारी माता समान बड़ी, चचेरी बहन थीं, गांव की एक विधवा, जिन्हें ब लोग 'फूफी' कहते थे। मैंने उनसे पूछा, "आप कहां जाती हैं?" वह कहने लगीं, महात्मा गांधी के दर्शन करने।" महात्मा गांधी का अर्थ उस समय मेरे लिए था रे बड़े भाई। मैं भी उनके साथ चलदी। वे लोग तांगे में जानेवाले थे, मगर तांगा नहीं मिला। सो मैं उनके साथ पांच मील पैदल चली। शायद कुछ समय के लिए किसीने गोद में उठा लिया था।

गुजरात पहुंचे तो भीड़ का पार न था। किसीने मुझे ऊंचा उठाकर बताया कि वह महात्मा गांधीजी हैं, मगर मैं उन्हें देख भी न पाई। उनके साथी एक जगह बैठे नाश्ता कर रहे थे। दूर से उनके दर्शन करके हम लोग वापस आ गये। मेरे भाई उनमें नहीं थे। न भाई मिले, न महात्मा गांधी के दर्शन हुए। इससे निराशा होती, इतनी समझ अभी नहीं आई थी। खुशी-खुशी शाम को लौटे। उसके कुछ महीने या सालभर बाद हम लोग अपने चाचा के पास रोहतक गये हुए थे, वहां महात्माजी आये। भाई भी उनके साथ थे। महात्माजी स्त्रियों की सभा में भाषण करेंगे, यह सुनकर मेरी माताजी वहां गईं। उन दिनों हमारे घर में पर्दा था। पुरुषों की सभा में स्त्रियां जायं, यह चाचाजी को पसन्द न था। मगर स्त्रियों की सभा में उन्होंने जाने दिया। मां की उंगली पकड़े, भीड़ को चीरते हुए हम महात्माजी के पास

पहुंचे । स्त्रियों की सभा में इतना शोर था कि महात्माजी भाषण नहीं कर सके थे। सो वह फंड इकट्ठा कर रहे थे। माताजी ने प्रणाम किया और कहा, "मैं प्यारेलाल की माता हूं । आपसे मिलना चाहती हूं ।" उन्होंने उन्हें लाहौर में मिलने को कहा।

कुछ दिन बाद हम लोग उनसे मिलने लाहौर गये । स्व० चौधरी रामभज दत्त की कोठी पर बापू का डेरा था। माताजी गई थीं बापूजी से अपना लड़का वापस मांगने; किन्तु माताजी ने आकर बताया कि उनके सामने जाकर मुंह से कुछ और ही निकल गया और वह बोलीं, "आप मेरे लड़के को अधिक-से-अधिक पांच साल तक भले अपने पास रखिये, पीछे मेरे पास भेज दीजिये । मेरे पति के देहांत के बाद यही मेरे घर का दीया है।"

बापूजी ने क्या उत्तर दिया सो मुझे पता नहीं । मुझे माताजी बाहर छोड़ गई थीं, इधर-उधर खेलकर थकने पर मैं चुपचाप बापूजी के कमरे में घुस गई । मेरे पांवों में जूते थे । भाई मुझे भगा देना चाहते थे मगर बापूजी ने रोका और जूते निकालकर आने की आज्ञा दी । आई तो उन्होंने अपनी गोद में बिठा लिया । वह मां से कह रहे थे कि तुम भी अपने लड़के के पास क्यों नहीं आ जातीं ? मां ने कहा, "घर-बार छोड़कर कैसे आ सकती हूं ?"

बापू ने हँसते-हँसते मगर करुण स्वर में उत्तर दिया, "मेरा भी घर था।" फिर मेरे सिर पर हाथ रखकर कहने लगे, "यह लड़की मुझे दे दो ।" मां बोलीं, "यह तो मुझसे न हो सकेगा ।" फिर बापू मेरे मिल के कपड़े की हँसी उड़ाने लगे। बोले, "देखो न, इस छोटी-सी लड़की को भी विदेशी कपड़ा पहनाया है ! क्या बात है ?" मां बचाव करने लगीं, "नहीं, स्वदेशी है।" उससे बापू को संतोष होनेवाला नहीं था । मैं यह संवाद सुन रही थी । उस समय खद्दर की मीमांसा मेरी समझ से बाहर थी, मगर न पहनने योग्य कपड़ा पहना है, यह समझकर मुझे अंदर-ही-अंदर बड़ी शरम-सी लग रही थी । मुझे उस समय यह स्वप्न में भी कल्पना न थी कि एक दिन बापू के निकटतम सम्पर्क में आने और सेवा करने का मुझे सौभाग्य मिलेगा।

जब मैं बारह साल की हुई तो मैट्रिक की पढ़ाई के लिए माताजी के साथ लाहौर चली आई । स्कूल में भर्ती हुए बिना मैट्रिक पास करके मैं कालेज में इंटर (साइन्स) में दाखिल हो गई । भाई ने कई बार चाहा कि मुझे अपने साथ साबरमती-आश्रम ले जायं; लेकिन माताजी राजी न होती थीं । उन्हें डर था कि लड़का तो गया, वह लड़की को भी अपने रास्ते लगाकर उसकी समझ उलटी कर देगा और अपनी तरह

बेघरबार को बना देगा। वह कहती थीं, "लड़का तो भिखारी हुआ, किन्तु लड़की भी भिखारिन बने, यह मुझसे सहन न होगा।"

किन्तु प्रारब्ध के आगे किसीकी नहीं चलती। १९२९ की गरमी की छुट्टियों में हम दिल्ली गये हुए थे। भाई वहां आये और फिर मुझे अपने साथ ले जाने की अपनी पुरानी बात चलाई। इस बार माताजी मान गईं। उस समय से लेकर मैं कभी-कभी गरमी की छुट्टियों में भाई के पास आश्रम में चली जाया करती थी।

लेडी हार्डिंग कालेज से डाक्टरी का इम्तहान पास करके मैं शिशु-पालन और प्रसूति-विषयक विशेष शिक्षा के लिए कलकत्ता चली गई। इत्तिफाक से बापूजी उस समय बंगाल के नजरबन्दियों को छुड़ाने के लिए कलकत्ते आये। श्री शरत बोस के यहां वुडबर्न स्ट्रीट पर उन्हें ठहराया गया था। वहां कांग्रेस महासमिति (ए. आई. सी. सी.) की बैठक भी थी। बापू को रक्तचाप बढ़ने की शिकायत तो रहती ही थी, ए. आई. सी. सी. की बैठक में उन्हें बहुत थकान लगी। उसी रोज वर्धा वापस जा रहे थे। सामान वगैरह स्टेशन पर जा चुका था। बापूजी बैठक से बाहर आये। गद्दी पर बैठे, फल के रस का गिलास हाथ में लिया, इतने में उन्हें चक्कर-सा आ गया। मैंने तुरन्त डा० विधान राय वगैरह को बुलाया। मैंने मां से सुना था कि लहू का दबाव बढ़ने पर भी मेरे पिताजी बाहर चले गये थे। रास्ते में उनकी नस फूट गई थी और वह चल बसे थे। सो मैं समझी कि बापूजी इतने थके हैं, जरूर लहू का दबाव बढ़ा होगा। उन्हें आज सफर नहीं करना चाहिए। डा० विधान राय ने देखा तो सचमुच लहू का दबाव बहुत बढ़ा था। सो उस दिन बापूजी का जाना रुक गया। कुछ दिनों बाद जाने का समय आया तब भी उन्हें अकेले सफर करने की इजाजत देने की उनकी हिम्मत न हुई। मैं वहां भाई और महादेवभाई से मिलने जाया करती थी। आखिर यह तय हुआ कि मैं उनके साथ देखभाल के लिए डाक्टर की हैसियत से जाऊं और डा० विधान को सूचित करती रहूं। चुनांचे मैं एक महीने की छुट्टी लेकर उनके साथ सेवाग्राम गई। वहां से बापू को जुहू ले जाना पड़ा। मेरी छुट्टी खतम होगई थी। और मांगी। पीछे वापस जाने की बात छोड़कर वहीं रह गई।

बापू राजकोट-सत्याग्रह के समय राजकोट जाते समय मुझे निजी डाक्टर की उपाधि देकर अपने साथ राजकोट लेगये। मैंने इसमें अपना परम सौभाग्य समझा। मगर साथ ही झेंप भी लगती थी—कॉलेज से अभी निकली एक लड़की और महात्मा गांधी की डाक्टर! अखबारवाले खबर पूछने आते तो मुझे उनसे बात करते नहीं

बनता था, मगर डा० विधान राय, डा० गिल्डर और डा० जीवराज मेहता अपनी उदारता और व्यवहार से मेरी झेंप दूर कर देते थे। बाद में विचार करते हुए बापूजी को लगा कि उनका डाक्टर तो केवल ईश्वर ही हो सकता है। डाक्टरी सेवा का वह उपयोग कर लेते थे; किन्तु अपना डाक्टर बनाकर ही किसीको अपने साथ रखना वह अपने जीवन-सिद्धांत के विरुद्ध मानते थे। उन्होंने कहा, "मेरा डाक्टर तो केवल भगवान ही है, तू तो मेरी लड़की है। लड़की के पास डाक्टरी ज्ञान है तो वह उसके द्वारा अपने बाप की सेवा भी करेगी, किन्तु मैं तेरे डाक्टरी ज्ञान का उपयोग गरीबों की सेवा के लिए ही करना चाहूंगा।" पर यह तो आध्यात्मिक बात थी। जहांतक बाह्य संबंध था, उसमें कुछ भी परिवर्तन न हुआ और जनता और जगत के लिए मैं उनकी निजी डाक्टर ही रही। इसका एक बड़ा विचित्र परिणाम आगे जाकर आया।

मैं एम० डी० की परीक्षा के लिए फिर दिल्ली चली गई। अपने पुराने लेडी हार्डिंग कालेज में काम ले लिया और साथ-साथ कुछ अनुसंधान का कार्य किया और एम० डी० की परीक्षा पूरी की। मई मास (१९४२) में यह काम पूरा हुआ, लेकिन मेरी नौकरी की मुद्दत तो अगस्त के मध्य में पूरी होती थी। मेरा इरादा था कि मैं बंबई में होनेवाली ए. आई. सी. सी. की बैठक पूरी होने के बाद सेवाग्राम जाऊंगी; किन्तु ४ या ६ अगस्त को अकस्मात एक मित्र के साथ, जो सरकारी नौकरी में थे, मेरी मुलाकात होगई। वह पूछने लगे, "क्या तुम ए. आई. सी. सी. की बैठक में जानेवाली हो?" मैंने कहा, "मैं तो बैठक पूरी होने के बाद सेवाग्राम जाऊंगी।" वह मुंह चढ़ाकर बोले, "तब वहां क्या होगा?" मुझे खटका लगा; किंतु बहुत पूछने पर भी उन्होंने और कुछ न बताया। बंबई की ए. आई. सी. सी. की बैठक में 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव आनेवाला था। अफवाह गरम थी कि परिणाम में बापू और कांग्रेस के सब बड़े-बड़े नेता तुरंत गिरफ्तार कर लिये जायंगे। मैं सीधी अपने प्रिंसिपल के पास आई और बोली, "आप मुझे अभी गरमी की लम्बी छुट्टी दे देंगी तो मुझे अच्छा लगेगा। कुछ गड़बड़ होने से पहले मैं बंबई पहुंच जाना चाहती हूं।"

मेडिकल कालेज में गरमी की छुट्टी बारी-बारी से मिलती है, कुछको शुरू में और कुछको आखीर में। उन्होंने सहानुभूति के साथ कहा, "हां, जरूर हो आओ।" फिर फौरन ही उन्होंने छुट्टी की अर्जी का फार्म मेरे पास भेज दिया और कहलवाया,

"आज ही दरख्वास्त लिखकर भेज दो।"

यह हुई ५ अगस्त की बात। ७ अगस्त को मैं दिल्ली से बम्बई को रवाना होगई।

: २ :

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव

बिड़ला-हाउस, बम्बई
८ अगस्त, १९४२

८ अगस्त की शाम के करीब ५॥ बजे जब बॉम्बे सेंट्रल पर गाड़ी से उतरी तो स्टेशन पर मुझे लिवाने के लिए कोई आया नहीं था। मैंने सोचा, बिड़ला-हाउस टेलीफोन करके किसीको बुलालूं। पब्लिक टेलीफोन का उपयोग करना मैं जानती नहीं थी, इसलिए पूछताछ दफ्तर के बाबू से पूछकर वहां के टेलीफोन का इस्तेमाल करने के लिए भीतर गई। नम्बर देख रही थी कि इतने में पुलिस और मिलिट्री के कोई दस-बारह अफसर टेलीफोन करने आये। मुझे उन सबके चेहरे तने हुए लगे। मन में आशंका हुई, कहीं गिरफ्तारियां शुरू तो नहीं होगईं!

टेलीफोन पर मुझे कोई जवाब नहीं मिला। मैं स्टेशन से बाहर आई। दो ही टैक्सी खड़ी थीं। टैक्सीवालों ने किराये पर तंग करना शुरू किया। आखिर एक शरीफ आदमी ने स्टेशन के बाहर जाकर मीटर के हिसाब से टैक्सी ला दी। मैंने उनसे पूछा, "बापू को पकड़ा तो नहीं है न?" उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, अभी तो शान्ति है।"

बिड़ला-हाउस पहुंची तो भाई (प्यारेलालजी), बापू, महादेवभाई, सब कांग्रेस महासमिति की बैठक में थे। अम्तुस्सलामबहन,[1] प्रभावतीबहन[2] और बा घर पर

[1] आश्रम की एक मुसलमान बहन, जो बरसों गांधीजी के पास रहीं।

[2] बिहार के चम्पारन-सत्याग्रह में गांधीजी के पुराने साथी और बिहार के सुप्रसिद्ध नेता श्री ब्रजकिशोरबाबू की लड़की और श्री जयप्रकाश नारायण की पत्नी, जिन्हें बाल्यावस्था से ही उनके पिता ने गांधीजी को सौंप दिया था और जो आश्रम में उनके साथ रहती थीं।

थीं। बाद में लीलावतीबहन[1] भी आगईं। यहां मेरा तार नहीं पहुंचा था, इसलिए मुझे देखकर सबको आश्चर्य हुआ।

भाई को मैंने फोन पर बुलाया। बहुत मुश्किल से मिले। आये तो मेरी आवाज और नाम सुनकर कहने लगे, "मैं तो अभी-अभी महादेवभाई के साथ शर्त लगाकर आया हूं कि तुम आ नहीं सकतीं।" मैंने बैठक में जाने की इच्छा प्रकट की। झटपट स्नान किया। खाना परोसा ही गया था कि मोटर लेने को आगई। दो केले हाथ में लेकर मोटर में जा बैठी। पंडाल में पहुंची तो 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पर मत लिये जा रहे थे। भाई मुझे मंच पर लेगये। मैंने बापू को दूर से देखा। महादेवभाई मुझे देखकर भाई से कहने लगे, "उससे कहो, तुम कैसे शर्त हारे!"

'वोटिंग' पूरा हुआ। बापू का भाषण शुरू हुआ। बापू पूरे २। घंटे एक सांस में बोले। अद्भुत भाषण था और बापू की वाणी में और दलील में अद्भुत शक्ति थी! भाषण पूरा हुआ। बापू उठे। मैंने प्रणाम किया। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई। बोले, "तो तू ठीक मौके पर पहुंची।" वल्लभभाई मिले। कहने लगे, "कल आती तो एक और काम का भाषण सुन सकती।" पिछले दिन बापू का जो भाषण हुआ था, उसीकी ओर सरदार का यह इशारा रहा होगा।

बापू, वल्लभभाई, महादेवभाई और मणिबहन के साथ मैं मोटर में बैठी। भाई दूसरी मोटर में आये। बापू समय पूछने लगे। उस समय रात के सवा दस बजे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ। उनको कल्पना तक नहीं थी कि वह सवा दो घंटे बोले हैं। कहने लगे, "जब मैं बोलने को उठा था, मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कहनेवाला हूं। अब मेरी समझ में आरहा है कि कल रात मैं क्यों नहीं सो सका। मेरे मन पर बोझ था कि इतना कहना है, कैसे कह पाऊंगा। मगर मैंने सोचा, अगर ईश्वर को मुझसे कुछ कहलाना होगा तो वह मेरी जबान खोल देगा, वरना मैं तो इस बात के लिए भी तैयार था कि सिर्फ यही कहकर बैठ जाऊं कि 'मुझे कुछ सूझता नहीं, मैं आपसे क्या कहूं?' लेकिन ईश्वर ने मेरी जबान खोलदी। मैं मानता हूं कि ईश्वर ही मुझसे बुलवा रहा था। क्षणभर के लिए तो मुझे यह भी डर लगा कि कहीं आज मेरा खातमा तो नहीं हो जायगा! लेकिन फिर सोचा, ईश्वर को मुझसे काम करवाना है तो वह खुद शक्ति देगा और उसने दी भी। आज मैंने करीब-करीब सभी मतलब

[1] एक विधवा लड़की, जिसने गांधीजी और आश्रम को अपना लिया था।

की बातें कह डाली हैं। अब कल की आम सभा में मेरे लिए कोई खास नई बात कहने को रह नहीं जाती। अब तो सिर्फ दोहराने की बात है।" बाद में उन्हें याद आया कि 'इंडियन सिविल सर्विस' को जो दो शब्द आज कहने चाहिए थे, सो कहना भूल गये थे। बोले, "कोई हर्ज नहीं। कल सही। अभी तो यह सब सुनाने के बहुत मौके आनेवाले हैं।"

बापू ने सोचा था कि आज सभा से लौटते वक्त श्री मथुरादासभाई[1] को देखते जायंगे। लेकिन रात इतनी होगई थी कि इरादा छोड़ना पड़ा। बोले, "कल समय निकाल सका तो जाऊंगा। मगर कल समय निकालना कठिन है।" इतना कहकर फिर सोचने लगे कि कल क्या-क्या करना है। सुबह कार्यकर्त्ताओं की सभा है, बाद में वर्किंग कमिटी होगी, फिर यह और वह, और शाम को पब्लिक मीटिंग वगैरा-वगैरा।

घर लौटे तो प्रार्थना के लिए आये हुए कुछ लोग अभीतक बैठे थे। प्रार्थना हुई। एक गुजराती बहन ने भजन गाया—"मारूं माथुं नमाव प्रभु तारा चरण-रजनी तले।"[2]

महादेवभाई ने इस बहन को गुरुदेव के कुछ गीतों का गुजराती अनुवाद करके दिया था। यह उन्हींमें से एक था। उन्होंने खुद ही इन गीतों की राग बैठाई थी। बहुत मीठे स्वर में उस बहन ने यह भजन गाया था। महादेवभाई भी गा रहे थे।

जब बापू सोये, साढ़े ग्यारह बज रहे थे। मैं भाई के साथ टहलने लगी। भाई ने मुझे उस समय की स्थिति के बारे में कुछ बातें बताईं। फिर हम दोनों महादेव-भाई के कमरे में गये। वह अभी जागते थे।

मैं बम्बई कैसे आई यह सुनकर सब मेरा मजाक उड़ाने लगे। बोले, "कैसी घबराकर भाग आई? क्या सरकार इतनी मूर्ख होगी कि महासमिति की बैठक हो जाने दी, लोगों में उत्साह भरने दिया और अब पकड़ले!"

डॉक्टर जीवराज मेहता का फोन आया। पूछ रहे थे कि कल हम किस वक्त बापू को देखने आयें? मैंने बापू की डॉक्टरी परीक्षा की थी। आज के इतने परिश्रम के बाद भी बापू के खून का दबाव सिर्फ १८६ और ११६ था। हमेशा जितना चढ़ा

---

[1] गांधीजी के भतीजे और सहकर्मी, जो बाद में बम्बई कारपोरेशन के मेयर हुए।

[2] हे प्रभो! अपने चरणों की रज के नीचे मेरा सिर झुका।

करता है, उसके मुकाबले आज का यह दबाव बहुत अच्छा कहा जा सकता है। फिर भी डॉक्टर मेहता और डॉक्टर गिल्डर को तो कल आना ही था। बापू से पूछकर उनको दोपहर दो बजे का वक्त दिया। बाद में जब डॉक्टर मेहता ने डॉक्टर गिल्डर को फोन किया तो वह हँसकर बोले, "कल दो बजे किसे देखने जाओगे ?" मगर किसीने नहीं माना कि सचमुच बापू पकड़े जायंगे।

एक बजे मैं अपने बिस्तर पर गई। भाई महादेवभाई के साथ कुछ देर बातें करते रहे। शहर में बहुत जोरों की अफवाह थी कि बापू को सुबह ही पकड़ लेंगे। फोन-पर-फोन आरहे थे। भाई ने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई, कल हम क्या करेंगे ?" महादेवभाई बोले, "फिकर क्यों करते हो, हाथ-में-हाथ मिलाकर हम एक साथ बाहर निकल पड़ेंगे और भगवान हमको कुछ-न-कुछ करने की शक्ति दे ही देगा।"

: ३ :

गिरफ्तारियां

बिड़ला हाउस, बम्बई

९ अगस्त '४२

सुबह चार बजे जब सब प्रार्थना में आये तो महादेवभाई ने कहा, "रात दो बजे तक फोन मुझे सताता रहा। दो बजे बाद मैं सोया। बस, यही चल रहा था कि गिरफ्तारी का सारा इंतजाम होगया है। वे पकड़ने आरहे हैं, वगैरा।" इसपर बापू कहने लगे, "नहीं, कल के मेरे भाषण के बाद तो मुझे गिरफ्तार कर ही नहीं सकते। मैं उनको इतना मूर्ख नहीं मानता।" फिर बोले, "अगर उसके बावजूद भी मुझे पकड़ें तो इसका मतलब यह होगा कि उनके दिन पूरे हुए हैं।"

प्रार्थना के बाद मैं आकर बिस्तर पर लेट गई। तीन रात से रात को दो-एक घंटे की नींद मिली थी। बापू शौच को गये। मैंने भाई से कहा, "जब बापू घूमने को तैयार हों, मुझे जगा दीजिये।" मैंने अभी चादर ओढ़ी ही थी कि महादेवभाई अन्दर आये और बोले, "बापू, बापू, पकड़ने आगये !" बापू को गुसलखाने में ही खबर दी गई। उन्होंने पुछवाया, "तैयारी के लिए कितना समय देंगे ?" पुलिस

कमिश्नर ने कहा, "आध घंटा।" बापू ने वारंट देखे। महादेवभाई, मीराबहन और बापू के नाम भारत-रक्षा कानून के मातहत नजरबन्दी के नोटिस थे। भाई और बा के लिए लिखा था कि वे भी चाहें तो बापू के साथ उन्हीं शर्तों पर चल सकते हैं। बापू ने बा से पूछा, "तू न रह सकती हो तो चल। लेकिन मैं खुद तो यह चाहता हूं कि तू बाहर रह, सेवाग्राम जा, मेरा काम कर।" भाई से भी यही कहा। बोले, "मैं तो यह कहूंगा कि योंही मत आओ। काम करते-करते पकड़लें तो बात अलग है।" फिर एक सूचना की, "हरएक सिपाही अपने कंधे पर 'करेंगे या मरेंगे'[1] का बिल्ला लगाले ताकि आजादी का एक-एक सिपाही, जो अहिंसात्मक रूप से मरे, उसपर निशानी के तौरपर ये शब्द 'करेंगे या मरेंगे' मौजूद हों।"

बापू ने नाश्ता किया। बिड़लाजी वगैरा ने कुछ सवाल पूछे। बापू ने कहा, "इन सवालों का उत्तर कल शाम के भाषण में धनिकों के लिए मैंने जो कहा है, उसमें आजाता है।" बाद में घनश्यामदासजी ने कहा, "बापू, उपवास की जल्दी न कीजियेगा।" बापू ने कहा, "नहीं, मैं जल्दी करना ही नहीं चाहता। जहांतक हो सकेगा, टालूंगा।"

फिर प्रार्थना हुई। महादेवभाई ने 'हरि ने भजतां हजी कोईनी लाज जती नथी जोई रे'[2] भजन गाया। फिर रामधुन हुई। अम्तुस्सलामबहन ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। बापू ने दो-चार किताबें गीताजी, भजनावली, अरबी प्राइमर वगैरा इकट्ठी कीं और धनुष-तकली, पूनी का बंडल आदि अपने साथ लिये। अम्तुस्सलाम-बहन ने कुरानशरीफ दिया। महादेवभाई ने अपना सामान इकट्ठा किया। मीरा-बहन सबसे आखिर में तैयार हुईं। सबने बापू को प्रणाम किया। मैंने पूछा, "मुझे पकड़ें तो क्या मैं आपके पास आने की मांग कर सकती हूं?" बापू बोले, "हां, जरूर। तुम कह सकती हो, 'मैं उनकी मेडिकल एडवाइजर (डॉक्टरी सलाहकार) रही हूं। मुझे उनके पास भेजिये।'" भाई को उदास देखकर महादेवभाई बोले, "उदास क्यों होते हो? फर्क इतना ही है न कि हम सबेरे वहां पहुंचेंगे और तुम शाम को। और हम तो बिना कुछ किये ही जारहे हैं, तुम कुछ करके आओगे।"

बापू की सूचना थी कि शाम की आम-सभा जरूर होनी चाहिए। इसलिए अन्दाज

---

[1] Do or die.

[2] हरि का भजन करते हुए किसीकी लाज गई हो, ऐसा नहीं देखा गया।

यह था कि भाई सभा में बोलेंगे और गिरफ्तार कर लिये जायंगे।

बापू अपनी लकड़ी लेकर चल पड़े। श्रीमती रामेश्वरदास बिड़ला ने उन्हें कुंकुम का तिलक लगाया। दो मोटरें तैयार थीं। अगली में बापू और मीराबहन बैठीं, पिछली में महादेवभाई। ऊपर से सब हँसते थे, मगर सबके मन भरे थे। सब जानते थे कि इस बार की लड़ाई भीषण होगी। कोई नहीं जानता था कि फिर कौन, किससे, कब और कहां मिल सकेगा या मिलना होगा ही नहीं।

रात सभा से लौटने के बाद बाबला[1] और कनु महादेवभाई के साथ मजाक कर रहे थे। बाबला ने कहा, "काका, अब हम आजाद हैं। बापूजी ने कह दिया है, अब सब आजाद हैं। सो अब हम आपकी भी नहीं मानेंगे।" महादेवभाई हँसकर बोले, "लेकिन तुझे मेरी माननी ही कब पड़ती है! तुझे तो अपनी मां की ही बात माननी पड़ती है।" मानो भगवान ही उनसे यह बुलवा रहा था। कौन जानता था कि एक हफ्ते के अंदर बाबला को केवल अपनी मां की ही मानने की आवश्यकता रह जायगी!

जब पुलिस कमिश्नर बापू को पकड़ने के लिए आया, पौने छः बजे थे। बापू ने तैयारी में आध-घंटे से दो-तीन मिनट ज्यादा लिये थे, उसके लिए माफी मांगते हुए वह बोले, "I am sorry, I have kept you waiting a couple of minutes longer."[2]

चलते समय बिड़लाजी ने कहा, "ये लोग बकरी का आध सेर दूध मांगते हैं।" बापू ने हँसकर जवाब दिया, "चार आने रखवालो और दे दो।"

जब पुलिस आई थी, सन्नाटा था। मगर कौन जाने कहां से बात-की-बात में वहां एक हुजूम इकट्ठा हो गया। जब मोटर चली तो बिड़ला-हाउस के रास्ते पर लोगों की खासी भीड़ मौजूद थी। टेलीफोन कटे पड़े थे। रात को दो बजे से ही काट दिये गए थे। इसीलिए महादेवभाई दो बजे के बाद सो सके थे। फिर भी बापू की गिरफ्तारी की खबर शहर में बिजली की तरह फैल गई। बिड़ला-हाउस पर दल-के-दल लोग इकट्ठा होने लगे। कार्यकर्त्ता, मित्रगण, अखबारों के संवाददाता वगैरा सब चले आ रहे थे।

---

[1] महादेवभाई का लड़का नारायण देसाई।

[2] "अफसोस है कि मैंने आपको दो-एक मिनट ज्यादा रोका।"

हम लोग किसी भी वक्त पकड़े जा सकते हैं, इस खयाल से हमने अपना सामान बांधना शुरू किया। मैंने थोड़ा-सा जरूरी सामान अपने बिस्तर में और अटैची केस में रख लिया। मेडिकल बैग (दवाओं की संदूकची) भी साथ में रख ली। मगर भाई को सामान बांधने की फुरसत कहां! एक मिलनेवाले आ रहे थे। मुश्किल से शाम तक वह अपना सामान बांध सके।

निश्चय हुआ कि बा भी आम सभा में भाषण करें। बा ने एक संदेश[1] बहनों के नाम और एक भाइयों और बहनों के नाम मुझे लिखवाया। भाई ने भी अपना एक छोटा-सा भाषण लिख डाला। उसमें आज सवेरे की घटना का वर्णन था और जनता से यह प्रार्थना की गई थी कि अब बापू को जेल से वापस लाना उसके हाथ में है। इतना सब याद रखें कि बापू दो चीजें अपने जीते-जी बरदाश्त नहीं कर सकेंगे—एक यह कि हिन्दुस्तान के लोग नामर्द बनकर बैठ जायं और दूसरे यह कि वे पागल बनकर अंग्रेज मर्दों, और बच्चों को काटना शुरू करदें।

कोई दस बजे टेलीफोन आया। वर्धा का 'ट्रंक कॉल' था। भाई फोन पर बात करने लगे। किशोरलालभाई के साथ बात हो रही थी। भाई ने शुरू किया, "आज सवेरे...।" बस, सेंसर ने लाइन काट दी। बाद में दोपहर को फिर फोन मिला। वर्धा में पुलिस भाई की राह देख रही थी। विनोबा गिरफ्तार किये जा चुके थे। दूसरे भी, जिन्होंने पिछले सत्याग्रह में कुछ भी भाग लिया था, पकड़ लिये गए थे। भाई के नाम वारंट तैयार था। हमारा इरादा था कि आज यहां न पकड़े गये तो कल शाम को वर्धा जायंगे। माताजी वहां हमारी राह देख रही थीं। इस खबर ने जरा सोच में डाला। मगर सोच करने के लिए भी ज्यादा वक्त नहीं मिला। शाम को सरकार ने हमारे लिए फैसला कर दिया।

चलते समय महादेवभाई कल शाम की सभा के बापूवाले भाषणों के नोट्स भाई को दे गये थे। कहा था, "इन्हें तुम ठीक करके आज ही अखबारों को दे देना।" भाई ने सोचा था कि स्नान के बाद कमरा बन्द करके बैठ जायंगे और लिख डालेंगे। मगर वक्त कहां से मिलता! आखिर वह काम भाई ने किसी और को

[1] संदेश इस प्रकार था—"महात्माजी तो आपसे बहुत-कुछ कह गये हैं। कल उन्होंने ढाई घंटे तक महासमिति की बैठक में अपने दिल की बातें कहीं। उससे ज्यादा और क्या कहा जाय? अब तो उनकी सूचनाओं पर अमल ही करना है। बहनों को अपना तेज दिखाना है। सब कौमों की बहनें मिलकर इस लड़ाई को सफल बनावें। सत्य और अहिंसा का मार्ग न छोड़ें।"

सौंपा। इतने में सादिक अली[1] आये। भाई ने उन्हें कुछ सूचनाएं दीं और एक सर्व-सामान्य सूचना-पत्र टाइप करने के लिए कहा। वह उसमें लग गये। मृदुलाबहन[2] आईं और कुछ छपवाने को ले गईं। सुबह कार्यकर्त्ताओं की सभा के लिए लोग आये थे, मगर कुछ लोगों को लगा कि बिड़लाजी पर इस सभा का बोझ अब नहीं डालना चाहिए। सभा दूसरी जगह रखी गई। आखिर यह तय हुआ कि अभी किसी और जगह भी कार्यकर्त्ताओं को इकट्ठा करना ठीक न होगा ताकि कहीं सब एक साथ पकड़े न जायं। अच्छा यह होगा कि वे सब अपने-अपने मुकाम पर चले जायं और वहां काम करें। उनके पास लिखित सूचना पहुंचा दी जायगी। सो भाई कार्यकर्त्ताओं की टुकड़ियों में जाकर उनसे पांच-पांच, सात-सात मिनट बातें करके उन्हें यह सब समझा विदा कर आये।

शहर से आनेवाले लोग बता रहे थे कि सारे शहर में आग-सी फैली हुई है। समूची वर्किंग कमिटी को, बम्बई प्रांतीय कांग्रेस कमिटी के खास-खास कार्यकर्त्ताओं को और स्वयंसेवक दल के मुखियाओं को सुबह ही पकड़ लिया गया था। सरकार ने हड़ताल के खिलाफ दो से तीन साल की कैद की सजा का ऐलान किया था। फिर भी शहर में करीब-करीब मुकम्मल हड़ताल थी। दूकानें बन्द, ट्राम बन्द, बस सर्विस बन्द! सुबह आठ बजे ग्वालिया टैंक पर झंडावंदन था। वहां तीन बार अश्रुगैस छोड़ी गई, लाठी चार्ज किया गया, तब कहीं मुश्किल-से लोगों को तितर-बितर किया जा सका। लेकिन थोड़ी देर बाद वे फिर जमा हो गये। मृदुलाबहन आईं। उनके हाथ पर लाठी के तीन निशान थे। और भी कई स्वयंसेवक व कार्यकर्त्ता लाठी खाकर आये। टिंक्चर आयोडिन की मेरी छोटी-सी शीशी खाली होगई।

यह तय हुआ कि शाम को बा के साथ मैं, भाई और खुरशेदबहन[3] सभा में जायं। बा के पकड़े जाने पर मैं उनके नजदीक ही रहूं, ताकि उनकी संभाल रख सकूं। इसलिए मुझे उनके साथ रहने को कहा गया। बा की सेहत इतनी नाजुक थी कि एक डॉक्टर का उनके साथ रहना निहायत जरूरी समझा गया और चूंकि मैं बम्बई में किसीको जानती नहीं थी, इसलिए यह तय पाया गया कि खुरशेद-बहन भी हमारे साथ रहें।

[1] कांग्रेस महासमिति के तत्कालीन आफिस सेक्रेटरी; अब कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी।

[2] अहमदाबाद के मिलमालिक श्री अंबालाल साराभाई की पुत्री।

[3] स्व० दादाभाई नवरोजी की पौत्री।

सुबह चलते समय बापू फिर कह गये थे, "तू मथुरादास को जरूर देख आना।" सो मैं खुरशेदबहन को साथ लेकर उनके घर गई। मथुरादासभाई बहुत खुश हुए। फिर आवेश में आकर बोले, "ये अंग्रेज तो राक्षस हैं, बहन। ये राक्षस बापू को जीता बाहर नहीं आने देंगे।" मैंने समझाया, "आप शांत हो जाइये, नहीं तो आवेश से आपकी तबीयत ज्यादा बिगड़ी तो मुझे आपके पास आने का पश्चात्ताप होगा।" उनकी पत्नी ने भी कहा, "आप बहुत ज्यादा बातें कर रहे हैं।" मगर उनको तो मथुरादासभाई ने डांटकर चुप कर दिया। बोले, "तू चुप रह। तुझे क्या पता! मैं कब किसीसे मिलता हूं? मगर मैंने तो डॉक्टरों से भी कह दिया था कि तुम्हारी तमाम दवाओं से ज्यादा फायदा तो मुझको बापू से मिलकर होगा।" फिर मुझसे बोले, "अपनी स्टेथॉस्कोप लाई हो या नहीं?" मैंने कहा, "लाई तो हूं।" बोले, "तो फिर निकालती क्यों नहीं हो?" मैंने उनकी तसल्ली के लिए उनकी छाती की परीक्षा की। सब एक्सरे देखे। इतनी बड़ी 'कैविटी' (दरार) है! 'हेमोप्टाइसिस' (थूक में खून निकलना) सख्त होता है। इसमें कितनी आशा रखी जा सकती है? फिर भी मैंने उन्हें आश्वासन दिया और चलने को तैयार हुई। मैंने कहा, "अब बापू के साथ आपसे मिलने आऊंगी।" यह सुनकर वह फिर आवेश में आ गये। मेरा हाथ पकड़कर कहने लगे, "देखना, बहन, यह एक गम्भीर और पवित्र वायदा है।[1] यह देखो, यह (पत्नी) साक्षी है। खुरशेदबहन साक्षी हैं। ये सब होंगे। यह तो (नर्स) नहीं रहेंगी। फिर भी इन्हें इनके घर से बुला लेंगे।"

मैं उनके पास पांच-दस मिनट के लिए गई थी, पौन घंटे के बाद मुश्किल से लौट सकी। बाहर आने पर उनकी पत्नी ने पूछा, "अच्छे तो हो जायंगे न?" मैंने कहा, "आप आशा रखिये, घबराइये नहीं।" मथुरादासभाई ने अपने सामने अंग्रेज चित्रकार वाट्स का 'होप' (आशा) नाम का चित्र लटका रखा था। कह रहे थे, "जब मैं सचमुच निराश हो जाऊंगा तो इस चित्र को निकालकर फेंक दूंगा।" मगर मुझे ऐसा मालूम पड़ा, मानो उनकी आशा भी आज तो आशा के इस चित्र की तरह एक कमजोर तंतु के आधार पर लटकी हुई है।

वापस बिड़ला-हाउस आई। देखा तो पुलिस मौजूद थी। सुना कि शहर में पोस्टर्स लग गये थे : "बापू जिस सभा में बोलनेवाले थे, उसमें कस्तूरबा भाषण

---

१ उनके शब्द थे—"Solemn promise."

करेंगी ।" "यह शान्त बलवा १८५७ के बलवे से भी ज्यादा सफल हो !" वगैरा-वगैरा । सो पुलिस पूछने आई थी—"क्या बा सचमुच ही सभा में जायंगी ? अगर हां, तो हम उन्हें गिरफ्तार करेंगे ।" जब उन्हें मालूम हुआ कि बा अकेली नहीं होंगी, मैं भी उनके साथ रहूंगी और उनके बाद सभा में भाषण करूंगी तो उनका एक आदमी मेरे नाम का वारंट लाने गया और एक हमारे पास रहा । सभा का समय हो गया था । जब बा और मैं रवाना होने लगे, तो पुलिस-अफसर नाटक-सा करने लगा। बोला, "माजी, आपको घर में बैठना चाहिए। बहन, आपको सभा में नहीं जाना चाहिए," वगैरा। ब्रजमोहन बिड़ला से न रहा गया। बोले, "क्या यह शिष्टाचार आवश्यक है ?" इसपर वह हँसने लगा। बोला, "आप जाती ही हैं तो मैं आपको गिरफ्तार करता हूं।" बिड़लाजी की जो मोटर हमें सभा की जगह ले जानेवाली थी, उसीमें जेल के लिए हमारा सामान रख दिया गया। श्रीमती बिड़ला ने फिर आरती संजोई और हम दोनों के टीका निकाला । मुझे अपने टीके पर हँसी आई। मेरे लिए इसकी क्या जरूरत ? फिर सोचा, कल कहां थी, आज कहां हूं ! कल किसे पता था कि बम्बई जाते ही मैं कहां पहुंच जाऊंगी !

मोटर चलने ही वाली थी कि पुलिस अफसर ने हममें से किसीकी बात को इधर-उधर से सुनकर अंदाज लगा लिया कि हमारे बाद भाई (प्यारेलालजी) सभा में जा रहे हैं । फिर क्या था ! तुरन्त बोला, "तो आप भी आ जाइये।" भाई का सामान भी मोटर में रखा गया । चम्पाबहन ने उनके टीका निकाला और हम तीनों चले । घनश्यामदासजी भाई से कहने लगे, "अच्छा है, अब हमें तुम्हारे हाथ-पैर टूटने की फिकर नहीं रहेगी ।" लेकिन हमारे मन में निराशा थी। तीनों में से एक भी सभा में पहुंच पाता तो अच्छा होता। डाह्याभाई वगैरा हमें दिनभर के समाचार थोड़े में सुनाने लगे । सबका खयाल था कि हमें सीधे बापू के पास ही ले जायंगे।

बावला और कनु ने प्रणाम किया । बावला भाई से सुबह ही कह रहा था, "प्यारेलाल काका, काका महादेवभाई अपना दुशाला भूल गये हैं। आप अपने साथ ले जाइये। उन्हें दे दीजियेगा।"

भाई से दोनों लड़कों ने पूछा कि वे क्या करें ? भाई ने उनको सलाह दी कि वे जरूरी कागजात लेकर वर्धा चले जायं । कनु ने चलने से पहले मुझे और भाई को 'करेंगे या मरेंगे' का मंत्र लिखकर दिया । कहने लगा, "बस, मैं तो सैकड़ों-

हजारों ऐसे कागज बाटूंगा। हनुमान की तरह लंका को सर करके पकड़ा जाऊंगा, योंही नहीं।" बावला भी उत्साह से भरा था। इस उत्साह से भरे वातावरण को लेकर वे दोनों हमारी गिरफ्तारी के बाद दूसरे दिन सेवाग्राम गये।

अम्तुस्सलाम बापू के कलवाले भाषण के पीछे पड़ी थीं। बापू ने उसमें मुसलमानों के लिए जो बातें कही थीं उनकी नकल करने में लगी थीं। वह उसे पत्रिका के रूप में छपवाकर बंटवाना चाहती थीं। जिन्नासाहब के पास एक डेपुटेशन ले जाने की तैयारी करना चाहती थीं। उन्होंने मुझे अपना पता लिखकर दिया। बोलीं, "तुम मुझे रोज एक पत्र बापू के समाचार का लिखा करना।" मैंने कहा, "मुमकिन होगा तो लिखूंगी।"

लीलावती बहन हैरान-परेशान इधर-उधर घूम रही थीं। कहने लगीं, "मैं क्या करूं? बापू ने मुझसे कहा है कि तू अपनी पढ़ाई न छोड़ना। लेकिन मैं पढ़ूं कैसे?"

भाई ने कहा, "तो मत पढ़ना। अपने साथ के विद्यार्थियों को लेकर निकल पड़ना।" कनुभाई को मजाक सूझा। बोले, "अच्छा, तो यह लो।" और एक कागज के टुकड़े पर लिखकर दे दिया, "पढ़ेंगे या मरेंगे!"

मोटर चली तो बा की आंखों में पानी था। सुबह भी जब बापू पकड़े गये, ऐसा ही हुआ था। उस समय भी मैंने बा को समझाकर आश्वस्त किया था। अब भी समझाया। बा को मैंने छुआ तो उनका शरीर गरम लगा। इस बीच मोटर आर्थर रोड जेल पर आ पहुंची। हम उतरकर नीचे खड़े हुए। सड़क पर कुछ मजदूर जा रहे थे। उन्होंने योंही झांककर देखा और अपनी राह चले गये। मैंने सोचा--क्या ये बा को नहीं पहचानते? क्या ये नहीं जानते कि आज क्या हो रहा है?

: ४ :

आर्थर रोड जेल

जेल का फाटक खुला। हम तीनों अन्दर गये। हमें ऑफिस में बैठाया गया। कुर्सियां गन्दी थीं। कड़ी, बेआराम, गंदी गद्दियां उनमें लगी थीं। सारा-का-सारा

ऑफिस गन्दा और बेकरीने का नजर आरहा था। जेलर वगैरा सब एक मजा-सा लेरहे लगते थे, मानो एक बढ़िया नाटक देख रहे हों।

थोड़ी देर में हमारा कमरा तैयार होगया। ममा नाम की एक पैंतीस-चालीस बरस की मराठी महिला हमें लिवाने आ पहुंची। हम दोनों उसके साथ चलीं। हमारे पीछे का फाटक बन्द होगया। भाई बाहर ही रह गये। उस क्षण तक मुझे यह खयाल ही नहीं आया था कि भाई हमसे अलग हो जायंगे। मैंने पीछे मुड़कर उन्हें देखा और जंगले की राह उनसे विदा ली। बाहर के कोलाहल की तुलना में यहां एक अजीब सन्नाटा-सा था। भीतर से एक और दरवाजा खुला और हम औरतोंवाले विभाग में पहुंचीं। पीछे से फाटक बन्द होगया। यह एक ठोस दरवाजा था, जिसमें से कुछ भी दिखाई नहीं दे सकता था।

आर्थर रोड जेल का वह स्त्री-विभाग मुख्य जेल में अलग किया हुआ एक छोटा-सा अहाता था। चारों ओर आठ-नौ फुट ऊंची दीवारें थीं। एक छोटा-सा बगीचा था। रहने की जगह एक कतार में चार कमरे बने थे। दरवाजों में लोहे की मोटी सलाखें लगी थीं। आखिरी कमरा हमारा था। पहले दो कमरों में सजायाफ्ता औरतें थीं। कोई तीस एक रही होंगी। दो-तीन की गोद में तो बच्चे भी थे। तीसरा कमरा दिन में उनके काम करने की जगह बन जाता था और रात को खाली रहता था। शाम को साढ़े पांच बजे सबको अन्दर बन्द करके बाहर लोहे की सलाखों के दरवाजों में ताले डाल दिये जाते थे। सजायाफ्ता औरतों में एक सात बरस की सजावाली थी। वह हमारी सेवा का प्रबन्ध करती थी। उसका नाम साकू था। उस वक्त तक मुझे पता नहीं था कि वार्डर कौन होते हैं। मगर बाद में पुरुष कैदियों के वार्डरों को देखा तो समझी कि वह सजा पाई हुई स्त्री कैदिनों की वार्डर थी; लेकिन उसके कपड़े दूसरी कैदिनों के जैसे ही थे, हालांकि मर्दों में वार्डर पीली पगड़ी पहनते हैं।

हमारे कमरे में एक घंटी टंगी थी, ताकि रात को जरूरत पड़ने पर हम उसे बजाकर किसीको बुला सकें। घंटी साकू के कमरे में बजती थी। साकू हमारी अपेक्षा बाहर की दीवार से ज्यादा नजदीक थी, सो वह चिल्लाकर संतरी को बुलाती और संतरी ममा को, तब कहीं मदद आ सकती थी।

चारों कमरों के सामने एक तंग-सा बरामदा था, मगर ए. आर. पी.[1] के कारण

[1] हवाई हमले से हिफाजत।

उसमें बड़ी-बड़ी दीवारें चिन रखी थीं। इसी तरह कमरे की खिड़कियों को भी, जिनमें लोहे की मोटी सलाखें थीं, तीन-चौथाई ईंटों से चिन रखा था। कमरे में न हवा आ सकती थी, न धूप। फर्श में सीलन थी, पीछे की तरफ फ्लश का पाखाना और एक छोटा-सा गुसलखाना था। दोनों खासे गन्दे थे। कुछ गन्दी नालियां चूती होंगी, इससे वहां बदबू भी थी। पहले दिन तो हम दोनों—मैं और बा—बहुत थकी थीं, सोगईं। मगर दूसरे रोज सुबह-ही-सुबह पता चला कि उस कमरे में बैठना सिर-दर्द मोल लेना है।

हमारे आते ही हमारे लिए लकड़ी के दो तख्त आगये थे। उनपर नारियल के रेशे से भरी हुई गद्दियां लगी थीं। गद्दियों पर जेलकी चादरें। मुझे वे गन्दी लगीं। साफ-से-साफ दूसरी चादरें लाये, मगर मुझको वे भी गन्दी लगीं। आगाखां महल में आने के बाद तो बापू ने हमसे वैसी ही चादरों का इस्तेमाल शुरू करवाया और फिर तो वे कुछ साफ लगने लगीं। मगर उस दिन तो उन चादरों पर मैंने अपना और बा का घर का बिस्तर लगवाया।

बा को ९९.६ बुखार था। उन्हें बिस्तर पर लिटाया। मेमा खाने को पूछने आई। बा को कुछ नहीं चाहिए था। मगर मुझको काफी भूख थी। दोपहर में तो दौड़-धूप की वजह से नहीं-जैसा ही खाया था, उससे अगले दिन भी ट्रेन में खाने का ठिकाना न था। मगर जेल में हमें खाना नियम के मुताबिक दूसरे दिन ही मिल सकता था। मैंने सोचा, इस वक्त इन्हें रोटी बनाने में कष्ट होगा। चलो थोड़ा दूध पीकर ही सो जायंगे। मुझे क्या पता कि जेल में दूध कितना दुर्लभ होता है! सो मैंने एक प्याला दूध मांगा। कुछ देर बाद एक छोटी-सी कटोरी में पानी-सा पतला कोई तीन औंस ठंडा दूध आगया। बेचारे जेलर ने अपने घर से भेजा था। मैं उसी-को पीकर लेट गई। बा सोगई थीं। शाम के साढ़े छः बजे होंगे, अन्धेरा होने लगा था। मैंने सोचा, बा उठें तो प्रार्थना करें। किताब लेकर पढ़ने लगी और मैं भी सो गई। तीन रात से पूरी नींद नहीं मिली थी। रास्ते की थकान, तिसपर आज सुबह से वातावरण खूब उत्तेजित रहा था, उसकी भी थकान थी, लेटते ही नींद आगई। रात में बा तीन-चार बार पाखाने गईं। दूसरी या तीसरी दफा जब वह पाखाने से आरही थीं, उनकी आहट से मेरी नींद खुली। वह लड़खड़ाकर चल रही थीं। मैं झट से उठी। उन्हें सुलाकर पढ़ने की कोशिश की मगर ए. आर. पी. की वजह से बत्ती पर काला कागज चढ़ा था, जिससे खाट पर लेटे-लेटे पढ़ा ही नहीं जाता था

और उठकर बैठने की इच्छा नहीं होती थी। सो मैं पड़ी रही। पहली रात मगा आई होगी। हमें सोता देखकर हमारे कमरे की बत्ती बुझा गई थी और मगा हमें ताले में बन्द भी कर गई थी।

: ५ :

अनोखे अनुभव

आर्थर रोड जेल

१० अगस्त '४२

सवेरे सात-साढ़े सात बजे मगा ने दरवाजा खोला। उससे पहले मैंने और बा ने हाथ-मुंह धोकर प्रार्थना कर ली थी। बा को आज भी बुखार था। कमजोरी भी बहुत थी। पतले दस्त हो रहे थे।

हम लोगों ने कल ही बापू की गिरफ्तारी के बाद उपवास करने का विचार किया था। मगर फिर तय हुआ कि उपवास अगले दिन किया जाय; क्योंकि कल-ही-कल सबको खबर नहीं दी जा सकती थी। सो आज मैंने उपवास किया। बा को उनकी 'वेजिटेबल' टी' (खास जड़ी-बूटियों की चाय) का काढ़ा बनाकर दिया। उनके स्नान के लिए गरम पानी मांगा तो उसे आने में दो घंटे लगे। स्नान वगैरा से निबटकर बैठी थीं कि जेलर आया। बोला, "अभी मैं आपको अखबार भेजूंगा। जरा खुद देख लूं, ताकि कसम खाकर कह सकूं कि सेंसर करके दिये थे।" थोड़ी देर बाद जेलर और सुपरिंटेंडेंट दोनों आये। बा की कुछ चीजें बिड़ला-हाउस में रह गई थीं। मैंने सुपरिंटेंडेंट से कहा, "या तो आप हमें फोन करने दें, या खुद फोन पर कहदें कि यह सामान हमें भेज दें।" वह बोला, "यह नहीं हो सकता। आप लोग बाहर की दुनिया से कोई सम्पर्क नहीं रख सकतीं।" मैंने पूछा, "तो अखबार कैसे भेजेंगे?" बोला, "नहीं भेजेंगे। और जो कुछ आपको चाहिए, हम आपको बाजार से खरीद देंगे।" मैंने कहा, "मेरे पास रुपये नहीं हैं। आप या तो रुपये मंगाने दें या खुद चीजें मंगवाकर दे दें।" बोला, "ये दोनों बातें नहीं हो सकतीं।" इस पर मैंने तनिक चिढ़कर कहा, "तो मैं नहीं कह सकती कि हम कबतक आपके हुक्मों और कायदों का पालन कर सकेंगी।" बेचारा चुपचाप चला गया। कर ही

क्या सकता था ? और मेरा भी तो जेल का यह पहला ही अनुभव था।

थोड़ी देर बाद एक डॉक्टर आया और हमारी ऊंचाई, वजन और शनाख्त के तीन निशान नोट करके चला गया। कुछ देर बाद बड़ा डॉक्टर आया। मैंने बा को दिखाया। कहने लगा, "अभी दवा भेजता हूं।" मैंने कहा, "थकान है, मानसिक बोझ है, दवा की इतनी जरूरत नहीं, जितनी खुराक संभालने की है। आप मुझे बा के लिए सेब मंगादें। मैं उन्हें सेब के रस के सिवा कुछ नहीं देना चाहती।" कहने लगा, "जेल में बहुत कम ऐसी चीजें मिलती हैं। आपको जो चाहिए बाजार से मंगालें।" मैंने कहा, "मगर मेरे पास पैसा नहीं। आप खुद खरीद दें। कभी जिंदा बाहर निकले तो आपका रुपया लौटा दूंगी।" वह बोला, "मैं क्या कर सकता हूं। जेल में बीमारों को ही खास चीजें दी जा सकती हैं। बाकी की चीजें उन्हें खुद खरीदनी पड़ती हैं।" मैं फिर चिढ़ गई, बोली, "जिन अस्पतालों में मैंने काम किया है वहां बीमारों के लिए सब जरूरी चीजें मंगा देते थे। कुछ चीजें ऐसी हैं जिनका खर्च आमतौर पर बीमारों को देना पड़ता है। लेकिन अगर वे नहीं दे सकते तो मैं नीचे 'मुफ्त' लिखकर अपनी सही कर देती हूं, तो बीमार को चीज मुफ्त में मिल जाती है। और मैंने तो कहा है कि मुझे रुपये मंगावा लेने दें या अभी अपनी जेब से जरूरी चीजें मंगवादें। किसी दिन आपका सब हिसाब चुका दूंगी।" वह जरा नरम पड़ा। पूछने लगा, "क्या आप डॉक्टर हैं ? आप कहां काम करती थीं ?" वगैरा। फिर यह कहकर कि "सेब आजायंगे" वह चला गया। मगर सेब शामतक नहीं आसके। बा को दिन में चाय ही दी। बुखार और दस्त की शिकायत बनी रही। कमजोरी बढ़ती गई।

कमरे की हवा इतनी बन्द थी कि वहां बैठने से सिर में दर्द होने लगता था। मैट्रन कहने लगीं, "मेरे बरामदे में आकर बैठिये।" दरी वगैरा बिछाकर मैं और बा वहां जा बैठीं। दोनों ने काता। मैट्रन से कुछ बातें कीं। वह गर्भवती थीं। कोई सात महीने का गर्भ था। मैंने हँसी में कहा, "आपकी डिलीवरी (प्रसूति) में मैं मदद कर दूंगी।" पहले वह स्कूल-टीचर थीं, मगर जेल की नौकरी में उन्हें घर की संभाल के लिए ज्यादा समय मिलता था, इसलिए दो-तीन साल से यही नौकरी कर रही थीं। पति मिल में नौकर थे। जेल की नौकरी में वेतन तो करीब ७५) मासिक या ऐसा ही कुछ था, लेकिन रहने को घर मिला हुआ था और काम हल्का था। इसलिए यह नौकरी उन्हें पसन्द थी।

दोपहर बारह बजे मैट्रन अपने घर चली गई, बा भीतर जाकर लेट गईं। मैं वहीं बरामदे में बैठकर पढ़ती रही। कोई चार बजे फिर दरवाजा खुला। मैट्रन थी। सिपाही किसीका बक्स और बिस्तरा ला रहा था। मैं उत्सुक होकर उठी। एक और बहन आई थीं, नाम था श्रीमती सीतलदास। मैंने साथ जाकर उनका सामान रखवाया। फिर हम दोनों बा के पास जा बैठीं। उनकी उमर कोई तीस-पैंतीस साल की रही होगी। चार बच्चों की मां थीं। सबसे छोटा और एकमात्र लड़का दो बरस का था। वह बीमार-सा रहता था। किसी जमाने में यह बहन लेडी हार्डिंग में पढ़ने गई थीं। एफ. एस-सी. करके चली आईं। डॉक्टरी में नहीं गईं। जेल में पहली बार आई थीं। उनके पति को उनका यह काम पसन्द नहीं था। खुद उनका इरादा भी जेल आने का नहीं था; क्योंकि बच्चे की तबीयत अच्छी नहीं थी। मगर आज सुबह उन्हें लगा कि जब सबको पकड़ लिया है तो किसीको तो बाहर निकलना ही चाहिए। पति से बिना पूछे सुबह झंडावन्दन में शामिल हुईं। वहां से लौटकर विद्यार्थियों से मिलने निकलीं, तभी पुलिस ने पकड़ लिया। बेचारी घर सामान लेने गईं तो जल्दी में सिर्फ एक प्याली दूध पीकर चली आईं। सुबह से और कुछ खाया नहीं था। मैट्रन ने मुझे बताया कि दोपहर बाद जो कैदी आते हैं, उनको दूसरे दिन खाना मिलता है। इसीलिए कल रात जो थोड़ा-सा दूध मेरे लिए आया था, वह भी जेलर के घर से आया था। सो उन्हें खाना नहीं मिल सकेगा। शाम को चार बजे मेरा और बा का खाना आया। मैं और श्रीमती सीतलदास दोनों खाने बैठीं। बा ने कुछ नहीं लिया। मेरे लिए थोड़ा-सा उबला साग आया था। बा के लिए जेल की मोटी रोटी, दाल, चावल, दूध और डबल रोटी आई। मक्खन भी था। हम दोनों ने बहुत कोशिश की, मगर वह खाना गले से उतारना कठिन था। एक-दो निवाले से ज्यादा निगल नहीं सकीं। थोड़ा-सा दूध ले लिया। उपवास के बाद ऐसी खूराक से मुझे तो मतली होने लगी। हम दोनों बाहर घूमने निकलीं। श्रीमती सीतलदास ने कहा, "मैंने जेलर से अपने बच्चों का जिक्र किया है। छोटे-छोटे बच्चे हैं और सबसे छोटा बीमार है। मैंने कहा है कि मेहरबानी करके मुझे फोन पर अपनी आया को बीमार बच्चे के बारे में हिदायतें देने का मौका दें।" मैंने सोचा, बेचारी कितनी भोली हैं! समझतीं नहीं कि यह जेलखाना है। उनके मन को तैयार करने के लिए मैंने आज सुबह का किस्सा बताया कि कैसे जेलर ने हमसे बाहर की दुनिया से कोई सम्पर्क न रखने देने की बात कही

थी। मगर उस भोली बहन ने इतने पर भी यह माना कि शायद उसे तो फोन करने ही देंगे।

जेलर का घर सामने था। हमें घूमते देखकर जेलर की स्त्री और लड़कियां दूर खिड़की में से झांकने लगीं। फिर उन्होंने बा के सामाचार पूछे। जेलर को अपने पेट के लिए सबकुछ करना था, लेकिन घर के स्त्री-बच्चों के दिल में बापू और बा के प्रति भक्तिभाव को वह कैसे मिटा सकता था?

बारिश होने लगी। इससे हमें भीतर आना पड़ा। कमरे में सोना कठिन था। हमने निश्चय किया, बरामदे में सोयेंगी। यहीं से जेल के नियमों को तोड़ना शुरू करेंगी।[1] श्रीमती सीतलदास को 'बी' क्लास में रखा गया था, हमें 'ए' में। फर्क यह था कि उन्हें सोने को लकड़ी का वह तख्त नहीं दिया गया था, जो हमें मिला था। मैंने मेट्रन के आने से पहले ही अपना और उनका बिस्तर बरामदे में जमीन पर लगवाया। बा का खाट पर। जब मैट्रन आई, हमने कह दिया कि हम ताले में बन्द होकर नहीं सोयेंगी। वह बेचारी घबराई। जेलर के पास गई। उसने कहलवाया, "भले बरामदे में सोयें।"

श्रीमती सीतलदास ने कल की काफी खबरें सुनाईं। कल जिस सभा में हमें जाना था, वहां लोग रात के ८ बजे तक जमा रहे। मगर सभा न हो पाई। पुलिस ने कई बार अश्रुगैस छोड़ी और लाठियां चलाईं। जैसे ही पुलिस का हमला खतम होता था, लोग फिर जमा हो जाते थे। वैसे ट्रैफिक तो आज भी काफी हदतक बन्द था। हड़ताल भी थी। लोगों में काफी उत्साह था। श्रीमती सीतलदास को विद्यार्थियों से कुछ निराशा-सी हुई थी।

हम लोग जाकर बरामदे में बैठ गईं। मेरी तबीयत ज्यादा खराब थी। मचली होरही थी। मैं लेट गई। श्रीमती सीतलदास, 'हरिजन' लाई थीं। उसे पढ़ते-पढ़ते मैं सो गई। बा भी सो गई थीं। बेचारी श्रीमती सीतलदास को अपने बच्चों की फिकर में नींद कहां? हमने सोचा था, सात बजे उठकर शाम की प्रार्थना कर लेंगी, लेकिन बा उस वक्त भी सो रही थीं। करीब पौने नौ बजे मैट्रन आई। कहने लगीं,

[1] गांधीजी ने कुछ ऐसा इशारा किया था कि इस बार के सत्याग्रह में, पिछले सत्याग्रहों के विपरीत, जेल में आकर सरकारी कायदों का सविनय भंग जारी रखना। किन्तु जेल में जाने के बाद खुद उन्हें इसमें शंका उत्पन्न होगई और उनके साथी भी स्वतंत्र रूप से इसी नतीजे पर पहुंचे।

"मैं तो जल्दी आई थी कि सोने से पहले आपको खबर दे दूं, लेकिन आप तो सो ही गईं।" खबर यह थी कि बा को और मुझको रात को कहीं ले जानेवाले हैं। हमसे कहा गया कि ग्यारह बजे तक अपना सामान तैयार रखें। मैंने उठकर अपना बिस्तर बांधा, दूसरा सामान ठीक किया। बा को नहीं जगाया। श्रीमती सीतलदास घबराने लगीं। बोलीं, "मैं तो सोचती थी, आप लोगों के साथ समय अच्छी तरह कट जायगा। मगर अब तो आप भी चलीं!" मुझे भी बुरा लगा। मैंने समझाया, "आपको भी जल्दी ही यहां से हटायंगे। शायद यरवदा में हम फिर मिलें।"

आज सुबह मेरे पास सेब मंगवाने के लिए पैसे नहीं थे, यह सुनकर उन्होंने अपना बटुआ मेरे सामने कर दिया, उसमें तीस-चालीस रुपये थे। मैंने पांच रुपये का एक नोट ले लिया। जल्दी में वे साड़ियां कम लाई थीं, रंगीन कोई न थी। मैंने अपनी एक उन्हें देदी। मन में सोचा, कहीं जेल में मर जाऊं तो इनका कर्ज तो सिर पर न रहेगा!

बा जागीं, मैंने उनका बिस्तर बांधा। उनको श्रीमती सीतलदास के बिछौने पर लिटा दिया। फिर हमने बैठकर प्रार्थना की। रामधुन चल रही थी कि पैरों की आवाज सुनाई पड़ी। प्रार्थना पूरी हुई। जेलर और मैट्रन हमें लेने आये थे। हम तैयार ही थीं। चलदीं। बाहर दफ्तर में एक आदमी बैठा था, जो हमारे साथ जाने वाला था। मैंने पूछा, "कहां ले जाओगे?" कहने लगा, "बापूजी के पास।" गाड़ी साढ़े बारह बजे जाती थी। अभी ग्यारह ही बजे थे। दफ्तर में जेल की सख्त कुर्सी पर बैठे रहने में बा को तकलीफ होरही थी। बा की तबीयत भी अच्छी नहीं थी। दस्तों की वजह से वह बहुत कमजोर होगई थीं। मैंने कहा, "आराम-कुर्सी मंगा दीजिये।" इसपर हमारे रखवाले ने कहा, "स्टेशन पर चलिये। वहां वेटिंग रूम में आप आराम से बैठ सकेंगी।" फिर कहने लगा, "बापूजी से हमारा प्रणाम कहियें। मैं सन् '३२ में उनके साथ था।" मैंने कहा, "तो कहिये, आप अब बापू के दल में कब आरहे हैं?" हँसकर बोला, "आप लोगों की देखभाल के लिए भी तो कोई चाहिए न?" फिर कहने लगा, "राजनैतिक कैदी इतनी तकलीफ नहीं देते। उनके साथ थोड़ी समझ से पेश आने की जरूरत है; लेकिन दंगे के कैदी तो खतरनाक होते हैं। हिन्दू-मुस्लिम दंगों के वक्त मैंने बहुतों को संभाला है।"

हमारा सामान जेल की मोटर में रखा गया। हम भी उसीमें बैठीं। कुछ ही देर में स्टेशन पर पहुंच गईं। कौन-सा स्टेशन था, कुछ पता नहीं चला। वहां वेटिंग

रूम में बैठे-बैठे मुझे नींद-सी आने लगी। मगर बा को नींद कहां ? बैठे-बैठे बोलीं, "देखो, सुशीला, लोग स्टेशन पर आते और जाते हैं। सरकार का सारा कारोबार इस तरह चल रहा है, मानो कुछ हुआ ही न हो। इस हालत में बापू कैसे जीत पायेंगे ?" मैंने समझाया और भगवान पर भरोसा रखने को कहा। वह कुछ शान्त हुई। कोई बारह-सवा बारह बजे हम बाहर स्टेशन पर आईं। बा को एक कुर्सी पर बैठाकर गाड़ी पर लेगये। स्टेशन पर भीड़ काफी थी। हम लोगों में किसीको ख्याल तक न था कि क्या होरहा है।

गाड़ी आई। पहले दर्जे के एक डिब्बे में मेरी और बा की जगह थी। बा नीचे सोईं, मैं ऊपर। गाड़ी चली। कॉलिज में पढ़ते समय मैंने व्रत लिया था कि जबतक हम आजाद न हो जायंगे, मैं तीसरे दर्जे में ही सफर करूंगी। मगर आज तो हम आजाद ही हैं। आजाद होकर पहले दर्जे में सफर कर रही हूं! यही कुछ मैं सोचती रही। बा के लिए जो दो सेब आये थे वे हमारे साथ ही थे। मुझे बहुत भूख लगी थी। एक सेब खाकर सो गई। दूसरा बापू के पास पहुंचा।

: ६ :

आगाखां महल में

आगाखां महल, पूना
११ अगस्त '४२

सुबह आंख खुली तो दिन निकल आया था। हमारा साथी आया और यह कहकर चला गया कि अब एक ही स्टेशन और है। मैंने बिस्तर बांधा। जब उतरने का स्टेशन आया तो बा गुसलखाने में थीं। रातभर उन्हें दस्त आते रहे थे। गाड़ी को कोई पांच मिनट रुकना पड़ा। हम उतरीं। एक हिन्दुस्तानी पुलिस अफ़सर हमें लिवाने आया था। मोटर तैयार थी। उसमें बैठाकर वे दोनों हमें लेचले। रात में बम्बईवाला साथी अपने दूसरे साथी से पूछने लगा, "यहांकी हालत कैसी है ?" पूनावाले ने कहा, "हालत खराब है। मुझे खुशी है कि मैं अबतक अपनेको इस बला से दूर रख पाया हूं। यहां गोलियां चली हैं और लाठी-चार्ज हुए हैं। मैंने अपने अफसर से कहा था कि विद्यार्थियों पर गोली न चलाई जाय। उनमें सात-सात,

आठ-आठ बरस के बच्चे भी हैं। बच्चों पर गोलियां चलाकर सरकार लोगों की हमदर्दी खो बैठेगी और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभीको कांग्रेसपरस्त बना देगी। मैंने विद्यार्थियों के लिए बेंत मारने की हल्की सजा सुझाई थी। लेकिन किसीने मेरी सुनी नहीं और गोलियों व लाठियों से काम लिया। नतीजा यह है कि हालत बदतर होगई है।" इसपर बम्बईवाला साथी बोला, "हां, बेंत मारना आदर्श चीज होती है।" मुझे इस वाक्य पर हँसी आई। वह बोला, "डाक्टर हमसे सहमत नहीं।" मैंने कहा, "आपका यह सुझाव कि छोटे बच्चों के लिए बेंत की सजा आदर्श चीज है, मुझको कुछ अनोखा-सा लगा; क्योंकि आज हर आदमी यह जानता है कि छोटे बच्चों को कभी शारीरिक सजा देनी ही नहीं चाहिए और अच्छे मदरसों में तो बेंत की सजा कतई मना है।" वे दोनों बोले, "हां, लेकिन आप तो सभ्य समाज की बात कर रही हैं और यहां हमें बर्बरता से काम है। यह न समझिये कि हमें बेंत मारना या दूसरा ऐसा कुछ करना पसन्द है, लेकिन हमें जो हुक्म दिया जाता है, उसकी पाबन्दी तो करनी ही पड़ती है।" इसके बाद बातचीत बन्द होगई। पहले वे दोनों आपस में कह रहे थे कि किसीको इस दमन-नीति में रस नहीं है। कोई नहीं चाहता कि वह गोली दागे, लाठी चलाये या गिरफ्तारियां करे, वगैरा-वगैरा।

पन्द्रह-बीस मिनट में मोटर एक सूनी-सी सड़क के किनारे एक बड़े फाटक पर आकर खड़ी होगई। फाटक बन्द था। मोटर दूसरे फाटक पर गई। सामने फौजी पहरा था। फाटक खुला। हम अन्दर घुसे, पीछे फाटक बन्द होगया। थोड़े फासले पर कंटीले तार लगे थे। वहां भी फाटक था और फौजी पहरा। यह दूसरा फाटक खुला और हमारे अन्दर जाने पर फिर बन्द होगया। दूर से मैंने देखा, मीराबहन बगीचे में फव्वारे के पास बैठी कुछ घिस रही थीं। मगर उन्होंने हमें नहीं देखा। मोटर संगमरमर की सीढ़ियों के सामने जाकर खड़ी होगई। बा और मैं दोनों उतरीं और ऊपर चलीं। बरामदा लम्बा था। सामने के और बगीचे की तरफ के बरामदे का शुरू का आधा फर्श संगमरमर का था और आगे जाकर आधा मामूली पत्थर का। एक कैदी झाड़ू लगा रहा था। उससे मैंने बापू का कमरा पूछा। वह बोला, "आगे इसी लाइन में है।" बापू का कमरा आया। उनका बिछौना एक कोच पर था। वह उसपर बैठे एक कागज पर गौर कर रहे थे। महादेवभाई उसी कागज को हाथ में पकड़े पास खड़े थे और बापू से कुछ कह रहे थे। हमें आया देख सब चकित-से रह गये। बापू के चेहरे पर एक तनाव की रेखा खिंच गई। बा से बोले, "तूने यहां

आने की मांग की थी, या वे ही तुझे ले आये ?" बा बेचारी चुप रह गईं। कुछ समझ ही नहीं सकीं कि क्या पूछ रहे हैं। बापू की भवें और तन गईं। मैंने उत्तर दिया, "पकड़कर लाये हैं, बापू।" तब कहीं बापू की चिन्ता मिटी। मैंने प्रणाम किया। हँसने लगे। बोले, "तू आ पहुंची।" मैंने बताया, "बा की तबीयत अच्छी नहीं है।" तुरन्त ही उनके लिए खाट मंगवाई गई। बापू और महादेवभाई उनकी संभाल में लग गये।

बा की बीमारी अधिकतर मन के बोझ की वजह से ही थी। यहां आने पर बिना दवा के अपने-आप उन्हें अच्छा लगने लगा। सरोजिनी नायडू आकर मिलीं। वह खाने की देख-भाल करती थीं। सो खाने की बात पूछी। बोलीं, "तुम्हें कुछ खास चाहिए तो तुम पका सकती हो।" मैंने पूछा, "क्या हमें अपना खाना खुद पकाना होगा ?" कहने लगीं, "और नहीं तो तुम यहां करोगी क्या ? अपना वक्त यहां किस तरह काटोगी ?" मैं चुप होगई। मेरे लिए यह एक नई चीज थी कि खाना पकाने को वक्त काटने का जरिया बनाया जा सकता है। मुझे आजतक कभी इस सवाल का सामना ही नहीं करना पड़ा था कि वक्त कैसे काटा जाय। उल्टे वक्त हमेशा बहुत जल्दी खतम हो जाया करता था। बा को सुलाकर सरोजिनी नायडू और महादेवभाई मुझे खाना खिलाने को मेज पर लेगये। टोस्ट, मक्खन और ताजी चाय की प्याली में उस दिन मैंने जो स्वाद पाया, वह कभी किसी बड़ी-से-बड़ी दावत में भी नहीं मिला !

: ७ :

महादेवभाई के साथ चार दिन

महादेवभाई ने कहा, "दो रोज हमने बापू की मालिश की। हम तो मालिश करना जानते नहीं। आज बापू मुझे सिखानेवाले थे। अब तुम आ पहुंची हो तो संभालो अपना काम।" मैंने बम्बई में यह तय किया था कि बापू की मालिश वगैरा का काम भाई किया करेंगे और बापू की सेवा मैं किया करूंगी। लेकिन भाई तो यहां पहुंचे ही नहीं थे। इसलिए जब महादेवभाई ने ऐसा कहा तो मैं चुपचाप बापू की मालिश करने चली गई। यहां मक्खियां और मच्छर बहुत हैं। इतनी नई, साफ

और शहर के बाहर की जगह में इस कदर मक्खियां क्यों हैं, कुछ समझ में नहीं आ रहा। बापू ने बताया कि पूना में सफाई का प्रबन्ध अच्छा नहीं है। पता नहीं, यह मकान कब से बन्द पड़ा था! अभी-अभी खोला गया है। इस वजह से भी इतने जीव-जन्तु यहांपर हो सकते हैं। मालिश में बापू सो जाते हैं। मक्खी-मच्छर परेशान करते थे सो मालिश के समय महादेवभाई को मक्खियां उड़ाने का काम करना पड़ा। मैंने देखा वह बहुत खुशी से यह काम कर रहे थे। वह बापू की हर सेवा में खुश रहते थे।

बापू को दोपहर का खाना करीब बारह-साढ़े बारह बजे मिला। मीराबहन और महादेवभाई ने बताया कि जिस रोज वे लोग यहां आये थे, उस रोज तो यहां खाने का कोई इन्तजाम था ही नहीं। बिड़ला-हाउस से जो आध सेर दूध आया था, वह बिगड़ गया था। इन लोगों ने आकर खुद खाने का सारा इन्तजाम किया। बापू खाना खाते समय शाम के खाने की कुछ बात करने लगे। महादेवभाई और मीरा-बहन ने एक-दूसरे की ओर देखा; क्योंकि शाम के पांच तो बज ही रहे थे। बापू ने घड़ी देखी और हँसने लगे। शाम का और सुबह का खाना एक हो गया था! शायद सरकार ने सोचा होगा कि गांधीजी तो इस बार उपवास करने ही वाले हैं, फिर खाना पकाने के इन्तजाम की मेहनत क्यों की जाय! या कैदियों के लिए खाना तैयार करने का उसका रिवाज ही नहीं रहा होगा।

आज हम लोगों ने तो खाना कोई एक बजे ही खाया होगा। खाना खाने के बाद महादेवभाई सब प्लेटें उठाकर उन्हें धोने चले गये। मैं भी उनके पीछे गई और थोड़ी मदद की। तीन बजे महादेवभाई नीचे रसोईघर में पहुंचे। बापू के लिए सब्जी काटी और चढ़ाई। उसके बाद उनके लिए मौसम्बी का रस निकाला। नीचे गये, रसोईघर से सब्जी लाये। मीराबहन को दूध निकालने में देर हुई थी। इसलिए शाम का खाना आज भी बापू को देर से मिला।

मैंने देखा, यहां भी इन लोगों को अखबार वगैरा कुछ नहीं मिलते थे। महादेव-भाई को यहां मैंने एक बिलकुल नये रूप में देखा। खाना पकाने और बरतन धोने जैसे कामों में उनकी दिलचस्पी देखने की चीज थी। शाम को प्रार्थना के बाद वह पलथी मारकर बरामदे में बैठ गये और रात को खाने के लिए सबके लिए टोस्ट बना डाले। खाना खाते समय···की बातें करने लगे। और-और लोगों की चर्चा भी उन्होंने की। जबतक किसीकी तारीफ की कोई बात न आती, महादेवभाई अन-मने-से होकर सुनते रहते। लेकिन किसी अच्छी बात को सुनकर, जिससे वह सहमत

हो सके, वह उत्साह के साथ उसकी दाद देते थे।

दिन में बापू ने लार्ड लमली (बम्बई के गवर्नर) के नाम अपने पत्र की कच्ची नकल में काट-छांट करके उसे महादेवभाई के हवाले किया और बोले, "मुझे ऐसा लगता है कि यह तो आज जाना ही चाहिए।" इस पत्र में बापू ने एक घटना का उल्लेख किया था, जिसमें मेहता नाम के किसी कार्यकर्त्ता को स्टेशन पर पशु की तरह घसीटकर लारी में डाला गया था। इसी पत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल और मणिबहन को यहां भेजने की दरख्वास्त भी की गई थी। बापू ने लिखा था कि सरदार तो उनकी (बापू की) चिकित्सा में थे, मणिबहन सरदार की नर्स थीं,सो दोनों को उनके पास भेज देना चाहिए। तीन-तीन मसविदों के बाद यह खत तैयार हुआ था। हम सब ऐसा मानते थे कि सरदार वल्लभभाई और मणिबहन जल्दी ही यहां आजायंगे। उन्हें किस कमरे में रखेंगे यह चर्चा हुई। हम मानते थे वल्लभ-भाई और मणिबहन दोनों यरवदा में हैं। भाई को भी जल्दी बापू के पास ले आवेंगे, ऐसी हमारी मान्यता थी।

यहां अभी बरसात शुरू हुई है सो बरामदे में घूमना पड़ता है। मगर बरामदा बहुत लम्बा है। मकान के चारों तरफ गया है। एक चक्कर में एक-तिहाई मील की घुमाई हो जाती है। मकान की निचली मंजिल में हमें रखा गया है, ऊपर हमारे जेलर मि० कटेली रहते हैं। नीचेवाला भाग भी सब नहीं खोल रखा। एक बड़े कमरे में सरोजिनी नायडू हैं। वहीं दो संगमरमर की मेजें पड़ी हैं जहां सब खाना खाने बैठते हैं। एक कमरे में बापू हैं, एक में मीराबहन। एक छोटा कमरा बापू और सरोजिनी नायडू के कमरे के बीच है, वहीं महादेवभाई, मैं, बा वगैरा कभी-कभी बैठते थे। अधिकतर तो बापू के कमरे में ही काम करते रहते थे। गुसलखाने दो ही हैं, मगर बड़े हैं। पाखाना फ्लशवाला है। बगीचा बहुत बड़ा है, पर कंटीले तार लगाकर हमें बहुत थोड़ा-सा टुकड़ा दिया गया है। पानी नहीं पड़ता तब वहीं थोड़ा घूम लेते हैं। फूल बहुत सुन्दर हैं।

रात को मीराबहन ने बापू के पैरों की मालिश की, मैंने सिर की। यहां मच्छर इतने हैं कि मच्छरदानी लगाकर सोना पड़ता है। बा अन्दर कमरे में सोईं। सरो-जिनी नायडू अपने कमरे में। बाकी के चार—बापू, मीराबहन, महादेवभाई और मैं—बरामदे में सोये।

१२ अगस्त '४२

सवेरे उठते ही बापू ने पूछा, "महादेव, नींद कैसी आई ?" महादेवभाई बोले, "कोई दो बजे आंख खुल ही जाती है। फिर साढ़े तीन बजे नींद आई होगी। जब आप और सुशीला प्रार्थना कर रहे थे, मैं आवाज़ तो सुन रहा था, पर उठकर आया नहीं।" इससे मुझे पता चला कि महादेवभाई अच्छी तरह सोते नहीं हैं। मीराबहन ने कहा, "सिर में मालिश करवानी चाहिए।" मैंने उनसे पूछा, "अगर आपको पसन्द हो तो रोज़ रात को आपके सिर की मालिश कर दिया करूं।" इस पर वह बोले, "हमारा क्या है। मालिश की जरूरत नहीं रहती।"

मैंने कहा, "रात में ज़रूरत हो तो आप मुझे सोते से जगा सकते हैं।"

कहने लगे, "देखेंगे।" उन्हें मालिश की जरूरत है, पर सेवा लेने में संकोच होता है।

नाश्ते के बाद मैं और महादेवभाई बापू के साथ बरामदे में घूमे। महादेवभाई और बापू अनेक विषयों पर बातें करते थे। मेरेलिए यह घूमना सामान्य शिक्षण की एक क्लास ही हो जाती है।

आज भी बापू को अपना खाना समय पर नहीं मिल सका। बापू ने कहा, "अब हम सब आपस में काम बांट लें।" महादेवभाई बोले, "बांटना क्या है ? बंटा हुआ ही है। सुशीला आपकी सेवा में रहेंगी। मीराबहन पहले सुबह का साग बनाया करती थीं और मैं शाम का। अब सुबह का भी मैं बना लूंगा।" बापू को महादेवभाई का बनाया साग ज्यादा पसन्द आता था, क्योंकि सोडे की मात्रा ठीक होने से वह ज्यादा गला हुआ रहता था। सो महादेवभाई दोनों समय साग बनाने को तैयार हुए थे। मैंने कहा, "नहीं, शाम का साग मैं बना दिया करूंगी और आप लोगों की प्लेटें भी धो दूंगी।" मगर जब प्लेटें धोने का वक्त आया तो महादेवभाई मेरे पीछे-पीछे नल पर आ पहुंचे और सब प्लेटें साथ रहकर धुलवाईं। इसी तरह मैं सब्जी चढ़ाने गई तो वहां भी पीछे से आ पहुंचे। साग काटने और चढ़ाने में मदद की। मैंने कहा, "आप क्यों अपना समय ऐसे कामों में खोते हैं ?" बोले, "यहां और काम ही क्या है ? अबके मैं अपने साथ कोई सामान ही नहीं लाया, नहीं तो लिखने का काफी काम हो सकता था। लेकिन तीन-चार लेखों की सामग्री के सिवा मैं कुछ लाया ही नहीं।" मैंने कहा, "तो वे तीन-चार लेख तो लिख ही डालिये।" बोले, "लिख लूंगा। बात यह है कि इस समय मेरा तो मन ही नहीं होता कि कुछ करूं।

जबतक बापू की उपवास की तलवार मेरे सिर पर लटक रही है, मैं कुछ कर ही नहीं सकता। सन् '३२ में बापू के छ: दिन के उपवास में मैंने दस पौण्ड वजन खोया था, हालांकि उन दिनों में बराबर भोजन करता था। तभी छ: दिन में बापू बेहाल हो गये थे तो अब क्या होगा?"

बापू ने वाइसराय के नाम जो खत लिखना शुरू किया था, आज दिन में उसमें फिर सुधार किये गए और मुझे उसकी नकल कर देने का काम मिला। यहां मच्छरों और मक्खियों की वजह से दिन में भी कुछ काम करना हो तो मच्छरदानी में बैठकर ही करना पड़ता है। मैं अपनी खटिया पर जा बैठी, मच्छरदानी डाल दी। खत लम्बा था, नकल करने में दो घंटे लगे होंगे। बापू ने महादेवभाई से कहा, "अब तुम इसे पढ़ जाओ, बुढ़िया (सरोजिनी नायडू) को भी पढ़ाओ और कुछ सुझाव देना हो तो दो।" इसके बाद बापू उर्दू के अभ्यास में लग गये। कहने लगे, "अगर सरकार मुझे फिर छ: साल की सजा सुना दे तो मैं बहुत काम कर दिखाऊं।" यह सुनकर महादेवभाई के मन में फिर वही विचार आ गया, बापू छ: साल तक हमारे साथ रहेंगे सही? सत्यमूर्ति का वाक्य याद आया, "गुलाम हिन्दुस्तान की अपेक्षा आजाद हिन्दुस्तान में आपकी ज्यादा जरूरत रहेगी।"[१]

रात बापू मुझसे कहने लगे, "तुझे लिखने-पढ़ने का काम करने की इच्छा थी न! देख, कैसा खत तेरे हाथ आया है!" इसपर महादेवभाई कहने लगे, "अबकी जब बाबला हमारे साथ बम्बई आया तो रास्ते में मैंने उसे 'टु अमेरिकन्स' (अमेरिकनों के प्रति) नामक बापू का लेख टाइप करने को दिया। वह तो नाचने लगा। बोला, "काका, कितने दिनों के बाद आज मैं टाइप करने लगा हूं और पहली ही बार यह कितनी बढ़िया चीज मेरे हाथ लगी है!" महादेवभाई को अपने लड़के की बहुत याद आ रही थी। कल मुझसे पूछा, "दोनों लड़कों का क्या हुआ?" मैंने कहा, "भाई की सलाह से वर्धा जाना तय हुआ था।" कहने लगे, "मैं तो चाहता था कि दोनों बम्बई से ही पकड़े जाते। मगर ठीक है, मेरी गैरहाजिरी में उन्हें भाई की ही आज्ञा का पालन करना था। उन्होंने सोच-समझकर ही वर्धा जाने की सलाह दी होगी।"

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने 'दीनानाथ दयाल नटवर' भजन गाया।

---

[१] "Free India needs you more than subject India."

मि० कटेली, सरोजिनी नायडू, मीराबहन वगैरा सभी प्रार्थना में आते हैं।

आज बापू ने अपने नीचे से कोच निकलवा डाला। जमीन पर जेल का गद्दा बिछवाकर दिन-भर उसीपर बैठे।

१३ अगस्त '४२

बा को आज फिर पतले दस्त हो गये। मैंने दवा का नुस्खा लिखकर मि० कटेली को दिया। उसपर लिखा था—कस्तूर बा गांधी के लिए। नीचे मेरे दस्तखत थे। महादेवभाई ने नुस्खा मि० कटेली को दिया कि या तो बाजार से या जेल के अस्पताल से दवा मंगा दें। मि० कटेली बाजार से मंगवाने को तैयार होगये। मैंने महादेवभाई से कहा कि बाजार में लोग पढ़ेंगे कि दवा किसके लिए है और नुस्खा किसने लिखा है तो वहां थोड़ी खलबली नहीं मचेगी ? इसपर महादेवभाई अपने माथे पर हाथ मारकर जेलर की मूर्खता पर हँसने लगे। बापू ने हमारी हँसी सुनी तो पूछा, "क्या बात है ?" महादेवभाई ने सब बात बताई। बापू बोले, "नहीं, हमें उन्हें सुझा देना चाहिए। हम व्यर्थ ही उन्हें तकलीफ में नहीं डालना चाहते। वह सबकुछ समझकर भी कोई खतरा न मानें और नुस्खे को ज्यों-का-त्यों बाजार में भेजना चाहें तो बात अलग है।" उस वक्त मैं और महादेवभाई, दोनों थोड़ी शरारत की धुन में थे। जाने देते नुस्खा ! थोड़ा-सा मजा आता। लेकिन बापू थोड़े ही ऐसा होने देनेवाले थे ! महादेवभाई ने मि० कटेली से कहा। वह बहुत खुश हुए। बोले, "मैं बापू का बहुत आभारी हूं।" नुस्खा उन्होंने अपने हाथ से नकल किया और वह उनके दस्तखत से बाजार गया। दवा आई। मगर बा को एक ही खुराक दी जा सकी। इससे उन्हें कब्ज हो गया। इसलिए बन्द करनी पड़ी।

बापू ने कल महादेवभाई से वाइसराय को लिखे खत की नकल पढ़ जाने और उसमें जो सुझाव हों, सो देने के लिए कहा था। महादेवभाई दिनभर उसे पढ़ नहीं सके; लेकिन वह जानते थे कि बापू सवेरे ही पूछेंगे, "खत पढ़ा ?" सो उस रात को वह दो बजे ही उठ बैठे। करीब डेढ़-दो घंटे तक बड़े गौर से खत पढ़ते रहे। फिर सो गये। अगले दिन उन्होंने उस खत के बारे में कई सुझाव दिये। बापू ने खत में सुधार किये और उसकी पक्की नकल करने के लिए खत महादेवभाई को दे दिया। उन्हें करीब दो घंटे नकल करने में लगे। पत्र लम्बा था, मगर बहुत अच्छा था। बापू ने वाइसराय को लिखा था कि उनको (बापू को) इस तरह पकड़ने में सरकार

की भूल हुई है। सरकार ने जो प्रस्ताव नेताओं की गिरफ्तारी को जायज साबित करने के लिए छापा है, वह असत्य से भरा है। उसमें कांग्रेस पर जो हमले किये गए थे, उनमें से कुछका जवाब बापू ने इस खत में दिया था और वाइसराय को सलाह दी थी कि वह अब भी अपनी भूल को सुधार लें तो अच्छा होगा।

पत्र वापस बापू के पास आया। उन्होंने हाथ में लेकर एक-आध मिनट महादेवभाई के मोती-जैसे अक्षरों को देखा, फिर उन्होंने उसमें एक-दो जगह अपने हाथ से छोटे-छोटे सुधार किये और दस्तखत कर दिये। रात को पत्र कटेलीसाहब को दिया गया। बापू पूछ रहे थे, "नकल करने में कितना वक्त लगा ?" महादेवभाई ने कहा, "दो घंटे।" फिर बोले, "सुशीला ने सरकारी वक्तव्य में से अवतरण लेते समय एक जगह एक शब्द छोड़ दिया था। इसलिए मैंने सारा पत्र ध्यान से देखा। इस कारण भी वक्त कुछ ज्यादा लगा।" बापू मेरी तरफ देखकर बोले, "ऐसा क्यों हुआ ? यह तो नहीं होना चाहिए।" मेरा मुंह फक हो गया। बापू के काम में तनिक-सी भी भूल हो जाय तो वह असह्य लगता है। बापू भी इन छोटी-छोटी भूलों को बहुत महत्व देते हैं। कहा करते हैं, "मुझे यह भरोसा होना चाहिए कि जो काम तुझे सौंपा वह सम्पूर्ण होगा। मुझे उसमें पूछने और फिर से देखने जैसा नहीं रहना चाहिए।" महादेवभाई बाद में मुझसे कहने लगे, "इस तरह की नकल करते समय ऐसा हो ही जाता है।" मैं समझ रही थी कि मुझे आश्वस्त करने के लिए ही वह ऐसा कह रहे हैं। उन्हें अफसोस हो रहा था कि बापू के सामने मेरी शिकायत क्यों की। आजकल उनकी मनोवृत्ति कुछ ऐसी बन गई है कि किसीको या किसीके बारे में कोई अच्छी बात कह सकें तो कहें, वर्ना चुप रह जायं। कोमलता उनके स्वभाव में हमेशा से रही है। वह किसीका भी दिल दुखाना नहीं चाहते थे। इससे उनपर कभी-कभी यह इल्जाम आता था कि वह सबको सदा मीठी लगनेवाली बात कह दिया करते हैं। इसलिए उनके कहे पर बहुत आधार नहीं रखा जा सकता। लेकिन इस बार की उनकी कोमलता तो पराकाष्ठा को पहुंच गई थी। उनके मन में एक ही विचार था : बापू के आदर्शों का—एकादश व्रतों का—जितना पालन हम कर सकेंगे, उतनी ही बापू के महान यज्ञ में हम उनकी सहायता कर सकेंगे।

सरोजिनी नायडू ने कल महादेवभाई से कढ़ी बनाने को कहा था। आज उन्होंने कढ़ी बनाई। बहुत अच्छी बनी थी। मैंने और महादेवभाई ने तीन बार ली। रोटी यहां कैदी बनाते हैं। चपातियां अच्छी नहीं बनतीं। महादेवभाई कहने लगे, "अगर

दुर्गा यहां होती तो हमें ऐसी रोटी हरगिज न खानी पड़ती।" खाना पकाने के बारे में इधर-उधर की बातें होती रहीं। दोपहर खाने के बाद प्लेटें धोते समय महादेवभाई मुझसे बोले, "ये लोग खाने-पीने की बातें करते हैं! मैं इन्हें कैसे बताऊं कि मेरे मन में क्या चल रहा है? अगर मैं और तुम दो ही यहां होते तो बापू के लिए जो सब्जी बनती है, उसके सिवा मैं तो और कुछ भी न बनाता।"

खाने के बाद मैंने एक मौसम्बी उठाई। महादेवभाई ने लेने से इन्कार किया। बोले, "तुम खाओ।" मैंने आग्रह किया। पूछा, "आप क्यों नहीं खाते हैं?" तो कहने लगे, "असल में यह बापू के लिए है। अपने हिस्से की जो खूराक हमें मिलती है, उससे ज्यादा मैं कुछ नहीं लेना चाहता। मैं बापू के साथ कई बार जेल में रहा हूं, मगर फलों को कभी छूता भी नहीं था; क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं अकेला होता तो मुझे ये फल मिलनेवाले नहीं थे।" हमारे लिए जेल से केले आया करते थे, सो केले वह कभी-कभी खा लिया करते थे।

शाम को हम लोग प्लेटें धो रहे थे। तब फिर महादेवभाई ने कहना शुरू किया, "मैं परेशान हूं। बापू कब क्या करेंगे, कुछ पता नहीं। खाना खाते समय भी मुझे तो यही विचार सताता है कि कितने दिनों तक हम चैन से खा सकेंगे! मन पर यह एक भयंकर बोझ है।" महादेवभाई बहुत उदास नजर आते थे और ठंडी सांस ले रहे थे। मैंने पूछा, "चिन्ता बढ़ानेवाला कोई नया कारण पैदा हो गया है?" बोले, "जो पहले से है, वही क्या कम है और मुझे जो बाहर की खबरें मिल रही हैं, उन्हें बापू जानेंगे तो पता नहीं, उनपर क्या असर होगा?"

शाम को महादेवभाई बीच के कमरे में बैठे अकेले कात रहे थे। मैं पास जा बैठी। मैंने पूछा, "महादेवभाई, आप यहां अकेले क्यों कात रहे हैं?" वह अभी भी उदास ही थे। मुझसे बातें करने लगे। उन्हें बाबला की याद आ गई। बोले, "बाबला होता तो टाइप वगैरा करने में काफी मदद देता।" फिर बड़े गर्व के साथ कहने लगे, "वह बापू के हिन्दी-भाषणों की बहुत अच्छी रिपोर्ट लेने लगा है।" मैंने कहा, "हां, वह होशियार तो है ही, जल्दी ही आपके कामों में हाथ बंटाने लगेगा।" इसपर बोले, "नहीं, अंग्रेजी वह काफी नहीं जानता।" मैंने कहा, "काफी जानता है और आप और ज्यादा सिखा भी तो देंगे!" इतने में बापू ने मुझे पुकारा।"

शाम को आसमान साफ था। हम नीचे बगीचे में घूम रहे थे। मर्ते समय

महादेवभाई बापू से अहिंसा के बारे में चर्चा करने लगे। बोले, "व्यक्तिगत अहिंसा के बारे में तो किसीको कोई शंका है ही नहीं। सब मानते हैं कि व्यक्तिगत रूप में अहिंसा सब कठिनाइयों को हल कर सकती है; किंतु उसके सामाजिक प्रयोग के बारे में लोगों को अवश्य ही शंका है। सो आप उसका प्रयोग करके दिखा रहे हैं।" बाद में 'साहित्य में अहिंसा' की बात चल पड़ी। महादेवभाई ने बापू को 'रघुवंश' में से राजा दिलीप की गो-सेवा-संबंधी कहानी सुनाई जिसमें दिलीप के गाय की सेवा करने का वर्णन है। उन्होंने सुनाया कि किस तरह बाद में शेर गाय को खाने आता है और राजा का उसके साथ क्या संवाद होता है, वगैरा। फिर कहने लगे, "मैं 'साहित्य में अहिंसा' विषय पर एक पुस्तक लिखना चाहता हूं। मेरे पास कई किताबों के नोट्स कहीं पड़े हैं। उनके आधार पर छोटे-छोटे अध्याय लिखकर तीस-चालीस अध्यायों में इस विषय के बहुत प्रभावशाली नमूने इकट्ठा करूंगा।" बापू बोले, "इसी नाम की एक पुस्तक सेवाग्राम में हाल ही में मेरे पास आई थी।" महादेवभाई ने यह देखी नहीं थी। बोले, "तब तो हमें उसे देखना चाहिए।" फिर कहने लगे, "लेकिन हो सकता है कि इस संबंध की उस आदमी की धारणा मेरी धारणा से बिलकुल भिन्न हो।"

आज प्रार्थना में महादेवभाई ने मराठी का तुकाराम का अभंग गाया—'भक्त ऐसे जाणा जे देहीं उदास।' प्रार्थना के बाद मैंने उनसे इस भजन का अर्थ समझाने को कहा। उन्होंने समझाया। मेरे आने के बाद प्रार्थना में रामायण का गायन शुरू हुआ है। उत्तरकांड का जो भाग जिस जगह से आश्रम में छूट गया था, वहीं से आगे शुरू किया गया है। ताल देने के लिए मंजीरा नहीं है, सो बापू ने मीराबहन से चम्मच और कटोरी का उपयोग कर लेने को कहा है। उन्होंने ऐसे कटोरी-चम्मच बजाकर भी दिखाया।

कल सुबह घूमते समय हम लोग बगीचे में मकान के सामने की तरफ चले गये थे। ऊपर सामनेवाले बरामदे में लकड़ी की जाली लगाई गई है। उसे रंगकर यह दिखाने की कोशिश की गई है कि वह पुरानी चीज है, ताकि कोई माने कि मुसलमानी घर में पर्दे के खयाल से लगाई गई होगी। मगर बापू को पूरा शक था कि यह नई चीज है। हमें कोई बाहर न देख सके इस हेतु लगाई गई है। कल उधर घूमने से यह शक सच्चा साबित हुआ। महादेवभाई को लकड़ी की जाली के कुछ ताजे छिल्के उधर पड़े मिल गये। यह जाली बरसों पहले जब मकान बना था तब

लगी होती तो लकड़ी के ये ताजे छिल्के आज यहां कहां से आते ! फिर आगे बढ़-कर देखा। इस तरफ के प्रवेश को बंद करने के लिए इधर भी जाली का एक ऐसा ही दरवाजा लगाया गया था। उसपर बाहर की ओर से रोगन नहीं हुआ था। या तो करना भूल गये होंगे, या करना गैरजरूरी समझा होगा। लकड़ी साफ ताजी छिली हुई दिखाई देती थी। सरकार को डर रहा होगा कि इस बरामदे में खड़े होने पर बाहरवाले लोग तो बापू को देख सकेंगे, शायद भीतर बैठे-बैठे भी बापू लोगों को उकसा सकें !

चारों ओर कंटीले तारों का एक अहाता खींच दिया गया है जिसमें से हमें बगीचे का थोड़ा ही हिस्सा मिला है। बाहर की दीवार से कंटीले तारों का करीब ५० या ७५ गज का फासला रखा गया है, ताकि कहीं दरवाजे में से झांककर हम बाहरवालों के साथ सम्पर्क स्थापित न कर लें ! मगर कंटीले तारों में जगह-जगह इतने बड़े-बड़े रिक्त स्थान हैं कि आदमी भागना चाहे तो आसानी से भाग सकता है। इन कंटीले तारों के अंदर छः सिपाही हमारी रखवाली के लिए रखे गये हैं। वे सेवा भी करते हैं। करीब एक दर्जन सजायाफ्ता कैदी सवेरे छः बजे से शाम के छः बजे तक यहां सफाई इत्यादि करते हैं। करीब पंद्रह या बीस कैदी बगीचे में काम करने आते हैं। कंटीले तारों के बाहर ७२ फौजियों का पहरा रहता है।

यहां आनेवाले सब लोगों के लिए यह जगह एक खासी जेल है। हमारे जेलर मिस्टर कटेली यहां अकेले ही रहते हैं। अखबार तक नहीं पढ़ सकते। या तो उन्हें इजाजत नहीं है, या वह अपना फर्ज अदा करने में इतने मुस्तैद हैं कि जान-बूझकर अखबार नहीं पढ़ते। चूंकि हमें अखबार पढ़ने की इजाजत नहीं है, इसलिए अगर वह पढ़ें तो किसी समय भूलचूक से उनके मुंह से कोई बात ऐसी निकल सकती है, जिसकी खबर हमें नहीं लगनी चाहिए।

महादेवभाई तो हमेशा जिसके सम्पर्क में आते हैं, उसका मन हरण कर ही लेते हैं। मि० कटेली के साथ भी उसकी खूब बन गई है। जब पहला पत्र तैयार हुआ तो महादेवभाई उसे लेकर ऊपर मि० कटेली को देने चले गये। खत ले लेने के बाद बातों-ही-बातों में मि० कटेली ने कहा, "आप लोगों को ऊपर आने की इजा-जत नहीं है। आपके यहां आने से पहले एक पुलिस अफसर आकर मुझसे कहने लगा कि इस जीने के सामने यह नोटिस लगादो कि कोई ऊपर न आये। मैंने इन्कार किया। कहा, 'उनमें कोई ऐसा है ही नहीं, जो खुद ऊपर आये। नोटिस

लगाने की जरूरत नहीं।' " इसपर महादेवभाई ने कहा, "बस, हमें पता चल गया, अब नहीं आवेंगे।" और उस दिन से उन्होंने ऊपर जाना बंद कर दिया। महादेव-भाई विवेक मूर्ति थे !

मि० कटेली भले आदमी हैं, दयानतदार हैं। सरकार के प्रति अपना फर्ज पूरी तरह अदा करते हैं। उनकी पत्नी मर गई हैं। घर पर बूढ़ी मां और बच्चे हैं। मां को बहुत याद किया करते हैं। बापू के प्रति भक्ति रखते हुए भी वह सरकार के प्रति अपना फर्ज अदा करने में कभी चूक नहीं सकते। बेचारों ने पहले तो बाहर से खाना मंगवाना शुरू किया था, लेकिन वह सब ठंडा हो जाता था। इसलिए सरोजिनी नायडू ने उन्हें अपने साथ खिलाना शुरू किया है। खाने के लिए चुप-चाप आते और खाकर चुपचाप ही चले जाते हैं। सारा दिन उनसे कोई बात करने-वाला तक नहीं। सिपाहियों के साथ बात भी क्या करें ? कभी-कभी महादेवभाई उनसे जरूर बात कर लेते हैं। मगर हम तो सब कैदी रहे। कैदियों के साथ भी बेचारे कितनी बात कर सकते हैं ? सरोजिनी नायडू कह रही थीं, "वह भी उतने ही कैदी हैं जितने कि हम। फर्क यह है कि उनको जेल जाने का श्रेय नहीं मिलता जो हमें मिलता है।"

सिपाही लोग भी अपने घर नहीं जा सकते। उनके जमादार का नाम रघुनाथ है। होशियार आदमी है। सन् '३२ में जब बापू पकड़े गये थे तब भी वह यरवदा में उनकी सेवा किया करता था। इसी तरह जब-जब सरोजिनी नायडू यरवदा-जेल में रहीं वह हमेशा बाजार से उनके लिए सामान वगैरा लाने का काम करता था। खासा चलतापुर्जा है। सामान लेने बाजार जाता है तो तनिक अपने घर में भी झांक आता है। सिपाही की वर्दी पहनकर नहीं निकलता, क्योंकि आजकल बाजार में लड़के अकसर सिपाहियों की बुरी गत बनाते हैं। हाल ही में एक दिन वह जेल से हमारा 'राशन' ला रहा था। लोगों ने गाड़ी रोक ली। कहा कि आज हड़ताल है। तुम गाड़ी नहीं ले जा सकते। रघुनाथ चुपके-से उन्हें कह आया, "नहीं जाने दोगे तो तुम्हारे ही लोग भूखों रहेंगे।" बस, सामान ले आया। उसके कुछ भाई-भतीजे वगैरा कांग्रेस में हैं। जेल भी गये हैं। अपने इस सम्बन्ध का भी वह फायदा उठा लिया करता है। महादेवभाई ने इसके साथ भी अच्छी दोस्ती गांठ ली है।

कैदियों में जो चार रसोईघर में काम करनेवाले हैं उनमें से दो काठिया-वाड़ के गुजराती हैं। एक नकली रुपये बनाने के इल्जाम में पकड़ा गया था। दोनों

ने मिलकर कोई पंद्रह हजार रुपये बनाये थे। बाद में एक ने सारा दोष अपने सिर ले लिया। रुपयों से बहुत-सी जमीन खरीद ली। कोई हजार-एक रुपया किसी डाक्टर को दिया। डाक्टर ने उसे दिमागी दुर्बलता का सार्टीफिकट दे दिया, सो सजा कम होगई। महादेवभाई से कहने लगा, "क्या हुआ जो मेरे दो-तीन साल जेल में चले गये। अब आराम की जिंदगी बसर करेंगे।" फिर बोला, "साहब, अपने स्वराज में आप मुझे सिक्के ढालने के लिए बुला लेना।"

दूसरा एक बूढ़ा काठियावाड़ी कैदी था भूरा। उसे सब काका कहते थे। सिपाही तक उसे काका कहकर बुलाते थे। वह सबपर हुक्म चलाता था। वह हिंदू-मुस्लिम फसाद में पकड़ा गया था और बड़े गर्व से कहता था कि वह दूसरों की रक्षा करते-करते जेल आया है। बाद में पता चला कि वह कई बार जेल आ चुका है। हमेशा मार-पीट करके आता है। बड़ा बातूनी है। महादेवभाई जब नीचे सब्जी वगैरा काटने को जाते थे तो कैदियों के साथ काफी बातचीत कर आते थे। ये दोनों गुजराती बोलनेवाले कैदी तो उन्हें अपना भाई ही मानने लगे थे। कहते, "आखिर हम गुजराती जो हैं!" महादेवभाई उनके साथ बिलकुल बराबरी के आदमी की तरह बात करते थे। सो वे अक्सर कहा करते, "महादेवभाई, हम सूरत जिले में आपके घर आयंगे।"

महादेवभाई कहते, "हां भाई, जरूर आना।"

कैदियों के साथ अपनी सम्पूर्ण एकता सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपने लिए जेल के कपड़े मंगाने और पहनने का इरादा भी कर लिया था। एक दिन भूरा कहने लगा, "मैं छूटनेवाला हूं, कोई चिट्ठी देना हो तो देना। मैं ले जाऊंगा।" मैंने कहा, "तुम्हारी तलाशी नहीं होगी?" उसने तुरन्त एक अंडे की शकल की छोटी-सी डिब्बी निकाली, उसको खोला, अन्दर कागज का टुकड़ा रख कर बंद किया और झट से मुंह में डाल गया। कहने लगा, "ले लो तलाशी।" कुछ दिखता नहीं था। उसके गले में कोई पाकेट-सी बनी होगी, जहां डिब्बी छिपा रखता था। जब हमने हार मानली, उसने झट उबकाई-सी ली और डिब्बी निकाल-कर खोलकर कागज हमारे हाथ में दे दिया। महादेवभाई कहने लगे, "अगर बापू का उपवास वगैरा कुछ होगया और सरकार ने खबरें बाहर न जाने देने की नीति रखी तो इसके साथ में जरूर चिट्ठी भेजूंगा। तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं?" मैंने कहा, "पांच रुपये हैं।" कहने लगे, "काफी हैं। बम्बई तक का किराया इसे दे सकूं

तो काम निपटा। पीछे वहां से मित्र लोग सब इन्तजाम कर लेंगे।"

यरवदा से आते-जाते दोनों वक्त इन सब कैदियों की तलाशी ली जाती है। यरवदा-जेल में इन्हें बाहर की तरफ अलग एक बारक में रखा जाता है, ताकि वे दूसरे कैदियों से मिल न पावें और इधर से उधर कोई खबर न पहुंचा सकें। फिर भी वे रोज सुबह हमें इतनी खबर तो देते ही थे कि आज इतने नये कैदी आये हैं और आज इतने। जेल के फाटक पर नये कैदियों की संख्या रोज लिखी जाती है। दूसरे राजनैतिक कैदियों के लिए जगह करने के खयाल से आम कैदियों को काफी तादाद में छोड़ा भी जा रहा है। उन बेचारों को इतना फायदा तो हुआ! अच्छा है।

वाइसराय के नाम खत पूरा करने के बाद आज दोपहर बापू 'पैसिफिक अफेयर्स' पढ़ने लगे। उसमें एक वाक्य आया—"Teleological connection between bourgeois democracy, revolution and industrialism. अर्थात् ऐतिहासिक विकास में मध्यमवर्गीय लोकतंत्र, क्रांति और मशीन-प्रथा इन तीनों में क्रमिक संबंध। बापू टीलियोलोजी (Teleology)[1] का अर्थ पूछने लगे। महादेवभाई से पूछा। शब्दकोश देखा। काफी चर्चा हुई। आखिर बापू बोले, "इसे तो 'Argument in a circle' अर्थात् जो चीज साबित करनी है उसे बहस का आधार मानकर चलना कह सकते हैं।" फिर चर्चा चली कि व्याकरण के अनुसार reek के साथ of आता है या with? बापू ने कहा, "बुढ़िया से पूछो न!" महादेवभाई बोले, "वह नहीं बता सकेगी। यह तो आपके और मेरे-जैसे स्कूल-मास्टरों का काम है कि व्याकरण देखें और विराम-चिह्नों का विचार करें।"

बापू मुझसे वेरीकोस (varicose)[2] का अर्थ पूछने लगे। मैंने बताया। कहने लगे, "नहीं, इसकी धातु क्या है? इसके क्या-क्या रूपांतर हो सकते हैं? कहां-कहां यह शब्द इस्तेमाल हो सकता है, सो सब बताना चाहिए।" फिर कहने लगे कि तेरे लिए लैटिन सीख लेना जरूरी है। बोले, "मैं तुझे 'लर्नेड डॉक्टर' (विद्वान डॉक्टर) बनाना चाहता हूं।" मुझे शब्दकोश की भूमिका पढ़ जाने की सलाह दी, ताकि कोश को पूरी तरह समझकर देख सकूं।

---

१ एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसका विकास निर्धारित दैवी उद्देश्य की सिद्धि के लिए हो रहा है।

२ स्थायी रूप से नाड़ी का बढ़ना या फैलना।

शाम को महादेवभाई इधर-उधर पड़े लोहे के तारों को बटोरकर एक टोस्टर बनाकर लाये। बापू को दिखाया। बापू बहुत खुश हुए। बोले, "Necessity is the mother of invention." फिर बोले, "इसकी गुजराती क्या होगी ?" महादेवभाई ने जरा सोचकर कहा, "गरज ए शोधनी जनेता छे।"[१]

महादेवभाई रोज कहा करते हैं, "सरदार आजायंगे तो बापू को खूब हँसाया करेंगे। वह आजायं और उनके आने तक प्यारेलाल न आयें तो फिर हम बड़े जोर के साथ प्यारेलाल को मांग सकते हैं।"

मीराबहन आज फिर मुझसे कहने लगीं, "महादेवभाई को सिर की मालिश की जरूरत रहती है।" मैंने कहा, "मैंने पूछा था, पर उन्होंने करवाई नहीं।" वह कहने लगीं, "कल से तुम बापू का बिस्तर वगैरा लगा दिया करना। मैं उस वक्त महादेव के सिर की मालिश कर दिया करूंगी। मेरा खयाल है कि महादेव मुझसे मालिश करा लिया करेंगे।" मैंने मंजूर किया। बाद में मैं आज फिर महादेवभाई के पास गई और पूछा, "क्या आप सिर की मालिश करवायेंगे ?" बोले, "क्या जरूरत है ?" लेकिन आवाज से मुझे ऐसा लगा कि थके तो हैं और आधा मन कराने को भी है। मैंने कहा, "जरूरत तो आपको रहती ही है, घर पर भी तो आप मालिश करवाते ही हैं।"

बोले, "हां, बम्बई में लीलावती मल देती थी।" वह संकोच के कारण कहते नहीं थे और मुझे भी बहुत आग्रह करने में संकोच होता था। मैंने कहा, "जब मलवाना चाहें, आप मुझसे कह सकते हैं।" और मैं चली आई।

शाम को महादेवभाई कह रहे थे, "अगर बापू के उपवास की यह तलवार मेरे सिर पर लटकती न होती तो मैंने कुछ पौण्ड वजन कमा लिया होता और थोड़ा शक्ति-संचय कर लिया होता।"

१४ अगस्त' ४२

आज वाइसराय को पत्र गया। विचार हुआ कि पत्र के साथ बापू के भाषण का सार भी भेजना चाहिए। मगर वह तैयार नहीं था, इसलिए बापू ने पत्र तो भेज दिया और महादेवभाई से सार तैयार करने को कहा। नोट्स तो थे नहीं। सबकुछ जबानी तैयार करना था। शाम से पहले महादेवभाई ने वह बापू के सामने रख दिया।

---

[१] आवश्यकता खोज की जननी है।

बापू ने कर्नल भण्डारी से सरदार और भाई की खबर पुछवाई। उत्तर मिला कि सरदार के बारे में कोई रिपोर्ट नहीं है, इसलिए तबीयत अच्छी ही होगी। भाई यहां हैं या नहीं, इसका उन्हें पता नहीं था।

महादेवभाई आज फिर कहने लगे, "अबकी मैं अपने साथ कुछ सामान ही नहीं लाया। दिल होता है कि गीतांजलि भी होती तो उसके अनेक गीतों का गुजराती अनुवाद ही कर डालता।" मैंने कहा, "चलिये, काम नहीं लाये हैं तो मुझीको कुछ सिखा दिया कीजिये न!" बोले, "मैं तुम्हें क्या सिखाऊंगा। तुम्हीं मुझे थोड़ी-सी दवा-दारू सिखादो।" मैंने कहा, "अच्छी बात है, आप दवा-दारू सीखिये और मुझे दूसरी चीजें सिखा दीजिये।"

मुझे कल से थोड़ा जुकाम था और आज तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब थी। बुखार-सा लग रहा था। शाम को महादेवभाई बापू के लिए रस निकाल रहे थे। मुझसे कहने लगे, "तुम भी आज रस पीओ।" जबसे महादेवभाई ने बताया था कि जेल में फल हमारे लिए नहीं आते हैं, मैंने फल नहीं लिये थे। महादेवभाई बहुत इसरार करने लगे। मैंने टालने की कोशिश की। कहा, "मुझे रस पीने की जरूरत नहीं मालूम होती।" मैं दूसरे कमरे में गई। लौटकर देखती हूं तो महादेवभाई ने रस का आधे से ज्यादा गिलास भरकर मेरे लिए तैयार रखा था। उसे गरम होने भी रख दिया था। कहने लगे, "नमक और नीबू के साथ गरम रस गले को बहुत फायदा पहुंचाता है।" मैं रस पीने बैठ गई। अंगीठी जल रही थी। महादेवभाई ने भी अपने लिए टोस्ट सेंक लिये और उसी समय बैठकर खा लिये। घूमते समय आज महादेवभाई बापू को साबरमती-आश्रम की किताबों के सम्बन्ध में कुछ कहते रहे। बापू ने आश्रम की पुस्तकें महादेवभाई को सौंपी थीं और उन्होंने उनकी एक सुंदर लाइब्रेरी बनाली थी।

प्रार्थना में महादेवभाई ने आज तुकाराम का 'जे का रंजले गांजले, त्यांसी, म्हणे जो आपुले'—अभंग गाया और बाद में उसका अर्थ भी समझाया। उन्होंने बताया कि इसी अभंग के जरिये सबसे पहले उनका तुकाराम के साथ परिचय हुआ था। गोखले ने एक जगह लिखा है कि एक बार वह रानडे के साथ यात्रा कर रहे थे। सवेरे गाने की आवाज सुनकर जाग उठे। रानडे ध्यानावस्थित होकर 'जे का रंजले गांजले' अभंग गा रहे थे। प्रार्थना के बाद महादेवभाई ने 'रीडर्स डाइजेस्ट' में से 'द अमेजिंग मि० क्रिप्स' (हैरतअंगेज क्रिप्स) नामक एक लेख बापू को पढ़कर सुनाया।

सोने का समय हुआ। मीराबहन कहने लगीं, "तुम्हें सोजाना चाहिए। बापू के सिर की मालिश नहीं करनी चाहिए। तुम्हें आराम मिलेगा और बापू जुकाम की छूत के खतरे से बचेंगे।" मुझे तो आराम की इतनी जरूरत नहीं थी। मगर मैं बापू को अपना जुकाम दूं, यह कैसे हो सकता था? इसलिए मैंने महादेवभाई से कहा कि वह बापू के सिर की मालिश करदें।

बापू पाखाने गये हुए थे। उस समय महादेवभाई सरोजिनी नायडू के साथ बात कर रहे थे। बाद में सरोजिनी नायडू ने मुझे बताया कि कैसे उस रात पहली ही बार महादेवभाई उनको अपने बापू के पास आने का किस्सा सुना रहे थे। किस तरह पहले बापू ने उन्हें वकालत छोड़ने से मना किया था और फिर कैसे एक दिन उन्हें बापू का एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें बापू ने उन्हें बुलाया था। एक बार कलकत्ता में मुझे भी महादेवभाई ने यह सारा किस्सा सुनाया था। उन्होंने कहा, "फिर मुझे बापू का एक पोस्टकार्ड मिला। उसमें एक ही वाक्य था, 'हुं तुमने मारी सोड़मां इच्छुं छुं',[1] और बस मैं चला आया!" यह कहते समय उनकी आंखों में प्रेम के आंसू छलक आये थे।

मेरे जाने के बाद बात फिर बापू के उपवास पर आकर रुकी। आजकल महादेवभाई इसके सिवा दूसरी किसी चीज का ज्यादा देर तक विचार ही नहीं कर सकते। कहने लगे, "बापू के हरिजन-उपवास के दिनों में पंडित सातवलेकर ने एक पंचांग भेजा था, जिसमें करीब एक साल पहले से बापू के उपवास की निश्चित तारीख दी हुई थी। अबकी फिर उन्होंने उनसे वह पंचांग मंगवाया। उनका उत्तर आया कि वह खुद पहले से इस पंचांग की तलाश में थे। १९४२ तक तो उसमें किसी उपवास का जिक्र नहीं था। उसके बाद वह पंचांग छपना ही बंद होगया था।

इसपर सरोजिनी नायडू महादेवभाई को अपने एक मित्र की बात सुनाने लगीं। उनके पास एक विशिष्ट अन्तर्दृष्टि थी, जिससे उन्हें भविष्य में और दूसरी जगह होनेवाली बातों का पता चल जाता था। सरोजिनी नायडू ने उनके ऐसे कई किस्से सुनाये। एक बापू के हिंदू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए किये गए उपवास के बारे में था, दूसरा किसीके मरने के बारे में। इसी तरह जहाजों के डूबने आदि के किस्से थे। महादेवभाई बापू का सिर मलने आये तो इनमें से कुछ किस्से उन्हें सुनाने लगे। मैं

---

[1] मैं तुम्हें अपनी गोद में चाहता हूं।

अपनी खटिया पर पड़ी-पड़ी सुन रही थीं। मैंने कहा, "मुझे भगवान अन्तर्दृष्टि की यह विभूति दें तो भी मैं इसे लेने से इन्कार करदूं। पहले से ही आदमी दुःख आने-वाला है यह जानकर दुःखी क्यों हो?" भगवान हँस रहा होगा! अगर अगले दिन सुबह की घटनाओं को हम जानते होते तो उस रात कौन सोनेवाला था?

: ८ :

महादेवभाई का अवसान

१५ अगस्त '४२

प्रार्थना में बापू और मैं, दो ही सुबह उठा करते हैं। महादेवभाई उठना चाहते हैं, मगर रात में नींद टूट जाती है तो फिर चार बजे नहीं उठ पाते। आज सुबह भी मैंने और बापू ने प्रार्थना की। प्रार्थना पूरी करके हम लोग वापस अपने बिस्तरों पर गये, इतने में महादेवभाई उठे। बा से प्रार्थना के बारे में पूछने लगे। बा ने उत्तर दिया, "हां, अभी-अभी खतम हुई।" आज महादेवभाई का विचार प्रार्थना में आने का था, मगर उन्हें कोई आध घंटे की देर होगई। इससे वह न आ सके। छः बजे बापू उठकर आये तो महादेवभाई ने उनके लिए रस निकालकर तैयार रखा था। बाद में जाकर टोस्ट सेंके, चाय बनाई। सरोजिनी नायडू स्नान करके निकलीं तो मेज पर चाय आदि सब चीजें सजी हुई थीं। टोस्ट को काट-सेंककर खूब सुंदर ढंग से लगा दिया था और खुद हजामत बनाकर वहां बैठे थे। एक दिन बापू मुझसे पूछ रहे थे, "तुम दोनों में कौन अच्छे टोस्ट बनाता है, तू या महादेव?" आज मैंने महा-देवभाई से कहा, "महादेवभाई, उस दिन बापू के पूछने पर मैं यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी कि आप मुझसे ज्यादा अच्छे टोस्ट बनाते हैं। मगर आज मुझे यह स्वीकार करना ही होगा और आपके सामने हार माननी ही पड़ेगी। सेंक-साक-कर आपने तो आज इनको इतने सुंदर ढंग से सजा भी दिया है!" महादेवभाई कहने लगे, "मुझे समय मिले तो मैं सबकुछ कर सकता हूं; लेकिन रोज रात को नींद अच्छी नहीं आती। सुबह देर से उठता हूं तो समय नहीं रह जाता। आज जल्दी उठा था, इसलिए इतना सब काम कर सका।"

इतने में सरोजिनी नायडू आईं। वह भी महादेवभाई को शाबाशी देने लगीं।

महादेवभाई हँसने लगे। बोले, "हां, अब मुझे आसानी से खानसामा की नौकरी मिल सकती है।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "हां, बापू की गृहस्थी में। इस गृहस्थी में तुम क्या नहीं हो ?" महादेवभाई मेरे पास ही बैठे नाश्ता कर रहे थे। मैंने देखा कि उनकी प्लेट में एक टोस्ट पड़ा है, लेकिन उन्होंने बीच में जो प्लेट रखी थी, उसमें से एक टुकड़ा और उठा लिया। मैं समझी, बापू महादेवभाई को कवि कहते हैं। बातों में भूल गये होंगे कि उनकी अपनी प्लेट में भी टोस्ट पड़ा है। इसलिए वह टोस्ट मैंने उठा लिया। लेकिन महादेवभाई ने तो उसे खाने के इरादे से ही रखा था। मैं वापस रखने लगी तो मना किया। बोले, "नहीं, अब तुम्हीं खाजाओ।" कहावत मशहूर है कि दाने-दाने पर मोहर होती है। महादेवभाई का हिसाब खतम हो चुका था, सो उनकी प्लेट में सामने रखा हुआ टोस्ट भी उठ गया।

महादेवभाई की हजामत का जिक्र करते हुए सरोजिनी नायडू बोलीं, "आज जब मैं नहाने गई, मैंने महादेव को बड़े आईने के सामने बैठा देखा। वह हजामत बना रहे थे, अपनी मूंछों को छांट रहे थे और नाखून काट रहे थे।" मैंने मन-ही-मन सोचा, "अरे, आज महादेव को यह हो क्या गया है ? अचानक उनको आज इस प्रकार सजने की कहांसे सूझी ?" मगर यह तो कुदरत ही उनसे तैयारी करवा रही थी—

करले सिंगार चतुर अलबेली,
साजन के घर जाना होगा।

जब मैं बापू के साथ घूमने को निकली तो बगीचे के सामने के कोने से महादेव-भाई निकलकर आये और कहने लगे, "लकड़ी की जाली का यह काम नया है, इसका दूसरा सबूत मुझे मिला है। यह देखिये, लकड़ी की चीपों का यह ढेर लगा पड़ा है। अब मैं इसका ठीक-ठीक उपयोग करा लूंगा।"

घूमते समय महादेवभाई वल्लभभाई की बातें सुनाने लगे। बताते थे कि वल्लभ-भाई कपड़ों के बारे में कितने शौकीन थे। वह बहुत सफल बैरिस्टर थे। महीने में आठ-दस दिन ही अदालत जाते थे। बाकी वक्त क्लब में बैठकर 'ब्रिज' खेला करते थे। तिसपर भी महीने में हजार-पंद्रहसौ रुपये कमा लेते थे। एक बार वह एक दोस्त के साथ बैठकर 'ब्रिज' खेल रहे थे। दोस्त के हाथ में पत्ते थे। एकाएक दोस्त ने पीछे हटकर अपना सिर कुर्सी की पीठ पर टिका दिया। पत्ते हाथ ही में रह गये और उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। तबसे वल्लभभाई को ताश अच्छे नहीं लगते।" हम सब सुन रहे थे। कौन जानता था कि दो घण्टे के अंदर महादेवभाई का भी यही हाल होने

वाला है !

आज महादेवभाई बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे। बापू ने नींद के बारे में पूछा तो खुश होकर कहने लगे, "आज पहले दिन ही गहरी नींद आई। इसलिए जल्दी उठ भी सका और अपना सब काम सवेरे ही कर लिया। मैं तो आज प्रार्थना में भी शामिल होनेवाला था, लेकिन ज़रा-सी देर होगई। प्रार्थना समाप्त हुई कि मैं उठा।" वह बहुत उत्साह में थे। दिन अच्छा शुरू हुआ है, इससे खुश थे। बापू कहने लगे, "सो तो है ही। तुम्हारी नींद सुधर जाय तो सब ठीक होजाय।" फिर इधर-उधर की बातें करते रहे। आज बगीचे की सफाई रोज से ज्यादा मुस्तैदी के साथ होरही थी। महादेवभाई कहने लगे, "आज इन्सपेक्टर जनरल आनेवाले हैं, इसीलिए यह सब सफाई हो रही है। मैंने कहा, "इन्स्पेक्टर जनरल से मेरे लिए कुछ स्वास्थ्य-संबंधी अखबार मांग लीजियेगा।" बोले, "तुम खुद ही क्यों नहीं मांग लेतीं ?" मैंने कहा, "शायद उस वक्त मैं मालिश में रहूं, इसलिए आपसे कहा है।" बातों-बातों में मैंने कहा, "महादेवभाई, एक तरह से यह जेल अच्छी है। बापू भी बहुत थक गये थे, आप भी थके हुए थे। यहां जबर्दस्ती का आराम मिल रहा है। बाहर जाने के समय तक आप और बापू बाहर के काम के लिए काफी शक्ति का संग्रह कर लेंगे।" इस-पर वह बहुत गंभीर होकर मेरी ओर देखने लगे और बोले, "सो मैं नहीं जानता।"

घूमकर हम लोग ऊपर आये। मैं मालिश के लिए बापू के साथ चली गई। इतने में आवाज से पता चला कि इन्सपेक्टर जनरल आगये हैं। मैं कमरे में कोई चीज लेने गई। महादेवभाई सरोजिनी नायडूवाले गुसलखाने में से निकल रहे थे। बगल में 'आर्ट ऑव लिविंग' (जीवन-कला) नाम की किताब थी; लेकिन वह चुप-चाप चले गये। यह कुछ असाधारण-सी बात थी। नहीं तो उनसे कहीं भी मिलें कुछ तो वह कहते ही थे। उनका यह भी ख्याल रहता था कि भाई यहां नहीं हैं, इस-लिए मेरेलिए भाई की कमी को जितना पूरा कर सकें, करें। खाने के समय भी हमेशा मेरी राह देखा करते थे।

मेरे आने से पहले बापू के खाने के बरतन और उनके कपड़े कैदी धोते थे। महादेवभाई कभी अपने कपड़े खुद धोते, कभी-कभी धुलवा लेते थे। मीराबहन अक्सर अपने कपड़े खुद धोती थीं। मीराबहन ने बताया कि कैदी लोग बापू का काम करते खुश होते हैं तो उन्हें करने देना चाहिए। बापू की बातों से मैं समझी कि उन्हें कैदियों और सिपाहियों से सेवा लेना पसंद न था। कहते थे, "मैं नहीं चाहता

कि वे लोग हमें अपना सरदार समझें। हम भी उन्हींके जैसे कैदी हैं। मुझे तो अपना काम खुद कर लेना या अपने साथियों से करवा लेना ही प्रिय है।" इसलिए मैंने बापू के बरतन खुद साफ करने शुरू कर दिये। कपड़े तो अपने मैं धोती ही थी, बापू के भी धोने लगी। बापू स्नान करके निकल आते तब मैं कपड़े धोती और स्नान करती थी। महादेवभाई बापू को खाना लाकर देते और फिर मेरी राह देखते रहते।

दोनों गुसलखानों के बीच जो दीवार है, वह छत तक नहीं गई, इससे आवाज एक गुसलखाने से दूसरे में आसानी के साथ पहुंच सकती है। दाहिने हाथवाला गुसलखाना बापू इस्तेमाल करते हैं और दूसरे भी चाहें तो कर सकते हैं। इस गुसलखाने में कमोड के ऊपर बत्ती है। बापू हमेशा पाखाना के समय में पढ़ते हैं, इसलिए उन्होंने यह गुसलखाना पसंद किया है, वर्ना यहां एक आदमकद आईना भी है जो बापू के काम की चीज नहीं। दूसरे गुसलखाने का इस्तेमाल सरोजिनी नायडू करती हैं और प्रायः बा और मीराबहन भी। करीब हर रोज ही मैं स्नान करने पर होती या कपड़े पहनती होती, तभी महादेवभाई सरोजिनी नायडूवाले गुसलखाने से निकलकर पुकारते, "ए सुशीला, कितनी देर है तुमको?" पहले ही रोज उन्हें बहुत भूख लग रही थी। बापू ने आग्रह करके मेरे निकलने से चार-पांच मिनट पहले उन्हें खाने के लिए भेज दिया। बाद में बापू ने मुझे पुकारा और कहने लगे, "तुम बहुत वक्त लेती हो। तुम जानती हो कि महादेव कबसे तुम्हारी राह देख रहा है?" मैंने महादेवभाई से कहा, "महादेवभाई आप मेरी राह न देखा कीजिये। खाने के लिए समय पर चले जाइये। मैं आपके बाद आजाऊंगी।" दूसरे दिन बापू के स्नानघर से निकलने के समय मैंने खास तौर पर जाकर कहा, "आप खाना खाने जायं। मुझे देर लगेगी।" लेकिन मैं स्नान करके निकली तो देखा, महादेवभाई मेरी राह देखने बैठे थे! वह जानते थे कि मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगता। खाने की मेज सरोजिनी नायडू के कमरे में है और उनसे मेरा परिचय तो यहां आने से पहले नहीं के बराबर ही था। इसलिए महादेवभाई खाते समय मेरा साथ देते और दूसरे जिस काम में भी साथ दे सकें देते थे।

महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में जाकर इन्स्पेक्टर जनरल से बातें करने लगे। मैं बापू की मालिश कर रही थी। बातों के बीच-बीच में हँसी की आवाज आती रहती थी। मैंने एक पैर पूरा करके दूसरा पैर शुरू किया, इतने में सरोजिनी

नायडू ने मुझे पुकारा, "सुशीला, यहां आओ।"

मैंने सोचा, "इन्स्पेक्टर जनरल सबको देखना चाहता होगा। दूसरा पैर जल्दी से खतम करलूं और पोंछकर ही जाऊं।" लेकिन इतने में तो दूसरी आवाज आई और साथ ही बा भागती-हांफती आकर बोलीं, "महादेव को कुछ होगया है। उन्हें फिट आगया है। मिरगी-सी दिखती है।" मैंने बापू का पांव छोड़ दिया। भागती हुई गई। सरोजिनी नायडू ने फिर पुकारा। मैं उसके कमरे में पहुंची। इसमें ज्यादा-से-ज्यादा एक मिनट लगा होगा।

जाकर देखती हूं तो महादेवभाई सरोजिनी नायडू के कमरे में पलंग पर लेटे हुए थे, बेसुध। चेहरे पर ऐंठन होरही थी। मेरे देखते-देखते सिर से पैर तक जोर का एक झटका-सा लगा। मैंने नाड़ी देखी। नहीं मिल रही थी। रक्त का दबाव देखने की कोशिश की, वहां भी कुछ नहीं, हृदय पर स्टेथास्कोप रखा—खामोशी! हृदय की धड़कन ही नहीं सुनाई पड़ रही थी। मैंने कहा, "बापू को बुलाओ। ये जा रहे हैं।" ओठों पर कुछ झाग-से थे। सांस कुछ रुक-रुककर चल रही थी। मैं अपनी दवा की पेटी लाई; लेकिन वह खुलती ही नहीं थी। मैं उसे खोलने की कोशिश कर रही थी, साथ ही हिदायतें भी दे रही थी कि ब्राण्डी लाओ, हृदय के लिए दवा दो।

हाथ-पैर ठंडे होने लगे थे। दवा कोई मौजूद न थी। भंडारी लेने गये थे। सरोजिनी नायडू ने अ-द-कोलोन और शहद दिया और कहा, "यह ब्राण्डी का काम करता है।" मैंने तो ब्राण्डी मालिश के लिए मांगी थी। लेकिन जब सरोजिनी नायडू ने यह मिश्रण दिया तो उसे मैंने महादेवभाई के मुंह में डाल दिया। निगलने की ताक़त अभी उनमें कायम थी। निगल गये। मिस्टर कटेली ने दवा की पेटी का ताला तोड़कर उसे खोल दिया था। उसमें से कैल्शियम ग्लुकोनेट ही निकला। हृदय को बल पहुंचानेवाली कोई भी दवा न थी। मैं दिल्ली से इतनी जल्दी में निकली थी और बंबई में भी ऐसी भाग-दौड़ रही कि अपनी पेटी में वक्त-जरूरत की दवाओं का संग्रह कर ही नहीं पाई थी। मैंने महादेवभाई का हाथ उठाया, बिलकुल ढीला पड़ा था। नस में कैल्शियम ग्लुकोनेट का इंजेक्शन दे दिया। इतने में भंडारी ब्राण्डी की बोतल लेकर आये। मैंने कहा, "कार्डिएक स्टिम्युलण्ट्स कहां है ?" तो फिर नीचे भागे। इस बीच मैंने ब्राण्डी मुंह में डाली। लेकिन निगलने की ताकत बहुत मंद पड़ गई थी। काफी देर तक वह मुंह में ही पड़ी रही। बाद में बापू ने कहा, "मैं

तो तेरा हाथ पकड़ लेना चाहता था, मगर फिर रहने दिया, तेरी जगह कोई और होता तो मैं ब्राण्डी हरगिज नहीं देने देता !"

महादेवभाई को उल्टी होने लगी। मगर उसे बाहर निकालने में मुश्किल पेश आई। मैंने जबड़े को सहारा दे रखा था। सिर एक तरफ कर दिया, ताकि हवा की नली में उल्टी का कोई हिस्सा न चला जाय। बापू तो मेरे बुलवाने के बाद दो-तीन मिनट में ही आगये थे। वह कभी महादेवभाई का हाथ पकड़ते, कभी सिर पर हाथ रखते। वह उनकी आंख की तरफ टकटकी लगाकर खड़े थे। कहते थे, "मुझे विश्वास था कि एक बार भी महादेव मेरी ओर देख लेगा तो उठकर खड़ा हो जायगा।"

जब सरोजिनी नायडू ने मुझे पुकारा था तो बापू समझे थे कि भण्डारी से मिलने के लिए बुला रही हैं। जब वह बुलाने आईं तब भी बापू ने यह नहीं सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है। वह कुछ पढ़ रहे थे। यही समझे कि भण्डारी के कारण ही मुझे बुलाते हैं। फिर जब मेरे कहने पर उन्हें बुलाने गये तब भी वह यही समझे कि भण्डारी से मिलने के लिए ही उन्हें बुलाया जा रहा है। बाद में जब यह सुना कि महादेवभाई को कुछ हुआ है, तब भी वह यह नहीं समझे कि कोई गंभीर घटना हुई है। यही खयाल रहा कि जैसे पहले कभी-कभी चक्कर आ जाता था, वैसे ही अब भी आया होगा। जरा देर में अच्छा हो जायगा।

सरोजिनी नायडू ने बापू को बताया कि कमरे के बीच में महादेवभाई खड़े थे। भण्डारी और सरोजिनी नायडू दोनों कुर्सियों पर बैठे थे। महादेवभाई कुछ बातें कर रहे थे। मजाक चल रहा था। सब-के-सब खूब हँस रहे थे। इसी हँसी की आवाज हमें बाहर सुनाई पड़ रही थी। कुछ देर बाद महादेवभाई ने भंडारी से मेरेलिए स्वास्थ्य-संबंधी अखबार मांगे और फिर एकाएक कहने लगे, "मुझे चक्कर आता है।" भण्डारी ने कहा,"बदहजमी होगी, लेट जाइये।" महादेवभाई चलकर तीन-चार गज के फासले पर पड़े पलंग पर जाकर लेट गये। भण्डारी ने नाड़ी देखी तो वह बहुत तेज और कमजोर थी। उन्होंने सरोजिनी नायडू से कहा कि वह मुझे बुलायें और खुद फोन करके सिविल सर्जन को बुलाने ऊपर गये। महादेवभाई जब बात कर रहे थे, गरम वास्कट पहने हुए थे। खाट पर लेटते समय उन्होंने उसे निकाल डाला होगा। जब मैं पहुंची, वह आधी निकली हुई थी।

उल्टी होने के साथ ही वह कराहने भी लगे। भयानक कराह थी, मानो किसी गुफा में से निकल रही हो! कराहट न बापू से सही जाती थी और न हममें से किसी-

से । सांस रुक-रुककर चलती थी। ऐंठन तो जोर की नहीं थी, मगर कंपकंपी बीच-बीच में होती थी । एक बार तो चेहरा बिल्कुल टेढ़ा होगया, मानो एक हिस्से को लकवा मार गया हो। मेरे मन में आया—क्या इस फिट के कारण यह अपंग होकर रह जायंगे ? किन्तु महादेवभाई के समान सुकृत आत्मा अपंग क्यों होने लगा। एकाएक फिर एक जोर का झटका-सा लगा । जबड़ा इतने जोर से भिड़ गया कि मुझे लगा कि हड्डी टूट जायगी । उस वक्त मैं जबड़े को पकड़े हुए थी । फिर वह ढीला पड़ गया । कराहना कम हुआ । सांस और धीमी पड़ी । मैंने बापू से कहा, "बापू, जमनालालजी की तरह ये तो जारहे हैं ।" जब मैंने कहा, "जा रहे हैं" तब कहीं बापू समझे कि सचमुच स्थिति गम्भीर है और महादेवभाई जा रहे हैं। एक बार तो ऐसा आभास हुआ कि उन्होंने आंखें खोली हैं और बोलने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने खुश होकर कहा, "ठीक है । वह संभल रहे हैं।" लेकिन वह निरा आभास ही था। फिर से आंखें बंद होगईं । सांस तो रुक-रुककर चलती ही थी, और भी धीमी पड़ गई । शरीर काला पड़ने लगा।

बापू तो सारा समय टकटकी लगाकर उनकी आंख की तरफ ही देख रहे थे । अपनी सारी शक्ति एकाग्र करके इसी बात में लगा रहे थे कि एक बार महादेव की आंख उनकी आंख से मिल जाय तो महादेव उठ बैठें । उन्होंने बताया कि एक बार तो आंख जरा खुली भी थी, लेकिन पथराई हुई थी । उसमें देखने की शक्ति नहीं थी । बोलने की तो कोशिश भी वह कैसे करते ! सिर्फ कराह ही सुनाई देती थी ।

लिखने में इतना समय लगा है, लेकिन यह सारा व्यापार तो विद्युत-वेग से हुआ था । मुझे तो शुरू से अखीर तक एक ही क्षण-सा लगा । इधर मैंने ब्राण्डी का चम्मच मुंह में डाला और उधर भंडारी दवा लेकर पहुंचे । मैं इंजेक्शन देने जा रही थी कि उन्होंने रोका । कहा, "एक नस में भी दो ।" सो एक पुट्ठे पर दिया, एक नस में ।

महादेवभाई अब पसीने से भीग रहे थे । शुरू से ही उनका चेहरा और हाथ संगमरमर की तरह सफेद पड़ गये थे। उस सफेद संगमरमर पर अब पसीने के मोती छिटक आये । इंजेक्शन का जरा भी असर नहीं हुआ । नाड़ी तो बन्द ही थी, श्वास भी बंद होगया । सिविलसर्जन आये तबतक पंछी उड़ गया था । सब खेल खतम हो चुका था । पूछने लगे, "क्या 'हाइ ब्लडप्रेशर' था ?" मैंने कहा, "नहीं ।" बोले, "तो कारोनरी थ्रोम्बोसिस होगा ? क्या इन्हें कभी दर्द उठता था ?" मैंने कहा,

"नहीं, लेकिन उन्हें चक्कर आया करते थे। इस हमले के वक्त भी कॉरोनरी थ्रोम्बोसिस का मुख्य लक्षण दर्द मौजूद नहीं था।" "मुझे अफसोस है—" कहकर वह चले गये।

: ६ :

अग्नि-संस्कार

जब मैंने देखा कि सांस भी बंद होगई है तो मैं दूसरे कमरे में चली गई कि कहीं कोई मेरी आंखों में पानी न देखले। मगर बा पीछे-पीछे आईं और बोलीं, "महादेव का क्या हाल है?" मैं क्या कहती? चुप रह गई। बा अधीर हो उठीं। बड़ी हिचकिचाहट के बाद, मैंने बा के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "बा, वह तो गये!" बा चीख उठीं, "एं, महादेव गये? कहां गये? अरे महादेव, तुम कहां गये?" वह फूट-फूटकर रोने लगीं। बा के पीछे-पीछे बापू भी आपहुंचे। उन्होंने बा को दिलासा दिया। हम सब महादेवभाई के पास (वह अब कहां थे? उनके शव के पास) लौटे। महादेवभाई का एक पैर सीधा था, दूसरा मुड़ा हुआ। मैंने उसे सीधा किया। आंखें आधी खुली थीं, उन्हें बंद किया। क्या कभी स्वप्न में भी मुझे यह विचार आसकता था कि महादेवभाई की आंखें मुझे बंद करनी पड़ेंगी? उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी, मानों कोई योगिराज समाधिस्थ होकर पड़े हों! पास ही उनका अपना तौलिया पड़ा था। उससे मैंने उनका मुंह साफ किया था। बापू कहने लगे, "महादेव की जेबें खाली करले।" मेरेलिए यह कठिन काम था। उनकी जेब में हाथ डाला तो मुझे लगा कि हाथ टूट जायगा! क्या महादेवभाई सचमुच चले गये? और मैं उनकी जेबें भी खाली कर रही हूं! कुर्ते की जेबें खाली थीं। वास्कट आधी उनके नीचे थी। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे उनके नीचे से निकाला। एक जेब में से पेन निकला, दूसरी से गीताजी। बापू कहने लगे—'वैष्णव जन' गाओ, रामधुन चलाओ। मैं अपनी भजनावली निकालकर लाई। सरहद से लौटते समय दिल्ली के स्टेशन पर जब मैं और भाई उनसे (महादेवभाई से) अलग हुए तब उन्होंने यह भजनावली मुझे दी थी। उसमें उन्होंने बीच-बीच में कोरे पन्ने लगवाये थे। देने से पहले, रातभर जागकर, उन्होंने उस भजनावली में अपने हाथ

से वे भजन लिख दिये थे, जो मुझे प्रिय थे, पर भजनावली में नहीं थे। उनकी सूची भी तैयार करदी थी। आज वे सब स्मृतियां ताजी हो उठीं। यह भजनावली मैंने महादेवभाई के सामने निकाली होती, तो उन्हें अच्छा लगता। अब वह कभी यह जान न सकेंगे कि उनकी दी हुई भजनावली इस जेल में आ पहुंची है। मगर अब यह सब सोचना तो व्यर्थ था। महादेवभाई की खाट के पास बैठकर प्रार्थना की। गीताजी के अठारहवें अध्याय का पाठ किया।

बापू ने कर्नल भण्डारी से कहा, "वल्लभभाई और खेर वगैरा को यरवदा से मेरे पास भेज दीजिये। बाद में मैं विचार करूंगा कि मुझे शव किसके हवाले करना चाहिए।" भण्डारी चले गये। उन्हें जाकर सरकार को खबर देनी थी और इजाजत लेनी थी कि आगे क्या करना चाहिए।

बापू कहने लगे, "अब मैं जाकर स्नान करलूं। वल्लभभाई वगैरा के आने से पहले मैं तैयार हो जाना चाहता हूं।" वह स्नान करने गये, लेकिन फिर तुरंत वापस आ गये। बोले, "नहीं, मैं पहले महादेव को नहला दूं, फिर खुद स्नान करूंगा।"

मेजर अडवानी (जो कर्नल भण्डारी के साथ आ गये थे और अभीतक बैठे थे), मि० कटेली और कुछ सिपाहियों ने मिलकर शव को उठाया और गुसलखाने में ले जाकर बापू ने उसे टब के पास रखवा लिया। दैवयोग से महादेवभाई का सिर उत्तर की तरफ था। बाद में पता चला कि हिन्दू रिवाज के मुताबिक शव का सिर उसी तरफ रखा जाता है। बापू ने उनके कपड़े उतारने को कहा। धोती तो आसानी से निकल गई, मगर कटेली और अडवानी कुर्ता नहीं निकाल सके। वे उसे इतने भद्दे ढंग से निकालने की कोशिश कर रहे थे कि मुझसे न रहा गया। मैं खुद जाकर मदद करने लगी और कुर्ता निकाला। शरीर इतना गर्म था कि मेरा सिर घूमने लगा। बोली, "बापू, महादेवभाई कहीं जिंदा तो नहीं हैं?" बापू बोले, "सो तो तू जान।" मैं फिर से स्टेथोस्कोप उठाकर लाई। लेकिन यह सब मूर्खता थी। हृदय की धड़कन तो कभी की बंद हो चुकी थी। आईना लाकर महादेवभाई की नाक के सामने रखा। कुछ नहीं था। अडवानी से कहा, "आप भी जांच लें।" मगर वहां कुछ होता तब न? डॉक्टर होते हुए भी मैं अपनी समता खो बैठी थी। बापू कहने लगे, "जिंदा है, तो अभी गरम पानी डालने से उठ बैठेगा।" सिपाही तो चले ही गये थे। अडवानी और कटेली ने पूछा, "हम जायं?" बापू ने कहा, "हां, जाइये।" मैंने पूछा, "मैं भी?" बोले, "हां!" मैं आकर कमरे

में खड़ी हो गई। मगर मैंने देखा कि पानी का डिब्बा उठाते हुए बापू के हाथ जोर-जोर से कांप रहे थे और सारा शरीर भी सिर से पांव तक कांप रहा था। मुझे लगा, कहीं बापू गिर पड़ें तो ! इसलिए उनकी मनाही होते हुए भी में फिर उनके पास लौट गई। उन्होंने मुझे रहने दिया। सचमुच ही उन्हें मदद की जरूरत थी। शायद पहले वह समझे होंगे कि मैं खुद जाना चाहती हूं, इसलिए जाने को पूछ रही हूं।

मैंने पानी डालना शुरू किया। बापू तौलिये से रगड़-रगड़कर महादेवभाई का शरीर साफ करने लगे। मुंह पर पानी डाला, तो मजबूती से भिड़े हुए ओंठों पर पानी पड़ने से ऐसा आभास होने लगा, मानो वह खुद जोर-से ओंठ बंद कर रहे हों—ठीक उसी तरह, जिस तरह स्नान करवाते समय बच्चे अपना मुंह और आंख जोर से मींच लेते हैं। पानी पड़ते वक्त चेहरे पर मुस्कराहट का भी आभास होता था। बापू ने एक-एक अंग साफ किया। मैंने पैर साफ किये। महादेवभाई अकसर नंगे पांव घूमा करते थे, इसलिए तलवों में रंग-सा चढ़ गया था। बापू ने उसे देखा। बोले, "पांव बिल्कुल साफ होने चाहिए।" कैसा करुण दृश्य था ! पिता के हृदय की वेदना और प्रेम का वह सूचक था। मैंने तौलिये में साबुन लगाकर पैरों को अच्छी तरह घिसा। आखिर पैर साफ हुए। बापू कहने लगे, "अब तुम जरा उसे एक करवट पर लो, तो मैं इसकी पीठ साफ कर दूं।" महादेवभाई का शरीर वैसे भी भारी था। शव और भी भारी हो गया था। मैंने स्नानवाले टब का पिछली तरफ से सहारा लेकर बड़ी मुश्किल से उसे एक करवट पर किया। करवट बदलते समय मुझे सांस की-सी आवाज सुनाई दी। मैंने चौंककर कहा, "बापू, महादेव-भाई ने सांस ली है।" बापू हँसे। बोले, "तू पगली है, सब तेरी कल्पना है।" मगर वह मेरी कल्पना नहीं थी। करवट पर आने से नीचे का फेफड़ा दब गया था और इस बोझ की वजह से उसके अंदर की हवा बाहर निकली थी।

स्नान समाप्त हुआ। कल महादेवभाई ने आज स्नान के बाद पहनने के लिए अपने कपड़े धोकर रखे थे—उनमें से एक धोती मैं उठा लाई। तौलिया तो उल्टी पोंछने के काम आ चुका था, इसलिए बदन सुखाने को बापूजी ने दूसरा तौलिया मांगा। मेरी भाभी ने अपने सूत का एक तौलिया मुझे भेजा था। मेरा विचार था कि वह बापू के काम आये। बुढ़िया सुनेगी तो बहुत खुश होगी। लेकिन उसका दूसरा उपयोग लिखा था। मैंने बापू को वह तौलिया लाकर दिया। उससे

हमने महादेवभाई का शरीर पोंछा। अब शव को बाहर लाना था। मि० कटेली सिपाहियों को बुलाने लगे। मुझे लगा, भूरा और मगन कैदियों को बुलवाना चाहिए, उन्हें अच्छा लगेगा। भूरा और मगन आये। दोनों ने अकेले ही शव को उठा लिया। बापूजी के और श्रीमती नायडू के कमरों के बीच में एक छोटा कमरा है। इसीमें बैठकर महादेवभाई आज सुबह हजामत बना रहे थे। परसों शाम को यहीं बैठकर कात रहे थे और बहुत लगन के साथ गा रहे थे :

"मारी नाड़ तमारे हाथे हरि संभालजो रे,
दिवस रह्या छे टांचा वेला वालजो रे।"

—हे हरि तुम सम्हालना, मेरी नाड़ी तुम्हारे ही हाथ में है। अब दिन थोड़े ही रह गये हैं।

इस कमरे की कुर्सियां वगैरा निकलवाकर महादेवभाई के शव को यहीं रखा गया। बापू ने जेल की एक चादर नीचे बिछवाई और एक ऊपर ओढ़वाई। बोले, "He is a prisoner and he must go as a prisoner."[१] उनका चेहरा शांत था, मगर बहुत ही गंभीर और विचारमग्न। आवाज धीमी थी, किंतु किसीके सामने उन्होंने अपनी आवाज में कंपन या आंखों में आंसू नहीं आने दिये।

लाहौर में गिरधारीभाई ने मुझे चंदन का एक टुकड़ा दिया था। उसे वह बारडोली से लाये थे और सबको बांटा था। तभीसे वह मेरे 'हैण्डबेग' में पड़ा था। मैंने उसे मीराबहन को दिया। उन्होंने घिसकर उसका लेप तैयार किया। बापू ने वह लेप महादेवभाई के माथे और छाती पर लगाया। बगीचे से फूल इकट्ठे किये गये। मीराबहन ने या किसीने एक हार बनाया। बापू ने वह महादेवभाई को पहनाया। मीराबहन शव पर फूल सजाने लगीं। बापू स्नान करने गये। स्नान के बाद शव के पास आकर बैठ गये। मुझसे कहने लगे, "अब तुम भी स्नान कर लो। महादेव के कपड़े तुम धोना। ये किसी और से नहीं धुलवायेंगे।" जिस तौलिये से उन्होंने महादेवभाई का शरीर साफ किया था, उसीसे अपना किया और फिर वह मुझे दे दिया। बोले, "इसे धोकर महादेव के कपड़ों के साथ बाबला के लिए रख देना।"

मैं स्नान करके निकली, तो मीराबहन फूल सजा चुकी थीं। उठाने पर ये फूल

---

१ "वह कैदी है और उसे कैदी की तरह ही जाना चाहिए।"

हिल जायंगे, इस खयाल से मगन और भूरा अर्थी पर डालने के लिए फूलों की जाली बना रहे थे। बापू शव के पास बैठे गीता-पाठ कर रहे थे। बारहवें अध्याय से शुरू किया था। मैं आई, तो गीताजी मुझे दी। अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा किया।

इतने में भण्डारी आये। उनका चेहरा सूखा हुआ था। मुंह से आवाज नहीं निकलती थी। बापू ने पुछवाया, "वल्लभभाई आते हैं क्या ?" वह कहने लगे, "वह यहां नहीं हैं।" बापू ने फिर पुछवाया, "खैर ?" वह भी नहीं आ सकते थे। किसी-ने कहा, "एक लॉरी आई है और एक ब्राह्मण।" बापू चौंके, "किसलिए ?" किसीने उत्तर दिया, "यहां कुछ पूजा-पाठ कराना हो, तो उसके लिए।" बापू कहने लगे, "यहां का पूजा-पाठ हो चुका है।"

भण्डारी बापू के पास आये। वह सरोजिनी नायडू को आगे-आगे धकेल रहे थे। बापू ने पूछा, "क्या खबर लाये हैं ?" भंडारी हिचकिचाते हुए बोले, "मैंने सब इंतजाम कर लिया है।" बापू ने पूछा, "क्या इंतजाम किया है ? क्या मैं शव को मित्रों के हवाले कर सकता हूं ?" भंडारी फिर सरोजिनी नायडू को आगे धकेलने लगे। उन्हें खुद कहने की हिम्मत न होती थी। सरोजिनी नायडू ने बताया कि सरकार शव किसी-को देना नहीं चाहती। भंडारी खुद जाकर घाट पर जला आयेंगे। बापू कहने लगे, "तो क्या हममें से कोई शव के साथ जा सकते हैं ?" उत्तर मिला, "नहीं।" बापू ने पूछा, "तो क्या मैं यहां अपने सामने शव को जला सकता हूं ?" फिर बोले, "मैं लाश को आपके सुपुर्द कैसे करूं ? क्या कोई पिता अपने पुत्र की लाश अजनबी आदमियों के हाथ सौंप सकता है ?"[१]

भण्डारी फिर बंबई सरकार को फोन करने गये। बापू कह रहे थे, "श्रद्धानंद-जी के कातिल की लाश फांसी के बाद जनता को देदी गई थी। लोगों ने उसको शहीद बनाया। उसका जलूस निकला। उसमें से हिंदू-मुस्लिम फसाद भी खड़ा हो सकता था, मगर सरकार ने परवाह नहीं की। आज वह महादेव का शव नहीं देने देगी। मैं सोच रहा हूं कि क्या मुझे इस प्रश्न पर लड़ लेना होगा, या कड़ुआ घूंट पीकर रह जाना होगा। मैं इसी बात पर अड़ सकता हूं कि 'नहीं', शव को मित्र ही

१ "No father can hand over the body of his son to strangers."

जलायेंगे।' मगर यह महादेव की मृत्यु को राजनैतिक रंग देकर उससे फायदा उठाने-जैसी बात हो जायगी। पिता अपने लड़के की मृत्यु का ऐसा उपयोग कैसे कर सकता है ?"

सब लोग सांस रोककर इंतजार कर रहे थे कि भण्डारी क्या उत्तर लाते हैं। बाहर कटेली और अडवानी बैठे थे। भण्डारी ऊपर कटेली के कमरे से फोन कर रहे थे। मैंने कटेली और अडवानी को समझाने की कोशिश की कि भण्डारी पर जोर डालना चाहिए कि शव को यहां जलाने दें। बापू ने बहुत छोटी चीज की मांग की है। इसका जवाब भी नकार में मिला, तो उनपर क्या असर होगा, कौन जाने ? कहीं उपवास वगैरा पर पहुंच गये, तो हम सब मुश्किल में पड़ जायंगे। श्रद्धानंदजी के कातिलवाली बात भी कही। वे दोनों ऊपर चले गये। थोड़ी देर के बाद भण्डारी आये। शव को यहां जलाने की इजाजत मिल गई थी। सरोजिनी नायडू ने और बाद में कटेली ने कहा, "भण्डारी को मुश्किल से यह इजाज़त मिली।"

दाह-क्रिया के लिए जगह ढूंढनी थी। सरोजिनी नायडू, भण्डारी और अडवानी वगैरा जाकर जगह देख आये। तारों के बाहर नजदीक ही घास का एक खेत था। उसमें से घास निकलवाकर जगह साफ करवाई। पास में एक तरफ दो-तीन ऊंचे झाड़ थे। सामने पहाड़ियों का सुंदर दृश्य दिखाई देता था। महादेवभाई को यह जगह बहुत पसंद आती। घास साफ करके ब्राह्मण ने यहां थोड़ा जल छिड़का, पूजा-पाठ किया। हमारी सीढ़ियों के पास नीचे बगीचे में दरख्तों की टहनियां तोड़कर उनकी अर्थी बनाई जा रही थी। बापू शव के पास बैठे-बैठे या तो खुद गीताजी का पाठ करते थे या मुझसे करवाते थे। बा बापू के पास बैठी थीं। मीराबहन ने एक कटोरी में धूप, चंदन वगैरा जलाकर सिर के पास रख दिया था और वहीं उसके पास बैठी-बैठी उसमें कपूर और चंदन डालती जाती थीं। महादेवभाई का शरीर तो विशाल था ही, लेकिन इधर कुछ अर्से से वह गरदन को एक तरफ थोड़ा टेढ़ा करके चलते थे। शव बिलकुल सीधा पड़ा था इसलिए, और साथ ही शायद शरीर के स्नायुओं आदि के शिथिल हो जाने के कारण, वह जीते-जी जितने लंबे लगते थे, उससे ज्यादा लंबे इस वक्त लग रहे थे। चेहरे पर अपूर्व शांति थी, अपूर्व शोभा। बापू शव की बाईं ओर बैठे थे। मैंने देखा कि महादेवभाई की बाईं आंख आधी खुली थी। यह अकस्मात ही हुआ होगा। मैंने तो मृत्यु के बाद दोनों आंखें बंद कर दी थीं। आंख

फिर से कैसे खुल गई, मैं नहीं जानती। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपनी मृत अवस्था में भी महादेवभाई बापू के दर्शन करना चाहते हों।

बापू ने बारहवें से अठारहवें अध्याय तक का पाठ पूरा होने पर फिर पहले अध्याय से शुरू करने को कहा। पहला अध्याय पूरा हुआ। दूसरा आधा हुआ था कि इतने में ब्राह्मण महाराज ने आकर कहा, "सब तैयार है।" गीता-पाठ बंद हुआ। मुख्य ब्राह्मण के सिवा चार और ब्राह्मण थे। सबने कुर्ते उतारे। जनेऊ दाहिनी तरफ किये और शव को मंत्र पढ़ते-पढ़ते अर्थी पर रखा। बाद में शव को रस्सी से बांधने लगे। मैंने कभी देखा नहीं था कि शव को अर्थी पर कैसे रखा जाता है। रस्सी से बांधना मुझे चुभा। मैं रोकने ही वाली थी कि बापू ने टोक दिया। बोले, "शव को बांधना ही पड़ता है।" ब्राह्मण ने एक शाल शव पर डाला, जो मिल का बना था। मैंने बापू से पूछा, "क्या मिल की चादर डालनी है?" कहने लगे, "बस चलने दो।" उन्होंने सोचा होगा कि कैदी की हैसियत से हमें इन बातों की नुक्ताचीनी करने का हक नहीं है।

अर्थी उठाकर सीढ़ी से नीचे लाये। अब उसे उठाकर कन्धों पर रखने लगे। छः आदमियों ने मुश्किल से उसे कंधों पर उठाया। बाकी सब पीछे चले। बापू ने आग की हंडिया उठाई। वह बा को संभाल रहे थे। शव चिता पर रखा गया। बा के लिए दूर एक कुर्सी रखी गई। उनके लिए अग्निदान की क्रिया को देखना असह्नीय था। वह दुःख से पागल-सी हो रही थीं। आंसू-भरी आंखों से दोनों हाथ जोड़कर आकाश की ओर देखती थीं और बार-बार कहती थीं, "भाई तुं ज्यां जजे सुखी रहेजे। भाई, तुं सुखी रहेजे। तें बापूजी नी घणी सेवा करी छे। बधा ने सुख पहोंचाड्युं छे। तुं सुखी रहेजे।"[1] ब्राह्मण का पूजा-पाठ समाप्त हुआ। शव पर लकड़ियां रखी जाने लगीं। चेहरे पर लकड़ी रखने लगे, तो मैं और बापू यंत्रवत अपने-आप दो कदम आगे बढ़ गये। ब्राह्मण ने हाथ रोक लिया। अंतिम बार महादेवभाई का दर्शन करके हम लोग पीछे हटे। लकड़ियां चिन दी गईं। अंत में बापू ने उन्हें अग्नि दी। यों पहली आहुति पूरी हुई!

बापू करीब घंटा-डेढ़ घंटा तो खड़े ही रहे। फिर बहुत आग्रह करने पर कुर्सी पर बैठ गये। हमारी तरफ चिता चिनते हैं, तो नीचे भारी लकड़ियां रखते हैं, नीचे

[1] "भाई, तू जहां जाय, सुखी रहना। भाई, तू सुखी रहना। तूने बापूजी की बड़ी सेवा की है। सबको सुख पहुंचाया है। तू सुखी रहना।"

में पतली, ऊपर फिर भारी। यहां इन लोगों ने नीचे भारी लकड़ियां लगाईं, ऊपर सब पतली। ऊपर की लकड़ियां जल्दी में जलकर राख होने लगीं। मैंने दो-तीन बार कहा कि इतनी लकड़ी से शव पूरा नहीं जल सकता, मगर किसीने ध्यान नहीं दिया। मैं चिता को देख रही थी। अग्नि की ज्वाला में नीचे एक पीला-सा बिंदु नजर आ रहा था। धीरे-धीरे वह बड़ा होने लगा। जब ऊपर की लकड़ियां जलकर खतम होने लगीं, एकाएक उस पीले बिंदु की जगह पर अंतड़ियों का समूह बेचैनी के साथ उभड़कर इधर-उधर फैलता हुआ बाहर निकल आया। मैं बरबस बोल उठी, "बापू, अंतड़ियां !" दृश्य भयानक और बड़ा करुण था। दो-चार आदमी दौड़ते हुए गये और हमारी जलाने की लकड़ी में से लकड़ियां लाकर ऊपर डालीं। ज्वाला भड़क रही थी। सबके हृदय भरे थे। ऐसा लगता था, सब महादेवभाई के पीछे जानेवाले हैं। मैंने कटेली से कहा, "मान लीजिये कि हममें से कोई जिंदा बाहर न निकला, तो आपको यह जगह महादेवभाई के लड़के को दिखानी होगी।" अडवानी भी सुन रहे थे। ये लोग स्वयं बहुत दुखी थे। किसीकी तैयारी नहीं थी आज की इस घटना का सामना करने की !

कोई तीन घंटे बाद बापूजी शेष चिता को जलती रखने का भार ब्राह्मणों को सौंपकर वापस आये। बा रो रही थीं। बापू उन्हें शांत कर रहे थे। घर सूना था। हम सब अभीतक अपने-आपको स्तब्ध-सा अनुभव कर रहे थे।

बापू आजतक बाइबिल पढ़ाया करते हैं। जब वह बेसुध महादेवभाई के पास आये और जब महादेवभाई अनन्त निद्रा में सोगये, तब मैं अपने मन में सोच रही थी कि ईसा अपने भक्तों को बचा लेते थे, तो क्या बापू नहीं बचा लेंगे ? अब वह आशा खतम हुई। ऐसी आशा का अब कोई कारण नहीं रह गया था ! डाक्टर के नाते मन में इस तरह के विचार को स्थान देना भी शरम की बात थी। किंतु जब अपने प्रियजनों पर आ बनती है—उनका बिछोह होता है—तो आदमी समता खो बैठता है।

बापू कहा करते हैं, "भावना तो महादेव की खूराक थी।"[१]

बापू के उपवास की चिंता तो उनके सिर पर हमेशा सवार ही रहती थी। उन्होंने मुझसे कई दफा कहा था, "मैं ईश्वर से एक ही प्रार्थना किया करता हूं कि

१ "Mahadev lived on his emotions"

मुझे बापू से पहले उठाले ! और साथ ही यह भी कह दूं कि ईश्वर ने मेरी प्रार्थना को कभी ठुकराया नहीं है। हमेशा पूरा किया है।"

भण्डारी के साथ बात करते समय कौन जाने उनका कौन-सा मर्म-स्थल छू गया होगा, क्या विचार मन में आया होगा कि जिससे एकाएक ऐसा हो गया हो। और इंजेक्शन बेचारा तो न नुकसान कर सकता था, न फायदा। जब खून का दौड़ना ही बंद हो गया था, तब नस में दिये हुए इंजेक्शन का कोई मतलब ही नहीं था। वह हृदय तक पहुंचे कैसे ? हृदय तक पहुंचने के लिए तो उसे सुई द्वारा सीधा हृदय की मांस-पेशी में दिया जाता, तो वह[1] काम दे सकता था। फिर सिर पर भूत सवार हुआ। सीधा हृदय में इंजेक्शन दिया होता, तो वह उठ बैठते। इस विचार ने मुझे बहुत अशांत कर दिया। मैंने बापू से भी कहा। बापू कहने लगे, "होता भी, तो मैं तुझे देने नहीं देता। जितना करने दिया, उसका भी मुझे अफ़सोस है। महादेव ने जीने का मोह छोड़ दिया था और मैंने तो हमेशा कहा है कि जो आदमी जीने का मोह छोड़ देता है, उसकी देह अपने-आप छूट जाती है।"

पहले भण्डारी वगैरा यहां दाहक्रिया करने का विरोध कर रहे थे। कहते थे, "कहीं पानी आ जायगा तो क्या करेंगे ?" आकाश में बादल थे जरूर, लेकिन अर्थी के उठाने तक ही थोड़ी बूंदें आती रहीं, मानो आकाश भी आंसू बहाता हो। चिता जलाने को गये, उसके बाद बारिश बिलकुल नहीं आई। जब चिता की जगह पहुंचे, तो आकाश में अंधेरा-सा लगा। मैंने ऊपर सर उठाकर देखा तो ऐसा मालूम हुआ, मानो टिड्डी-दल आया हो ! लेकिन वह टिड्डी-दल नहीं था, जंगली मक्खियों का दल था। इससे पहले या इसके बाद यहां कभी इतनी मक्खियां देखने में नहीं आई थीं।

शव जलाकर लौटे। बापू ने सबको हुक्म किया कि अब खाना चाहिए। पांच बज चुके थे। दो घंटे पहले जहां शव पड़ा था, जहां बैठकर आज सुबह महादेवभाई ने बापू के लिए रस निकाला था, वहीं बैठकर आज मैंने मौसम्बी का रस निकाला। बापू ने दूध और रस लिया। हम लोग सरोजिनी नायडू के कमरे में खाने को गये। टोस्ट, दूध, चाय वगैरा लिया, चायदानी पर नई 'टी कोज़ी'—चायदानी का आवरण—पड़ी थी। महादेवभाई या कोई और सुबह चाय के लिए कभी जरा देर से पहुंचा करते थे। सरोजिनी नायडू ने मुझसे कहा कि एक 'टी कोज़ी'

[1] Intracardiac इन्जेक्शन

बना दो तो चाय ठंडी न हुआ करे। कल मैंने अपना एक पुराना रंगीन ब्लाउज़ फाड़कर 'टी कोज़ी' काटी। श्रीमती सीतलदास ने ऑर्थर रोड जेल से चलते समय थोड़ी रुई देदी थी। वही रुई भरकर 'टी कोज़ी' तैयार की। शाम की चाय के समय तक वह मेज पर पहुंच गई थी। महादेवभाई उस 'टी कोज़ी' को देखकर इतने खुश हुए कि उठाकर सिर पर पहनली। कहने लगे, "रंग इतना ताज़ा है, इतनी अच्छी बनी है, मानो अभी बाजार से आई हो!" मैंने उनके सिर से वह खींचकर उतार ली और कहा, "आप तो विदूषक बन रहे हैं!" अपनी मर्यादा में रहकर वह खुश रहना और सबको खुश रखना चाहते थे।

शाम को घूमने निकले। मैं और बापू दो ही थे। किंतु आभास ऐसा होता था, मानो महादेवभाई हमारे साथ-ही-साथ चल रहे हैं। क्या सचमुच उनकी आत्मा आज यहां भ्रमण कर रही होगी, अथवा बहुत पहले पुण्यलोक में पहुंच गई होगी?—भगवान ही जाने!

मेरे सिर पर फिर सवाल सवार था। मैंने बापू से कहा, "हृदय में एड्रेनेलिन दी होती, तो महादेवभाई आज इस तरह न जाते।" बापू कहने लगे, "नहीं तेरे पास वह रहती भी, तो मैं नहीं देने देता।"

एड्रेनेलिन में तो जीव-हत्या होती है। मैंने सोचा कि निरामिष बनावट भी तो होती है! क्यों मैंने वह अपने साथ न रखी? फिर विचार आया, अगर मेरे पास एड्रेनेलिन होती, तो जैसे ही मुझे सूझता कि वही एक बचानेवाली चीज है, मैं बापू से बिना पूछे वह उन्हें दे देती, मगर बापू भी ठीक ही कहते थे। ऐसे संयोग तभी मिलते हैं, जब आयुष्य रहती है। भगवान को जो करना होता है, उसके साधन भी वह पैदा कर देता है—

"जैसी हो भवितव्यता, तैसी मिले सहाय।"

प्रार्थना हुई। महादेवभाई के बाद प्रार्थना कराने का काम मुझपर पड़ा। गला खराब था, तिसपर इतनी थकावट। भजन गाना, रामधुन चलाना, रामायण का पाठ करना, सब कठिन था। रामधुन मीराबहन ने उठाली। भजन और रामायण मेरे जिम्मे रहे। प्रार्थना के लिए जाने से पहले सिविल सर्जन आये—वही, जो महादेवभाई के देहांत के बाद आये थे। जब चिता जलाकर लौटे, तो मैंने भण्डारी को कई तात्कालिक आवश्यकता की दवाइयों की एक फेहरिस्त दी। बा को किसी

भी समय कोरोनरी थ्राम्बोसिस[1] हो सकता है, और बापू को कार्डियक एस्थमा[2]। आज की घटना की तरह फिर गफलत में पकड़े जाना मैं नहीं चाहती थी। साथ ही मुझे यह भी लगता है कि यहां की परीक्षा की घड़ी गई। अब फिर यहां ऐसी परीक्षा नहीं होगी। तो भी दवाइयां मंगवा लीं।

मुझे लगा, आज शाम को सिविल सर्जन बापू को देख जायं, तो अच्छा हो, क्योंकि आज मैं इतना आत्मविश्वास खो बैठी हूं कि अपने-आपको निकम्मा महसूस करने लगी हूं। मैंने भण्डारी से यह कहा। उन्होंने सिविल सर्जन को भेजा। वह बेचारे आये। हाल-चाल पूछकर और नाड़ी देखकर चले गये।

आठ-साढ़े आठ बजे बापू बिस्तर पर पड़े। नौ बजे भण्डारी का संदेश मिला। महादेवभाई की पत्नी का पता पूछते थे। शव को स्नान कराने के बाद दोपहर को भण्डारी ने बापू से पूछा था कि क्या महादेवभाई के घर खबर भेजना चाहते हैं? बापू ने कहा कि सरकार भेजने दे, तो तुरन्त भेजना चाहते हैं, मगर उनका संदेश तुरंत सीधा और बगैर काट-छांट के जाना चाहिए। उन्होंने उसी समय तार का मजमून लिखा—चिमनलालभाई के नाम। शुरू किया—"Sorry, Mahadev died suddenly". (खेद कि महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई।) मगर फिर रुक गये। खेद क्यों? महादेवभाई अपने धर्म का पालन करते हुए गये हैं। इसलिए काट-कर यह तार लिखा :

"Mahadev died suddenly. Gave no indication. Slept well last night. Had breakfast. Walked with me. Sushila jail doctors did all they could, but God had willed otherwise. Sushila and I bathed body. Body lying peacefully covered with flowers incense burning. Sushila and I reciting Gita. Mahadev has died yogi's and patriot's death. Tell Durga, Babla and Sushila no sorrow allowed. Only joy over such noble death. Cremation taking place front of me. Shall keep ashes. Advise Durga remain Ashram but she may go to her people if she must.

---

[1] हृदय की नाड़ियों में रुकावट के कारण हृदय की नसों में रक्त की कमी या रक्त न पहुंचने की बीमारी।

[2] दमे का एक रूप, जिसका हृदय की मांसपेशियों पर असर पड़ता है।

Hope Babla will be brave and prepare himself fill Mahadev's place worthily. Love—BAPU"[1]

तार भण्डारी को दिया गया। बाद में बापू ने मुझे फिर भेजा और कहा, "उनसे दुबारा कहो कि तार ऐसा-का-ऐसा, तुरंत और सीधा न जा सकता हो, तो मुझे वापस लौटा दें। 'एक्सप्रेस' जाना चाहिए।" मैंने रसोईघर के पास जाकर भण्डारी को पकड़ा। वह एक अंग्रेज पुलिस अफसर को तार दे रहे थे। मैंने उन्हें बापू का संदेश सुनाया। कहने लगे, "लेकिन यह बात मेरे हाथ में नहीं है।" मैंने कहा, "तार वापस दे दीजिये।" भण्डारी बोले, "यह तो अब सीधा ही जा रहा है। पुलिस अफसर को सौंप दिया है।" उन्होंने फिर पुलिस अफसर से कहा कि तार अभी जाना चाहिए। मैंने दुबारा कहा, "यह जरूरी तार के रूप में जाना चाहिए—बिना कटे-छंटे। वरना गांधीजी इसे भेजना नहीं चाहते।" वह तार लेकर चला गया। लेकिन जब रात को फिर पता मांगा गया, तो हमें आश्चर्य हुआ। बापू ने समझाया, "वह तार तो हमारी तरफ से गया था न? सरकार को अपनी तरफ से भी खबर भेजनी ही चाहिए। इसलिए अब पता मंगवाया होगा।" हमने नाम-पता भेज दिया।

जब बिस्तर पर लेटी, तो मेरी आंख के सामने महादेवभाई की मृत्यु का ही दृश्य था। महादेवभाई के कमरे में से होकर सरोजिनी नायडू के गुसलखाने में जाना पड़ता था। उन्होंने उस कमरे में दीपक रखने को कहा। जहां शव रहता है, वहां दस दिन तक दीपक रखने की प्रथा है।

---

[1] महादेव की अकस्मात मृत्यु होगई। पहले जरा भी पता नहीं चला। रात अच्छी तरह सोये। नाश्ता किया। मेरे साथ टहले। सुशीला और जेल के डाक्टरों ने जो कुछ कर सकते थे किया; लेकिन ईश्वर की मर्जी कुछ और थी। सुशीला और मैंने शव को स्नान कराया। शरीर शांति से पड़ा फूलों से ढका है, धूप जल रही है। सुशीला और मैं गीता-पाठ कर रहे हैं। महादेव की योगी और देशभक्त की भांति मृत्यु हुई है। दुर्गा, बाबला और सुशीला से कहो, शोक करने की मनाई है। ऐसी महान् मृत्यु पर हर्ष ही होना चाहिए। अंत्येष्टि मेरे सामने ही हो रही है। भस्म रख लूंगा। दुर्गा को सलाह दो कि आश्रम में रहे, लेकिन अगर वह जाना ही चाहे, तो घरवालों के पास जा सकती है। आशा है, बाबला बहादुरी से काम लेगा और महादेव का सुयोग्य उत्तराधिकारी बनने के लिए अपने को तैयार करेगा। सप्रेम,

—बापू

बापू अपने बिस्तर पर पड़े करवटें बदल रहे थे। बा रोज भीतर सोया करती थीं। आज बाहर सोईं। मैंने अपनी खाट बा को दी। महादेवभाई जिस खाट पर सोया करते थे, वह मुझे मिली। बापू कहने लगे, "तुझे डर लगता हो, तो वह खाट मुझे दे दे और मेरी तू ले ले।" मगर मुझे महादेवभाई से डर क्यों लगने लगा? सोने से पहले मैंने महादेवभाई की मेज की दराज खोली और उसमें से एक कागज निकाला, जिसपर वह डायरी लिखते थे। छोटे-छोटे संक्षिप्त नोट लिखे थे। मैंने उसी कागज के नीचे १५ तारीख से डायरी लिखनी शुरू की। इस तरह १५ तारीख से डायरी नियमित शुरू हुई। उससे पहले की घटनाएं तो बाद में अपनी याद से और महादेवभाई के नोट्स की मदद से मैंने लिखी हैं। यहां १५ तारीख की घटनाएं भी असल डायरी पर से नकल की हैं। ब्यौरे की कुछ बातें उस रोज की थकान में मैंने नहीं लिखी थीं। बाद में भाई के कहने से लिख डाली हैं।

: १० :

विषाद की छाया

१६ अगस्त '४२

२॥ बजे बापू उठे। मैं तो जागती ही थी। बापू क्षणभर भी नहीं सोये थे। मैं भी नहीं। बापू ने उठकर दतौन की। गरम पानी पीया। हमने प्रार्थना की। आज रविवार था। आठवें अध्याय में पढ़ा कि जब सूर्य उत्तरायण होता है और शुक्ल-पक्ष होता है, तब पुण्यात्मा देह छोड़ते हैं और फिर इस लोक में नहीं आते। आज-कल शुक्ल पक्ष है और सूर्य भी उत्तरायण है!

प्रार्थना के बाद बापू आध घंटे तक मुझसे बातें करते रहे। वह हमें शांत कर रहे थे और विपक्षियों का सामना करने की तैयारी करवा रहे थे। मृत्यु के बारे में ज्ञान वार्ता कर रहे थे। शायद भाई भी जायं, तो उसके लिए मेरी मानसिक तैयारी करवा रहे थे। मैंने कहा, "भले हम सब एक-एक करके चले जायं, पर आप अच्छे रहें और विजयपताका फहराते हुए यहां से बाहर जायं, यही प्रार्थना आज तो हृदय से निकलती है।"

३॥। बजे बापू वापस बिस्तर पर गये। थोड़ी नींद ली। आज रातभर में उन्हें

दो घंटे की भी नींद नहीं मिली। मैं भी प्रार्थना के बाद थोड़ी सोगई।

नाश्ते के बाद बापू चिता-स्थान पर गये। चिता अभी जल रही थी। अंगारे धधक रहे थे। यह है हमारे प्रियतमों का अंत!—मुट्ठीभर राख और अंगार! प्रभु! धन्य हो तुम और धन्य है तुम्हारी लीला! एक सप्ताह पहले आज ही के दिन बापू और महादेवभाई आजादी की लड़ाई शुरू होने से पहले ही बम्बई में पकड़ लिये गये थे और आज महादेवभाई तो आजाद भी हो गये। कौन कैद कर सकता है अब उनको?

बापू के कहने से चिता-स्थान पर खड़े होकर बारहवें अध्याय का पाठ किया। 'तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी' (निंदा और स्तुति को एक समान माननेवाला, मौन रखनेवाला) पढ़ते समय आंख के सामने तुल्य निंदा स्तुतिर्मौनी महादेवभाई का शव पड़ा था। उस शव के चेहरे की अपूर्व शांति और कान्ति सामने मौजूद थी।

पाठ करके हम लोग वापस आये। बापू के लिए सुबह का साग बनाने का काम मीराबहन ने ले लिया, शाम का मैंने। रस निकालने का काम मेरा था। दोपहर को शाम के लिए साग चढ़ाने नीचे रसोई-घर में गई, तो भूरा और मगन मेरे पास आकर खड़े होगये। बोले, "बहन गजब होगया! हममें से कल किसीने खाया नहीं। जब कल फूल इकट्ठा करने को कहा गया, तो मैंने सोचा, माताजी बीमार थीं, वह गई होंगी। लेकिन जब हमें ऊपर बुलाया, तो सच्ची बात का पता चला। बड़ा जुल्म हुआ है, बहन! सभी कैदी और सिपाही कांपते हैं।"

सिविल सर्जन आज फिर आये। पूछ गये क्या हाल है? मैंने बताया कि बापू बहुत थके हुए हैं। कल की थकान और रात नींद का न आना, इसके कारण हैं। बापू की नाड़ी अटक-अटककर चलती थी (extra systoles), सो भी मैंने उनसे कहा। बेचारे क्या कर सकते थे? कहने लगे, "मुझे आशा है कि दिन में कुछ नींद आयेगी और वह हलकापन अनुभव करेंगे।" इतना कहकर वह चले गये।

हम सबको ऐसा लग रहा है कि महादेवभाई जिस 'लटकती तलवार' के डर से गये, वह तलवार उनके चले जाने के कारण हमारे सिर से अभी तो उठ-सी गई है। महादेवभाई के बलिदान ने बापू के उपवास को टाला है। बापू ने ऐसा कुछ कहा भी था, "महादेव का बलिदान कोई छोटी चीज नहीं है। अकेला भी वह बहुत काम करेगा।"

सरोजिनी नायडू ने कहा, "अगर कभी किसीने दूसरे के लिए अपना जीवन

दिया है, तो वह महादेव है। यीशु प्रभु की तरह वह इसलिए मरे कि बापू जी सकें। मनुष्य दूसरे मनुष्य की इससे बढ़कर और क्या सेवा कर सकता है कि वह उसके लिए अपने प्राण ही न्योछावर कर दे ?"

शाम को घूमते समय बापू फिर चिता-स्थान पर गये। मुझे एक डिब्बी या बोतल लाने को कहा था। वह उसमें थोड़ी राख भरकर लाना चाहते थे। यों कल ब्राह्मण अस्थि, राख आदि इकट्ठा करने आयेगा ही, लेकिन कहीं रात में बारिश आ गई, तो राख का रंग बिगड़ जायगा। इस विचार से बापू आज ही थोड़ी राख उठा लेना चाहते थे। मैंने अपनी स्वान स्याही की शीशी के साथ की गत्ते की डिब्बी ले ली। चिता-स्थान पर उज्ज्वल, सफ़ेद राख, जो वहां मिल सकती थी, अपनी उस डिब्बी में भर ली। राख को मुट्ठी में लिया, तो पता चला कि अभीतक उसमें जलते अंगारे थे। एक चम्मच मंगवाकर बिना अंगारोंवाली राख निकाली। तो भी छोटे-छोटे अंगार आ ही गये, जिससे डिब्बी थोड़ी-सी जल गई। इन अंगारों में से कुछ तो सचमुच अस्थियां थीं, जो अंगार-सी लगती थीं।

बापू ने डिब्बी अपने पास अपनी मेज पर रखी और उसमें से राख लेकर अपने माथे पर टीका लगाया। काल की गति क्या-क्या रंग दिखाती है। तुलसीदासजी ने सच ही कहा है :

> **जिन चरनन की चरनपादुका भरत रह्यो लव लाई।**
> **शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई॥**
> **तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥**

शाम को प्रार्थना के समय फिर कल का-सा हाल हुआ। मैं प्रार्थना में या बिस्तर पर आंख बंद कर ही नहीं सकती। करती हूं, तो आंख के सामने मृत्यु-शैया पर छटपटाते हुए महादेवभाई की तस्वीर ही सामने आ जाती है।

कटेली रात एक क्षण को भी नहीं सो सके। बेचारे को बहुत आघात पहुंचा है। किसीने कल्पना तक न की थी कि महादेवभाई इस तरह बात-की-बात में हमें छोड़-कर चले जायंगे।

महादेवभाई के कपड़े इकट्ठे करके उनके बक्स में रखे। बापू ने बक्स का सामान उनके सामने रखने को कहा। 'बैटिल फॉर एशिया' नामक एक किताब थी। अगाथा हैरिसन द्वारा महादेवभाई को भेंट की गई बाइबिल निकाली। ९ अगस्त का

'ईवनिंग न्यूज', 'पैसिफ़िक अफेयर्स' का एक अंक, गुरुदेव का 'मुक्तधारा' नामक नाटक, 'सिलवर स्ट्रीम', 'ए चाइनीज़ प्ले' और कुछ कपड़े, बस इतनी चीज़ें थीं।

बापू कहने लगे, "इसमें तो छः महीने के अभ्यास का सामान है।" बाइबिल पढ़ना शुरू किया। 'बैटिल फॉर एशिया' भी निकाली। 'मुक्तधारा' भी पढ़ना प्रारंभ किया।

बापू मुझसे कहने लगे, "आज से, या जबसे आई हो, तबसे डायरी लिखना शुरू करदो।" मैंने कहा कि कल से मैं लिखने लगी हूं। महादेवभाई की लिखी कुछ चीजें भी दिखाईं—नोट्स थे। बापू ने मेरी डायरी लेकर पढ़ी—एक-आध बात लिखना मैं भूल गई थी, उसकी ओर मेरा ध्यान दिलाया। जैसे, गीताजी का कितना पाठ किया था, वगैरा।

१७ अगस्त '४२

आज तीसरा रोज है। बापू अच्छी तरह सोये। मैं आज भी नहीं सो सकी। मि० कटेली भी नहीं सोये। रात को ऊपर उनके टहलने की आवाज आ रही थी।

५ बजे बापू उठे। प्रार्थना की। नाश्ते के बाद चिता-स्थान पर गये। रात पानी की बूंदें आई थीं। राख का रंग काला पड़ गया था।

मृत्यु के एक-दो दिन पहले महादेवभाई बकरी का एक चितकवरा बच्चा उठाकर बापू के पास लाये थे। वह उसे बहुत प्यार कर रहे थे। उसका मुंह चूम रहे थे। बच्चा बहुत सुन्दर है। वह कुछ तो समझता होगा। जब हम चिता की जगह जाने के लिए नीचे आते हैं, वह आकर पांवों में लिपटने लगता है। मैं उसे उठाकर चिता-स्थान पर ले गई। वहां मुझे बारहवें अध्याय का पाठ करना था (यह रोज सुबह का नियम बन गया है)। बकरी का बच्चा भी जरा चिल्लाने लग गया था। मैं उसे छोड़ने लगी, मगर मीराबहन ने उसको मुझसे लेलिया। बाद में उन्होंने बताया कि पाठ शुरू होते ही वह इतना शांत होगया था, मानो ध्यान लगाकर सुन रहा हो।

स्नान के बाद बापू ने फिर महादेवभाई की राख का टीका लगाया। कह रहे थे, "यह राख मैं दुर्गा के पास ले जाऊंगा। वह भले रोज इसका टीका लगाया करे।"

ब्राह्मण आया हुआ था। बापू से पूजा, पिण्ड-दान, तर्पण इत्यादि करवाया। शांति-पाठ किया। सरोजिनी नायडू ने बाद में मुझे बताया कि पूजा करते समय बापू का चेहरा इतना गंभीर और तना हुआ था कि देखा नहीं जाता था। मैं तो पूजा के समय पूजा की क्रिया को ही देख रही थी और शांति-पाठ को समझने की

कोशिश कर रही थी। मैंने बापू की ओर ध्यान से नहीं देखा। २० मिनट में पूजा पूरी हुई। एक पिता के लिए अपने पुत्र की उत्तर-क्रिया करना बड़े-से-बड़े दुख की बात होती है और बापू के निकट तो महादेवभाई पुत्र से भी अधिक थे। लेकिन बापू कौन साधारण पिता हैं? कल कह रहे थे, "ईश्वर मुझे कैसा कसौटी पर कस रहा है! अगर मैं इन चीजों से विचलित होजाऊं, तो मेरा काम कैसे चले।"

दोपहर को खाने के समय बम्बई के गवर्नर का उत्तर आया। बहुत खराब था। भाषा भी उद्धत थी। वल्लभभाई को नहीं भेजा जा सकता। अखबार वगैरा देने का भी अभी सरकार का कोई इरादा नहीं। यह उसका सार था। मैंने डरते-डरते पत्र बापू के सामने रखा—कौन जाने, उसका उनपर क्या असर होगा? मगर इस उत्तर के लिए बापू की मानसिक तैयारी थी।

आज सोमवार था। मौन था। दोपहर को मीराबहन ने कुछ पूछा। उत्तर में बापू ने लिखा, "मैं उपवास के बारे में नहीं सोच रहा। न यह सोच रहा हूं कि बाहर क्या हो रहा है। मैं तो अपने यहां के काम और अभ्यास वगैरा का ही विचार कर रहा हूं।" इन शब्दों से सबको बहुत आश्चर्य हुआ और आश्वासन भी मिला। महादेवभाई को बापू के उपवास की चिंता ही खाये जाती थी। उनके रहते बापू ने ये शब्द कहे होते, तो उन्हें कितना चैन मिलता! शायद बापू के आज के इन शब्दों का कारण महादेवभाई की यह मृत्यु ही हो!

मृत्यु की घटना पर सोचती हूं, तो अनेक तरह के विचारों की आंधी-सी मन में आने लगती है। निदान के बारे में तो कोई शक नहीं रहा। था तो स्टोक्स एडम्स सिण्ड्रोम[1], लेकिन उसका कारण हम दावे के साथ नहीं बता सकते। फिर विचार आता है कि एड्रेनेलिन की सुई अगर सीधी हृदय में लगा दी होती तो! किंतु इस कोरे तर्क-वितर्क से फायदा क्या? जो शक्य था, सो किया। जैसाकि आज बापू समझा रहे थे, हमारी परिस्थिति में जितना कुछ हो सकता था, हमने किया। तो भी दिल से यह अरमान नहीं जाता कि ऐसे मरीज के लिए जितना होना चाहिए था, नहीं हुआ!

बापू ने मुझे 'मुक्तधारा' पढ़ने को कहा। बोले, "पिछले पन्नों पर मैंने निशान लगाये हैं, शुरू में नहीं लगाये। तुम मेरे निशान देखकर शुरू के पन्नों में भी उसी

---

[1] हृदय-सम्बन्धी एक विशेष रोग

तरह निशान लगा देना।" मैं 'मुक्तधारा' पढ़ गई, बहुत दिलचस्प है। बापू की फिलॉसफी उसमें भरी पड़ी है।

मालूम होता है, मि० कटेली ने मेरी यह बात याद रखी है कि हममें से कोई भी न रहे, तो आपको यह चिता-स्थान बावला को दिखाना है। आज उन्होंने चिता-स्थान के चारों कोनों पर खूंटियां गड़वाकर डोरियां बंधवादी थीं, ताकि निशान रहे कि कौनसी जगह थी।

आज मैंने मालिश के समय बापू से पूछा, "महादेवभाई शायद यहीं घूमते होंगे। मृत्यु के बाद भी वह आपसे दूर नहीं जा सकेंगे।" बापू कहने लगे, 'तू महादेव को पुण्यात्मा मानती है या नहीं ?" मैंने कहा, "हां।"

"तो उसकी आत्मा क्यों भटकेगी ?"

मैंने कहा, "तो क्या आप मानते हैं कि वह कहीं नया जन्म लेने को भी चले गये ? कई लोग कहते हैं कि जब एक शरीर छूटता है, तो दूसरा तैयार ही रहता है।"

बापू कहने लगे, "नहीं, कहा यह जाता है कि स्थूल शरीर छूट जाने पर आत्मा लिंग शरीर लेकर इहलोक से अन्य लोकों में चला जाता है। बहुत अरसे तक वहां रहकर फिर समय आने पर जन्म लेता है।"

: ११ :

समाधि-यात्रा

१८ अगस्त '४२

सुबह-शाम बापू महादेवभाई की समाधि पर जाते हैं। बापू इसे तीर्थ-यात्रा मानते हैं। न जायं, तो बेचैन हो उठें। जब बारिश होती रहती है, तब छाता लेकर भी जाते हैं। मैं थोड़े फूल ले जाती हूं। आखिरी दिन घूमते समय महादेवभाई बेलिया के पौधों को कलियों से लदा देखकर बोले थे, "अब फूल खूब आयेंगे।" ये फूल अब खिल रहे हैं। सो थोड़े ले जाते हैं। जीते-जी हम लोग इन्सान की कदर नहीं करते। मृत्यु के बाद सभी श्रद्धांजलि चढ़ाने को तैयार हो जाते हैं। महादेवभाई की कीमत तो हम सब उनके जीते-जी भी जानते थे, मगर उनके जाने के बाद पता

चलता है कि शायद उनके जीवन-काल में हमने उनकी पूरी कीमत नहीं समझी थी।

शाम को सिविल सर्जन आये। बापू गुसलखाने में थे। इंतजार करते रहे। मैंने यहां के मैडीकल स्कूल के बारे में पूछा। कुछ बताते रहे। फिर बातों-ही-बातों में कह गये, "इस वक्त हमारा ध्यान पढ़ाई में नहीं है। पढ़ाने में कोई मजा नहीं आता।" हम समझ गये, जब विद्यार्थी ही न आयें, प्रोफेसर को लेक्चर में क्या रस आ सकता है! बापू आये। "आप कैसे हैं?"—इतना पूछकर सिविल सर्जन चले गये।

हमारे पास कलैण्डर नहीं था। मगर बापूजी ९ अगस्त को रविवार के दिन पकड़े गये थे। उस पर से उन्होंने मुझे कलैण्डर बनाने को कहा था। आज दोपहर में बनाने बैठी। बापू ने भी मदद दी। मुझे तीन बार कलैण्डर बनाना पड़ा। कहीं न-कहीं कोई भूल रह ही जाती थी। आखिर प्रार्थना के बाद कलैण्डर तैयार हुआ। कलैण्डर की खास जरूरत तो बा को एकादशी वगैरा बताने के लिए थी।

१९ अगस्त '४२

महादेवभाई की समाधि पर मैं रोज फूल ले जाती थी। आज मि० कटेली ने सिपाही से कहकर फूलों की एक पत्तल सजवाकर तैयार रखी थी। मि० कटेली पर भी महादेवभाई के आकर्षक व्यक्तित्व ने खासा प्रभाव डाला था। अपने फर्ज को अदा करते हुए वह जितनी सहानुभूति हम लोगों से रख सकते हैं, रखते हैं। बापू कह रहे थे, "महादेवभाई की मृत्यु के समाचार से बहुतों के दिल टूट जायंगे।"

यह अक्षरशः सच था। जो उनके संपर्क में इतने कम आये थे, उनको उनके जाने से इतना सदमा पहुंचा है, तो उनके निकट के मित्रवर्ग का और सगे-सम्बन्धियों का क्या हाल हुआ होगा, कौन कह सकता है। बापू रोज स्नान करके महादेवभाई की राख का टीका लगाते हैं। बा कह रही थीं, "शंकर तो विभूति लगाते थे, लेकिन मनुष्य को ऐसा करते देखा नहीं था।" मगर बापू तो बापू ही हैं न!

हम सुबह समाधि पर बारहवें अध्याय का पाठ करते हैं। पाठ करते समय आंख के सामने निद्रा में चिता पर सोते हुए महादेवभाई खड़े हो जाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है, मानो वह भी हमारे साथ खड़े पाठ कर रहे हैं! काम करते समय भी अक्सर उनकी मौजूदगी का आभास होने लगता है। अच्छा मालूम होता है। महादेवभाई की स्मृति हमारे सामने हमेशा ताजी रहे, ताकि हम उनके

जीवन से सदा सबक सीखते रहें। उनकी अनन्य सेवा और भक्ति सदा सबके लिए पदार्थ पाठ रूप बने!

कई बार यह विचार आता है, "कौन जाने, भाई को अभीतक यह खबर भी मिली होगी या नहीं!"

शाम को घूमते समय बापू ने कहा, "महादेव के नाम पचास हजार रुपये जमा हैं। वे जनता के हैं। महादेव से मैंने उसका ट्रस्ट बना देने को कहा था, मगर वह कर नहीं पाया। मैंने हमेशा कहा है कि हमें जनता के पैसे को एक क्षण के लिए भी अपने पास नहीं रखना चाहिए। कौन जाने, कब मृत्यु आ दबाये! इसके मामले में ऐसा ही हुआ न! अब मुश्किल पैदा होगी। शायद महादेव अपने कागजों में इसके बारे में कुछ लिख गया हो। यहां उसके जितने कागज हैं, सब देख लेना। शायद रामेश्वर दास, बावला और दुर्गा से भी इस बारे में कुछ पता चले। उनसे भी पूछना। आज मैं तुम्हें यह सब इसलिए कह रहा हूं कि कहीं बाद में इसे भूल न जाऊं। हममें से कोई भी बाहर न जा सके, तो दूसरों की जानकारी के लिए इस सम्बन्ध का एक नोट अभी तैयार करके रखना चाहिए।"

आज मथुरादासभाई का पत्र आया। महादेवभाई की मृत्यु से उन्हें बहुत सदमा पहुंचा है। लिखते हैं, "धन्य जीवन उनका! किंतु अत्यन्त वेग से पार किया। आपके निजी सम्पर्क में उनका स्थान कौन लेगा? परम कारुणिक भगवान बुद्ध का एक ही शिष्य था, वैसे ही महादेव आपके रहे।" मथुरादासभाई के अक्षर अच्छे थे। बापू कहने लगे, "बीमार होने से पहले मथुरादास के अक्षर जितने अच्छे होते थे, उतने इस पत्र में हैं।" मैंने कहा, "हां, आदमी को जब कोई सख्त आघात पहुंचता है, तो क्षण भर के लिए उसके शरीर में विशेष शक्ति आ जाती है।" ईश्वर की लीला अपार है!

२० अगस्त '४२

आज सवेरे नहाने के बाद मैं और बापू फूल लेकर समाधि पर जाने को निकले। मीराबहन भी सवेरे तो आती ही हैं और मि० कटेली को तो दोनों समय कैदियों के साथ आना ही होता है। मि० कटेली थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहने लगे, "तीन दिन तक यहां आने की इजाजत भण्डारीसाहब ने दी थी। अब हर रोज यहां आने में दिक्कत पेश होगी।" इन शब्दों से बापू को बहुत आघात पहुंचा। मगर वह तो विशाल हृदय हैं, पी गये। बोले, "अच्छा, तो आज का यह आखिरी आना है!"

मि० कटेली को बुरा लगा होगा। बोले, "मैं फूल वहां भिजवाता रहूंगा। आप कहेंगे, तो खुद जाकर चढ़ा आया करूंगा। भण्डारी ने आज मुझको अपने घर बुलाया था, क्योंकि फोन पर ऐसी बात हो नहीं सकती थी। कहने लगे, 'इस तरह हर रोज तार के बाहर जाने देने में आपत्ति उठ सकती है। इस बार सरकार का रुख दूसरे ही ढंग का है।'" बापू बोले, "हां, सो तो मैं जानता हूं। मैं आपको या भण्डारी को मुश्किल में नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर भण्डारी को आपत्ति न हो, तो मैं इस बात को अवश्य ही आगे बढ़ाना चाहूंगा। जरा उल्लेख तो रह जाय कि वह किस हद तक जाते हैं। आपने इस समाधि के चारों ओर पत्थर रखवाये हैं, लेकिन इतना मैं आपसे कह दूं कि इस पर भी आपत्ति की जा सकती है।"

मि० कटेली चुपचाप सुन रहे थे। बापू फिर कहने लगे, "मैं तो यह मानता हूं कि मैं जो कुछ कह रहा हूं, सो ईश्वर मुझसे कराता है। नहीं तो, मैं क्या हूं—एक दुर्बल आदमी! मेरी क्या शक्ति कि इतने बड़े साम्राज्य के विरुद्ध लड़ सकूं! और हिन्दुस्तान की प्रजा की क्या शक्ति, जिसके पास लाठी तक नहीं!"

मि० कटेली ने समाधि के चारों ओर पत्थरों की छोटी-छोटी दीवार खड़ी कर दी है। चिता की जगह पर पत्थर रख दिये हैं। बा उसे देखकर बोल उठीं, "यह तो कब्र का आकार हो गया।" सब हँस पड़े। बात ठीक थी। आकार से कोई भी उसे कुछ समझ सकता था, लेकिन असल में तो उस जगह की निशानी रखने के लिए ही यह किया गया है।

२१ अगस्त '४२

आज बापू ने लिखकर बताया कि सोमवार छः बजे तक का मौन लिया है। सब मिलकर ६१ घंटे का मौन होगा। बुरा लगा, मगर कुछ कहना फिजूल था। प्रार्थना के बाद बापू सो गये।

नाश्ते के बाद हम रोज की तरह फूल लेकर चले। तारोंवाला दरवाजा खुला। मगर हम उसके बाहर नहीं गये। सिपाही फूलों का पत्ता ले गया। दरवाजे के इस पार खड़े होकर हमने गीताजी का पाठ किया। शाम को भी फूल लेकर गये। इस समय दरवाजा भी नहीं खुला। तार में से ही सिपाही फूल ले गया।

बापू के मौन से दम घुटने लगा है।

शाम को बकरी का दूध निकालना सीखा। मेरे पास अब खासा काम हो गया है। सबेरे नाश्ता तैयार करना, घूमने के बाद सुबह का साग चढ़ाना, बा की

मालिश, बापू की मालिश, कपड़े धोना, बापू का खाना लाना, बरतन धोना, दोपहर को बापू के पैर मलना, दोपहर का साग चढ़ाना, शाम को बकरी का दूध निकालना, रस निकालना, बरतन धोना, रात को फिर बापू के सिर और पैरों की मालिश करना, दबाना वगैरा। मैंने खाना लाना तो शाम को ही शुरू कर दिया है। दिन भर काम में जाता है, यह मुझे अच्छा लगता है। न निकम्मे विचारों के लिए समय रहता है, न निकम्मी बातों के लिए! घूमते समय सुबह-शाम महादेवभाई की ही बातें होती रहती हैं। बापू से पहले जाकर महादेवभाई उनके पूज्य बन गये हैं। भगवान भी भक्त के वश में रहते हैं। फिर बापू भक्त की समाधि को प्रणाम करें, इसमें आश्चर्य की क्या बात है!

आज दोपहर को 'सिलवर स्ट्रीम' पूरा किया।

बा कह रही थीं, "देखो, महादेव गये। ब्राह्मण की मृत्यु हुई, अपशकुनी है न! इतनी बड़ी ताकत के खिलाफ बापू लड़ रहे हैं, कैसे जीतेंगे!" बापू ने सुना, तो कहने लगे, "मैं इसे शुभ शकुन मानता हूं। शुद्धतम बलिदान हुआ है, इसका परिणाम अशुभ नहीं हो सकता।"

: १२ :

पुण्यस्मरण

२२ अगस्त '४२

आज महादेवभाई को गये हफ्ता पूरा हुआ। आज सरोजिनी नायडू भी तार तक आईं। उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती, इसलिए वह रोज नीचे नहीं उतरतीं। हफ्ते में एक बार उतरने का विचार किया है।

बापू का मौन था। मैंने आज २४ घंटे का उपवास किया। गीताजी का पारायण भी किया। गीताजी के पारायण का मंत्र मुझे महादेवभाई से मिला था। विचार है हर शनिवार को उपवास और गीताजी का पारायण करूंगी।

अणेसाहब का समवेदना का तार आया। बापू बोले, "हजारों तार और खत आये होंगे। उनमें से एक मथुरादास का खत और अणेजी का तार हमें दिया है, क्योंकि मथुरादास मेयर रह चुके हैं, बम्बई सरकार के सब लोगों को जानते हैं

और अग्रेजी तो आज सरकार के ही हैं।"

बापू का मौन था। वातावरण बहुत ही दम घोटनेवाला-सा बन गया है।

'वीमेन कॉल्ड वाइल्ड' पढ़ रही थी। हालिदे हलीब का वर्णन बापू को पढ़कर सुनाया। अच्छा था।

२३ अगस्त '४२

आज बापू को यहां आये पूरे दो हफ्ते हुए। महादेवभाई ने तो यहां एक हफ्ता भी नहीं बिताया!

आज भी बापू का मौन है। अच्छा नहीं लगता। शाम को ८ बजे बापू का रक्त-चाप लिया। ठीक था—१५६/९६, नाड़ी ६६।

आज सुबह कलैक्टर और प्रॉल नाम के नये सिविल सर्जन आये। दोनों मुंह कुप्पा किये हुए थे। यंत्रवत पूछते फिरते थे—"आप कैसे हैं?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "मेरी सेहत हस्ब मामूल है।"

बस, उन्होंने वाक्य पकड़ लिया। हर एक से पूछने लगे, "क्या आपकी सेहत हस्ब मामूल है?" बापू से भी यही पूछा। सरोजिनी नायडू ने तो अपना कमरा सजाया था। नये फूल रखे थे। मगर वे लोग न एक मिनट के लिए कमरे में बैठे, न कोई बात की। सरोजिनी नायडू को बुरा लगा। वहां हर एक को उनका बरताव बड़ा बुरा लगा।

दिन भर एक ही विचार आता रहता है—भाई, दुर्गाबहन और बाबला के क्या हाल होंगे? भाई को कैसा लगता होगा? इस युद्ध का क्या नतीजा होगा? इसमें किस-किस की अंतिम आहुति पड़ेगी? सब कुछ होने के बाद भी आखिर बापू विजय हासिल करें, तो बस है।

२४ अगस्त '४२

आज दस दिन पूरे हुए। सुबह-शाम हम फूल लेकर तार के पास जाते और वहां खड़े रहते हैं। सिपाही फूल ले जाकर समाधि पर रख आता है। फूल हवा से उड़ जाया करते थे, इसलिए उन्होंने सिर और पैर दोनों ओर पत्थर खड़े करके वहां छोटी कंदरा-सी बना दी है। एक तरफ से देखें, तो ऐसा मालूम होता है, मानो वह महादेव का मंदिर हो! दूसरी तरफ से देखने पर ऐसा लगता है कि वहां कोई शव पड़ा है, जिसका सिर और पैर उठे हुए हैं। तार और चिता-स्थान के बीच एक-दो झाड़ियां थीं, जिनके कारण नजर वहांतक पहुंच नहीं सकती थी। मि०

कटेली ने उन्हें कटवा दिया है । अब तार के पास से समूचा दृश्य नजर आता है। भविष्य के किसी चित्रकार के लिए बापू का तारों के भीतर से महादेवभाई को पुष्पांजलि चढ़ाना चित्रकला का एक खासा अच्छा विषय होगा।

शाम को ६ बजे बापू का मौन छूटा। ६१ घंटों के बाद! बहुत अच्छा लगा।

मेरे मन में आज यह विचार आ रहा था कि दैव ने महादेवभाई को दस-पंद्रह वर्ष और दिये होते, तो उसका क्या बिगड़ जाता! बापू के साथ घूमते समय यही उद्‌गार मेरे मुंह से सहज ही निकल गया। बाद में शाम को बापू ने कहा, "महादेव का काम पूरा हो चुका था। उसने ५० वर्ष में १०० वर्ष का काम पूरा कर लिया था। वह और क्यों ठहरता? भगवान उसे और क्यों ठहरने देता?"

मि० कटेली आज खबर लाये कि हम लाइब्रेरी से किताबें ले सकते हैं। पहले हमें कहा गया था कि नहीं ले सकते। बापू कहने लगे, "बाद में उन्हें शर्म लगी होगी कि वे किस हद तक जा रहे हैं!"

आज भी भाई के आने की कोई खबर नहीं मिली। महादेवभाई के जाने के बाद लगता था कि अब भाई जल्दी ही आ जायेंगे। मगर जैसे-जैसे दिन बीत रहे हैं, उनके आने की आशा कम हो रही है। अंदर से चिंता भी होती है, कौन जाने, उनका क्या हाल होगा? कहीं उन्होंने उपवास वगैरा तो नहीं शुरू कर दिया है, जो ये लोग उन्हें ला नहीं रहे?

२५ अगस्त '४२

कुछ दिनों से बापू के लिए साग ऊपर पकाना शुरू कर दिया था। मगर कोयला कम है, इसलिए आज से फिर नीचे रसोईघर में पकाना शुरू किया है। महादेवभाई तो वहीं से पकाकर लाते थे। सवेरे मैं मालिश में होती हूं। सब्जी काटकर बरतन में भर देती हूं, बाद में कैदी रसोइया उसे ले जाकर चढ़ा देता है। दो-चार दिन मैं सुबह आग वगैरा देखने गई थी। अब तो बापू की मालिश से निपटने के बाद जब वह कमोड पर जाते हैं, मैं साग देख आती हूं। बापू जब स्नान करके निकलते हैं, तब कैदी रसोइया सब्जी ऊपर ले आता है। मैं उस समय स्नान-घर में होती हूं। बा आज कह रही थीं, "देखो न, अब कैदी बापू का खाना लाते हैं। महादेव थे, तो खुद लाते थे।"

कल मैं रात भर सो नहीं सकी। एकाएक विचार आया—आज बापू के पास पड़े हैं। मगर कौन जानता है, यह कितने दिन रहनेवाली चीज है? इस विचार

ने रात के अंधेरे में उग्र रूप धारण कर लिया। महादेवभाई की मृत्यु का दृश्य तो अभीतक आंखों के सामने से हटता ही नहीं। सो इन दोनों चीजों ने मेरी नींद खा डाली।

घूमते समय अभीतक महादेवभाई की ही बातें हुआ करती हैं। आज बापू कहने लगे, "अब तुम्हें इस बारे में अधिक सोच-विचार नहीं करना चाहिए। न महादेव की, न हमारी इस लड़ाई की और न मेरी ही चिंता करनी चाहिए। मैं जान-बूझकर मरना नहीं चाहता। लेकिन ऐसी कोई परिस्थिति आ ही जाय, तो कहा नहीं जा सकता कि क्या करूंगा। मैं चाहता हूं कि तुम कुछ विचार करो। लेकिन उसे जबतक कार्यरूप में परिणत न किया जाय, वह निकम्मा है। इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम कुछ लिखो। मैंने पहले भी तुम्हें एक बार कहा था कि एक दफा 'मा ने शिखामण' (मां को सीख) नाम की गुजराती की एक पुस्तक मेरे देखने में आई थी। अच्छी पुस्तक थी। उस तरह की कोई चीज तुम्हें लिखनी चाहिए, जिससे बहनों और लड़कियों को स्वास्थ्य का आवश्यक ज्ञान मिल जाय। मैं खुद भी लिखना शुरू करनेवाला हूं। नोटबुक मंगवा लेना।"

२६ अगस्त '४२

आज भण्डारी आये। कहने लगे, "आप लोग जो किताबें मंगवाना चाहें, मुझे बतायें। मैं खरीद लूंगा। बाद में वे जेल-लाइब्रेरी के काम में आजायेंगी।" साथ में बहुत-सी किताबें और कुछ स्वास्थ्य-सम्बन्धी अखबार भी लाये थे।

शाम को बापू बिस्तर पर लेटे कि तभी मि० कटेली बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी का भेजा एक हुक्मनामा लाये। उसमें लिखा था कि बापू को अखबार मिल सकते हैं। वह फेहरिस्त भेजें, और हम लोग अपने घर के लोगों को घरेलू विषयों पर पत्र लिख सकते हैं।

बापू रात ठीक तरह से सो नहीं पाये। जिस शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत आई थी, वह उन्हें मंजूर नहीं है।

बापू ने आज 'आरोग्य नी चावी' की प्रस्तावना लिखी। यह बापूजी की पुरानी किताब 'गाइड टु हेल्थ' की नई आवृत्ति होगी। मुझसे कहने लगे, "मैं जो लिखता हूं, सो तुम्हें पढ़ जाना है। कुछ सुझाव देना हो, तो देना। मतलब यह कि जो काम महादेव करते थे, सो सब तुम्हें करना है। और यह तो तुम्हारा विषय भी है। इसे तुम महादेव से भी ज्यादा अच्छी तरह कर सकोगी।"

आज महादेवभाई होते, तो अखबार मिलने की खबर से और इस बात से कि बापू एक किताब लिखने लगे हैं, कितने खुश होते !

बा की तबीयत खूब अच्छी है। बापू के साथ सुबह-शाम आधा-पौन घंटा तेजी से घूम लेती हैं, मगर दम फूलने लगता है। मैंने एक-दो बार कहा भी कि यह अच्छा नहीं। कम घूमें या धीमे घूमें, मगर बा या बापू कोई भी सुनने को तैयार नहीं।

मेरी आंख में आज बहुत दर्द रहा।

२७ अगस्त '४२

आज बापू ने अखबारों की फेहरिस्त सरकार को दी। रोजाना, हफ्तावार और माहवार सब मिलाकर १६ अखबारों के नाम फेहरिस्त में थे। दोपहर को बम्बई सरकार के नाम पत्र लिखा कि वह बरसों पहले से गृहस्थ मिटाकर आश्रमवासी बन चुके थे। इसलिए सरकार की शर्त पर पत्र लिखने की इजाजत का वह कोई उपयोग नहीं कर सकते। पत्र में भाई का भी जिक्र किया था। लिखा था, "प्यारेलाल को आप मेरे पास भेजने को तैयार थे, मगर अभीतक उन्हें भेजा नहीं है और तिस पर मैं उन्हें पत्र भी न लिख सकूं, तो पत्र लिखने की इजाजत मेरे किस काम की? दुर्गाबहन वगैरा को मैं पत्र न लिख सकूं, वल्लभभाई से, जो मेरे मरीज थे, उनकी सेहत के बारे में न पूछ सकूं, तो और किसको लिखूं?"

रात को वाइसराय का उत्तर आया। भाषा मीठी थी, मगर असल में जवाब कोरा इन्कारी का था। मीराबहन भाषा को सराहने लगीं। बापूजी को भी मीठी भाषा अच्छी तो लगी, मगर हम जानते हैं कि ये लोग जहां बिना कुछ खर्च किये मीठी भाषा का उपयोग कर सकते हैं, कर लेते हैं।

२८ अगस्त '४२

बापू ने अरबी की भी प्राइमर और उर्दू की दो किताबें जेल से मंगवाई हैं। रोज अरबी, उर्दू, कुरान-शरीफ और बाइबिल का नियमित अभ्यास करते हैं। कभी-कभी उर्दू पढ़ते समय मुझे भी अपने साथ बैठा लेते हैं। आज उन्हें थोड़ी इमला लिखवाई।

घूमते समय भी बापू किसी विचारधारा में ही मग्न रहें, यह अच्छा नहीं लगता; क्योंकि दिन में वह प्रायः चुपचाप ही बैठते हैं। मगर मैं बातें भी क्या करूं? महादेवभाई तो बहुत-कुछ जानते थे। मेरा ज्ञान ही कितना है! सो आज सवेरे घूमते समय गीताजी के बारहवें और तेरहवें अध्याय के श्लोकों का अर्थ कर गई।

शाम को घूमते समय मि० कटेली साथ थे। बापू उन्हें चम्पारन की बातें सुनाते रहे। उन्होंने थोड़े में चम्पारन के सत्याग्रह का सारा इतिहास उन्हें सुना दिया। हिन्दुस्तान में वह उनकी पहली लड़ाई थी।

शाम को प्रार्थना के बाद रामायण का कहीं कोई अर्थ समझ में नहीं आता, तो बापू से पूछ लेती हूं। वह बहुत रस के साथ बताते हैं। कह रहे थे, "रामायण तो हमारी खुराक है, उसकी भाषा इतनी मधुर है कि मैं उससे कभी थकता ही नहीं।"

आज सुबह नल का पानी बंद हो गया था। इसलिए बापू ने रात को सोने से पहले स्नान किया। इससे सोने में कुछ देर हो गई।

बा की छाती में कुछ दर्द है। आज घूमने नहीं गईं। कल मेरे रोकने पर भी वह बापू के साथ ५५ मिनट तक तेजी से घूमी थीं। शायद यह दर्द उसीका नतीजा हो।

२९ अगस्त '४२

बापू गुड़ खाया करते हैं। बाजार के गुड़ पर मक्खी वगैरा बैठती हैं, इसलिए उसे गरम करके शुद्ध करते हैं। उसमें मिट्टी, घास वगैरा के टुकड़े भी पाये जाते हैं। इसलिए पहले उसे पानी में घोलकर छान लेते हैं, फिर पकाकर पानी सुखा देते हैं। साफ भी हो जाता है, शुद्ध भी। आज मैंने पानी की जगह दूध डाला। अच्छी-खासी टॉफी[1] बन गई।

मुझे पढ़ने के लिए बहुत कम समय मिलता है। सुबह प्रार्थना के बाद न सोऊं, तो एक घंटा मिल सकता है।

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये दो हफ्ते पूरे हुए। मैं उपवास करना चाहती थी, मगर बापू ने रोक दिया। बोले, "ऐसा करके हम मृत व्यक्ति के साथ न्याय नहीं करते। एक तरह से हम उसे बांध लेते हैं।" बाद में महादेवभाई की मृत्यु के क्या-क्या कारण हो सकते थे, इसकी चर्चा करते रहे। इसलिए आज गीताजी का पाठ नहीं हो सका। मुझे याद आया कि ऐसे ही एक दिन जमनालालजी बैठे थे। कहने लगे, "यह पुनर्जन्म की ही बात होगी; नहीं तो कहां तुम, कहां हम और कहां बापू!" सच है। कैसे हम सब इकट्ठे हुए!

रात भर पानी बरसा था। सुबह भी थोड़ा बरसता था। फिर भी बापू महादेव-भाई की समाधि पर पुष्पांजलि चढ़ाने गये ही। जाना तो कंटीले तारों की हद तक

---

[1] एक अंग्रेजी मिठाई

ही था। वहां ताड़ों के नीचे खड़े-खड़े गीताजी का पाठ किया। फिर वापस आकर ऊपर बरामदे में घूमे।

आज रसोइया मगन और भूरा दोनों नहीं आये। उन्हें उनकी मुद्दत से पहले ही छोड़ दिया गया था। जेल में राजनैतिक कैदियों के लिए जगह की जरूरत थी।

: १३ :

महादेवभाई के बाद

३० अगस्त '४२

आज बापू को यहां आये तीन हफ्ते पूरे हुए। जैसे-जैसे दिन जाते हैं, महादेवभाई की कमी और अधिक महसूस होती है। बाहर जाने पर और भी होगी।

आज फिर कलैक्टर और सिविल सर्जन आये। सरोजिनी नायडू कहती थीं कि आज वे कुछ अधिक स्वाभाविक अवस्था में थे।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "छः महीनों के अंदर हमें इस जेल से बाहर निकलना ही है। हमारी लड़ाई सफल हुई, तो भी और लोग हारकर बैठ गये, तो भी। मैं नहीं जानता, लोग क्या करेंगे। लेकिन मैं यह जानता हूं कि लोग लड़ाई के लिए तैयार नहीं थे। हमने तैयारी की ही नहीं थी; लेकिन अहिंसा का काम करने का रास्ता दूसरा ही होता है। इसलिए हमें निराश होने का कोई कारण नहीं। हम नहीं जानते कि ईश्वर ने क्या सोच रखा है। जो भी हो, लेकिन जितने आज इस लड़ाई के लिए निकल पड़े हैं, उनकी मर मिटने की तैयारी होनी ही चाहिए। वे आजाद हुए बिना चैन नहीं लेंगे। अगर आजादी के लिए लड़ते-लड़ते वे खत्म भी हो गये, तो खुद तो आजाद हो ही जायेंगे।"

मैंने पूछा, "उस हालत में हम लोगों को सरकार का सामना किस तरह करना होगा, जिससे या तो उसे हिन्दुस्तान को आजाद कर देना पड़े, या हमीं को खत्म कर डालना पड़े ?"

बापू कहने लगे, "सत्याग्रह करने के अनेक रास्ते हो सकते हैं। अगर सचमुच हम मुट्ठी भर लोग ही सत्याग्रह करनेवाले रह गये, तब तो वे लोग हमें चुन-चुनकर मार डालेंगे।"

मैंने कहा, "हां ठीक है, मगर यह सब तो छूटने के बाद की बातें हुईं न ?"

बापू कहने लगे, "छूटे बगैर हम रह नहीं सकते। बिना मुकदमा चलाये वे बरसों तक हमें जेल में बंद करके रख नहीं सकते। और मुकदमा चलाते हैं, तो किस बुनियाद पर चलायेंगे ? तुम्हें किस बिनाह पर पकड़ा ? बा को किस बिनाह पर पकड़ा ? उनके पास मुकदमा चलाने के लिए तो कोई सामान ही नहीं। क्या यह कहेंगे कि तुम लोग सभा में जाकर भाषण करने का विचार कर रहे थे ? इरादे को जबतक कार्यरूप में परिणत न किया जाय, गुनाह नहीं माना जा सकता।"

३१ अगस्त '४२

आज बापू का मौन था। मौन के दिन वातावरण बहुत उदास-सा बन जाता है। विषाद तो सचमुच महादेवभाई के जाने से ही छाया हुआ था। बापू के मौन के दिन वह और भी गहरा लगने लगता है।

शाम को मि० कटेली खबर लाये कि सरकार ने अखबारों की फेहरिस्त मंजूर कर ली है। उन्होंने मुझसे उसकी एक और नकल मांगी, ताकि वह अखबारवालों को लिखकर उन्हें मंगा सकें। बापू ने आठ अगस्त से लेकर इधर के सब अखबार मंगाने को कहा।

१ सितम्बर '४२

आज से नया वक्त शुरू हो गया है। घड़ियां एक घंटा आगे कर दी गई हैं। कारण यह बताया जाता है कि लोग काम से जल्दी लौटा करें। 'ब्लैकआउट'[1] के दिनों में इससे लोगों को सुभीता रहेगा। यहां बैठे तो यह परिवर्तन निकम्मा-सा लगता है, इसलिए हमारी घड़ियां सब पुराने वक्त के अनुसार चल रही हैं।

दोपहर को आज का 'टाइम्स आव इण्डिया' और 'बाम्बे क्रानिकल' आये। टाइम्स के पांच-छः पुराने अंक भी आज मिले, बाकी सब बाद में आयेंगे। अखबारों ने काफ़ी वक्त ले लिया। मालूम होता है, जनता ने हिंसा तो की है, मगर उसकी जिम्मेदारी सरकार की अपनी है। जब सब नेताओं को पकड़ लिया गया, तो लोगों को काबू में कौन रखता ?

मैंने पूछा, "बाहर निकलकर हम लोग क्या करेंगे ?" बापू बोले, "तब की बात तब सोचेंगे।"

---

[1] लड़ाई के दिनों में हवाई जहाजों के डर से रात को बत्तियां बंद रखने का नियम

एक दिन मीराबहन ने कहा था, "यहां से बाहर निकलने पर क्या आप यह चाहेंगे कि मैं जैसे गिरफ्तारी से पहले दौरा कर रही थी, फिर वैसे ही करूं ?"

बापू ने उत्तर दिया, "मेरा खयाल है कि अब से छः महीने बाद हिन्दुस्तान एक बिल्कुल बदला हुआ देश होगा। आज मैं नहीं कह सकता कि उस समय में तुमसे क्या कराना चाहूंगा।"

२ सितम्बर '४२

आज भण्डारी आये। मैंने उनसे भाई की खबर पूछी। उन्होंने बताया कि वह अभी आर्थर रोड जेल में ही हैं। उनकी तबीयत अच्छी है। मैंने कहा, "जैसे-जैसे दिन बीतते जाते हैं, उनके यहां आने की संभावना तो कम ही होती जाती है न ?"

वह बोले, "नहीं, ऐसा कुछ नहीं है।"

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के दो-चार पुराने अंक मिले। सरकार लोगों पर खूब जुल्म कर रही है। डर है कि लोग इससे और ज्यादा हिंसक बनेंगे। बापू को लोगों की हिंसा से दुख होता है। मगर वह यह भी मानते हैं कि सरकार ने उसे खुद मोल लिया है। इसलिए चुप बैठे हैं। दूसरी बात यह भी है कि अखबार आज सरकार के कब्जे में हैं। इनमें इकतरफा बयान ही ज्यादा आयेंगे। अखबारों के ऐसे बयानों पर कितना विश्वास किया जा सकता है, यह निश्चय करना भी कठिन है।

दोपहर को बापू मुझसे कहने लगे, "तुम्हें अपने एक-एक मिनट का हिसाब रखना चाहिए। हिंसा के इस समुद्र में अहिंसा को अपना स्थान ढूंढ़ लेना है और यह हमारे जीवन को नियमित बनाने से ही हो सकता है।"

भण्डारी आज कह गये थे कि मैं भाई को पत्र लिख सकती हूं। मगर मैं तो अभी किसीको पत्र लिख ही नहीं रही। बापू ने कहा है कि बम्बई सरकार की तरफ से उनके पत्र का उत्तर आने तक मैं राह देखूं।

मीराबहन को बम्बई सरकार का उत्तर मिला है कि वह अपने मित्रों को पत्र लिख सकती हैं।

आज कृष्णाष्टमी है। बहुत दिन पहले बापू ने मीराबहन को हाथीदांत की बनी हुई बालकृष्ण की एक मूर्त्ति दी थी। किसीने वह बापू को भेंट की थी। मीराबहन पास में थीं। उन्होंने वह मीराबहन को दे दी। कई वर्षों से वह उनके बक्स में पड़ी थी। आज उन्होंने उसे निकाला और उसकी पूजा की। बा की बिन्दी के बारे में बात हुई। बापू को पता ही नहीं था कि बा भी बिन्दी लगाती हैं और बा दिन-

गत बापू की आंख के सामने रहती है !

३ सितम्बर '४२

आज अखबार देर से आये। वर्षा के कारण लाइनें टूट गई हैं। इसलिए डाक देर से आई।

बापू ने वाइसराय के नाम एक तार लिखकर दिया। उसमें बताया कि अखबारों की खबरों का उनके मन पर क्या असर हुआ है।

मैंने 'आरोग्य नी चावी' का हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद शुरू किया।

४ सितम्बर '४२

बापू ने वाइसराय को तार के बदले पत्र लिखने का विचार किया। मि० कटेली कहते थे कि तार यहां से नहीं जा सकेगा। बम्बई की सरकार शायद अपने 'कोड' शब्दों में भेज सके। पहले बापू ने विचार किया कि भण्डारी से कहें कि वह फोन पर बम्बई सरकार से पूछ लें। मगर बाद में विचार बदल गया। कहने लगे, "तार में सब विस्तारपूर्वक कह भी नहीं सकूंगा। इससे पत्र भेजना ही ठीक होगा।" दोपहर को पत्र पूरा करके सोये। मुझसे कहा कि उनके उठने से पहले उसकी एक साफ नकल तैयार करके रखूं। मैंने नकल तैयार की। उठने के बाद उसे फिर से पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते फिर विचार बदला और कुछ भी न भेजने का निश्चय किया। कहने लगे, "इस पत्र में मैं कोई नई चीज नहीं दे रहा हूं। इससे उन लोगों को चिढ़ ही आ सकती है। वाइसराय अगर मित्र है, तो उसे चिढ़ाना नहीं चाहिए। और मित्र नहीं है, तो दुश्मन को लिखने से फायदा ही क्या ? लोगों की हिंसा को देखकर यदि मैं आन्दोलन बन्द करने का निश्चय करता, तो बात दूसरी थी। मगर आज तो मेरे सपने में भी यह चीज नहीं है। तो फिर लिखने से फायदा क्या ?" इतने में सड़क पर से कुछ लोग जोरों के साथ 'महात्मा गांधी की जय' पुकारते हुए गुजरे। बापू बोले उठे, "इसके साथ मेरे पत्र का क्या मेल !"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। छाती में दर्द रहता ही है।

शाम को समाधि पर तार के इस पार खड़े होकर सिपाही को फूल देते समय मैंने कहा, "इस तरह यहां खड़े होने से खूब अच्छी तरह मालूम हो जाता है कि हम कैदी हैं और कैद चुभने लगती है।"

मि० कटेली कहने लगे, "आप कभी जेल गई हैं ?"

मैंने कहा, "यह मेरी पहली यात्रा है।"

वह बोले, "लेकिन यह जेल नहीं है, यह तो महल है ।"

मैंने कहा, "बचपन में मैंने एक छोटी-सी कविता सीखी थी । उसका भावार्थ है—मेरे पास एक छोटा-सा कबूतर था । वह मर गया । क्यों मरा ? मुझे लगता है, गम से मरा । मगर गम काहे का ? उसके पांव में मैंने अपने हाथों से तैयार किया हुआ रेशमी धागा बांधा था । इस तरह यद्यपि धागा रेशमी था और प्यार-भरी उंगलियों ने उसे तैयार किया था, फिर भी वह बन्धन था और उसने बेचारे कबूतर को खतम कर डाला । इसी तरह यह महल कितना ही भव्य क्यों न हो, यह असल में जेल ही है । और जेलर कितना ही अच्छा क्यों न हो, आखिर तो वह जेलर ही है ।" सब हँसने लगे ।

५ सितम्बर '४२

आज पारसियों का नया साल है । मि० कटेली सुबह ही बापू को दण्डवत प्रणाम करने आये । मीराबहन ने मि० कटेली के लिए नाश्ते की मेज पर सुन्दर फूल सजा दिये । बापू ने मुझे उनके लिए एक 'बटन-होल' (कोट में लगाने के लिए फूलों का गुच्छा) तैयार करने को कहा । इसी तरह बापू सेवाग्राम में मुझसे लॉर्ड लोथियन के लिए बटन-होल तैयार करवाया करते थे । वहां फूल नहीं थे । घास से ही मैं बनाया करती थी और लॉर्ड लोथियन खुशी के साथ उसे अपने कोट में लगाया करते थे । बाद में जब उन्हें 'आर्डर ऑव दि थिसिल'[१] मिला, वह नाइट बने, तो मुझे ऐसा लगा मानो बापू ने पहले से ही उन्हें थिसिल घास के बटन-होल पहनाकर उनको मिलने-वाली इस पदवी की भविष्यवाणी कर दी थी !

दोपहर को खबर आई कि हम कांटेदार बाड़ के बाहर महादेवभाई की समाधि पर जा सकेंगे । शाम को हम वहां गये ।

[१] स्कॉटलैंड की एक सम्मानसूचक उपाधि ।

: १४ :

बा अस्वस्थ

बा की छाती का दर्द हृदय की बीमारी के कारण है। उनके हृदय की पीड़ा के लक्षण इसके सूचक हैं। दर्द आज अधिक था। मैंने मि० कटेली से कहा, "मुझे बा के लिए डाक्टरी सलाह की जरूरत है।" उन्होंने भण्डारी को फोन किया। भण्डारी रात को आये। बाद में डा० शाह आये। वह आगा खां के रिश्तेदार हैं। भले आदमी हैं। एमिल नाइट्राइट (Amyl Nitrite) की नलियां रखने को कह गये। नाइट्रो ग्लिसरीन (Nitro Glycerine) की टिकियां तो मेरे पास थीं ही। लिक्विड कोरा-मीन (Liquid Coramine) भी मंगवाली थी, ताकि वक्त जरूरत सामान तैयार मिले।

६ सितम्बर '४२

आज सिविल सर्जन और कलैक्टर फिर आये। भण्डारी ने सिविल सर्जन से कहा था कि बीमारों को देखकर आइये, इसलिए उन्होंने बा को, बापू को और सरो-जिनी नायडू को देखा। कहने लगे, "बा को फेंफड़ों की झिल्ली का दर्द है।" मैंने कहा, "इस दर्द का न तो सांस के साथ सम्बन्ध है, न खांसी के साथ। दर्द का फैलाव (Distribution) हृदय से संबंधित है।" तब उन्होंने 'हिस्टरी टिकट' पर लिख दिया, "दर्द फेफड़े की झिल्ली का है। उसमें हृदय भी आंशिक कारण हो सकता है। हृदय में कोई विशेष विकार या दोष नहीं है।"[१]

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। बा के हृदय की स्थिति साधारण कहना कैसी अजीब बात है! बा को तो श्वास की नली की सूजन और उसके कारण कफ इकट्ठा होने की पुरानी शिकायत है। इस वास्ते सांस लेने में कफ की घड़घड़ाहट होती है। उन्होंने कफ की आवाज को फेंफड़ों की झिल्ली की रगड़ की आवाज समझा होगा, भग-वान ही जाने। दिल की मांसपेशियों की कमजोरी है। हृदय का बायां किनारा अपनी जगह से बढ़ा हुआ है। दिल के परदे में सिकुड़न के समय स्पष्ट आवाज होती है। बात तो यह है कि जब वह मन में दिल की बीमारी की शंका रखते हैं, तो उन्हें हृदय को जरा ज्यादा ध्यानपूर्वक देखना चाहिए था।

---

[१] "Pain is pleuritic. There may be some coronary element as well. Heart, n. a. d."

उन लोगों के जाने के बाद डा० शाह आये।

बा कल से बिस्तर पर हैं। डाक्टरों के आने का इतना फायदा हुआ कि बा समझ गईं कि सचमुच बीमार हैं और उन्हें खाट पर पड़े रहना चाहिए, नहीं तो पूरी कोशिश करने के बाद भी मैं उन्हें आजतक बिस्तर पर नहीं रख सकी थी।

७ सितम्बर '४२

आज सवेरे कर्नल शाह और भण्डारी आये। भण्डारी कहने लगे, "अबसे यह ही यहां आया करेंगे, सिविल सर्जन नहीं। मुझे इनपर बहुत विश्वास है। इनके हाथ में शफ़ा है।"

मैंने बा के दिल की धड़कन का ग्राफ—नक्शा—बनाने को कहा। दोपहर को डाक्टर कोयाजी आयें और उन्होंने वह नक्शा उतारा। सामान्यतया ऐसा चार जगह बिजली के तार लगाकर किया जाता है, उन्होंने सिर्फ पहले तीन स्थान से ही किया। मैंने चौथे स्थान से भी लेने को कहा, मगर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।

सड़क की ओर से 'महात्मा गांधी की जय' का नाद आ रहा था। आज कोई बड़ी सभा हुई होगी।

कैदियों से भरी तीन लारियां सड़क पर से गईं। मालूम होता है, सरकार खूब जुल्म कर रही है। मगर अभीतक तो लोग भी हिम्मत दिखा रहे हैं। कहीं-कहीं हिंसा भी होती दीखती है। यह बुरी बात है। मगर नामर्दी इससे भी बुरी है।

आज भण्डारी कह रहे थे, "एक-दो दिन में आप अपने लिए मदद की उम्मीद रख सकती हैं।" शायद भाई आनेवाले होंगे। बापू से मैंने जिक्र किया, तो कहने लगे, "मुझे तो अब उसके आने की आशा बहुत कम है। जब सामने आकर खड़ा हो जायेगा, तब मानूंगा कि आया।" उसके बाद बताने लगे कि उन्हें आज ही स्वप्न आया था कि भाई उनके सामने बैठे हैं। कहने लगे, "स्वप्न क्या, मैं तो आधे से ज्यादा जाग्रत था। देखता हूं प्यारेलाल सामने खड़ा है। उसके हाथ में एक कागज है। कहता था, 'मुझे तो आपके पास ये लोग (सरकार) रहने नहीं देंगे। सब बातें मैंने इस कागज पर लिख डाली हैं, ताकि मुझे सब कहने का समय न मिले, तो आप यह पढ़ लें।' पहले तो मुझे आभास हुआ कि महादेव बातें कर रहा है, मगर फिर देखता हूं, तो प्यारेलाल है। उसने कागज मुझे देकर जल्दी-जल्दी कहना शुरू किया। बाहर की सब खबरें दीं। कहा, 'लड़ाई अच्छी चल रही है। आर्यनायकम खूब काम करता है, श्रीमन्नारायण की कलम में अद्भुत शक्ति आ गई है, वह भी बहुत काम

कर रहा है। सरकार की तरफ से बहुत सख्ती होती है, इस चीज ने जनता के दिल में बड़ा घर कर लिया है। लोग सरकार के सामने जम गये हैं। आप पर भी खूब सख्ती करनेवाले हैं। मुझे आपके पास रहने नहीं देंगे, मगर सुशीला तो आपके पास है ही। उसके माता-पिता-भाई आज सब आप ही हैं। उसपर दया रखना और मैं तो जहां भी रहूंगा, आप ही का काम करूंगा। मैं आपके ढंग से काम कर रहा हूं, करता रहूंगा। मेरे काम से आपको कभी सिर नीचा नहीं करना पड़ेगा, आपको विश्वास दिलाता हूं।' इतना कहकर वह गायब हो गया। मैं जाग उठा।''

दूसरे दिन 'सर्वोदय' और 'राष्ट्रभाषा समाचार' इत्यादि मासिक पत्र आये, उनमें देखा कि भाई ने स्वप्न में जो बाहर की लड़ाई इत्यादि की खबरें दी थीं, करीब-करीब सही थीं। कॉमर्स कालेज, वर्धा को सरकार ने बन्द करा दिया था। आर्यनायकमजी और श्रीमन्‌जी पकड़े गये थे। खूब सख्ती चल रही थी, लेकिन लोग यथाशक्ति लड़ जा रहे थे।

८ सितम्बर '४२

आज बा की तबीयत थोड़ी अच्छी है। डा० शाह आये थे। डा० कोयाजी जो दवा बता गये थे, वह उनको नापसन्द है। कहने लगे, "दवा न देना। हृदय जब यथा-शक्ति काम कर रहा है, तो चलते घोड़े को चाबुक क्या लगाना!"

दिन शांति से गुजरा। यहां तो इतनी शांति मिलती है कि उससे थक जाते हैं। बाहर जायंगे तब क्या होगा, सो तो भगवान जाने, मगर जायंगे तब न!

और कब जायंगे, कैसे जायंगे, इस सबपर भविष्य का आधार होगा। महादेवभाई अच्छे इन झंझटों से मुक्त हो गये। कई बार मन में शिकायत उठती है, उन्हें इस तरह दगा नहीं देना चाहिए था। मगर नहीं, वह अपना जीवन-कार्य पूरा कर गये, हमें अभी करना है।

९ सितम्बर '४२

बा की तबीयत आज भी अच्छी है। डाक्टर शाह और भण्डारी आये थे। पहले तीन नक्शे उतारे गये थे। उनमें दिल की कोई खराबी दिखाई नहीं दी। मगर मैंने कई बार देखा है कि पहले तीन नक्शों में कुछ नहीं मिलता, मगर चौथे नक्शे में खराबी पकड़ी जाती है। मैंने कर्नल भण्डारी से कहा कि चौथा नक्शा भी लेना चाहिए। उस रोज डाक्टर कोयाजी से भी कहा था, मगर न जाने क्यों, उन्होंने नहीं लिया। डाक्टर शाह कहने लगे, "सच तो यह है कि मैं इन और इस तरह के

दूसरे नये-नये आडम्बरों में यकीन नहीं करता।"

जब सरोजिनी नायडू के गुर्दे की हालत की जांच कराने की बात हुई थी, तब भी उन्होंने आधुनिक विज्ञान की प्रगति वगैरा में अपनी अश्रद्धा प्रकट की थी और बात टाल दी थी।

१० सितम्बर '४२

आज 'बॉम्बे क्रानिकल' के सब पुराने अंक आ गये। मालूम होता है, महादेव-भाई की मृत्यु को देश ने चुपचाप सह लिया है। यह चीज बापू को काफी चुभी है। घूमते समय कहने लगे, "आखिर तो महादेव इनके जेल में मरा है न? महादेव का खून इनके सिर है। मैं उस दिन गवर्नर को लिखनेवाला था, मगर फिर काट डाला। जिन्दा रहा, तो किसी दिन मैं जरूर उन्हें यह सुनाऊंगा कि महादेव की मृत्यु का कारण आप हैं। मैं मानता हूं कि वह जेल न आते, तो कम-से-कम इस वक्त तो हरगिज न मरते। बाहर वह कई तरह के कामों में उलझे रहते। यहां वह एक ही विचार में डूबे रहे, एक ही चिन्ता उनके सिर पर सवार रही। वह उन्हें खा गई। उन-पर भावना का कुछ इतना जोर पड़ा कि वह खतम हो गये। देश ने कुछ भी नहीं किया। बैकुण्ठ मेहता की श्रद्धांजलि तो आने ही वाली थी और बरेलवी की भी। मगर महादेव तो सारे देश के थे और देश के लिए वह गये हैं। भगतसिंह की मृत्यु के बाद जब मैं लॉर्ड अर्विन से समझौता करके करांची जा रहा था, तो लोगों के झुंड-के-झुंड हर स्टेशन पर मेरे पास आते थे और चिल्लाते थे, 'लाओ भगतसिंह को!' इसी तरह अबकी भी वे सरकार को कह सकते थे, 'लाओ महादेव को!' सर-कार लाती तो कहां से? कह देती कि जो लोग इतने भावुक, इतने विक्षुब्ध और इतने संवेदन-शील हैं, वे जेल में आते ही क्यों हैं? न आयें—वगैरा।" फिर बापू कहने लगे, "मगर लोग शायद सोचते होंगे कि आज सरकार के साथ ऐसा घमासान युद्ध चल रहा है कि उसमें दूसरी किसी चीज का विचार करने का अव-काश ही कहां रह जाता है!" मैंने कहा, "और आपने भी तो तार में लिखा था न कि जो किया जा सकता था, किया गया! इसके कारण भी लोग शान्त रह गये होंगे। समझे होंगे कि यह तो स्वाभाविक मृत्यु थी, जो कहीं भी हो सकती थी।" बापू ने कहा, "सो तो है, लेकिन मृत्यु हुई तो सरकार के जेल में न?"

बा अच्छी हो रही हैं। बापू को आज एक पतला दस्त हुआ। दो-तीन दिन से आलू और शकरकंद खाना शुरू किया था। शायद उसका असर होगा।

: १५ :

भाई आ पहुंचे

११ सितम्बर '४२

आज दोपहर में खाना खाकर उठी, तो किसी ने कहा, प्यारेलाल आ गये। मैंने ऊपर देखा,तो वह सामने बरामदे में खड़े थे। बापू उनके आने की आशा छोड़ चुके थे। महादेवभाई को गये चार हफ्ते होने आये। ऐसा लगता था कि भाई को आना होता, तो जल्दी ही आते। सो बापू कल ही कह रहे थे, "अब तो मेरे सामने आकर वह खड़ा रहेगा, तभी मैं मानूंगा कि वह आया।"

महादेवभाई की मृत्यु से भाई को बड़ा धक्का लगा था। कहने लगे, "जाने की बात तो मैं किया करता था और चले गये वह!"

भाई ने बताया कि जिस दिन महादेवभाई की मृत्यु हुई, उसी दिन सवेरे करीब साढ़े आठ बजे उन्होंने पता नहीं क्यों उपवास करने का विचार किया था। (यहां आगा खां महल में करीब साढ़े आठ बजे ही महादेवभाई की तबीयत बिगड़ी होगी। भाई को तब कुछ पता न था कि यहां क्या हो गया है।)

फिर कहने लगे, "मैंने विचार किया था कि इस बार तुझे यहां गीताजी और बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—सिखाऊंगा।" और संयोग की बात कि यही दोनों चीजें यहां बापू मुझे सिखा रहे हैं! बापू ने जब यह सुना, तो कहने लगे, "टेलीपेथी कितना काम करती है!"

मि० कटेली को करीब महीने-भर के बाद कोई बात करने को मिला। बहुत खुश थे। खाने के बाद काफी देर बैठकर भाई के साथ बातें करते रहे।

चर्चिल के भाषण से बापू को और हम सबको बड़ा आघात लगा। मन पर यह भी असर हुआ कि ऐसा भाषण लोगों को और भड़कायेगा और कड़ा बना देगा।

महादेवभाई की मृत्यु पर बापू ने जो तार भेजा था, वह आज अखबार में आया, मगर सेन्सर किया हुआ था। उसमें से दो-तीन वाक्य काट दिये गये थे। एक तो यह कि महादेवभाई देशभक्त और योगी की मृत्यु मरे हैं और दूसरा बापू का आशा प्रकट करना कि उनका लड़का उनके स्थान को सुशोभित करने के लिए अपने-आपको तैयार करेगा। बापू ने साफ कहा था कि अगर तार जैसा लिखा है, वैसा ही न जा सके

तो वह भेजना नहीं है। जब मैंने काटे हुए वाक्य बताये, तो वह बहुत चिढ़ गये। मीराबहन कहने लगीं, "शायद प्रेस ने काट दिये हों। यहां से तो पूरा-का-पूरा गया होगा।" बापू कहने लगे, "बहुत करके यहीं—जेलवालों ने—सेन्सर किया होगा।" मीराबहन कहने लगीं, "जब हम बाहर निकलेंगे, तभी सचाई का पता चलेगा।" बापू कहने लगे, "Don't you see I get out only as a free man. Either India wins her freedom, or I go to lie by Mahadev's side."[1]

आज बापू का खून का दबाव खूब बढ़ गया (१८८/११२/११६) था। कहने लगे, "बस कोई भी असत्य या बेईमानी की बात देखकर मेरा मिजाज बिगड़ जाता है।" यह इशारा चर्चिल के भाषण की तरफ था।

१२ सितम्बर '४२

दिन में कुछ खास खबर नहीं थी। भाई इधर-उधर की बातें सुनाते रहे। बाहर की खबर सन्तोषजनक है। बापू का विश्वास है कि ईश्वर के हाथ के बिना ऐसा आन्दोलन बिना लीडरों के चल नहीं सकता—खास करके जब सब लीडरों को सरकार एकदम उठा ले गई हो।

घूमते समय मैंने कहा, "बापू, कोई चमत्कार ही हो, तो आज हमारी सफलता हो सकती है। मुसलमान तो ऐसे अकड़े पड़े हैं, सरकार भी उन्हें सिर चढ़ा रही है। ऐसी हालत में हमारी सफलता कठिन है।"

बापू बोले, "हां सो तो है, मगर जहां सत्य रहता है, वहां चमत्कार भी होते हैं। मैंने तो कहा ही है कि अहिंसा नये ही ढंग से काम करती है। लोग चुपचाप बैठ नहीं जायंगे, तो सब अच्छा ही होगा।"

१३ सितम्बर '४२

आज कमिश्नर और सिविल सर्जन के आने का दिन था। मगर सिविल सर्जन की जगह डा० शाह ही आये। वह भाई को जानते हैं, ऐसा कहने लगे। कमिश्नर भी जब आते हैं, कुछ-न-कुछ बातें करते हैं। सरोजिनी नायडू पहले दिन कमिश्नर और सिविल सर्जन से बहुत चिढ़ गई थीं, मगर अब खुश हैं।

शाम को घूमते समय भाई बाहर की बातें सुना रहे थे। बापू कहने लगे, "अगर

---

[1] "तुम समझती नहीं हो कि मैं आजाद होकर ही बाहर निकलूंगा। या तो भारत आजादी प्राप्त करेगा या महादेव के पास मेरी भी समाधि बनेगी।"

सरकार ने हमें पकड़ने की भूल न की होती, तो आन्दोलन यह रूप कभी लेनेवाला था नहीं। मैं अकेला भी बाहर रहता, तो संभाल लेता। मगर अब तो मैं अकेला बाहर निकलना नहीं चाहता।" मैंने पूछा, "क्यों?" कहने लगे, "उस वक्त इच्छा थी, श्रद्धा थी और शक्ति भी थी कि मैं संभाल लूंगा। मगर आज न इच्छा है, न श्रद्धा है, न शक्ति है।" मैंने कहा कि इसे जरा विस्तार से समझाइये। कहने लगे, "इच्छा होती है, तो शक्ति भी आती है, श्रद्धा रहती है; मगर जब इच्छा ही नहीं, तो शक्ति कहां से आ सकती है? मैंने तो अपनी इच्छा को भी ईश्वर के अधीन कर दिया है न! तो उसे जब जो मुझसे कराना होगा, करायेगा। यों कहो कि आज ईश्वर मुझसे कोई इच्छा नहीं करा रहा। ठीक है, ईश्वर को लगा होगा कि आंदोलन ऐसे ही चल सकता है।"

प्रार्थना में मीराबहन ने भजन गाया। उसके बाद बापू का मौन शुरू हुआ।

१४ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। महादेवभाई की समाधि पर जो पत्थर रखे थे, उनका आकार कब्र का था। बापू को वह खटका। हम सबको भी। इस कारण दो रोज हुए उसे चौरस करवा दिया है। रघुनाथ वगैरा ने गोबर से वहां लीप भी दिया है। उस पर छेद करके फूलों का ॐ बनाया। और जगह भी फूलों के लिए छेद किये। सजाने पर बहुत सुन्दर लगता है। मैंने कहा, "बापू, महादेवभाई होते, तो बहुत खुश होते और कहते, 'बापू, कैसा सुन्दर दीखता है!'"

आज अखबारों से पता चला कि बापू का तार दुर्गाबहन वगैरा को भेजा ही नहीं गया था। ४ सितम्बर को वह दिल्ली से डाक के जरिये भेजा गया। हम सबको इससे बहुत आघात लगा। सरकार ने दुर्गाबहन वगैरा से तो माफी मांगी है, मगर वह मांगनी तो चाहिए बापू से।

बा अच्छी हैं, बापू की तबीयत भी ठीक है। वर्षा खतम होगई। दिन में खूब धूप होती है। रात को आकाश तारों से भरा होता है। बापू रात में कहने लगे, "मैं इन तारों के नीचे सो सकूं, तो नाचने लगूं।" मैंने कहा, "हमें भी आकाश-दर्शन करायें।" कहने लगे, "हां, जितना याद है, उतना तो करा ही सकता हूं। यरवदा में मैं बहुत आकाश देखा करता था।"

१५ सितम्बर '४२

आज समाधि पर गीता ले जाना भूल गई। बारहवां अध्याय कंठ हो गया है।

इस कारण मैंने सोचा उसके पाठ में कोई कठिनाई नहीं आयेगी, मगर पढ़ते-पढ़ते एकाध श्लोक आगे-पीछे हो गया। घूमते समय बापू इस पर कहते रहे, "पूरा बारहवां अध्याय तो तुम्हारे लिए एक श्लोक के जैसा हो जाना चाहिए, फिर उसमें भूल हो नहीं सकती। और फिर इस बात का घमंड नहीं होना चाहिए कि तुमको सारा याद है। पादरियों को तो बचपन से ही बाइबिल का अभ्यास कराया जाता है। तो भी वे किताब सामने रखकर प्रार्थना-समाज में बाइबिल पढ़ते हैं, क्योंकि कहीं भूल हो जाये, तो सारे समाज का तार टूटता है।"

इसके बाद बातों-बातों में बाहर जाकर क्या होगा, इस बारे में मेरे मुंह से कुछ निकल गया। पर तुरन्त ही मैंने सुधार लिया, "मगर वह तो बाहर जायेंगे तब न! कौन जाने महादेवभाई के साथ ही सबको यहीं रह जाना हो।" बापू बोले, "वह तो है, और मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि हम सब यहीं रह जायं।" मैंने कहा, "आप नहीं। आपको छोड़कर बाकी हम सब।" बापू इस वाक्य से कुछ चिढ़-से गये। बोले, "हमेशा ऐसा कहना ठीक नहीं है। ऐसा करके तुम लोग मेरे शुभ संकल्प को ठेस पहुंचाते हो। इसी में महादेव गया और अब तुम भी वही कह रही हो।" मैंने कहा, "आप नाराज न हों, तो मैं कहूं कि क्यों मेरे मुंह से ऐसा उद्गार निकला। कोई भी सेनापति—जनरल—खुद मरने की जगह पर नहीं जाता, अपने सिपाहियों और अफसरों को भेजता है। ऐसे ही आपका है। आप हैं, तो आजादी की लड़ाई चलाते रहेंगे। अहिंसा की लड़ाई आपके साथ है।" यह सुनकर बापू कहने लगे, "मगर तू तो जनरल की भी सुपर जनरल—बड़ी जनरल—बनती है। यही मैंने महादेव को कहा था। जनरल जानता है, उसे कहां किसे भेजना है और कहां खुद जाना है। तूने 'मुक्तधारा' पढ़ी है। वहां युवराज कैसे अपने भाई को रोक देता है? नहीं, मुझे ही इस काम में जाना चाहिए, तुमको नहीं।" फिर विलियम ऑव ऑरेन्ज का किस्सा कहा, "ऐसे ही मुझे लगे कि मुझे जाना चाहिए और तुम लोग मेरा विरोध करते रहो, तो वह मेरी शक्ति क्षीण करने जैसा है। आज तो मैं कर्तव्यमूढ़ बनता नहीं हूं। लेकिन मुझे भी लग सकता है कि देखो न, महादेव कहता था, सुशीला, बा, प्यारेलाल, सब कहते हैं, तो शायद वे कहते हैं वही ठीक होगा। और धर्मग्रन्थों में भी कहा है, जो सौ को खिलाता है, वह रहे और पचास खानेवाले मर जायें, तो हर्ज नहीं, मगर खिलानेवाला भी चला जाये, तो सब भूखों मरेंगे। इसलिए मुझे तो जिन्दा रहना चाहिए। मगर ऐसा है नहीं। जब खिलानेवाला कहता है कि मैं तो इस तरह

जिन्दा रहूं, तो भी खिला नहीं सकूंगा, मैं खुद भार-रूप बन जाऊंगा, तो उसे रोकने से क्या फायदा ! सब खानेवाले उसके जाने से अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। मैं मरना चाहता हूं, ऐसा नहीं है। देखती नहीं कि मैं तो पन्द्रह वर्ष के लड़के के उत्साह से उर्दू सीख रहा हूं और दूसरा अभ्यास भी करता हूं। तेरे साथ खेलता हूं। जो भी रस लेने लायक चीजें हैं, उनका रस मैं खींच लेता हूं। मगर जब ऐसा मौका आ जाय कि मैं लाचार बन जाऊं, तब मैं क्या कर सकता हूं !" मैंने कहा, "जी, कोई ऐसा मौका आ सकता है, जबकि आदमी अपना स्वाभिमान रखकर जिन्दा नहीं रह सकता। ऐसी हालत में जीने से क्या फायदा? मगर ऐसा मौका न आये, ऐसी इच्छा रखने में तो कोई हर्ज नहीं है।" कहने लगे, "ऐसे तो महादेव भी मान गया था कि ऐसा मौका आ सकता है कि उपवास करना धर्म हो जाय। मगर यह बात उसके हृदय में बैठी नहीं थी। ऐसी इच्छा करने में दोष नहीं, मगर वह इच्छा तुम्हारे ही पास रहनी चाहिए।" मैंने कहा, "ठीक है। आपका मतलब है कि आपके सामने उसकी बात नहीं करनी चाहिए। मूक इच्छा रखना ठीक है।" बोले, "हां, मूक इच्छा ईश्वर के पास जाती है। अगर हम उसकी चर्चा करते हैं, तो उसकी शक्ति कम होती है और मेरे रास्ते में वह रुकावट डाल सकती है। ईश्वर के पास अपनी इच्छा रखो। जो उसे करना होगा, सो करेगा, जो मुझसे करवाना होगा, वह करायेगा।"

घूमने का वक्त पूरा हो गया। भाई अब बापू की मालिश वगैरा करते हैं। मैं बा का काम कर देती हूं, सो खाने आदि का सब काम मिलाकर मेरा समय तो वैसा-का-वैसा ही भरा रहता है। दोपहर खाने के समय भाई के साथ बैठती हूं। वह बहुत धीरे-धीरे खाते हैं। मैं खाकर उतने समय में साग भी काट लेती हूं। आज भी ऐसा ही किया। इससे बापू के पैर मलने को जरा देर से पहुंची, तो डांट पड़ गई। कहने लगे, "हमारे पास जब काम पड़ा हो, तब हम खाना खाकर मेज पर बैठे नहीं रह सकते।"

शाम को घूमते समय बाहर जो चल रहा है, उसकी बातें होती रहीं। बापू बाइबिल—ओल्ड टेस्टामेंट—की बात कर रहे थे—"उसमें रक्तपात जगह-जगह आता है। ईश्वर की शरण जो लोग जाते हैं, मामूली भूलें करनेवाले लोग जब ईश्वर का आश्रय मांगते हैं, तब ईश्वर उन्हें बचा लेता है। उनके दुश्मनों को मार डालता है, प्लेग भेज देता है, इत्यादि। तो मैं तो उसमें से इतना ही सार निकाल लेता हूं कि

ईश्वर पर श्रद्धा बड़ी चीज है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसे जो करना है, वह किसीकी भी मार्फत करवा लेता है। हिन्दुस्तान में भी उसे जो करवाना होगा, करा लेगा।"

१६ सितम्बर '४२

आज घूमते समय फिर बाहर की बातें होने लगीं। भाई ने कहा, "जो फौज और पुलिस से आशा थी, वह तो कुछ फली नहीं। बाकी आम लोग आंदोलन चला रहे हैं।" बापू कहने लगे, "मैंने फौज और पुलिस पर कभी आशा रखी ही नहीं थी। रूस में बेशक फौज और पुलिस जनता से आ मिली; परन्तु वहां तो हिंसक क्रान्ति थी, हमारी अहिंसक क्रान्ति है। उसमें फौज, जो हिंसा की प्रतिमा है, कैसे आ सकती है? वे लोग तब जनता के साथ आयेंगे, जब सत्ता लोगों के हाथ में आ जायेगी; क्योंकि पीछे तो कोई चारा ही नहीं रह जाता। वे लोग तो जड़ हैं। पढ़े-लिखे सुशिक्षित लोग कमीशन लेकर बैठे हैं; परन्तु किसीने अपना कमीशन छोड़ा? यह जड़ता की निशानी है।"

आज रामेश्वरी नेहरू की दोबारा गिरफ्तारी तथा अम्बालाल साराभाई की लड़कियों तथा और जगह दूसरी स्त्रियों की गिरफ्तारी की खबर पढ़कर बापू ने कहा, "इसका मैं यह नतीजा निकालता हूं कि कई जगह हिंसा की घटनाएं होते हुए भी सब मिलाकर आंदोलन अहिंसक है, वरना इस तरह इतनी स्त्रियां—और कुलीन स्त्रियां—इसमें हिस्सा नहीं ले सकती थीं।"

कातते समय बापू को बाइबिल—न्यू टेस्टामेंट—पढ़कर सुनाती हूं। ऐसा करने से मेरा भी बाइबिल का अभ्यास हो जाता है।

आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई। बापू के मन पर उसका गहरा असर पड़ा। शाम को मीराबहन से बोले, " 'जब मैं अद्भुत सलीब की ओर निहारता हूं' (When I survey the Wond'rous Cross)[1] गा सकोगी? आज मैथ्यू की कथा पूरी हुई। सुनकर दिल भर आया है। मैं उससे भरा हुआ हूं।" मीराबहन कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहतीं, जिससे उनके ईसाई धर्म और यूरोपियन जन्म की झलक आस-पास के लोग देख सकें। इसीलिए बापू ने उनसे पूछा कि यह ईसाई गीत गा सकेंगी या नहीं। मीराबहन ने कहा, "आपके सामने गाऊंगी। बाहर जाकर औरों

[1] अंग्रेजी के एक भजन की पहली कड़ी।

के सामने नहीं; क्योंकि आपको तो कोई गलतफहमी नहीं होगी।" मीराबहन ने बहुत अच्छी तरह गाया। रात जब बापू पलंग पर सोने गये, तब मीराबहन ने आकर पूछा, "बापू, फिर गाऊं?" बापू ने "हां" कहा और उन्होंने दोबारा वही गीत बापू को सुनाया। उसकी ध्वनि को कान में रखकर बापू सो गये। उनके सोने के थोड़ी देर बाद बा ने गरम पानी मांगा। हममें से कोई पास न था, हम लोग अभी भीतर बैठे बातें और काम कर रहे थे। सो बापूजी ने खुद उठकर उन्हें पानी दिया। बा की आज की रात अच्छी नहीं कटी। खाने-पीने में कुछ बदपरहेजी हुई थी। सुबह उठने पर उन्हें उल्टी कराई। तब जाकर उनकी तबीयत कुछ ठीक हुई।

: १६ :

अहिंसा की कसौटी

१७ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बा की तबीयत की चर्चा करते-करते बापू अपने दक्षिण अफ्रीका के अनुभव की बातें सुनाने लगे। पोलक ने उन्हें रस्किन का 'अण्टू दिस लास्ट'[१] पढ़ने को दिया था। पढ़कर बापू के मन पर उसका गहरा असर हुआ। दिमाग में वही विचार भरे थे। उसी रोज किसी मित्र के यहां खाना खाने गये थे। वहां बहुत गरिष्ट भोजन हुआ। पेट भारी होने के कारण रात में नींद नहीं आई—'अण्टू दिस लास्ट' के ही विचार आते रहे। बस आखिर में निश्चय किया गया कि अब मुझे ऐसा खाना नहीं खाना है, सादा जीवन बनाना है, जंगल में जाकर रहना है। दूसरे ही दिन साथियों की सम्मति लेकर जमीन के लिए विज्ञापन दे दिया। हफ्ते भर के अन्दर जमीन मिल गई। बस रात भर में ही जीवन पलट गया। फिनिक्स (Phoenix) आश्रम की यही जड़ है।

शाम को घूमते समय बापू ने भाई को खाने के समय का पालन करने को कहा। आज उन्हें बहुत देर हो गई थी। सरोजिनी नायडू नाराज हो गई थीं। बापू ने कहा कि वह यहां कुटुम्ब की मां बनकर बैठी हैं। सबको मां की तरह प्यार से खिलाती हैं। उनको हमें शिकायत का मौका नहीं देना चाहिए।

---

[१] इसका अनुवाद बापू ने 'सर्वोदय' के नाम से किया है।

'इण्डियन मैडीकल गज़ट' के सम्पादक का ४ अगस्त का लिखा पत्र आज मिला है। मेरे लेख के प्रूफों के बारे में था। लिफाफे पर मोहनभाई के हाथ का पता लिखा था—द्वारा महात्मा गांधी, आगा खां महल, पूना। और हमें पत्रों पर हमारी नजरबंदी की जगह लिखना मना है! क्या मजाक है कि जिसे सब जानते हैं, उसे छिपाने की कोशिश की जा रही है।

१८ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू मुझे कल की एक घटना पर शिक्षा देते रहे, "मैं कहता हूं कि वह मूर्खता थी। महादेव की मृत्यु से और कुछ नहीं, तो इतना तो सीखते कि किसी चीज से परेशान होना ही नहीं चाहिए। बारहवां अध्याय रोज पढ़ने का क्या अर्थ है? स्थितप्रज्ञ के लक्षणों का पाठ करने का क्या अर्थ है?" मुझे बड़ी शर्म आई। पहले से ही झेंप रही थी, मगर इससे और बुरा लगा। कितना सोचा था कि अपने-आपको सुधारा है। छुई-मुईपन निकाल डाला है। मगर पहली ही परीक्षा में फेल हो गई।

दोपहर बापू जो पुस्तक लिख रहे हैं, उसका कुछ तर्जुमा किया, फिर काता। आराम नहीं किया। इससे शाम को जल्दी नींद आने लगी। बापू की राह देखते-देखते सो गई, आधा घंटा सो चुकी थी, तब बापू आये। उन्हें उठने में देर हो गई थी। बोले, "तू वक्त पर उठाने क्यों नहीं आई? मुझे तो काम में वक्त का ध्यान न रहे, पर तुझे तो मुझे कहना चाहिए था कि उठने का वक्त हुआ।" मुझे अपने सो जाने का अफसोस हुआ।

बाबला और दुर्गाबहन का बापू के नाम पत्र आया था। दुर्गाबहन का एक ही वाक्य उनके हृदय की स्थिति बताता था—"पत्थर की बनी हूं। सह रही हूं।" बाबला का सुन्दर पत्र था—"मेरे बारे में जो लिखा है, वैसा करने का प्रयत्न तो करूंगा, पर मैं तो बिल्कुल क्षुद्र हूं। वहां कैसे पहुंच सकूंगा!" मैंने मन में कहा, "भगवान तुम्हें पहुंचायेगा, तुम्हारे पिता की आत्मा तुम्हें पहुंचायेगी।"

शाम को घूमते समय बापू बताते रहे कि कैसे वह एक बार कुतुबमीनार देखने गये थे। दिखानेवाला इतिहास का बड़ा विद्वान था। वह बताने लगा कि कुतुब के बाहर के दरवाजे की सीढ़ी से लेकर एक-एक पत्थर मूर्ति का पत्थर है। मुझसे यह सहन नहीं हुआ। मैं आगे बढ़ ही नहीं सका और मुझे वापस ले चलने को उन्हें कहा और मैं वापस आ गया। पीछे इस्लाम के बारे में बातें होती रहीं। बापू जानते हैं

कि मुसलमानों ने कितने अत्याचार किये हैं, फिर भी मुसलमानों के प्रति वह इतनी उदारता और इतना प्रेम बताते हैं। मुसलमान उन्हें गाली देते हैं, तो भी उनकी खातिर वह हिन्दुओं से लड़ते हैं। यह चकित कर देनेवाली चीज है। उनकी अहिंसा की कसौटी है।

महादेवभाई ने मेरी भजनावली में कुछ भजन लिख दिये थे, उनमें से एक था—"जावे कि हो दिन आमार विफले चालिये।" आज वह मेरे कान में गूंज रहा था। मन में उठ रहा था, "क्या है हमारा जीवन! ईश्वर बापू को दीर्घायु करें, ताकि वह अपना काम पूरा करें। हमारे जैसों की आयु भी भगवान उन्हें दे दे, तो उसका सदुपयोग हो जाये।

१६ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू फिर परसोंवाली घटना की बात करने लगे। पोलक की बात बताने लगे, "बहुत जल्दी चिढ़ जाता था। वह और श्रीमती पोलक पहले मित्र थे। इथीकल सोसाइटी के सदस्य बने, वहां से मित्रता शुरू हुई, आखिर मैंने उनकी शादी कराई। वे सोचते थे कि कुछ पैसे हो जायं, तब शादी करें। मगर मैंने कहा, 'यह निकम्मी बात है, और पैसे की जरूरत हो, तो मैं भी तो तुम्हारे पास पड़ा हूं न!' " इसी तरह बापू ने अपनी टाइपिस्ट, मिस डिक की, जो स्काच थी, शादी मि० मैक्डोनाल्ड से कराई थी। इसी प्रकार बापू ने मि० वेस्ट की भी शादी करवाई थी। बापू बताने लगे, "पोलक का यह प्रेम-सम्बन्ध था। मगर वह कई बार अपना संतुलन खो बैठता था। वैसे तो श्रीमती पोलक दो-की-चार सुनानेवाली थी, मगर जब पोलक गुस्से में होता था, तो उससे बड़े प्रेम से पेश आती थी। कहती, 'तुम्हें हुआ क्या है?' और हँस देती थी। मैं कहा करता था कि यह क्या बात है कि पहले तो तुम इतने मित्र थे, और अब शादी हो गई है, तो क्या लड़ना ही चाहिए? जैसे मैंने तुम्हारी शादी कराई है, वैसे ही तलाक भी करवाना होगा क्या? श्रीमती पोलक की कार्य-कुशलता का नतीजा यह है कि वे आज एक-दूसरे को पूजते हैं और मुझे छोड़ दिया है। ऐसा कइयों का हुआ है। केलेनबैक मुझे कहा करता था, 'तुम इतनी तेजी से आगे बढ़ रहे हो कि आखिर तुम्हें सब छोड़ देंगे, वे तुम्हारे साथ आगे बढ़ नहीं सकेंगे।' मैंने कहा कि तुम भी छोड़ दोगे? तो कहने लगा, 'मैं कैसे छोड़ सकता हूं? हम तो एक जान दो शरीर जैसे हैं और मैंने तुमको अपनी गरज के लिए ढूंढ़ा है, तुमने मुझे नहीं ढूंढ़ा। मैं तो तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकता।'

मगर अब तो वह भी छूट गया है। उसके विचार भी मुझसे अलग पड़ गये हैं। यहूदियों के बारे में उसका इतना पक्षपात है कि क्या कहना ! वह मानता है कि जर्मनी यहूदियों का दुश्मन है और जर्मनी से लड़नेवाले अंग्रेजों के साथ में लड़ रहा हूं। उसका वह समर्थन नहीं कर पाया। जब वह यहां आया था, तब मैंने उसे बहुत समझाया था कि क्यों मैंने यहूदियों को हिंसा से भरे हुए कहा है। आज तो वे हिंसा को ही अपने हृदय में पोषण दे रहे हैं। मन में हिंसा रहे, तो बाहर की अहिंसा का कोई अर्थ नहीं रहता। वह मेरी बात कुछ समझा भी सही। मैंने उसे इस आशय का खुला पत्र यहूदियों को लिखने को कहा था। उसने लिखा भी, मगर उसे ऐसा लगता था कि इस बारे में उसकी कौन सुनेगा। इसलिए अखबारों में भेजा नहीं। मैंने कहा, 'भले न सुनें, तुम अपना धर्म पूरा करो। भले ही फिलस्तीन में जाकर लड़ो और मर जाओ, यह मैं सहन करूंगा, मगर आज जैसे यहूदियों का चल रहा है, वह असह्य है। हृदय में हिंसा है, तो बाहर इससे उलटा बताने में कोई अर्थ नहीं।' "

मैंने कहा, "आप ठीक कहते हैं, ऐसी चीजों से परेशान नहीं होना चाहिए, यह मैं समझती हूं। मगर कई बातें हमारी बुद्धि स्वीकार करती है, तो भी कसौटी का मौका आता है, तब फिसल जाते हैं।" बापू बोले, "वह तो अभ्यास से होता है। और 'अभ्यासेप्यऽसमर्थोऽसी, मत्कर्म परमो भव।' "

मैंने कहा, "सो तो ठीक है, मगर जब-जब फिसलते हैं, तो निराशा तो होती ही है। और आपको भी होती ही होगी।" वह कहने लगे, "मुझे क्या निराशा होगी ! मैं तो किसी चीज की आशा ही नहीं करता, तो पीछे निराशा कैसे !" मैंने कहा, "वह और भी अधिक दुख की बात है, मगर मैं अब ऐसी चीजों से परेशान नहीं होऊंगी, ऐसी आशा तो है।" कहने लगे, "हां, 'आशा तो है,' इतना कहना पड़ता है। ठीक है, कहना कम, करना अधिक, यही अच्छा है।"

दोपहर बा से कह रहे थे, "तू मुझे अपनी मालिश करने दे। मैं सुशीला से अच्छी कर सकता हूं। इसका धंधा कहां मालिश करने का है ! वह तो डाक्टर है। हुक्म कर देती है कि इस मरीज को मालिश हो। इसको यह करो, उसको वह करो। यहां पर मालिश भी करे, सब्जी भी काटे, कपड़ा भी धोये !" मैंने कहा, "इस लम्बी-चौड़ी बात का अर्थ तो इतना ही है न कि आप मुझसे अच्छी मालिश जानते हैं ! हम सब आपका यह दावा स्वीकार करते हैं।" बापू हँसने लगे। बोले, "मतलब यह है कि बा मुझे अपनी मालिश करने दे।" फिर दक्षिण अफ्रीका की बात

बताते रहे कि कैसे १४ दिन के उपवास के बाद उन्हें स्मट्स ने बुलवाया था। चल-कर गये और रास्ते में टांगों में इतना दर्द हुआ कि चिल्ला उठे। बा भी उनके साथ थीं। वह बीमार थीं, मगर तो भी पीछे रहने से न करती थीं। कहने लगे, "तब मैं बा की सब सेवा किया करता था, मालिश भी करता था।"

शाम को महादेवभाई के समाधि-स्थान से लौट रहे थे, तब बापू कहने लगे, "यहां आ जाना मेरे लिए बहुत शांतिदायक है और उससे जो प्रेरणा मुझे लेनी होती है, मैं ले लेता हूं।" मैंने कहा, "अब आप महादेवभाई से प्रेरणा लेते हैं, कभी वह आपसे लेते थे!" कहने लगे, "क्यों नहीं! प्रेरणा तो एक बच्चे से भी ले सकते हैं, और बच्चा चला जाता है, तो भी क्या? उसका स्मरण तो २४ घंटे चलता ही है। जो राजाजी ने कहा है, वह बिल्कुल सही है। महादेव मेरा अतिरिक्त शरीर (Spare Body) था। कितनी दफा मैंने उसे मैक्सवैल के पास भेजा है, दूसरों के पास भेजा है। मान लेता था कि महादेव को काम सौंपा है, तो वह कर लेगा।" पीछे मि० कोटमैन के भाषण के विषय में बात करने लगे। कहने लगे, "पहले क्रिप्स बोला, फिर राइसमन और अब कोटमैन। एक-दो रोज में हैलीफैक्स भी ऐसी बात निकाले, तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। ऐसा लगता है कि ये लोग मुझे बदनाम करने के लिए एक गंदा जाल रच रहे हैं। लुई फिशर अमरीका में मेरे पक्ष की बात कर रहा होगा। उसको धो डालने के लिए भी यह सब प्रचार इन लोगों को करना चाहिए न! इन्हें झूठ से कहां परहेज है? इनका काम तो चलता है धोखेबाजी, पशु-बल, झूठ और चापलूसी (Fraud, Force, Falsehood and Flattery) से। कोई और ऐब हो, तो वह भी लगा दो। मैं, किस-किसको जवाब दूं? जो बातें मैंने खुली तरह से कही हैं, उन्हें ऐसा रूप दिया जाता है, मानो मैंने कोई खुफिया साजिश रची हो! उसका मैं क्या करूं? मगर ईश्वर है न, वह तो सच्ची बात जानता ही है!" मेरे मुंह से निकल गया, "मगर अभी तो ईश्वर भी हमारे ही विरुद्ध गया न। देखिये, कैसे महादेवभाई को ले गया!" बापू बोले, "यह तेरी अश्रद्धा बुलवाती है। वह अपना काम पूरा कर गया। बुद्धिवाद से तू कह सकती है कि वह २५ वर्ष और जिन्दा रहता, तो ईश्वर का क्या जानेवाला था, हमें तो फायदा होता ही। मगर श्रद्धा से देखो, तो हम कहां ईश्वर की सब कृतियों को समझते हैं! महादेव ने अपना डेस्क हमेशा साफ रखा, सो उसने अपना जीवन-कार्य पूरा किया। आगे चलकर वह क्या कर पाता या न कर पाता, वह हम क्या जानें!" मैंने पूछा, "बापू! आपको इतनी

चोट किसी और की मृत्यु से नहीं लगी होगी।" बोले, "नहीं, मगनलाल, जमनालाल, महादेव तीनों अपनी-अपनी जगह स्तम्भ थे। अद्वितीय थे। लेकिन और किसी को मैं अपना दूसरा शरीर नहीं कह सकता, मगर उससे भी तो ज्यादा महत्व की चीजें दूसरी हो सकती हैं। जो मगनलाल कर सकता था और उसने किया, वह महादेव कभी नहीं कर सकता था। महादेव कितना उसकी मृत्यु पर रोया है! जो महादेव कर सकता था, वह जमनालाल नहीं, मगनलाल नहीं। जो जमनालाल कर सकता था, महादेव या मगनलाल नहीं। तीनों के जाने से जो जगह खाली हुई, वह भर नहीं पाई।"

बापू प्रार्थना से पहले और पीछे रामायण का अर्थ करते हैं, बा के लिए चुनी हुई चौपाइयों का गुजराती अनुवाद वह भाई से करवाते हैं। फिर उसे खुद सुधारते हैं। उसको दुरुस्त करने में आज बहुत समय गया।

दोपहर बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को बापू ने पत्र लिखा। उसमें पूछा कि महादेवभाई की मृत्यु के बारे में बापू का तार पत्र क्यों बनाया गया? इतनी देर से क्यों दिया गया और इसके लिए खेद-प्रकाश तक नहीं किया, यह कैसी बात है? जेल से पत्र लिखने के बारे में बापू ने सरकार को जो पत्र लिखा था, उसका सरकार ने उत्तर नहीं दिया। यह शिकायत भी इस पत्र में की।

रात बापू थके थे। खून का दबाव २००/११२/११६ था। चिन्ता हुई। रात वह सोये भी अच्छी तरह नहीं। विचार चल रहे थे।

आज महादेवभाई को गये पांच हफ्ते पूरे हुए। समाधि पर के सारे फूल बदले, नया ॐ बनाया (रोज मुरझाये हुए फूल ही बदलते थे), लाल डेहलिया (Dahlia) के फूलों का स्वस्तिक बनाया। मन में आया कि महादेवभाई यह देख सकें, तो कितने खुश हों! मगर प्राणी कहां जाता है यह कौन जानता है!

सरोजिनी नायडू भी आज समाधि-स्थान पर आईं। शनिवार को वह आती हैं। बा भी आना चाहती थीं, मगर उन्हें चलने की इजाजत नहीं। "अगले शनिवार को सही," इतना कहकर बैठ गईं। दोपहर बा कुछ निराश थीं। बाहर जायंगे, तो क्या करें, यह बात चलती थी। एकाएक बोलीं, "मेरा तो पता नहीं कि जाऊंगी या नहीं। मैं तो अब हूं और शाम को नहीं, ऐसा हो सकता है।"

बापू बोले, "ऐसा तो सबके लिए कहा जा सकता है। यह सुशीला अभी एम०-डी० होकर आई है, तो भी हो सकता है कि अब है और शाम को नहीं। महादेव का

ऐसे ही हुआ न ! तू और मैं जो बीमार पड़े हैं, बैठे रहे। तुझे तो अच्छी होना ही है। जो चाहिए, सो सेवा ले। चिन्ता न कर।"

२० सितम्बर '४२

बापू का खून का दबाव सवेरे उतर गया, १६०/१०० था, दोपहर को १४६/६२ हो गया। घूमते वक्त बताते रहे कि रात उनके मन में क्या विचार चलते थे। बाद में सूरदास और तुलसीदास की बातें करते रहे।

दोपहर मैंने सरोजिनी नायडू के कहने से गाजर का हलवा बनाया और बैंगन का भरता। तीन घंटा रसोई में लग गया। थक गई। दोपहर दूसरा काम था। शाम को सवा चार बजे सो गई। पांच बजे उठी। पौने पांच बजे बापू को खाना देना था, ५-१० पर दे सकी ! बुरा लगा। बापू कहने लगे, "अगर ऐसी थकी थी, तो ३-३० पर बाइबिल पढ़ना छोड़कर सो जाना था और किसीको कह देना था कि समय पर जगा दे। ऐसी छोटी-छोटी बातों से हमारी परीक्षा हो जाती है।"

रामायण के एक-एक शब्द के अर्थ पर बापू किसी समय दस मिनट लगा देते हैं। कह रहे थे, "मैं ऊपर-ऊपर से कोई काम कर ही नहीं सकता।" यह बापू की विशेषता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति (जीनियस) की व्याख्या की बात होने पर एक दिन मैंने कहा, "मेरा चित्रकला का शिक्षक कहा करता था कि जीनियस (प्रतिभाशाली) वह है, जो कभी एक ही गलती दोबारा नहीं करता।"[१] बापू कहने लगे, "नहीं, प्रतिभाशाली की सच्ची व्याख्या है बारीक-से-बारीक विगत में उतरने की अपार शक्ति।"[२]

शाम को घूमते समय फिर कल की बात निकली।...के भाषण से बापू को भारी आघात पहुंचा है। दोपहर सरकार को पत्र लिखना शुरू किया था कि उनके लिए बापू के तथा कांग्रेस के सामने इतना झूठ चलाना ठीक नहीं है। मगर पीछे... के भाषण की बात सुनी, तो कहने लगे, "...ऐसा कह सकता है, तो और किसीको मैं क्या कहूं ? अंग्रेजों के दोष इसमें धुल जाते हैं।...का और मेरा कितना सम्बन्ध रहा ! वाइसराय को मैंने कहा था...को अपनी कौन्सिल में बुलाओ, वह बुद्धिशाली है, मेहनती है, विश्वासपात्र है। आज मैं कहूं कि वह झूठ बोलता है, तो

[१] "Genius is one who does not commit the same mistake twice."

[२] "Infinite capacity to go into the minutest detail."

वाइसराय कहेगा कि तेरे पक्ष की बात कहे, तो वह भला, नहीं तो बुरा। मैं अपनों के बारे में कुछ कह ही नहीं सकता। मैंने कभी ऐसा किया ही नहीं है। अम्बेडकर-साहब से तो दूसरी आशा ही नहीं थी। वह मेरा हमेशा विरोधी रहा है। वह मुझे मार भी डाले, तो मुझे अफसोस न होगा। फीरोज खां नून तो गाली ही दे सकता है। ये सब मेरे विरुद्ध भले कुछ कहें। मगर...ऐसे कहे, वह तो ऐसा ही हुआ कि राजाजी मेरे विरुद्ध इस तरह कहें, तो उन्हें मैं क्या उत्तर दूं?...मेरा मित्र रहा। उसे एक बार सत्याग्रह में मैंने डिक्टेटर भी बनाया था, मगर सरकार के घर बैठकर लोग पुरानी बातें भूल जाते हैं। सो सरकार को अब कुछ लिखने के लिए मेरी कलम नहीं चलती।" अतः बापू ने वह पत्र लिखना छोड़ दिया।

शाम को बापू ने ७-३५ पर मौन लिया, खून का दबाव आज फिर बढ़ा—१६६/११२ था।

२१ सितम्बर '४२

आज बापू का मौन था। दोपहर भारत-सरकार के गृह-मंत्री को उन्होंने पत्र लिखा। जो झूठ चल रहा है, उसका प्रतिवाद किया था। उन्होंने यह भी लिखा कि देश में जितनी बरबादी हुई है, उस सबकी जिम्मेदार सरकार है। वह कांग्रेस के लीडरों को इस तरह न पकड़ती, तो कुछ भी हानि होनेवाली नहीं थी। सरोजिनी नायडू की राय थी कि इस सब झूठ का विरोध करने की जरूरत नहीं, यह आपकी शान के खिलाफ है।

रात फिर बापू का खून का दबाव बहुत ज्यादा था—२०८/१२६। महादेवभाई का वाक्य याद आ रहा था, "बापू तो ज्वालामुखी हैं। कब वह भड़क उठेगा, कहा नहीं जा सकता।"

२२ सितम्बर '४२

आज सवेरे गीता-पाठ करते-करते मैं कई जगह अटकी। बापू ने भाई को कल से गीता का क्रम चलाने को कहा।

प्रार्थना के बाद बा के सिर में दर्द था, बापू खुद दबाने लगे। पांच-सात मिनट तक दबाया। जिनको मैं पत्र लिखना चाहूं, उन रिश्तेदारों की मि० कटेली ने सूची मुझसे मांगी थी। शाम को मुझे बापू ने बताया कि उन्हें क्या उत्तर देना चाहिए।

बापू का सरकार के नाम नया पत्र अभी गया नहीं। बापू ने खुद पत्र लिखने इत्यादि के बारे में जो पत्र बम्बई सरकार को २७ अगस्त, १९४२ को लिखा था

उसका उत्तर अभीतक नहीं आया। मि० कटेली ने उसके लिए फिर से याद दिलाया था। आज उत्तर आया कि सरकार बापू के पत्र का उत्तर नहीं देगी, ऐसी बात नहीं, मगर अभी समय लगेगा।

आज बापू का खून का दबाव कुछ कम रहा—१८०/१०६। रोटी-मक्खन आज बन्द किया।

२३ सितम्बर '४२

आज सवेरे भाई ने प्रार्थना चलाई। घूमते समय में गीता याद कर रही थी। बापू के कहने से बोलकर याद करना शुरू किया। १६-१७ अध्याय कंठ कर लिये। बापू मानते हैं कि घूमते समय काम की बात करना तो उनके लिए अच्छा नहीं, मगर कुछ बात न करें, ध्यानावस्थित ही रहें, तो वह भी उनके लिए अच्छा नहीं। सो बापू कहते थे कि मैंने गीता याद करना शुरू किया। यह अच्छा हुआ। गीता उन्हें प्रिय है और उसका उन्होंने इतना अभ्यास किया है कि वह सुनने में या उसकी बात करने में उनपर किसी प्रकार का श्रम नहीं पड़ता।

दोपहर भारत सरकार के मंत्री को बापू का पत्र गया। मैंने नकल की, उसमें थोड़ी गलती हो गई थी। बापू नकल भेजना चाहते थे। कहने लगे, "इससे तू सीखेगी और आगे के लिए होशियार हो जायेगी।" मगर मुझे वह ठीक न लगा। मेरे बहुत कहने पर दूसरी नकल करने दी।

मैंने 'इण्डियन मैडीकल गज़ट' के सम्पादक को पत्र लिखा। मि० कटेली को अपने घरवालों को पत्र लिखने के बारे में जवाब दिया। बापू ने मसविदा बना दिया था। मैं उसकी नकल कर रही थी। इतने में मीराबहन आईं और कहने लगीं, "ऐसा करने में कोई अर्थ नहीं है। बापू का मामला अलग प्रकार का है। वह इस तरह किसी-को भी पत्र लिखने से इन्कार कर सकते हैं। मगर हम उस श्रेणी के नहीं हैं।" मैंने कहा, "बापू को मेरा यही जवाब देना ठीक लगता है।" शाम को बा कहने लगीं, "तुम माताजी को क्यों नहीं लिखती हो? बापूजी कहते हैं कि उन्होंने तुम दोनों भाई-बहन को घर लिखने को कहा है।" मैंने समझाया कि बापू न लिखें, तो हम कैसे लिखें! सरकार बापू को उनकी शर्त पर पत्र लिखने नहीं देती, उसपर हम अपनी नाराजगी केवल इसी तरह बता सकते हैं कि हम भी न लिखें। बापू को यही ठीक लगता है।

भाई ने भी कटेली को उत्तर दिया कि सरकार की शर्त पर वह पत्र नहीं लिख

सकते। उनके लिए अपने घरवाले ही केवल कुटुम्बीजन नहीं हैं, इत्यादि।

हम लोगों ने जवाब लिखा। उसके बाद बापू के पत्र के उत्तर में सरकार का पत्र आया कि वह सेवाग्राम में किस-किसको लिखना चाहते हैं, उनकी सूची दें। मगर वह घरेलू मामलों के बारे में ही लिख सकते हैं। सरोजिनी नायडू, मीराबहन वगैरा को मैंने यह पत्र दिखाया, तो सब उत्सुकता से पूछने लगीं, "अब क्या वह लिखेंगे?" मैंने कहा, "नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह इस शर्त पर लिखें।"

दोपहर घर से पत्र मिले। बहुत अच्छा लगा। यहां पर एक पत्र मिल जाये, तो मानो बड़ी बात हो गई। माताजी का मिले, तो बस खुशी का कहना क्या! उन्हें हमारे पत्र न मिलने से आघात पहुंचता होगा, इस विचार से मन में दुख होता है। बा कहने लगीं, "एक बार तो लिखो, फिर न लिखना। बूढ़ी मां को लिखना ही चाहिए।" मैंने कहा, "बा, ऐसे नहीं लिखा जा सकता। मां को न लिखने की इच्छा का संयम आसान बात नहीं। मगर तय किया है कि नहीं लिखना, तो नहीं ही लिखना।

२४ सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "मीराबहन वगैरा को मेरा घर पत्र न लिखना एक हास्यास्पद चीज लगती है। शायद ऐसा भी लगे कि मैंने अपना महत्व बढ़ाने के लिए ऐसा किया है। बा भी रात को कहती थीं कि घर पर पत्र क्यों नहीं लिखती। मैंने तो ऐसी किसी भावना से न लिखने का सोचा नहीं। आपको मेरा न लिखना ही ठीक लगा, सो न लिखने का निर्णय किया। मगर बा के कहने से मैं ऐसा समझी कि आप चाहते हैं कि मैं लिखूं।" इसपर बापू ने कहा, "मैं नहीं चाहता कि मेरे कहने के कारण तुम न लिखो। मगर तुमने मुझसे पूछा कि मुनासिब क्या है, तो मैंने बताया कि तुम्हें नहीं लिखना चाहिए। तुम्हें यहां पर अकेले थोड़े रखनेवाले थे। यहां रखा तो मेरे कारण। तो तुमको लगना चाहिए कि जब मेरा स्थान ही बापू के कारण से है, तो जो हक बापू नहीं लेते, उसे मैं कैसे ले सकती हूं। सरोजिनी नायडू को वह चीज़ लागू नहीं होती। वह कोई आश्रमवासी तो है नहीं; बहुत चीजों में मेरा विरोध भी कर लेती है। मैं तो गुणों को ही देखता हूं। मैं खुद कहां दोषरहित हूं कि किसीके दोष देखूं! वह तो अपना स्वतन्त्र स्थान रखती है। उसने अपना मार्ग निकाल लिया है। मीराबहन तो आश्रमवासी रही। घर-बार, माता-पिता का त्याग करके आई। उसको तो जो चीज प्यारेलाल को लागू होती

है, उससे भी ज्यादा लागू होती है। वह यद्यपि अपने को मेरी लड़की कहती है, मगर उसका भी तो अपना स्वतन्त्र स्थान बन गया है। अपने-आप उसको लगता कि उसे नहीं लिखना चाहिए, तो अलग बात थी। तुमने मुझसे पूछा, तो मैंने तुम्हें तुम्हारा धर्म बताया। पहले तो मैंने तुमसे यही कहा कि मेरे सरकार को लिखे पत्र का उत्तर आ जाने दो। बाद में यह सूत्र बताया कि बापू न लिख सके, तो तुम भी नहीं लिख सकतीं। अगर तुम उसे समझ गई हो, तो तुम्हें अपने-आप ऐसा लगना चाहिए कि मैं नहीं लिख सकती। फिर किसीकी हँसी की परवाह नहीं होनी चाहिए, नहीं तो बूढ़े, उसके लड़के और गधे की ईसप-वार्तावाला हाल होगा। तुम्हारे मन में इस बारे में अगर शंका है, तो मैं कहता हूं कि लिखो। कटेली को कल जो लिखा है, वह वापस लिया जा सकता है। मगर मेरा कहना दिल में बैठ गया हो कि बापू न लिखें, तो मैं भी नहीं लिख सकती, तो फिर शंका का स्थान नहीं रहना चाहिए। जब मैंने यह पोशाक अख्तियार की, तब मुझे तो हँसी का काफी डर था। खास करके मुसलमानों से, क्योंकि उनके धर्म में यह है कि शरीर टखनों तक ढका होना चाहिए। मैं मद्रास जा रहा था, रास्ते में मौलाना मुहम्मद अली को सरकार ने पकड़ लिया। बेगम मुहम्मद अली मेरे साथ थीं और बुरका ओढ़े थीं। वह मद्रास तक मेरे साथ आईं। मुसलमानों को यह पसन्द नहीं आया कि वह मेरे साथ इस तरह घूमें। सो मद्रास से वह अलग हुईं। वहां सभा में जो लोग आये, सब विदेशी कपड़े पहने हुए थे। मुझे दुख हुआ। मैं क्या करूं? लोगों ने कहा, खादी मिलती नहीं। सो मैंने सोचा कम-से-कम कपड़े से कैसे काम चला सकते हैं, यह मैं ही करके दिखाऊं। उमर सोबानी से सलाह की और नई पोशाक धारण करने के बारे में उन्हें विचार करने को कहा, खासकर मुसलमान के नुक्तेनिगाह से। उन्होंने मेरा विचार पसन्द किया और खुद लुंगी पहननी शुरू की। मैंने एक बार जब नई पोशाक पहनने का निश्चय किया, तो फिर किसी की हँसी-मजाक की परवाह नहीं की। विचार किया और उसे अमल में रखा, यानी नई पोशाक धारण कर ली। उसमें तीनेक महीने लग गये होंगे। उससे पहले तो मैं काफी कपड़े पहनता था।" मैंने कहा, "जी हां, महादेवभाई बताया करते थे कि कैसे वह आपका खाना पकाते थे, आपको खिलाते थे और सब बड़े-बड़े कपड़े भी धोते थे।" बापू हँसने लगे, "हां, तब कपड़े धोना सचमुच बड़ा काम था। अब तू जो धोती है, वह तो खेल है। और इस सारे काम के साथ महादेव को लिखना-पढ़ना, 'यंग

इण्डिया' का काम करना, लोगों से मिलना वगैरा यह सब करना होता था। उसके पास एक मिनट की फुरसत नहीं। रहती थी।" मैंने कहा, "तब आप साथियों के आराम के बारे में इतना आग्रह भी नहीं रखते थे। आज तो हम लोगों का समय पर सोना, आराम करना, खाना यह सब आपके ध्यान में रहता है और उसपर आपका जोर का आग्रह रहता है। आपकी अपनी शारीरिक शक्ति कम हो गई है। इसलिए दूसरों में भी आप कम शक्ति का अनुमान करते हैं।" बापू बोले, "यह ठीक है, इसीलिए मैंने कहा है कि अब मैं आश्रम चलाने के लायक नहीं रहा हूं। मैं तो अपने गज से ही सबका माप निकालूंगा न! मैं प्रार्थना सोते-सोते कर लेता हूं। सब ऐसा करने लगें, तो कैसा दृश्य बन जाय? मगर लोग मुझे नहीं छोड़ते हैं, तो चलाता हूं। जितना कर सकता हूं, करता हूं।"

सरोजिनी नायडू की बात करते-करते गोखले की बात बताने लगे। गोखले का अपने बारे में मत बताने लगे। कहने लगे, "मैं तुझसे बहुत-सी बातें कर लेता हूं, जो किसीसे नहीं करता। करने की हैं भी नहीं। ऐसे ही गोखले मेरे साथ सब बातें कर लिया करते थे। उनके मित्र तो बहुत थे, मगर ऐसा कोई नहीं था कि जिसके सामने निस्संकोच अपने मन की सारी बातें वह कह सकें। मुझे उन्होंने विश्वासपात्र समझा और एक-एक आदमी का विश्लेषण करके बता दिया।"

कुछ देर बाद बोले, "आज तेरा गीता का पाठ नहीं हो सका, मगर यह भी तो गीता ही है न! मैं जो बातें कर लेता हूं, वे निकम्मी तो होती ही नहीं। उनमें से जो कुछ ले सकती हो, ले लेना।"

मुझे बाइबिल का वाक्य याद आया—"कानोंवाले सुनें, आंखोंवाले देखें।"[1] बापू के पास तो ज्ञान का सागर पड़ा है। जितनी जिस इन्सान की शक्ति है, उतना सीख सकता है। उस सागर में से हरएक अपना प्याला भर सकता है, किसीका प्याला छोटा हो, या टूटा हुआ हो, तो उसमें बापू क्या करें!

२५ सितम्बर '४२

आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा। इसलिए इमला नहीं लिख सके। सुबह कलैक्टर और डा० शाह आये। शाह पहले आये। बापू का खून का दबाव

---

[1] "Those that have ears let them hear, those that have eyes let them see."

बढ़ा, यह सुनकर बापू से कहने लगे, "मि० गांधी, मैं समझता था आप तो बड़े तत्त्वज्ञानी हैं। जिन चीजों के बारे में आप कुछ कर नहीं सकते, उनकी चिन्ता क्यों ?"[१]

कलैक्टर सबको पूछ जाता है, "कोई खास बात तो नहीं है ?" जब वे लोग आये, तब भाई वहां न थे। इनके मिलने के लिए भाई की खोज होने लगी, मगर वह मिले ही नहीं। बापू ने बाद में कहा, "जब ये लोग आते हैं, तब हम सबको एक जगह रहना चाहिए, ताकि उन्हें हमें खोजने की तकलीफ न उठानी पड़े। हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम कैदी हैं।"

आज सुबह बापू छः बजे उठे। मैं तो चार बजे प्रार्थना के समय जाग उठी थी। मगर वक्त का पता नहीं था। सबको सोता देखकर पड़ी रही। पीछे सो गई। बापू जब उठे और सुना कि मैं प्रार्थना के समय जाग गई थी, मगर वक्त का पता न होने से पड़ी रही, तो नाराज हो गये, "क्यों पड़ी रही थी ? यह कोई बात है ! नींद खुल जाय, तो उठना ही चाहिए।" अपने-आप पर भी वह बहुत नाराज होने लगे कि क्यों प्रार्थना के समय वह उठ नहीं सके। नाश्ते में दूध नहीं लिया। खाली फल का रस लिया।

बा को आज मैंने शहद में विटामिन की गोली दी। बापू ने कल कहा था कि शहद में मिलाकर देना। मैं समझी स्वाद खराब न लगे, इसलिए शहद में देने को कहा होगा। मगर बापू चाहते थे कि बा को पता ही न चले, इस तरह देना है। घूमते समय इसी बारे में बात करते रहे।

शाम को घूमते समय मैंने १६, १७, १८ अध्याय गीता के जबानी सुनाये। मैंने बापू से कहा, "महादेवभाई बताते थे कि एक बार जेल में वह आपसे अलग रखे गये थे। तब वह घूमते-घूमते सारी गीता का पारायण किया करते थे। करीब डेढ़ घण्टा लग जाता था। ऐसा करते-करते उन्हें गीता याद हो गई थी। उन्होंने तय किया था कि जबतक आपसे अलग रहेंगे, तबतक रोज गीता का पारायण करेंगे।" बापू ठंडी सांस लेकर बोले, "हां, उसने मुझे सब बताया था और अब हमेशा के लिए अलग हो गया।"

---

[१] "Mr. Gandhi, I thought you were a great philosopher. You must not worry about things you can do nothing about."

२६ सितम्बर '४२

आज शनिवार था। महादेवभाई को गये छः हफ्ते पूरे हुए। उनकी समाधि पर सब गये, फूल सजाये। उसमें आधा घंटा लगा। घूमते समय गीता-पाठ किया। बापू थके-से लगते थे। गरमी काफी बढ़ गई है, यही कारण होगा। खून का दबाव ठीक था, मगर खून के दबाव के न होने से भी तो थकान होती है न !

आज सरोजिनी नायडू का जन्म-दिन है। उसके लिए उन्होंने शाम को आइस-क्रीम बनवाई थी। दोपहर के खाने के समय बापू के लिए सलाद अच्छी तरह सजाई। नास्टशर्म[1] के पत्ते और फूल, बीच में टमाटर, मूली, खीरे के टुकड़े बहुत सुंदर दीखते थे। बापू को भी आइसक्रीम खिलाई। बकरी के दूध की बनाई गई थी। कल मुझसे गाजर का हलवा बनवाया था, रामनाथ (रसोइया) ने बालाई बनाई। वह हलवे पर लगाई गई। मटर का पुलाव बना; भाई ने जिन्जर केक और कढ़ी बनाई। कटेलीसाहब ने सूरती मिठाई का पार्सल मंगवाया था। मीराबहन ने कमरे में नये फूल सजाये। बिजली के चूल्हे तक के चारों ओर फूल रखे गये। सरोजिनी नायडू खूब उत्साह में थीं। ठाटबाट से तैयारी की गई थी। इस कारण खाना आधा घंटा देरी से परोसा गया। वह बहुत खुश थीं। उनका एक गुण है कि जो भी लोग कुछ काम करें, उनकी तारीफ करना, सबको रिझाकर काम करवाना। दोपहर को सब कैदियों को, जो वहां काम करने आया करते थे, और सिपाहियों को चिवड़ा और केले बांटे। उन्हें बहुत अच्छा लगा। बापू से बातें करते समय कहने लगीं, "सचमुच समझ में नहीं आता, माताएं ऐसी पगली क्यों होती है !"[2]

शाम को घूमते समय अंग्रेजी न जाननेवालों की बातें चलीं। चर्चा मीराबहन ने चलाई थी। मैंने कहा, "जमनालालजी भी तो अंग्रेजी नहीं जानते थे, मगर वह अपना काम खासा चला लेते थे।" बापू कहने लगे, "मगर जमनालाल अंग्रेजी की बातें सब समझ लेता था। अंग्रेजी में प्रस्ताव वगैरा आते थे, उनमें वह एक भी चीज छोड़ता नहीं था। व्याकरण नहीं जानता था, मगर शब्दों का उपयोग ठीक जानता था। इसलिए अपने भाषणों वगैरा का तर्जुमा दुरुस्त किया करता था। उसके जैसा

---

[1] एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल और पत्ते का स्वाद राई की तरह तीखा और चरपरा होता है।

[2] "Really I don't know why mothers are so silly."

बारीकी से हर एक चीज को पकड़नेवाला आदमी भाग्य से ही कहीं मिलता है। जमनालाल किसी चीज को वर्किंग कमेटी में छोड़ता नहीं था। वह बुद्धिशाली था और व्यवहार-कुशल भी। वह अपनी जगह पर अद्वितीय था।''

रात को मैं और भाई महादेवभाई की बातें करते-करते ११ बजे तक बैठे रहे। जीवित के हम गुण और दोष देखते हैं। कई बार दोषों को देखकर गुणों को भूल भी जाते हैं। मगर मृत के दोष अपने-आप लोप हो जाते हैं। गुण-ही-गुण स्मृति में रह जाते हैं। महादेवभाई का चित्र आज हमारे सामने तो आदर्श और सम्पूर्ण जीवन का चित्र है। उसमें कोई कमी दिखाई नहीं देती।

: १७ :

घूमते-फिरते सामान्य शिक्षण

२७ सितम्बर '४२

घूमते समय मेरे हाथ में अक्सर कैंची रहती है। फूल काटने के लिए रखती हूं। बापू कहा करते हैं कि कैंची से ही फूल काटने चाहिए, मरोड़कर फूल तोड़ने में हिंसा और जंगलीपन है। घूमकर लौटने पर उसे अपने ठिकाने रख देती हूं। कई दफ़ा हाथ के नाखून उससे काटने लगती हूं। आज बापू कहने लगे, "यह व्यर्थ की हरकत है, या तुझे सचमुच ही नख काटने की जरूरत है?" मुझे कहना पड़ा कि जरूरत तो नहीं थी। बापू बोले, "तो इसको मैं सहन नहीं करूंगा।" मैंने नाखून काटना बन्द कर दिया। एक-दो चक्कर लगाये कि फिर यन्त्रवत मेरा नख काटना शुरू हो गया। तुरन्त मुझे स्मरण हुआ कि बापू ने मना किया है। बन्द किया, मगर बापू ने काटते देख लिया था। कहने लगे, "मेरी आंख बहुत-सी चीजें देख लेती हैं, मगर मैं हमेशा टोकता नहीं हूं। अगर ऐसा करूं, तो तेरा और मेरा दोनों का खात्मा हो जाय।" मैंने कहा, "आपने जिस प्रकार आज कहा है, उस प्रकार कहें, तब तो घबराहट नहीं होती, मगर जब आप चिढ़ जाते हैं, तब मैं परेशान हो जाती हूं। मेरी ग्रहण-शक्ति कुंठित हो जाती है। गुस्से में मैं कभी कुछ सीख ही नहीं सकी हूं। और हर किसीसे भी मैं नहीं सीख सकती।" बापू ने कहा, "यह तो बच्चों की-सी बात हुई। उन्हें रिझा करके सिखाना पड़ता है। तू कबतक बच्ची-सी रहेगी?

कान पकड़कर तुझे क्यों नहीं बताया जा सकता ? अगर तू इस चीज को अपना गुण मानती है, तो यह भी तेरी भूल है। मैं चाहता हूं कि हर एक से सीखने की शक्ति रख। दत्तात्रेय के २४ गुरु थे। उन्होंने पवन, पानी, वृक्ष आदि हर एक गुरु से कुछ-न-कुछ सीख लिया था।" मुझे याद आया कि जब मैंने अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया था, तब जो भी हमारे वहां आ जाता था, उससे मैं एक पाठ सीख लेती थी। मैंने कहा, "हर एक से न सीख सकना गुण नहीं मानती हूं। मैंने तो जो मन में आया, सो कहा। सबसे और हर हालत में मैं ग्रहण करने की कोशिश तो करती ही हूं। आप कभी कोई बात चिढ़कर बताते हैं, तो पीछे से तो उसका भी असर होता ही है, मगर उस वक्त दिमाग सुन्न हो जाता है। छुटपन से कभी किसीसे मैं गुस्से से नहीं सीख सकी।" बापू हँसने लगे, "तो एक से तो सीख।...की तो मैं बहुत-सी चीजें देखता हूं। पर उसे कभी कुछ कहता ही नहीं, कहने से कुछ फायदा भी नहीं !...भी बहुत-सी ऐसी बातें कर लेती है, जो मुझे अच्छी नहीं लगतीं। उसे भी अब कुछ नहीं कहता। एक वक्त था कि उसे काफी कह लेता था और वह मुझसे कहती थी कि और भी बताते जाओ। मगर अब वह सिलसिला टूट गया है। तुझे बताता रहता हूं। जबतक तू सुनेगी, बताऊंगा।" मैंने कहा कि मैं सुधारने की कोशिश तो करती ही हूं। बापू बोले, "तभी तो मैं बताता हूं। जो बताना ही चाहिए, उतना कहकर सन्तोष मान लेता हूं। काफी छोड़ भी देता हूं।" मैंने कहा, "आप छोड़ देते हैं, तो उससे मन में धोखा-सा पैदा होता है कि अब सीखने-जैसा कुछ रहा नहीं, हमने सब सुधार लिया है।" बापू बोले, "अगर ऐसा हो, तो वह होने देना ही चाहिए। मैं अभी बाइबिल में जॉब का वर्णन पढ़ रहा हूं। वह ईश्वर का परम भक्त था। ईश्वर ने शैतान को बुलाकर कहा, 'तू उसकी परीक्षा कर सकता है; पर एक बात है, सब कुछ करना, मगर उसे मार न डालना।' शैतान एक बार हारकर आता है। ईश्वर उसे दुबारा भेजता है। जॉब को 'किस्मत से राम मिला जिसको' इस भजन में बताई तीनों जगह मिलती हैं। पीछे वह चिल्ला-चिल्लाकर ईश्वर की शिकायत करता है। लोग उसे समझाने जाते हैं, तो चिढ़ता है, 'मेरे पास एक वाचा रह गई। मैं ईश्वर के पास चिल्लाकर शिकायत करता हूं, तो उसमें तुम्हारा क्या जाता है ?' जब जॉब-जैसा भक्त भी कड़ी परीक्षा सहन नहीं कर सका, तो साधारण लोगों की तो बात ही क्या है ?" मैंने कहा, "मैं प्रयत्न तो करती ही रहती हूं कि मैं छुई-मुई न बनी रहूं। यद्यपि कई बार असफल हो जाती हूं, तो भी कुछ तो सुधार होगा ही। माताजी ने तो कुछ

नहीं कहा, मगर कई और कहा करते हैं कि बापू के पास जाकर तुझे इतना तो फायदा हुआ है कि तेरा गुस्सा बहुत शान्त हो गया है।"

बापू हँसने लगे, "तो उसका यश भी मुझे मिलता है, तुझे नहीं।" फिर गम्भीर हो गये और कहने लगे, "यह हम लोगों की विशेषता है। अच्छा होता है, तो यश मुझे देंगे, किन्तु बुरा होता है, तो दोष नहीं देंगे। अंग्रेजों का इससे उलटा है। वे अब मुझे सबसे अलग करके सारे तूफान की जड़ मुझे ही साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे अपना सबसे बड़ा दुश्मन मानते हैं।"

मैंने कहा, "वे भी एक दिन समझेंगे, इसमें शक नहीं है।"

बापू बोले, "यह तो है, मेरे जीते-जी नहीं समझे, तो मेरे पीछे जोन ऑव आर्क जैसा होनेवाला है। और मेरी मृत्यु से लोगों की शक्ति तो बढ़ने ही वाली है।"

मैंने कहा, "मानिये कि सरकार आपको मार डाले, तो इससे जरूर एक शक्ति पैदा होगी, मगर आप खुद उपवास करके या स्वाभाविक मृत्यु से चले जायं, तो उसमें इतनी शक्ति पैदा नहीं हो सकती।"

बापू बोले, "हां, यह मैं मानता हूं। इसीलिए तो बैठा हूं। भगवान को जो करना होगा, करेगा। मेरा अध्ययन भी ऐसा बन गया है। बाइबिल है, तो उसमें भी बस ईश्वर की ही महिमा भरी है। और उसमें भी मैं अब भजनों के हिस्से पर आ गया हूं। लुई फिशर की किताब[1] भी उसी तरह नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी रोज पढ़ता हूं और रामायण को तो मैं सर्वोपरि ग्रन्थ मानता हूं।"

मैंने बीच में कहा, "आपके राम में और तुलसीदास के राम में बहुत साम्य है। राम के पास बन्दर थे, आपके पास बिना हथियारवाले स्त्री-पुरुष और बालक। राम भी भक्त-वत्सल थे। जैसे वह सबके साथ मनुष्य होकर रहते थे, वैसे आप हमारे बीच रहते हैं।"

बापू बोले, "यह तो दूसरी बात हुई। रामायण की भाषा मुझे पकड़ लेती है। संगीत भी पकड़ लेता है। मैंने अपना अभ्यास ऐसी चीजों का ही रखा है। दूसरी चीजें जान-बूझकर छोड़ दी हैं, नहीं तो मैं साहित्य तो बहुत पढ़ सकता हूं। रस तो भरा ही पड़ा है। कोई रस सूखता नहीं है। मगर मैंने अपने काम की चीजें चुन ली

---

[1] 'Men and Politics' by Louis Fisher

हैं। मैं सरकार को भी आज पत्र लिखता हूं, तो सिर्फ उसकी जानकारी के लिए; दलील करना मैंने छोड़ दिया है। भाषा का डंक निकल गया है। शुद्ध अहिंसा ही उसमें भरी है। मैं देखता हूं कि बाहर कुछ हिंसा भी होती है। मगर अधिकतर तो अहिंसा ही चल रही है। इसीलिए मैंने निश्चय किया है कि इस बार आंदोलन बन्द नहीं करूंगा। यह आन्दोलन अंग्रेजों के प्रति मेरे प्रेम का नतीजा है। मैं उसे बन्द करूं, तो उनके प्रति और सबके प्रति अपना धर्म चूकूं।"

शाम को घूमते समय गीता का क्रम चला। ८-२० पर रात बापू ने मौन लिया।

२८ सितम्बर '४२

सवेरे साढ़े तीन बजे बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मैंने बापू को पीने के लिए गरम पानी दिया। फिर दतौन करने जा रही थी कि इतने में भाई अपना हजामत का सामान लेने आये और बस खड़े-के-खड़े ही रह गये। हृदय के पास जोर का दर्द हुआ। दर्द बायें कंधे में जाता था। नब्ज धीमी थी। नागपुर जेल में भी ऐसा ही दर्द उन्हें हुआ था। मगर उसके वर्णन से मुझे ऐसा लगा कि दर्द हृदय से सम्बन्ध नहीं रखता, छाती के स्नायुओं से रखता है। मगर आज का दर्द एंजाइना पेक्टोरिस[1] जैसा लगा।

मैंने उन्हें लिटाया। कम्बल ओढ़ाया। बा के लिए ऐसे दर्द के लिए जो दवा आई हुई थी, उसका असर देखने के लिए मैंने वह उन्हें सुंघा दी। बाद में भी उन्हें छाती में कुछ खिचाव-सा लगता रहा। मगर दर्द चला गया। मैं काफी डर गई थी। मगर हृदय को मजबूत करके सब करती रही। सोचती थी, ईश्वर अब और क्या करनेवाला है!

प्रार्थना के बाद बापू फिर सो गये। सुबह घूमते समय गीता पढ़ी। भाई को बहुत कहा कि आज आराम कर लें, मगर वह नहीं माने। कहने लगे, "अब तो कुछ है ही नहीं। मैं तो भूल भी गया हूं कि कुछ हुआ था।"

डा० शाह आये। भाई से कहने लगे, "मैंने जवान-तन्दुरुस्त आदमी समझकर छोड़ दिया था। डाक्टरी परीक्षा तक नहीं की थी। मगर अब तुम परेशान करने लगे हो!" उन्होंने अच्छी तरह परीक्षा की, मगर कुछ मिला नहीं।

शाम को समाधि-स्थान के लिए फूल इकट्ठे कर रही थी, इतने में बापू निकल

---

[1] हृदय का खतरनाक दर्द, जो प्रायः प्राणघातक सिद्ध होता है।

गये। मैंने उन्हें जाते देखा नहीं। समाधि पर पहुंचकर थोड़ी देर उन्हें मेरी राह देखनी पड़ी। समाधि की दीवार सजाने के लिए भी फूल ले गई थी। मीराबहन नाराज हो गईं। बोलीं, "क्यों इतने फूल लाती हो ? बापू का भी समय जाता है।" फूल सजाने की सारी खुशी मारी गई।

शाम को कुछ जुकाम-सा लग रहा था। मीराबहन ने गले पर मालिश की। सोने को कुछ देर से गई। सरोजिनी नायडू से बातें हो रही थीं कि बापू के जन्म-दिन को क्या करना है।

गरमी बहुत पड़ने लगी है। दोपहर को तो दम-सा घुटता है।

२६ सितम्बर '४२

सुबह समाधि-स्थान से लौट रहे थे, तब धुंध थी। उसमें दूर के आधे छिपे वृक्ष देखकर भाई बोले, "यह चित्रकारी में कितना अच्छा दिखे। अब तुम फिर चित्र-कारी शुरू कर दो। उससे पहले ड्राइंग अच्छी तरह सीख लेना।" मैंने कहा, "मेरे पास इतना समय कहां है ?" इस पर कहने लगे कि हार मान बैठने की तेरी मनो-वृत्ति बन गई है। हँसी की बात थी। इतने में हम बापू के पास पहुंच गये। मैंने उनसे कहा, "भाई कहते हैं, ड्राइंग सीखो, चित्रकला, संगीत व साइन्स का गहरा ज्ञान हासिल करो, भाषाएं सीखो। मैं कहती हूं, यह सब नहीं हो सकता, तो नाराज होते हैं। या तो मैं चुपचाप सुनती रहूं, उत्तर न दूं, यह समझकर कि यह सुनने की बात है करने की नहीं, या साफ कह दूं कि आप जो कहते हैं, वह मेरे-जैसा तो कर नहीं सकता, कोई विलक्षण शक्तिवाले लोग भले कर सकें।"

बापू कहने लगे, "वह जो कहना चाहता है, वह यह है कि सच्ची शिक्षा में बच-पन से ही संगीत सिखाया जानना चाहिए। इससे कंठ का विकास होगा। चित्रकला, ड्राइंग इत्यादि ही से हाथ का विकास कराया जायगा, इसका अर्थ यह नहीं कि हर कोई संगीत और चित्रकला के बिशारद हो जायेंगे। मगर वे इन चीजों को समझ सकेंगे, थोड़ा-बहुत गा सकेंगे। थोड़ी-बहुत चित्रकारी कर सकेंगे। यही भाषाओं के बारे में है। मैंने कहा, "छुटपन से सब किया हो, तो अलग बात है। मगर आज मैं किस-किस चीज के पीछे भागूं ?" बापू कहने लगे, "हां, आज तो तू एक ही चीज के पीछे पागल बन सकती है। वह है डाक्टरी, जिसके पीछे इतने साल खर्च कर चुकी है।"

भाई बोले, "डाक्टरी के बारे में भी मैं कहता हूं, तो यह ऐसा ही जवाब देती

है। अच्छा डाक्टर बनने के लिए इसे रसायन-शास्त्र का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, रोग के कारण शारीरिक विकार को समझने के लिए रेडियोलॉजी[1] और पैथोलॉजी[2] का खास ज्ञान होना चाहिए। एक्स-रे की मशीन में साधारण खराबी हो जाय, तो उसे ठीक करना आना चाहिए या नहीं? डाक्टर के पास समय नहीं रहता, इसलिए भले वह सब काम खुद न करे, किसी और से करवा ले, मगर उसका ज्ञान इतना होना ही चाहिए कि जरूरत पड़े, तो सबकुछ खुद कर सके।"

मैंने कहा, "मैं तो मानती हूं कि इनमें से हर एक चीज का पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए आजीवन मेहनत की आवश्यकता है, नहीं तो डाक्टरी की इतनी शाखाएं बनती ही क्यों? एक आदमी सबकुछ करना चाहे, तो रोगी के साथ न्याय नहीं कर सकता। बायोकेमिस्ट्री, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी इत्यादि की रिपोर्टों पर से निर्णय पर आने की कला तो डाक्टर जरूर जाने, मगर हर एक शाखा का सूक्ष्म ज्ञान और उसकी कुशलता रखना मैं असम्भव मानती हूं। डाक्टर एक विषय का विशेषज्ञ हो और अन्य सब विषयों का एक सामान्य डाक्टर के जितना ज्ञान रखे। विशेषज्ञ न हो, तो काम चलाना ही पड़ता है। सेवाग्राम में मेरे पास सूक्ष्मदर्शी यंत्र है, मगर जो सब परीक्षाएं एक अच्छी खासी प्रयोगशाला में हो सकती हैं, सेवाग्राम में आज नहीं हो सकतीं। अगर रोगी के साथ न्याय करना हो, प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम चिकित्सा करनी हो, तो सब विशेषज्ञ मिलकर काम करें, ताकि एक फीस में से मरीज को सबकी सेवाएं मिल सकें। मगर हर एक सब चीजों के विशेषज्ञ बनना चाहें, तो वह कठिन काम है।"

बापू बोले, "यह सब तो हुआ, मगर मैं पूछता हूं कि क्या आज ये सब बातें अप्रासंगिक नहीं हैं? जब बाहर जायंगे, तब देखा जायगा। हमारे सामने भगीरथ काम पड़ा है। हम पुरानी दुनिया में वापस नहीं जाना चाहते। या तो आजाद हिन्दुस्तान में बाहर जायंगे या यहीं मर मिटेंगे, यह हमारा संकल्प है, यदि प्रभु ने उसे फलित किया तो।" मैंने कहा कि फलित क्यों नहीं करेगा? बापू बोले, "कैसे करेगा, क्यों करेगा, अगर हम, जो इस भगीरथ काम के मुखिया हैं, वही अपना समय फिजूल

---

१ शरीर के भीतर के चित्र उतारने का शास्त्र

२ रोग-निदान शास्त्र

बातों में खो देते हैं ? हमारा तो एक-एक क्षण, एक-एक सांस उसी काम की साधना में जाना चाहिए। हम एक-एक शब्द तौलकर बोलें, अनावश्यक बातें बिल्कुल न करें, तब कहीं हम अपने काम के निकट पहुंच सकते हैं। आज हमारे सामने जेल है। हम यहां अपने समय का उपयोग कैसे करें, यह सवाल है। मैं देखता हूं यहां कितना ही समय नष्ट होता रहता है। मुझे यह चुभता है। मैंने खुद तो अपना कार्यक्रम बना लिया है। अपने-आप वह बन गया है। बाइबिल है, लुई फिशर की किताब है, उर्दू है, क़ुरान शरीफ़ है। इन सबका अभ्यास नियमित चलता है। सुशीला का भी कार्यक्रम बना है, उसे वह पूरा करे। सो आज तुरत हमारा क्या धर्म है, हमें उसीका विचार करना चाहिए।"

इसके बाद प्रसंग बदलते हुए बापू ने कहा, "मैं तेरे साथ मीराबहन की बात करना चाहता था। कल फूलों की बात पर तू इतनी घबराहट में क्यों पड़ी थी ? यहांतक कहने लगी कि मैं अब फूल इकट्ठे नहीं करूंगी ! ऐसा क्यों ? जो हमारा धर्म है, उससे क्यों चूकें ? कोई भले ही कुछ कहे।" मैंने कहा, "इसमें धर्म की बात नहीं, फूल लेजाकर हम मृत की तो कोई सेवा नहीं करते; अपने सन्तोष के लिए ले जाते हैं। मीराबहन नाराज हुईं, तो मैंने सोचा अब नहीं लाऊंगी।" बापू कहने लगे, "हां, किन्तु यदि फूल चढ़ाकर उसमें से हम कुछ प्रेरणा लेते हैं, हमारी निष्ठा को कुछ दृढ़ता मिलती है, तो ठीक है। अगर ऐसा नहीं है, तो यह फिजूल ही है। मगर मैं तो यह कहना चाहता हूं कि छोटी-छोटी बातों से उद्विग्न क्यों होना चाहिए और इतनी जिज्ञासा क्यों रखनी चाहिए कि हमारे बारे में किसीने क्या कहा था ! हम उसी हदतक जानने की इच्छा रखें, जहांतक वह हमारे आत्म-सुधार के लिए आवश्यक है, जिज्ञासा की खातिर नहीं।"

रात मेरे सिर में खूब दर्द था। मीराबहन ने प्यार से आकर सिर पर दर्द की दवा लगाई। बिलायती मैगनेशिया के जुलाब की एक मात्रा पिलाई, बिस्तर में सुलाकर दबाने लगीं। मैंने इन्कार किया, मगर उन्होंने नहीं माना। मैंने कहा, "मीराबहन, बस कीजिये। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। इसमें मैं परेशानी महसूस करती हूं। मैंने इस किस्म की सेवा किसीसे नहीं ली।" वह बोलीं, "तब तो और भी जरूरी है कि तुम ऐसी सेवा लो।" बहुत प्यार से मुझे चादर ओढ़ाई। दो-चार मिनट छोटे बच्चों की तरह थपकी देकर कहने लगीं, "अच्छी, नन्हीं बकरी !"[१]

[१] 'Nice little goat !'

सब हँस पड़े। मीराबहन बकरियों को इतना प्यार करती हैं कि कोमलतम भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्हें बकरियों का सहारा लेना पड़ा।

३० सितम्बर '४२

सुबह घूमते समय मैंने बापू से मीराबहन की बकरीवाली बात कही। कहने लगे, "मीराबहन में एक बड़ा गुण है। उसके निकट मनुष्य, पशु, वृक्षों और फूलों में कोई फर्क नहीं है। उसे बकरियों से बातें करते तो तूने सुना होगा। फूल-पत्तों से भी वह बातें करती है। और कल रात उसने बिना किसीके कहे वह सब तेरे लिए किया।" मैंने कहा, "उनमें गुण तो भरे ही हैं, नहीं तो अपने राजा-समान पिता के घर को छोड़कर वह यहां भागकर क्यों आतीं? हां, यह बात तो है।"

आज मैंने उपवास किया। खाली सूप पिया। शाम को अच्छा लगता था। मीराबहन पूछने आई कि कोई सेवा या मदद चाहिए, तो बताना। सरोजिनी नायडू कह रही थीं, "मीरा तुम्हारे लिए कल रात बहुत चिन्तित थी। वह तुम्हें बहुत चाहती है और मुझे मालूम ही न था कि वह प्यारेलाल को भी इतना चाहती है।" मैंने उन्हें कल रात की बकरीवाली बात बताई। कहने लगीं, "बकरी के साथ उपमा देने से अधिक प्रशंसा वह किसीकी और क्या करती?"

: १८ :

जेल में बापू का पहला जन्म-दिन

आज हम सबने काफी समय यह सलाह करने में खर्च किया कि बापू के जन्म-दिन को हमें क्या करना है। सरोजिनी नायडू ने बात शुरू की। पीछे सब अपने-अपने सुझाव देने लगे। रात को मैं आई, तो आठ बजकर दस मिनट हो गये थे। बापू कुछ समझ गये होंगे। कहने लगे, "तुम लोग क्या हवाई महल बना रहे थे।" वह हँस रहे थे। मैंने हँसी में कहा, "बहुत अच्छी-अच्छी चीजों की बातें कर रहे थे। उनमें बाइबिल भी थी। सरोजिनी नायडू विचार कर रही हैं कि यहां जो लोग हैं, उनके सामान्य ज्ञान की परीक्षा ली जाय, इसलिए पर्चा तैयार कर रही हैं। उसमें बाइबिल के उद्धरण भी आयेंगे!"

बा की रात अच्छी नहीं गई। बापू को शक था कि कुछ खाने में बदपरहेजी हुई होगी।

१ अक्तूबर '४२

कल बापू का जन्म-दिन है। बापू के घूमने जाने के बाद फूल लटकाने के लिए दीवारों में कीलें लगादी गईं। बापू ने दोपहर को कहा, "देखो, सबसे कह दो, सजावट नहीं होनी चाहिए। सजावट हृदय के भीतर की हो।" मैंने हँस दिया। सरोजिनी नायडू ने मुझे बापू को यह संदेश देने को कहा था कि वह कल दोपहर तीन बजे का समय खाली रखें। जब मैं यह संदेश दे रही थी, तब बापू ने सजावट न करने की बात कही। फिर पूछने लगे, "तीन बजे क्या है?" भाई कहने लगे, "वह तो अत्यन्त गुप्त वस्तु है।" सरोजिनी नायडू से मैंने बापू का सजावट न करने का संदेश कहा, तो हँसने लगीं, बोलीं "बापू हमको, खासकर मुझे, अपना दिल बहलाने से नहीं रोक सकते।"

मीराबहन ने यह सुना तो कहने लगीं, "बापू ऐसा कहते हैं, तो फूल सजाने की बात छोड़ दें।" सरोजिनी नायडू ने कहा, "नहीं, तुम सब दोष मुझपर डाल देना। मुझे यह आदेश कहां दिया गया था कि जेल में भी गांधीजी के हुक्म का पालन करूं!"

बा दो-तीन-दिन पहले कह रही थीं, "बापू के जन्म-दिन पर हम हमेशा गरीबों को खाना बांटते हैं। इस बार ऐसा नहीं कर सकेंगे।" मैंने कहा, "क्यों नहीं?" बा ने उत्तर दिया, "बापू कहते हैं, यह जेल है और सरकार का पैसा इस तरह खर्च नहीं किया जा सकता।" मैंने बा को बताया कि हम लोग अपने-अपने पैसों से सामान मंगवा रहे हैं, सरकार के पैसे से नहीं और सबको बांटेंगे। बा खुश हुईं। मालिश के समय बापू की गादी के ऊपर कील ठोंकने के निशान देखकर बोलीं, "यहां फूल नहीं लगाना। दरवाजे में तोरण भले बांधो। यहां यह सब ढोंग नहीं चाहिए।" सिपाही उस वक्त तो चला गया, मगर पीछे से कील लगा गया। लेडी डाक्टर के यहां से सब्जी की टोकरी ले आया। पहले शहद आया था, फिर गुड़ भी। गुड़ की टाफी मैंने कल ही बना ली थी। बापू से सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बापू, कल आपको एक सभ्य मनुष्य की तरह भोजन मिलेगा।"

बापू हँस दिये। पूछा, "वह कैसे?"

श्रीमती नायडू ने उत्तर दिया, "विशेष प्रकार का सूप, फूल गोभी, रोटी, कच्ची

सब्जी आदि सभी वस्तुएं बारी-बारी से और ठीक तरीके से परोसी जायंगी।" बापू हँस दिये। सरोजिनी नायडू को इन्कार न कर सके।

हमारे जेल सुपरिनटेण्डेण्ट बहुत-से फल लाये। हम लोगों ने उनके हार बनाये। बापू के सोने के बाद बापू के दरवाजे में बैठने की जगह पर, सामने अलमारी पर, महादेवभाईवाले कमरे में और सरोजिनी नायडू के कमरे के दरवाजों पर मालाएं लटका दीं। सीढ़ियों पर मैंने और भाई ने "जीवेम शरदः शतम्" यह पूरा मंत्र सफेद रांगोली में लिखा। भाई ने पहले कोयले में लिखा। उनके अक्षर ज्यादा अच्छे हैं। मैंने उसपर रांगोली डाली। एक-एक सीढ़ी पर मन्त्र की एक-एक पंक्ति थी :

जीवेम शरदः शतम्,
पश्येम शरदः शतम्,
शृणुयाम शरदः शतम्,
प्रब्रवाम शरदः शतम्,
भूयश्च शरदः शतात्।

दूसरी तरफ सीढ़ी पर उसी तरह—'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतंगमय' यह मंत्र भाई ने लिखा। इसका आगे का मुख बाहर की ओर था और प्रथम मंत्र का भीतर की ओर। विचार था कि एक ओर से बापू को घूमने के लिए नीचे ले जायंगे और दूसरी ओर से वापस लायंगे, ताकि एक मंत्र उतरते समय सीधा सामने हो, दूसरा चढ़ते समय। दोनों तरफ की सीढ़ियों की बीच की जगह पर रांगोली से चित्र बनाये थे। बरामदे में 'सुस्वागतम्' लिखा। यह सब लिखते-लिखाते मुझे रात के १२ बज गये। मुझे डर लगा और भाई भी डरे कि कहीं बापू उठ गये, तो नाराज होंगे। कहने लगे, "अब जो रह गया है, सो छोड़ दो, सुबह देखा जायगा।"

सुबह उठी, तो देखा रांगोली खतम हो गई थी। अतः जो रह गया था, रह ही गया। सरोजिनी नायडू ने रात को साढ़े ग्यारह बजे चाय बनाकर पिलाई। कहने लगीं, इससे ताजा हो जाओगी। जिस टोकरी में मैं महादेवभाई की समाधि पर रोज फूल ले जाती थी, उसमें फल, बादाम, टाफी की बोतल, शहद की बोतल आदि सामग्री रखी गई। उसे फूलों से मीराबहन ने सजाया। उनमें कला-वृत्ति स्वाभाविक रूप में है। सब जगह फूल सजाने का भार उन्होंने लिया था। सरोजिनी नायडू के जिम्मे सामान्य देखरेख थी। वह बैठी-बैठी कल के लिए रात के साढ़े बारह बजे तक मटर

के दाने निकालती रहीं।

मीराबहन ने सबेरे खाने के समय बकरी के बच्चों को बापू से प्रणाम कराने को लाने का विचार किया था। भाई ने सलाह दी कि उनके गले में 'सहनाववतु'[1]-वाला मन्त्र लिखकर लटका दिया जाय। मीराबहन को यह विचार अच्छा नहीं लगा। पहले तो वह इधर-उधर के एतराज करती रहीं, मगर सरोजिनी नायडू ने बताया कि उनके खयाल से जो विचार मूल में मीराबहन का था, उसमें दूसरे लोग दखल न दें, तो अच्छा है। भाई ने उनकी अरुचि देखकर फौरन ही अपनी राय वापस ले ली। मुझे यह थोड़ा चुभा। मैंने भाई से कहा, "यह अफसोस की बात है कि मीराबहन ने आपकी राय नापसंद की; उससे तो बापू खुश होते और बकरी के बच्चों से प्रणाम करवाना बहुत शोभायमान होता।" भाई ने उत्तर दिया, "हां, बकरी के बच्चों के साथ ऐक्य की बात से बापू बहुत खुश होते, मगर उसे छोड़ना ही ठीक था। आखिर आज के दिन की खासियत तो यही है न कि हम सबके साथ एकरस हों, परस्पर मिठास हो और जो चीज किसी और को पसन्द न हो, उसे खुशी से छोड़ दें।"

रात को मेरे सो जाने के बाद मीराबहन अपने-आप भाई के पास आईं और बकरी के बच्चे के लिए 'सहनाववतु'-वाला मंत्र लिखने का अनुरोध किया। वह साबुन का एक खाली डिब्बा लाईं। उसमें से पान की शकल के गत्ते काटकर भाई ने उन पर 'सहनाववतु' मंत्र लिखा और नीचे लिखा 'मोटा भाई घणु जीवो' (बड़े भाई आपकी बड़ी उम्र हो!)। ये गत्ते बकरी के बच्चे के गले में लटकाये जायंगे। बापू बकरी का दूध पीते हैं, तो बकरी के बच्चों के बड़े भाई हुए न! मैं रात बारह-साढ़े बारह बजे बिस्तर पर पड़ी थी, आंखें जलती थीं। भाई ने मिट्टी की पट्टी आंख के लिए बना दी थी, आंख पर रखकर सोई; पर नींद नहीं आई। एक बजे के बाद सो सकी। नींद ही उड़ गई थी। ३–२० पर बापू ने प्रार्थना के लिए उठाया। मिट्टी की पट्टी से आंख को बहुत आराम मिला था।

२ अक्तूबर '४२

सरोजिनी नायडू और मीराबहन, दोनों ने उन्हें प्रार्थना के लिए आज जगाने को कहा था। मैं गई, तब सरोजिनी नायडू तो जग ही रही थीं। वह रात भर सो ही

---

[1] आश्रम में भोजन करते समय इससे आरम्भ किया जाता था। वह मंत्र यह है :
सहनाववतु, सहनौभुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै॥

नहीं सकीं। मीराबहन को गहरी नींद से जगाना पड़ा। बापू के लिए पहला आश्चर्य तो इन दोनों का प्रार्थना में आना और दरवाजे और दीवार पर लगे हुए फूल देखना था। मीराबहन ने भजन गाया, "जागिये रघुनाथ कुंवर।" उन्हें सुबह का एक यही भजन आता था, ऐसा उन्होंने मुझसे कहा। प्रार्थना के बाद मैंने देखा कि एक सिपाही रांगोली भर रहा था। बा भी आज प्रार्थना के लिए उठी थीं। मीराबहन ने प्रार्थना से पहले बापू को प्रणाम किया; मैंने, भाई और बा ने प्रार्थना के बाद। बापू प्रार्थना के बाद सो गये, बा भी। सरोजिनी नायडू, मीराबहन, भाई और मैंने स्नान किया। मैं बापू के लिए मौसम्बी का रस निकाल रही थी, तभी बापू उठकर भीतर आये।

प्रार्थना के समय दीवार पर फूल देखकर बापू ने बा से कहा, "तू नहीं रोक सकी न इनको ?" बा ने कहा, "मैंने मना तो किया था, मगर नहीं माने।" बापू ने सरोजिनी नायडू से कहा, "मुहब्बत भी किसी पर लादनी नहीं चाहिए।" सरोजिनी नायडू ने दीवार पर से फूल उतरवा दिये और सीढ़ी के पास रख दिये।

नाश्ते के लिए बापू आये, तो फल की टोकरी सजी हुई सामने रखी हुई थी। सरोजिनी नायडू ने आकर फूल का हार पहनाया और मीराबहन ने सूत का। हमारे जेल सुपरिनटेण्डेण्ट मि० कटेली ने भी फूल का हार पहनाया। साथ में ७४) रु० हरिजन काम के लिए भेंट किये और सादर प्रणाम किया। मैंने अपने सूत का हार बनाया था। भाई आये, कहने लगे मुझे भी बना दो। वह रस निकालने लगे। मैंने उनके और बा के सूत के हार बनाये। रांगोली के ७४ निशान सूत के हारों पर लगाये। नीचे एक गेंदे का फूल बांध दिया। भाई ने पूछा, "क्या महादेवभाई का सूत नहीं है ?" मैंने जल्दी से निकालकर एक हार उसका भी बनाया।

बापू नाश्ता कर रहे थे, इतने में मीराबहन और भाई एक-एक बकरी के बच्चे को लिये हुए आ पहुंचे। दोनों बच्चों के गले में फूल-पत्तों के हार और 'सहनाववतु' मंत्र-वाले पत्ते लटक रहे थे। मीराबहन ने उनकी ओर से एक छोटी-सी सुन्दर स्तुति कही और बकरी के हाथ जोड़कर प्रणाम कराया। फिर बापू के हाथ से उन्हें रोटी दिलवाई। मगर उससे पहले ही उन्होंने एक-दूसरे के गले के फूलों और कोमल पत्तियों के पहनाये हुए हारों को ही खाना शुरू कर दिया था ! बापू बहुत हँसे। मैंने उन्हें अपने और बा के सूत का हार पहनाया। बा ने कहा कि उनके सूत का हार भी मैं ही पहना दूं। भाई ने अपना हार पहनाया। इसके बाद घूमने को निकले। रास्ते में बापू ने हमारी रांगोली और सीढ़ी पर लिखे मंत्र देखे। सारी फल मालाएं

और टोकरी के फूल महादेवभाई की समाधि पर ले गये। वहां दीवार पर सब सजा दिये। रोज की प्रार्थना की। प्रार्थना से पहले भाई ने महादेवभाई के सूत का हार बापू को पहनाया। बापू और भाई की आंखों में पानी आ गया। आज खासतौर से प्रार्थना के समय ऐसा आभास होता था, मानो महादेवभाई हमारे साथ ही खड़े प्रार्थना बोल रहे हैं।

घूमते समय बापू ने पूछा, "तूने भर्तृहरि की कथा सुनी है?" मैंने कहा, "जी हां, सुनी तो है।" बापू बताने लगे, "योगी होने के बाद अन्त में भर्तृहरि को अपनी पत्नी के पास भीख मांगने जाना था। जाता है, तो अपने भाई का और उसके प्रति अपने बर्ताव का स्मरण करके कहता है, 'अरे जखम जोगे नहीं जशे'।[1] यही बात महादेव के चले जाने के घाव पर भी लागू होती है।" यद्यपि बापू अपना दुख व्यक्त नहीं करते, मगर महादेवभाई के जाने से उन्हें बहुत गहरा घाव लगा है।

बा को मालिश और स्नान करवाकर मैं सरोजिनी नायडू की मदद के लिए गई। उन्होंने मटर का पुलाव बनाने को कहा था। बैंगन का रायता बना दिया। बापू के खाने की तैयारी की। मीराबहन ने खाने की मेजपोश के किनारे फूलों का सुन्दर स्वस्तिक बनाया। दरवाजे पर लाल रांगोली का सुन्दर स्वस्तिक बनाया था। एक तश्तरी में फूलों से सजाकर फल रखे। मीराबहन ने कच्ची सब्जी भी सुन्दर ढंग से सजाई। टमाटर को गुलाब के आकार में काटा था।

साढ़े दस बजे कलैक्टर और डा० शाह आये। डा० शाह तो अच्छी तरह बातें करते रहे। कलैक्टर ने तो इतना ही कहा, "अपनी वर्षगांठ के दिन आप कैसे हैं?" बापू कुर्सी पर बैठे थे, ताकि उसके आने पर खड़े होकर हाथ मिला सकें। नीचे गद्दी पर बैठकर उठना उनके लिए कठिन रहता है। कलैक्टर के आने पर खड़े हुए, हाथ मिलाया। मुझे यह अच्छा नहीं लगा, बापू क्यों कलैक्टर की खातिर खड़े हों? मगर बापू तो मर्यादा की मूर्ति हैं। जो करना चाहिए, उसमें कभी नहीं चूकते। वह दूसरा कर नहीं सकते थे। कैदी की हैसियत से उन्हें कलैक्टर का मान रखना चाहिए था। नाश्ता करते हुए बापू ने कहा कि मैं जन्म-दिन पर उपवास किया करता हूं और दूसरों से भी उनके जन्म-दिन पर करवाता हूं। आज मुझे फल और सब्जी पर ही रहने दें। मैंने कहा, "नहीं, फल और दूध लीजिये।" सरोजिनी नायडू ने कहा,

---

[1] 'अरे, योगी होने पर भी यह घाव मिट नहीं सकता।'

"साग तो खाना ही होगा।" आखिर एक रोटी को छोड़कर बाकी सब कुछ लिया। खाने के बाद पैर के तलवों पर मालिश करवाकर बापू सो गये। बा भी आज उत्साह में थीं। उन्होंने कल आज की तैयारी में सिर धोया था। आज नया टीका लगाया, बालों में फूल लगाये। खाया भी अच्छी तरह। मैं और मीराबहन दोपहर काफी सोये, बा भी। सब थक गये थे।

सरोजिनी नायडू ने दोपहर को आराम नहीं किया। सिपाहियों और कैदियों के लिए दाल, सेव, पेड़, जलेबी और केले मंगवाये थे। सबका हिस्सा करके उन्होंने रखा। ये सब अपने, मीराबहन के और मेरे पैसे से मंगाये थे। तीन बजे सब कैदी आकर लाइन में बैठ गये। बापू ने आकर उन्हें दर्शन दिये—नमस्कार किया। बा ने सबको खाने का सामान बांटा। वह बहुत खुश थीं। बापू भी कैदियों को खाते देखकर बहुत खुश हुए। आज सुबह सब सिपाही बापू को प्रणाम करने आये थे। सबको बापू ने कुछ-न-कुछ फल दिये थे। घूमते समय बापू कह रहे थे, "सिपाहियों को तो फल दिये, मगर कैदियों को तो कुछ दिया ही नहीं।" मैंने कहा, "देंगे। आप देखते रहिये।" दोपहर को कैदियों को खाने की चीजें मिलती देखकर वह बहुत खुश हुए। जेल में कैदी लोग मामूली-मामूली चीजों के लिए भी तरस जाते हैं। कटेली-साहब ने सबके लिए आइसक्रीम बनवाई। बापू के लिए तो बकरी के दूध की बनाई और अपने हाथ से मशीन चलाई। आज बापू ने शाम को खाने के समय तीस वर्ष के बाद थोड़ी आइसक्रीम सरोजिनी नायडू के आग्रह के वश होकर खाई। हम सबने पेट भरकर खाई। सब सिपाहियों और कैदियों को भी दी। बापू खुश हुए। बोले, "इन लोगों को जेल में ऐसी चीजें देखने को भी नहीं मिलतीं।" शाम को महादेवभाई की समाधि पर नये फूल रखे।

शाम को प्रार्थना में 'वैष्णवजन' भजन गाया। प्रार्थना के बाद मैं बापू को बरामदे में ले गई। फव्वारे और रेलिंग पर दीपमाला थी। सुन्दर दृश्य था। बा ने कहा, "शंकर (महादेवभाई) के वहां भी दीया रख आना।" मैं और भाई सिपाहियों के साथ वहां सात दिये रख आये।

रात हम सबने और आइसक्रीम खाई। इससे मेरा पेट बिगड़ा। बापू रात बिस्तर पर लेटे, तब कहने लगे, "यह सब जो तुम लोगों ने किया है, उसके औचित्य में मुझे शक है।" उन्हें लगता था कि हम कैदी हैं और कैदियों को ऐसे उत्सव क्या मनाना था?

३ अक्तूबर '४२

सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सो गई। रात की आइसक्रीम ने कुछ तबीयत बिगाड़ी थी। घूमते समय बापू ने सुबह न उठ सकने के बारे में कुछ पूछा, तो कारण बताना पड़ा (हालांकि सरोजिनी नायडू ने कहा था, "हुआ क्या, रोज-रोज थोड़े ऐसा होता है! अब इस बारे में बापू और मीरा को न बताना। मीरा तो साल-भर के बाद भी आइसक्रीम को दोष दिया करेगी।")। बापू सुनकर हँस दिये। बोले, "मेरे कहने से तू न खाती, तो इतना असर नहीं हो सकता था। मगर अब तकलीफ हुई। इसलिए शायद आगे ऐसी भूल न करेगी।" फिर बापू बताने लगे कि जिन लोगों ने ये सब खाने की चीजें निकाली हैं, उन्होंने अपने-आप उनके लिए छोटे-छोटे बर्तन भी बना लिये हैं। आइसक्रीम कभी बड़े बर्तनों में नहीं खाई जाती है। शेरी (दक्षिणी स्पेन की सफेद शराब) का गिलास अलग होता है, पोर्ट (दूसरी तरह की शराब) का अलग। ह्विस्की कभी अकेली नहीं पी जाती, सोडा मिला-कर पीते हैं। हम नकल करनेवाले यह सब तो जानते नहीं, प्याले भर-भरकर गटक जाते हैं और पीछे तकलीफ उठाते हैं। फिर कहने लगे, "मैंने रात भी कहा था कि यह सब जो तुम लोगों ने किया है, करने जैसा नहीं था। सरोजिनी नायडू काम तो बहुत बढ़िया कर लेती हैं, मगर सच्ची संस्कृति की कीमत देकर। जो चीज मैं कहता हूं, उसमें सच्ची संस्कृति है। जो सब तुम लोगों ने किया, उसका मजाक भी उड़ाया जा सकता है। किन्तु यदि हम जेल में सरकार का दूध-मक्खन तक न खायं, सूखी रोटी खायं, तो उसका कौन मजाक उड़ा सकता है? मैंने यह सब सहन किया; अड़ जाता, तो तुम लोग नहीं कर पाते। मगर मैंने देखा कि आखिर तो इसमें शुद्ध प्रेम ही भरा है, अतः होने दिया और कैदियों को तो देना अच्छा ही लगता है, मगर यह सब हमारी मर्यादा से बाहर है।"

दोपहर पांच बजे पता चला कि जिन बकरी के बच्चों को कल मीराबहन बापू के पास लाई थीं, उनमें से एक मर गया है। चार बजे तक अच्छा था, पांच बजे तक खतम हो गया। किसी जहरीले सांप के काटने का शक था। सबके मन में आया कि वह कल बापू के हाथ से रोटी खाने के लिए ही जिन्दा रहा था। कैदी और सिपाही लोग सब कह रहे थे कि उसकी गति तो अच्छी ही होगी।

आज महादेवभाई को गये सात हफ्ते पूरे हो गये।

४ अक्तूबर '४२

मेरा अंग्रेजी व्याकरण अभीतक बहुत कम हो पाया है। ७ तारीख तक कैसे पूरा होगा? ऐसा लगता है कि हो नहीं सकेगा। यह चुभता है। बापू कह रहे थे कि मैं उनका सब काम छोड़ दूं और सारा समय व्याकरण को दूं। मगर उनका तो मेरे पास आजकल काम है ही बहुत कम। बा का है, वह तो छूट नहीं सकता। दिन-भर थोड़ा-थोड़ा निकलता रहता है। पढ़ाई का समय ही नहीं मिलता। बीच में आंख के कारण दो दिन निकल गये। यह सब मेरी पहली एम० डी० की परीक्षा के जैसा हुआ।

आज बापू को यहां आये आठ हफ्ते पूरे हो गये हैं। देखें, और कितने पूरे करने पड़ते हैं?

बापू की सलाह से मैंने मि० कटेली से कहा था कि वह मेरे घरवालों को खबर दे दें कि उनके पत्र मिल गये हैं और मैंने न लिखने का निश्चय किया है। उन्होंने बम्बई सरकार के गृह-विभाग के सेक्रेटरी को लिखा; क्योंकि वह स्वयं सीधे नहीं लिख सकते थे।

५ अक्तूबर '४२

सरकार के गृह-विभाग का आज उत्तर आया कि सरकार यह सन्देश नहीं पहुंचा सकती, मैं खुद ही उन्हें इस बारे में लिख सकती हूं। बापू ने लिखने को कहा।

बा को दो रोज से अच्छी नींद नहीं आती। गरमी काफी है, मच्छरदानी में दम घुटता है। आज बा कमरे में बिना मच्छरदानी के सोईं। कमरे में हवा खूब आती है। भाई उनके पास सोये। बा को लगता है कि बापू रात को उठें, किसी चीज की जरूरत हो, तो भाई शायद जल्दी न उठें, मैं तो उठ ही जाऊंगी; इसलिए मुझे बापू के पास से नहीं हटने देतीं। बा आज बहुत अच्छी तरह सोईं। आधी रात के समय बापू ने मुझे जगाकर पूछा कि क्या बा सो रही है? उसकी आवाज ही नहीं आती। मैंने कहा, "सोती नहीं, तो आप क्या समझते हैं?" बापू ने कहा, "कौन क्या कह सकता है?" मैं देख आई। बा गहरी नींद में सो रही थीं। बापू के मन में डर पैदा हो गया है कि कहीं बा को भी न यहां खोना पड़े। किन्तु यदि बा का यह निश्चय कायम रहेगा कि अच्छा होकर बाहर जाना है, तो सब अच्छा ही होगा।

६ अक्तूबर '४२

कल बापू का मौन था। कल ही कर्नल शाह के आने का दिन था, मगर वह नहीं आये, इसलिए आज आये। कल फिर भंडारी के साथ आयेंगे।

बापू ने कहा, "इस वक्त मेरे जन्म-दिन के लिए कुछ भी बाह्य समारोह मत करना।" देशी तिथि के अनुसार कल उनका जन्म-दिन होगा। हमने कातने का प्रोग्राम रखने और खाने की जगह फूल सजाने की इजाजत उनसे ले ली।

सरकार ने मि० कटेली को लिखा था कि वह खतों के बारे में मेरा सन्देश मेरे घरवालों को नहीं पहुंचा सकती। मैं इस बारे में खुद लिखूं। मेरे पत्र का मसविदा भाई ने बनाया। बापू ने उसे नापसन्द किया। कहने लगे, "बिलकुल सामान्य और संक्षिप्त होना चाहिए।"

आज माताजी आदि के पत्र मिले। बापू घूमते समय कहने लगे, "बम्बई सरकार के दफ्तर में तेरी साख जम गई मालूम होती है।" मैं समझी नहीं। पूछा, "कैसे?" कहने लगे, "इस वक्त खत जल्दी दे दिये हैं, कुछ काटा-छांटा भी नहीं। उन्हें लगता होगा कि यह तो ठीक चलती है, हमारा काम भी कर लेती है। तेरे बिना बा को वे लोग यहां रख नहीं सकते।" बा बीमार रहती हैं। डाक्टर साथ है, इसका सरकार को बहुत सहारा है।

७ अक्तूबर '४२

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्म-दिन था। सवेरे प्रार्थना में बा उठीं। बापू ने आज केवल अनपका खाना खाने का निश्चय किया था। नाश्ते में संतरे-मौसम्बी का रस लिया। सवेरे प्रार्थना से पहले गरम पानी और शहद लिया, दोपहर को भी। ११ बजे टमाटर का रस, बादाम-काजू, गाजर-मूली पीसकर व किशमिश भिगोकर साफ करके सामने रखीं। सब चीजें संतरे के छिलके की कटोरियां बनाकर उनमें सजाकर रखी थीं। सुन्दर लगती थीं। खाने की जगह पर राष्ट्रीय पताका और 'भारतमाता की जय' फूलों में लिखा बहुत सुन्दर लगता था।

मीराबहन, बा, भाई और मैंने बापू को सूत के हार पहनाये। बा के कहने से मैंने बापू को टीका भी लगाया। दोपहर आध घंटे तक कताई का दंगल हुआ। बापू, भाई, मीराबहन और मैं चार कातनेवाले थे। मेरा नम्बर पहला आया।

भंडारी और शाह आये। हमने भंडारी से एक हरिण देने को कहा। वह हमारी कंटीली बाड़ के बाहर अलग हाते में रहता है। हम घूमने निकलते हैं, तो हमारी

तरफ ही देखता रहता है। हमने सोचा हमारे पास आ जायगा, तो उसे भी लाभ होगा, हमें भी। भंडारी 'हां' कह गये, मगर बाद में सरोजिनी नायडू नाराज हुईं। कहने लगीं, "वह तो बगीचा उजाड़ देगा। उसका जिम्मेदार कौन होगा?" सो भंडारी ने भी विचार बदल दिया।

शाम को बापू ने फल, काजू, बादाम और टमाटर का रस लिया। फलों की तश्तरी बहुत सुन्दर सजाई थी। बा ने भी आज दूध और फल ही खाये।

शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने 'प्रेमल ज्योति'[1] भजन गाया। सरोजिनी नायडू ने 'संध्याकालीन प्रार्थना का आह्वान'[2] नाम की अपनी कविता पढ़ी। मैंने और भाई ने कुछ श्लोक पढ़े। बड़े अच्छे थे। प्रार्थना के बाद भाई 'छान्दोग्य-उपनिषद्' में से बापू को कुछ मंत्र बता रहे थे, जिनका भावार्थ था कि जिसकी सब क्रिया यज्ञ-मय हो गई है, वह ११६ वर्ष तक जीता है।

बापू ने व्याकरण की परीक्षा के लिए मुझे १५ दिन का और समय दिया। श्लोकों के बारे में मजाक करने लगे, "कुछ समझी या भट्टजी के बैंगनोंवाली बात रही!" मैंने जानबूझकर अज्ञता प्रकट की। मैंने कहा, "नहीं समझी।" बोले, "यह तो मंत्र है न, इसका जप करने से सिद्धि मिलती है। जैसे गायत्री मंत्र से, मगर समझकर कोई करे, तो! तुझे ११६ वर्षतक जीना है क्या?" मैंने कहा, "जी नहीं, वह आपके लिए है। हमारे जैसे ११६ वर्ष जीकर क्या करेंगे?" फिर मैंने पूछा, "मगर मन्त्र के जप के बारे में क्या आप सचमुच ऐसा मानते हैं कि वह फल-दायी है?"

बापू ने कहा, "मैं तो रामनाम के बारे में कह सकता हूं। वह मेरा नित्य का अनुभव है, रोज नया, आज भी हुआ। मैंने बहुत लड़के-लड़कियों से कहा है कि रामनाम जपो। वे कहते हैं कि गंदे विचार आते हैं, तो मैं कहता हूं कि उनको निका-लने का प्रयत्न न करो। उन्हें कहोगे कि 'जाओ-जाओ', तो यह भी उन विचारों की एक तरह से पूजा ही हुई। उसके बजाय दूसरे अच्छे विचार भरो, रामनाम जपो। गंदे विचार अपने-आप भाग जायंगे। मैं आठ वर्ष का था, भूत-प्रेत से डरता था, मेरी धाय रंभा ने कहा, 'रामनाम जपो, तो सब भूत भाग जायंगे।' उस वक्त

[1] Lead kindly light.
[2] Call to Evening Prayer.

से यह चीज शुरू हुई। पीछे रामायण दाखिल हुई। इस प्रकार उन छुटपन के संस्कारों ने गहरी जड़ पकड़ी। उस वक्त भूत भागे कि नहीं, यह मुझे याद नहीं, मगर आज किसी भी अनावश्यक विचार को भगाने के लिए रामनाम का अद्भुत असर होता है। जो मुझे कहते हैं कि असर नहीं होता, उन्हें मैं कहता हूं कि और जपो। असर हुए बिना रहेगा नहीं।" फिर स्टीवेंसन इंजीनियर का किस्सा बताने लगे। उसे कहा गया कि यहां इतना पानी है कि इसे कोई भर नहीं सकता, पुल बांध नहीं सकता। उसने कहा कि कितना भी गहरा हो, उसे आखिर भरना ही है। और उसने वहां पुल बनाकर ही छोड़ा।

: १९ :

ईद का त्योहार

८ अक्तूबर '४२

सुबह घूमते समय आज मैंने फिर गीता के अर्थ शुरू किये। २५ श्लोक हो गये। बापू कहने लगे कि यदि नियमित करे, तो बहुत हो जाय, मगर तू कभी तो करती है और कभी नहीं करती। मैंने कहा, "समय मिले, तो कर लेती हूं, पर कोई बात करनेवाले आपके साथ घूमते हों, तब कैसे हो सकता है?" बापू कहने लगे, "हम अपने लिए बचाव कभी न ढूंढें। दूसरे के दृष्टि-बिन्दु को देखने की कोशिश करें। ऐसा करने से एक तरह की सरलता आ जाती है। ग्रहण-शक्ति बढ़ती है। यह चीज आ जाय, तो तेरे बहुत ऊंचा चढ़ने के रास्ते में से रुकावट निकल जाय।"

दोपहर को बापू के कमरे के कालीन वगैरा निकालकर सफाई करवाई। बहुत धूल निकली। बापू सफाई से बहुत खुश हुए।

बा की तबीयत थोड़ी अच्छी है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने बाहर के जगत के साथ कोई संबंध नहीं रखा। उसमें से मैं तो रस के घूंट ले रहा हूं।"

९ अक्तूबर '४२

चार-पांच रोज से सख्त गरमी पड़ती है। आज शाम को खूब बादल आये। ऐसा लगा, जोरों से पानी बरसेगा। मगर दो-चार छींटे आने के बाद बादल चले गये।

महादेवभाई की समाधि को आज लीपा और नये फूल सजाये। बहुत सुन्दर लग रहा था।

भाई रामायण का अनुवाद कर रहे हैं। बापू ने उसमें मुझे चौपाइयां लिखने को कहा था। आज मैंने लिखना शुरू किया, मगर मेरी व्याकरण की किताब अभी पूरी नहीं हुई। इसलिए बापू ने रामायण लिखना छोड़ने को कहा। मैंने कहा, "पंद्रह मिनट की तो बात है। मुझे लिखना अच्छा भी लगता है, लिखने दीजिये।" बापू बोल उठे, "क्या तेरे पास पंद्रह मिनट की कोई कीमत ही नहीं है? और तुझे बहुत चीजें अच्छी लगती हैं। इसका अर्थ क्या? रस तो मैं भी बहुत चीजों में रखता हूं। मगर मैं अपने मन को रोक लेता हूं। इसके बिना आदमी कुछ भी कर नहीं पाता।"

१० अक्तूबर '४२

दिन-भर गरमी कुछ कम रही, शाम को खूब बढ़ी। बादल भी घिर आये। मगर जब कल के काले बादल बिना बरसे ही चले गये, तो आज के बादलों पर क्या आशा रखी जा सकती है?

बा काफ़ी अच्छी हैं। अब वह सब जगह घूमती हैं। हर काम में कुछ-न-कुछ उन्हें कहने को रहता है। खाने-पीने को भी मन हो आता है।

शाम को महादेवभाई की समाधि पर थोड़े फूल ले गये। मुझे लगा, आज धूप नहीं थी, सुबहवाले सूखे नहीं होंगे। मगर वे तो सूख गये थे। स्वस्तिक बनाने को तो फूल नहीं थे, मगर एक क्रॉस बन गया। बापू को वह बहुत अच्छा लगा। बापू ने ही बनाया था।

आज कई दिनों के बाद फिर महादेवभाई की मृत्यु का चित्र सारे समय मेरे सामने रहा।

शाम को 'तस्मादपरिहार्येऽर्थे नत्वंशोचितुमर्हसि'-वाले श्लोक का मनन करने को कह रहे थे। अपने लोगों में जो दोष हैं, उन्हें हमें बिना समता खोये खूबसूरती से सहन करना है, ऐसा बता रहे थे।

मेरे गले में आज फिर दर्द है।

११ अक्तूबर '४२

आज सवेरे महादेवभाई की समाधि पर मैं नये फूल रखने लगी। उसमें मुझे पांच-सात मिनट लग गये। साधारणतः सुबह हम प्रार्थना में ही समय देते हैं। फूल

शाम को सजाते हैं, वह दूसरी सुबह तक ताजे रहते हैं।

बापू आज अपने सिर की चमड़ी को छूने में भी दर्द होता बताते थे। पहले सोचा कि खून का दबाव बढ़ा होगा। मगर देखा तो खून का दबाव १६६/१०० ही था। तो फिर इस दर्द का कारण कब्ज होना चाहिए। कल रात उन्होंने नींद भी अच्छी नहीं ली थी। यह भी कारण हो सकता है।

सरोजिनी नायडू ने बापू से कल ईद की सेवैयां खाने को कहा था। बापू ने कहा, "मुझे खजूर खाने दो। हजरत मुहम्मद की तो वही खुराक थी न!" वह मान गई। बा को पता लगा, तो पूछने लगीं, "आप कल फलाहार क्यों कर रहे हो?" बापू सोमवार का मौन ले चुके थे। लिखकर बताया, "ईद के कारण।" बा ने कहा, "मुसलमान तो कल सब कुछ खायंगे, आप क्यों उपवास-सा करते हो?" बापू ने लिखा, "दक्षिण अफ्रीका में तो तुम जानती हो न, महीना-भर मैंने रोज़ा रखा था। इस समय तो एक भी रोज़ा नहीं रखा! तो कल ईद के रोज कुछ तो त्याग कर लूं। पैगम्बर की प्रिय खजूर और दूध लूंगा और मेरी प्रिय रोटी और साग छोड़ दूंगा।"

बा आज राजनीति की बहुत सारी बातें कर रही थीं। कहती थीं, "एमरी कहता है कि गांधी और जिन्ना एक-दूसरे से बात भी नहीं करते, मगर गांधी तो जिन्ना के घर गया था। महादेवभाई ने सब लिखकर रखा है। मैं तो लिखित सबूत सबके आगे प्रकट करनेवाली हूं।" मैंने कहा, "बा, इसीलिए तो सब एमरी को झूठा कहते हैं न?" कहने लगीं, "हां, ये लोग बड़े खराब हैं।"

रात मैंने बापू का काम भाई पर छोड़ दिया। मीराबहन के सिर में दर्द था, सो उनके सिर में मालिश की और सरोजिनी नायडू की टांगों की भी मालिश की। रोज मीराबहन उनकी मालिश किया करती थीं। सवा दस बजे सोई।

शाम को ईद का चांद बापू ने सबसे पहले देखा। मौन थे। मुझे बुलाकर दिखाया। एक मुसलमान सिपाही है, मुहम्मद खां। उसे चांद बताकर बापू ने उसे मौसम्बी दिलवाई। सब चांद को देखकर ऐसे खुश हो रहे थे, मानो रमजान हमीं लोगों ने रखा था।

१२ अक्तूबर '४२

आज ईद थी। सबेरे बापू ३-१० पर प्रार्थना को आये। प्रार्थना के बाद सो गये। आज उन्होंने सिवा उबले दूध के बाकी सब बिन-पका खाना खाया। खजूर, टमाटर, संतरा, मूली, बादाम वगैरा। शाम की प्रार्थना पर भाई ने क़ुरान की आयतें पढ़ीं

और सरोजिनी नायडू ने अपनी एक कविता। शाम की प्रार्थना के बाद बापू बा को पढ़ा रहे थे। आज फिर एक भजन का स्वर उन्हें सिखा रहे थे। सरोजिनी नायडू हँसने लगीं। बोलीं, "७४ वर्ष के बूढ़े नवविवाहित दम्पती का स्वांग-सा रच आनन्द ले रहे हैं।"

मैंने उन्हें ७ तारीख के 'टाइम्स ऑव इण्डिया' अखबार में से ९१ वर्ष के पुरुष और ७६ वर्ष की स्त्री की शादी की खबर पढ़कर सुनाई। हँसने लगीं। बोलीं, "इनके सामने तो ७४ वर्ष की स्त्री बच्चों के समान है।" बहुत हँसी होती रही।

मीराबहन ने महादेवभाई की समाधि पर रोज न आकर हफ्ते में एक बार आने की इजाजत बापू से मांग ली। बापू ने खुशी से दे-दी।

घूमते समय बापू फिर मेरे ऐसे समय बम्बई पहुंचने और यहां आने की घटना पर आश्चर्य कर रहे थे। बोले, "अब इसे ईश्वर का चमत्कार न कहा जाय, तो क्या कहा जाय ? इसी तरह यह भी तो ईश्वर का चमत्कार ही है न कि इतनी बड़ी सल्तनत से मैं लड़ रहा हूं, वे इतना धमकाते भी हैं, मगर मुझपर कुछ असर ही नहीं होता। न डर है, न निराशा, न गुस्सा ही आता है, बद्दुआ कभी मेरे हृदय से उनके लिए निकलती ही नहीं।"

: २० :

सत्याग्रह में आत्महत्या ?

१३ अक्तूबर '४२

मकान के सामने एक फव्वारा है। वहां घूमते समय बापू हम सबके साथ मकड़ी के जाले देखते रहे। कैसे मकड़ी इतना पानी पार करके जाती होगी। इस प्रश्न पर गहराई से विचार होता रहा। बापू किस-किस चीज में रस ले सकते हैं, यह चकित करनेवाली चीज है।

बा खत लिखना चाहती थीं। बापू ने उनके लिए कनु के नाम एक पत्र का और धनुष तकली पर लगानेवाले राल का मसाला मंगवा देने के बारे के पत्र का मसविदा बनाकर दिया। मैंने उसकी साफ नकल करके बा के दस्तखत लिये और प भेजे। बा बहुत खुश थीं कि अब उत्तर में और पत्र आयेंगे।

महादेवभाई की समाधि पर फूलों का ॐ बनाया। वह बहुत अच्छा लगता था स्वस्तिक चिह्न की जगह क्रास बनाना शुरू किया है। फूल कम हो गये हैं, इसलिए यह परिवर्तन शुरू हुआ है। मगर बापू को अब क्रास ही अच्छा लगता है।

१४ अक्तूबर '४२

ऋतु एकदम बदल गई है। गरमी बढ़ी है। फूल एकाएक मानो झुलस ही गये हैं, सैकड़ों एक साथ सूख रहे हैं। महादेवभाई की समाधि पर आज एस्टर फूलों का ॐ बनाया। कर्नल भण्डारी और कर्नल शाह दोनों आज आये। शाह तो कल भी आये थे। बापू को मालिश वगैरा में इस कारण देर हो गई।

बापू बा को आज दोपहर गीता सिखा रहे थे। रात को एक घंटा गुजराती सिखाते हैं, गाना भी। बा कह रही थीं कि पहले से मैंने इस तरह सीखा होता, तो कितना सीख लेती! मगर बापू ने कभी इस तरह उन्हें समय दिया ही नहीं। अब भी देते रहें, तो अच्छा है।

घूमते समय बापू अपने जीवन की बातें बता रहे थे। कहने लगे, "किसी पर ही ईश्वर का इतना अनुग्रह होता होगा, जितना मुझ पर हुआ है, नहीं तो वेश्या के घर जाकर कौन बच सकता है? मगर मुझे तो वहां मन में किसी तरह का उद्वेग, शरीर में किसी तरह का संचार तक नहीं हुआ।"

मि० कटेली ने बाहर की हरी बाड़ में से निकलकर सामने की तरफ जाकर घूमने का रास्ता बड़ा करवा दिया है। उधर छाया रहती है, सो सबेरे उधर घूमने जाते हैं। बापू को कटेलीसाहब का अपने-आप उनके आराम का इतना ध्यान रखना अच्छा लगा। सिपाही लोग बगीचे की पगडंडियां भी अच्छी बना रहे हैं।

रघुनाथ जमादार को आज कुनैन का दूसरा इंजेक्शन दिया। पहला परसों दिया था। उसे बहुत सख्त किस्म का मलेरिया है। अच्छा हो रहा है। यहां मेरी डाक्टरी अपने साथियों, सिपाहियों और हमारा काम करनेवाले सजायाफ्ता कैदियों तक सीमित है। कोई बीमार सलाह लेने आता है, तो अच्छा लगता है।

१५ अक्तूबर '४२

आज महादेवभाई को गये दो महीने पूरे हो गये। जगत चलता ही रहता है। मनुष्य आता है और चला जाता है, किन्तु जगत की गति में फरक नहीं पड़ता।

थोड़ी-थोड़ी सरदी शुरू हुई है, अब सबेरे घूमते समय 'हिमालय' में सरदी लगती है। सामने की ओर मि० कटेली ने जो घूमने का रास्ता तैयार करवा दिया है, वह

हमारे यहां के कुटुम्ब में 'हिमालय' कहलाता है।

घूमते समय जेल में उपवास की नौबत आये और जेल-अधिकारी जबरदस्ती खाना खिलायें, तो मनुष्य क्या करे, इस प्रश्न की चर्चा उठी। बापू बोले, "बाह्य उपायों को सोचना ही क्यों ? जिसकी सचमुच जीने की इच्छा उठ गई है, उसका शरीर अपने-आप गिर जायगा। अलंकार में कहूं, तो वह योगाग्नि पैदा करके उसमें भस्म हो जायगा। इतना प्रतिरोध करेगा कि उसमें टूट जायगा।" भाई ने कहा, "सिद्धांत में यह ठीक है, मगर कहांतक मैं खुद यह कर पाऊंगा, इसमें मुझे शंका है। तब बाह्य उपाय भी सोच रखना चाहिए न ?" बापू बोले, "जो बाह्य उपाय का ही विचार करता रहता है, वह अन्दर की अग्नि पैदा कर ही नहीं पाता। मगर कोई बाह्य उपाय का आश्रय ले और ऐसी हालत में आत्महत्या भी करे, तो मैं उसे दोष नहीं दूंगा।"

भाई ने बाह्य उपायों में अपने उस्तरे से खून की कोई बड़ी नाड़ी काट लेने की बात की। मैंने पूछा, "यदि कोई रात को चुपचाप अपनी एक बड़ी नाड़ी काट ले और खून निकल-निकलकर ही वह सुबह तक मर जाये, तो क्या वह ठीक होगा ? जेल में उपवास का हेतु मरना नहीं है। हेतु तो सत्ताधारियों का हृदय बदलना है। सामनेवाला देख भी नहीं पाता और हम चुपचाप आत्महत्या कर लेते हैं, तो उसमें सामनेवाले का हृदय-परिवर्तन कैसे होगा ?"

बापू बोले, "इस समय हृदय-परिवर्तन की बात नहीं हो रही है। आज प्रयोग बहादुर की अहिंसा का नहीं, कमजोर की अहिंसा का है। यहां भी नेता के पास तो हृदय-परिवर्तन की बात रहती है। मगर सर्वसाधारण लोगों के लिए ऐसा मौका आ सकता है कि वे किसी अपमान को बरदाश्त न कर सकें और उससे बचने का उनके पास दूसरा साधन नहीं है, तो वे मर जायं। तब उनका कार्य अहिंसक ही होगा, चाहे उस कार्य की आत्मा शायद अहिंसक न हो।" मैंने पूछा, "यह कैसे ?" बापू समझाने लगे, "एक आदमी को फांसी की सजा मिलती है। जो सिपाही उसका रखवाला है, उसकी रक्षा करता है। उसे फांसी मिलनेतक अपनी जान देकर भी उसकी रक्षा करता है। उसका कार्य तो अहिंसक है, मगर वह कहां जानता है कि उसमें अहिंसा है !

"तो इस दुर्बल की अहिंसा को मुझे आजमाना है। मैंने देखा है कि सारे देश को मैं बहादुर की अहिंसा आज नहीं सिखा सकूंगा। मगर यह दुर्बल की अहिंसा कुछ

फल लाये, तो दुर्बल प्रजा के हाथ में अपनी रक्षा के लिए एक साधन आ जाता है और उसमें से बलवान की अहिंसा भी निकल सकती है। अगर दुर्बल की अहिंसा फल ला सकती है, तो सच्ची बहादुर की अहिंसा की ताकत का अन्दाज लगाया जा सकता है।"

बा काफी अच्छी हैं। बापू के पास से सीखती हैं, मेरे साथ भी पढ़ती हैं, भाई के साथ भी। इससे उनका मन बहला रहता है।

१६ अक्तूबर '४२

राजाजी के भाषण की रिपोर्ट अखबारों में पढ़ी। मगर वह रिपोर्ट शायद दुरुस्त न भी हो। एक-दो दिन में पता लग जायगा।

बा की खांसी बढ़ी है। बेचारी का एक दर्द बैठता है और दूसरा खड़ा हो जाता है।

सरोजिनी नायडू अभी से फिक्र में हैं कि मीराबहन के जन्म-दिन को क्या-क्या किया जाये। मीराबहन जिस रोज बापू के पास आई थीं, उसे अपना जन्म-दिन मानती हैं। वह है सातवीं नवम्बर। इस वर्ष दिवाली भी उसी रोज पड़ती है। सरोजिनी नायडू कुछ खाने की चीज बनाने को कहती थीं। एक डलिया में साबुन-तेल वगैरा रखकर मीराबहन को देने का विचार है।

आज कलैक्टर और डा० शाह आये। मीराबहन के सिर में दर्द रहता है, यह सुनकर डा० शाह पूछने लगे, "दांत में तो कोई तकलीफ नहीं है?" मगर उनके सिरदर्द का कारण दूसरा ही है। कर्नल शाह हर दर्द का कारण दांतों में ढूंढते हैं।

आज महादेवभाई की समाधि को लीपा था। शाम को नये फूल सजाये। गुलाबी एस्टर का ॐ और सफेद एस्टर का क्रॉस बनाया। बहुत सुन्दर लगते थे। पांव के पास फूल सजा रहे थे। अचानक उनका आकार गुजराती 'जी' बन गया। बापू को बहुत अच्छा लगा। कहने लगे, "महादेव के पांव के पास यह अच्छा लगता है। मेरे कानों में महादेव की 'जी' की ध्वनि गूंजने लगती है।"

१७ अक्तूबर '४२

कल से बा ने मेरे साथ बापू की आरोग्य-सम्बन्धी किताब[1] के सिवा गीता

---

[1] बापू ने जेल में आरोग्य-संबंधी अपनी पुरानी किताब को फिर से लिखना शुरू किया। मुझसे रोज जितना वह गुजराती में लिखें, उसका हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद करने को कह रखा था। बा बापू का लिखा मेरे साथ पढ़ा करती थीं।

पढ़ना भी शुरू किया है। बापू के साथ भी खूब पढ़ती हैं। तबीयत अच्छी नहीं तो भी पढ़ने का शौक खूब रखती हैं। इसका एक उपयोग यह भी है कि बा को सिखाते समय बापू के लिए थोड़ा दिल-बहलाव हो जाता है।

'टाइम्स' ने राजाजी के भाषण पर आज एक अग्रलेख लिखा है। ऐसा अखबार ऐसी चीज़ से फायदा उठाने का मौका भला क्यों छोड़नेवाला था !

: २१ :

बा की पहली सख्त बीमारी

१८ अक्तूबर '४२

आज बा को बुखार है। मलेरिया हो या शायद ब्रान्को निमोनिया। फेफड़ों में पुराने ब्रॉन्काइटिस (खांसी) वगैरा के निशान हैं। नया कुछ नहीं सुनाई देता। मगर इस तरह के ब्रॉन्काइटिसवाले फेफड़ों में नये निशान ढके रहते हैं। नई बीमारी ढूंढनी कठिन हो जाती है। मि० कटेली ने डा० शाह को बुलाने को पूछा। मैंने और बापू ने पहले तो कह दिया कि आवश्यकता नहीं है। मगर बाद में मैंने कहा, "आपको लगे कि उन्हें बुलाना चाहिए, तो भले बुलाइये।" मि० कटेली ने शाह को टेलीफोन किया। रात आठ बजे डा० शाह आये और तबीयत कैसी है, यह पूछकर चले गये। मुझसे कहने लगे, "मुझे लगा कि मुझे देखने आना चाहिए। मैं जानता हूं, मेरे लिए कुछ करने को रहता नहीं, मगर न आता, तो मुझे चिन्ता लगी रहती। इसलिए आ गया।" मैंने कहा, "आप आ गये, यह अच्छा हुआ। बा इतनी कमजोर हैं कि उनके बारे में चिन्ता होती ही है।"

आज दशहरा है। सब कैदियों के लिए सब्जी बनाई। बाकी उन्हें कच्चा सामान दिया। उन्होंने अपना पकाकर खाया।

शाम की प्रार्थना में सरोजिनी नायडू ने कालीदेवी के बारे में अपनी लिखी एक कविता पढ़ी। अच्छी थी। मैंने कई बार कहा है कि कुछ नया लिखिये, महादेवभाई के विषय में अथवा बापू के विषय में, मगर वह नहीं लिखतीं। शायद प्रेरणा नहीं होती होगी।

बा को सुबह १००.२ बुखार था, तो भी बापू से पढ़ा। बाद में खाट पर जा

लेटीं। उनके सिर में बहुत दर्द था। खांसी-जुकाम तो है ही।

दोपहर खाने-पीने में विधि-निषेध की बातें हो रही थीं। मैंने बापू से कहा, "आदमी कोशिश करे, तो धीरे-धीरे काफी चीजें पचा सकता है, आदत पड़ने में थोड़ा समय जाता है सही। मिसाल के तौर पर अब मैं घर जाऊं या घर से आश्रम आऊं, तो खाने के बारे में आदत बदलने में कुछ समय लगता है। दोनों जगह का खाना अलग किस्म का रहता है। मगर कुछ दिन पीछे उस खाने से कुछ तकलीफ नहीं होती।" बापू कहने लगे, "जल्दी से आदत बदल सकना गुण है। ऋतु बदलती है, तो हमें अपने-आपको उसके अनुकूल करना पड़ता है। वह स्वाभाविक अनुकूलता हुई। मगर जिस तरह की तुम बात कर रही हो, वह अस्वाभाविक है। इस तरह नये खाने के अनुकूल होने के लिए ताकत खर्च करना तो शक्ति को फिजूल खोना है। अनुचित भी है। इस तरह करने से आखिर शरीर क्षय होता है और बुद्धि का भी क्षय हो जाता है। शरीर का क्षय तो आखिर होने ही वाला है, मगर मैं मानता हूं कि बुद्धि का क्षय नहीं होना चाहिए। अब देखूंगा कि मेरे साथ आखिर क्या होता है। हो सकता है कि मेरी बुद्धि का अन्त में क्षय हो। अगर ऐसा हुआ, तो कहूंगा कि मुझे उससे बचने के लिए जो कुछ करना चाहिए था, वह मैंने नहीं किया।"

१६ अक्तूबर '४२

बा की रात काफी बेचैनी में गई। डा० शाह सुबह फिर आये। बा सोती थीं। शाम को आने को कह गये। शाम को आये, तो कहने लगे, "आप बा के शरीर को पहचानती हो। दवा वगैरा जो देनी हो, तो देती जाओ। मैं दखल नहीं दूंगा।" मैंने कहा, "ठीक है, मुझे मदद की जरूरत होगी, तो आपको कह दूंगी।" उनकी नम्रता और शराफत आदमी को मुग्ध कर लेती है।

बा को सल्फा दवा की गोलियां देना शुरू किया है। शाम को बुखार ९९ हो गया। आशा है, जल्दी अच्छी हो जायंगी।

आज सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बा प्यारेलाल को बहुत प्यार करती हैं। मैं नहीं समझती कि उनके अपने लड़कों ने भी मां की कभी इस तरह सेवा की होगी, जैसी प्यारेलाल कर रहा है। वह भी उन्हें अपने लड़के की ही तरह प्यार करती हैं। कहना होगा, मुझे भी प्यारेलाल का बहुत सहारा है। वह कुछ खास मेरे लिए करते नहीं हैं, मगर उनमें कुछ ऐसा आकर्षण है, जो खींच लेता है।"

शाम को भाई से कहने लगीं, "मैंने आज तुम्हारी बहुत तारीफ कर डाली है।

अपनी बहन से पूछो।'' भाई कहने लगे, ''अगर मेरी निन्दा की होती, तो पूछने में अर्थ भी रहता। तारीफ के बारे में जाकर क्या पूछूं?''

बापू का मौन शाम को सवा सात बजे खुला। बा की तबीयत इस वक्त अच्छी लगती है।

२० अक्तूबर '४२

आज बा की तबीयत काफी अच्छी है, मगर रात नींद कम आई। साढ़े तीन बजे सवेरे भाई ने मुझे जगाया, ''बा घबराती हैं। नाड़ी बहुत तेज है, गिनी नहीं जाती।'' मैं घबरा उठी। देखा तो नाड़ी अच्छी थी, बहुत तेज भी नहीं थी, १०० के अन्दर थी। बा कहने लगीं, ''मुझे नींद की गोली दो।'' नींद की गोली तो थी ही नहीं, मगर सोडा बाई कार्ब की गोली थी। एक दिन इसी तरह बा को नींद नहीं आती थी तब नींद के नाम से मैंने वही गोली दे दी थी। विचार के असर से ही उस रोज वह सो गई थीं। आज भी मैंने वही गोली दी। शहद और गरम पानी पीने को दिया। बापू ने प्रार्थना बा के कमरे में करवाई। प्रार्थना के बाद बापू को सुलाकर मैं आई कि भाई को छुट्टी दिला सकूं। मगर देखा तो बा और भाई दोनों छोटे बेटे और मां की तरह साथ पड़े सो रहे थे। छः बजे से पहले बा जाग गई। घूमने के बाद उन्हें स्पंज किया। पानी पिलाया। दवाई दी। पीछे मैंने उन्हें धीमे-धीमे भजन सुनाना शुरू किया। सिर पर धीमे-धीमे हाथ भी फिराती जाती थी। बा सो गईं। छोटे बच्चे को लोरी देकर सुलाने-जैसी बात थी। मुझे याद आया, मेरी टाइफाइड की बीमारी में कई बार माताजी ने मुझे इसी तरह सुलाया था। साथ ही ध्यान आया कि मैंने अपनी मां की कभी कुछ सेवा नहीं की।

घूमते समय बापू बा की बीमारी की बात कर रहे थे कि कैसे वह एक क्षण में जा सकती है।

२१ अक्तूबर '४२

रात बा को फिर नींद नहीं आती थी। ११-३० पर मैंने नींद की एक गोली दी। बस फिर तो रात भर सोईं और दिन-भर भी। खाने के लिए भी जगाना पड़ता था।

आज मेरा व्याकरण पूरा करने का आखिरी दिन था। कल बापू परीक्षा लेंगे। जेल की नीरसता में ऐसी चीजों से ही वह दिल बहलाते हैं।

आज भण्डारी और डाक्टर शाह आये। बा का हाल पूछकर चले गये।

२२ अक्तूबर '४२

आज बापू घूमते और कातते समय मुझसे व्याकरण के प्रश्न पूछते रहे। बाद में कहने लगे, "आधा व्याकरण पढ़ने के लिए रोज रखना।" व्याकरण की दूसरी किताबें भी मंगवा रहे हैं कि व्याकरण पर पूरा काबू पाना अच्छा है, जरूरी है। बापू को व्याकरण का बहुत शौक है।

दिन में आज भी गरमी थी। रात को ठंड हो जाती है। चांदनी रातें हैं। रात को सोते हैं, तो फव्वारे के पानी का नाद सुनाई देता है। आजादी में ऐसी जगह पर थोड़े दिन आराम मिले, तो सबको कितना अच्छा लगे! मगर आज तो यह सब काटता है।

: २२ :

सच्ची वैज्ञानिक के प्रति भावना

२३ अक्तूबर '४२

आज बा बहुत उदास हैं।

बापू मैडम क्यूरी की किताब पढ़ रहे हैं। कह रहे थे, "वह तो सच्ची तपस्विनी थी। मेरे मन में होता है कि पेरिस जाकर उसका घर देख आऊं। हमारे किसी वैज्ञानिक ने इतना दुख नहीं भोगा। नतीजा तो मैं यह निकालता हूं कि हम पर अंग्रेजों की मेहरबानी होने के कारण हमने अंग्रेजों के ढंग से ही काम करना सीखा। शोध-विभाग इत्यादि के सफेद हाथी खड़े कर लिये। इतना पैसा खर्च होता है। इतनी बड़ी प्रयोगशालाएं टाटा ने खड़ी कीं, सरकार ने भी कीं, पर काम वहां पर कितना होता है?"

शाम को बापू कहने लगे, "व्याकरण सीखनेवाला किसी चीज का सार समझकर सन्तोष नहीं मानता।" बात कवि वर्ड्स्वर्थ की 'कर्तव्य' (Ode to Duty) नाम की कविता के अर्थ की चर्चा में से निकली थी। कहने लगे, "व्याकरण जाननेवाला एक-एक शब्द के अर्थ को गहराई से समझता है। बारीकी से हर एक पहलू समझने की आदत डालता है। ऐसा करते-करते एक-एक शब्द के विचार में घण्टों बीत सकते हैं।"

बा की बापू को काफी चिंता है, मगर करें क्या ? सेहत के कारण बा छूट तो आज सकती हैं, मगर छूटकर वह और घबरायंगी । बापू के बिना उन्हें बाहर जरा भी अच्छा नहीं लगेगा । शायद बापू का वियोग सहन ही न कर सकें और चल भी दें। जिस रोज बापू पकड़े गये थे, उसी रोज बा को दस्त आने लगे थे । दो दिन बाद यहां पहुंचते ही अपने-आप अच्छे हो गये । दो-एक रोज बा और यहां न आतीं, तो शायद खत्म हो गई होतीं ।

२४ अक्तूबर '४२

कल रात बापू बहुत कम सो पाये । बा उदास थीं । बापू उनकी चिन्ता से सो नहीं सके । आज अपने पलंग का रुख बदल दिया, ताकि सारा समय वह बा के पलंग पर नजर रख सकें ।

मैडम क्यूरी की किताब से तो बस बापू चिपक गये हैं । उसकी एक लड़की दिल्ली में बापू से मिलने आई थी—वह थी ईव क्यूरी, इस किताब की लेखिका । आज बापू बहुत अफसोस से कह रहे थे, "मुझे दुख है कि मैंने उस लड़की के साथ अच्छी तरह जान-पहचान नहीं कर ली ।" शाम को मुझसे बोले, "तुझे इस किताब का हिन्दी में सुन्दर अनुवाद करना है ।" पीछे भाषा में गहरे उतरने का महत्त्व और उसकी आवश्यकता बताते रहे ।

सुबह गीता-पाठ में मुझे कई बार नींद आ जाती है । आज बापू ने दुखित होकर कहा, "मैं सोचता हूं कि गीता को छोड़ ही दिया जाये ।" मैंने मन में निश्चय किया और बापू से कहा कि अब ऐसा कहने का आपको कभी अवसर नहीं दूंगी ।

सरोजिनी नायडू आज कह रही थीं, "प्यारेलाल मुझे मेरे लड़के बाबा की याद दिलाता है और तुम लीलामणि की ।" मैंने कहा, "यह तो अच्छी बात है। आपको अपने घर का-सा वातावरण मिल गया ।" वह बेचारी काफी हदतक हम सबकी मां बनकर बैठी हैं। मां की तरह हम सबके खाने-पीने की देखभाल रखती हैं।

मीराबहन के दाद हो गया है। कहां से उसे ले आई हैं, इसका पता नहीं चलता ।

भाई ने बताया कि कल बापू बा के बारे में बहुत चिन्तित थे । उनसे कहने लगे, "बा की मुझे बहुत चिन्ता रहती है । महादेव के जाने के बाद मुझे कबूल करना पड़ता है कि मेरा मन कमजोर पड़ गया है । कई बार चिन्ता होने लगती है कि कहीं बा को भी न खोना पड़े । मन में तैयारी तो मैंने इसकी भी कर रखी है; लेकिन जहांतक मुझसे बन सकेगा, मैं अब और किसीको नहीं खोना चाहता ।"

बा अखबार में एमरी, क्रिप्स वगैरा के भाषण देखती हैं, तो बहुत चिढ़ जाती हैं। हमारे लोगों पर सरकारी सख्तियों की खबर पढ़ती हैं, तो दुखी होती हैं। आज कहने लगीं, "यह सरकार बहुत घमंड कर रही है। सारी हालत आज तो डांवा-डोल है। कब और कैसे इसका अंत होगा ?"

फिर कहने लगीं, "लेकिन पाप का घड़ा भरने पर ही फूटना है। इसलिए जितना झूठ ये बोलना चाहें, बोलने दो। आखिर भगवान तो है न !"

इन विचारों ने और इन सरकारी झूठे आरोपों के प्रति गुस्से ने उनके मन में इतना घर कर लिया है कि कहीं भी मौका हो, तो वह इस विषय पर बात करने लगती हैं। एक रोज डा० शाह से कहने लगीं, "ये लोग इतना झूठ क्यों बोलते हैं ? उन्हें मना कीजिये न ?" बेचारे डा० शाह क्या कहते ! बोले, "मां-मां, आपको गुस्सा नहीं करना चाहिए। वह आपकी तबीयत के लिए अच्छा नहीं है। झूठ बोलते हैं, तो बोलने दो। जब कोई झूठ ही बोलने पर तुला हो, तो क्या एक और क्या बीस ! एक ही बात है।"

४ नवम्बर '४२

आज दस दिन के बाद डायरी उठाती हूं। मुझे शक हो गया था कि मुझे भी दाद हो गया है। बा की मालिश वगैरा का काम छोड़कर सारा समय 'मैडम क्यूरी' को पढ़ने में लगाती हूं। बड़ी उत्साहवर्धक किताब है। बापू ने पूरी पढ़ी है। मुझसे फिर कह रहे थे कि तुम्हें इसका अनुवाद हिन्दी में करना होगा। क्यूरी-दम्पती ने इतने कम साधनों के साथ इतनी बड़ी शोध की, इसकी तुलना हमारे यहां आज जो शोध का काम होता है उसके साथ करते हुए बापू कहने लगे, "हमने तो अंग्रेजों से यह सब काम सीखा है न, सो उनकी तरह पैसा उड़ाना भी सीखा। उड़ाने के लिए पैसा हो या न हो, शोध हम क्या कर पाये हैं ? मैं एक भी शोधक हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं जानता, जिसने क्यूरियों की तरह तंगदस्ती भोगी हो। पश्चिम में तो ऐसे असंख्य लोग पड़े हैं। तभी तो वे विज्ञान को इतना दे सके हैं।"

मैंने सोचा था कि दो दिन की डायरी इकट्ठी लिख डालूंगी, मगर तीसरे दिन बुखार आ गया और ऐसे जोर का कि उसने मुझे निकम्मा बना दिया।

भाई ने हफ्ता-भर दिन-रात काम किया। बापू का सारा काम और मेरी बीमारी से कुछ थोड़ा-बहुत बा का काम भी उनके सिर पर आ पड़ा। मेरी देख-भाल तथा दूसरे अनेक कामों के कारण एक मिनट की भी उन्हें फुरसत नहीं मिलती

थी। जब यह निश्चय हो गया कि मुझे मलेरिया है, टायफाइड नहीं, तब सबकी चिन्ता दूर हुई।

बुखार में ही डा० लाजरस का खत आया। मैंने अपनी अगस्त और आधे सितम्बर की तनखा मंगवाई थी। कहती है, "तुम्हारा इस्तीफा हमने सात अगस्त से स्वीकार कर लिया है।" मगर मैंने इस्तीफा सात अगस्त से दिया ही नहीं था। परसों उसके पत्र का उत्तर लिखकर बापू को दिया था। आज हो सका, तो उसे भेज दूंगी। तीन-चार सौ रुपये हजम कर गई है। कॉलेज कैसे मेरे हक की छुट्टी मार सकता है?

मेरी बीमारी में सरोजिनी नायडू बापू की काफी सेवा करने लगी हैं। भाई कह रहे थे, "ऐसा लगता है कि बापू की सेवा की छूत उन्हें भी लग गई है!" उनमें सेवा-भाव तो काफी है। हम लोग मेज पर खाने को बैठते हैं, तो जूठे बर्तन तक उठाने लगती हैं। कोई चीज चाहिए, तो सबसे पहले उठकर लाने को चल देती हैं। हम लोग संकोच में पड़ जाते हैं। हर एक की आवश्यकता को, इच्छा को, वह पहले से ताड़कर पूरा करने का प्रयत्न करती हैं। मि० कटेली की सेवा तो इस तरह कर रही हैं कि कोई मां क्या करेगी! अपराधी बंदियों, सिपाहियों, सबको खिलाती रहती हैं। एक कैदी को बुखार आ गया, तो मेरे पास आई और बोलीं, "मुझे इसके लिए कोई ताकत की दवा लिख दो।" एक सिपाही के घर लड़का हुआ। उसके बच्चे के कुरते के लिए उन्होंने रेशमी कपड़ा दे दिया। ये सब चीजें उनके स्वभाव का एक अंग हैं।

कल रात मीराबहन और सरोजिनी नायडू मेरे कमरे में आकर ऊंची आवाज से कविता पढ़ रही थीं। मीराबहन राबर्ट बर्न्स की कविताओं में से कुछ गाकर भी सुना रही थीं। मीराबहन का कविता पढ़ने का ढंग बहुत अच्छा और प्रभावकारी है।

: २३ :
मीराबहन की सालगिरह

५ नवम्बर '४२

आज बापू ने लार्ड लिनलिथगो को लार्ड हेलीफेक्स के लड़के की मृत्यु पर शोक-समवेदना का पत्र भेजने के लिए लिखा। बापू अंग्रेजों की बहादुरी की स्तुति कर रहे थे, "कोई उमराव नहीं है, जिसके अपने लड़के युद्ध में न गये हों, तभी तो जनता में भी त्याग-वृत्ति पैदा हो सकती है, उत्साह आ सकता है।" मैंने कहा, "मगर वहां तो जबरन सबको फौज में जाना पड़ता है न! वे अपने लड़कों को घर पर रख कैसे सकते हैं?" बापू कहने लगे, "वह अलग बात है, मगर वे रखना चाहें, तो कई तरीके निकाले जा सकते हैं।"

डा० शाह आज फिर कुनैन का एक इन्जेक्शन मुझे दे गये। उन्हें खुद मलेरिया आ रहा है। कहते थे, "मुझे भी आज इन्जेक्शन लेना चाहिए था, मगर औरतें ज्यादा बहादुर होती हैं। मैं इन्जेक्शन लेने का इरादा नहीं कर पाया।" फिर अहमदाबाद में जब वह जेल सुपरिन्टेण्डेण्ट थे, तब के अपने अनुभव सुनाते रहे और बताते रहे कि सरकारी दफ्तरों में कितनी ढील से काम लिया जाता है।

इतने दिन के बाद आज शाम को बापू मुझे महादेवभाई के स्थान पर ले गये। अच्छा लगा। वहां पर अब छोटे-छोटे शंखों का ॐ बनाया है। फूलों के ॐ जितना सुन्दर वह नहीं लगता, मगर फूल तो सूख जाते हैं, रोज ताजे नहीं मिलते। मिलते हैं, तो शंखों पर लगा देते हैं।

शाम को बापू के एक पत्र की नकल नहीं मिल रही थी। बापू भी चिन्ता में थे। इतने में वह मुझे मिल गई। बापू को बताया, तो हँसी में कहने लगे, "यह शुभ चिह्न है। अभी जब मैं उसके पाने की आशा छोड़ने लगा था, तो सोचा था कि याद से उसे फिर लिख डालूंगा। इतने में तू आ गई। देखने में चाहे आज निराशाजनक परिस्थिति हो, तो भी छः महीने में हमारा बेड़ा पार होनेवाला है।"

रात को मीराबहन भाई के साथ चर्चा कर रही थीं। कहने लगीं, "साम्यवाद और गांधीवाद में एक समानता है। दोनों गरीब-से-गरीब की सेवा करना चाहते हैं। दोनों की समता की बातें लोगों के सामने रखी जायें, तो वे बहुत प्रभावकारी हों।" भाई ने कहा, "ठीक है, पर यह समता साम्यवादियों के लिए बहुत महत्व

नहीं रखती। वैसे तो साम्यवाद की सब या बहुत-सी अच्छी चीजें बापू के कार्यक्रम में आ जाती हैं; परन्तु भेद साधनों में है। साम्यवाद आज एक खास पद्धति और जीवन-मीमांसा का नाम है।" मीराबहन कहने लगीं, "हां, मगर बापू पूंजीपतियों के पीछे काफी हाथ धोकर नहीं पड़े। पूंजीवाद को मिटना होगा। ट्रस्टीशिप का सिद्धांत अमली रूप में चलनेवाला नहीं।" भाई समझाते रहे कि सम्पत्ति का अर्थ क्या है, 'पूंजीवाद को मिट जाना होगा'—इसका अर्थ क्या है और कहने लगे कि बापू के साधन अलग हैं। सत्य और अहिंसा के जरिये बापू को काम करना है, इसलिए उनका काम करने का ढंग भी अलग है और होना ही चाहिए। दूसरा रास्ता ही नहीं है।

मीराबहन साम्यवाद का सिद्धांत समझने के पीछे पड़ी हैं। मार्क्सवाद का खूब अभ्यास करती हैं।

दो रोज से रात को खासी सरदी पड़ने लगी है, मगर मौसम धोखेबाज है। शाम को कई बार खासी गरमी लगने लगती है। अब तो दिवाली आनेवाली है। दिवाली तो हमारे यहां सरदी की ऋतु का त्योहार ही माना जाता है। दिवाली के नाम से घर की स्मृति ताजी हो जाती है और कॉलिज की भी। बेचारी माताजी को हम लोगों की उस दिन बहुत याद आयेगी।

६ नवम्बर '४२

परसों दिवाली है। कल मीराबहन बापू के पास आईं। दिवाली के दिन उनकी अठारहवीं सालगिरह है। सरोजिनी नायडू ने विचार किया था कि मीराबहन का जन्म-दिन और दिवाली का समारोह साथ कर दिया जाय। मीराबहन के लिए उन्होंने आन्ध्र की खादी की एक बारीक साड़ी निकाली और उसे मीराबहन को ओढ़नी बनाने के लिए भेंट करने का विचार किया। बिन्दी और इलायची मंगाई और अपनी 'बांसुरी बजैया कृष्ण' पर लिखी हुई एक कविता, इन सबका अपनी तरफ से एक बण्डल बनाया। मैंने बाजार से सीता और राम की एक-एक मूर्त्ति मंगाई और अगरबत्ती का एक पैकिट। बादाम वगैरा डालकर टॉफी बनाई और उसका एक पैकिट बनाया—यह सब मेरी और भाई की भेंट थी। मि० कटेली ने मीराबहन के लिए इकतारा बनवाया, फिर कपड़े धोने के साबुन, स्नान करने के साबुन, तेल, दंतमंजन वगैरा का एक बण्डल बनाया। भाई ने एक खत टाइप किया। भारत सरकार के गृह-विभाग ने मीराबहन को लिखा था कि आपके नाम से एक पार्सल

आया है। उस पर लिखा था, "देवत्व के पश्चात दूसरा दर्जा स्वच्छता का ही है।[1] वह हम भेजते हैं।" यह सब रात को हमने छिपाकर रख दिया। मीराबहन को जरा भी शंका न हुई कि हम लोग कुछ कर रहे हैं।

बा को कल दोपहर बापू की राह देखते-देखते बहुत भूख लग आई थी। बापू आधा घंटा देरी से खाने को पहुंचे। बा उनकी बाट तो जोहती रहीं, मगर उनके देर से आने के लिए बहुत नाराज हुईं। बापू ने कारण बताने की कोशिश की, पर बा माननेवाली थोड़े ही थीं!

आज सुबह मैं करीब आधा घंटा घूमी। अब शरीर में शक्ति आ गई है। इससे थकान नहीं हुई। रघुनाथ जमादार को आज फिर बुखार आ गया। बापू कहने लगे, "कुनीन के इन्जेक्शन के बाद भी बुखार आता है, तो इन्जेक्शन किस काम के? वह एक बार इन्जेक्शन ले चुका है।" मैंने बताया कि जहां मलेरिया के मच्छर भरे पड़े हैं, वहां दुबारा मच्छर के काटने से दस दिन में नया मलेरिया आ सकता है। कुनीन हमेशा तो खून में बैठी नहीं रहती। रोग से लड़ने की हम अपनी ताकत बढ़ालें, जिससे मच्छर के काटने से भी बुखार न आये, तो दूसरी बात है। लेकिन इससे बापू की शंका मिटी नहीं।

महादेवभाई की समाधि पर दीमक इतनी बढ़ गई थी कि पार न था। गोबर की लिपाई बन्द करने से सब दीमक चली गई। इस बार मिट्टी में थोड़ा चूना डालकर लीपा था। लिपाई के बाद समाधि बड़ी सुन्दर दिखाई देती है। ऊंची सफेद शंखों की कतार के साथ जमीन भी सफेद हो गई है।

७ नवम्बर '४२

आज सुबह नाश्ते के समय सरोजिनी नायडू ने मीराबहन से कहा, "तुम्हारे लिए एक चिट्ठी और पार्सल आया है। दूध पीकर जरा खोलो तो। कैसे मौके पर आया है!" नाश्ते के बाद मीराबहन ने पार्सल खोला। पहले तो वह मान गई कि पत्र सरकारी लगता है, मगर बाद में समझ गई। बोली, "हां, कल रात प्यारेलाल टाइप कर रहा था।" पार्सल खुल रहे थे, तो बापू भी आ पहुंचे। घूमने जाने के लिए उठे थे। सब हँस रहे थे। इतने में मीराबहन का हाथ लगा और इकतारा गिर गया। मैंने जल्दी से पीछे से रघुनाथ को दे दिया कि ठीक करा लाओ। कहीं मीरा-

---

[1] "Cleanliness is next to Godliness."

बहन फूटा देखें, तो अपशकुन न समझने लगें! शाम को रघुनाथ नया इकतारा ले आया। मीराबहन बहुत खुश थीं।

दोपहर को कैदियों को चाय तथा कुछ खाने-पीने की चीजें—केले आदि दी गईं। बापू आकर उनसे पूछने लगे, "जानते हो, यह क्यों मिल रहा है? मीरा-बहन यहां आकर हम लोगों-जैसी बन गई है। उस दिन को आज सत्रह साल हुए हैं। दिवाली भी है। सरोजिनी नायडू ने सोचा कि तुम्हें यह सब दिया जाये।" एक कैदी आज पहले ही दिन आया था। बापू को उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह उठकर बापू के पांव छूने को आया। बस फिर तो तांता लग गया। लोग उठ-उठकर पांव छूने के लिए आने लगे।

बाद में सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "बापू को इन गरीब कैदियों को पार्टी देना अच्छा लगता है। उन्हें राजाओं की पार्टियों में रस नहीं आता, मगर इन लोगों की पार्टियों में आता है। हम इन लोगों का खयाल रखते हैं, इससे बापू को खुशी होती है।"

आज सुबह घूमते समय बापू गीता के बारहवें अध्याय की चर्चा कर रहे थे:

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात् ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागः त्यागाच्छांतिरनंतरम्॥

कहने लगे, "अभ्यास का अर्थ हठयोग, ज्ञान का श्रवणमननादि और ध्यान का अर्थ मैं करता हूं उपासना। बा जैसी स्त्री, जिससे पूछो कि तीन सौ से पहले क्या, तो दो सौ नहीं बता सकेगी, मगर हवेली (मंदिर) में जाकर उसे दिया जलाना हो या झाड़ू लगाना हो, तो उस काम को वह बहुत प्रेम से करेगी। यह भक्ति हुई। ऐसे लोगों के लिए है ध्यान। और चौथा तो कर्म-फल है ही। श्रेय का अर्थ मैं करता हूं आसान। ज्ञान में ध्यान आसान है और सबसे आसान है कर्मफल-त्याग।[1] ध्यान का यह अर्थ मुझे विनोबा ने बताया था। जब मैंने 'अनासक्ति योग' लिखा, तो उसे

[1] इस अर्थ में कुछ कमी रह जाती है। 'ध्यानात्कर्मफलत्यागः' का अर्थ यहां जैसा श्री केलवलकर ने बताया है, इतना ही है कि उपासना से कर्म-फल-त्याग सहज ही प्राप्त होता है, क्योंकि उपासक अपना सब कुछ देवार्पण करता है। इसीमें वह परम आनन्द का अनुभव करता है। और कोई फल वह चाहता ही नहीं। इससे उसे अनंत शांति मिलती है। 'विशिष्यते' का अनुसंधान ऊपर ही खतम हो जाता है। भाई ने बापू को यह बताया, तो उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया।

विनोबा को पढ़ने को दिया था। उसके कई स्थलों पर हमारी चर्चा हुई थी। उसमें यह श्लोक चर्चा का विषय था।"

८ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई की समाधि पर शंखों का नया ॐ बनाया। बापू ने गीली मिट्टी तैयार कराई। मिट्टी का ॐ बनाकर उसमें शंख लगाने थे। बापू सुबह ठीक साढ़े सात बजे नीचे जाते हैं, आज सवा सात पर निकले। मीराबहन को बुलाया। वह आई और उन्होंने मिट्टी नापास की। कहने लगीं, "बहुत ढीली है। कल बनायेंगे।" मगर बापू आज ही बनाना चाहते थे। आखिर ॐ बनाया और बड़ा सुन्दर बन गया।

जब बनाकर निकले, तो आठ बज गये थे। पौन घंटा लगा। बापू बहुत खुश थे—"आज के शुभ दिन मैं नाकामयाब होकर नहीं जाना चाहता था।" घूमते समय मीराबहन मिलीं। बापू ने उन्हें बताया कि ॐ सुन्दर बना है। फिर उन्हें तार में से दूर से दिखाने भी ले गये। मीराबहन कहने लगीं, "हां बापू, बन तो सकता था, मगर कच्चा बनता। इसलिए मैं बनाना नहीं चाहती थी।" बापू कहने लगे, "मुझे उसकी परवा नहीं। भले एक दिन ही टिके, मगर हम बनाकर देखें तो सही। अनुभव करना अच्छा है।"

शाम को बा ने मुझसे कहा कि बापू के जन्मदिन पर जैसी रांगोली दरवाजे पर की थी, वैसी करो और ॐ बनाओ। मैंने चूने का ॐ बना दिया, मगर बा को पसन्द नहीं आया। सिपाहियों ने तुलसी के पास लाल रांगोली के चित्र बनाये थे। वे बा को अच्छे लगे। अपने दरवाजे के सामने लाल चित्र उन्हें पसंद आया।

शाम को प्रार्थना के बाद महादेवभाई की समाधि पर मैं, भाई और सरोजिनी नायडू गये। शंखों के बीच-बीच में अगरबत्तियों की कतार लगाई। अंधेरी रात में वह इतनी सुन्दर लग रही थी कि क्या कहना! सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "ओहो, यह तो एक खूबसूरत-सी कविता दीख पड़ती है।" आकर हमने बापू को बताया। कहा, "आपको दिखाने के लिए हमें एक दिन फिर ऐसी ही बत्तियां लगाकर जलानी होंगी।"

मि० कटेली बाहर गये हुए थे। कौन जाने कितने दिनों के बाद आज निकले होंगे। लौटे, तो सरोजिनी नायडू ने उनसे भी कहा, "आज आपने एक सुन्दर दृश्य खो दिया है।"

: २४ :

एक और उत्सव

९ नवम्बर '४२

आज बापू की और हमारी गिरफ्तारी को पूरे तीन महीने हो गये हैं। बापू को विश्वास है कि हमें छः महीने से अधिक यहां नहीं रहना होगा।

आज गुजरातियों का नया वर्ष शुरू होता है।

भण्डारी और शाह साढ़े दस बजे आये। बापू ने उन्हें मीराबहन के लिए बनाई गई टाफ़ियों में से कुछ दीं।

सरोजिनी नायडू ने बा को एक साड़ी भेंट की। मेरे लिए भी एक साड़ी और ब्लाउज़ निकालकर लाईं, मगर मैंने लेने से इन्कार कर दिया। उन्होंने बहुत आग्रह किया, पर मुझे इस तरह भेंट लेना उचित नहीं मालूम पड़ा, खासकर इस परिस्थिति और इस वातावरण में। बापू ने मेरा समर्थन किया।

कल से कातना शुरू किया है। बापू कह रहे थे, "अब तू इतनी अच्छी हो गई है कि कातना शुरू करना चाहिए।" रात को आजकल बापू के सोने के समय ही सो जाती हूं, यानी नौ सवा नौ बजे और सुबह छः बजे उठती हूं। बीच में प्रार्थना के लिए एक घंटा उठ जाती हूं। उसके बाद सोना नहीं चाहिए, मगर बापू आग्रह करने लगते हैं और मुझे भी बुखार से डर लगता है। इसलिए बहुत कम काम करती हूं। काफी समय आराम में जाता है।

१० नवम्बर '४२

सुबह घूमते समय बापू कहने लगे, "महादेव को मेरा वारिस होना था; पर मुझे उसका वारिस होना पड़ा है। मीराबहन को महादेवभाई की समाधि पर मेरा जाना खटकता है, मगर मेरे लिए वह बिल्कुल सहज बन गया है। मैं न जाऊं, तो बेचैन हो जाऊं। वहां जाकर मैं कुछ करना नहीं चाहता, समय भी नहीं देना चाहता, मगर हो आता हूं, इतना ही मेरे लिए बस है। अगर मैं जिन्दा रहा, तो यह जमीन आगा खां से मांग लूंगा। वह न दें, यह संभव हो सकता है। मगर किसी रोज तो हिन्दुस्तान आजाद होगा। तब यह यात्रा का स्थान बनेगा। मैं वहां जाता हूं, तो महादेव के गुणों का स्मरण करने के लिए, उन्हें ग्रहण करने के लिए। मैं उसकी स्मृति को खोना नहीं चाहता। और जिस तरह से वह यहां मरा, उससे उसकी

स्त्री और लड़के के प्रति मेरी वफ़ादारी भी मुझे बताती है कि मुझे वहां नियमित रूप से जाना चाहिए। हो सकता है कि मेरी जिन्दगी में यह जगह मुझे न मिल सके और इस जगह को यात्रा-स्थल बनते मैं न देख सकूं, मगर किसी-न-किसी दिन वह जरूर बनेगा, इतना मैं जानता हूं। आज तो मैं सब काम समझकर करता हूं। बाहर जाऊंगा, तब भी उसीका काम करूंगा।''

मीराबहन ने आज कहा कि वह बा की मालिश नहीं कर सकती हैं। उनके पास सुबह समय नहीं रहता। कल से मैं करूंगी।

११ नवम्बर '४२

आज से मैंने बा की मालिश शुरू की। मीराबहन की तबीयत आज ऐसी है कि वह कोई भार उठा ही नहीं सकतीं।

शाम को घूमते समय चर्चिल के आज के भाषण की बात आई। मैंने कहा, "थोड़ी-सी विजय हो गई, तो ऐसा बोलने लगे हैं, आगे क्या होगा ?" बापू कहने लगे, "अंग्रेज लड़ाई जीत लें, पीछे हमारी लड़ाई और तीव्र बनेगी। आज तो अखबारवाले भी कुछ खास नहीं कह सकते। बाद में वे काफी काम कर सकेंगे। अंग्रेज जितने आज बिगड़े हैं, उससे ज्यादा और क्या बिगड़ेंगे ? मगर पिछली लड़ाई में इनकी जीत हुई थी। उसके बाद रौलट ऐक्ट आया था। अब भी ऐसा हो सकता है। मगर मैं मानता हूं, ऐसा कुछ वे करेंगे नहीं। करेंगे तो उनकी बड़ी बदनामी होगी। वे बदनामी की भी परवा न करें, ऐसा हो सकता है, मगर हम ही चिन्ता क्यों करें ? हम तो आजाद हो गये। उस रात उन दो लड़कों ने महादेव से कहा था न कि हम आजाद हो गये ? वह ठीक था। मैं उसे मानता हूं। जितना ज्यादा ये लोग जुल्म करेंगे, जितना बिगड़ेंगे, उतनी ही जल्दी हमारी आजादी आयेगी। मैं नहीं चाहता कि इस कारण वे पशु बनें। मगर मेरे कहने या न कहने से होता क्या है !"

आज अखबार में जयप्रकाश के जेल में से भाग जाने की खबर थी।

१२ नवम्बर '४२

बापू ने जब अहिंसा इत्यादि एकादश व्रत आश्रम में प्रचलित कर दिये थे, तब के अपने अनुभव और दूसरों द्वारा उनकी टीका की बातें आज बता रहे थे। फिर उनके प्रयोगों की बात करने लगे—आत्मवंचना बहुत आसान चीज है। आदमी का माप तो छोटी-छोटी चीजों में से ही निकल आता है।

१३ नवम्बर '४२

सरोजिनी नायडू की लड़की पद्मजा का मंगल को जन्म-दिन है। बापू कहने लगे, "हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए।" आखिर निश्चय हुआ कि खादी के रूमाल बनाये जायें। बापू को यहां एक बहन ने दो जोड़े धोतियों के भेजे थे। बापू ने धोतियों में से थोड़े-थोड़े टुकड़े निकाल लिये थे। ओढ़ने का टुकड़ा वैसा-का-वैसा रखा था। धोती में से निकला हुआ एक टुकड़ा काम आया। उसमें से पांच रूमाल बनाये। उस पर कढ़ाई करने वगैरा का काम मेरे सिर आया। दो दिन उसमें लगे। कल विचार हुआ कि कुछ चाकलेट बनाकर उनके साथ रूमाल भेजे जायें, तो अच्छा रहेगा।

वाइसराय ने राजाजी को बापू से मिलने की इजाजत नहीं दी, इस बारे में बातें होती रहीं।

१४ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई को गये पूरे बारह हफ्ते हो गये। जो लोग जीवन में सबको सुख देते हैं, वे मरते समय भी किसीको दुख नहीं देते और जल्दी ही इस जग से चल बसते हैं। जिन्हें अपना किया भुगतना है, वे अपने लिए भाररूप होकर दूसरों के लिए भी भाररूप हो जाते हैं और लम्बे अरसे तक पृथ्वी का बोझ बढ़ाया करते हैं। ईश्वर का यह कैसा विधान है!

आज चाकलेट बनाये और पांचों रूमाल पूरे किये।

बापू ने वाइसराय को पत्र लिखा। वह उसे आज ही भेजना चाहते थे, मगर समय पर तैयार न हो सका। अच्छा ही हुआ। अब इसमें और सुधार हो सकेंगे। रात को वह पत्र बापू ने भाई को दिया और उसके विचार तथा भाषा-सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करने को कहा।

शाम को घूमते समय जनरल स्मट्स की बातें चलीं। भाई कहने लगे कि यह सत्याग्रह की खूबी है न कि आठ वर्ष की सख्त लड़ाई के बाद इस तरह मिठास और सुगंधि रहे। बापू कहने लगे, "वह तो है ही। आठ वर्ष में स्मट्स को मेरी ओर से कोई कटु अनुभव हुआ ही नहीं। उसके पास में जब भी जाता था, हँसाकर आता था।" भाई डा० राधाकृष्णन्‌वाली पुस्तक में बापू पर स्मट्सवाले लेख की बात करने लगे। किताब में लिखना तो आसान है, मगर गोलमेज कान्फ्रेंस के अवसर पर भी उसने हिम्मत से अच्छा वक्तव्य निकाला था और आज फिर ऐसा ही किया है।

आज वह बापू के परम मित्रों में से एक है। फिर लार्ड अर्विन की बात आई। बापू कहने लगे, "अर्विन ने खूब सख्ती करके अन्त में थककर कहा था, 'क्या मैं सारे हिन्दुस्तान को कब्र बना दूं ?' आखिर उसने समझौता कर लेना ही उचित समझा। वेजवुड बेन ने भी तार द्वारा समझौता कर लेने का आग्रह किया। सो वह हुआ। सत्याग्रह में आखिरी शक्ति भगवान की रहती है। हम क्या जानते हैं कि इस समय उसने क्या ठानी है ?"

रात को महादेवभाई की समाधि का नक्शा बनाने की बात बापू ने कही। बोले, "अगर हममें से कोई भी जिन्दा बाहर न जाये, तो यह नक्शा हमारे सामान में महादेव की पत्नी और लड़के को मिले।"

१५ नवम्बर '४२

आज महादेवभाई को गये पूरे तीन महीने हो गये। हम यहां आये थे तब कल्पना भी नहीं की थी कि यहां महीने गुजारने पड़ेंगे। वाइसराय को १४ अगस्त-वाला पत्र भेजकर महादेवभाई बहुत खुश थे। उन्होंने कहा था, "अब बापू इस पत्र के उत्तर की राह तो देखेंगे ही। उसमें दस-पन्द्रह दिन लग जायेंगे और पन्द्रह दिन में तो बहुत-कुछ हो सकता है।" उनके सिर पर एक ही विचार भूत के समान सवार था—कौन जाने बापू कब उपवास की बात पर आ जायें ?

बापू कल कह रहे थे, "मैं नहीं चाहता कि मैं इस जेल में मरूं, मगर ईश्वर को क्या स्वीकार है, यह कौन जानता है ?"

भाई रात को बारह बजे तक वाइसरायवाले पत्र पर लगे रहे। सुबह बापू ने उसे देखा। बाद में वाइसराय को जो पहला खत लिखा था, उसकी और भारत सरकार के गृह-विभाग के मंत्री को भेजे गये पत्र की नकलें मांगीं। उन्हें मालिश में साथ ले गये। खाना खाते समय कहने लगे, "वाइसराय को पत्र नहीं जायगा।" कल सरोजिनी नायडू ने कहा था, "बापू को पत्र नहीं लिखना चाहिए। बापू का पहला पत्र सम्पूर्ण था। अब बापू क्यों बार-बार लिखकर इन लोगों को मुंह लगायें ? बापू इतने महान हैं कि उन्हें इन लोगों को बार-बार नहीं लिखना चाहिए। उन्हें चुपचाप बैठे रहना चाहिए। आखिर अंग्रेज मजबूर होकर बापू के पास आयेंगे।" उस समय तो बापू ने उनकी बात पर खास ध्यान नहीं दिया, मगर बाद में रात को उसपर और विचार किया। सुबह पुराने पत्र पढ़े, तो उन्हें उनकी बात ठीक लगी। पत्र लिखने का विचार छोड़ दिया। सरोजिनी नायडू उधर से गुजर रही थीं, उन्हें

बुलाकर कहने लगे, "अम्माजान, मुझे तुम्हारे सामने स्वीकार करना होगा कि कल जब तुमने वाइसराय को जानेवाले मेरे नये पत्र के बारे में राय जाहिर की, तो मैंने उसे कोई महत्व न दिया। मैंने गर्व में सोचा कि अम्माजान तो बूढ़ी हो गई हैं। यह बातें ठीक तरह नहीं समझतीं। बाद में मैंने इस बारे में फिर सोचा। आज सुबह मैंने सुशीला से वाइसराय वगैरा के साथ का पुराना पत्र-व्यवहार लाने को कहा। मालिश में उसे साथ ले गया। मालिश के शुरू में १५ मिनट तक मैं काफी काम कर लेता हूं। वह पत्र-व्यवहार पढ़ने के बाद तुम्हारी दलील का वजन मैं समझा और मैंने अपने-आप सोचा कि अम्माजान तो जवान हो रही हैं—हम बूढ़े हो रहे हैं और मठिया रहे हैं। सो वह खत अब नहीं जायगा।" बीच-बीच में हंसी भी खूब चलती थी। जब बापू ने कहा, "मैंने गर्व में सोचा।" तो सरोजिनी नायडू ने मजाक में उत्तर दिया, "हां, जवानी के गर्व में सोचा!"

रात बापू उर्दू लिख रहे थे। मीराबहन आईं और कहने लगीं, "हां बापू, यह ठीक है। आप अपनी उर्दू को न छोड़िये।"

मेरे चित्रकारी के रंग आज आये हैं। मीराबहन ने उनसे एक सुन्दर चित्र बनाया।

आज भण्डारी और शाह आये, तब मैं स्नानघर में थी। बापू ने बताया कि उन्हें सर्पगंधा के उपयोग के बारे में मुझसे कुछ पूछना था। सो मैंने सब कुछ लिखकर भेज दिया। थोड़ी-सी दवा भी भेज दी। अब वह रविवार को आया करेंगे। दूसरे दिन मोटर नहीं मिल सकती। उनके बच्चों को स्कूल जाना होता है।

१६ नवम्बर '४२

आज बापू का मौन था। कल शाम को भाई के कहने से जल्दी मौन ले लिया था, आज प्रार्थना से पहले छूट गया। कल और आज बापू ने पद्मजा के लिए जो रूमाल बनाये थे, उन पर चार भाषाओं—गुजराती, बंगाली, हिन्दी और तमिल—में 'प.' लिखा। पांचवां मैंने उर्दू में लिखकर उन्हें बताया। रूमाल और चाकलेट पैक करके आज सरोजिनी नायडू को पार्सल दे आई। वह उसे पद्मजा के पास कल जन्म-दिन पर भेजेंगी।

बा की तबीयत आज फिर कुछ बिगड़ी है। भाई की रात भी बहुत खराब गई। उन्हें कुछ दिनों से रात को बहुत कम सोने को मिलता है। कारण कई हैं। एक कारण बा की तबीयत भी है। यह चिन्ता की बात है।

१७ नवम्बर '४२

आज पद्मजा का जन्म-दिन था। सुबह सरोजिनी नायडू स्नानघर में थीं, तब मीराबहन ने उनका कमरा सजाया। पीछे उन्होंने 'खाखरे' बनाये। मैंने पुलाव और साग बनाया। कैदियों को आज खिचड़ी, आमटी, केले, मूली, साग, पापड़ इत्यादि खाने को दिये गये। सिपाहियों को भी खाना मिला। दिन-भर धूमधाम में गुजरा। पकाने में इतनी देर लगी कि कैदी लोग दो बजे खाने को बैठे—सिपाही उससे भी आधा घंटा बाद। कैदियों का खाना सिपाहियों ने पकाया, सिपाहियों का सरोजिनी नायडू ने और उनका यानी घर के लोगों का मैंने और मीराबहन ने।

१८ नवम्बर '४२

कल पद्मजा के जन्म-दिन के लिए जो खाना पकाया था, वह मैंने उन्हें खुश करने के लिए थोड़ा खाया था। मैं तो कई दिनों से कच्चा साग ही खाती हूं, मगर सरोजिनी नायडू ने आग्रह किया तो थोड़ा पका साग इत्यादि चख लिया, ताकि उन्हें बुरा न लगे। आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे कि वह नहीं करना चाहिए था। पीछे बताने लगे कि अक्सर उन्हें खाने के कमरे से हम लोगों के हँसने की आवाज आया करती है। हम लोग भूल गये लगते हैं कि यहां हम किस हेतु से आये हैं। हँसना बुरा नहीं है; पर हँसने के योग्य वातावरण होना चाहिए। ऐसे व्यर्थ ही खाने की मेज पर बैठे इधर-उधर की बातों में पड़ने से क्या फायदा? यह थकान उतारने का सच्चा तरीका भी नहीं। यहां हमें गम्भीर रहना चाहिए।

एक कैदी की आंख के पास फोड़ा था। आंख सूजकर बन्द हो गई थी। दोपहर उसे चीरा लगाया। बापू बड़ी दिलचस्पी के साथ सारे समय पास खड़े रहे और जो मदद दे सकते थे, देते रहे। अंत में पट्टी बांधी, तो वह कुछ छोटी निकली। दूसरी उसके साथ जोड़ी, तब काम पूरा हुआ। बापू कहने लगे, "मेरा आपरेशन करती, तो तू कभी छोटी पट्टी लेकर शुरू न करती। पहले से पट्टी बड़ी रखनी चाहिए थी।"

कैदी ने ऑपरेशन बड़ी बहादुरी से कराया। भाई को डर था कि वह चीरे के नाम से ही डर जायगा। शायद बेहोश होजाय। इसीलिए सलाह दे रहे थे कि उसे लिटाकर चीरा लगाना चाहिए। मगर बापू कहने लगे, "नहीं, ये लोग तो बहादुर होते हैं। तुम्हें जैसे सुविधा हो, वैसे करो।" मैंने उसे बिठाकर ही चीरा लगाया। बाद में इस पर बापू कहने लगे, "सर्जन सोच समझकर ही निश्चय करता है; फिर उस पर पक्का रहता है। किसीके कहने से बदलता नहीं।"

डा० लाजरस का उत्तर आया कि मैं सात को दिल्ली से चली थी और आठ की आधी छुट्टी डा० एचीसन से ली थी। इस तरह उसने मेरी सारी छुट्टी मार ली है।

१६ नवम्बर '४२

बा को आज दिल की धड़कन का दौरा हुआ। मालिश करने से दब गया।

बापू ने डा० लाजरस को सख्त उत्तर देने को कहा है। अब वह तैयार करना होगा।

२७ नवम्बर '४२

कल डा० गिल्डर इत्यादि सबके पकड़े जाने के बारे में बापू बातें कर रहे थे, "सरकार की नीति इस समय लोगों को त्रस्त करने की है, जैसे भी बने भयभीत करना। यह उसके लिए बुरी बात है। इसमें उसका अपना अहित है।"

भाई पन्द्रह मिनट घूमकर चले गये। बापू और मैं घूमते रहे। बापू दक्षिण अफ्रीका की बातें करने लगे—कैसे कैलेनबैक को उनके पास उनका एक साथी, खोजा मुसलमान, जो खुद बहुत व्यभिचारी था, लाया। उनके जीवन पर बापू कोई असर न डाल सके, मगर कैलेनबैक का जीवन, जो उसी मुसलमान के जैसा गन्दा था, बिल्कुल पलट गया। फिर बापू बा के प्रति अपना भाव बताने लगे—कैसे बा ने हमेशा उनका साथ दिया, सब रिश्तेदारों ने भी बा को यही शिक्षा दी कि वह उनके पीछे चलें। बाद में कैलेनबैक वगैरा का स्त्रियों के बारे में क्या मत था, बापू का अपना क्या मत था, यह बताते रहे। कैसे बापू अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोगों पर आये, उनका सिद्धान्त, उनका प्रयोग, स्त्रियों के साथ उनका व्यवहार—यह सब समझाया। उनकी राय में नवविध बाढ़ के अन्दर रहकर जो ब्रह्मचर्य रखा जा सके, वह उनकी दृष्टि से सच्चा ब्रह्मचर्य नहीं है।

दोपहर को मैं सो गई। आंख खुली, तो डा० लाजरस के पत्र का उत्तर सोचती रही। फिर सरोजिनी नायडू को इन्जेक्शन दिया। जिस कैदी को चीरा लगाया था उसकी पट्टी की। उसकी सूजन तो सब चली गई है और घाव भर रहा है। बापू कल भी पट्टी के समय आकर खड़े हो गये थे और आज भी। मुझे लगता है कि महादेव-भाई ने भी रोगियों की सेवा का शौक बापू से ही लिया होगा।

बा की तबीयत आज अच्छी रही। उदास तो वह हैं ही। लोहा देना बन्द किया है; क्योंकि लोहे से कब्ज बहुत रहने लगा है।

आज डा० शाह और कलैक्टर हूलन आये। कुछ नई दवाइयां उनसे कहकर

मंगवाई।

सरोजिनी नायडू की तबीयत अच्छी नहीं है। आज दस्त हो गये, थकान है। वजन तो कम हो ही रहा है। उनके लिए यहां भोजन अनुकूल नहीं है। वह मांसाहारी भी हैं, यहां शाकाहारी बनी हैं। मगर शरीर को यह परिवर्तन अनुकूल नहीं है, ऐसा लगता है। बापू ने समझाने की कोशिश की कि मांस खायें, मगर वह नहीं मानतीं। आखिर इतना मानीं कि अंडे हफ्ते में दो दफा खायंगी।

बापू ने अकबर इलाहाबादी की कविता पढ़नी शुरू की है और बहुत रुचिपूर्वक पढ़ते हैं। अकबर की टक्कर का व्यंगमय कविता लिखनेवाला कवि हिन्दी में शायद कोई नहीं हुआ है, इस बात की भी चर्चा बापू आज सुबह कररहे थे।

२१ नवम्बर '४२

कल रात मैं थोड़ी देरतक पढ़ने को बैठ गई। नींद नहीं आई थी। दिन में काफी सोई थी। बिस्तर पर पड़े इधर-उधर के विचार आ रहे थे। मुझे लगा कि समय का उपयोग क्यों न कर लूं। पढ़ने को बैठ गई। इस पर बापू नाराज हुए। बोले, "सोने के समय सोना ही चाहिए।"

शाम को डा० शाह नेत्र-चिकित्सा-विशेषज्ञ डा० पटवर्धन को लेकर आये। भाई की आंख दिखानी थी। ऊपर डार्क रूम बनाया था। सरकार ने भाई को अस्पताल में ले जाने की अनुमति नहीं दी। बापू ने पूछा कि क्या वह ऊपर आ सकते हैं? डाक्टर ने इन्कार कर दिया। मैंने समझा कि मुझे तो आने ही देंगे। पूछा, तो उसके लिए भी मना कर दिया। डा० शाह बार-बार कह रहे थे, "आशा है, आप लोग बुरा नहीं मानेंगे। यह मेरे हाथ की बात नहीं।"

बाद में बापू कहने लगे, "बात यह है कि सरकार नहीं चाहती कि डाक्टर मुझसे मिले। मिलेगा, तो वह मेरे असर के नीचे आ सकता है। और ऊपर न जाने देने का दूसरा कारण यह भी है कि कहीं कोई दूर से मुझे देख न ले।"

करीब एक घंटा आंखें देखने में लगा। देखकर बाहर से ही डाक्टर चले गये।

बा की तबीयत अच्छी है। सरोजिनी नायडू की अच्छी नहीं मालूम होती, मगर वह तो हिम्मतवाली हैं। बीमारी की उपेक्षा करके उसे दबा देना चाहती हैं।

लार्ड हेलीफैक्स के लड़के की मृत्यु पर बापू के समवेदना के संदेश की पहुंच का आज वाइसराय की तरफ से समाचार मीठी भाषा में आया।

भाई ने बताया कि रात को प्रार्थना के बाद बापू अकबर की कविता—'कहो

करेगा हिफाजत मेरी खुदा मेरा'—की नकल करते रहे। उन पर उसकी गहरी छाप पड़ी है। कहरहे थे कि गीता की तरह इसे घोलकर पीजाना चाहता हूं। कल रात सोते समय उसे जबानी याद करने की कोशिश कररहे थे। एक पद याद नहीं आता था। भाई से पूछने लगे। उन्हें भी याद न था। पद बहुत सुन्दर है। बापू के भाव की पूरी-पूरी प्रतिध्वनि उसमें से आती है।

: २५ :

सतयुग की कल्पना

२२ नवम्बर '४२

आज सबेरे घड़ी देखने में भूल हुई। इसलिए प्रार्थना के लिए ३-१० पर उठ गये। मगर सुबह उठने का वक्त हुआ, तो बापू को लगा कि उनकी घड़ी पीछे हो गई, सो सवा पांच बजे उठ गये। इतने में भाई ने आकर बताया कि अभी तो सबेरा है। है, सो फिर सो गये और सबसे आखिर में जागे।

घूमते समय बापू पहले तो उर्दू के कवियों की बातें कहने लगे। भाई उन्हें गालिब की कविता के बारे में बताते रहे। ऐसे ही इक़बाल, जौक, अकबर वगैरा की बातें चलती रहीं। बाद में बात चली कि कैसे अब अंग्रेजी बोलनेवाले प्रदेश पूर्वी अफ्रीका की तिजारत को अपने काबू में रखने की योजना में लगे हैं। बापू कहने लगे, "इस योजना में इंग्लैण्ड ही अकेला नहीं, अमरीका भी इसके साथ है। अमरीका आज इतना पैसा लड़ाई में उड़ा रहा है कि जिसका हिसाब नहीं; क्योंकि न उड़ाये और जर्मनी जीत जाये तो अमरीका को तो वह निगल ही जावेगा। अमरीका जब इतना खर्च करता है, तो उसे और पैसा चाहिए ही। अमरीका के पास आबादी तो है; पर उसकी वास्तविक शक्ति उसके पैसे में है। मगर मैं मानता हूं कि अमेरिका पर हिन्दुस्तान का असर इतना है कि अमरीका हमें लूटने में नहीं शामिल होगा, और हो भी, तो भले हो। योद्धा को जैसे सामना करनेवाले को देखकर ज्यादा जोश और उत्साह आता है, वही मेरा हाल है। मैं चाहता हूं कि जर्मनी और जापान की जीत न हो। जिस शत्रु को हम जानते हैं, उसके साथ निपटना ज्यादा आसान है। जर्मनी और जापान के पास नया कुछ भी नहीं है। पुराने ढंग की जो चीजें हैं,

उन्हींको उन्होंने अपना आदर्श मान लिया है। दूसरी ओर अभी रूस है। उसके पास भली-बुरी, कैसी ही हो, कुछ नई चीज है। अगर रूस आज मिट जाये, तो गरीबों के पास कौनसी आशा रह जायेगी? रूस ने पाशविक बल का बहुत इस्तेमाल किया है, तो भी वह बल और सत्ता जनता के हाथ में है न? यह चीज आजकल के मेरे पढ़ने से मुझ पर और स्पष्ट हो रही है। कैसी बहादुरी से वे लोग आज लड़ रहे हैं! अगर अंग्रेज जीतेंगे, तो रूस की बहादुरी के कारण। अब मैं जवाहरलाल की चिन्ता को समझ सकता हूं। वह मुझसे कहता है, 'गरीबों के लिए तो दो ही चीजें हैं, या तो तुम्हारा रास्ता या रूस का। तुम्हारा प्रयोग तो जब सफल होगा तब देखेंगे, मगर रूस ने तो सफल कर दिखाया है।' रूस मटियामेट हो जाये, यह कैसे सहन हो सकता है? मैं भी इसे मानता हूं। हो सकता है कि मेरा तरीका सचमुच मेरी अपनी मूर्खता का ही चिह्न हो। हो सकता है कि मैं कल्पना के स्वर्ग को देख रहा हूं। अगर ऐसा हो, तो भी मुझे फिकर नहीं। मैं इस बारे में बुद्धि चलाना ही नहीं चाहता। जो चीज बुद्धि से निकली नहीं, उसमें मैं बुद्धि को क्यों चलाऊं? क्यों बुद्धि के प्रपंच में पड़ूं? यह नहीं कि मैं बुद्धि चला नहीं सकता, मगर बुद्धि चलाकर मैं अपनी श्रद्धा को हिलाऊं क्यों? बस मुझे मेरी श्रद्धा का सेवन करते हुए कल्पना के स्वर्ग में रहना ही पसंद है।"

भाई कहने लगे, "इतिहास के विस्तार को देखें, तो उसमें कोई नैतिक हेतु विक-सित होता है, इस बारे में शंका होने लगती है। इतिहास की वैतर्किक क्रिया नीति-अनीति के आधार पर निर्मित नहीं लगती।" बापू कहने लगे, "वह ठीक है, मगर इतिहास को नैतिक स्वरूप देने का प्रयत्न हो रहा है।"

पीछे भाई कहने लगे, "ककासाहब की ब्रह्मदेश की यात्रा का एक पैराग्राफ मुझे याद रह गया है—पर्वत की चोटी हमें बहुत लुभाती है। ओ हो, वहां कैसा भव्य दृश्य होगा! एक पर से दूसरे पर चढ़ते हैं। आखिर ऊपर पहुंचकर देखते हैं, तो बस कुछ खास नहीं मिलता। मुझे लगा करता है कि जीवन में सभी चीजों के बारे में क्या ऐसा ही नहीं होगा। अर्थात् प्रयत्न में ही सब कुछ है। अंत क्या होगा, उसके विचार में कुछ नहीं।" बापू कहने लगे, "हमारी लड़ाई में ऐसी बात नहीं है, यहां तो हमें निश्चित और प्रत्यक्ष परिणाम अन्त में मिलने ही वाले हैं।" भाई कहने लगे, "वह तो है; परंतु वैतर्किक द्वन्द्व की क्रिया तो अनन्त और अनादि है न? इस लिए सतयुग की स्थापना तो कल्पना जगत में ही रहेगी। उत्साह को बढ़ाने या

कायम रखने के लिए वह भले ही उपयोगी हो; परन्तु उसको सचमुच एक साध्य हेतु मानकर बैठ जाना क्या मात्र भोलेपन का चिह्न नहीं है ? इसलिए ब्रेलसफोर्ड ने एक जगह कहा है न कि सतयुग (यूटोपिया) की कल्पनाएं आनेवाली स्थिति की इतनी सूचक नहीं होतीं, जितनी कि किसी युग में प्रजा किस दर्जे तक पहुंच चुकी है, उसकी सूचक हैं। मानव-समाज की प्रारंभिक अवस्था में प्रगति की ओर ले जाने के लिए ऐसी दंतकथाओं की आवश्यकता होती है; परन्तु आज, जबकि विज्ञान और इतिहास के अनुभव के कारण मानव-समाज तरुण अवस्था को पहुंच चुका है, तब ये दंतकथाएं बहुत हदतक गैरजरूरी-सी होगई हैं।" बापू कहने लगे, "इस किस्म के सतयुग को, चूंकि वे आदर्श जगत में ही सम्पूर्णतया मिलते हैं, इसलिए उन्हें हम एक मिथ्या दंतकथा का दर्जा नहीं दे सकते। यूक्लिड का रेखा-बिन्दु तो सचमुच आदर्श जगत के बाहर नहीं मिलता; परन्तु इसलिए वह कम सच्चा नहीं। एक आदर्श की हैसियत से तीनों काल में वह सत्य है। उसका आधार न हो, तो भौतिक विज्ञान के तौर पर यूक्लिड का सिद्धान्त आगे नहीं चल सकता। इसलिए यद्यपि इतिहास का वैतर्किक द्वन्द्व अनंत और अनादि है, तो भी सतयुग कोई भ्रमणा नहीं; परन्तु सत्य पदार्थ है और इस सापेक्ष जगत में उसका उतना ही स्थान है, जितना कि किसी भी सत्यता का।"

शाम को डा० पटवर्धन भाई को ऐनक का नम्बर व कुछ सूचनाएं देग ये।

डा० लाजरस को उत्तर लिखा। बापू ने उसमें सुधार किया। कल साफ नकल करके भेजूंगी।

शाम को बादल थे। हवा में वर्षा-आगमन का आभास था। सामने पहाड़ सुन्दर दीख रहे थे। बापू कहने लगे कि यह दृश्य चित्र उतारने लायक है। भाई मीराबहन से कहने लगे कि उस दृश्य का रंगीन चित्र बनाओ।

महादेवभाई की समाधि पर शिला लगाकर समतल प्लेटफार्म-सा बना लिया है। अभी मिट्टी की लिपाई की जायगी, बाद में उस पर शंखों का ॐ बनायेंगे। करीब एक हफ्ता ॐ के बिना चलाना पड़ेगा। आज उसमें जगह-जगह दरारें पड़ गई थीं। दो-तीन बार लीपने से ठीक होगा।

: २६ :

भंसालीभाई का उपवास

चिमूर के फौजी अत्याचारों के बारे में जांच करने से सरकार ने इन्कार किया है, इस कारण भंसालीभाई ने सेवाग्राम में निर्जल उपवास शुरू किया है, ऐसी खबर पत्रों से मिली। सबको इससे काफी चिन्ता हुई। बापू पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? ११ तारीख से उपवास शुरू है। अखबार में लिखा था कि पानी पीना भी छोड़ दिया है। कबतक निभेगा, भगवान जाने! भंसालीभाई के लिए तो चिन्ता होती ही है। मगर इसकी बापू पर क्या प्रतिक्रिया होगी, उसकी सबको और भी चिन्ता हो रही है।

शाम को बापू जल्दी घूमकर लौटे। कह रहे थे कि प्यारेलाल के साथ कुछ बातें करनी हैं। पंद्रह मिनट बात की। सवा छः बजे कातने को बैठे। कातते समय रोज की तरह मैंने बाइबिल पढ़कर सुनाया।

२३ नवम्बर '४२

आज बापू का मौन था। भंसालीभाई की कोई और खबर शायद मिले, इस आशा से सबने अखबार एक सिरे से दूसरे सिरे तक देख डाले, मगर खबर कोई थी ही नहीं। भाई ने सरोजिनी नायडू की मालिश की। पीछे सो गये। बा को अखबार सुनाना रह गया। अतः बा गुजराती अखबार लेकर मेरे पास आईं। मैंने पढ़कर सुनाया।

डा० लाजरस को पत्र लिखा, मगर भाई ने कुछ और बातें बढ़ाने को कहा। अब साफ नकल कल तैयार करूंगी।

२४ नवम्बर '४२

आज भाई ने मेरा लाजरसवाला पत्र देखा। बापू कह रहे थे कि कल तो जाना ही चाहिए।

शांतिकुमार की भेजी हुई कुछ किताबें आज भाई को मिलीं। उन पर कागज चढ़ाया और उनकी सूची बनाई। माताजी इत्यादि के पत्र मिले। बहुत अच्छा लगा।

शाम को घूमते समय बापू बात करने लगे, "मैं शुद्ध आदमी हूं, तो मेरे साथ घनिष्ठ सम्बन्ध में आनेवाले लोगों को दिन-प्रति-दिन उन्नति करना ही चाहिए। कोई चीज इस जगत में स्थिर नहीं रह सकती। उसे आगे बढ़ना है या पीछे हटना

है। मेरे सम्पर्क से कोई पीछे हटे, यह कैसे सहन हो सकता है ? मेरे संपर्क में आनेवालों का अनिष्ट हो, तो मेरा इष्ट कैसे हो सकता है ? किसीको झूठ सिखाकर मैं सत्य थोड़े ही सीख सकता हूं। इसलिए यह पक्की बात है कि मेरे सम्पर्क में आनेवाले उत्तरोत्तर ऊपर चढ़ें, तभी मेरा प्रयोग सफल हुआ कहा जा सकता है।"

बापू ने एक तार भंडारी को भेजा और भंसालीभाई के साथ तार से सम्पर्क करने की सरकार से इजाजत मांगी, ताकि हो सके तो उनका उपवास छुड़वा सकें। भंडारी ने तार को टेलीफोन द्वारा बम्बई सरकार को सूचित किया। आशा थी कि जवाब शायद आज ही आ जाये, मगर रात तक नहीं आया।

सुबह घूमते समय भंसालीभाई की ही बातें होती रहीं। मेरे मन में उनकी साधुता के प्रति बहुत मान रहा है। बापू के बाद मेरी नजर में भंसालीभाई ही साधु हैं। बापू कहने लगे, "मैं उसे अपने से ऊंचा समझता हूं। वह तीनों काल निर्भय रहता है। यह साधु का लक्षण है। वह जो कर सकता है, मैं नहीं कर सकता।" मैंने पूछा, "भंसालीभाई को क्या लगता होगा ?" बोले, "कुछ नहीं, वह तो महाभारत को भी घोटकर पी गया है। महाराष्ट्रियों में धर्म-ग्रंथों में से अद्भुत नतीजे निकालने की विलक्षण क्षमता है।" मैंने कहा, "और महाराष्ट्र में से कितने संत निकल चुके हैं।" बापू कहने लगे, "इसीलिए मैंने महाराष्ट्र से अभी तक आशा नहीं छोड़ी। विनोबा को ही देखो।" मैंने कहा, "आपके पास से भी संत काफी निकले हैं। आश्चर्य नहीं अगर महादेवभाई भी भविष्य में संत की तरह पूजे जायें।"

बापू कहने लगे, "मैंने तो कहा ही है कि महादेव की समाधि तीर्थस्थल होनेवाली है।" मैंने कहा, "ऐसे ही ईश्वर न करे, भंसालीभाई जायें, तो वह भी संत माने जानेवाले हैं ही, और विनोबा तो आज संत हो ही चुके हैं। उनके तो लेख भी महाराष्ट्र में फैल चुके हैं। 'गीताई' घर-घर में गाई जा रही है। तुकाराम की तरह विनोबा के काव्य महाराष्ट्र के बच्चे-बच्चे के मुंह पर चढ़नेवाले हैं।" बापू कहने लगे, "यही चीज मुझे आश्वासन दिलवाती है कि मेरा काम निष्फल नहीं जायेगा। मेरी श्रद्धा अंधश्रद्धा नहीं है। जो मैं कहता हूं, उसमें सचमुच कुछ सार है।"

भंसालीभाई पर प्रभाव डालनेवाला आज आश्रम में कोई नहीं है—किशोरलालभाई नहीं, काकासाहब नहीं, इसकी चर्चा हुई। बापू ने तो भंसालीभाई को तार करने का सोच ही लिया था, साथ ही मन में तटस्थता भी थी। बापू ने कहा, "मेरी मानसिक तैयारी है कि अगर इजाजत न मिले, तो इस वक्त एक भंसाली नहीं,

हमें अनेक भंसाली खोने की तैयारी रखना है।" मगर ईश्वर न करे, भंसालीभाई सचमुच चले जायें ! यह मानसिक तैयारी उन्हें जबरदस्त आघात से बचानेवाली नहीं है।

२५ नवम्बर '४२

आज सवेरे घूमते समय बापू व्यवस्थित तरीके से काम करने के महत्व की बातें सुनाते रहे। मैं आज सुबह प्रार्थना के पश्चात सोई नहीं थी—डायरी लिखने लगी थी। उसमें उन्हें अव्यवस्थित वृत्ति लगी। हर रोज प्रार्थना के बाद आधा घंटा तो सोना ही चाहिए, ऐसा उनका मत था। उन्हें कुछ काम भी था और मैं दूसरे कमरे में बैठी थी, इससे सुबह कह नहीं सके। बोले कि तुम्हें ऐसी बातें खुद सोचनी चाहिए। भाई की बात कहने लगे, "उसके जैसा उदार आदमी मैंने देखा नहीं। जिसकी सेवा करना स्वीकार करेगा, पूरी तरह तन्मय होकर करेगा। मैं उसके पूरी तरह अनुकूल होना चाहता हूं, ताकि उसमें जो सुवर्ण-जैसे गुण हैं, वे खिल सकें।"

दोपहर को आधा घंटा सो गई। अखबार में भंसालीभाई की आज भी कोई खबर नहीं थी, मगर होमी तारपुरवाला नाम के लड़के ने उनके बारे में एक छोटा-सा लेख 'बाम्बे क्रॉनिकल' में लिखा था। अच्छा था। यह लड़का एक गरीब पारसी है। मैडम सोफिया वाडिया उसकी पढ़ाई का खर्च उठा रही हैं। कॉलेज में पढ़ता है। एक वक्त सेवाग्राम आश्रम में एक महीने रह गया था। ईश्वर कहां-कहां से मददगार भेज देता है, यह चकित करनेवाली चीज है। किसको कल्पना थी कि यह लड़का भंसालीभाई के पक्ष में अपनी आवाज उठायेगा ! भले उसका कोई नतीजा न निकले, मगर उस लड़के ने तो अपनी तरफ से अपना फर्ज अदा करके पुण्य ले ही लिया।

बापू ने भंडारी को एक पत्र लिखा था कि बम्बई सरकार को टेलीफोन या तार से मेरी तरफ से कहो कि मेरे तार का शीघ्र उत्तर दें; क्योंकि ऐसे मामलों में समय बहुत कीमत रखता है।

लाजरसवाला पत्र सुबह ही बापू ने सुधार दिया था। आज वह गया।

२६ नवम्बर '४२

आज सुबह भाई घूमने आये। बापू दक्षिण अफ्रीका के अपने कुछ अनुभवों की बातें करते रहे। फिर निजी बातें करते हुए बोले, "मैं चाहता हूं कि तुम हरएक चीज में नियम-बद्ध रहने लगो। तब तुम जो करना चाहते हो, वह कर सकोगे।"

दोपहर अखबार में भंसालीभाई की खबर थी। ११ नवम्बर से उनका उपवास था। १६ को उपवास में पैदल चलकर दोबारा चिमूर गये, २२ को पहुंचे, ६८ घंटों में ८० मील की यात्रा की। उसमें सिर्फ पन्द्रह घंटे आराम किया। पुलिस फिर उन्हें पकड़कर वर्धा छोड़ गई है। वह अब फिर चिमूर जाने का विचार कर रहे हैं।

शाम को घूमने के बाद मीराबहन के साथ पक्षी देखने नीचे गई। वह बता रही थीं कि मानो घड़ी को देखकर कुछ पक्षी बारी-बारी से आकर नीचे तार पर बैठते हैं। उनमें दो उल्लू हैं। वह शाम को ६-१० पर आते हैं।

मीराबहन आज यह विचार कर रही हैं कि सारी दुनिया में कैसे क्रांति हो सकती है। उनकी मन्यता है कि पहले कुछ नेता रूस जायें, फिर हर गांव से कुछ किसान वहां भेजे जायें, वे आकर बाकी लोगों में प्रचार करें। मीराबहन का दिमाग आज रूस और मार्क्स से ही भरा हुआ है। बापू कह रहे थे, "यह एक छोटी-सी मिसाल है कि कैसे उनका मन एक बालक की भांति कल्पना के घोड़े पर सवार होकर कहां-से-कहां पहुंच जाता है, नहीं तो आज इस जेल में बैठे हुए रूस जाने का प्रश्न ही कैसे उठ सकता है? और फिर क्या हम इतने कंगाल हैं कि रूस जाने के सिवा और कुछ कर ही नहीं सकते?"

२७ नवम्बर '४२

प्रात: घूमते समय बापू भाई के साथ फिर इतिहास और ऐतिहासिक प्रक्रिया की चर्चा करने लगे। चर्चा मार्क्स के शिक्षण पर आई। बापू कहने लगे, "मार्क्स का कहना है कि पांच इन्द्रियों से जिसे पहचाना न जा सके उसको मानने की जरूरत नहीं, मगर मैं कहता हूं कि इन्सान कितनी होशियारी से काम करे, तो भी कुछ-न-कुछ छिद्र रह जानेवाला है। यह अज्ञात तथ्य मनुष्य के हिसाब को गलत सिद्ध कर सकता है। इसे ही गीता ने 'दैव' के नाम से पुकारा है—'दैवंचैवात्र पंचमम्'। मार्क्सवादी उत्तर देंगे कि आज हमने कुदरत पर पूरी तरह काबू नहीं पाया, मगर कभी नहीं पायेंगे, यह मानने का आपको अधिकार नहीं है। तो मैं कहता हूं कि जब पाओगे, तब की बात तब, मगर आज आपको इस अज्ञात तथ्य को अपने सामने रखना ही होगा।"

फिर रूस की बात करने लगे, "रूस ने इतना किया है, तो भी मैं कहता हूं कि रूस का काम तबतक टिक नहीं सकता, जबतक कि उसके साधन शुद्ध नहीं होते। मेरे सामने तो एक ही चीज है—'सत्य', वह भी पूर्ण सत्य—भले ही वह पांचों

इन्द्रियों के द्वारा न अनुभव किया जा सके। तो भी वह है, जैसेकि यूक्लिड की लाइन भले ही कल्पना में रहे, तो भी उसका अस्तित्व तो है ही। सो सत्य है और उसे ढूंढ़ना है। उसे ढूंढ़ने का एक ही साधन है—अहिंसा। उसमें हमें चाहे हजारों वर्ष लग जायं; लेकिन हम उसे प्राप्त करेंगे, तो हमारा काम पायदार होगा—टिकने-वाला होगा।" पीछे मार्क्सवाद की पुस्तक की बात चली। बापू कहने लगे, "उसने अच्छी किताब लिखी है, तो भी उसमें कई त्रुटियां हैं। वह पुस्तक आज अमर हो गई है; क्योंकि लेनिन ने उसमें बताये सिद्धांत पर अमल कर दिखाया। पूर्णतया तो वह नहीं कर पाये, तो भी उन्होंने काफी कर लिया है। इसी तरह हमें भी अब करके दिखाना है।"

भाई पूछने लगे, "प्रकृति के नियम स्वतंत्र, सनातन और शाश्वत हैं। उनका स्रोत मनुष्य का मस्तिष्क नहीं। इसी तरह आज पूंजीवाद का कानून जो मार्क्स बताता है, वह भी सत्य माना जाता है। क्या वह उपरोक्त अर्थ में ठीक है? या यह कहा जाय कि ऐसे कानूनों की उत्पत्ति मनुष्य की कल्पना में से होती है और उसका समर्थन करने-वाली ऐतिहासिक युक्ति इन्सान बाद में ढूंढ़ लेता है? अर्थात ये सब कानून मनुष्य के बनाये हुए हैं और मनुष्यों से अलग इनका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है?" बापू कहने लगे, "कुदरत के कानूनों का तो स्वतंत्र अस्तित्व है। मनुष्य हो या न हो, सूर्य की गति कायम रहेगी। गुरुत्वाकर्षण शक्ति काम करती रहेगी, मगर पूंजीवाद के कानून का तो आधार ही मनुष्य है। मनुष्य के अनुभव, मनुष्य के मन पर जो प्रति क्रिया हुई, उसमें से वह कानून निकाला गया है। इसलिए उसकी मैं कुदरत के कानून से तुलना नहीं करता हूं। उसको इस तरह तीनों काल में सच्चा नहीं मानता हूं।"

आज शुक्रवार था, इसलिए कलैक्टर और डा० शाह आये। शिष्टाचारवश पूछकर चले गये कि आपको कोई शिकायत तो नहीं है।

रात को बापू के लिए एक नई बकरी आई। बहुत सुन्दर है। मीराबहन बड़ी खुश हैं। उसे बापू के पास लाईं। कहती थीं, "बहुत अच्छी नस्ल की बकरी है। इसकी नाक रोमन है।" भगवान जाने, बकरियों के रोमन नाक कैसी होती होगी!

२८ नवम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने कहा, "लोग पूछते हैं कि अहिंसा के द्वारा तुम लोग धनवानों के फंदे में से धनहीनों को कैसे छुड़वा सकते हो?" बापू कहने लगे, "मैं तो इसके उत्तर में यह कहूंगा कि अगर धनहीन को अपनी शक्ति का

ज्ञान हो जाये, तो फंदे में फंसा नहीं रह सकता। मैं तो खुद धनहीनों में से हूं। मुझसे कोई भी जैसे चाहे, काम नहीं करवा सकता। माना कि पहले तो मैं नौकरी करके रोटी कमाता था, फिर मुझे ज्ञान हुआ कि नौकरी क्यों? मेरे पास चरखा है। मैं कातूंगा और उसकी कमाई से गुजारा करूंगा। किसीके सामने लाचार नहीं बनूंगा। जो मैं कर सकता हूं, वह सब कर सकते हैं। "इस विचार-श्रेणी पर ही समाज-क्रांति की मैंने अपनी कल्पना की नींव रखी है।"

भाई ने बताया कि कुछ लोगों ने उनसे चर्चा करते हुए पूछा था, "युवक वर्ग तो उत्साह और आवेश पर ही चलता है। उनके सामने हम अपनी कल्पना की एक पूरी तस्वीर रख सकें तो अच्छा हो।" इसका भाई ने क्या उत्तर दिया था, यह भी बताया, तो बापू ने कहा, "तो यह चीज तुम लिख डालो। उसमें अपूर्णता रह जायगी, तो उसे देख लेंगे।" भाई ने चर्चा करनेवालों से कहा था कि हम बाद में इस काम के लिए शासन-तंत्र की मदद भी लेंगे, इत्यादि। बापू ने कहा, "इस उत्तर में विचार-दोष है। आज हमारे पास सत्ता नहीं है। सत्ता इस्तेमाल करने की बात क्यों करना? वे लोग तुम्हें जवाब देंगे कि ऐसे तरीके से तुम्हें सत्ता मिल नहीं सकती। कांग्रेसी मिनिस्ट्री (मंत्रिमण्डल) आ गई। वह तो एक संयोग की बात थी—ऐसा समझो। वाइसराय भी इस बात पर तुले थे कि समझौता करना है। वह खुद १९३५ के कानून के निर्माता हैं। उन्हें लगा कि यह चल जाये, तो अच्छा है। ऊपर से भी उन पर दबाव था कि कुछ करो। सो मिनिस्ट्री आई। मगर बाद में वे लोग उसके गर्भित अर्थ को समझे। ऊपर से तो गवर्नर तारीफ करते थे, मगर खुफिया-रिपोर्ट में जाता होगा कि ये लोग खरीदे नहीं जा सकते। इनके साथ हमारा काम नहीं चल सकता। सब मंत्रिमण्डल केन्द्रीय कांग्रेस पार्लामेण्टरी बोर्ड के द्वारा चलाये जाते थे। सो वह बहुत दिन चलनेवाली चीज नहीं थी। आज तो युद्ध के कारण हम मिनिस्ट्री में से निकले, वरना कौन जाने, कैसी परिस्थिति में निकलना पड़ता। सत्ता हाथ में आ जाये तो फिर ऐसे सुधार करने में कुछ कठिनाई नहीं आती और फिर इन चीजों के बारे में शंका करनेवाले भी नहीं रहेंगे। राजकोट एक छोटी-सी जगह थी। वहां जब हमें सफलता मिली थी, उसके बाद गड़बड़ हो गई होती, तो काठियावाड़ का तो रूप ही बदल जाता और सारे हिन्दुस्तान पर उसका असर पड़ता। मगर आज सत्ता हमारे पास है ही नहीं।"

आज महादेवभाई को गये पंद्रह हफ्ते हो गये। समाधि पर एक हफ्ते से ॐ नहीं

बनाया। लिपाई वगैरा हो रही है। पत्थर लगाये हैं, सो हम फूल रखकर ही चले आते हैं।

श्रीमती नायडू और मि० कटेली के लिए आज पूरियां बनाईं, मीराबहन और बा के लिए मेथी के परांठे। शाम को मीराबहन की तबीयत बिगड़ी। पेट खराब था। सिर में दर्द और ९९.६ बुखार, ऊपर से मचली होती थी। सुबह ही वह कह रही थीं कि जी आज अच्छा नहीं है। बाद में खाना वगैरा खाया, तो उससे जी और बिगड़ गया।

२९ नवम्बर '४२

आज सुबह भण्डारी और शाह आये। कटेली साहब ने बात की कि सरोजिनी नायडू की लड़की को हमने टॉफी बनाकर भेजी थी। वे लोग मजाक करने लगे, "हमें क्यों नहीं दी?" श्रीमती नायडू मुझसे कहने लगीं कि अब फिर ये लोग आयें, तो उनके लिए टॉफी तैयार रखना।

सुबह घूमते समय भाई के साथ खुराक वगैरा के बारे में बातें होती रहीं। उनकी खुराक काफी नहीं और सो बहुत ही कम पाते हैं।

शाम को घूमते समय भाई के साथ कलवाले प्रश्न पर आगे चर्चा करते हुए बापू बोले, "मैं मानता हूं कि अहिंसा के द्वारा सब प्रश्न हल हो सकते हैं। यह भी मानता हूं कि अगर कोई देश तैयार हो सकता है तो हिन्दुस्तान ही इस तरह से प्रश्न हल करने को तैयार हो सकता है।

"मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरी दलील काटने का काफ़ी सामान मनुष्य-समाज की आज की परिस्थिति में पड़ा है। सब-के-सब त्यागी नहीं बननेवाले। जापान के चिथड़े अगर आज उन्हें मुफ्त मिलें, तो सब लेंगे। उनमें अनेक त्रुटियां हैं। मार्क्स पूंजीवाद की चर्चा करता है और कहता है कि आखिर ये लोग जायेंगे कहां? ऐसे ही मैं कहता हूं कि आज का मनुष्य-स्वभाव हमें ले जायेगा कहां? अगर अहिंसा को न अपनायें, तो लड़ाई-पर-लड़ाई होती ही रहेगी। सुधरा हुआ मनुष्य-समाज इस चीज को कैसे सहन कर सकता है? और धनवानों के वर्ग में से मार्क्स-पद्धतिवालों ने बड़े-बड़ों को मार डाला। छोटे-छोटे धनवान तो उन्हें भी रखने पड़े; क्योंकि उन्हें भी मारने जाते, तो उनकी अपनी पार्टी में बहुमत और अल्पमत के बीच झगड़ा उठ खड़ा होता। सो जैसे हमारे यहां पाटीदार पड़े हैं, ऐसे उनके यहां कुलक पड़े हैं। सत्ता तो उनके हाथ में है ही नहीं। अहिंसा-पद्धति के

द्वारा हम बड़े धनवानों को भी मार नहीं डालते, अगर उनकी सत्ता धनहीन वर्ग पर से उठ जाती है।"

भाई कहने लगे, "आप इसे एक दर्शन का रूप देकर इस पर एक पुस्तक लिख डालिए।" बापू कहने लगे, "मुश्किल यह है कि यहां पर मार्क्स भी मैं हूं और लेखक भी मैं हूं। पुस्तक तो मेरे मस्तिष्क में पड़ी है। जब मौका आता है तब मैं उसमें से मतलब की बात निकाल लेता हूं।" भाई कहने लगे, "आप तो परि-स्थिति देखकर क्या करना है इसका निश्चय कर लेते हैं। आपके मस्तिष्क में वह सब है, मगर आपके बाद लोगों का मार्ग-दर्शन कौन करेगा? आज तो मौका आने पर आपकी ज्ञानेन्द्रिय जाग्रत होजाती है और आप काम कर लेते हैं। मौका न हो तो बरसोंतक चुप ही बैठे रहते हैं।" बापू कहने लगे, "हां, वह ठीक है। मौका आने पर मेरी छठी ज्ञानेन्द्रिय जग उठती है और बाद में फिर सोजाती है। मगर तुम जो कुछ कहरहे हो वह मैं कर नहीं सकता। यह मेरी शक्ति से बाहर है। काका ने भी यही कहा था। मैंने कहा, "काका, मैं स्मृतिकार नहीं हूं।" कुछ प्रेरणा हुई तो कह दिया। जबतक परिस्थिति मेरे सामने आकर खड़ी न होजावे, मैं निश्चय नहीं कर सकता कि क्या करूंगा। तो मैं स्मृति कैसे लिखूं? अभी इस लड़ाई में ही मैंने पहली लड़ाइयों से उल्टा किया है। पहले यह था कि कैदियों की तरह का बर्ताव अमलदारों के साथ करना है, उनका हुक्म मानना है। वह अहिंसा में से निकला था। आज उसी अहिंसा में से उससे उल्टा निकला है; मगर इन दोनों का विरोध मात्र ऊपर का विरोध है, सच्चा विरोध नहीं। सो यह अहिंसा की कार्य-पद्धति तो धीरे-धीरे विकसित होरही है और होती रहेगी। मेरी इच्छा होते हुए भी मैं स्मृति नहीं लिख सकूंगा।"

पीछे मिल के कपड़े की बातें होने लगीं। बापू ने कहा, "सब जानते हैं कि मैं तो मिलों का खात्मा चाहता हूं, मगर आज मैं उसके लिए वायुमण्डल तैयार कर रहा हूं। जो खादी नहीं पहनते, वे भी जानते हैं कि असल चीज तो खादी ही है। मगर वे अपना शौक नहीं छोड़ सकते या कुटुम्ब में मंहगी खादी खरीदने की शक्ति नहीं रखते; पर उनमें से अधिकतर का मन खादी के लिए तैयार है। इस तरह वातावरण तैयार होरहा है। समय आने पर बाकी काम कानून से होजायगा।"

शाम को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया। मीराबहन आज भी बीमार ही है। ज्यादा लम्बी बीमारी न चले तो अच्छा है।

३० नवम्बर '४२

आज बापू का मौन था। सो घूमते समय भाई ने कल की बात के सिलसिले में ही कुछ प्रश्न बापू के विचारार्थ उनके सामने रखे। उनमें से दो ये थे : (१) सत्याग्रही जड़वत क्यों लगते हैं ? (२) चर्खा और दूसरे ग्रामउद्योग हिन्दुस्तान की गरीबी को दूर करने के लिए काफी हैं, भले ही वे दुर्भिक्ष से लोगों को बचाने में समर्थ न हों ? ग्रेग ने जो उत्तर दिया है, वह संतोषजनक नहीं है।

श्री कटेली ने कुछ सब्जियां बोई हैं। शाम को हम उनका साग-भाजी का बगीचा देखने गये। गोभी बोई है, मगर उसके तैयार होने में अभी दो महीने और लगेंगे। तबतक छः महीने के हिसाब से तो हमारे यहां से जाने के दिन आजावेंगे। मन में आता है कि चार महीने के करीब तो गुजर गये, अब दो महीने में क्या एकाएक कोई चमत्कार हो उठेगा कि परिस्थिति बदल जायगी ? मगर बापू की श्रद्धा है कि कुछ होगा और हम दो महीने में जेल से निकल जायंगे। कहते हैं, विश्वास से पर्वत भी हिल जाते हैं।

मीराबहन आज अच्छी हैं। आशा है कि कलतक बिलकुल चंगी होजावेंगी।

बा के नाम आज पार्सल आया। उसमें जमीकंद था, काला शहद और खजूर। नक्षत्र-मण्डल पर एक पुस्तक भी थी। सब चीजें शांतिकुमारभाई ने भेजी हैं। पहले भेजी थीं तो सरकार ने यह कहकर कि बा ने ये चीजें नहीं मंगवाई हैं, पार्सल लौटा दिया। पीछे शांतिकुमारभाई ने पुछवाया। अब पार्सल फिर वापस आया है। बा खुश हैं।

भंसालीभाई की कोई खबर नहीं। बापू का तार और पत्र वगैरा सब सरकार हजम कर गई लगती है।

बापू रात को १२ बजेतक सो नहीं सके। बहुत थके-से थे। विचार भी चलते थे।

सर्दी काफी पड़ने लगी है। रात को और सुबह ठंड होती है। बाद में दिन भर सर्दी भाग जाती है। बादल दो-एक रोज आये और बिना बरसे चले गये। आज आकाश बिलकुल खुला है।

पुराने फूल करीब-करीब खतम होगये हैं। माली नए फूल लगा गया है। कोई महीने भर में नए फूल निकल आवेंगे।

महादेवभाई की समाधि पर ॐ आज भी नहीं बना सके। एक-दो लिपाई और

होगी, तब जगह तैयार होगी।

: २७ :

ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त

१ दिसम्बर '४२

आज महीने के शुरू का दिन बुरा गया। शाम को घूमते समय बापू ने भाई के इन प्रश्नों का उत्तर दिया—"राजनैतिक प्रश्नों में तो हमें वैधानिक अंकुश चाहिए, तो फिर आर्थिक क्षेत्र में हम संरक्षकों की दया पर क्यों रहें? क्यों न इन पूंजीपतियों पर भी कानून का बंधन हो और सबको कानून से ट्रस्टी बनना पड़े?"

उत्तर में बापू ने कहा, "मैंने ऐसा नहीं कहा कि आगे जाकर वैधानिक अंकुश नहीं होगा। आखिर कानून से उनका भी कमीशन—वेतन—बंधेगा। सिर्फ इतना ही है कि मैं उनका हनन नहीं करना चाहता। उनकी शक्ति का उपयोग कर लेना चाहता हूं। जैसे जमनालालजी थे, उनकी सम्पत्ति का उपयोग समाज के लिए हो, तो भले ही वह सम्पत्ति जमनालालजी की कहलाये। रूस में पूंजीपतियों का सर्वनाश किया गया और उनसे कहा गया, 'आपको यहां रहना है, तो किसान बन जाओ।' मगर मैं कहता हूं कि तुम्हें किसान बनने की जरूरत नहीं। तुम्हारे हृदय का परिवर्तन हो जाय, तो मेरे लिए बस है।" भाई कहने लगे, "सच्ची ट्रस्टीशिप की स्थिति न आये, तबतक इस बीच के समय में क्या हम सिद्धान्त में ढील नहीं दे देते?" बापू कहने लगे, "अहिंसा में समझौते को हमेशा स्थान रहा है। समझौता अहिंसा का शरीर है—ऐसा कहा जा सकता है। मगर इस चीज में समझौते की बात नहीं आती। ट्रस्टीशिप कोई आरजी चीज नहीं है। वह तो स्वयं एक आदर्श है। पूंजीपतियों के लिए ट्रस्टीशिप की यह मेरी बनाई अंतिम स्थिति है। इससे आगे जाने की गुंजायश नहीं। हमारी संस्था स्वतंत्र इच्छा से संगठित लोगों से बनी है। हम पूंजीपतियों से स्वतः अपने हकों का त्याग करने को कहते हैं। हम आज उनके सामने यह नहीं रख सकते कि तुम पांच सैकड़ा कमीशन लो या दो सैकड़ा। जितना त्याग वे स्वयं करें, उससे मुझे संतोष हो जायगा, मगर कोई ऐसा निकले कि वह दो सैकड़ा लेना चाहे, तो मैं उससे यह थोड़ा कहूंगा कि नहीं, तुम दस सैकड़ा

लो ! इस तरह अच्छा वातावरण पैदा हो जायगा। मानो कि एक पूंजीपति टेढ़ा निकला। कहने लगा कि जाओ, मैं कुछ नहीं छोड़ता। तो मैं कहूंगा कि तुम्हें छोड़ना पड़ेगा—कानून से मजबूर होकर छोड़ना पड़ेगा। आखिर पूंजीपति अल्पमत में हैं। उन्हें बहुमत के सामने झुकना ही है। मुझे उनसे बहुत-सी चीजें छीननी होंगी, जैसे खिताब है, वर्ग-भाव है। मगर मैं उनकी पूंजी छीनना नहीं चाहता। उसका समाज के लिए उपयोग चाहता हूं।"

आज मीराबहन अच्छी हैं। डा० शाह आये थे। देखकर चले गये। श्रीमती नायडू के हाथ को रात में पोस्त का सेंक दिया। बा को त्रिफला लेने से बहुत फायदा हुआ है।

२ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय भाई ने बापू से कहा, "हमें यह हिसाब निकालना चाहिए कि सामान्य मनुष्य की आवश्यकताएं क्या-क्या हैं, उन्हें पूरी करने के लिए मेहनत की कितनी इकाइयों (man-hours of labour) की आवश्यकता है ? हाथ से काम करके वह पूरी हो सकती है या मशीन का आश्रय लेना पड़ेगा ? लेना पड़ेगा तो किस हदतक ?" बापू कहने लगे, "इस बारे में काफी विचार हो चुका है। पूरा काम नहीं हो पाया, इतना मैं मान लेता हूं, मगर मैंने विनोबा, कुमारप्पा, कृष्णदास, प्रभुदास और नारायणदास से काफी हिसाब करवाया है। वह हिसाब 'हरिजन' में समय-समय पर छप भी चुका है। एक बात के बारे में मैंने पूरा विचार नहीं किया। वह है जमीन। जमीन के बिना अकेले चरखे और अन्य ग्रामोद्योगों से लोगों की गरीबी दूर नहीं की जा सकती। जमीन का प्रश्न कैसे हल होगा, यह मैं पूरी तरह से आज जानता नहीं हूं।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स के सिद्धांत का बहुत-सा हिस्सा ज्यों-का-त्यों स्वीकार किया जा सकता है। हां, जहां वह हिंसक बल के उपयोग की बातें बताते हैं, वहां हम अहिंसक बल रख दें। लोग क्यों मान लेते हैं कि अहिंसक बल उतना काम नहीं दे सकता ? आज का अनुभव इससे उलटा सिखाता है। मरने की तैयारी तो दोनों में चाहिए ही। इतना हो, तो अहिंसक का आत्म-बलिदान सामने के पक्ष को हिंसा की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावित कर सकता है।"

बापू बोले, "मरने की तैयारी तो आवश्यक है ही, मगर आज तुम देखोगे कि मरने की तैयारी भी उन लोगों की अहिंसावादियों से ज्यादा है। और केवल मरने

की तैयारी से काम नहीं चलता। जापान के 'हाराकिरी' (आत्मघात) करनेवालों को देखो। वे लोग मरने को कोई चीज नहीं समझते; साथ ही उन्होंने हिंसा को धर्म बना रखा है। जब दोनों के मरने की तैयारी एक-सी हो जायगी, तब हम प्रत्यक्ष रूप में देख सकेंगे कि अहिंसक बल हिंसक से बहुत आगे बढ़ जाता है। आज तो कबूल करना होगा कि हिंसकों में मरने की तैयारी और शक्ति बहुत अधिक है।''

भाई कहने लगे, ''हिंसा से वे लोग जो परिणाम लाया चाहते हैं, वे उनके साधनों के आंतरिक दोष के कारण स्थायी नहीं हो सकते, पूर्ण नहीं हो सकते, और अंत में समय भी ज्यादा लेते हैं। रूस को लीजिये। उसकी मान्यता है कि शासन-तंत्र को आखिर अनावश्यक होकर निकल जाना है, मगर वास्तविक परिस्थिति उससे उलटी है। वहां शासन-तंत्र तो दिन-प्रति-दिन ज्यादा मजबूत होता जा रहा है। स्टालिन इसका कारणभूत नहीं माना जा सकता। एक भी साम्यवादी के मुंह से यह उत्तर नहीं निकल सकता; क्योंकि इन लोगों की फिलॉसफी में व्यक्ति को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। जो हो रहा है, जो हुआ है, वह उनके साधनों के दोष के कारण हुआ है। ये दोष उनके साधनों के गर्भ में रहे हैं।''

बापू ने कहा, ''किसी कच्चे मार्क्सवादी पर ऐसी बातों का प्रभाव पड़ सकता है, मगर जयप्रकाश-जैसों पक्के पर नहीं, जो आज सत्ता को बलपूर्वक छीनने की तैयारी कर रहे हैं।''

भाई कहने लगे, ''आप ठीक कहते हैं। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम उनका हृदय पलट नहीं सकते। हमें उनके साथ मिलकर काम करना होगा और उनकी विचारधारा में अहिंसा को जिस हदतक दाखिल किया जा सकता है, करना होगा। क्या इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जो आदर्श वे हमारे सामने रखते हैं, वही सच्चे हैं?''

बापू बोले, ''मैं यह नहीं कहना चाहता। कारण साफ है। वे लोग अपने अनुभव से कहते हैं कि अहिंसा चलनेवाली चीज नहीं। वे हमारी अहिंसा को भी आखिरी हिंसा की तैयारी के रूप में ही देख सकते हैं। मगर मैं कहता हूं कि मुझे आप लोगों की मान्यता से कुछ लेना-देना नहीं है। मेरे सामने एक चीज आ गई है। उसकी कितनी शक्ति है, वह क्या-क्या कर सकती है, यह बतौर एक वैज्ञानिक के मुझे देखना है। क्यूरी ने जब रेडियम की शोध की थी, तो पहले उनके पास रेडियम

प्रत्यक्ष नहीं आ गया था। उनके प्रयोगों से उन्हें पता चल गया था कि रेडियम-जैसी कोई चीज है सही, मगर जगत कहता था, "जबतक तुम रेडियम हमारे हाथ की हथेली पर रख नहीं देतीं, उसके लक्षण और गुणों का ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकतीं, तबतक हम नहीं मानेंगे।" सो वह काम करती गईं। आखिर थोड़ा-सा रेडियम उन्होंने तैयार किया, उसके गुणों की भी शोध की। तब जगत माना। पीछे दुनिया को उसी चीज का गुणाकार करके आवश्यकतानुसार रेडियम तैयार कर लेना पड़ा। वही बात अहिंसा के साथ भी लागू होती है। जगत के सामने जब-तक एक सम्पूर्ण प्रयोग नहीं आ जाता, तबतक उसे वह शंका की दृष्टि से देखेगा। शंका रखने का जगत को हक है। मैं इस प्रयोग को पूरा करने का प्रयत्न कर रहा हूं। परिणाम क्या होगा, यह मैं नहीं जानता।"

दोपहर को भंसालीभाई की खबर गुजराती अखबार से मिली। बीस रोज उपवास को हो चुके हैं। श्री मुन्शी उनसे चिमूर के रास्ते पर जाकर मिले थे। बापू कह रहे थे, "यह कैसी दुख की बात है कि अंग्रेजी अखबारों में दम नहीं है; नहीं तो भंसालीभाई की खबर छापे बिना वे कैसे रह सकते हैं? आज अखबारों में जो चल रहा है, वह लोकमत को ठीक रास्ते पर चलाने के लिए नहीं, सरकार का मुंह रखने के लिए ही हो रहा है।"

शाम को घूमते समय कुछ दिन पहले के इस प्रश्न के उत्तर में कि सत्याग्रही जड़वत-से क्यों लगते हैं, बापू ने कहा, "सत्याग्रही जड़वत लगते हैं, यह मैं स्वीकार कर लेता हूं। इसके कारण को ढूंढ़ो, तो पहली याद रखनेवाली बात यह है कि किस वर्ग में से मेरे पास सत्याग्रही आये। लेनिन के पास काम करनेवाले धनहीन थे; क्योंकि वह उनके लिए काम कर रहा था। कुछ भी हो, लेनिन को उनसे संतोष मानना था। इसी तरह मेरे पास जो कार्यकर्ता हैं, उनसे मुझे भी संतोष मानना है। दूसरी बात यह है कि जबतक वे लोग मेरे अंकुश के नीचे रहकर काम करते हैं, उन्हें जड़वत लगना ही है। कारण यह है कि सत्याग्रह का संचालक मैं रहा। मुझसे आगे उनमें से कोई कैसे जा सकता है? वे लोग अपनी बुद्धि चलाने लगे, तो उनका राजा-जी-जैसा हाल होगा। मैंने राजाजी से कहा था कि जबतक मैं हूं, तुम मुझे समझाने का प्रयत्न करो। न समझा सको तो अन्त में तुम्हें मेरी बात मानकर चलना चाहिए। वह कहने लगे, 'कभी नहीं।' तो मैंने कहा, अच्छी बात है। ऐसे ही कह तो जवाहर-लाल भी देता है कि 'कभी नहीं', मगर पीछे करता वही है, जो मैं कहता हूं। ये

सत्याग्रही भी दूसरे विषयों में तो जड़-से नहीं हैं। एक सत्याग्रह के विषय में हैं। मोतीलालजी-जैसे भी जबतक मेरे साथ काम करते थे, अपनी नहीं चला सकते थे। के० टी० शाह को देखो, मेरे साथ था तो हर बात मुझसे पूछकर लिखता था। उसका तेज ढंका रहता था। मेरा विरोधी बना, तो एकदम लोगों को वह एक महान अर्थशास्त्री और तेजस्वी आदमी लगने लगा। ऐसे ही कुमारप्पा है। आज वह मेरे साथ जड़वत लगेगा, अलग हो जाये, तो चमकने लगेगा। आर्यनायकम क्या कर सकता है ? गुरुदेव के पास वह बड़ा विद्वान था, मगर मेरे पास आकर वर्धा-शिक्षण-प्रणाली में पड़ा। वहां उसे मुझसे पूछ-पूछकर काम करना है; क्योंकि वर्धा-शिक्षण की उत्पत्ति मेरे मस्तिष्क में से हुई।" इस प्रकार की दो-चार मिसालें बापू ने और दीं, जहां बापू को छोड़ देने के बाद लोग एकदम ऊपर चढ़ गये-से लगते थे। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि सत्याग्रहियों में जड़ता-सी लगती है; पर यह वास्तविक जड़ता नहीं है।

आज सरोजिनी नायडू के विवाह को ४४ वर्ष हुए। वह आइसक्रीम बनाना चाहती थीं, मगर मैं और भाई नहीं खानेवाले थे, इसलिए उन्होंने भाई से सबके लिए फलों के रस का एक पेय तैयार करवाया। सबने बड़ी प्रसन्नता से पिया।

३ दिसम्बर '४२

आज दस दिन के बाद भंसालीभाई के विषय में बापू के तार का सरकार ने उत्तर दिया, "आपको प्रो० भंसाली के साथ तार या पत्र-व्यवहार करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। मानवता की दृष्टि से आप उनका उपवास छुड़वाना चाहें, तो आपकी सलाह उन्हें सरकार की तरफ से पहुंचादी जायेगी।" बापू को तो ऐसा उत्तर पाने के लिए तैयारी थी ही। तो भी अच्छा तो किसीको नहीं लगा।

आज 'हिन्दू' अखबार में प्रो० भंसाली के उपवास की छोटी-सी खबर थी। उसमें से नई बात यह मिली कि उपवास के शुरू होते ही श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने बापू को उनके उपवास के बारे में पत्र लिखा था। वह पत्र मध्यप्रदेश-सरकार की मार्फत दिल्ली-सरकार के पास गया। उसने उसे बापू के पास भेजने से इन्कार किया। खबर सुनकर बापू कहने लगे, "इस वक्त सरकार चाहे जो करे, मेरे मन में निराशा तो आती ही नहीं है। जो जहां पड़ा है, अपना-अपना काम अपनी शक्ति के अनुसार पूरी तरह मन से कर रहा है। मुझे इससे बहुत सन्तोष होता है।"

आज सुबह घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा छिड़ी। भाई कहने लगे,

"आप कहते हैं कि पूंजीपतियों के हृदय का परिवर्तन होगा और उससे आज की सारी अर्थ-व्यवस्था बदल सकेगी, मगर समाजवादी कहते हैं कि पूंजीवाद और निजी मिल्कियत की प्रथा मिटेगी तथा वातावरण बदलेगा, तभी एक वर्ग-विशेष के रूप में पूंजीपतियों का हृदय भी बतौर एक वर्ग के बदलेगा। जब आप भी कई बार कहते हैं कि दलील से ये लोग नहीं समझेंगे, परिस्थिति इन्हें अपने-आप समझा देगी, तो आप मार्क्सवाद के उस सिद्धान्त का समर्थन नहीं करते कि भौतिक वातावरण मूल वस्तु है ? विचारप्रणाली और आदर्शवाद उसका फल है, उसकी प्रजा है।"

बापू कहने लगे, "मैं इसे स्वीकार नहीं करता कि पंच महाभूत-जगत से परे कोई तत्व ही नहीं है; परन्तु इतनी बात है कि उसपर तत्व का अस्तित्व पांच इन्द्रियों द्वारा सिद्ध नहीं हो सकता। वह स्वयंप्रमाण है। मनुष्य के आंतरिक अनुभव द्वारा उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। जबतक हम यह चीज मानते हैं, तबतक हम यह बात स्वीकार नहीं कर सकते कि मनुष्य का आचरण उसके बाह्य वातावरण पर ही निर्भर है।"

मैंने पूछा, "ट्रस्टी बनने पर भी उन लोगों के मन में घमंड तो रह जायगा न कि हम धनपति हैं, हमने इतना त्याग किया है, और धनहीन उनकी दया और धन दान-रूप में स्वीकार करें, तो क्या अपने स्वमान की हानि न करेंगे ?"

बापू बोले "दान का सवाल ही नहीं उठता। ट्रस्ट के ट्रस्टी थोड़े ही ऐसा समझते हैं कि उन्होंने दान किया ! मैंने दक्षिण अफ्रीका में अपनी सब जायदाद का ट्रस्ट किया था, मगर न मेरे और न किसीके मन में भी कभी आता था कि मैंने दान किया है।"

मैंने कहा, "मगर आज हमारे पास ट्रस्टीशिप का कोई नमूना है, तो जमनालालजी का है। जमनालालजी की बहुत चीजें सेवा के काम में इस्तेमाल होती थीं। कितनी ही जायदाद उन्होंने दे भी डाली। तो भी उनके मन में यह तो था ही कि वह देते हैं—दान करते हैं।"

बापू कहने लगे, "जमनालालजी ने महाप्रयत्न किया, मगर वह पूरी तरह से ट्रस्टी बन नहीं सके। वह उनकी अपूर्णता का नतीजा था।"

भाई बोले, "एक व्यक्ति जिसके पास इतने साधन रहे, सत्संग रहा, अच्छा अनुकूल वातावरण रहा, उसके लिए अपने-आपको बदलना इतना कठिन सिद्ध हुआ, तो सारे-के-सारे पूंजीपति वर्ग का बदलना कितना कठिन होगा ?"

बापू कहने लगे, "नहीं, शुरू में रास्ता निकालनेवालों को मुश्किल आती है, मगर बाद में उसका अनुकरण करनेवालों के लिए वही चीज सरल बन जाती है। मैं मानता हूं कि मनुष्य-स्वभाव ऊर्ध्वगामी है। मैं डार्विन के सिद्धांत को नहीं मानता कि मनुष्य बंदर में से निकला है।"

भाई ने कहा, "तो क्या आप यह मानते हैं कि सब जीव अलग-अलग (separate creation) बने ?"

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं कह सकता कि मैं क्या मानता हूं, मगर बंदर से मनुष्य का विकास हुआ है, यह नहीं मानता।"

मैंने कहा, "तो अगर डार्विन का सिद्धांत सही है, तो आपके उसको न मानने से हानि हो सकती है; क्योंकि गलत जगह से शुरू करने से हमारे नतीजे भी गलत होंगे।"

बापू कहने लगे, "वह हो सकता है।"

इसपर भाई इसका उभय पक्ष सामने रखकर बोले, "वह तो तब न, जब हम मानें कि साइन्स ने जो कहा है, वह अंतिम वचन है। आज तो साइन्स का आधार ही बदल रहा है। हम क्या जानते हैं कि अन्त में क्या रह जायेगा, क्या नहीं ?"

बापू ने कहा, "इसका अर्थ यह होता है कि जबतक हमारी मान्यता गलत सिद्ध नहीं होती, इस श्रद्धा से चलें।"

: २८ :

गोलमेज परिषद के कुछ संस्मरण

दोपहर और शाम को बापू से भाई गोलमेज परिषद के बारे में कुछ बातें पूछते रहे। हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के लिए क्या-क्या कोशिशें हुईं, कैसे हिन्दू-मुस्लिम को एक-दूसरे से समझौता करने को कहकर दूसरी तरफ से सरकार चुपके से साम्प्रदायिक निर्णय तैयार कर रही थी। एक रोज बापू को मुसलमानों ने अपनी सभा में बुलाया। वहांपर सब बापू की चापलूसी करने लगे, "आपके लिए क्या मुश्किल है साहब, आप श्री जिन्ना की १४ मांगें पूरी कर दें।" आगा खां ने शुरू किया, "आप बड़े महात्मा हैं। आपके लिए इतना कर देना एक खेल है..." वगैरा-वगैरा। बापू

ने कहा, "आपको इस तरह मेरी हँसी उड़ाना शोभा नहीं देता। में कौन हूं ? आपके तो इतने अनुयायी हैं। मेरे पीछे कौन है ? मुझे कांग्रेस ने एक काम के लिए भेजा है। दूसरा काम करने का मुझे कांग्रेस ने अधिकार नहीं दिया। इसके लिए डा० अन्सारी की मदद की मुझे जरूरत है।"

शौकतअली भी कहने लगे, "सरकार, आप इतना कर द। आपके लिए यह कौनसी बात है ?" बापू कहने लगे, "शौकतअली, तुम्हारे लिए यह मुनासिब नहीं है। तुम आज कहां मेरे पीछे चलते हो ? फिर मैं तुम्हारा 'सरकार' कैसे रहा ?" वह कहने लगे, "नहीं सरकार, आप इतना कर दें, फिर हम आपके पीछे ही हैं।"

बापू ने आगे बात चलाते हुए कहा, "श्री जिन्ना तो पूरे राजनैतिक तरीके से पेश आये। एक बार उन्होंने मुझे अपने निवासस्थान पर बुलाया था। अंगीठी के सामने मेरे साथ जमीन पर बैठ गये। कहने लगे, 'आप तो बड़े महात्मा हैं। ये तो मामूली चीजें हैं। आप इनको मंजूर कर लें।' मैंने कहा, 'मैं यह सब तबतक नहीं कर सकता, जबतक डा० अन्सारी से पूछ न लूं। हिन्दू-मुसलमान के मामले में वही मेरा रहनुमा है। उसके बिना मैं एक कदम नहीं उठा सकता।' उन्हें वह मंजूर न था। फिर मजलिस में आये। बेगम शाहनवाज भी वहां थीं और वह भी उसी रंग में रंगी हुई थीं। उसी तरह मुझसे कहने लगीं, 'आप महात्मा हैं। इतना कर देने में क्या मुश्किल है ?' तब मैं रो पड़ा। मैंने कहा, 'और सब तो इस रंग में पूरी तरह रंगे जा चुके हैं, मगर औरत होकर तुम भी इसमें हिस्सा लेती हो—यह मुझसे सहन नहीं होता।' हिन्दू-मुसलमानों के समझौते की बातचीत टूटी और दूसरे रोज सुबह ही सरकार का साम्प्रदायिक निर्णय हमारे हाथों में आ गया। वह रातों-रात थोड़े तैयार हुआ था ! वह तो तैयार पड़ा ही था। ऊपर से मुंह-दिखावे के लिए हम से कहा जाता था कि आपस में फैसला करो, और ऐसा किया जाता था कि आपस में फैसला हो ही न सके। विलायत से आने से पहले मैं लॉयड जार्ज, बाल्डविन आदि से मिला था।"

लॉयड जार्ज से मिलने बापू जब गये थे, तब का एक मनोरंजक किस्सा उन्होंने कुछ दिन पहले सुनाया था। बापू वहां रात के १२-१ पर गये। एक पालतू बिल्ली, जिसके गले में एक पट्टा पड़ा था, आकर बापू की गोद में बैठ गई। बापू वहां करीब दो घंटे बैठे। सारा समय बापू उसकी पीठ पर हाथ फिराते रहे और वह बैठी गुर्राती रही। लॉयड जार्ज ने कहा, "दो रोज पहले यह बिल्ली एकाएक यहां

आ पहुंची। मैंने सब मित्रों से पूछा कि किसकी है? लेकिन पता नहीं चला।" दूसरे रोज लॉयड जार्ज के यहां से आदमी पूछने आया, "क्या वह बिल्ली आपके साथ आई है?" बापू ने कहा, "नहीं।" बिल्ली बापू के आने के बाद एकाएक गायब हो गई थी। बड़ा प्रयत्न किया गया; परन्तु कुछ पता नहीं चला कि वह कहां चली गई।

बापू कहने लगे, "लॉयड जार्ज ने सब बातें धीरज से सुनीं, पूरी सहानुभूति दिखलाई। कहने लगे, "आपका केस तो सम्पूर्ण है। जब आयरलैण्ड का सवाल चलता था, तब सत्ता मेरे हाथ में थी। आयरलैण्ड की मांग का विरोध किया, मगर बाद में मैंने देखा कि अब उनके साथ समझौता होना ही चाहिए और वैसा ही किया। यहां भी एक-दो हफ्ते में फैसला होना चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। मगर आज मेरे पास सत्ता नहीं। मैं किसी का नुमाइन्दा नहीं हूं। मेरी आवाज अरण्य-रोदन के समान है। मैं किसी चीज में दखल नहीं देता।"

बापू ने आगे कहा, "बाल्डविन तो मुझसे मिलना ही नहीं चाहता था। सर सैमुएल होर ने उनसे मिलने का प्रबंध कर दिया। वह भी लार्ड लिनलिथगो की तरह बाह्य शिष्टाचार खूब बरतता था। बाल्डविन के पास तो मैं पंद्रह मिनट भी नहीं बैठा। मैंने अपना केस रखने की कोशिश की। बताया कि हम तो ऐसा मानते हैं कि अंग्रेजी राज्य में हिन्द का हमेशा अहित ही रहा है। आप लोगों से हमने कुछ सीखा है, मगर वह आप लोगों के सम्पर्क में आने के कारण। आप राजा न होते और हम आपके सम्पर्क में आते, तब भी सीखते—तब शायद ज्यादा सीखते। आपके पास सुन्दर भाषा है। उसमें इतना काम किया गया है, इतना साहित्य लिखा गया है। उसकी हमें कदर है। हम हिन्दुस्तान में सीमित होकर नहीं रहना चाहते। सारे जगत के साथ सम्बन्ध रखना चाहते हैं, मगर आजाद होकर। हमें स्वतन्त्रता चाहिए। अंग्रेजी भाषा में 'इंडिपेंडेन्स' शब्द का जो अर्थ है, वह स्वतन्त्रता हमें चाहिए, किसी खास तरह की नहीं; क्योंकि हम मानते हैं कि हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज बुरी चीज है। वह कहने लगा, 'इसमें हमारा मतभेद है। मुझे तो अपनी कौम का और भारत में अपने शासन का गर्व है।' मैंने कहा, 'ऐसा है, तो मुझे आपसे और कुछ नहीं कहना।'

"वेजवुड बेन उसी समय हिन्द-मंत्री के पद से हटा था। उससे मैंने पूछा, 'यह अल्पमतवालों के प्रतिनिधि आपने किस तरह चुने हैं? मुसलमानों में डा० अन्सारी को कैसे छोड़ा जा सकता था? यह हुआ कैसे? मैं समझता था कि हिन्द सरकार

ने अन्सारी के रास्ते में रुकावट डाली होगी; क्योंकि विलिंगडन से जब मैंने कहा कि अन्सारी को जाना चाहिए, तो उसने कहा था कि मैं उन्हें नहीं जाने दे सकता।' मगर वेजवुड बेन ने कहा, 'इस बारे में मुझे कबूल करना चाहिए कि भूल मेरी हुई। मुसलमानों ने कहा कि अन्सारी को नहीं बुलाना चाहिए। वह आयेगा, तो हम नहीं बैठेंगे। मैंने उनकी बात मान ली, मगर अब देखता हूं कि वह मेरी भूल थी। लेकिन अब हो क्या सकता है?' वेजवुड बेन ने भी स्वीकार किया कि मेरा केस सही था। उन्होंने मेरे साथ खुलकर बातचीत की।

"सर सेमुएल होर से तो बहुत बार मिलता था। इतना मुझे कहना चाहिए कि वह मेरे साथ साफ दिल से बात करता था। यह नहीं था कि मेरे साथ एक बात और दूसरे के साथ दूसरी बात। सबके साथ उसने एक ही बात की। वह साफ कहता था, 'सत्ता तो हमारे हाथ की बात है। वह तुम्हें हम पर ही छोड़नी होगी।' मैंने कहा, 'आजादी तो जब आयेगी तब, मगर आज इतना तो हो कि उस आनेवाली आजादी की कुछ झलक आपके कामों में दिखाई दे। कानून चाहे कुछ भी हो, लेकिन प्रथा तो ऐसी बने कि हमारे कामों में हमारी सलाह से आप चलें। अभी घनश्यामदास और पुरुषोत्तमदास हमारे अर्थशास्त्री हैं। अर्थशास्त्र में वे हमारे नुमाइंदे हैं। हिन्द के अर्थशास्त्र के मामलों में आप उनकी सलाह से चलें।' मगर वह कहने लगा, 'यह तो हो नहीं सकता।'

"संकी तो बिल्कुल अवसरवादी आदमी था। जयकर-सप्रू वगैरा उसकी तारीफ करते थे। मुझे इससे आश्चर्य होता था।"

भाई कहने लगे, "कई लोग आजतक टीका करते हैं कि क्यों अकेले आप गोलमेज परिषद में गये। वे नहीं समझते कि वहां का काम कितना कठिन था। अगर आप अकेले नहीं होते, तो सब बिगड़ने ही वाला था।"

बापू बोले, "इसमें तो शक ही नहीं। इतना कठिन काम था कि अगर मैं अकेला न गया होता, तो हमारी धज्जियां उड़ गई होतीं। ऐसे मौकों पर अकेला आदमी ही काम कर सकता है।"

भाई कहने लगे, "अल्पसंख्यकों के बारे में जब समझौते की बातचीत टूटी, तब जेम्स मिल्ज तो करीब रोने जैसा हो गया था। कहने लगा, 'ये लोग कहते हैं कि अब हमने गांधी का खात्मा कर दिया है।' मगर जब आपने साम्प्रदायिक निर्णय पर भाषण दिया, तब वह खुश हो गया, नाचने लगा और कहने लगा, 'अमरीका से

तार आते हैं कि हम अब समझे।' और श्वेब ने यहांतक कहा था कि इस्लाम कबूल करने के सिवा बापू ने जो कुछ उनकी ताकत में था, वह सब उन लोगों को संतोष देने के लिए किया। मगर कुछ फायदा न हुआ। और सच्ची बात तो यह है कि अगर बापू मुसलमान होने को तैयार हो जाते, तो भी मुझे यकीन नहीं कि वे लोग उन्हें स्वीकार कर लेते।''

: २६ :

चरखा और ग्रामोद्योग

४ दिसम्बर '४२

सरकार के पत्र का बापू ने उत्तर दिया कि उन्हें पहले भंसालीभाई के उपवास का सच्चा कारण जानना चाहिए। जबतक उन्हें यकीन न हो जाय कि भंसालीभाई का उपवास गलत है, वह उन्हें उपवास छोड़ने की सलाह नहीं दे सकते। अखबारों की रिपोर्ट सही मानी जाय, तो उनके उपवास का खास कारण है। इतने महत्व के तार का जवाब सरकार ने दस दिन बाद दिया। इसपर बापू ने अफसोस जाहिर किया।

सुबह घूमते समय चरखे और ग्रामोद्योग के बारे में चर्चा चल पड़ी। बापू कहने लगे, ''अकेले चरखे और ग्राम-उद्योगों से शायद हम यह नहीं कर सकेंगे। साथ में जमीन का सवाल भी हल करना होगा। जमीन के बारे में मेरा ज्ञान अपूर्ण है। सिर्फ पशु और मनुष्यों की मेहनत से ही हम जमीन में से कितना धन पैदा कर सकते हैं, यह हिसाब हम आजतक नहीं निकाल सके। मगनलाल होता, तो बहुत-कुछ हो गया होता। खेती के साथ-ही-साथ गोरक्षा का भी सवाल पड़ा है। मेरे पास राय-बहादुर गंगाराम के खत आया करते थे। वह बड़ा इन्जीनियर था। उसने मुझसे कहा, 'मुझे मशीन दाखिल करने दो। देखोगे कि कितनी जल्दी मैं साबरमती को नफा देनेवाली संस्था बना देता हूं। मैं आपका विशेषज्ञ बनूंगा। पीछे मैं आपकी शक्ति का उपयोग कर लूंगा।' मैंने ना की; क्योंकि मैं जानता हूं कि पशु और आदमी की मजदूरी से यह काम हो सकता है, मगर उसे सिद्ध करने के लिए यह करके बताना चाहिए। सरदार ने बारडोली में मशीन एक हदतक दाखिल की है। मैं अपने प्रयोग सब उनसे नहीं करवाना चाहता, मगर मुझे तो यह खुद करके देखना

ही है।"

भाई कहने लगे, "यही तो मैं आपसे उस रोज भी कह रहा था कि हमें अपनी आवश्यकताओं का माप निकालना चाहिए और फिर हिसाब लगाना चाहिए कि क्या अकेले मनुष्य और जानवर की मेहनत से वे पूरी हो सकेंगी या हमें मशीन की मदद लेनी होगी। मशीनें लेनी ही होंगी, तो हम उन छोटी-छोटी मशीनों को पैदा करेंगे, जो मजदूरों की जगह न लें, बल्कि उनकी मजदूरी की शक्ति बढ़ायें।"

बापू बोले, "हिसाब एक हदतक मैंने लगाया है। सबको पूरा अन्न चाहिए, आधा सेर दूध और फल, साग-भाजी, घी, तेल, खांड़—सबको मिलनी चाहिए। कपड़ा तो चाहिए ही, साथ ही घर भी अच्छे होने चाहिए। सो इतनी कम-से-कम जरूरतों की मैंने हद बांधी है। यह पूरी होनी चाहिए। अमरीका की तरह मैं हरएक के लिए मोटर पैदा करने का ध्येय नहीं रखता; सबके पास खाली समय भी चाहिए, ताकि वे अभ्यास करके अपनी बुद्धि का विकास कर सकें।"

मैंने कहा, "यह तो आपकी कम-से-कम मर्यादा है। अगर बाद में इतनी मज-दूरी और समय हमारे पास रहे कि हम मोटर बना सकें, तो क्यों न बनायें?"

भाई कहने लगे, "हमें कोई मर्यादा तो रखनी ही पड़ेगी। हम बड़ी मशीनें दाखिल करेंगे, तो वे पीछे हाथ की मेहनत, छोटे उद्योगों और छोटी मशीनों को खा जायंगी।"

मैंने कहा, "मैं तो यह समझी हूं कि जीवन के लिए जो चीजें आवश्यक हैं, जैसे रोटी, कपड़ा, उनके लिए हमें हाथ की मेहनत का ही आश्रय लेना है। बाद में दूसरी चीजें रह जायंगी। उनके लिए मशीन इस्तेमाल करने में कोई हर्ज नहीं। इतना ही नहीं, बल्कि उसकी आवश्यकता है, जैसे डाक्टरी सामान की बात लें, सूक्ष्मदर्शक यन्त्र है, शीशे का नाजुक सामान है, यह सब हम हाथ से ही थोड़े बना सकते हैं! उन सबको छोड़ना अथवा विज्ञान की प्रगति का त्याग करना शक्य नहीं, योग्य भी नहीं।"

बापू कहने लगे, "यह ठीक है।" भाई कहने लगे, "नहीं, हमें इनमें से कई चीजों का त्याग करना ही पड़ेगा। विज्ञान के विकास से प्रगति ही हुई है, ऐसा भी हम कैसे निश्चय कर सकते हैं? डाक्टरी ने लोगों का स्वास्थ्य सुधारा नहीं है।"

मैंने कहा, "जहां डाक्टरी ने सच्ची प्रगति की है, वहां उसने कई बीमारियां जड़ से उखाड़ दीं। लोगों की आयुष्य बढ़ी है; मृत्यु-संख्या कम हुई है।"

भाई कहने लगे, "विज्ञान से जितनी बीमारियों का इलाज हुआ है, अस्वाभाविक जीवन के कारण उनसे अधिक बीमारियां पैदा हो गई हैं।"

शाम को घूमते समय फिर ट्रस्टीशिप पर चर्चा चली। भाई कहने लगे, "धनवान अपने-आप अपने धन का त्याग कर दें और समाज के सेवक बन जायें, तो अच्छा है, मगर वह तो बिल्ली के गले में घंटी बांधने-जैसी बात हुई। बिल्ली के गले में घंटी हो तो चूहे अपने-आप बच जायें, मगर सवाल यह है कि बांधे कौन ?"

बापू कहने लगे, "ऐसा कुछ है ही नहीं। हमें धनिक वर्ग मिटाना है। उसके लिए धनवानों को मार डालने की आवश्यकता नहीं। उनके धन, उनकी कला और शक्ति का उपयोग हम लोगों के लिए कर लेते हैं। ये आसान-से-आसान और सस्ते-से-सस्ते रास्ते हैं।"

भाई बोले, "इसका अर्थ यह हुआ कि आखिर कारबार चलाने के लिए शासन-तंत्र को कोई-न-कोई एजेण्ट चाहिए ही। दूसरों को ढूंढ़ने के बदले हम उन्हीं धनवानों को ले लेते हैं। उनसे कहते हैं कि आजकल तुमने अपने लिए पैसा इकट्ठा किया, उसे सम्हाला। अब वही काम तुम शासन-तंत्र के लिए करो। फर्क इतना होगा कि अब पैसा तुम्हारे नाम नहीं जमा होगा, बल्कि शासन-तन्त्र के नाम होगा। तुम्हारे नाम भी हो, तो ट्रस्टी की हैसियत से। तुमको आत्म-रक्षा के साथ-साथ नई समाज-रचना में हिस्सा लेने का अनमोल अवसर मिलता है। इससे तुम्हें संतोष होना चाहिए, नहीं तो तुम्हें मिटना होगा।"

बापू कहने लगे, "यह बात तो ठीक है, लेकिन अहिंसा के बारे में जिनकी अश्रद्धा है, वे इन दलीलों को स्वीकार नहीं कर सकते। है भी ठीक, उनकी जगह मैं भी ऐसा ही करता।"

भाई ने कहा, "यह ठीक है, आज पक्के साम्यवादियों का तो एक छोटा-सा गिरोह है, मगर एक बड़ा गिरोह ऐसे लोगों का है, जो समाजवादियों के और हमारे बीच में है। उन्हें अहिंसा में अश्रद्धा नहीं, मगर उनके सामने हम शुरू से अंत तक एक पूरी तस्वीर नहीं रख सके कि हम किस प्रकार की समाज-रचना करना चाहते हैं, वह कैसे बनेगी और कैसे उसे सफल बनाने की आशा रखते हैं। इसलिए वे लोग डांवाडोल हैं। यह सवाल-जवाब उनकी मदद के लिए है, जो काम तो करते हैं, मगर कच्ची बुद्धि से।" बापू ने इस दलील के साथ अपनी सहमति बताई।

आज बापू को बहुत कब्ज था। स्नान से पहले उन्होंने एनीमा लिया। वैसे

तबीयत ठीक थी।

५ दिसम्बर '४२

आज महादेवभाई को गये १६ हफ्ते पूरे हो गये हैं। जब वक्त जाने लगता है, तो बस भागने लगता है। इस जेल में बैठे हुए भी पता नहीं लगता कि कब हफ्ता खतम हो जाता है। शाम को महादेवभाई की समाधि पर शंखों का ॐ बनाया। करीब सारा समय उसीमें गया। घूमने को दस ही मिनट मिले। मैंने बापू से कहा, "आज सवा छः बजे तक घूमिये।" मगर वह नहीं माने। ऐसा करने से उनका सारा कार्यक्रम बिगड़ता था। वह यन्त्रवत समय पर चलते हैं। कल ही सुबह कह रहे थे, "मैं अपने-आपको पूरी तरह नियम में रखता हूं। यहांपर नियम की कोई आवश्यकता नहीं, मगर तो भी मेरा सारा कार्यक्रम घड़ी की तरह चलता है। अहिंसक व्यक्ति के लिए व्यवस्थित चित्त और व्यवस्थित कार्यक्रम अत्यावश्यक है। इसके सिवा अहिंसा काम नहीं कर सकती।"

आज सुबह घूमते समय भाई ने पूछा, "कांग्रेस मिनिस्ट्री के पास तो सत्ता नाममात्र की ही थी। तो भी जितनी थी, उससे हम पूंजीपतियों को तो छू भी नहीं सके। पूरी सत्ता मिल जायेगी, तब भी अहिंसक मर्यादा में रहकर हम क्या कर पायंगे, यह समझ में नहीं आता, क्योंकि देश में और स्वयं कांग्रेस में धनवानों का स्वार्थ इतना फैला हुआ है कि उन्हें उखाड़ फेंकना बहुत कठिन काम है।"

बापू ने उत्तर दिया, "अहिंसा के द्वारा यह चीज निकाली जा सकती है, ऐसी मेरी मान्यता है। शुरू-शुरू में जब सत्याग्रह की लड़ाई यहां छिड़ी, सारे देश में एकदम कैसी जागृति की लहर फैल गई थी? मोतीलालजी-जैसों को लगा कि बस सच्ची साहबी त्याग में ही है। उन्हें लगता था कि अब आजादी आ रही है, मगर जब नहीं आई और मैं अंकुश रखता ही गया, तब वे लोग कुछ पीछे भी गये। दूसरा आनंदभवन बना और पहले से भी ज्यादा शानदार बना। उसमें जवाहरलाल भी शामिल हुआ। खादी तो रही, मगर खादी की आत्मा चली गई।

"पीछे कांग्रेस के चुनाव के समय लोगों में इतना उत्साह भर आया था कि कांग्रेस का चुनाव में ऐसा कहना चाहिए कि कुछ खर्च नहीं हुआ। कई लोगों ने मन में शंका की थी कि कांग्रेस इन चीजों में सफल नहीं होगी। कांग्रेस के पास चुनाव लड़ने के लिए पैसा कहां है, मगर जब लड़े, तो सब हैरान रह गये। सब जगह जबरदस्त बहुमत से कांग्रेस जीती और उड़ीसा जैसी जगह में, जहां हमारा काम सुव्य-

स्थित नहीं था, जोरदार जीत हुई। तो तात्पर्य यह कि हरएक इन्कलाब के साथ एक खास जागृति और उत्साह की लहर आती है, जो बहुत काम कर लेती है। इसके असर के नीचे लोग अपने-आप खुशी से त्याग कर सकते हैं। आम जनता की जाग्रति को देखकर उसके दबाव और प्रवाह के सामने पूंजीपति खड़े नहीं रह सकेंगे। साथ ही पूंजीपतियों का बल आज कांग्रेस सरकार की बंदूक पर निर्भर है। जब वह बंदूक नहीं रह जायेगी, तो उन्हें जनता की मांग पूरी करनी ही पड़ेगी। वे समझ जायंगे कि अब इसके सिवा और चारा ही नहीं।

"वे अपने-आप त्याग न करें, तो दूसरा तरीका गृहयुद्ध का है। मुझे बहुत बार ऐसा लगता है कि जब सच्ची आजादी आयेगी, तब हिन्दुस्तान को गृह-युद्ध की मंजिल में से गुजरना पड़ेगा, मगर गृह-युद्ध के डर से थोड़े ही हम समाज-सुधार के कामों को रोक सकते हैं! गृह-युद्ध की नौबत आई और लोगों में अहिंसा है—जैसाकि मैं मानता हूं—तो अराजकता आई तो भी नाममात्र की होगी। दस-पंद्रह दिन में फिर से देश में अमन-चैन हो जायेगा। मगर हम में अहिंसा नहीं है तो लम्बे गृह-युद्ध का संकट आ सकता है। प्रलय के बाद अगर मेरा कोई प्रतिनिधि जिन्दा रहा, तो वह फिर से अहिंसा का राज्य खड़ा करने का प्रयत्न करेगा।"

भाई कहने लगे, "अगर सत्ता हमारे हाथ में आ जाय, तो क्रांति का जोश काम कर सकता है। मगर क्रांति हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोगों का उत्साह हमेशा रहनेवाली चीज नहीं है। लोग फिर से सो जाते हैं। इसलिए सत्ता अगर एकदम से हमारे हाथ में आये, तब बहुत-कुछ काम क्रांति का जोश कर लेगा। बाकी का लोकमत कानून द्वारा करवा लेगा; लेकिन अगर सत्ता धीमे-धीमे आये, तो यह चीज काम नहीं दे सकती। पूंजीपति नये वातावरण में अपने पांव धीमे-धीमे जमा लेंगे और फिर उन्हें हिलाना कठिन होगा।"

बापू ने कहा, "यह ठीक है। सत्ता धीमे-धीमे आये, तब तो गृह-युद्ध भी आने ही वाला है, ऐसे समझो।"

भाई कहने लगे, "...इस चीज को क्यों नहीं समझते?"

बापू बोले, "तुम्हें समझना चाहिए कि...ने अहिंसा को छोड़ दिया है।"

भाई ने कहा, "अहिंसा को नहीं, उन्होंने क्रांति को भी छोड़ दिया है।"

बापू कहने लगे, "वह तो होना ही था। हिंसक क्रांति...मानते नहीं हैं, और अहिंसा को छोड़ा तो अहिंसक क्रांति को भी छोड़ना ही था।"

भाई बोले, "अंग्रेज जायं, तो एक तो यह हो सकता है कि सत्ता प्रजा के हाथों में आ जाय। दूसरे यह हो सकता है कि निजाम का-सा कोई भी राजा, जिसने हवाई जहाजों और टैंकों के बनाने की फैक्टरियां खोल रखी हैं, टीपू सुलतान की तरह दक्षिण में तो कम-से-कम अपनी सत्ता कायम करने की कोशिश करे ही।"

बापू कहने लगे, "यह सब हो सकता है। मुझसे पूछो तो मुझे लगता है कि यद्यपि यह सम्भव है, मगर ऐसा बनेगा नहीं। अंग्रेजों के पास आज कुछ नहीं है। मात्र अपने नाम से वे काम चला रहे हैं। निजाम के अलावा दूसरे राजाओं के पास 'नाम' तो कुछ नहीं, मगर कांग्रेस के पास है। पचास वर्ष से कांग्रेस देश की सेवा कर रही है। जब कांग्रेस वैधानिक नीति पर चलती थी, तब भी उनकी नीति खुली थी। पिछले बीस वर्षों से तो कांग्रेस ने अहिंसा की ही नीति अख्तियार की है और जनता को अहिंसा की तालीम दी है। दूसरी ऐसी कोई संस्था नहीं, जिसने इतने समय से जनता की ऐसी अनन्य सेवा की हो। सो कांग्रेस के पास नाम है। यह ठीक है कि राजा लोग गुंडों को इकट्ठा करके रखते हैं। उनके द्वारा अपना काम करवाते हैं, मगर समय आने पर गुंडे भी कांग्रेस के साथ खड़े होनेवाले हैं।"

सुबह चार बजे बापू ने अण्डी का तेल लिया। कल के एनीमा से कब्ज मिटा नहीं था।

६ दिसम्बर '४३

आज सुबह और शाम को घूमते समय फिर वही चरखे और ग्रामोद्योग का पुराना सवाल उठा। बापू कहने लगे, "मैं पहले मानता था कि यह जरूर हो सकता है। मगर जैसे-जैसे गहरा विचार करता हूं, कठिनाइयां सामने आती हैं। अगर आदमी को मात्र कपड़ा ही पैदा करना हो, तो वह खुद कातकर जरूर कर सकता है, मगर हिसाब लगाने पर पता चला है कि कपड़ा मनुष्य की आवश्यकताओं का बहुत छोटा हिस्सा है। चरखे पर दिन-भर मेहनत करके मजदूर को उसकी आवश्यकता के लिए काफी पैसे नहीं मिलते। हम मजदूरों का मेहनताना बढ़ाना चाहते हैं, मगर सब जगह बढ़ा नहीं सकते। इसपर से विनोबा तो इस नतीजे पर आया है कि सब अपने हाथ से कातें, तकली पर कातें और अपना कपड़ा तैयार करें। आज जो हम दूसरों से कतवाते हैं, वह ठीक नहीं है। उससे आगे बढ़कर अब वह तुनाई पर आया है। विनोबा का प्रोग्राम कब पूरा होगा, यह मैं नहीं जानता। सब लोग तुनाई करके तकली द्वारा अपना कपड़ा तैयार करने लगेंगे, इसमें मुझे शक है; लेकिन

विनोवा ने अपनी कल्पना के समाज में तकली व तुनाई से वस्त्र-स्वावलम्बन के प्रश्न को हल किया है।

"पहले हम इस नतीजे पर पहुंचे कि अकेले चरखे से तो काम नहीं हो सकता। तब ग्रामोद्योगों को साथ लिया, मगर उनको साथ लेने पर भी अनेक कठिनाइयां हैं। अब मैंने सोचा है कि जमीन को साथ रख सकें तो काम निपटेगा। जमीन में से कितनी उपज मनुष्य और पशु की मेहनत से निकल सकती है, इसका हिसाब लगाने का रहा। आज सत्ता हमारे हाथ में नहीं है। जमीन को कैसे हाथ में लेना और बांटना होगा, इन प्रश्नों के बारे में हम कुछ नहीं जानते। इसीलिए मैं तो आज जानता नहीं हूं कि अन्त में मैं कहां जाकर खड़ा हूंगा।"

भाई बोले, "यह दुख की बात है कि हिन्दुस्तान में इतने बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों के होते हुए भी उनमें से एक भी अच्छी तरह चरखे और ग्राम-उद्योग के अर्थशास्त्र में गहरा नहीं उतरा।"

बापू कहने लगे, "उसका कारण है। के० टी० शाह को लो। जब वह आय, तो ऐसा लगता था कि वह हमें काफी दे सकेंगे। वह ग्राम-उद्योग की भावना से उस वक्त भरे थे। एक हद तक आगे बढ़े, मगर पीछे रुक गये। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की योजना के समय जवाहरलाल मुझे उसमें खींचना चाहते थे। मगर मैं नहीं खिचा। मैंने देख लिया कि इसमें मेरा स्थान नहीं है। हमारी चीज का उस योजना के साथ कोई मेल नहीं था। कुमारप्पा भी अपने-आप भांप गया कि इसमें से कुछ फायदा नहीं निकलेगा और अलग रहा, मगर सतीशबाबू उसमें गये। सतीशबाबू ने मेहनत की, मगर जो रिपोर्ट लिखी, वह मुझे फड़वानी पड़ी। फिर से लिखवाई। मामला वहीं पर रुक गया। बाकी के अर्थशास्त्रियों में से एक ही था, जिसने हमारी चीज को समझने की कोशिश की, मगर वह भी बहुत आगे नहीं बढ़ सका। बात यह है कि वे लोग अपने ढांचे को नहीं छोड़ सकते। अपने ढांचे में इस नई चीज को ढालना चाहते हैं। सो प्रगति अपने-आप रुक जाती है। यह चीज मुझे सोच में डालती है। क्या मेरी कल्पना में ही कोई आंतरिक दोष है? क्या चरखे और ग्रामोद्योग से सारे देश का काम चलाने, मशीन की जगह हाथ की मेहनत से काम निकालने की कल्पना ही मूर्खता से भरी है? अगर ऐसा सिद्ध हो तो मैं अपनी भूल स्वीकार कर लूंगा। आज तो मैं श्रद्धा से चल रहा हूं। हाथ से हम किसी हदतक अपना काम पूरा कर सकते हैं, यह देख तो लूं। पीछे जो होना होगा, वह होगा। यह सब मैं बता रहा हूं

यह समझाने के लिए कि मैं कितना जाग्रत हूं और मेरा मन नये विचारों के प्रति कितना खुला है। मगर मैं इन विचारों से अपनी श्रद्धा को डगमगाने नहीं देता। मैं तो इसी श्रद्धा से चल रहा हूं कि हाथ की और पशुओं की मेहनत से हम अपना सब आवश्यक काम निकाल सकते हैं। अगर मैं इस श्रद्धा से न चलूं, तो मैं जिन संस्थाओं को चला रहा हूं, वे भी उखड़ जायें। मशीनों की मैं चिन्ता नहीं करता। इनकी चिन्ता करनेवाले दूसरे पड़े हैं। मैंने कहा है कि रेल का नाश हो जाये तो मेरी आंख से एक आंसू नहीं निकलनेवाला, बैलगाड़ी से काम चलायंगे। मगर आज मैं हिन्दुस्तान को यह समझा सकूं कि रेल का त्याग करो, इसमें मुझे शक है। सो मैं अपना काम किये जाता हूं। परिणाम जो आना होगा, वह आयेगा।"

भाई ने कहा, "ग्रामोद्योगों को सफल बनाने के लिए एक खास तरह का आर्थिक ढांचा चाहिए। एक खास तरह की समाज-रचना चाहिए। उसमें हमें कितनी ही चीजों का त्याग करना होगा। अपनी जरूरतों की मर्यादा बांधनी होगी। आपको जो ग्रामोद्योगों के सफल होने में शंका है, वह आज के प्रतिकूल वातावरण में है कि अनुकूल वातावरण में भी यह चीज सफल नहीं हो सकती ?"

बापू कहने लगे, "मेरे सामने यह सवाल ही नहीं उठता। मेरे सामने तो प्रतिकूल वातावरण पड़ा है। इसमें से मुझे रास्ता काटना है। वह मैं श्रद्धापूर्वक कर रहा हूं।"

भाई बोले, "हम जरा समझ लें कि हम कहांतक जा सकते हैं, तो हमारा रास्ता साफ हो जायेगा। रेल को हम निकालना चाहते हैं, तो इसीलिए कि वह माल को खींचकर हमारा शोषण करती है। शीघ्र सफर करने के साधन से हम रेल को निकालकर भी रख सकते हैं, जैसे मोटर, हवाई जहाज। वे सार्वजनिक नहीं हैं। माल ढोने के लिए नहीं है—इसीलिए उनसे हानि कम-से-कम होगी।"

बापू कहने लगे, "मोटर और हवाई जहाज रखोगे, तो अपनी योजना की अपने-आप जड़ काटोगे, मगर जैसे तुम कहते हो, ऐसा कुछ हो भी, तो आज तो मेरे सामने वह चीज नहीं आती।"

भाई ने कहा, "समुद्र-किनारे हम पवन-चक्की का उपयोग कर सकते हैं। पर्वतों के इलाकों में पन-चक्की का, गरम प्रदेशों में सूर्य-चक्की का उपयोग कर सकते हैं। ये सब हमारी योजना में आ सकते हैं न ?"

बापू कहने लगे, "हां और नहीं। एक तरफ तो मैं पवन-चक्की से बहुत आगे बढ़

गया हूं। मैंने कहा, आवश्यकता हो, तो अवसर आने पर हम गांव-गांव में बिजली लायेंगे। वल्लभभाई बारडोली आश्रम में बिजली लाये। मुझसे कहा था कि मैं साबरमती में बिजली दाखिल करनेवाला हूं। मैंने कहा कि करो, तुम्हें छुट्टी है। मैं खुद नहीं करूंगा। मुझे मेरे रास्ते जाने दो। मुझे १६०८ के साल से दो चीजें विरासत में मिली हैं। हाथ की मेहनत और पशुओं की मेहनत। मैं अपनी श्रद्धा और अपनी चलाई हुई संस्थाओं की श्रद्धा को अटल रखकर उन्हींपर मेहनत करना चाहता हूं और कर रहा हूं। दिमाग में कई खयाल भरे हैं, मगर मैं उन्हें ऊपर नहीं आने देता। जिन विचारों का आज उपयोग नहीं, उन्हें बाहर निकालकर क्यों अपने-आप को तकलीफ दूं और दूसरों की बुद्धि को चक्कर में डालूं?"

भाई बोले, "आपके दिमाग में तो विचार हैं, मगर दूसरों के दिमाग में नहीं हैं। वे समझते हैं कि आप तो चरखे से आगे बढ़ना ही नहीं चाहते और इससे आगे विचार किया ही नहीं जा सकता।"

बापू कहने लगे, "भले ऐसा सोचें, मगर काम तो करते हैं न? वह काफी है।"

भाई ने कहा, "काम करनेवाले तो काम करते हैं, मगर दूसरे कितने ही ऐसे भी हैं कि जो हमारी विचार-प्रणाली में दाखिल होना चाहते हैं, इसे स्वीकार करना चाहते हैं। अगर उन्हें पता लगे कि आप किस हदतक मौका आने पर आगे जा सकते हैं, तो वे उत्साह से आगे बढ़ें और आपके साथ चलें। आज वे निरुत्साह होकर पीछे हट जाते हैं।"

बापू कहने लगे, "उसमें भी कोई हर्ज नहीं। हम कुछ कर सकते हैं, यह सिद्ध होगा तो उनकी निराशा अपने-आप दूर हो जायेगी। आज तो मैं हाथ की मेहनत और जानवर की मेहनत इन दोनों में से क्या शक्य है, इसीमें उतरना चाहता हूं। इससे आगे विचार करने की इच्छा ही नहीं होती।"

रात को ७-२५ पर बापू ने मौन लिया। खुराक में आज बादाम बढ़ाये हैं। इनसे कब्ज दूर होगा, ऐसा लगता है।

७ दिसम्बर '४२

आज बापू का मौन था। घूमने के समय बातें नहीं हुईं। दोपहर के समय बापू के सोने के लिए बिस्तरा धूप में लगाया। लकड़ी की जाली के कारण पूरी धूप तो आती नहीं, तो भी काम चल गया।

महादेवभाई की समाधि पर परसों सफेद शंखों का ॐ बनाया था। मगर

किसी बकरी या गाय को लगा होगा कि सफेद मूली का खेत है। कल आकर सब तोड़ गई। आज घास को फिर नये सिरे से बनाया। घूमने को दस ही मिनट बचे।

रात में सरोजिनी नायडू को फिर पोस्त का सेंक दिया और गरम पानी में उनकी बांह रखी। वह कहती हैं कि इससे उन्हें लाभ हुआ है।

मीराबहन की तबीयत अच्छी है। दो-तीन रोज से उन्होंने भैंस का दूध छोड़कर गाय और बकरी का दूध लेना शुरू कर दिया था। आज कहने लगीं कि गाय का दूध पतला है और बकरी के दूध से बू आती है। घर की गाय हो, तो अच्छा दूध मिल सकता है। बकरी का दूध फौरन ही पिया जाय, तभी अच्छा होता है। यह तो यहां हो नहीं सकेगा। फिर भैंस का दूध ही उन्हें लेना पड़ेगा।

८ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय फिर ग्रामोद्योगों और चरखेवाले सवाल की चर्चा आगे चली। देश की जरूरतों का माप निकालने के सिलसिले में बापू कहने लगे, "तुम्हीं यह हिसाब क्यों न करो ? माना कि मुश्किलें हैं, मगर जो आदमी ठीक दृष्टि-बिन्दु से काम करता है, वह उन्हें हल कर लेता है। मार्क्स के सिवा पश्चिम में और बहुत-से अर्थशास्त्री हो गये हैं। मगर मार्क्स ने सारे प्रश्न को नये ढंग से देखा। उसने सारे मनुष्य-समाज को एक कुटुम्ब के रूप में देखा; इसीलिए वह कुछ नई चीज जगत को दे सका।"

भाई बोले, "नहीं, इस काम के लिए तो अर्थशास्त्रियों की टोली चाहिए। सारे हिन्दुस्तान की साधन-सम्पत्ति का हिसाब लगाना आसान बात नहीं। आप खादी का हिसाब करते-कराते हैं। उसीमें कितनी उलझनें पैदा होती हैं ? तब इस इतनी बड़ी चीज का तो कहना ही क्या !"

बापू कहने लगे, "उलझनें आती हैं तो भी मुझे ऐसा नहीं लगता कि कोई दूसरा यह काम मुझसे अच्छा कर लेगा। हिन्दुस्तान की पूरी साधन-सम्पत्ति का हिसाब तो एक नहीं, सौ अर्थशास्त्री भी नहीं लगा सकते। कौन कह सकता है कि हिमालय में से ही कितनी शक्ति हमें मिल सकती है ? कोई बताने का दावा करे तो मैं उसका विश्वास न करूं; मगर तुम्हारे जैसा आदमी यदि मन लगाकर काम करे तो कुछ कर सकता है।"

बापू ने बात आगे चलाई, "मैं क्यों किसीके पास जाऊं ? फिर यह काम भी मेरा नहीं। मेरा काम तो हाथ और पशुओं की मेहनत से होनेवाले काम का हिसाब

निकालना है। जब इसमें असफल हो जाऊंगा, तब ज्ञात हो जायगा कि हिन्दुस्तान की जरूरतें इस प्रकार पूरी करने की आशा रखना मेरी मूर्खता थी। तब दूसरी चीज का विचार करने का समय आयेगा।

भाई कहने लगे, "चीन में तो खेती में जानवर भी इस्तेमाल नहीं किये जाते।"

बापू बोले, "हां, दक्षिण अफ्रीका में मैंने भी हाथ से ही खेती करवाई थी। काफी काम हुआ था, मगर मुझे लगता है कि पशु का और आदमी का इतना निकट का संबंध है कि पशु की मदद हमें लेनी चाहिए। इससे पशुओं की रक्षा भी होती है। गो-रक्षा का सवाल तो खेती और ग्रामोद्योगों के साथ जुड़ा हुआ है ही। मुझे विश्वास है कि पशु और आदमी की मेहनत हिन्दुस्तान की जरूरतें पूरी कर सकती है। मैंने अनेक जन्म लिये हैं और लूंगा; पर इससे मेरे विश्वास पर आंच नहीं आ सकती। ऐसे ही ग्रामोद्योगों और चरखे बारे में भी मेरा दृढ़ विश्वास है।"

भाई कहने लगे, "आप मानते हैं कि पहले मनुष्य की जिन्दगी सादी थी, बीच में उसने अनेक रंग देखे, मगर उन सबसे थककर उसने फिर सादी जिन्दगी अख्तियार कर ली। मगर अंतिम स्थिति पहली स्थिति की पुनरावृत्ति नहीं है। उससे ऊपर की मंजिल है। पहली सादगी अज्ञान की थी, दूसरी ज्ञान की।"

बापू ने कहा, "यह ठीक है।"

: ३० :

भावी समाज-रचना का आधार

९ दिसम्बर '४२

आज बापू को यहां आये चार महीने पूरे हो गये। बापू कहा करते हैं कि यहां हम छः महीने से अधिक नहीं रहनेवाले हैं। मगर दो महीने में छूट जाने की कोई सूरत नजर नहीं आती। रात को बा कह रही थीं कि अभी छः महीने नहीं, बल्कि एक वर्ष लगेगा।

आज सुबह घूमते समय युद्ध की और युद्ध के बाद क्या होगा, इसकी बातें चल रही थीं। भाई कह रहे थे, "आप मानते हैं कि इस युद्ध का परिणाम अच्छा ही आयेगा, मगर मुझे इसमें शंका है। सामान्य नियम यह है कि जिन देशों की जीत

हो, वहां क्रांति फासिज्म की दिशा में और पराजित देशों में क्रांति साम्यवाद की ओर होती है।" बापू कहने लगे, "मुझे तो शंका होती ही नहीं है कि परिणाम अच्छा आयेगा।" इनके बाद यह चर्चा छिड़ी कि राजा लोग हर तरह के आदमियों को खरीद लेते हैं। बापू ने कहा, "इन लोगों ने तो अभ्यास ही इस चीज का किया है कि मनुष्य-स्वभाव कहांतक नीचे जा सकता है। कहांतक ऊपर जा सकता है, इसका अभ्यास करने में उनका क्या प्रयोजन था, यह अभ्यास मैं कर रहा हूं।"

शाम को घूमते समय भाई कहने लगे, "आप इस चीज को नहीं मानते कि भौतिक वातावरण के असर से मनुष्य के विचार बदलते हैं। आप मानते हैं कि मनुष्य के विचारों का वातावरण पर असर पड़ता है और वह बदलता है। ऐसे ही आप कहते हैं कि पांचवी शक्ति दैव को हम बाहर नहीं कर सकते। मार्क्सवादी कहते हैं कि व्यक्ति भले बदलें, मगर वर्ग की चाल नहीं बदलती। यह इतिहास हमें सिखाता है और ऐतिहासिक प्रक्रिया में दैव भी आ जाता है।"

बापू बोले, "नहीं। मान लो कि हिटलर आज बीमारी से मर जाये तो वह दैव-योग ही होगा न? मगर उसका असर इतिहास पर पड़ेगा। ऐसे ही मानो कि सब पूंजीपति खतम हो जायें या भूचाल आये और उसमें दफन हो जायें, तो बड़े शहर ही न होंगे। तब वर्ग-विग्रह का प्रश्न दूसरा रूप धारण करेगा या नहीं?"

इसके बाद 'मन पहले कि प्रकृति' इसपर चर्चा हुई। बापू ने कहा, "प्रकृति और पुरुष—दोनों अनादि हैं। इसलिए कौन पहले था, यह नहीं कहा जा सकता। प्रकृति पुरुष के विचारों को बनाती है, यह मैं नहीं मानता।"

१० दिसम्बर '४२

कल भंसालीभाई के बारे में मुन्शी का लेख था। उसमें उन्होंने भंसालीभाई की साधुता का वर्णन किया था। साथ ही बताया था कि कैसे एक समय वह नीम के पत्ते खाते थे, एक समय अपना मुंह सी लिया था और एक नली से पेट में खुराक पहुंचाते थे। मुझे लगा कि यह सब कहना आज अनावश्यक था। इससे भंसालीभाई को कोई फायदा नहीं पहुंच सकता था। उलटा लोगों को लग सकता था कि यह तो कोई पागल है। उनके उपवास की कीमत उससे कम हो सकती है। भाई कहते थे कि यह कहना आवश्यक है। बापू से हमने पूछा। वह बोले, "आवश्यक भी हो सकता है और अनावश्यक भी।" मैं यह नहीं समझ सकी। मैंने पूछा, "आप लिखें, तो क्या करें?" वह कहने लगे, "मैं एक काल्पनिक चीज के बारे में कुछ कह नहीं सकता।

मुझे भंसाली के साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए। उसकी मनोवृत्ति जानकर ही मैं लिख सकता हूं।" मैंने कहा, "अखबारों की बात को सही मानकर आप क्या लिखेंगे?" बापू ने कहा, "मैं इस तरह विचार ही नहीं कर सकता।"

मीराबहन को अपने कमरे में बदबू आती है। इसीलिए उन्होंने खाने के कमरे के एक हिस्से को खड़े पर्दों से अलग कर लिया है।

शाम को घूमते समय भाई बापू से चरखे के बारे में फिर पूछते रहे। कहने लगे, "क्या आपने अपने पुराने मत में फेरफार किया है?" बापू कहने लगे, "मेरा मत आज भी वही है, जो बीस वर्ष पहले था। मगर मेरी कल्पना और प्रयोग आज जगत को विश्वास दिला सकें, इस हदतक वे सिद्ध नहीं हुए। जितना हम कर पाये हैं, उससे मुझे तो पूरी तस्वीर की झांकी मिल ही जाती है। मेरी श्रद्धा उससे पक्की होती है। चरखे और ग्रामोद्योगों का उलटा उद्योगीकरण है। उससे तो लोगों का कल्याण हो ही नहीं सकता, यह बात सिद्ध है; मगर चरखे के द्वारा कल्याण हो सकता है, यह जगत के सामने रख सकूं, इस हदतक सिद्ध नहीं कर पाया। एक ओर पूंजीवादी पद्धति का उद्योगीकरण, दूसरी ओर साम्यवादी पद्धति के उद्योगीकरण का प्रयोग। वह प्रयोग भी आज अधूरा है। उसमें से क्या निकलेगा, यह देखना है। मुझे लगता है कि अन्त में वह भी निष्फल होगा, मगर मैं खुले मन से उसको देख रहा हूं और पूरी श्रद्धा से अपने प्रयोग आगे चला रहा हूं। कौन सफल होता है, यह समय आने पर सिद्ध हो जायेगा।

११ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय भाई बापू से कहने लगे, "दैव पांचवां है तो सही, मगर दैव तो सदा था। वर्गों का स्वभाव भी दैव में आ जाना चाहिए। इतिहास हमें सिखाता है कि व्यक्ति का हृदय भले ही पलट जाये, मगर जबतक समाज की आर्थिक रचना न बदलेगी, तबतक एक वर्ग की हैसियत से पूंजीपति अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकेंगे।" बापू बोले, "व्यक्ति और वर्ग में भेद करना भूल है। जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह सारा समाज कर सकता है।"

भाई ने कहा, "मगर यह तो आपने भी कहा है न कि व्यक्ति की मनोगति (Psychology of the Individual) और समाज की मनोगति (Mass Psychology) में फर्क होता है।" बापू कहने लगे, "वह ठीक है, मगर व्यक्ति समाज की विचार-प्रणाली को बदल सकता है। अहिंसक इन्सान इस चीज को समझ

लेगा कि सामाजिक रूप में अहिंसा की क्या शक्ल होगी और अपना काम करने में इस चीज का उपयोग करेगा।"

भाई कहने लगे, "मार्क्सवादी मानते हैं कि भौतिक वातावरण को बदल देने से, उदाहरणार्थ निजी जायदाद रखने की प्रथा को मिटा देने से, पूंजीपति वर्ग के विचार अपने-आप बदल जायेंगे। मैं समझता हूं कि इसमें काफी सत्य भरा है। आपकी वर्धा-शिक्षण-योजना भी क्या ज्ञान के भौतिक सिद्धांत (Materialistic theory of knowledge) का समर्थन नहीं करती ?"

बापू बोले, "वर्धा-योजना हाथ की मार्फत दिमाग को विकसित करना चाहती है। यह तो अलग बात हुई, मगर मार्क्स के अनुयायी और मार्क्स खुद भी हाथ को शिष्ट-समाज के जीवन में कोई स्थान ही नहीं देते। उनके पास तो मशीन हाथ का स्थान लेती है। उनके मत से मशीन के बिना मनुष्य-समाज सुखी हो ही नहीं सकता। हाथ पर आधार रखकर तो उसे गुलामी में ही रहना है, यह मार्क्स की मान्यता है। मेरी मान्यता उससे बिल्कुल उलटी है और इसी शोध में लगा हुआ हूं कि देखूं तो सही कि हाथ से क्या-क्या हो सकता है।"

भाई कहने लगे, "मार्क्स की शोधें बड़े महत्व की हैं। मार्क्स ने समाज की व्याधि का जो निदान किया है, वह सचोट है; मगर उसका जो इलाज बताया है, वह ठीक नहीं। उसके सामने हिंसक बल ही था। अहिंसक बल का उसे पता ही नहीं था। आपने गीताजी को अहिंसा के समर्थन की पुस्तक बताया है, यद्यपि सामान्यतया इससे उलटा माना जाता है। इसी तरह हम मार्क्स की शोधों का उपयोग अहिंसक समाज-रचना के लिए नहीं कर सकते ? आखिर तो उसने गरीब का पक्ष लिया है। वह तो अहिंसक काम ही है न ?"

बापू ने कहा, "आज जो दलील हम करते हैं, वह मार्क्सवादियों की बुद्धि पर असर डालने के लिए है; क्योंकि मैं देखता हूं कि उनमें बहुत अच्छे-अच्छे आदमी भरे हैं। जैसे जवाहरलाल हैं, आचार्य नरेन्द्रदेव हैं, जयप्रकाश हैं। हम क्यों इन लोगों को खोयें ? अगर हम उन्हें खींच सकते हैं, तो खींचें। इसके सिवा इन चर्चाओं का कोई अर्थ ही नहीं है और मैं कहता हूं, उन लोगों पर तुम मार्क्स के साथ अहिंसा के समन्वय का प्रयत्न करके कोई असर नहीं डाल सकोगे। गीताजी की जो टीका मैंने लिखी है, वह गीताजी में से हिंसा का पाठ लेनेवालों के लिए नहीं है। जो अहिंसा का पाठ लेते हैं, उनके लिए भी इतनी नहीं, मगर दोनों के बीच के वर्ग के

लिए वह लिखी गई है।''

भाई बोले, ''दूसरे मार्क्सवादियों की बात छोड़ दें। मैं कहता हूं कि मैं भी पक्का मार्क्सवादी हूं। जो मार्क्सवादी कहलाते हैं, उनसे अधिक मैं मार्क्स को मानता हूं। मगर मैं देखता हूं कि मार्क्सवाद को हम पूरा-पूरा सफल बना सकें तो भी मुझे उससे संतोष नहीं होगा। मैं तो देखना चाहता हूं कि मार्क्स ने जो बताया है, उसे हम कहांतक अपने ढांचे में डालकर उसका उपयोग कर सकते हैं।''

बापू कहने लगे, ''मैं मार्क्स को इस तरह नहीं देखता। मैं यह भी नहीं मानता कि उसने बिल्कुल कुछ नया दिया है। उसके पहले रस्किन ने भी वही काम किया। मार्क्स और रस्किन की विशेषता यह है कि उन्होंने सारी मानव-जाति को अपने सामने रखा। वे वर्ग की कैद से निकल गये और गरीबों का पक्ष लिया। इसलिए मार्क्स का समाज-व्यवस्था का विश्लेषण पुराने अर्थशास्त्रियों के मुकाबले में इतना तेजस्वी बना, मगर तुम मुझे बताओ तो सही कि मार्क्स की कौनसी बात तुम्हें इतना मुग्ध करती है ?''

भाई बोले, ''मार्क्स ने समाज की व्याधि के जो निदान किये हैं, उनमें और मार्क्स से पहले जो निदान किये गये थे, उनमें उतना ही फर्क है जितना कि कीमियागरी (Alchemy) और रसायनशास्त्र (Chemistry) में। उसने स्पष्ट रूप से बताया है कि आर्थिक वातावरण हमारे जीवन के हर पहलू—कला, साहित्य, कानून, नीति, यहांतक कि धर्म, को भी किस प्रकार ढालता है और द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) की क्रिया द्वारा कैसे समाज का विकास होता है। एक तरह से रस्किन ने भी यही काम किया है—उसने भी गरीबों का पक्ष लिया। मैं मार्क्स को रस्किन का पूरक मानता हूं। युद्ध की क्रिया को ही लीजिये। उसके लिए अनेक जादू-टोने के-से उपचार बताये जाते थे। मगर युद्धों की जड़ में जो आर्थिक कारण प्रविष्ट है, उसे कोई नहीं देखता था। 'सम्पत्ति या शांति' (Property or Peace)[1] का हमें आगे स्पष्ट ज्ञान ही नहीं था। हम इनमें अब परस्पर स्पष्ट वैर देखते हैं। साम्राज्यवाद पूंजीवाद का अनिवार्य फल है, यह मार्क्स ने हमें दिखाया है।''

बापू कहने लगे, ''मैं इस तरह आर्थिक उलझनों को सब पापों का मूल नहीं

---

[1] अंग्रेज लेखक ब्रेल्सफोर्ड की पुस्तक।

मानता और युद्ध का कारण आर्थिक उलझनें हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है। गत युद्ध का क्या कारण था? निकम्मे कारण थे। इस दफा जब युद्ध छिड़ा, तो चैम्बरलेन प्रधान मन्त्री था। वह युद्ध को टालने का प्रयत्न कर रहा था। एक रात में वह क्यों बदल गया? उसे डर लगा होगा कि अब युद्ध को टालने से अपनी पार्टी का साथ खोना पड़ेगा। मैं मानता हूं कि उसकी जगह कोई अच्छा राजनीतिज्ञ होता, तो युद्ध टल जाता। मैंने तो अंग्रेजों को कहा ही है कि उन्हें क्या करना चाहिए और हैलन क्या ट्राय के युद्ध का कारण नहीं थी? दूर क्यों जायें। राजपूत-युद्ध तो आधुनिक इतिहास में आ जाते हैं। उनका कारण आर्थिक कदापि नहीं था।

भाई बोले, "किसी एक युद्ध का कारण आर्थिक भले न हो, मगर पूंजीवादी समाज में जो लाक्षणिक युद्ध होते हैं, उनको लें, तो उनकी जड़ में आर्थिक कारण मिलेगा। कुछ भी हो, हम मार्क्स के निदान से लाभ उठाकर उसकी दवा छोड़कर उन्हीं रोगों की दवा अहिंसक उपायों से करने की पद्धति क्यों नहीं अख्तियार कर सकते? मार्क्स के सामने अहिंसक बल रहता, तो शायद वह भी यही करता।"

बापू ने कहा, "ये तो तुम्हारे मार्क्स के बारे में मौलिक विचार हुए। तुम जो कुछ मानते या समझते हो, उसे लिख डालो।"

वापस लौटते समय भाई कहने लगे, "आपने तो भरी सभा में १२४ वर्ष तक जिन्दा रहने का वचन दे दिया है न! उसपर आपको कायम रहना होगा। अगर आप ऐसा करें, तो ट्रस्टीशिप की आपकी बात सच सिद्ध होगी, नहीं तो हवा में उड़ जायगी।"

आज दो दिन के बाद बाजार खुला। रघुनाथ सामान लेने गया। वह दो दिन बाजार नहीं गया तो ऐसा महसूस करता था, मानो किसीने उसे पिंजरे में बंद कर दिया हो। खबर लाया कि बिस्कुट नहीं मिल सकते। आटा नहीं है। थोड़े दिनों में डबल रोटी भी आनी बन्द हो जायगी।

शाम को घूमते समय भाई कौशिक आख्यान की बात करने लगे कि कैसे एक कसाई केवल माता-पिता की सेवा के लिए ही कसाई का धंधा करता था। दरअसल वह ज्ञानी था। तब मैंने दोस्तोवस्की के 'क्राइम ऐंड पनिशमेण्ट' (अपराध और दण्ड) को लेकर कहा कि कैसे सोनिया नाम की एक लड़की अपनी सौतेली मां के बच्चों और शराबी पिता के भरण-पोषण के लिए वेश्या का धंधा करती है। मगर उसकी आत्मा अलिप्त रहती है। बापू इस पर कहने लगे, "उपन्यासों को छोड़ो।

जापान में आज यह सब हो रहा है।" भाई तब फादर सर्जीयस की टाल्स्टाय-कथा पर आये और बताया कि कैसे वर्षों की तपस्या के बाद उसे अपनी तपश्चर्या और पवित्रता का घमण्ड होता है और उसका पतन होता है। फिर उसे प्रेरणा होती है कि एक औरत के पास जाओ और नम्रता सीखो—वह दिन-रात अपने बच्चों की और शराबी पति की सेवा करती है, मगर उसे खयाल तक नहीं आता कि वह त्याग कर रही है।

इससे ताईस (Thais)[1] की बात निकली कि कैसे आध्यात्मिक अभिमान वहां भी पतन का मूल बनता है। बापू कहने लगे, "यह तो है ही। घमण्ड आया और सारी मेहनत बेकार गई।" भाई बोले, "मैंने कहीं पर आपका वाक्य देखा है। वह कभी नहीं भूलता। 'हजारों वर्ष की अखण्ड साधना तथा लाखों वर्षों की अखंड तपश्चर्या को एक क्षण का आध्यात्मिक अभिमान नष्ट कर देता है।'"

चीर-फाड़ की बातें होती रहीं। भाई कहने लगे, 'डा० शाह कहते थे कि पता नहीं, लोग हिरन का शिकार कैसे करते हैं। उसकी आंखों में तो इतनी करुणा होती है कि देखा तक नहीं जाता। इसी तरह घायल पक्षी की बात है।"

बापू कहने लगे कि छुटपन में वह डाक्टर होना चाहते थे, मगर पिताजी का विरोध था और मां का भी। पिता तो मर गये, मगर मां के कारण उन्होंने डाक्टरी छोड़कर बैरिस्टरी ली। बाद में जब बैरिस्टर होने के बाद १९०६ में विलायत गये, तब उन्होंने फिर डाक्टरी सीखने का विचार किया। पता चला कि चीर-फाड़ के बिना वह हो नहीं सकता। सो छोड़ दिया। डाक्टरी सीखनेवाली दो छात्राओं ने भी चीर-फाड़ के कारण ही कालेज छोड़ दिया था। उस बारे में एक मुकदमा चला था। बापू ने वह सब पढ़ा था। उसकी बात बताते रहे। बापू एक समय डाक्टर होने की इतनी आकांक्षा रखते थे, यह मुझे डाक्टरी के धंधे के लिए गर्व की बात लगी।

रात को सोने के समय बापू का रक्त-चाप बढ़ जाता है। आज से विचार किया कि प्रार्थना के बाद वह मौन लें और इसका असर देखा जाये। आज तो मौन ठीक नहीं चल पाया। आशा है कि कल से ठीक चलेगा।

१२ दिसम्बर '४२

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये अठारह हफ्ते पूरे हुए। सरोजिनी

---

[1] अनातोले फ्रान्स का उपन्यास

नायडू सुबह समाधि पर आईं। बापू ने कहलाया था कि न आयें; क्योंकि उनकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। मगर वह कहने लगीं, "नहीं, मुझे आना ही है; नहीं तो मुझे लगेगा कि मैंने अपना फर्ज अदा नहीं किया।"

क्रासवर्ड प्रतियोगिता (Crossword Puzzle) के बारे में बापू कहने लगे, "यह एक तरह का जुआ है। बिना मेहनत पैसे बटोरने के लिए ही यह आडम्बर है। इसमें से खूब लोग पैसे कमाते हैं।"

इस पर बीमा और जुए की बाबत भाई ने कहा, "बीमा और जुए में फर्क यह है कि बीमा अनिश्चित को निश्चित और जुआ निश्चित को अनिश्चित बनाता है।" बापू से उन्होंने पूछा, "आप क्या समझते हैं कि राष्ट्रीय सरकार अगर राष्ट्रीय बीमा को सर्वव्यापी और अनिवार्य कर दे, तो आप उसका समर्थन करेंगे? वृद्धावस्था का बीमा, प्रसूतिकाल और रुग्णावस्था के सम्बन्ध में सहायता—इस प्रकार के कार्य अच्छे हैं?"

बापू कहने लगे, "अनिवार्य बीमा करने की बजाय सरकार इसके लिए मुफ्त में ही व्यवस्था करे, तो मुझे उज्र नहीं होगा। आज काम करनेवालों को पता भी नहीं चलता कि सरकार अपने-आप उनकी तनखाह में से कुछ काटकर उन्हें प्रॉविडेंट फंड का लाभ देती है। वह करने जैसी चीज हो सकती है; लेकिन सोचने की है।" भाई बोले, "रूस के बारे में और चाहे जो कहा जाय, पर इतना तो अवश्य है कि कितनी ही चीजें रूस ने ऐसी कर दिखाईं, जिनकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कब हम गरीबों को दे सकेंगे। सबके लिए खाना-पहनना, डाक्टरी सहायता, वृद्धावस्था में पेन्शन, प्रसूतिकाल में सरकारी सहायता तथा अन्य कितने ही सुधार रूसियों ने तेजी से कर दिखाये हैं।"

बापू कहने लगे, "हां, वह तो ठीक है, मगर मैं देख रहा हूं कि यह चलेगा कितने दिन? सामान्य नियम है कि जो चीज तेजी से आती है, वह तेजी से चली भी जाती है।"

भाई ने पूछा, "आप जिस तरह की समाज-रचना करना चाहते हैं, वह बाकी जगह दूसरे ढंग से चले, तब भी टिकी रह सकती है या कि आप यह मानते हैं कि जगत को हम उस प्रकार का न बना लेंगे, तो जगत हमें हजम कर जायेगा?"

बापू कहने लगे, "दोनों बातें सम्भव हैं। हम इस प्रयोग में सफल होने पर उसे अपने यहां चला सकेंगे। रूस को देखो। उसने विरोधी जगत में नये समाज की

रचना कर दिखाई है न !"

भाई ने कहा, "रूस का प्रयोग अधूरा है। उसका कहना है कि शेष जगत के साम्यवादी न बनने के कारण उसका प्रयोग अधूरा है। वह सम्पूर्ण जगत को साम्य-वादी बनाने का ध्येय रखता है।"

बापू बोले, "जो हो, रूस का भी युद्ध के बाद क्या बचता है, यह देखना है। परन्तु मैं तो आज यह देखता हूं कि जगत में जो सभ्यता कायम हुई है, उसका नाश हो रहा है। वह चल नहीं सकती। मेरा प्रयोग उस प्रपंच में से निकलने का एक रास्ता दिखाता है; मगर इस प्रयोग को अभी हम पूरी तरह आजमा नहीं सके। दूसरे देशों में भी मेरी जो कीमत है, वह इसी कारण कि वे देखते हैं कि मेरे पास कुछ नई चीज है। वे हमारी ओर आंख लगाकर बैठे हैं। अगर हम अपना प्रयोग सफल कर दिखायें, तो वे अपने आप इसे अपनायेंगे।"

भाई कहने लगे, "रूस ने उद्योगीकरण के आधार पर अपना नया समाज खड़ा किया है। उसे देखकर दूसरों के मुंह में पानी आया। मगर हम सादी जिन्दगी के आधार पर अपना नया समाज खड़ा करें, तो भी हमारे प्राकृतिक धन पर दूसरे क्या नहीं ललचायंगे ? वे यह भी कह सकते हैं कि तुम्हें जिस चीज की जरूरत नहीं, जिसका तुम उद्योगीकरण द्वारा उपयोग नहीं करते हो, उसको हमें इस्तेमाल करने दो और इस प्रकार अन्त में वे हमें हजम कर सकते हैं। इस भय से बचने का आपकी सम्मति में क्या उपाय है ?"

बापू ने कहा, "जब ऐसी परिस्थिति पैदा होगी, तब इसके बारे में हम विचार कर सकेंगे। आज से कल्पना के आधार पर वह तय नहीं किया जा सकता।"

रात को बापू ने प्रार्थना के बाद मौन लेकर कुछ काम किया। भाई का लिखा हुआ सुधारने की दृष्टि से पढ़ा। पढ़ने के बाद रक्तचाप बढ़ गया, सोने के समय उतर गया। हर रोज काम के बाद रक्तचाप रहता था। बाद में बापू बातें किया करते थे। सोने के समय रक्तचाप बढ़ जाता था। इसका अर्थ यह निकलता है कि प्रार्थना के बाद बापू को बहुत मगज-पच्ची के काम में अथवा किसी चर्चा में नहीं पड़ना चाहिए।

: ३१ :

सत्ता और अहिंसा

१३ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आप कहते हैं कि सत्ता लोगों के हाथ में आ जायगी तो ट्रस्टीशिप को हम कानूनन दाखिल कर देंगे। हमें यह काम लोकमत और प्रजातन्त्र के द्वारा करना होगा। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त हम उसी दर्जेतक अमल में ला सकेंगे, जहांतक हम पूंजीपतियों को इसके लिए तैयार कर सकेंगे ? क्या इसका मतलब यह है कि आर्थिक सुधार किश्तों के रूप में आयेंगे ? इसके द्वारा हम जनता को उस तरह उत्साहित न कर सकेंगे जिस तरह रूसियों ने निजी मिल्कियत की प्रथा को एकदम मिटाकर किया है। इसीलिए तो अधिनायकवाद की आवश्यकता मानी गई। सुधारक जनतन्त्रवादी नहीं हो सकता। सवाल यह है कि हम निजी मिल्कियत की पद्धति को रखकर सामाजिक अन्याय को जिंदा रहने देंगे या अधिनायकवाद का कड़वा घूंट भरकर उसकी जड़ निकाल देंगे ?

"अगर अहिंसा द्वारा, जैसा आपने कहा था, हम प्राण की आहुति भी मांग सकते हैं, तो पूंजीपतियों से निजी मिल्कियत के अधिकार को ही क्यों नहीं एकदम उड़वा देते ? हम उन्हें नये तंत्र में सम्मानित स्थान दें; परन्तु पूंजीपति की हैसियत में नहीं, प्रतिभासम्पन्न समाज-सेवी की हैसियत में। आज अहिंसा की शक्ति की कोई मर्यादा है ?

"आप मानते हैं कि सत्ता हमारे हाथ में किश्तों में आये, तो क्रांतिमूलक जोश मर जायेगा। परिणाम-स्वरूप हम बड़ा भारी परिवर्तन आसानी से नहीं कर पायेंगे। यही बात क्या आर्थिक क्षेत्र में भी लागू नहीं होती ?"

बापू कहने लगे, "रूस में पूंजीपतियों के जाने से जनता की आमदनी बढ़ी। इससे उनका उत्साह बढ़ा। हमारे यहां भी आर्थिक सुधार के नीचे मजदूरों की आमदनी तो बढ़ेगी ही। रूस में तो जनता को पूंजीवादी वर्ग की सम्पत्ति पर ही अधिकार मिला; पर यहां तो सम्पत्ति के साथ बुद्धि, अनुभव और कार्य-कुशलता, सब उनको मिला। यह तो उससे भी बड़ी क्रांति की बात हुई। पूंजीपतियों ने वर्षों से धन-उपार्जन की कला सीखी है। वह कला जब जनता की सेवा में लगाई जायेगी, तो

जनता की आर्थिक स्थिति तेजी से सुधरेगी। जबतक हमारे पास सत्ता नहीं, तबतक तो हम जितना पूंजीपति वर्ग को समझा सकें, उतना ही उनसे करवा सकते हैं, मगर जब सत्ता हमारे हाथ में आ जाती है, तब भी जितने के लिए लोग तैयार हों, उतना ही सुधार हम कानून की मार्फत भी कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर आज सफाई के कानूनों पर कौन अमल करता है? जनता तो उन कानूनों के लिए तैयार नहीं है।"

मैंने पूछा, "तो तैयारी पूंजीपतियों की होनी चाहिए या जनता की? जनता तो तैयार है ही। रहे पूंजीपति, सो वे अपनी पूंजी छोड़ने को क्यों तैयार होंगे?"

बापू कहने लगे, "दोनों की तैयारी होनी चाहिए। पूंजीपति भी स्वयं ही समझदारी के साथ त्याग के लिए तैयार हो सकते हैं और नहीं तो उन्हें लोकमत के सामने झुकना पड़ेगा। आज लोकमत यहांतक संगठित नहीं हुआ है।"

भाई ने कहा, "सत्ता लोगों के हाथ में आये, इसका अर्थ क्या? सत्ता का अर्थ क्या?"

बापू बोले, "वोटिंग की ताकत। इतना व्यापक वोट लोगों के पास होगा कि वे बहुमत में होकर जो चाहेंगे, करवा लेंगे। मिसाल के तौर पर वे चाहेंगे तो कानून भी बनवा सकेंगे।"

भाई कहने लगे, "वह सत्ता लोगों के हाथ में आये किस तरह? मार्क्स के अनुयायी कहते हैं कि आजकल का पार्लमिण्टरी तरीका इस चीज के लिए निकम्मा है।"

बापू बोले, "इसकी तालीम लोगों को बीस वर्ष से मिल रही है। हमारा शस्त्र है अहिंसक असहयोग। यह शस्त्र बीस वर्ष से घड़ा जा रहा है।"

भाई कहने लगे, "पूरी सत्ता हमारे हाथ में यानी जनता के हाथ में आये, तब तो यह सब शक्य है। मगर आज की परिस्थिति में तो ऐसा लगता है कि पूरी सत्ता कांग्रेस के हाथ में शायद न भी आये। कांग्रेसी मिनिस्ट्रियों को ब्रिटिश सरकार के साथ काम करना पड़ता था। शायद हमें मुस्लिम लीग के सत्ता बांटनी पड़े। यह भी हो सकता है कि हमारे हाथ में सत्ता आये ही नहीं।"

बापू ने कहा, "हम इस सवाल में आज न उतरें कि सत्ता लोगों के हाथ में आ सकती है या नहीं। मैं मानता हूं कि हमारे यहां ऐसा प्रजातंत्र पैदा होगा, जिसमें पूरी सत्ता लोगों के हाथ में ही होगी, मगर वह मेरी भूल हो सकती है। आज हम दलील की खातिर यह मान लें कि ऐसा राजतंत्र पैदा होगा। इसके बाद किस तरह काम करेगा—इसका हमें विचार करना है।"

भाई कहने लगे, "साम्यवादी कहते हैं कि हम आपकी सब बातें समझते हैं, मगर जब सत्ता छीनने का विचार करते हैं, तब समझ में नहीं आता कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा कैसे जमाया जा सकता है ? फिर आपने तो एक बार कहा भी था न कि हो सकता है कि अहिंसा के द्वारा सत्ता पर कब्जा न लिया जा सके !"

बापू ने कहा, "हां, परन्तु शासन-तंत्र से बाहर रहकर अहिंसावादी लोग सत्ता पर असर डाला करें। वह काफी है। मानो कि सत्ता विरोधियों के हाथ में है, तो भी अहिंसावादी उनसे काम ले सकते हैं। कांग्रेस में ही अपने से मतभेद रखनेवालों के हाथ में सत्ता है, तो भी वही परिणाम लाया जा सकता है। यही तो अहिंसा की विशेषता है।"

बापू ने आगे कहा, "और सत्ताधारी को हिंसा का उपयोग करना ही पड़ता है, यह मैं नहीं मानता।"

भाई कहने लगे, "आखिर राज्य के मूल में ही दण्ड-सत्ता (coercive power) का भाव निहित है।"

बापू बोले, "मगर किस तरह की दण्ड-सत्ता ? मानो कि एक परिवार में पिता को सत्ता दी जाती है। वह बच्चों को थोड़ी चुभेगी ? सत्ता भी फूल की-सी हो सकती है, जिसका दबाव किसीपर पड़े ही नहीं।

"कांग्रेस की सत्ता लोगों ने खुशी से स्वीकार की। बाद में नरीमैन और खरे-जैसे व्यक्ति भी निकले। और बिहार को लो। वहां के लोगों को समझाने में मुश्किल आती ही नहीं। कांग्रेस की सत्ता किसीको चुभनेवाली थोड़े ही है। लोग अपनी खुशी से मुझे सत्ता देते हैं, मेरी मानते हैं। आज न मानना चाहें, तो मैं अलग हो जाऊंगा। आज मैं बिहार चला जाऊं, तो लोग अपने-आप मेरे पीछे चले आयेंगे। उन लोगों में एक तरह की भक्ति और श्रद्धा रही है। यह आम जनता का भाव रहा है। इसीलिए धनिक वर्ग भी उसी तरह से चलता है। खिलाफत के जमाने में कांग्रेस की अथवा मेरी सत्ता किसको चुभती थी ? अली भाइयों को क्या इसका तनिक भी बोझ लगता था ? इसीसे तो मैं उनका 'सरकार' बना न ? ऐसी ही राज-तंत्र की सत्ता भी हो सकती है।"

भाई कहने लगे, "उसके लिए बड़ी उग्र तपश्चर्या चाहिए। भागवत के एकादश स्कन्ध में समाज का जिसे कानून बनानेवाला बनना है, उसके लिए तैयारी का वर्णन है। उसे सारे कौटुम्बिक सम्बन्ध तोड़कर वानप्रस्थी बनना है, भयंकर कष्ट

उठाकर शरीर को शून्यवत बनाना है, फिर संन्यास लेकर राग-द्वेष-रहित बनना है। मान, अपमान, स्तुति और निन्दा में समभाव रखकर अनिकेत और मौनी बनना है। यदि शरीर इतना कष्ट न सहन कर सके, तो उसे अग्नि में जला देने का व्रत लेना है। तब ऐसा संन्यासी सत्ता का अधिकारी होगा। स्वार्थ जैसे वह जानता ही नहीं है। उसका कहा कोई टाल ही नहीं सकता। मतलब यह कि सत्ता का सच्चा अधिकारी पैदा होना चाहिए। पीछे सत्ता अपने-आप आयेगी और वह किसी-को चुभेगी भी नहीं। किसीको तपश्चर्या का चित्र डरावना लगे, तो मैं कहूंगा कि हिंसा-पथ पर क्या कम कुर्बानी की आवश्यकता है? रूस को देखिये। बर्फ जमने की सरदी से भी ४० डिगरी नीचे की सरदी में वे लोग आज लड़ रहे हैं। खाना, पीना और सोना सबका त्याग कर रहे हैं। अहिंसा-पथ पर तो शायद इससे कम ही कुर्बानी करनी पड़े।"

बापू बोले, "यह हो सकता है, मगर तैयारी उससे ज्यादा कुर्बानी की होनी चाहिए। इस मामले में कोई छोटा रास्ता है ही नहीं, होना चाहिए भी नहीं। यह वर्णन ठीक है। समाज में जागृति आनी चाहिए, मगर सारी जनता को इतना त्याग करने की आवश्यकता नहीं रहती। यदि एक आदमी की भी साधना पूरी होती है तो काम निपट जाता है। मुहम्मद या ईसा रोज-रोज थोड़े ही पैदा होते हैं! एक दफा आये और काम शुरू हो गया। पीछे लोग अपनी शक्ति के अनुसार उनकी मदद करते रहते हैं और काम चलता रहता है।

मैंने पूछा, "तब तो ऐसे आदर्शमय राजतंत्र को ईसा या मुहम्मद जैसा महान व्यक्ति ही चला सकता है। वह कहां से मिले?"

बापू ने कहा, "तुम विचार करो तो ऐसे सवाल अपने-आप हल हो जायेंगे। ईसा ने अपने बारह शिष्य तैयार किये थे। उसके पीछे काम अपने-आप चलने लगा। आदर्शमय प्रजातंत्र को चलाने के लिए हमेशा महान व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। लोगों को अपनी ताकत का आभास होना चाहिए। जैसाकि मैंने कहा है, क्यों मानते हो कि सोना-चांदी ही पूंजी है? मजदूरी भी पूंजी है। सोने-चांदी से भी बढ़िया पूंजी है। यह ज्ञान मजदूर वर्ग को हो जाये तो काम निपट जाता है। वह हो सकेगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता। यही बात अहिंसक प्रजातंत्र पर लागू होती है।"

भाई कहने लगे, "ठीक है, युग-कर्ता तो कभी-कभी ही आता है। वह सिल-सिला चला देता है। पीछे युग अपने-आप चला करता है। यह भी बात है कि युग

का भी अंत होता है। आलसी और स्वार्थी पैदा हो जायें, तो वे सत्ता को सम्भाल नहीं सकेंगे, खो बैठेंगे; मगर वही चीज हिंसा के आधार पर खड़ी हुई सत्ता पर भी लागू होती है।''

शाम को घूमते समय भाई ने बापू से पूछा, ''शासन-तंत्र की संज्ञा क्या है?''

बापू कहने लगे, ''किसी विशेष शासन-तंत्र संज्ञा को पूछो, तो मैं बता सकता हूं। सामान्य अर्थ तो शासन-तंत्र का यह है कि वह कानून बनानेवालों और उनपर अमल करानेवालों का समूह ही होता है।''

भाई अराजकवादियों की बात करने लगे, ''वे लोग राज्य को नहीं मानते, मगर समाज-व्यवस्था को मानते हैं। देखा जाय तो शासन-तंत्र दरअसल है दण्ड का साधन ही।''

बापू बोले, ''मार्क्स का तो यह कहना है ही कि जब साम्यवाद पूरी तरह सफल हो जायेगा तो शासन-तंत्र का कुछ काम नहीं रह जायेगा। वह अपने-आप सूख जायेगा। अराजकवादी का तो अर्थ ही यह है कि प्रत्येक आदमी जो चाहे कर सकता है।''

मैंने पूछा, ''क्या आप भी मानते हैं कि आदर्श समाज में शासन-तंत्र की जरूरत नहीं रहेगी?''

बापू कहने लगे, ''मैं मानता हूं शासन-तंत्र तो रहेगा ही; मगर वह शासन-तंत्र यही कहो न कि ऋषियों की हकूमत होगी। प्राचीन काल में तो लोग ऋषियों को मानते ही थे न? आधुनिक काल में ऋषि का अर्थ उस व्यक्ति से है, जो सबसे अधिक सुशिक्षित, सेवाभावी, सेवा की योग्यता रखनेवाला हो। ऐसा पुरुष अपने-आप सत्ता लेकर नहीं बैठ जायेगा, मगर लोग स्वयं समझ लेंगे कि उसके बिना काम नहीं चलेगा। वे स्वयं उसे चुनकर सत्ता उसके हाथ में सौंप देंगे।''

आज दोपहर भंसालीभाई की अखबारों में खबर थी। डा० मनु त्रिवेदी की उनके बारे में रिपोर्ट थी। अणेसाहब ने उन्हें उपवास छोड़ने का तार दिया था और कहा था कि वह अपनी जगह से चिमूर के सम्बन्ध में जांच-पड़ताल कराने की कोशिश कर रहे हैं। भंसालीभाई ने उत्तर दिया था, ''आप सफल हों, मगर मैं इस तरह उपवास नहीं छोड़ सकता। आप आयें और हम चिमूर जाकर लोगों को आश्वासन दें।'' अणेसाहब ने फिर तार दिया, ''इसका कोई फायदा न होगा, मगर आप उपवास छोड़ें तो मैं आऊं।'' भंसालीभाई ने उत्तर दिया, ''आप आयें,

हम साथ जाकर चिमूर के लोगों की फरियाद सुनेंगे । मैं उपवास छोड़ूंगा ।"

परिणाम क्या होगा, यह तो ईश्वर ही जानता है । भंसालीभाई बच जायें तो बड़ी बात होगी । डा० मनुभाई लिखते हैं, "तबीयत कमजोर बहुत है । उठकर बैठ भी नहीं सकते । जल्दी ही हालत ऐसी हो जायेगी कि उपवास छोड़ने पर भी वह न बच पायेंगे ।"

१४ दिसम्बर '४२

आज सोमवार था । बापू का मौन । उन्होंने भाई के एक-दो प्रश्नों का उत्तर लिखा । बाकी के बारे में फिर लिखेंगे । चर्चा नहीं हुई, मगर भाई घूमते समय कह रहे थे, "हमें चरखे और ग्रामोद्योग के प्रयोग के साथ पूर्ण न्याय करना है तो उसके लिए एक ऐसा छोटा-सा इलाका चाहिए कि जहां मिल और उद्योगीकरण का विरोधी प्रभाव न पहुंच सके । तब हमें पता चलेगा कि कहांतक हम मशीनों के बिना लोगों की जरूरतें पूरी कर सकते हैं । इन प्रयोगों से काम न चल पायेगा, तो फिर ऐसी छोटी-छोटी मशीनें दाखिल करने का सवाल उठेगा, जो घर-घर में रह सकें ।"

शाम को बापू का रक्तचाप ठीक था; परन्तु सोने के समय कुछ बढ़ गया ।

सुबह भण्डारी आये थे । बापू स्नानघर में थे । उन्हें नहीं मिल सके । कलकत्ते से सर्पगंधा का ऐलकोहॉलिक एक्स्ट्रैक्ट दो औंस आया है । वह भी भण्डारी साथ लाये थे । मैंने आठ औंस मंगाया था ।

सुबह बड़ी ठण्ड थी । बापू की मालिश अंगीठी पास रखकर की गई । सरोजिनी नायडू ने भण्डारी के साथ बातें कीं और बिजली का एक रेडियेटर भेजने को कहा। उनके अपने घर में सेंक की किरणें देने का यंत्र था, जो उन्होंने अपने कमर के दर्द के लिए मंगवाया था । उन्होंने वहीं भेज दिया । सरोजिनी नायडू ने ग्रामोफोन मांगा था, वह भी आ गया ।

घूमते समय एक कुत्ता पड़ा मिला । मीराबहन ने देखा कि उसे चोट आई हुई थी, सो उसके घाव धोकर मरहम लगाया । कुत्ता इतनी अच्छी तरह से वह सब करवा रहा था कि क्या कहना ! बस फिर तो वह मीराबहन के पीछे-पीछे ही लंगड़ाता फिरता था । रात को सिपाही उसे नीचे ले गये ।

भंसालीभाई की खबर थी कि श्री मुन्शी बम्बई से वर्धा गये हैं । उन्होंने भी अणेसाहब को तार दिया था, "आप आयें, भंसालीभाई का उपवास छुड़ाने में मेरी

मदद की आवश्यकता होगी, तो मैं भी आ जाऊंगा। आशा है, हम सफल होंगे।" बम्बई से कुछ बहनें भंसालीजी के दर्शनार्थ वर्धा गई हैं।

१५ दिसम्बर '४२

बापू ने दो-तीन दिन से उर्दू का अभ्यास कम कर दिया है। 'आरोग्य की चाबी' लिखने में ज्यादा समय देने लगे हैं। इस महीने में उसे पूरा करना चाहते हैं। रविवार के 'बॉम्बे क्रानिकल' में "जोड ईश्वर की ओर लौट आते हैं" शीर्षक लेख था। उसपर से मीराबहन को विचार आया कि उन्हें जोडसाहब को पत्र लिखना चाहिए। सो एक पत्र में उन्होंने लिखा—"मैं आप-जैसी विद्वान तो नहीं हूं, मगर आपके साथ मेरी सहानुभूति है। मैं भी आपकी-सी मानसिक दशा में से गुजर चुकी हूं। मुझे हिन्दू दर्शनशास्त्र से शांति मिली है। आप भी अनुकूल वातावरण होने पर हिन्दुस्तान आयें। यहां की नदियां, हिमालय-जैसे पहाड़ और अन्य प्राकृतिक साधन आपको नया संदेश सुनायेंगे। यहां आकर मेरा बाहरी और भीतरी जीवन बदल गया है।"

बापू का रक्तचाप आज बहुत अच्छा था। १४०/९०। शाम को प्रार्थना के बाद एक घंटा काम किया। बाद में शौचादि से निवृत्त होने गये; पर रक्तचाप वैसा ही रहा। कारण का विचार करने लगे, कहने लगे, "आज बहुत दिनों बाद मूली खाई थी। वह कारण हो सकता है, मगर उससे अधिक सम्भव यह है कि आज तेरी डायरी पढ़ते समय मैंने देखा कि मुझे काफी अनावश्यक विचार आया करते हैं, तो मैंने मन को समझाया कि अनावश्यक विचार आने ही न पायें। इसका असर रक्तचाप पर पड़ा होगा।"

: ३२ :

विविध चर्चाएं

१६ दिसम्बर '४२

आज बापू ने बताया कि डायरी के बारे में उन्होंने कल जो नोट लिखा था, उसका अर्थ क्या था। कहने लगे, "मैंने तुमसे कहा था कि मैं भंसाली के बारे में लिख नहीं सकता; क्योंकि मेरे पास पूरी सामग्री नहीं है। वही चीज राजाजी के

बारे में लागू होती है। मैं क्या जानूं कि राजाजी के मन में क्या है ? वह मेरे परम मित्र हैं। उनकी बुद्धि के लिए मेरे दिल में बहुत मान है। वह इस चीज को इतनी दृढ़ता से कर रहे हैं, तो इसमें अवश्य ही कुछ होगा, ऐसा मुझे मानना ही चाहिए। उनकी बात मेरी समझ में नहीं आती तो उनसे पूछूं, उनके साथ लड़ूं, झगड़ूं; मगर इस तरह यहां बैठे अखबारों की रिपोर्टें पढ़-पढ़कर मुझे कोई राय नहीं कायम करनी चाहिए। मेरे मन में भी इस बारे में कोई विचार न आये तो अच्छा। मगर यहां तो अक्सर बोलते-बोलते विचार-मंथन (loud thinking) होता है। तुम लोगों के सामने कह दूं तो कम-से-कम वह लिखा नहीं जाना चाहिए। यह डायरी या तो मेरी जिन्दगी में अथवा मेरे बाद किसी रोज प्रकट होनेवाली है। इसमें काट-छांट होगी; मगर तो भी यह महत्व की चीज है। यहां हम आ गये, इतने दिन रहे। हमने यहां कैसे समय बिताया, यह जानने की सबको उत्सुकता हो सकती है। तो हम उसमें कच्चे और अधूरे विचार न रखें।

"राजाजी सोचते हैं कि इस तरह से वह मुसलमानों से पाकिस्तान की मांग ही छुड़वा देंगे। मुझे उन्होंने कहा कि हम दोनों एक ही चीज चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के टुकड़े न हों। मैं कहता हूं कि उनका तरीका गलत है। वह अहिंसक नहीं हैं। हम यदि पाकिस्तान को बुरी चीज मानते हैं, तो हमें साफ-साफ ऐसा कहना चाहिए। आखिर मुसलमान भी हमारे भाई हैं। उनमें कोई बुरी बात पैदा हो जाये तो हमें उसे छुड़वाना है। उन्हें भी हमें सुधारना है। कल के अखबार में एक मुस्लिम भाई ने लिखा है न कि और चाहे जो हो, अगर पाकिस्तान आया तो मुसलमानों का नाश है। जगत के किसी भी हिस्से में मुसलमान इतने कट्टर नहीं हैं, जितने कि यहां। उनके सामने और कहीं भी हिन्दू धर्म की-सी सहिष्णुता नहीं थी, मगर उस सहिष्णुता का यह अर्थ आये कि वे हिन्दुओं का देश छीनना चाहें, तो हिन्दू कह सकते हैं कि इनके प्रति अब सहिष्णुता नहीं रहना चाहिए। दूसरे देशों ने जो किया, वही हम भी करेंगे। वे कहेंगे, आखिर हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है और मुसलमान बाहर से आये तो कितने ? यहीं से ही तो ये लोग मुसलमान हुए। किसीका लड़का मुसलमान हो जाये और भाइयों से झगड़े कि पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा दो, तो वह बेशर्मी की हद हुई। या कोई आदमी मुसलमान हो जाये और अपनी औरत से भी कहे कि मेरे साथ तू भी मुसलमान हो जा, नहीं तो तुझे मार डालूंगा, वह भी बेशर्मी है।...को ही लो। वह मुसलमान हुआ था, तो इतना ही कर सकता था कि अपने-

आप ही को लेकर निकल जायें। मगर सच तो यह है कि मुसलमानों में भी वर्ग-विभाग तो हैं ही। जिन्हें मुसलमान बनाते हैं, उन्हें अपने बराबर का नहीं समझते।...के साथ भी कई इकरार तो किये, मगर उन्हें पूरा नहीं किया, तो वह भागा और आर्यसमाजी बना। वहां हिन्दू का हिन्दू रहा और मांस-शराब लेने की छूट मिली। बस, और क्या चाहिए था! आर्यसमाजी रहकर ही वह मरेगा।"

दिन में बापू ने 'आरोग्य की चाबी' का काफी हिस्सा लिखा।

बा की तबीयत खासी अच्छी है। शाम को बगीचे के एक-दो चक्कर मीराबहन के साथ लगा ही आती हैं। कौन जाने उन्हें दिल का दौरा कब हो जाये। मेरे पास इसकी दवा इस समय नहीं है। कई दफा मंगाई है, मगर डा० शाह कहते हैं कि मिलती ही नहीं।

बापू का रक्तचाप आज कल का-सा तो नहीं था; मगर खासा अच्छा था।

मैंने चरखा कातने का समय प्रार्थना के बाद से हटाकर दोपहर को रख लिया, ताकि रात को बापू के लिखे का अनुवाद कर सकूं। बापू का बिस्तर लगाना, बा को दवा वगैरा देना—यह सब पंद्रह मिनट ले लेता है। पौन घंटा बच जाता है। बा को पहले प्रार्थना के बाद ही दवा का ले आना अच्छा नहीं लगा। पीछे बापू ने समझा दिया, तो समझ गईं।

१७ दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू और भाई इतिहास की किताबों की बातें करते रहे। बापू बताने लगे कि जब बैरिस्टरी पास करके वह विलायत से लौटने लगे, तब बहुत निराश थे कि वापस जाकर करेंगे क्या! जबान तो खुली ही नहीं थी। हिन्दुस्तानी कानून के बारे में वह कुछ जानते नहीं थे। इसलिए बहुत घबराहट में थे। उन्होंने बताया, "वापस आने से पहले मैं श्री एम० पिन्कट के पास चला गया। वह मद्रास के सिविल सर्विस के आदमी थे। कंजरवेटिव पार्टी के थे, मगर भले थे। मैंने उन्हें अपनी उलझन बताई। वह कहने लगे, 'तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं। वकील का धंधा कठिन नहीं है। कानून का खयाल न करो। अपनी सामान्य बुद्धि को इस्तेमाल करो तो तुम्हारा काम चल जायेगा। मनुष्य-स्वभाव पहचानने की योग्यता भी कुछ होनी चाहिए।' इस दृष्टि से उन्होंने मुझे श्रीमती सेमल पेनिक और लवाल का मुखमुद्राशास्त्र (Physiogonmy) पढ़ने की सलाह दी। लवाल की पुस्तक मिल गई। पहली नहीं मिली। उन्होंने के और मेलिसन की

'सिपाही विद्रोह का इतिहास' भी पढ़ने की सलाह दी। यह इतिहास बहुत रसपूर्ण था।''

बापू फिर बताने लगे, ''जब विलायत गया, तब मैट्रिक कर चुका था। पोरबंदर के शासन-प्रबंधक के पास में छात्रवृत्ति मांगने गया। उन्होंने कहा, 'बी० ए० पास करके जाओ, तब कुछ समझने लायक होगे। तब तुम्हें छात्रवृत्ति भी दूंगा।' मैंने कहा, 'मैं इतने वर्ष कैसे खोऊं?' सो छात्रवृत्ति के बगैर ही गया। १६०६ में जब मैं दक्षिण अफ्रीका से शिष्टमण्डल लेकर विलायत गया, तब वहां जितने प्रसिद्ध आंग्ल-भारतीय थे, जो हिन्दुस्तान में आकर काम कर गये थे, सब के पास गया। सबने मदद की। उस समय मैं कांग्रेस के रंग में रंगा नहीं था। इसलिए उन लोगों को मेरा कोई डर नहीं था। दक्षिण अफ्रीका के विषय में उन्हें कुछ विरोध करने जैसा नहीं था। ईश्वर ने उस समय काफी लोगों की मदद मुझे दिलाई।''

भाई कहने लगे, ''इसके सिवा ब्रिटिश उपनिवेशों में रहनेवालों के प्रति सिविल सर्विसवालों का एक तरह का मुरब्बीपन का भाव होता है कि यह हमारी प्रजा है, जैसे जेल में कोई पुराना कर्मचारी मिल जाये, तो जो पुराना कैदी पहले उसके साथ रह चुका हो, वह उसका कैदी कहा जाता है, उसे कोई कुछ नहीं कह सकता।''

दोपहर में एक दुखद घटना हो गई। बापू के पैर की मालिश पूरी की, तो बापू कहने लगे कि वह सोकर उठेंगे तो मुझे नहीं जगायेंगे; क्योंकि क्या पता, मैं कब सोऊं। मैंने कहा कि अभी सो जाऊंगी तो मान गये। मैं भीतर हाथ धोने आई तो भाई के साथ बातों में लग गई। मुझे लगा कि बापू एक घंटा सोते हैं। मैं पांच मिनट में जाकर सो जाऊंगी तो काफी है। मगर आज बापू पंद्रह मिनट में ही उठ गये। उसी वक्त मैं सोने गई। इससे उन्हें कुछ आघात लगा। कहने लगे, ''अगर कोई कहकर न करे, तो मेरा पारा चढ़ जाता है। यह चीज मुझसे सहन नहीं होती।''

मैंने कहा, ''मगर यह चीज तो इतनी छोटी थी कि मैंने उसको 'वचन' का महत्व ही नहीं दिया था, वरना बातों में न लगती।''

बापू कहने लगे, ''तो बड़ी चीज कौनसी होती है? हमारा स्वभाव ही ऐसा बन जाना चाहिए कि मुंह से जो बात निकले, उसे करना ही है; नहीं तो वह बात

मुंह से निकले ही न।"

मीराबहन ने आज अपने चाचा एलेक को पत्र लिखा। सरोजिनी नायडू को बहुत पसन्द आया।

भाई बापू का खाना तैयार करते थे। नतीजा यह होता था कि उन्हें खुद खाने को बहुत देर हो जाती थी। आज से वह काम मैंने ले लिया है। बुखार आने से पहले तो मैं ही करती थी, मगर बुखार में क्रम बदला और वैसे ही चलता रहा। आज से फिर पुराना क्रम शुरू होता है।

१८ दिसम्बर '४२

आज सवेरे भाई बापू से पार्क्स की पुस्तक[1] की बातें करते रहे। बापू कहने लगे, "पार्क्स मार्क्स की टीका भले करें, मगर मार्क्स से बड़ा काम किया है, इसमें शक नहीं। उसका समाज-व्यथा का निदान ठीक हो या न हो; इतना अवश्य है कि उसने कुचले जानेवाले गरीब वर्ग के लिए कुछ करने की सोची। मार्क्स के अर्थ-शास्त्र को मैं नहीं मानता। मैं नहीं मानता कि समाज की सभी कठिनाइयों का हल अर्थशास्त्र में है; लेकिन इतना मैं मानता हूं कि गरीब कुचले जा रहे हैं। उनके लिए कुछ करना चाहिए। यह बात मैंने बचपन से देखी है। इसे समझने में मुझे कठिनाई आई ही नहीं। मेरे लिए वह स्वयंसिद्ध-सी चीज रही है। छुटपन में ही मैं अपनी मां से दलील करता था—भंगी को छूने से हम क्यों अपवित्र हो जाते हैं? उस दिन से मैं भंगियों का बना। मार्क्स ने जो देखा, उसपर उसने विचार किया। वह प्रतिभा-शाली आदमी था, विद्वान था। सो प्रतिभाशाली भाषा में अपने विचार लिख सका है।"

भाई बोले, "वह विद्वान था, साथ ही दार्शनिक और अर्थशास्त्री भी था। इसी कारण वह सफल हो सका।"

भाई जल्दी वापस चले गये। बाद में बापू कल शाम की घटना की चर्चा मेरे साथ करते रहे। कहने लगे, "अगर हम अपनी घरेलू समस्याओं का हल अहिंसा द्वारा नहीं निकाल सकते, तो जगत में कुछ भी नहीं कर पायेंगे।"

शाम को घूमते समय फिर भाई ने खादी के बारे में सवाल उठाये, "हमारा अर्थ-शास्त्र, हमारी समाज-रचना कैसी हो कि जिससे हम खादी को सफल बना सकें?"

बापू के मन में अभीतक कल शाम की घटना का विचार चल रहा था। कहने

[1] Marxism—A Post-mortem.

लगे, "मुझे अर्थशास्त्र से कुछ नहीं पड़ी है। मैं मानता हूं कि कार्यकर्ता यदि योग्य होंगे, तो प्रतिकूल वातावरण में भी अपना रास्ता निकाल लेंगे और वह तभी हो सकता है, जब हमारे दिन-प्रति-दिन के जीवन में अहिंसा का इस्तेमाल हो और हमारा जीवन सुव्यवस्थित हो चले। मैं चाहता हूं कि हम सब बाकी समय इस चीज की साधना में लगायें। अगर हम अपनी समस्या हल कर सकते हैं, तो जगत की समस्याओं का हल भी निकाल सकते हैं। उसके सिवा अहिंसा द्वारा हम समाज पर कोई असर नहीं डाल सकते। अगर मैं इस काम में असफल होता हूं, तो समझूंगा कि मैंने अपना दिवाला निकाल दिया है।"

मीराबहन ने त्रिफला छोड़ दिया है। कहती हैं कि त्रिफला से मुझे नुकसान हुआ है। बा ने भी आज त्रिफला नहीं खाया।

शाम को महादेवभाई की समाधि पर नया ॐ बनाया। मोटी मिट्टी की तह में घोंघे गाड़ दिये। ॐ का चित्र कागज पर बनाकर ले गये थे। इससे घोंघे लगाने में कम समय लगा। घूमने के लिए आधा घंटा मिल गया। बा आज कह रही थीं, "मैं रोज अखबार पढ़ती हूं। लोग भूखों मर रहे हैं। हम क्यों ज्यादा चीजें मंगाते हैं? यहां तो सरकारी आदमी हैं। हुक्म चलाया कि इतना लाओ और उतना ही आ गया, भले दूसरे भूखों मरें। जेल से यदि सामान आये तो वहां कैदी भूखों मरते हैं।" मुझे विचार आया कि यदि सब लोग इस चीज का ध्यान रखें तो खुराक-संबंधी आधी उलझन तो एक दिन में सुलझ जाये।

१६ दिसम्बर '४२

आज शनिवार है। महादेवभाई को गये १६ हफ्ते हो गये। आदमी जाता है, तो पीछे समय दौड़ता ही जाता है। सुबह समाधि पर सरोजिनी नायडू और मीराबहन आईं। ॐ सुन्दर ही दिखता है। मिट्टी का फलस्तर फटने लगा है।

बा ने एक तुलसी का गमला बरामदे में मंगवा रखा है। उसपर रोज दिया जलाती हैं और उसकी पूजा करती हैं। दशहरे और दिवाली के समय उसकी मंगनी-ब्याह भी किया था। पौधा अब सूखने लगा है। मीराबहन कहने लगीं, "एक दूसरा पौधा भी है। मैं वह ले आऊंगी।" बापू बोले, "नहीं, यह ६ फरवरी तक चलेगा। ६ फरवरी हमारी यहां की आखिरी तारीख है। उसके बाद हम यहां रहेंगे तो एक दूसरी ही हालत में रहेंगे।" क्या नई परिस्थिति पैदा होगी, यह तो भगवान जानें, मगर ऐसी बातों से काफी चिंता हो जाती है।

गरमी बढ़ने लगी है और रात को एक या दो शाल ओढ़ने से काम चल जाता है।

आज सरोजिनी नायडू और श्री कटेली के लिए रोटी बनाई। बा ने भी खाई और दोपहर को सो गई—चरखा रात को काता। कपड़े भी नहीं धोये।

बापू की 'आरोग्य की चाबी' आज पूरी हो गई। अब उसे फिर से पढ़ना और उपसंहार लिखना बाकी है। इस समय पुस्तक बहुत छोटी है। बापू कह रहे थे, "इस समय मैं अपने अनुभव से बाहर गया ही नहीं हूं।"

: ३३ :

झूठे आरोप

२० दिसम्बर '४२

आज सुबह घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने तुम्हारी डायरी के बारे में प्यारेलाल के साथ बात की थी। क्या उसने तुम्हें बताया ? तुम्हारी डायरी पढ़ते-पढ़ते मेरे मन में आया कि इसमें बहुत-सी चीजें ऐसी हैं, जो नहीं होनी चाहिए। इस डायरी को किसी दिन प्रकट होना है। उस समय कई चीजों का दुरुपयोग हो सकता है, जैसे व्यक्तियों की टीका। वह टीका करने का मुझे अधिकार नहीं है। माण्टेग्यू ने अपनी डायरी में उन सभी लोगों की टीका की है, जिनसे वह मिला था और जिनपर उसकी छाप पड़ी थी। यह टीका क्या थी, उन सबकी हँसी थी, उपहास था। मेरी दृष्टि से यह भद्दी चीज है। ऐसा नहीं होना चाहिए।

"अपनी लड़ाई की चर्चा जो कुछ भी मैं करूं, वह भी नहीं लिखनी चाहिए; क्योंकि मेरे विचार तो बन रहे हैं। मैं खुद बन रहा हूं। तब ऐसे अधूरे विचार लिखने से क्या लाभ ?

"तीसरी चीज है प्यारेलाल के प्रश्न और मेरे उत्तर। वे भी नहीं लिखे जाने चाहिए। मेरे विचार वहां भी कई बार पक्के नहीं होते।

"फिर डायरी पढ़कर जब मैं उसपर अपने दस्तखत देता हूं तो वह भी पक्की बन जाती है। मुझे यह ठीक नहीं लगता।"

मैंने कहा, "डायरी पढ़ने के लिए आप ही ने मांगी थी। आप जैसा कहें, मैं करने को तैयार हूं। कहें तो लिखना बन्द कर दूं। जो कुछ आपने छोड़ने को कहा

है, उसे छोड़कर यहां लिखने को रहा क्या ? ऋतु का वर्णन, पक्षियों का बयान भी अच्छा हो सकता है; मगर मुझे इसमें रस नहीं। डायरी मैंने आप ही के कहने पर आरम्भ की थी। भाई के आने तक संक्षिप्त थी। उन्होंने विस्तार में लिखने को कहा तो मैंने वैसा किया। आपके विचार भले अधूरे हों, मगर किस तरह उनका विकास हुआ, इसका लेखा रहे, तो अच्छा है। छापने की दृष्टि से नहीं, मगर आपके लिए, हमारे लिए। अगर आप यह उचित समझें तो न छापने लायक सामग्री को एक लकीर से और अनावश्यक या गलत सामग्री को अच्छी तरह काट सकते हैं।"

बापू कहने लगे, "तुम दोनों विचार करके मुझे बताना कि क्या करना ठीक होगा। मैंने अपने विचार तुम्हारे सामने रख दिये हैं। उनका प्रभाव तुम दोनों पर क्या हुआ है, यह जानकर ही जो करना होगा, करूंगा।"

साढ़े दस बजे डा० शाह आये। दोपहर में भण्डारी भी आये। बेचारों के लिए इस प्रकार आना-जाना बोझ-सा हो जाता है।

अखबारों में बापू के प्रति झूठा प्रचार तो चलता ही है। अंग्रेज इतना झूठ कैसे बोल सकते हैं, यह समझ में नहीं आता।

शाम को बादल आये। पहाड़ी पर वर्षा हुई होगी, क्योंकि हवा में नमी थी; मगर यहां पानी नहीं बरसा। रात को इतनी गरमी थी कि मोटी सूती चादर भी ओढ़ना कठिन था।

भाई बापू से कहने लगे, "आरोग्य की किताब पूरी हो गई है तो आप आश्रम का इतिहास हाथ में ले लें। आपने बहुत पहले ही कहा था कि आश्रम का इतिहास लिखेंगे और जैन धर्म के बारे में कुछ-न-कुछ लिखेंगे।"

बापू बोले, "जैन धर्म के बारे में तो रायचन्दभाई के सहयोग से कुछ लिखने का विचार किया था; मगर वह बात बहुत वर्षों से मेरे मन से निकल गई है। मुझे लगता है कि मैं उसका अधिकारी नहीं हूं। मुझे जैन धर्म के विषय में ज्ञान ही क्या है ? उसके लिए खूब अभ्यास करना चाहिए, जैन शास्त्र पढ़ने चाहिए, दूसरों की टीकाएं भी देखनी चाहिए। यह सब देखकर ही मैं उसे उठा सकता हूं। आज वह मेरे बस की बात नहीं। आश्रम का इतिहास लिख सकता हूं, मगर वह भी ९ फरवरी के बाद। आज मेरा मन घोड़े की रफ्तार से चल रहा है। नवीं फरवरी यहां की आखिरी तारीख है। तबतक मैं अपना काम पूरा कर लेना चाहता हूं। इसलिए मैं अपनी सब प्रवृत्तियों को समेट रहा हूं। 'आरोग्य की चाबी' पूरी हुई, अब इतने

दिन इसके दोहराने के लिए मिलेंगे, यह मुझे अच्छा लगता है। नया शुरू करना तो अगर नवीं फरवरी के बाद ही यहां रहने का हो और मेरी सम्पूर्ण मनोवृत्ति बदल जाय, तभी हो सकता है।"

मैंने हँसी में कहा, "फरवरी तक कुछ होनेवाला नहीं है। यहीं आराम से पड़े होंगे।" बापू कहने लगे, "यहां पड़े-पड़े यदि हमारा एक-एक विचार, एक-एक काम, खाना-पीना तक स्वराज्य के निमित्त हो तो खैर है, भले ही यहां पड़े रहें।"

मैंने कहा, "आप फरवरी तक का प्रोग्राम बनाते हैं तो हमें भी वही करना चाहिए?"

बापू कहने लगे, "आज तो मैं ३१ दिसम्बर तक का ही प्रोग्राम बना रहा हूं। ९ फरवरी तक भी मेरा मन नहीं जाता। तुम्हें भी वही करना चाहिए।"

२१ दिसम्बर '४२

आज सोमवार था। भाई एक दिन मुझसे कह रहे थे कि सोमवार को एक रेखाचित्र बना दिया करो। आज महादेवभाई की समाधि पर गये तो सामने की पहाड़ियों पर सूर्य का प्रकाश बादलों से निकलकर सुन्दर छटा दिखा रहा था। मैं पेस्टल रंग लेकर जा बैठी। आज पहली ही बार पेस्टल हाथ में लिये थे। तस्वीर बनाने में कुछ समय लगा। सरोजिनी नायडू को तस्वीर पसन्द आई। उन्होंने वह ले ली।

दोपहर में खूब बादल थे। शाम को पानी बरसने लगा। बापू दिन में अपनी आरोग्यवाली पुस्तक दोहराते रहे। शाम को वह बरामदे में घूमे।

मीराबहन ने वाइसराय को पत्र लिखा है। इसमें सरकार के झूठे आरोपों का, जैसे 'गांधी जापानियों के साथ मिला हुआ है' या 'मीराबहन गांधी और जापान के बीच सलाहकार हैं', उत्तर था। पत्र के साथ उन्होंने उस पत्र की नकल भी भेजी, जो उन्होंने उड़ीसा से बापू को लिखा था। उस पत्र-व्यवहार में उन्होंने जापानी हमले के मौके पर जो प्रश्न उठ सकते हैं, बापू से पूछे थे। उन्होंने उसका उत्तर दिया था। यह पत्र दैवयोग से मीराबहन के पास यहां था। आज काम आया।

रात को सोने के समय भाई वाइसराय के भाषण के बारे में बात कर रहे थे। बापू को वह बहुत खराब लगा था। बापू कहने लगे, "वे मानते हैं कि अब तो हम जीतने ही वाले हैं। उनके अपने धन-उपार्जन के साधन मर्यादित हैं और हमारे अमर्यादित हैं। उन्हें हिन्दुस्तान पर कब्जा रखना ही है, पहले से भी ज्यादा पक्की

तरह। अगर हिन्दुस्तान एक हो, तब उन्हें फायदा हो सकता है; इसलिए अब वे भौगोलिक ऐक्य की बात करते हैं और ऐसा कहने में उन्होंने अपने बारे में कई-एक छिद्र रख लिये हैं।"

भाई कहने लगे, "आप ठीक कहते हैं, मगर हमें क्या पता कि ईश्वर किन-किन साधनों का उपयोग करके हमारा काम कर रहा है ? अखंड हिन्दुस्तान की बात भले ही किसी हेतु से करें, मगर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े न हों, यह हम भी चाहते हैं।"

बापू ने कहा, "वह तो है ही। सत्य, अहिंसा और ईश्वर में दिन-प्रति-दिन मेरी श्रद्धा बढ़ती ही जाती है।"

शाम को वर्षा हुई। भाई के कमरे की छत चूने लगी। ऐसा लगता है कि घर का वह सिरा बाद में बनाया गया है। इसलिए जहां वह मुख्य महल के साथ लगता है, वहां से छत चूने लगी है। कमरा पानी से भर गया। दरी वगैरा उठानी पड़ीं।

२२ दिसम्बर '४२

आज दिन भर वर्षा रही। सुबह घूमने के समय पानी बन्द हो गया था। भाई देर से सोकर उठे। इसलिए महादेवभाई की समाधि पर से ही वापस चले गये, घूमे नहीं। उन्हें तैयार होना था। बापू बा की बातें करते रहे। पीछे बरसात में निकर पहनने की सलाह देते रहे। कीचड़ में मेरी सलवार के पांयचे भर गये थे।

दोपहर को भाई मेरी डायरी देखते रहे। उस बारे में मुझे कुछ हिदायतें दीं। शाम को घूमते समय बापू के साथ डायरी की बात हुई। मैंने कहा, "आप देखते जायें। मुझे जो लिखना होगा, वह लिखती रहूंगी। आपको जो अनावश्यक लगे, आप काट दें।"

भाई कहने लगे, "आप इसे भाषा और रिपोर्टिंग की दृष्टि से देखें।"

बापू मीराबहन के वाइसरायवाले पत्र को सुधारते रहे। मीराबहन यह नहीं कहना चाहती थीं कि उन्हें एक अंग्रेज की हैसियत से यह सब झूठ देखकर दर्द होता है, क्योंकि वह अपने-आपको अंग्रेज मानती ही नहीं हैं। बापू ने समझाया कि अंग्रेज की हैसियत से नहीं लिखना चाहतीं, तो उनके पास वाइसराय को लिखने का कोई हक ही नहीं है। अंत में मीराबहन ने लिखा, "अंग्रेज माता-पिता के घर जन्म लेने के कारण मुझे यह देखकर दुख होता है कि अंग्रेज सरकार इतना झूठ बोल रही है।"

प्रार्थना के बाद अनुवाद करती रही। पीछे भाई के पास बैठी रही। सोने को खासी देर हो गई, दस बज गये। यहां दस बजे देरी लगती है। बाहर तो दस से पहले शायद ही कोई सोता हो!

२३ दिसम्बर '४२

सुबह खूब धुंध थी। बादल आते-जाते रहे, मगर पानी नहीं बरसा। रात को आकाश खुल गया।

सुबह समाधि से लौटते समय बापू महादेवभाईवाली गीताजी के पन्ने उलट रहे थे। आखिरी पन्ने पर 'आउज बिल्ला'-वाली आयत लिखी हुई थी। पूछने लगे, "ये किसके अक्षर हैं? महादेव के या प्यारेलाल के?" मैंने बताया कि १ अगस्त को बम्बई से चलते समय महादेवभाई ने भाई को वह आयत लिख देने को कहा था, सो भाई के अक्षर हैं। बापू कहने लगे, "बस छः दिन उसने यह आयत गाई।" फिर थोड़ा ठहरकर बोले, "लगता ही नहीं है कि महादेव सदा के लिए गया। कल रात को स्वप्न में वह लड़की...कहती है, 'महादेवभाई कहां हैं?' मैं उत्तर देता हूं, 'बहन, मैं तो उसे श्मशान में छोड़ आया हूं।' पीछे वह पागल-सी हो जाती है। कहती है, 'लाओ महादेवभाई को! उसे वहां क्यों छोड़ आये?'"

कल और आज बापू ने बिजली के गरम किरण-यन्त्र से मालिश करवाई; क्योंकि सूर्य का प्रकाश नहीं था। बरामदे में बैठा नहीं जा सकता, इसलिए भीतर ही बैठते हैं। बादल होते हैं तो बूंदें भीतर तक आने लगती हैं।

आज मीराबहन के पत्र को बापू ने फिर देखा। एक-दो वाक्य वह बदलना चाहती थीं। एक था—"मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं।" इसके बदले में वह चाहती थीं—"मैं ऐसा कहने की स्थिति में हूं।" बापू ने समझाया कि दूसरा पहले कम वजनदार है। वह उससे उलटा मानती थीं। आखिर समझ गईं।

दोपहर को मैं सोमवारवाले रेखाचित्र को सुधारती रही। इससे आज दोपहर के और सब काम छूट गये। प्रार्थना के बाद अनुवाद किया। थोड़ी डायरी लिखी। सुबह भी प्रार्थना के बाद अनुवाद किया था। इसे इस महीने में पूरा करना चाहती हूं।

रात को मीराबहन अपने पत्र की और पत्र-व्यवहार की साफ नकल, जो भेजनी है, बापू को दे गईं। बापू ने फाइल में रखवाया, ताकि बिगड़ न जाये। बापू के सोने के बाद मीराबहन भाई के साथ बैठकर अपने इसी पत्र की नकलें सुधा-

रती रहीं।

आज पानी नहीं बरसा, मगर सरदी भी नहीं हुई। इससे लगता है कि शायद पानी फिर आ जाये।

२४ दिसंबर' ४२

आज सुबह ६ बजे उठी। बहुत बुरा लगा। सुबह का सारा वक्त बरबाद हो गया।

मीराबहन का वाइसराय के नाम पत्र गया। उसमें कांग्रेस वर्किंग कमेटी पर लगाये गये आरोपों का जवाब भी था। सरोजिनी नायडू ने आपत्ति की कि कमेटी को मीरा का या किसीका सर्टिफिकेट नहीं चाहिए। बापू ने समझाया, "मीराबहन दूसरा नहीं लिख सकती हैं। उसने पत्र में लिखा है कि 'मेरे और कांग्रेस के विषय में जो झूठ चल रहा है, उसका मुझे दुख हुआ है।' बाद में कांग्रेस का नाम ही न ले, तो उसका अर्थ हो जाता है कि मैं ही एक भला आदमी हूं।" इस बारे में सरोजिनी नायडू की भाई के साथ भी कुछ चर्चा हुई।

सुबह ज्यादा सोई थी। इसलिए दोपहर को नहीं सोई, मगर उस समय काम बहुत कम कर पाई। कोई-न-कोई पास आकर बात करने लगता था। बापू ने बाद में कहा कि दोपहर को साढ़े बारह बजे से एक बजे तक नियमपूर्वक आंख मींचकर बिस्तर पर पड़े ही रहना चाहिए।

शाम को खाने के समय भंसालीभाई की बात चली। मीराबहन के पास आशादेवी का पत्र आया था। उन्होंने लिखा था, "बच्चों के शिक्षक का शरीर कमजोर है, मगर मन प्रफुल्लित है। उनके पास जाकर मन खुश हो जाता है, शांति मिलती है।" बच्चों के शिक्षक यानी भंसालीभाई। बाकी सबके समाचार थे। बापू खुश हुए। आज सुबह ही घूमते समय वह बात कर रहे थे, "भंसाली की मृत्यु की खबर आयेगी, तो मेरा हृदय कांप भले ही उठे, मगर खुशी से नाचेगा भी। ऐसी सम्पूर्ण अहिंसक मृत्यु आजतक हुई ही नहीं है, भंसाली को मैं जानता हूं। उसके हृदय में वैरभाव का लेश भी नहीं है। हमारे लोगों में इतना मैल भरा है कि उसे निकालने के लिए कइयों को तो जल मरना होगा।"

२५ दिसम्बर '४२

आज क्रिस्मस का दिन है। कल शाम को बापू मीराबहन से कह रहे थे, "कोई क्रिस्मस का भजन आता हो तो गाओ।" उन्हें कोई याद न था। रघुनाथ आज

स्तोत्र संग्रह (Hymn Book) ढूंढ़ने गया। आखिर, यरवदा जेल की बड़ी नर्स से 'मुक्ति फौज स्तोत्र-संग्रह' (Salvation Army Hymn) नामक पुस्तक मिली। शाम की प्रार्थना में मीराबहन ने उसमें से एक भजन गाकर सुनाया, जिसकी पहली पंक्ति थी—"जब गड़रिये रात को भेड़ों के झुंड की रखवाली करते हैं।..."[१]

श्री कटेली और सरोजिनी नायडू के लिए पुलाव पकाया। बा को मेथी की रोटी। उन लोगों ने भी एक-एक रोटी ली। सुबह ११ बजेतक रसोई के काम में रही।

खाने के बाद शाम को सोने के समय मीराबहन ने 'जब अद्भुत सलीब को देखता हूं' गाकर सुनाया। बापू को यह गीत बहुत प्रिय है। मुझे कहा था कि मैं मीराबहन से उसे सीख लूं। मैंने उनसे तीन-चार बार कहा है, मगर वह आजतक सिखा नहीं पाईं।

२६ दिसम्बर '४२

आज बापू मीराबहन से कह रहे थे, "नया वर्ष तो ईसा के जन्म के साथ संबंध रखता है। ईसवी साल कहलाता है। तो वह ईसा के जन्म-दिन 'क्रिस्मस डे' से क्यों नहीं शुरू होता?" वह नहीं जानती थीं। कहने लगीं, "हां, नये वर्ष और क्रिस्मस डे के बीच में इतने दिन क्यों रखे गये, सो समझ में नहीं आता। और आश्चर्य है कि आजतक यह प्रश्न हम लोगों के मन में नहीं उठा!"

पीछे बापू 'बाक्सिंग डे' का अर्थ पूछने लगे। मीराबहन ने बताया कि 'बाक्स' का अर्थ 'बाक्स' नहीं, बल्कि रुपये-पैसे की भेंट है, जो नौकरों को देते हैं। दूर के रिश्तेदार, जो क्रिस्मस की भेंट नहीं देते, 'बाक्स' देते हैं।

दोपहर को इतनी गरमी थी कि बापू बाहर नहीं बैठ सकते थे। एकाएक तूफान आया। जोर की वर्षा आरम्भ हो गई। दरवाजे वगैरा बन्द कर लिये, मगर दस-पंद्रह मिनट में ही सब शांत हो गया। फिर गरमी शुरू हो गई।

भंसालीभाई की कोई खबर नहीं, मगर 'वंदे मातरम्' में 'हे देवी अेनी रक्षा करो' नामक प्रार्थना थी। आगे भी दो-चार बार निकली है। स्पष्ट है कि वह भंसलीभाई के लिए है। इसका अर्थ यह है कि वह अभीतक हैं।

आज मीराबहन ने पिछली तरफ से प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाया है। उसमें महादेवभाई की समाधि भी छोटी-सी दिखाई है, सुंदर है।

---

[१] When shephards watch their flock by night.

आज दारलां[1] के गोली से मारे जाने की खबर से सब चकित थे।

: ३४ :

उपवास के बादल

२७ दिसम्बर '४२

आज इतवार है। इतवार को फिकर लग जाती कि शाम को बापू का मौन शुरू होगा। बाहर भी मौन चुभता तो है ही, मगर यहां तो बहुत ही बुरा लगने लगता है।

बापू स्नानघर से निकले तो भण्डारी आये। बेलगांव जेल में कितने ही लोग पेट के दर्द से मर गये हैं। अखबार में था कि ग्यारह मरे हैं, मगर दरअसल ज्यादा मरे हैं। भण्डारी से पूछा तो कहने लगे कि उनके पास रिपोर्ट नहीं आई।

आज सवेरे सूर्योदय का दृश्य बहुत सुंदर था। मैं चित्र बनाने जा बैठी, मगर चंद मिनटों में दृश्य बदल गया। दिन में भी अधिकांश समय चित्र में ही लग गया शाम को उसे पूरा किया। महादेवभाई की समाधि का आसपास का दृश्य था। उसमें एक छोटी-सी चिता जलती हुई दिखाई थी। आग वगैरा दिखाने के लिए मीराबहन की मदद ली। सुबह भी आकर वह सलाह दे रही थीं। चित्र सबको अच्छा लगा, मगर बापू इसे देखकर बहुत विचार में पड़ गये। घूमने का समय भी हो गया था। मैंने अभीतक कुछ भी खाया न था। बापू इसपर नाराज थे कि मैं कार्यक्रम के अनुसार नहीं चली। समाधि पर पहुंचे तो कहने लगे, "खाकर नहीं आई न ?" मैंने कहा, "जाकर खाऊंगी।" बोले, "ठीक है, मैं कितने दिन का मेहमान हूं तुम लोगों को टोकने के लिए!" मैं उलटे पांव वापस खाना खाने आ गई। विचार आने लगे, "बापू के इतना गम्भीर हो जाने का कारण क्या मेरा समय पर खाना न खाना ही था अथवा उनके मन में और कुछ चल रहा है?"

आजकल रात को मच्छर बहुत होते हैं। बापू पौने आठ बजे ही उठकर सोने की तैयारी करने लगे। मच्छरों के कारण कुछ काम करना कठिन था, मगर बापू उस समय बड़े विचार में पड़े दीख पड़ते थे। मैंने शाम को पूछा, "क्या आज आप

---

१ फ्रेंच एडमिरल

विचार में हैं ?" कहने लगे, "विचार तो हमेशा आते हैं। आज कुछ और ज्यादा होंगे।"

रात में बा की तबीयत ठीक नहीं रही। छाती में दर्द हो आया, नींद अच्छी नहीं आई।

भाई की तबीयत भी अच्छी नहीं थी। उनके मन में भी क्या जाने क्या-क्या विचार चल रहे थे। रात को प्रार्थना के बाद बाहर खाट पर जाकर पड़े थे। बाद में भी बड़े चुपचाप से थे। मैंने सोते समय आध-पौन घंटे तक उनका सिर वगैरा दबाया, मगर जब गई, तबतक सोये नहीं थे। रात में भी शायद नींद अच्छी नहीं आई।

दोपहर को कुछ समय तक अनुवाद किया; परन्तु काम अधिक नहीं हो पाया।

बापू ने रात को पौने आठ बजे ही मौन ले लिया।

२८ दिसम्बर '४२

आज बापू का मौन था। मुझसे सरकार के साथ का पत्र-व्यवहार मांगा। पीछे वाइसराय के नाम एक पत्र लिखते रहे। रात को पौने आठ बजे मैंने और मीराबहन ने पत्र मांगा। बापू ने टालते हुए कहा, "अब कल सुबह पढ़ना।"

भाई से कहने लगे,-"इसमें सबसे ज्यादा बोझ तुम पर पड़नेवाला है।" मैं तो कुछ समझी नहीं, मगर भाई कुछ भांप गये-से लगते थे। बापू सो गये। पीछे भाई मुझसे पूछने लगे, "तुम्हारे अन्दाज से बापू कितने दिन का उपवास सहन कर सकते हैं ?" मैंने पूछा, "क्यों ? क्या पत्र में ऐसा कुछ है ? मीराबहन तो कहती थीं कि जितना उन्होंने पढ़ा है, उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं थी।" कहने लगे, "नहीं, यों ही पूछ रहा हूं।" मैंने कहा, "राजकोट में तो पांचवें रोज तबीयत बिगड़ गई थी। उसे देखते हुए तो लगता है कि बहुत नहीं चला सकेंगे।" भाई पीछे बम्बई कांग्रेस महासमिति का और इससे पहले कार्यसमिति का प्रस्ताव लेकर ध्यानपूर्वक पढ़ रहे थे। सारा-का-सारा वातावरण कुछ भारी-सा लग रहा है। बात-बात में बापू कहने लगे, "पहली तारीख से मैं ईश्वर में लीन होना चाहता हूं।" मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मगर बापू ईश्वर में लीन होना चाहते हैं तो भले हों, मेरी दृष्टि में तो वह हमेशा ईश्वर में ही लीन रहते हैं—और लीन होना चाहते हैं तो अच्छा है।

दोपहर में थोड़ा-सा चित्र का काम किया । उसमें जो वृक्ष था, वह बदल दिया ।

शाम को मीराबहन ने मुझे वह भजन अच्छी तरह सिखाना आरम्भ किया है। इसमें समय तो लगेगा, मगर अच्छा लगेगा।

२६ दिसम्बर '४२

सुबह पौने छः बजे उठी । बापू ने जो पत्र रात को लिखा था, वह पढ़ने के लिए लेने को आई, मगर भाई पढ़ रहे थे । स्नानादि के बाद आकर पत्र लिया । इतने में बापू उठ गये थे । उनके लिए फल का रस निकाला । पीछे पत्र पढ़ा । उसमें उपवास की बात आ ही गई थी।

जब मैं उठकर आई, तब भाई बापू के पत्र के बारे में अपनी टीका लिख रहे थे । घूमते समय बापू ने उनकी एक-एक बात को लेकर उसका उत्तर दिया ।

सुबह साढ़े दस बजे बापू ने भाई से कहा कि सरोजिनी नायडू को भी पत्र पढ़ा देना चाहिए । भाई ने उन्हें यह पढ़ सुनाया । सुनते-सुनते उनकी आंखों में पानी भर आया । कहने लगीं, "पत्र बहुत ही अच्छा है । उसमें बड़ी करुणा भरी है, दुखी हृदय की पुकार है; मगर पत्र गलत है । बापू के उच्चतम बलिदान का समय अभी नहीं आया ।"

दोपहर को बापू ने फिर अपने पत्र के बारे में कई प्रश्नों का उत्तर दिया । मीराबहन ने, मैंने और भाई ने कुछ प्रश्न किये । २१ दिन की अवधि के बारे में भी कुछ चर्चा हुई ।

बा कहने लगीं, "वाइसराय को पत्र लिखें; परन्तु उसमें उपवास की बात न लिखें ।"

बापू कहने लगे, "उपवास के बारे में ही तो लिखना चाहता हूं, वह कैसे छूट सकता है ? जानती हो न कि इससे पहले एक पत्र ऐसा ही लिखकर मैंने उसे फाड़ डाला था ।" फिर कुछ रुककर कहने लगे, "मेरा तो दिन-प्रति-दिन यह विश्वास बढ़ता ही जाता है कि हम सब ईश्वर के हाथों में खिलौने हैं ।"

सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "उपवास की बात करना ठीक नहीं है । आपको चाहिए कि अपने-आपको ईश्वर में खो देने का प्रयत्न करें, जिससे आप अपने स्वयं से कह सकें, 'हमारा काल उसके हाथ में है, जो कहता है कि इस सारी योजना

का मैं स्रष्टा हूं'।[1]''

रात को प्रार्थना के बाद रक्त-चाप लिया तो २००/११२ था। बापू बा को रामायण समझाकर सोने चल दिये। रात को साढ़े दस बजे से एक बजे तक लगातार जागते रहे। विचारधारा चल रही थी।

रात को बापू के सो जाने के बाद मीराबहन मुझसे और भाई से आकर कहने लगीं, "हम सबका धर्म है कि हम अपने शरीर को अच्छा रखें। अपने स्वास्थ्य को हमें पहला स्थान देना चाहिए। उपवास आये या न आये, कुछ-न-कुछ अवश्य आनेवाला है और हम सब बापू की जो भी थोड़ी-बहुत मदद करने लायक हैं, वह तभी कर सकेंगे, जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। निराशाभरे भावों को मन से निकाल देना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि उपवास यदि आया भी, तो उसका परिणाम अच्छा ही होगा। मृत्यु की आशंका को तो हमें कदापि स्थान न देना चाहिए।" यह सब वह भाई को देखकर कह रही थीं। भाई कल से चिंता के कारण बिल्कुल थके-मांदे-से लगते हैं। चिंता सबको है; मगर भाई की तो मारे चिन्ता के नींद ही उड़ जाती है। इससे उनपर चिन्ता का असर ज्यादा देखने में आता है।

३० दिसम्बर '४२

बापू ने अपने पत्र में काफी फेरफार किये। मुझसे कहने लगे, "सुबह उठकर तू हमारे साथ घूम लेना, तब पत्र की नकल तैयार करना।"

दोपहर में अनुवाद करती रही। तेरह पन्ने रह गये हैं। कल पूरा होना ही चाहिए। हो जायेगा।

मीराबहन से आज भी वही भजन पन्द्रह-बीस मिनटतक सीखा।

सरकार ने मीराबहन के दोनों पत्र हवाई डाक द्वारा विलायत भेज दिये हैं। पौने दो रुपया खर्च लिया है।

३१ दिसम्बर '४२

आज इस वर्ष का अन्तिम दिन है। बापू ने सुबह साढ़े पांच बजे ही उठकर

---

[1] "You should try to be lost in God, so that you are able to say to yourself:

" 'Our times are in His hands
Who saith a whole I planned'."

वाइसराय के नाम लिखा गया अपना पत्र, जिसमें हेरफेर किये गये थे, पढ़ना आरम्भ किया। पढ़कर कहने लगे, "अब तो नया पत्र लिखने जैसी बात हो गई है। जल्दी नहीं की जा सकती।" प्रातः चार बजे भाई से कहने लगे, "कितना अच्छा हुआ कि तुमने वह वाक्य पकड़ा! मुझे आश्चर्य है कि सरोजिनी नायडू को वह क्यों नहीं सूझा! मगर मैंने कहा था न कि सबसे ज्यादा बोझ तुमपर पड़नेवाला है। तुमने पूरी तरह महादेव का स्थान लिया है।" मुझसे कहने लगे, "तू सुबह ही घूम ले। मैं नाश्ते से पहले ही पत्र सुधार लूंगा। जब मैं घूमने जाऊंगा, तब तुम उसकी साफ नकल तैयार करना।" मगर जब पत्र पढ़ा, तब कार्यक्रम बदला। राजाजी को बापू के साथ मुलाकात करने की इजाजत देने से इन्कार करते समय जो बयान सरकार ने निकाला था, वह भाई से मांगा। भाई ने निकालकर दिया। फिर एमरी के कामन्स सभावाले भाषण की कतरन मांगी।

घूमने के समय बापू की मीराबहन से निजी बातचीत हो रही थी। मैं और भाई वापस आ गये। अच्छा हुआ कि मैंने पत्र के बहाने सुबह घूम लिया था। आकर मैं अनुवाद करने लगी। भाई अखबार की फाइल में से वह कतरन निकालने में लग गये।

दोपहर सोने के बाद बापू ने पत्र लिखा। छोटा-सा था, मगर बहुत ही अच्छा था। सबको बहुत पसन्द आया। वह बहुत व्यक्तिगत था, इसलिए बापू ने उसे अपने हाथ से नकल करके भेजा। भाई बोलते गये और बापू लिखते गये। साढ़े चार बजे तैयार हो गया और डाक में गया। आज नये साल के शुरू होने से पहले इतना अच्छा पत्र गया, इससे सबको खुशी हुई। सब कहते थे कि यह पत्र बापू के अपने निजी ढंग का है।

मीराबहन से बापू ने पुराना साल खतम होने के साथ पुरानी बातें भूलकर नये साल में नया युग शुरू करने को कहा कि सबके साथ एक परिवार के रूप में रहें।

आज बा की साड़ी की किनारी बनाना खतम किया, 'आरोग्य की चाबी' का हिन्दी अनुवाद पूरा किया और मेकमार्डी की पुस्तक में से बाइबिल में से उतारे हुए अंशों को पूरा पढ़ लिया।

कल से बापू ज्यादा ध्यानावस्थित होना चाहते हैं। यथासम्भव बातें नहीं करेंगे। मन को दुनिया से खींचकर एकाग्र कर लेंगे। कहते थे, "मुझे अग्निपरीक्षा की तैयारी करना है। मैं समझूं तो सही कि ईश्वर मुझसे क्या चाहता है?"

शाम को सरोजिनी नायडू के साथ बा बातें कर रही थीं। सरोजिनी नायडू ने कहा, "आप चिन्ता न करें। ईश्वर बापू से उपवास करने को नहीं कहेगा और बिना ईश्वर के आदेश के वह उपवास करेंगे नहीं।" बा कहने लगीं, "यह तो मैं जानती हूं कि ईश्वर नहीं कहेगा; मगर बापू मान लेंगे कि ईश्वर ने कहा है, तो फिर क्या होगा?" सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "नहीं ऐसा नहीं हो सकता।"

बापू का रक्त-चाप आज रात को बहुत अच्छा था—१६०/१००। कहने लगे, "यह न समझना कि मन का बोझ हल्का हुआ है, इसलिए रक्त-चाप कम है। मैंने खुराक में हेरफेर करके इसे कम किया है।" बापू ने दूध कम करके नाश्ते में दूध की जगह गरम पानी पिया था।

१ जनवरी '४३

आज नया साल शुरू होता है। बापू ने कल अपने पत्र में लिखा था, 'नया साल हम सबको शान्ति देनेवाला हो।'[1] यही ध्वनि सबके मन से निकलती है; मगर क्या आनेवाला है, यह तो भगवान ही जाने!

सरोजिनी नायडू सुबह की प्रार्थना में आईं। मैंने सुबह प्रार्थना से पहले स्नानादि कर लिया। यह क्रम चल सका तो रोज ऐसा ही करने का विचार है।

घूमते समय बापू कह रहे थे, "हमें घूमते समय या तो गीताजी-जैसी चीज का अभ्यास करना चाहिए या मौन रखना चाहिए।"

बापू दिन-भर अपने अभ्यास में लीन रहे। श्लोकमवाली पुस्तक पढ़ रहे थे; कुछ उर्दू पढ़ी। मौन नहीं था; मगर पहले कहते थे कि अनावश्यक बात नहीं करना चाहते।

मीराबहन ने एक गत्ते पर नया कलैण्डर लगाकर उसके एक तरफ हिमालय का और एक तरफ गंगाजी का दृश्य बना दिया। सुन्दर लगता था। ऊपर लिखा था 'ॐ' और उसके नीचे 'हे राम'। गत्ते के किनारे पर भी पेस्टल से हल्का-सा काम कर दिया था। सब सुन्दर लगता था। बापू के बैठने की जगह के सामने वह टांग दिया।

सरोजिनी नायडू ने मेरी पहली तस्वीर आज टांग ली है। अच्छी दीखती है।

बा की तबीयत अच्छी है। आज सब लोगों का दिन अच्छा गया। सोने के समय मीराबहन ने बापू को वही प्रिय भजन गाकर सुनाया।

---

[1] "May the New Year bring peace to us all!"

बापू के कलवाले पत्र की नोटबुक में नकल की। मेरी क्यूरीवाली किताब का अनुवाद शुरू किया। दो-चार वाक्य ही किये। काम जरा कठिन है। थोड़ा व्याकरण किया। 'आरोग्य की चाबी' का अंग्रेजी अनुवाद बीच में ही पड़ा है। उसे फिर से शुरू किया। एक-दो दिन में हो जायेगा।

बापू को स्लोकम की पुस्तक बहुत पसन्द आई है।

अखबार में चिमूर के विषय में आज सरकार का बयान निकला है! बहुत खराब है। कहते हैं कि वहां पर जांच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं। वहां तो सारी जनता ने सामूहिक रूप से झूठी सौगंध खाकर गवाही दी है, लोगों की साजिश है। सबको बहुत बुरा लगा। भाई का तो खून खौल रहा था।

दोपहर का बापू ने कल की तरह सारा समय अखबार देखने में और स्लोकम की किताब पढ़ने में लगाया। थोड़ी देरतक अनुवाद भी देखा। मीराबहन को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि बापू अखबार आदि पढ़ते हैं। वह अपने मौन के दिनों में अखबार न पढ़ती थीं, न किसीसे बात करती थीं। केवल वेदादि ही पढ़ती थीं। वह समझती थीं कि बापू भी वैसा ही करेंगे। बापू से मैंने पूछा तो कहने लगे, "मैं मीरा-बहन की तरह नहीं करना चाहता। मगर सामयिक बातों की चर्चा भी नहीं करना चाहता; क्योंकि इससे मन में उद्वेग उठता है। मन दौड़ रहा है, अंधा बन जाऊं, आंखें बन्द कर लूं मौन ले लूं, तो पढ़ना भी छूट जायेगा। मन को शून्य में स्थिर कर सकूं तो बड़ी बात है।"

भाई कहने लगे, "इसके दो असर होते हैं। सामान्य आदमी तो पागल हो जाता है, मगर जाग्रत रहते हुए शून्य में जिसका मन स्थिर हो जाय, उसका विचार ही कर्म हो जाता है।"

३ जनवरी '४३

आज सुबह महादेवभाई की समाधि से लौटकर बापू कहने लगे, "गीताजी के पाठ में ठीक जगह पर वजन नहीं आता। इससे पाठ उतना मधुर नहीं हो पाता, जितना कि होना चाहिए।" मैंने कहा, "या तो हम आपके सामने जब पढ़ें, तब आप बतायें अथवा स्वयं बतायें।" कहने लगे, "बतायेंगे। और फिर तुम मुझसे आगे बढ़ जाओगी। ऐसा हो चुका है। जिन्हें मैंने सिखाया है, वे मुझसे आगे बढ़ गये हैं।" फिर बताने लगे कि कैसे दक्षिणी अफ्रीका में केलेनबैक को जूते बनाना सीखने भेजा। उन्होंने बापू को सिखाया। बापू ने दूसरे सब लोगों को सिखाया और वे सब

बापू से अच्छे जूते बनाने लगे।

मैंने कहा, "मगर आपके प्रमुख विषय 'बौद्धिक क्षेत्र' में तो कोई भी आपसे आगे नहीं बढ़ सका।" बापू ने कहा, "बढ़ा है, महादेव को ले लो। वह गुजराती अनुवाद मुझसे अच्छा कर लेता था।" भाई कहने लगे, "आपकी गुजराती बहुत अच्छी होती है—भावपूर्ण और संक्षिप्त।" बापू कहने लगे, "हां, वह है। कारण, मैं भाषा का प्रेमी हूं। मैं अपने-आप को साक्षर (विद्वान) नहीं मानता; मगर भाषा का प्रेम मन में हमेशा रहा है। इसलिए भाषा का सहज संगीत अपने-आप आ गया है, जो गुजराती के लिए ही नहीं, बल्कि सब भाषाओं के लिए है। अंग्रेजी के लिए भी मेरे मन में उतना ही प्रेम है। यह चीज ग्रहण के लायक है। पोलक तो अंग्रेज था, मगर उसने अंग्रेजी मुझसे ली है। मुझसे यह नहीं होता कि भाषा को बिगाड़ा जाय। महादेव तो जब आया, तब अपने क्षेत्र में सम्पूर्ण था, मगर मैं मानता हूं कि और कहीं उसकी भाषा नहीं खिलनेवाली थी।"

इतनी बात करने के बाद कहने लगे, "प्रसंगवश इतनी बात आज हो गई। आगे से इतनी चर्चा भी नहीं करने दूंगा।"

भण्डारी आये। बापू के साथ थोड़ी बात की। बेलगांव जेल में २१-२२ व्यक्ति मर गये थे, पर अब वहां शांति है। मृत्यु का कारण समझ में नहीं आता। क़ै-दस्त होते थे, फिर ज्ञान-तंतुओं पर असर हुआ। चेहरे में और गले में सुइयां चुभने लगती थीं। बाद में सांस लेना भी बन्द हो जाता था और रोगी मर जाता था। सब लोग एक साथ एक जगह बीमार नहीं पड़े थे। बापू सोचते हैं, "बाहर खुराक की तंगी से लोगों की बुरी हालत हो रही है। ऐसे समय पर गरीबों की सेवा कौन कर सकता है, सिवा कांग्रेस के? गरीबों से परिचय ही कौन रखता है? मगर कांग्रेस तो पड़ी है जेल में। तब फिर खाने के लिए फसाद उठ खड़ा होगा, तो आश्चर्य नहीं होगा।"

दोपहर में सोने के बाद बापू ने मौन लिया। शाम को खाने के समय छोड़ा। रोज ऐसा करने का विचार कर रहे हैं।

आज मीराबहन ने थोड़े समयतक फिर वही 'अद्‌भुत सलीब' गीत सिखाया। आज उन्होंने सरोजिनी नायडू के लिए एक और चित्र बनाया है। पेंसिल से बनाकर ऊपर थोड़ा-सा रंग लगा दिया है। अच्छा बना है।

रात को मैंने काफी रेकार्ड बजाये। दो-तीन भजन बापू को पसन्द हैं। उन्हींसे शुरू किया। करीब घंटा-भर बजाती रही।

४ जनवरी '४३

सुबह ही मीराबहन ने कहा, "आज बादल हैं।" मैंने उन्हें बादलवाले दिन एक चित्र बनाकर देने को कहा था। सो रंग उठाकर चल पड़ी। सुबह घूमने का पौन घंटा चित्र में लगाया। पीछे दोपहर में कुछ समय दिया। आज दूसरा कुछ काम न हो सका। कुछ थकान-सी भी लगती थी। कुछ करने को मन नहीं होता था। एक कर्ज सिर पर से उतरा। सोमवार चित्रकला के लिए स्थिर करने का विचार किया था; मगर दूसरे दिन का दृश्य सुंदर होगा तो सोमवार का ही दिन स्थिर करना कठिन हो जायगा।

क्यूरीवाली पुस्तक का अनुवाद भाई ने मुल्तवी करने को कहा। कहने लगे, "अब नये युग में ही शुरू करना।" सो अभी तो 'आरोग्य की चाबी' का अंग्रेजी अनुवाद और व्याकरण, ये दो चीजें हाथ में हैं। इन्हें इस महीने में पूरा होना चाहिए।

बापू का मौन साढ़े सात बजे खुला। बा को रामायण समझाकर वह सोने को चले गये।

कई अखबारों ने नये वर्ष की 'उपाधिवितरण-सूची' नहीं छापी। इसपर मद्रास सरकार ने चिढ़कर मद्रास के अखबारों से कहा है कि उन्हें सरकारी विज्ञप्ति आदि लेने जाने की जरूरत नहीं।

मुन्शी का बड़ा अच्छा बयान निकला। सरकार द्वारा चिमूर के विषय में निकाले गये बयान का उत्तर है। सरकार ने चिमूर की खबरों को अखबारों में छापने की मनाही कर दी है। लेने वहां कोई जा भी नहीं सकता।

५ जनवरी '४३

आज मीराबहन ने फिर चित्र बनाना शुरू कर दिया; परन्तु शाम को रोशनी अच्छी न होने के कारण ठीक बना नहीं। दृश्य अच्छा है। रंग ठीक हो जायेंगे तो अच्छा लगेगा। शाम को वह भजन नहीं सिखा सकीं।

रोज की तरह सारा दिन निकल गया। बापू दोपहर में मौन लेते हैं। वातावरण में एक तरह की अनिश्चितता है, भारीपन है। जितना समय निकल जाय, उतना ही अच्छा है।

रात को बापू मुझे महाभारत की दो कथाएं सुनाने लगे। दोपहर में बा को भी सुनाई थीं। कहने लगे, "पक्षी की आंख पर अर्जुन की एकाग्रता और युधिष्ठिर

का क्रोध करना—इन पाठों को याद रखना। दोनों का अर्थ गूढ़ है। अभी से ये अर्थ तेरी समझ में आ जायं तो जीवन की बहुत-सी समस्याएं हल हो जायं।"

सुबह घूमते समय बापू भाई से पूछने लगे, "'ऐन्शिएंट मैरिनर' का संदेश क्या है ?" उन्होंने बताया। फिर कवियों की बातें होती रहीं—कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ इत्यादि की कविता, उनकी शैली, उनका जीवन—इनकी चर्चा हुई।

६ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू भाई को महाभारत की वही दो कथाएं सुनाने लगे, फिर स्लोकम की किताब की बात करने लगे। कहने लगे, "उसमें जो ज्ञान है, वह ग्रहण करने योग्य है, मगर भाषा की दृष्टि से किताबें पढ़ते रहने से मनुष्य भाषा का गुलाम बन जाता है। भाषा तो मनुष्य की दासी है। एक बार इतना पता होना चाहिए कि हम कहना क्या चाहते हैं, पीछे भाषा तो अपने-आप आ जाती है।"

दिन फिर रोज की तरह गया। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का पहली तारीख का अंक आज पाया। उसमें भंसालीभाई की काफी खबरें थीं। उपवास को तो ५० रोज हो गये थे। उनकी हालत खराब थी। बेसुधी थी और पेशाब में खून वगैरा आता था। अब क्या हाल होगा—भगवान जाने। जीवित भी हैं या नहीं, यह भी नहीं कहा जा सकता। बापू के प्रति उनका संदेश हृदयस्पर्शी था—"बापू से जब कह सको, तब कहना कि उन्होंने मुझे जीवन में भी उबार लिया है, मृत्यु में भी उबार लेंगे।"

७ जनवरी '४३

दोपहर में थोड़ा अनुवाद किया। फिर एक चित्र बनाने बैठी। उसपर करीब दो घंटे लग गये। मुझे ड्राइंग का थोड़ा अभ्यास कर लेने की आवश्यकता है। ड्राइंग कच्ची होने के कारण चित्र बनाने में अधिक समय लगता है।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "'ऐन्शिएंट मैरिनर' को रहस्यवादी कविताओं में गिन सकते हैं क्या ?" भाई ने उत्तर दिया, "हां।" तब रहस्यवाद की व्याख्या पर बात चली। पीछे चर्चा उठी कि हमारे कवियों में रहस्यवादी कौन-कौन थे। भाई कहने लगे, "मीरा तो रहस्यवादी थी ही। उसमें और संट थेरेसा में क्या फर्क था!" बापू ने कहा, "तब तो हमारे लगभग सभी कवि रहस्यवादी कहे जा सकते हैं।" बाद में दूसरे अंग्रेज कवियों की बातें होने लगीं। भाई ने एक वाक्य बोला, जिसमें अधिकांश अंग्रेजी के शब्द थे और बाकी गुजराती के थे। बापू

कहने लगे, "आज से इस बात का नियम बना लेना चाहिए कि अंग्रेजी शब्द कभी भी इस्तेमाल नहीं करेंगे। यह भद्दी बात है।"

मीराबहन ने आज से मुझे 'लीड काइंडली लाइट' गीत सिखाना आरम्भ किया।

कल रात से सरदी फिर आरम्भ हो गई है। कुछ दिनतक रह जाय, तो बड़ा अच्छा हो।

कटेलीसाहब प्रार्थना से पहले आये। उन्होंने बापू को बताया कि नया चांद निकला है। सब देखने को चले।

८ जनवरी '४३

आज भी खूब सरदी है। बापू बाहर धूप में बैठने को निकले हैं।

मीराबहन ने कल शाम के चन्द्रोदय के दृश्य का एक काल्पनिक चित्र बनाया है। अच्छा है।

शाम को पंद्रह-बीस मिनट तक पेंसिल से पहाड़ियों का चित्र खींचा।

९ जनवरी '४३

आज यहां आये पूरे पांच महीने हो गये। बापू को वाइसराय को पत्र लिखे दस दिन हो गये हैं। बापू ने कटेलीसाहब को पत्र लिखा कि उस पत्र की आजतक पहुंच भी नहीं आई। जरा पता लगायें कि बम्बई से पत्र कब आगे गया।

आज शनिवार था। ६ दिन बाद महादेवभाई को गये भी पांच महीने हो जायेंगे।

शाम को मीराबहन ने समाधि का एक चित्र बनाया। एक और बनायेंगी।

सरोजिनी नायडू ने आज फिर खाना बनवाया। ढाई घंटे लगे। काफी थकान हो गई। मन में आया करता है कि आखिर समय और जीवन का क्या उपयोग हो रहा है?

: ३५ :

निश्चय और तैयारी

१० जनवरी '४३

भाई ने बताया कि कल रात मीराबहन बापू से आकर कहने लगीं कि अगर

सचमुच उपवास आना हो, तो क्या यह उचित न होगा कि वह अमुक-अमुक तैयारियां कर लें ? जवाब में बापू ने कहा कि उन्हें जो तैयारियां करनी हों, कर लें।

आज सुबह घूमते समय बापू भाई से कहने लगे, "मैं देखता हूं कि उपवास तो आ ही रहा है। मैं इतने दिनों से भले ही ऊपर से सब कामों में भाग लेता रहा होऊं, मगर दरअसल भीतर अपने ध्यान में लगा रहा हूं। मुझे अभीतक अन्तरात्मा की स्पष्ट आवाज नहीं सुनाई दी कि कब उपवास करूं। लेकिन अन्तरात्मा इतना तो कहती है कि तुम इसमें से निकल नहीं सकते। सब तरह से इस बारे में विचार करके इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जब शुरू में सेवाग्राम में उपवास की बात निकली थी, तब वह अन्तरात्मा का ही नाद था। मैंने काफी समय चर्चा की, काफी समय दिया, काफी ढील की; मगर देखता हूं कि उपवास तो नसीब में है ही। तुमसे यह सब इसलिए कह रहा हूं कि तुम अपनी मानसिक तैयारी कर लो। पहले सोचा था कि जबतक समय नहीं आता, किसीसे बात न करूं; मगर फिर विचार किया कि अगर तुम स्वस्थ बन सको और मौका आने पर काम करने के लिए तैयार हो सको तो अच्छा है। सेवा और देख-रेख की तो मुझे उपवास के समय आवश्यकता पड़ेगी ही। भंसाली की तरह मैं नहीं रह सकता। भंसाली की तपश्चर्या भी मेरे पास कहां है ? इसलिए अगर तुम लोग स्वस्थ हो सको, तो अच्छा है, नहीं तो मेरा काम अधिक कठिन बन जायेगा। मुझे डर है कि इस समय बा हिम्मत नहीं रख सकेगी, वैसे तो बा बहादुर है। समय आने पर धीरज से काम ले सकती है। मीरा कहती है कि सरोजिनी नायडू मेरे कारण अभी से बीमार-सी हो गई हैं। इस तरह अगर तुम सब हार जाओगे, तो भी समय आने पर मुझे तो उपवास करना है ही। आज जो कुछ भी बाहर हो रहा है, उसकी हमें कुछ खबर नहीं मिलती। इसके अर्थ दो हो सकते हैं। एक तो यह कि हिंसा के फैलते रहने पर भी आम जनता अहिंसक है और उसी ढंग से काम कर रही है; मगर उसका उलटा मानने के लिए भी काफी सबूत देखने में आता है। हो सकता है कि जो मानसिक स्थिति आज बा की है, वह बाकी देश की भी हो। सम्भव है कि हिंसावाले ही अपने ढंग से अपना काम कर रहे हैं और उसमें कुशलता का परिचय भी दे रहे हैं। इसके विपरीत अहिंसक लोग अपंग होकर बैठ गये हैं। इसका प्रतिकार भी मैं उपवास द्वारा ही कर सकता हूं। मन में यह भी उठता है कि क्या मेरा जीवन-कार्य समाप्त हो गया है ? मैं देश की प्रगति को रोक तो नहीं रहा ? मेरे पास जो कुछ था, वह दे चुका। अब पुरानी चीज ही दोहरा

सकता हूं। भंसाली जायगा, तो मेरी दृष्टि में सत्याग्रह की सम्पूर्ण मिसाल छोड़कर जायगा। सोचता हूं कि मेरे सन्देश की पूर्णाहुति में उपवास की आवश्यकता क्या नहीं है? क्या मुझे अब सत्याग्रह की एक सम्पूर्ण मिसाल देश के सामने रखकर अपना जीवन-कार्य पूरा कर लेना चाहिए?"

भाई बोले, "आपको इस तरह नहीं सोचना चाहिए। इससे तो मस्तिष्क में उलझनें पैदा हो जाती हैं। शुद्ध अंतर्नाद के सुनने में भी कठिनाई आती है। जीवन-कार्य पूर्ण हो जायगा, तब प्रभु अपने-आप उठा लेगा।"

बापू कहने लगे, "यह ठीक है। मैं विचार करता भी नहीं। यह बुद्धि का विषय नहीं; हृदय का विषय है। यह तो मैंने यों ही तुम्हारे सामने विचार रख दिया है। मैं अंतर्नाद को सुनने का प्रयत्न कर रहा हूं।"

भाई ने बताया कि पूर्णाहुति के बारे में बापू के साथ उनकी कुछ और भी दलील हुई थी। भाई ने उनसे कहा था, "आपको इस तरह विचार ही नहीं करना चाहिए। इस तरह पूर्णाहुति की बात को पकड़ लें तो जीवन में पुरुषार्थ को स्थान नहीं रह जाता। पूर्णाहुति का विचार मन में आना स्वाभाविक है; मगर मैं देखता हूं कि आपने जो छः महीने की अवधि की बात की थी, वह आपके विचारों पर प्रभाव डाल रही है। यह चीज मुझे अशांत बनाती है। अगर आपको ईश्वर का स्पष्ट आदेश होता कि उपवास करो, तो मुझे आपसे कुछ भी नहीं कहना था; मगर आज ऐसा नहीं है। आज आप उपवास करें, तो ईश्वर आपसे पूछ सकता है कि 'अपनी निश्चित की हुई अवधि में मेरे आदेश को स्थान दिया है क्या? जब आवश्यकता थी, मैंने तुझे जगाकर चेतावनी दी थी। तब तूने आज क्यों कानून अपने हाथ में ले लिया है? मैंने जो विष का प्याला भेजा था, उसे अमृतवत पीकर संतोष क्यों नहीं माना? उससे आगे क्यों बढ़ा? आत्मा का प्रति दिन सूली पर लटकना क्या आहुति नहीं?' मुझे काफी बातें कहनी हैं, मगर फिर कहूंगा।"

इस सबका बापू का उत्तर था, "मैंने जो कुछ करने का निश्चय किया है, उसे तुमने छुआ तक नहीं है, इसीलिए इस तरह की दलीलें करते हो। वरना, ऐसी बातें करते ही नहीं।"

११ जनवरी '४३

आज बापू का मौन था। कल शाम को मौन शुरू होने के बाद मीराबहन बापू से आकर कहने लगीं, "आप उपवास का विचार करने से पहले एकांत में कुछ दिन

इस विषय पर विचार करें तो क्या अच्छा न होगा ? आध्यात्मिक बातों पर भला मैं आपको क्या सलाह दे सकती हूं; परन्तु एकांतवास का कुछ अनुभव अवश्य किया है। उस अवस्था में मुझे कुछ शांति मिली थी और चाहती हूं कि आप भी उसका कुछ अनुभव लें तो अच्छा है। मुझे डर-सा लगता है कि आप अपने-आप में अतिशय आत्मविश्वास का आभास तो नहीं पाते ? इसके कारण किसी गलत निर्णय पर तो नहीं पहुंच जायंगे ?"

बापू ने लिखकर उत्तर दिया, "मैं जो कुछ कर रहा हूं या करूंगा, वह हद से ज्यादा आत्मविश्वास का परिणाम नहीं होगा। अंतरात्मा की धीमी-सी आवाज ही मेरा पथ-प्रदर्शन कर रही है। अब रही एकांत और शांति की बात। जितनी शांति और एकांत पिछले दिनों में मुझे मिला, वह मेरे लिए काफी था। मगर मुझे एकांत या मौन का डर नहीं है। मैंने तो लम्बे अरसे तक मौन लिया है और मुझे वह अच्छा भी लगता है। रही एकांतवास की बात। दक्षिण अफ्रीका की जेलों में मैंने उसका अनुभव किया है और मुझे वह भी अच्छा लगता था। मैं अब दोनों को आजमाने की तैयारी में फिर रहा हूं। तुम सबसे बातचीत कर लो और वे मान जायें तो तुम प्रबंध कर लो।"

मीराबहन खुश हो गईं। मुझसे और भाई से बातें करने लगीं, "बापू कहें, तो उनके लिए बागीचे में आम के पेड़ के नीचे एक झोपड़ी बना दें।"

जिस कमरे में मीराबहन पहले रहती थीं, उसमें बापू की बैठक का प्रबंध करने का विचार किया। बापू का कमरा गुसलखाने के करीब होने के कारण मीराबहन को लगता था कि बापू को एकांत नहीं मिलता। बा को परिवर्तन पसंद न था। सरोजिनी नायडू भी इसके विरुद्ध थीं। मुझे भी अच्छा नहीं लगता था; पर भला मैं इन बातों को क्या समझती ? मैंने सोचा कि बापू को इसमें फायदा हो, तो क्यों न ऐसा करें।

दिन-भर बापू का मौन था। शाम को साढ़े सात के करीब मौन पूरा हो जाने के बाद बापू ने बा से बातें कीं। उन्होंने सारी योजना को रद्द किया, मगर बापू कहने लगे, "इसमें से जितना पचा सकूंगा, उतना अमल में लाऊंगा। मीराबहन की सलाह को मैं फेंक देना नहीं चाहता।"

सरोजिनी नायडू बहुत खुश हुईं। कहने लगीं, "मीरा समझती नहीं है कि एकांत मन का होता है। बापू को बाहरी दिखावे की जरूरत नहीं है। वह तो भीड़-

भड़क्के में रहकर भी एकांत-सेवन कर सकते हैं और करते हैं।"

थोड़ी देर पेंसिल से चित्र खींचा। पेंसिल पर रंग लगाने का प्रयत्न किया, मगर कुछ अच्छा नहीं बना। उसे पूरा रंगदार बनाना होगा।

आज सरोजिनी नायडू के कमरे में सफाई हुई। कल शाम से सामान निकाला जा रहा है। आज दोपहर १२ बजेतक पूरा हुआ।

१२ जनवरी '४३

आज सुबह डिब्बे में नई टॉफी भर रही थी। यह ताड़ के गुड़ की बनाई गई थी। बापू मजाक करने लगे, "यह तो तू भी खा सकती है।" मैंने कहा, "जिस दिन आप कहेंगे कि उपवास टल गया, उसी दिन खूब अच्छी टॉफी बनाकर हम जलसा करेंगे।" बापू गम्भीर होकर कहने लगे, "उपवास तो आया ही समझो।"

सुबह घूमते समय फिर वही बात चली। बोले, "कल रात मैं बारह बजेतक नहीं सोया।" भाई कहने लगे, "क्यों?" बापू ने उत्तर दिया, "मुझे जागना ही था, मगर मैं देख रहा था कि तुम कब सोने आते हो। टाइप करने की आवाज आती थी, और मुझे गुस्सा आता था कि इस वक्त क्यों टाइप कराया जाता है। वह तो चार बजे उठ जानेवाला है। तुम भले कहो कि शरीर ने आजतक काम दिया है तो आशा रखें कि आगे भी काम देगा। ऐसी आशा वही मनुष्य रख सकता है, जिसने स्वास्थ्य के नियमों का सतत पालन किया हो। तुम्हारी तरह सदा उल्लंघन करके भी ऐसी आशा का पल्ला पकड़ना तो घमंड की बात हुई। यह एक विचार था, मगर मैं तो अपना ही विचार कर रहा था। देखता हूं कि उपवास का विचार मन में उठता ही रहता है कि मैं इससे बच नहीं सकता। वाइसराय का उत्तर क्या आता है, यह देखना है। यह तो नहीं कह सकता कि वह निराशाजनक होगा। मगर इस उपवास को टालने का एक ही उपाय है। वह यह कि वाइसराय का बहुत ही अनुकूल उत्तर आ जाये। मगर मेरी मानसिक तैयारी इससे उलटे की होनी चाहिए।"

भाई ने कहा, "आपके उपवास के क्या कारण हैं और उनका निवारण कैसे होगा—यह मैं समझना चाहता हूं।"

बापू कहने लगे, "लोग भूखों मर रहे हैं, यह क्या कम कारण है? मेरे जैसा आदमी ऐसी परिस्थिति में आराम से बैठकर कैसे खा सकता है? मानो कि आज एक लाख आदमी इसीलिए उपवास करने लगें कि लाखों करोड़ों का भूखों मरना उनसे सहन नहीं होता, तो मैं कहता हूं कि परिस्थिति एकदम बदल सकती है और साथ

ही भुखमरी भी बहुत कुछ कम हो जायेगी। मगर मैं जानता हूं कि ऐसा नहीं हो सकता। मेरी तरफ देखकर कोई मेरा अनुकरण करे, तो मूर्खता होगी, मगर तुम सबको मुझसे अलग रहकर यह जान पड़ने लगे कि नहीं, हम यह नहीं देख सकते, तो दूसरे भी उपवास कर सकते हैं। परन्तु आज वह शक्य नहीं है। तब, मुझे क्या करना चाहिए ? मैं तो अपना धर्म-पालन करूं। बाद में जो होना होगा, सो होगा। जीवित रहने का संकल्प करके मैं यह करना चाहता हूं। आमरण उपवास जैसी चीज भी मेरे पास है; मगर यह उपवास वैसा नहीं है।"

मैंने पूछा, "आपने वाइसराय को जो पत्र लिखा था, उसमें आपने लोगों के भूखों मरने की बात तो लिखी थी; मगर वह बात पत्र में मुख्य नहीं थी। मुख्य तो था आपका अपने जीवन के प्रत्येक पहलू में सत्य और अहिंसा को आत्मसात कर लेना। इसका पालन कैसे हो, यह भी पत्र में था। अगर उसको अमल में लाने का दूसरा कोई साधन न हो तो जेल में बैठे-बैठे आपके पास उपवास के सिवा चारा नहीं था। आपको लगता था कि उपवास द्वारा ही अपने मिशन को आगे बढ़ा सकते हैं। मगर अभी आप उस बड़ी चीज के लिए नहीं, बल्कि भुखमरी के लिए उपवास करने की बात करते हैं। दोनों में कुछ विरोधाभास नहीं होता क्या ?"

बापू कहने लगे, "नहीं, भुखमरी को अहिंसक कैसे सहे ? बड़ी समस्या तो है ही, मगर इसी बीच एक नई चीज पैदा हो गई है। जनता के पास खाने के लिए कुछ है ही नहीं। गेहूं नहीं, ज्वार नहीं, चावल नहीं, बाजरा नहीं। लोग खायें क्या ? करें क्या ? और मेरे जैसा आदमी भी क्या करे ? चुपचाप बैठकर क्या देखा करे ? इस परिस्थिति में अहिंसा मूर्त्त रूप में खड़ी हो गई है। अहिंसा इसी तरह अपना काम करती है। अव्यक्त अहिंसा की पूजा अव्यक्त ब्रह्म की पूजा की तरह कठिन है। मगर अहिंसक एक-एक परिस्थिति का उपयोग करता जाता है तो दूसरा कदम अपने-आप उसके सामने आ जाता है। दक्षिण अफ्रीका में जब मैंने सत्याग्रह शुरू किया तो एक छोटी-सी चीज को लेकर किया था। ट्रांसवाल के रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के सामने वह था। मित्रों ने कहा भी कि इतनी छोटी-सी बात के लिए क्या लड़ना था ! मगर मैंने कहा कि जो बुराई देखता हूं, उसके विरुद्ध मुझे लड़ना ही चाहिए। वह चीज धीरे-धीरे अपनेआप विस्तृत होती गई और अंत में सारे दक्षिण अफ्रीका फैली।"

भाई ने कहा, "इसका अर्थ यह हुआ कि अनाज की लूट या देश से अनाज

बाहर भेजना फौरन बंद हो जाय तो आपका उपवास टल सकता है।"

बापू कहने लगे, "वह एक चीज है।" भाई ने पूछा, "और कौन-सी चीजें हैं? उपवास के और क्या-क्या गुह्य अर्थ हैं? निवारण के क्या-क्या साधन हैं? यह सब मैं अपना मस्तिष्क साफ करने के लिए समझना चाहता हूं।"

बापू बोले, "यह मैं अभी नहीं बताऊंगा। मैं अपनी शक्ति का संचय करना चाहता हूं। मेरा पत्र तैयार होगा तो सभी देखेंगे। तुम्हारे लिए इतना ही काफी होना चाहिए कि भुखमरी अकेली ही उपवास करने के लिए सबल कारण है।"

सरोजिनी नायडू ने बापू से दो-तीन दिन से कहा था कि वह उनसे बात करना चाहती हैं। आज दो बजे बापू ने उन्हें बुलाया। उन्होंने शुरू किया, "बापू, आप गुस्ताखी क्षमा करें, मगर मैं आज आपसे साफ-साफ बातें करना चाहती हूं। मैं समझती हूं कि आपका उपवास करना गलती है। १९२४ के हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए किये गए आपके उपवास की मेरे दिल में पूरी कदर है। मगर राजकोट-वाला उपवास मेरी समझ में नहीं आया। यह भी नहीं आता और आपको याद रखना चाहिए कि आपके कहने से हजारों जेलों में बैठे हैं। आप आंखें बन्द कर लेंगे तो उनका क्या होगा? आपके साथी जेल में हैं। उन्होंने आपको सारी सत्ता सौंप-दी है। कई लोग आज लड़ाई करने के पक्ष में न थे तो भी आपके पीछे चले। उनके पीठपीछे क्या आपका उपवास करना उचित है? आप आज स्वतन्त्र नहीं। बाहर निकलकर आप सब जिम्मेदारियों से मुक्ति लेकर उदवास कर सकते हैं, मगर यहां नहीं। मैं जानती हूं कि किसी रोज आपकी मृत्यु उपवास में होगी, मगर अभी बलिदान का समय नहीं आया। जिम्मेदारियों से मुक्त होकर आप उपवास करने का निश्चय करना चाहेंगे तो मैं आपको दोष नहीं दूंगी। उस समय यदि आप मृत्यु का आवाहन करेंगे तो मैं आपका साथ दूंगी।"

बापू हँसने लगे, "उपवास में भी साथ दोगी?" सरोजिनी नायडू ने उत्तर दिया, "हां उपवास में भी, यद्यपि मुझे उपवास में विश्वास नहीं।"

बापू मजाक करते हुए बोले, "हां और दो दिन बाद खाना मांगने लगोगी!"

वह बोलीं, "नहीं, मैं मरूंगी, मगर खाना नहीं मांगूंगी। मैं मानती हूं कि ईश्वर इतना निर्दय नहीं कि आपसे उपवास कराके लोगों को मंझधार में छोड़ देने की प्रेरणा करे। इस दृष्टि से आपको सत्य और अहिंसा को सामने रखकर उपवास का विचार करना चाहिए। इस समय उपवास के प्रति हिंसा होगी। बाहर जाकर यदि

आप किसी और को अपना चार्ज सौंपकर उपवास करेंगे तो आपकी मृत्यु सम्भवतः देश को तारनेवाली बने।" इतना कहकर सरोजिनी नायडू बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये ही चली गईं।

शाम को मैंने थोड़ी देर चित्र बनाया, फिर घूमने चली गई। बापू ने सूचना दी है कि बा को छोड़कर और सबके साथ वह मौन बरतेंगे। गीताजी सीखना हो तो वह पंद्रह मिनट घूमते समय उसके लिए मौन छोड़ेंगे।

रात को प्रार्थना के बाद मीराबहन के साथ भी वे ही बातें होती रहीं। बापू कहने लगे, "कल से मैं तबतक पूर्ण मौन धारण करूंगा, जबतक मुझे वाइसराय का उत्तर नहीं मिलता अथवा उन्हें भेजने के लिए मेरा दूसरा पत्र नहीं तैयार हो जाता। जहांतक मेरा संबंध है, उपवास जरूरी होगया है। इसके निवारण का केवल यही उपाय है कि मैं वाइसराय का अनुकूल उत्तर पाऊं। लेकिन उनसे ऐसे उत्तर की सम्भावना बहुत कम है। मैं जानता हूं कि उपवास करने की शक्ति मुझमें नहीं है और न मुझे उपवास करने की बड़ी इच्छा ही है। मैं अगर शहीद बनने का स्वप्न नहीं देखता और न इसका यश ही मुझे प्राप्त है; पर यदि इसकी आवश्यकता मुझे जान पड़ी तो मैं इससे कैसे हटूंगा? इससे अधिक स्पष्ट आत्मा की आवाज और क्या हो सकती है? इतना ही मेरे लिए काफी है। मेरे मन में इसके बारे में भांति-भांति के विचार उठते हैं। कल रात को मैं १२ बजेतक जागता रहा। यही विचार मुझे बार-बार सजग करता रहा कि मैं उपवास से नहीं बच सकता। इसलिए मुझे इसके लिए तैयारी रखनी चाहिए।"

मीराबहन कहने लगीं, "आप दूसरा पत्र यह मानकर लिखेंगे कि वाइसराय ने पहले पत्र का उत्तर नहीं दिया है, क्योंकि यदि उत्तर प्रतिकूल आता है तो पत्र फिर लगभग ज्यों-का-त्यों होगा।"

बापू बोले, "हां, मुझे तैयार रहना चाहिए। उत्तर यदि प्रतिकूल आता है और मैं उसका उत्तर देने में दो-तीन दिन पत्र तैयार करने में लगाऊंगा तो मुझे इससे बड़ी उलझन होगी। हो सकता है, ईश्वर मेरी सबसे कड़ी परीक्षा ले रहा हो और अंत में मुझसे उपवास न करवाये।"

मीराबहन कहने लगीं, "हां, बापू, ईश्वर आपको अब्राहम के बलिदान की अवस्था तक ले जा सकता है, या आपसे एक-दो दिन का उपवास करा सकता है। उपवास इससे आगे नहीं जाने का।"

बापू ने कहा था कि पानी न ले सकने पर फल के रस में पानी मिलाकर उपवास के समय उन्हें दिया जायगा। इस विषय में मीराबहन पूछने लगीं, "क्या आप फल के रस से उपवास शुरू करेंगे?" बापू ने उत्तर दिया, "नहीं, पानी से; मगर बरसों से मैंने खाली पानी पिया ही नहीं। दक्षिणी अफ्रीका में बरसोंतक केवल फल ही खाये। पानी की गुंजाइश ही न रह जाती थी। इस कारण पानी के प्रति अरुचि होगई है। आज मैंने दवा के तौर पर थोड़ा पानी पिया। सो शुरू तो पानी से करूंगा, मगर पानी जब न पी सकूं, जब मिचली होने लगे, तब पानी में थोड़ा रस डालूंगा। पानी इतना नहीं लूंगा कि जिसमें शरीर का पूरा पोषण हो सके। मानलो कि दिनभर में सौ संतरे खाऊं तो उस अवस्था में तो उपवास महीनों के लिए बढ़ाया जा सकता है।" फिर बापू बताने लगे कि साबरमती-आश्रम में कैसे एक लड़के ने इसलिए प्रायश्चित्त करने की बात सोची थी कि उन्होंने दूध न पीने का व्रत लेकर भी बकरी का दूध पीना आरम्भ कर दिया था। वह तो जेल में थे। वह लड़का छः महीनेतक फलों के रस पर वहां रहा, अंत में मर गया। ऐसे ही एक दूसरे भाई श्रीहनुमंतराव ने लाल-पीली, रंगबिरंगी बोतलों का पानी पीने का प्रयोग किया था। वह मानते थे कि विज्ञान की प्रगति इसी प्रकार हो सकती है कि उसके प्रयोग करते-करते लोग मरनेतक के लिए तैयार हों। सो वह भी अंत में मरे। ये दोनों मृत्यु उनकी दृष्टि से अलौकिक थीं।

बाद में बापू ने कटेलीसाहब को अपने निश्चय की सूचना दे दी कि कल से उनका मौन-व्रत आरम्भ होगा। कलक्टर आयेंगे तो उनके साथ बापू मौन नहीं रखेंगे।

रात सोने में थोड़ी देर हो गई।

१३ जनवरी '४३

बापू ने सुबह से ही मौन शुरू कर दिया। उठने के बाद बोले ही नहीं। खाने के बाद बा को महाभारत पढ़कर सुनाया, उन्हें भूगोल सिखाया, फिर मौन ले-लिया। सोकर उठे तो कटेलीसाहब अखबार लाये। उसमें भंसालीभाई के उपवास छोड़ने की बात थी। सब बहुत खुश हुए। मैं भाई को बताने गई। मैंने उनसे पूछा, "आप क्या खबर सुनना चाहते हैं?" कहने लगे, "भंसालीभाई के बारे में कुछ अच्छी खबर।" मैंने बताया। भाई खुश होकर बोले, "मगर सरकार का बयान साथ नहीं छपा, इससे चिंता होती है।" सरोजिनी नायडू तो खबर सुनकर कहने लगीं, "अब

बापू को विश्वास और धीरज से ही काम लेना चाहिए।" मैंने कहा, "भंसालीभाई के उपवास छोड़ देने की खुशी हम कैसे मनानेवाले हैं?"

सरोजिनी नायडू ने मुझे मिठाई बनाने की आज्ञा देदी। कल मकर-संक्रांति भी है। तिल, बादाम, पिश्ता, काजू आदि डालकर बेसन के साथ गुड़ और खांड़ की मिठाई तैयार की। सब सिपाहियों और कैदियों को कल दी जायगी।

मैंने बापू से कहा, "आप जब बा को रामायण समझाने के लिए मौन छोड़ेंगे, तब यह अवश्य बतायें कि आज की खबर का आपके मन पर क्या असर हुआ।" भाई कहने लगे, "मैं तो अभी से बता सकता हूं कि बापू क्या कहेंगे।" बापू ने इशारे से कहा, "बताओ।" भाई ने एक कागज पर लिखकर दे दिया। बापू ने बिना पढ़े रख लिया। रामायण के बाद कहने लगे, "भंसाली की खबर पढ़कर मुझे लगा कि इस जगत में ईश्वर है। उसका यह प्रत्यक्ष सबूत है।" भाई का कागज निकाला। उस पर लिखा था—"तू मन में शंका को स्थान ही क्यों देता है? यह ईश्वर की सत्ता की निशानी नहीं है तो और क्या है?"

शाम को जब मैं मिठाई बना रही थी तब देखा कि बापू आंखें बंद करके ध्यानावस्थित होकर बैठे थे। भाई कहने लगे, "यह 'या निशा सर्वभूतानां' का प्रत्यक्ष चित्र है। सब तो सोचते हैं कि भंसालीभाई और बापू के सिद्धांत की जीत हुई और प्रसन्न होते हैं; मगर बापू भविष्य की बात सोच रहे हैं। आगे क्या? अगला कदम क्या?"

: ३६ :

वाइसराय को पत्र

१४ जनवरी '४३

आज एक नया कलेण्डर आया। उसपर हिन्दुस्तान का नक्शा है और बापू का चित्र है। बापू बा को भूगोल सिखाने के समय नक्शे का उपयोग कर सकते हैं। बापू का चित्र अच्छा नहीं। उसपर मीराबहन ने कागज लगा दिया। बा अब नक्शे की सहायता से भूगोल सीखने लगीं। आज बापू ने बा को पूरी बाल महाभारत सुनाने का काम पूरा कर लिया। कल से क्या शुरू करेंगे, यह सोचने लगे। मैंने

'बलिदान' शुरू करने की बात कही। भाई ने 'शरणागति-रहस्य' पढ़ने को कहा।

बापू कल से वाइसराय को पत्र लिख रहे हैं। उन्होंने कहा है कि जबतक पूरा न हो जाय तबतक उसे कोई न पढ़े। भाई का टाइप करने का काम लगभग पूरा होगया है। मुझसे उन्होंने कहा है कि मैं अपना सारा समय उन्हें दूं। मैंने स्वीकार किया है; मगर नतीजा यह हुआ कि आजतक न तो मैं अपना ही कुछ काम कर सकी हूं और न उन्होंने ही मेरे समय का उपयोग किया है।

आज भंसालीभाई द्वारा उपवास छोड़ देने के विषय में सरकारी बयान और डा० खरे ने इस सम्बन्ध में जो हिस्सा लिया था आदि सब देखा। सार्वजनिक जांच-पड़ताल की मांग छोड़ देनी पड़ी, इसका मुझे दुःख हुआ; मगर भाई कहने लगे, "इस विषय में हमें कोई निर्णय करने का अधिकार नहीं है। वहां के लोगों को संतोष हुआ, इतना ही काफी समझना चाहिए।"

बापू से मैंने पूछा, उन्होंने भी कहा, "हमें यहां बैठे-बैठे इस बारे में कुछ भी फैसला करने का अधिकार नहीं है।"

एक-दो रोज से कूने स्नान (Kuhne Bath) का प्रयोग हो रहा है, मगर मुझे कुछ अधिक जंचा नहीं।

१५ जनवरी '४३

शाम को मैं बैठी स्केच बना रही थी कि इतने में भाई बापू का पत्र लेकर पहुंचे। वही उपवास की बात थी, जो पहली फरवरी से इक्कीस फरवरी तक चलने-वाला था। बापू ने कहा है कि हम सब इस पत्र को पढ़कर अपना-अपना स्वतन्त्र मत लिखकर उन्हें दे दें।

शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने कहा था कि वाइसराय को दूसरा पत्र भेजने के समय या पहले पत्र का उत्तर आने पर मैं मौन छोड़ूंगा। सो आज पत्र लिखना पूरा होने पर मौन छोड़ा।"

डा० लाजरसवाले पत्र की बात करते-करते बापू वाइसरायवाले पत्र की चर्चा करने लगे, "सभ्य लोगों का एक तरीका यह भी है कि ऐसे पत्र का उत्तर न देना चाहिए। उनके काम से जो हमें समझ लेना हो, समझ लें।" मैंने कुछ कहने की इजाजत लेकर कहा, "वाइसराय को पत्र मिले मुश्किल से दस दिन हुए होंगे। आपके पहले ही पत्र का उन्हें रूखा-सा उत्तर देना था, तो भी उन्होंने पन्द्रह दिन लिये थे। इस समय अगर वह कुछ करने का विचार कर रहे होंगे तो आपका यह

दूसरा पत्र पाकर चिढ़ न जायंगे ? क्या आपको उन्हें और समय न देना चाहिए ?"

बापू कहने लगे, "मान लो दस ही दिन हुए। तब भी कम-से-कम पहुंच तो आनी चाहिए थी। इन लोगों का यह तरीका है कि यह तो पहुंच है, बाकी उत्तर फिर देंगे और फिर इस पत्र से चिढ़ना क्या था ? उपवास की बात तो पहले पत्र में ही थी। यह तो उसीके सिलसिले में लिखा जाता है।"

मैंने कहा, "तो भी इससे नुकसान हो सकता है। इसके अतिरिक्त दूसरे पत्रों की भांति यह हृदयस्पर्शी नहीं है।"

बापू कहने लगे, "इसे हृदयस्पर्शी बनाने की आवश्यकता नहीं है। यह तो ठंडे कलेजे से पहले पत्र के सिलसिले में लिखा हुआ पत्र है।"

घूमकर आये तो सरोजिनी नायडू आईं। हाथ के दर्द के कारण वह पत्र पर अपना मत जबानी सुना गईं। उनका भी कहना था, "वाइसराय को और समय देना चाहिए। भंसालीभाई के उपवास छोड़ने की घटना से भी पता चलता है कि सरकार कुछ हिली तो है। उन्हें अपने रास्ते चलने देना चाहिए। दूसरे, इस पत्र की भाषा आपकी हमेशा की भाषा नहीं। यह कुछ रुक-रुककर लिखा गया है और अपूर्ण लगता है। लगता है कि आपने शान्त चित्त से पत्र नहीं लिखा। आप यह क्यों लिखते हैं कि आप नमक और पानी लेंगे। आप उपवास करनेवाले हैं। जो ठीक लगे सो लें। किसीसे कहने की क्या जरूरत है ? इसके अतिरिक्त यह क्या लिखना कि आपपर वह दया न करें ? दया करके जो कुछ किया जाता है, कई बार गलत होता है। आपकी भाषा मेरी ही समझ में नहीं आती तो वाइसराय कैसे समझेगा ?"

बापू कहने लगे, "तुम्हारी समझ में अच्छी तरह आती है। दया न करने की बात लिखने की जरूरत इसलिए है कि मेरी इस बारे में हरिजनों के लिए उपवास के समय टीका हो चुकी है। अम्बेडकर ने कहा है कि उसने वह फारमूला मेरी जान बचाने की खातिर स्वीकार किया था।"

सरोजिनी नायडू बोलीं, "हां, मगर वाइसराय यह सब क्या समझेंगे ? मैं कहती हूं कि उपवास ही करना है तो महादेव की समाधि पर जाना बन्द कर दीजिये। वहां जाने से क्या ? मैं जानती हूं कि उन्होंने आपकी खातिर प्राण-त्याग किया। इसे मैं अदालत में साबित तो नहीं कर सकती, मगर बात सही है। अगर आप अब उपवास करते हैं तो महादेव का बलिदान बेकार गया। अगर आप उप-

वास करनेवाले हैं तो उस समाधि पर रोज क्रास बनाने का क्या अर्थ है ? मैं फिर कहती हूं कि आप स्वतन्त्र नहीं हैं। आपको उपवास करने का हक नहीं है।"

बापू ने कहा था कि हो सके तो पत्र कल जाना चाहिए। भाई कहने लगे, "आप कहते हैं कि पत्र अन्तर से निकला है। ऐसा होते हुए भी आपको उसे लिखने में चार दिन लगे। हमें आप कुछ घंटों में राय देने को कहते हैं ! यह कैसे हो ?"

बापू बोले, "करीब २४ घंटे हैं।" भाई ने कहा, "तो हम रात भर जागें !" बापू बोले, "वह तो तुम करने ही वाले हो।"

मगर कल शनिवार है। पत्र ग्यारह बजे जाना चाहिए। तबतक शायद तैयार न हो सके और जा न सके। मीराबहन बापू को अपना मत लिखकर दे गईं। उन्होंने सुबह पढ़ने को तकिये के नीचे रख लिया। भाई तो दो बजे तक या उससे भी देर से सोये।

बापू ने फिर मौन ले लिया। जबतक इस पत्र का फैसला न हो जाय तबतक मौन रखेंगे।

१६ जनवरी '४३

मीराबहन की टीका सुबह बापू ने पढ़ी। उन्होंने लिखा था कि वाइसराय को पहले पत्र का उत्तर जल्दी भेजने के लिए लिखिये। अभी उपवास की बात न लिखिये। बापू ने लिखकर उत्तर दिया कि अब जो पत्र जायगा, उसमें उपवास की बात तो आनी ही चाहिए। पत्र को दो-चार दिन रोककर भेजा जाय, यह मैं समझ सकता हूं; मगर बीच में दूसरी तरह का पत्र नहीं जा सकता।

पीछे भाई ने अपना अभिप्राय लाकर दिया। उन्होंने बापू के लिए पत्र का एक मसविदा भी बनाया था। लिखा था कि पत्र भेजना ही हो तो इस तरह का भेजिये। इस मसविदे का भाव भी वही था जो मीराबहन का था, मगर एक नये ढंग में लिखा गया था। साथ ही उसमें यह भी स्पष्ट किया गया था कि उपवास बंगाल की भुख-मरी की खातिर नहीं है। उस भुखमरी की जड़ में जो है, उसकी खातिर कर रहे हैं।

घूमते समय बापू से भाई इसी बारे में बातें करते रहे। बापू मौन थे, सुनते रहे। बाद में भाई कहने लगे, "सब कुछ चिकने घड़े पर पानी डालने-जैसा था।"

बापू ने अपने पत्र को फिर से पढ़ा। 'कोई मुझपर दया न करे' आदि वाक्य काट डाले। 'क्यों उपवास करते हैं', यह बतानेवाला भाग निकाल दिया। भाई

को लगता था कि यह स्पष्टीकरण तो रहना ही चाहिए। तब बापू ने कहा कि तो फिर रहने दो। भाई के मसविदे में से बापू ने दो वाक्य ले लिये। वे वाक्य इस चीज को स्पष्ट करते थे कि भुखमरी तो परिस्थिति को और अधिक असह्य बनाती है, वह उपवास का मूल कारण नहीं।

मैंने बापू से पूछा था, "आप भुखमरी को इतना महत्व क्यों दे रहे हैं? सरकार कह सकती है कि 'भुखमरी मिटाने के काम में आपकी मदद सहर्ष स्वीकार की जाती है; मगर छूटने के बाद 'भारत छोड़ो' की हलचल न मचाना।' तब आप क्या करेंगे?"

बापू ने उत्तर दिया, "हम ऐसे मदद नहीं कर सकते। मदद करने का या भुखमरी मिटाने का एक ही उपाय है कि सरकार सत्ता लोगों के हाथ में रखदे।"

बापू ने भाई का मसविदा लौटाया। उसके नीचे लिखा था, "मैं तो ऊपर लिखा हुआ सब हजम कर गया हूं। फाड़ने के बदले तुम्हें वापस दे रहा हूं।"

'शरणागति-रहस्य' में बापू को कुछ बहुत तथ्य न मिला। उन्होंने वह भी वापस लौटा दी। लिखा," 'शरणागति-रहस्य' में मैं कुछ पाता नहीं हूं। निरा पांडित्य है।"

भाई ने पूछा था कि वाइसराय का उत्तर न आने का अर्थ 'उसकी कुछ न करने की नीयत का सूचक' मानकर आप उसके साथ अन्याय तो नहीं करते? इसका इससे उदार अर्थ करना क्या शक्य नहीं? उपवास की चर्चा किये बिना आप उत्तर के लिए फिर क्यों न लिखें? जवाब में बापू ने एक नोट लिखकर भाई को दे दिया। उसमें लिखा था—"मैं ऐसे समझा हूं कि वाइसराय के मौन का मैंने जो अर्थ किया है, उसे तुम जानना चाहते हो। अंग्रेज अमलदारों की यह नीति है कि जब किसीको सख्त जवाब न देना हो तो उनके काम में से उसका जवाब समझ पड़े। यह नीति बहुत बार तो सभ्यता का रूप धारण करती है। याद करने पर ऐसे बहुत-से उदाहरण मिलते हैं। इस अनुभव का अवलम्बन करके मैंने यह वाक्य लिखा है। मानो कि उन्होंने जवाब देने का विचार किया ही है तो मेरा ऊपरवाला वाक्य मुझे बचा लेगा और वाइसराय को भी। अगर वह सचमुच संतोष देना चाहे तो मेरे उस वाक्य के आधार पर मुझे मेरा पत्र वापस लेने को कह सकता है और मुझे वह वापस लेना पड़ेगा। अगर उसका विचार मुझे संतोष देने का न हो तो मेरा यह वाक्य उसे विकट परिस्थिति में से बचा लेगा।"

दोपहर खाने के बाद मीराबहन बापू से कहने लगीं, "आप अभी पत्र न भेजें। २६ जनवरी को स्वतंत्रता के अवसर पर भेजें और उपवास की तारीख हमारे यहां ६ महीने पूरे हो जाने पर ६ फरवरी को रखें।"

बापू मान गये। बा से कहने लगे कि अब तो सबका आशीर्वाद मिल गया है। मैंने कहा, "हरगिज नहीं, मगर और कुछ नहीं कर सकते तो थोड़ा समय और मिल सके तो अच्छा है, इस विचार से मीराबहन ने बात की है।" इतने में सरोजिनी नायडू आगई। कहने लगीं, "किसीने आपके उपवास में सम्मति नहीं दी। उपवास करना गलती है। आपको यह नहीं करना चाहिए।"

बापू हँसने लगे।

सरोजिनी नायडू मुझसे कह रही थीं, "मेरी आत्मा कहती है कि बापू को उपवास नहीं करना पड़ेगा। मैंने कहा था न कि भंसाली मरेगा नहीं, वही हुआ।" मैंने कहा, "इस समय भी आपकी अंतरात्मा की यही आवाज निकले, यही प्रार्थना है।"

शाम को घूमते समय बापू भाई को अपनी बात फिर से समझाते रहे। जो सुबह नोट में लिखकर दिया था, चीज वही थी।

रात को मीराबहन ने सोने से पहले 'लीड काइंडली लाइट' गाया। मुझे बड़ा अच्छा लगा। अब वह हफ्ते में दो बार प्रार्थना पर भजन गायेंगी और बाकी पांच दिन सोने से पहले बापू को अंग्रेजी भजन सुनायेंगी, यह तय हुआ है।

१७ जनवरी '४३

बापू आज गीताजी सिखा रहे थे। बाद में कहने लगे, "तू चित्रों में इतना समय क्यों देती है? तुझे दूसरे कामों से छुट्टी इसीलिए दी थी कि तू प्यारेलाल की मदद करे। तेरे पास दो मुख्य काम हैं: एक तो डाक्टरी में परिश्रम करना। मैं तुझसे अलौकिक काम चाहता हूं। बा की खांसी क्यों न जाय? 'पुरानी छाती-खांसी की जड़ नहीं जाती'—यह सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता। मालवीयजी, शिवप्रसादजी और कई दूसरों को डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। मगर वैद्यक इलाज से वे अच्छे हुए। मुझे वैद्यक पर मोह नहीं। मैं उसकी त्रुटियां जानता हूं। मगर तुझे समझना चाहिए कि इस तरह किसी बीमारी को असाध्य मान लेना ठीक नहीं है। बा है, सरोजिनी नायडू हैं—इन्हें तुझे अच्छा करना ही चाहिए और इतनी शक्ति होनी चाहिए कि रोगी को अपना कहा मनवाले और उसे अपनी ओर आकर्षित करले।

दूसरा काम भाषा का है। भाषा की भी आवश्यकता डाक्टरी के लिए तो है ही, मगर उससे भी अधिक मेरे काम के लिए है। मैंने तुझे कहा है कि महादेव का काम तुझे करना है। मैं नहीं जानता कि तू कहांतक कर सकेगी। प्यारेलाल तो है; मगर अकेले के लिए वह काम शायद बहुत हो जाय। तुझे तैयार होना चाहिए। इसीलिए मैंने तुझसे व्याकरण पर पूरा अधिकार पाने को कहा है।''

बा बहुत उदास हैं। उपवास की तलवार सिर पर लटक रही है। शाम को अकेली बगीचे में बैठती हैं। मीराबहन समझा रही थीं कि सरकार बापू को अधिक दिनतक उपवास नहीं करने देगी। मगर इस आशा पर हम क्या भरोसा कर सकते हैं।

भाई आज भी बापू का पत्र लेकर बैठे थे। उन्हें उससे संतोष नहीं है। विचार भी चलते हैं—'सरकार ने उपवास को भी महत्व नहीं दिया तो?'

उनके दांत में कल से दर्द है। दांत खराब हैं; मगर निकलवाते नहीं है। क्या किया जाय? हमारे देश में अपने दांतों का बड़ा मोह होता है।

सुबह भंडारी आये थे। उनसे थोड़ी किताबें मंगा देने को कहा। उनमें से एक 'लि मिज़ेराब्ल' है। यह बापू के लिए थी। शाम को आ गई। बापू ने पढ़ना भी शुरू कर दिया।

१८ जनवरी '४३

आज सोमवार का मौन था। सुबह में थोड़ी ड्राइंग करती रही। महादेवभाई की समाधि का चित्र खींच रही थी। घूमी नहीं। मीराबहन आकर ड्राइंग के विज्ञान के बारे में कुछ बता गई। मैंने ड्राइंग कभी की नहीं है। चित्रकला में यह अज्ञान बहुत बाधा डालता है।

बापू अपना पत्र और भाई के सुधारोंवाला मसविदा लेकर कुछ समयतक विचार करते रहे। सोमवार के कारण बा को भी आज सिखाना नहीं था, इसलिए दोपहर को जल्दी सो गये। उठे तो कटेलीसाहब वाइसराय का उत्तर लेकर आये। पत्र अच्छा था। मित्र-भाव का था। पत्र-व्यवहार का रास्ता खोलता था। शायद इस तरह कोई रास्ता निकल सके। सरोजिनी नायडू को बहुत अच्छा लगा। मीराबहन को कुछ कम और मुझे उनसे भी कम। बापू तटस्थ थे। उनका भाव था कि पत्र में शायद कुछ निकले या न निकले।

बापू ने उत्तर लिखना शुरू किया। साढ़े तीन बजे वह आधे घंटेतक रोज ध्यान

में बैठते हैं। उत्तर उससे पहले तैयार करके दे दिया। सबने अपनी-अपनी राय दी। रात को बापू उसे फिर से थोड़ी देरतक देखते रहे। कहते थे कि कल उत्तर जाना चाहिए। सुबह पूरा करेंगे।

सोने से पहले मीराबहन ने दो अंग्रेजी भजन गाये—'ओ गॉड आवर हेल्प इन एजेज पास्ट' और 'व्हेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस'। बापू कहने लगे, "बस मुझे तो दूसरे भजन के बराबर और कोई अंग्रेजी भजन लगता ही नहीं है।"

रक्तचाप बहुत बढ़ा था। पौने आठ या साढ़े सात बजे देखा तो २०४/११६

१९ जनवरी '४३

बापू रात अच्छी तरह सो नहीं पाये। सुबह प्रार्थना के बाद भी नहीं सोये। उठकर पत्र तैयार करने लगे। मुझे लिखवाते रहे। सात बजे पत्र पूरा करके नाश्ता किया। घूमने गये। मालिश, स्नानादि के बाद खाकर जल्दी से पत्र की नकल अपने हाथ से तैयार करने लगे। मैं खाना खाकर आई तो एक वाक्य लिख चुके थे। बाकी मैंने लिखवाया।

बापू का मौन अब छूट गया है। अच्छा लगता है; मगर दोपहर को आधा घंटा ध्यान में अब भी बैठते हैं। दोपहर को दो-तीन घंटे मौन भी रखना चाहते हैं।

बापू का रक्तपात सुबह खूब बढ़ा था। शामतक कम हो गया। उनका मन न शांत है। न तो आशा ही लगाये बैठे हैं, न निराश की भावना उनके मन में है। भगवान को जो करना होगा, वह होगा—यह उनका भाव है।

मेरा गला कल से खराब है। थोड़ा बुखार-सा लगता है।

२० जनवरी '४३

सुबह की प्रार्थना के समय मैंने बापू से पूछा, "यहां अभी कितने दिनतक प्रार्थना करनी होगी?" कहने लगे, "बहुत दिनतक। मैं तो जितना ही विचार करता हूं, वाइसराय का पत्र उतना ही मुझे खराब लगता है। मेरे आज के पत्र का वह शायद सख्त उत्तर देगा।"

दिन में बापू 'ले मिजेराब्ल' पढ़ते रहे। दोपहर में बा को भूगोल सिखाया और कथा पढ़कर सुनाई। शाम को उन्हें रामायण भी रोज की तरह समझाई। घूमते समय मुझे गीताजी सिखाई, रात को भाई के साथ बातें कीं।

मैं आज भी जल्दी सोई। दिन में कलेक्टर हूलन और डा० शाह आये थे।

बा का थूक आटोवैक्सीन बनाने के लिए और सरोजिनी नायडू का मल परीक्षा

के लिए भेजा।

२१ जनवरी '४३

आज सरदी फिर से शुरू हुई है। जाते-जाते बुझते दिये की तरह टिमटिमा रही है।

दिन में कुछ खास घटना नहीं हुई। बापू ने भाई से कुछ बातें कीं और कहा कि मुझे डाक्टरी के अभ्यास पर अधिक समय लगाना चाहिए और व्याकरण का खूब अभ्यास करना चाहिए। पहला मेरी खातिर और दूसरा बापू के काम की खातिर। भाई मुझे आकर कहने लगे, "ये दोनों चीजें अच्छी तरह सीख लो। लिखने का भी खूब अभ्यास करो। बाहर जाकर यह अभ्यास करने का मौका नहीं मिलने-वाला।"

सरदी काफी थी। दोपहर को बापू बाहर बैठने गये।

सिपाही शंकर को चेचक के टीके के बाद जोरों का बुखार आया। गाठें भी फूल गईं। आज सुबह चुपचाप अपने घर चला गया है।

२२ जनवरी '४३

आज शुक्रवार के रोज से गीताजी का नया पारायण शुरू होता है।

आज भी खूब सरदी थी। दोपहर में सब लोग धूप में सोये।

शाम को डा० शाह आये। कहने लगे, "श्रीमती नायडू के मल में पेचिश के जंतु (Hystolytica amoeba cysts) काफी मिले हैं।" मैंने तो पहले से ही दवा मंगा ली थी। सोचा था कि उनकी परीक्षा करके इलाज करूंगी। सुना है कि उन्हें दिल की बीमारी भी है। इससे मामला और पेचीदा हो जाता है।

दोपहर को थोड़ी देरतक व्याकरण का अभ्यास किया। बा को थोड़ा-सा अनु-वाद पढ़कर सुनाया। साढ़े चार बज गये।

आज बैडमिंटन और पिंग-पौंग की जाली लगवाने की बात चल रही थी। सरोजिनी नायडू ने मुझसे पूछा तो मैंने कहा, "विचार तो अच्छा है, मगर खेलने-वाले कितने हैं?" वह कहने लगीं, "तुम, प्यारेलाल, मीरा, बापू और बा। बापू अब उपन्यास पढ़ते हैं, तो खेलेंगे क्यों नहीं!" सब हँसने लगे।

२३ जनवरी '४३

आज शनिवार था। मीराबहन और सरोजिनी नायडू महादेवभाई के समाधि-स्थान पर आये। मगर बा नहीं आ सकीं। कल से उनकी तबीयत अच्छी नहीं है।

घूमते समय बापू पूछने लगे, "उपन्यास का साहित्य में क्या स्थान है ?" भाई कहने लगे, "साहित्य के तीन विभाग हैं : कविता, नाटक और काल्पनिक उपन्यास-कथा। सो उपन्यास का बड़ा स्थान है।" बापू कहने लगे, "कैसी विचित्र बात है ! काल्पनिक चीजों को तो बड़ा स्थान दिया है और जीवन की असली चीजों को स्थान ही नहीं दिया !" भाई बचाव करने लगे, "उपन्यासों में आदर्श व्यक्त किये जाते हैं। उनका आधार अनुभव पर होता है। स्टो के 'टामकाका की कुटिया' नामक उपन्यास ने क्रांति कराई और परिणामस्वरूप गुलामी खत्म हुई। एप्टन सिन्क्लेयर के 'जंगल' उपन्यास के कारण नया कानून बना। उपन्यासों के बहुत उपयोग हैं।"

बापू बोले, "सदुपयोग किस चीज का नहीं हो सकता ? मगर देखना तो यह चाहिए कि सर्वांश में कोई चीज फायदा करती है या नुकसान। मेरी समझ में तो उपन्यासों ने बहुत नुकसान किया है।"

भाई ने कहा, "मगर तुलसीकृत रामायण-जैसा धर्मग्रंथ भी तो काल्पनिक ही है न ?" बापू कहने लगे, "इस तरह की दलील में मैं नहीं पड़ना चाहता। यह तो वितंडावाद हुआ। तुलसीदास को कोई उपन्यास के तौर पर नहीं पढ़ता। मैं तो सामान्य उपन्यासों का स्थान समझने के लिए बात कर रहा था।"

बीच में 'टाम काका की कुटिया' की बात होते समय लिंचिग[1] की प्रथा पर चर्चा छिड़ी। बापू ने समझाया और कहने लगे, "मुझे अफ्रीका में लिंच ही करने लगे थे न ! ईश्वर ने बचा लिया।

"आखिर में चैम्बरलेन ने तार दिया कि मुझपर हमला करनेवालों को सजा मिलनी ही चाहिए। मुझे बुलाकर वजीर ने पूछा तो मैंने कहा कि मुझे कोई शिकायत नहीं है। उस दिन से उसके मन में और सारे दक्षिण अफ्रीका में मेरी कीमत बढ़ी।"

आज सरोजिनी नायडू के लिए कुछ पकाना था। सवा घंटा रसोई में काम किया। बा ने भी मेथी की रोटी खाई। तबीयत पहले से भारी थी। शाम को हल्का-सा बुखार आ गया।

---

[1] जनसमुदाय का आवेश में आकर बगैर कानूनी कार्रवाई के किसी व्यक्ति को जंगली सजा देने की अमेरिका आदि प्रदेशों में प्रचलित प्रथा। 'लिंच' नामक न्यायाधीश के नाम पर यह शब्द निकला। उसके बारे में कहा जाता है कि वह फांसी पर अभियुक्त को चढ़ाने के बाद फैसला सुनाया करता था।

शाम को मीराबहन के साथ भाई का टाइप किया हुआ पत्र-व्यवहार मिलाया, जिससे गलती न रह जाय। एक पत्र उन्होंने मुझे लिखवाया। संगीत के लिए समय न रहा।

रात को चन्द्रमा के निकलने का दृश्य आज तीन रोज से बहुत सुंदर होता है। आज मैंने बापू के सोने के बाद उनके गुसलखाने में बैठकर एक छोटा-सा स्केच बनाया। सुबह रंगों का ठीक पता चलेगा। तब शायद कुछ और सुधार करना पड़े।

भाई ने बताया कि मालिश के समय अपने उपवास के सिलसिले में बापू ने रॉबर्ट ब्राउनिंग की कविता 'रेबी बेन एज्रा' की इस कड़ी 'Heaven's success found or earth's failure'[१] को दुहराते हुए अपने उपवास की भावना को व्यक्त किया : "जगत जिसे सफलता कहता है, उसकी मैंने जीवन में कभी लालसा नहीं रखी। जगत की निन्दा के डर से मैंने कभी अपने ध्येय को नहीं छोड़ा।"

२४ जनवरी '४३

सुबह घूमते समय बापू ने सलाह दी कि गीता-उच्चारण की जगह अब गीता-जी के दो-चार श्लोकों का रोज व्याकरण-सहित अर्थ करना ज्यादा अच्छा होगा। बीस मिनट में चार श्लोक हुए। भाई ने पूछा, "'प्रसादमधिगच्छति' में 'प्रसाद' का क्या अर्थ करते हैं ?" मैंने उत्तर दिया, "ईश्वर का प्रसाद।" बापू बोले, "हां, ठीक है।" भाई कहने लगे, "इन श्लोकों में तो पातंजल सूत्र को दोहराया गया है। इस-लिए प्रसाद का जो अर्थ पतंजलि ने किया है, वही लेना होगा। 'प्रसाद' अर्थात मन की प्रशांति (Serenity, limpidity)।"

भाई को लगा कि सांख्य का हवाला देने में गलती हुई है, मगर बापू ने बात आगे चलाई। बोले, "पतंजलि का सांख्य के साथ संबंध नहीं है। फिर गीता के दूसरे अध्याय को सांख्य योग कहा तो है; लेकिन गीताकार ने सबका समन्वय किया है। तिलक महाराज ने तो इस बारे में बहुत लिखा है। 'योग' शब्द पर ही एक बड़ा अध्याय लिखा है। ईश्वर-कृपा से मन की प्रसन्नता प्राप्त होती है। प्रसन्नता से दुःख का नाश होता है, अन्यथा हो नहीं सकता। ईश्वर का स्थान न हो तो अंतिम श्लोक में 'ब्राह्मी स्थिति' का उल्लेख क्यों हो ? ब्रह्म से निकली 'ब्राह्मी स्थिति', और ब्रह्म ईश्वर नहीं तो क्या है ?"

---

[१] चाहिए या तो वह सफलता, जो ईश्वर की कसौटी पर खरी उतरे, नहीं तो सांसारिक हार।

सुबह भंडारी और डा० शाह आये। सरोजिनी नायडू को नियमित दवा लेने के लिए कहते रहे। थोड़ी देर बैठे। खबर थी कि कल से डबल रोटी और मोसम्बी मिलना बंद हो जायगा। सरोजिनी नायडू ने भंडारी से कहा। उन्होंने कहा कि बन पड़ा तो वह दोनों चीजों का प्रबंध कर देंगे।

दोपहर थोड़ा-सा समय रातवाले चित्र को पूरा करने में लगाया। शाम को दस-पंद्रह मिनट तक कलवाले चित्र की तैयारी के लिए ड्राइंग की। सुबह उन लाइनों को देखना कठिन हो जायगा। मीराबहन के साथ आज भी कल की तरह पत्र-व्यवहार पर काम किया। इसीलिए आज भी व्याकरण नहीं कर सकी। कल तो करना ही चाहिए।

शाम को घूमते समय गीताजी के चार श्लोकों का अध्ययन किया।

२५ जनवरी '४३

आज सोमवार था। सोमवार को चित्रकला के लिए समय रखा है। सुबह सूर्योदय का दृश्य बनाने का विचार था; मगर समय पर तैयार न हो सकी। स्नानादि के बाद साढ़े नौ से साढ़े दसतक आगाखां महल की छत से पर्णकुटी का दृश्य बनाया। खाने के बाद फिर करीब घंटाभर उसीपर काम किया। दोपहर आराम के बाद अखबार देखा। कल स्वतंत्रता-दिन है। उसके लिए 'वंदेमातरम्', 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' और 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'—ये तीन गीत तैयार करने थे। 'वंदेमातरम्' का बाकी पाठ तो याद था; मगर 'सुखदां वरदां···' पर आकर बिगड़ जाता था। इसे सुधारने में मुझे करीब एक घंटा लगा। 'हिन्दोस्तां हमारा' के दो-तीन स्वर बापू को प्रिय हैं। उसे याद करने में समय लगा। उसका भी आधा तो मुझे आता था; परन्तु दूसरे आधे को ठीक करने में काफी मेहनत करनी पड़ी। 'वंदेमातरम्' के लिए मीराबहन, भाई और मैं—तीनों साथ बैठे। पीछे मैं अकेली अभ्यास करती रही। रात में प्रार्थना के बाद बापू का मौन छूटने पर उनको तीनों गान सुनाये। उन्होंने दोषों को सुधार दिया। इतने में सवा आठ बज गये। बापू का काम करके थोड़ी देर भाई के साथ बैठकर पढ़ती रही। करीब पौने दस या दस बजे सो गई।

: ३७ :

जेल में पहला स्वतंत्रता-दिवस

२६ जनवरी '४३

आज स्वतंत्रता-दिवस मनाने के लिए सरोजिनी नायडू ने परसों बापू को 'स्वाधीनता की प्रतिज्ञा' लिखने को कहा था। कल उन्होंने मौन में वह लिखी। वह सुंदर छोटी-सी प्रतिज्ञा तैयार हुई। सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "यह सम्पूर्ण है। इस प्रतिज्ञा को मैं अंतःप्रेरणा का परिणाम मानती हूं। यह सीधी हृदय से निकली है।"

बापू कल रात उसका अनुवाद करने बैठ रहे थे। मैंने कहा, "आप सो जायं। मैं सुबह ही आपको दे दूंगी। आप उसे दुरुस्त कर लीजिये।" मगर सुबह तो घूमने से पहले बिलकुल समय नहीं रहा। कुछ खयाल भी नहीं रहा। मैंने विचार किया कि मालिश से बापू आयें, उससे पहले उन्हें दे दूंगी; मगर आज मैंने स्नान भी पूरा नहीं किया था कि उनकी मालिश पूरी हो गई। मैंने काम करते-करते मन में विचार किया कि अनुवाद करना है; मगर लिख नहीं पाई थी। स्नान करके निकली तो सरोजिनी नायडू ने कुछ पकाने को कहा। उसमें लग गई और अनुवाद की बात भूल गई। याद रहती कि बापू को तैयार करके देना ही है तो पांच-दस मिनट निकाल ही लेती।

बापू का उपवास था। उन्होंने दो बार--सुबह और दोपहर--गुड़, गरम पानी और मोसम्बी का रस लिया। मैंने चाय ली। भाई ने पूरा उपवास किया—केवल पानी लिया। सरोजिनी नायडू और कटेलीसाहब के लिए मटर का पुलाव, शलजम का साग और बेसन की मिठाई बनाई। सब बनाकर आई, बापू के पांव मले, तब उन्होंने अनुवाद मांगा। मैंने कहा, "पांच मिनट में लिखकर देती हूं।" बापू पांच-दस मिनट में ही सोकर उठ गये। मैंने अनुवाद तैयार कर लिया। उसे देखने लगे। जहां सुधार की आवश्यकता थी, सुधारा था। मैंने अंग्रेजी पाठ सामने रखकर अनुवाद किया, इसीलिए कहीं-कहीं शब्द छूट गये थे। अंग्रेजी प्रतिज्ञा का अनुवाद इस प्रकार है।

"हिन्दुस्तान हर माने में सत्य और अहिंसा के जरिये पूरी तौर पर आजाद हो, यह मेरा तात्कालिक उद्देश्य है और बरसों से रहा है। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए मैं आज स्वतंत्रता-दिवस की इस तेरहवीं बरसी के दिन फिर से प्रण करता हूं कि जबतक हिन्दुस्तान अपने उद्देश्य को न पाले, तबतक न मैं [illegible]

पर मेरा कुछ भी असर है, उन्हें चैन लेने दूंगा। मेरी यह प्रतिज्ञा सफल हो, इसके लिए मैं उस महान् अदृश्य दिव्य शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह या परमात्मा रूपी परिचित नामों से पुकारते हैं, सहायता की प्रार्थना करता हूं।

२६ जनवरी '४३

झंडा बनाने के लिए हल्दी और सोडा डालकर नारंगी रंग तैयार किया। हरा पेस्टल लगाकर बनाया। सफेद टुकड़े पर पेंसिल से मीराबहन ने चर्खा बनाया। बगीचे में आम के पेड़ के नीचे छोटा-सा स्तम्भ गाड़ा। उसपर ठीक तरह से मीरा-बहन ने झंडा बांधा। झंडा भी उन्होंने ही तैयार किया था।

सभा की अध्यक्षता बापू ने सरोजिनी नायडू को सौंपी। वह कहने लगीं, "आपके रहते यह स्थान कौन ले सकता है?" अंत में मान गईं।

छः बजे बापू घूमकर लौटे। सरोजिनी नायडू ने उनसे झंडाभिवादन करवाया। पहले हमने 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गाया, फिर बापू ने झंडा फह-राया। झंडा-वंदन गीत गाया गया। स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा दोहराई गई और फिर 'वंदेमातरम्' का गायन हुआ। खासा अच्छा दृश्य बन गया। सरोजिनी नायडू कहने लगीं, "लाखों आदमी होते तो भी करना तो यही था न।" भाई बोले, "ज़रा इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगते!" वह कहने लगीं, "जबतक बापू हैं, तबतक इन्कलाब जिन्दा तो है ही।"

प्रार्थना में 'वंदौं श्री हरि-पद सुखदाई' गाया। आज रात को मैं जल्दी सो गई। बहुत थकी थी।

बापू को मेरा चित्रकला में अधिक समय देना पसंद नहीं। उन्होंने समझाया, मगर समय की मर्यादा रखकर चित्र बनाना ज़रा कठिन काम है।

रात में बापू कहने लगे, "मैंने आज विचार किया था कि सब मिलकर कातें; मगर सब काम में थे, इसलिए कहा नहीं।" मैंने कहा, "विचार तो मुझे भी आया था, मगर मैं चुप रही।" मीराबहन कहने लगीं, "अभी कातेंगे।" मगर आठ बज चुके थे। बापू को सोने को बहुत देर होजाती, इसलिए कल मिलकर कातने का निश्चय किया। बापू को यह ठीक लगा। कल ढाई से तीन बजे तक कातने का प्रोग्राम बना। बापू बोले, "मैंने तो कहा है न कि सूत के धागे से स्वराज्य बंधा है; लेकिन उसे माननेवाले बहुत कम हैं। पर हम तो कातें।"

: ३८ :

उपवास के निश्चय से चिंता

२७ जनवरी '४३

आज कलक्टर और डा० शाह आये। डा० शाह सरोजिनी नायडू के खून की परीक्षा-रिपोर्ट भी लाये थे। रक्तहीनता नहीं है। उनकी अशक्ति का कारण उनकी पुरानी पेचिश है। कलक्टर एक मिनट के बाद पूछताछ करके चला गया। उसके पूछने से पहले ही बापू ने कह दिया, "हमेशा की तरह आज भी कोई शिकायत नहीं है।"

बा को शाम के समय कुछ थकावट लग रही थी। बुखार नहीं था। उन्होंने खुराक कम की है। शायद उसीका असर हो।

ढाई से तीन तक सबने मिलकर काता। कातते समय मैं सोचती थी कि रोज कातें तो कितना अच्छा हो। कातना पूरा होने पर बापू ने भी ऐसा ही विचार प्रकट किया, "हम लोग सिवा प्रार्थना के कुछ भी मिलकर नहीं करते। स्वराज्य एक के श्रम से नहीं; सबके श्रम से आनेवाला है। रोज मौन रूप होकर इसी प्रकार कातना अच्छा होगा।" मीराबहन को थोड़ी हिचकिचाहट थी; मगर बाद में मान गईं।

आज मेरे तार १७७ निकले और मीराबहन के १७८।

२८ जनवरी '४३

दोपहर में खाने के बाद बापू बा को 'बलिदान'[1] पढ़कर सुना रहे थे। उसमें राजमहल में जनसभा भरने का वर्णन सुनाते समय कहने लगे, "सत्ता पाने के लिए हमें बहुत कष्ट सहने होंगे, कुरबानियां करनी होंगी। तुम सब लोग आराम की जिन्दगी बसर करना चाहो तो सत्ता कैसे अपने हाथ आ सकती है। उपवास तो एक छोटी चीज है। हजारों लाखों आदमी इस तरह कष्ट सहन करें तो कुछ हो सकता है।" बा ने बहुत शंका-भरे ढंग से सिर हिला दिया।

सोकर उठे। पानी पी रहे थे कि इतने में भाई वाइसराय का पत्र लेकर आये। चिकनी-चुपड़ी बातें थीं, कठोर न थीं। बापू इसके लिए पहले से ही तैयार थे। बा

---

[1] विक्टर ह्यूगो के 'नाइन्टी थ्री' का हिन्दी अनुवाद।

को बताया कि ऐसा उत्तर आया है। वह काफी घबरा गई। "अब क्या होगा?"—बार-बार यही कहने लगीं।

ढाई से तीन बजेतक सबने (सरोजिनी नायडू को छोड़कर) मिलकर काता।

शाम को बापू वाइसराय को उत्तर लिखने लगे। आठ बजे तैयार करके सब को पढ़ सुनाया और कहा कि जिसे जो कहना हो, लिखकर सुबह ही देदे। कल पत्र जाना चाहिए।

भाई को बापू के काम से छुट्टी मिल गई। मीराबहन ने और भाई ने एक-एक नकल कर ली। मैं बापू के पांव और सिर की मालिश वगैरा पूरी करके मुंह-हाथ धोकर भीतर गई तो पौने दस बजे थे।

उन लोगों ने उसी समय नकल पूरी की थी। करीब एक घंटा लिया था। मीराबहन अपनी नकल लेकर अलग जा बैठीं। मैंने बापूवाली पहली नकल ले ली। भाई अपनी की हुई नकल लेकर बैठ गये। मुझे जो कुछ सूझा, वह भाई को बताकर मैं तो ग्यारह बजे से पहले सोने चली गई। बारह बजे बापू की पेशाब की बोतल साफ करने उठी तो मीराबहन और भाई बैठे थे। मैंने भाई से पूछा तो कहने लगे, "दो बजेतक सोऊंगा।" मगर बाद में पता लगा कि दो बजे सरोजिनी नायडू गुसलखाने गई थीं, उस समय तक भाई लिख रहे थे। वह उनसे कुछ बातें करती रहीं, फिर दो ताजे अंजीर उनके पास रख आईं और पूछने लगीं, "कुछ गरम चीज पीने को चाहिए?" उन्हें नहीं चाहिए थी। करीब तीन बजे वह सोये। मीराबहन बारह-साढ़े बारहतक सो गई थीं।

बापू अच्छी तरह सोये। मानो उन्हें कोई चिन्ता ही न हो।

२६ जनवरी '४३

प्रार्थना के लिए आज पांच बजे उठे। प्रार्थना के बाद बापू भाई और मीराबहन के मतों को लेकर अपने पत्र सहित बैठे। साढ़े दस-पौने ग्यारह बजेतक उन्होंने पूरा कर दिया।

खाने को जाने से पहले भाई उसे उठाकर देखने लगे। बापू कहने लगे, "यह पत्र मेरा नहीं, तुम्हारा है। तुम्हारे पत्र के सब फेरफार मैंने ले लिये हैं। भाषा मेरी है, तर्ज मेरा है। इस भूमिका के साथ अब यह पत्र पढ़ो और कहो कि क्या तुम इसमें अपना पत्र पाते हो?" पढ़कर भाई कहने लगे, "पाता हूं; मगर मुझे अभी और फेरफार चाहिए।"

भाई और मीराबहन आदि खाना खाकर आये और पत्र देखने लगे। बापू ने लिखवाया। दोनों ने एक-एक नकल कर ली। मैं तीसरी नकल खादी कागज (हाथ-बने कागज) पर करती गई। उन लोगों को लगता था कि अपने हाथ की नकल हो तो वह अधिक विचार कर सकते हैं। कोई खास परिवर्तन करना तो था नहीं। छोटी-मोटी तब्दीलियां की गईं। आज बापू ने पत्र लिखा, उसमें एक आवश्यक चीज लिखना भूल गये थे। वह यह थी कि, "कांग्रेस की तैयारी है कि भले सरकार जिन्ना-साहब को वजारत कायम करने को कहे।" यह बात कल के पत्र में थी—आज छूट गई। भाई ने उसकी तरफ उनका ध्यान खींचा। मेरे हाथ की खादी कागजवाली नकल बापू भेज रहे थे, सो उसीपर उन्होंने नीचे 'पुनश्च' करके छूटे हुए वाक्य को लिख दिया। छोटे-मोटे सुधारों के कारण और जल्दी में लिखे जाने के कारण इस नकल में कुछ काटे हुए शब्द थे; मगर नकल बापू ने भेजी। दूसरी नकल तैयार करने का समय न था। बापू आज की डाक खोना नहीं चाहते थे। कहने लगे, "यह नकल पुनश्च और सुधारों के साथ जाय। वे लोग तो जानते ही हैं कि मैं टाल्स्टाय का अनुयायी हूं। टाल्स्टाय तो सुधारों समेत ही अपने लेख भेज दिया करते थे।"

पत्र भेजा तो समय १-३५ हो गया। बापू पानी पीकर गुसलखाने गये। दो बज गये। पैर मलवाये। दस मिनट तक सोये तो क्या, योंही आंख मींचकर आराम करते रहे। मैंने चरखे तैयार किये। बापू और भाई—दोनों को ढाई बजे कातना था। मीराबहन को आज बापू ने छुट्टी देदी थी। हम तीनों ने ही आज काता। मेरे तार आज १८० हुए।

आज खूब बादल छाये रहे। हवा ऐसी चल रही है, मानो फिर से सरदी शुरू होगई हो।

शाम को मैंने नोटबुक में वाइसराय के पत्र की और बापू के आजवाले उत्तर की नकल की। उत्तर की नकल अभी पूरी करने को है।

पत्र जाने के बाद बापू बात करने लगे कि अगर जिन्नासाहब की वजारतवाली बात रह जाती तो उन्हें बड़ा अफसोस होता। भाई ने याद दिलाया कि १९३० में दांडी-मार्च के अल्टीमेटमवाले पत्र में नमक का कर रद्द करनेवाला पैरा टाइप करने में रह गया था। अंगद (रेजिनल्ड रेनाल्ड्स) वह मुहरबंद लिफाफा लेकर जा रहा था, मगर दिल्ली की गाड़ी चूक गई, सो स्टेशन से वापस आया। वैसे-का-वैसा मुहरबंद लिफाफा भाई के हाथ में दे दिया। रात को क्या जाने कैसे भाई को अन्त-

प्रेरणा हुई कि मुहर को तोड़ डाला। अन्दर से निकालकर पत्र देखा तो नमक कर-वाली लकीर न थी। दूसरे दिन नई नकल तैयार करके भेजी। इस सारी घटना में ईश्वर का हाथ था। परिणाम भी शुभ ही आया।

३० जनवरी '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की समाधि पर सरोजिनी नायडू और मीरा-बहन गईं। फूल बहुत थे। कल रातवाले भी अभी सूखे नहीं थे। इसलिए जिन फूलों का क्रॉस बनाते हैं, उन्हें क्रॉस के सिर पर ज्योतिर्बिम्ब (Halo) के रूप में सजा दिया।

सरदी बहुत होगई है, अच्छा लगता है।

कल बापू ने विचार किया था कि आज वाइसराय को कलवाले पत्र की टाइप की हुई नकल भेजेंगे। कल रात भाई ने टाइप किया। नकल जितनी चाहिए उतनी साफ न थी। भाई कहने लगे कि दूसरी साफ नकल करता हूं। बापू ने नकल के साथ भेजने के लिए नोट लिखा। उसे खादी कागज पर साफ-साफ लिखने बैठे; लेकिन कागज पर दो बार धब्बे पड़ जाने से तीसरा कागज लेना पड़ा। बापू ने कहा कि यह अन्तिम बार है। इस बार भी बिगड़ा तो खत नहीं भेजेंगे। इतने में मीरा-बहन आ गईं। उन्होंने दूसरे कागज का धब्बा चाकू की नोक से साफ कर दिया। बापू फिर लिखने बैठे। पूरा करके मीराबहन के हाथ में दिया। देखा तो दो शब्द ही छूट गये थे। बापू ने कहा, "नहीं भेजेंगे।" इतने में भाई आये। साफ नकल का समय न था। आज शनिवार है, इसलिए पत्र जल्दी जाना चाहिए। बापू का पत्र लेकर वही पुरानी नकल भेजने का विचार किया; मगर बापू ने कुछ न भेजने का विचार कर लिया था। सो सब रह गया।

सरोजिनी नायडू की तबीयत आज अच्छी है। बा की भी अच्छी है। बा के पास आज कनु का पत्र आया है, इसलिए बहुत खुश हैं। बा का रक्तचाप भी आज बहुत दिनों के बाद शाम को १६२/१०० आया।

आज मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है। विविध विचार उठा करते हैं। विचार आते हैं कि कैसे लोग जेल में घबराते हैं और पागल से भी बन जाते हैं।

३१ जनवरी '४३

सरोजिनी नायडू का वजन बराबर कम हो रहा है। कमजोर होती जा रही हैं। ६-७ दस्त रोज हो ही जाते हैं। आंतों की पुरानी पेचिस है और उसके

साथ उनका दिल भी कमजोर है। इसलिए आम तौर पर इस रोग में जो दवा दी जाती है, उसे देते हुए डर लगता है। थोड़ा घूमें तो शाम को पांव में सूजन आजाती है। जिगर दबाने से दुखता है।

मैंने और डा० शाह ने उन्हें कारवार्सोल दिया था; मगर उससे उन्हें मरोड़ उठने लगे। अब क्या होता? उनके चलने-फिरने और खुराक पर हमारा कोई बस नहीं था।

मैंने निश्चय किया कि मुझे कह देना चाहिए कि इन्हें अभी छोड़ दो। यहां और बोझ आनेवाला है। ऐसा न हो कि उसमें यह और अधिक बीमार पड़ जायं। कमजोरी की हालत में बीमार पड़ जायंगी तो भारी खतरा उठाना पड़ेगा। सो मैंने कटेलीसाहब से कहा। बाद में भंडारी और डा० शाह आये, उनसे भी कहा। डा० शाह भी कहने लगे कि उनका स्वतंत्र मत तो सरोजिनी नायडू को बिना इलाज के छोड़ देना था; क्योंकि उनका इलाज आसान न था। सरोजिनी नायडू भंडारी और डा० शाह पर बहुत नाराज हुईं। कहने लगीं, "मैं तो अच्छी हूं। तुम लोगों को आज की परिस्थिति में मुझे छोड़ने की बात नहीं करनी चाहिए।" मगर जब दवा की बात आई तो कहने लगीं, "मैं दवा नहीं खाऊंगी, बिस्तर पर नहीं पड़ूंगी और न खास खुराक ही खाऊंगी।"

भंडारी बापू से कहने लगे कि उन्हें कटेलीसाहब ने उपवास की बात बताई थी। उन्हें बहुत चिन्ता हो रही थी। बापू कहने लगे, "यह तो कटेलीसाहब ने आपको घरेलू तौर से खबर दी है। मगर जो हो, आप चिंता क्यों करते हैं? आपको तो सब आदेश ऊपर से ही मिलेंगे। मेरे जैसा आदमी इन लोगों के झूठे इल्जामों का और क्या जवाब दे सकता है? मैंने उनसे कहा है कि वे इन इलजामों के लिए सबूत दें। मैं जो कहता हूं, सब साबित करने को तैयार हूं। मगर वे लोग सबूत नहीं दे सकते। तब मैं लाचार होजाता हूं—देशभर का दुःख, भुखमरी आदि मैं चुपचाप कहांतक देख सकता हूं?"

आज भी सरदी खूब थी। स्नान के बाद बापू बाहर जाकर बैठे। ढाई बजे कातने के लिए अंदर आ गये।

मैंने आज डायरी की पहली नोटबुक में से जो कुछ निकालना, काटना-छांटना था, वह पूरा किया। रात के दस बजे सोने को मिला। बापू को पेशाब की बोतल समय पर न दे सकी। वह उठकर गुसलखाने गये। बुरा लगा। नींद भी काफी देर से

आई।

१ फरवरी '४३

सुबह मीराबहन कलण्डर की तारीख बदलने आई तो कहने लगीं, "आज पहली तारीख है। लाल रंग में लिखी होगी।" मुझे विचार आया कि तारीख ही लाल रंग में नहीं, बल्कि महीने का नाम भी लाल रंग में लिखा है। यह खास महीना है। कौन जाने, यह महीना क्या-क्या रंग दिखायेगा !

बापू का आज मौन था। मैंने महादेवभाई की बाहर बिखरी हुई चीजों को एकत्रित करके बंद कर दिया। भाई की सलाह थी कि उनके कपड़े उनके बिस्तर में डालकर उनका बक्स मैं इस्तेमाल करलूं। बापू को भी वही पसंद था। सो उनके कपड़े उनके बिस्तर में बांध दिये। बक्स की चीजें ठीक कर रही थी कि इतने में सरोजिनी नायडू आईं और कहने लगीं, "तुम्हें ठीक तरह खाना चाहिए और तंदुरुस्त रहना चाहिए; क्योंकि उपवास में बापू की सम्भाल की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। हम सब मदद करेंगे; मगर तुम डाक्टर हो। सब लोग तुम्हें ही पूछेंगे।"

मैंने कहा, "आप मेरी इतनी चिन्ता करती हैं, उसके लिए मैं आपकी आभारी हूं।" ढाई से तीन बजेतक मिलकर काता। दोपहर को उन आवश्यक चीजों की सूची बनाती रही, जो उपवास में काम आयेंगी।

दिन में सरदी कुछ कम थी; मगर रात को फिर बढ़ गई। बा की तबीयत कल शाम को भी और आज भी अच्छी न थी। बुखार-सा लगता था; मगर मापने पर बुखार न निकला। कल तो हृदय का दर्द उठा था। बापू से भी ज्यादा चिन्ता बा के लिए होती है। वह बापू का उपवास कैसे सहन करेंगी ?

शाम को भाई की करीब तीस किताबें आई। चार महीने पहले मंगाई थीं और आज ऐसे मौके पर आई हैं। भाई मजाक कर रहे थे, "मेरा सामान तभी बढ़ने लगता है जब मैं छूटने पर आ जाता हूं। यह शुभ चिह्न है।"

आज शाम को डा० शाह शीशे का एक बड़ा अमृतबान लाये, जिसमें शहद था। वह भंडारी की मार्फत आया था।

२ फरवरी '४३

आज सवा दो से पौने तीन बजेतक दोपहर में कातना रखा। तीन बजे सरोजिनी नायडू को बापू से बातें करनी थीं। उसके लिए उन्होंने एक घंटा मांगा था। बापू ने ध्यान में बैठकर माला भी सवा दो से पहले ही फेर ली थी।

घूमने के बाद कटेलीसाहब ने बापू से हमारे नये बैडमिंटन कोर्ट का उद्‌घाटन कराया। सरोजिनी नायडू और बापू के हाथ में रैकेट और चिड़िया दी। बापू ने तो दो-चार बार कोशिश करके चिड़िया जाली के पार भेज दी; पर सरोजिनी नायडू ने ऐसे ही छोड़ दी। बाद में मीराबहन, भाई और कटेलीसाहब कुछ समय तक खेलते रहे। कटेलीसाहब के घुटने में मोच आ गई। रात को खूब दर्द बढ़ा।

३ फरवरी '४३

कटेलीसाहब दर्द के कारण सुबह नीचे नहीं उतर सके। रातभर सोये भी न थे। घुटने का जोड़ अपने स्थान से कुछ हटा हुआ-सा लगता था। मैंने उसे उचित स्थान पर बैठा दिया, मगर दर्द कुछ तब भी रह गया। मैंने उन्हें मार्फिया (नींद की दवा) का इंजेक्शन दिया।

दिन में कलक्टर के साथ डा० शाह आये। उन्होंने स्काट्स ड्रेसिंग लगाने की सलाह दी। मैंने लगा दिया। उपवासवाली आवश्यक चीजों की सूची उन्हें दी, ताकि वह देखलें कि वे चीजें कहां से मंगाई जा सकती हैं।

शाम को भंडारी आये। इधर-उधर की बातें करके चले गये। वह बम्बई से आ रहे थे। सरोजिनी नायडू सोचती थीं कि बापू के उपवास के संबंध में बम्बई गये होंगे, मगर शायद ऐसा न भी हो। उपवास की विश्वस्त खबर अभी इन लोगों को मिली ही कहां है। कटेलीसाहब का दर्द रात में फिर बढ़ा। ढाई के करीब वह सो सके, मगर दिन में अच्छे थे। उनके पूछने पर थोड़ी मालिश की गई और जोड़ को थोड़ा हिलाया-डुलाया गया। अब घुटना पूरा सीधा हो जाता है; मगर पूरा मोड़ने में दर्द होता है। सूजन वगैरा कुछ नहीं है।

शाम को मैं भाई और मीराबहन के साथ कुछ समय तक बैडमिंटन खेलती रही। फिर भाई के साथ बैठकर कतरन का कुछ काम किया। काता आज भी सवा दो से पौने तीन तक।

बापू ने आज 'ले मिजेराब्ल' समाप्त की। उन्हें किताब अच्छी लगी है। उनको सबसे हृदयस्पर्शी स्थल वह लगा जहां यां वालयां (Jean Valjean) ने जेवर्ट (Javert) को छोड़ा है।

४ फरवरी '४३

आज सरदी कुछ कम हुई है। वाइसराय का उत्तर यदि जल्दी-से-जल्दी आना था तो आज आ जाना चाहिए था, मगर नहीं आया। मीराबहन कह रही थीं, "यह

अच्छी निशानी है। वे लोग विचारते होंगे कि क्या करना चाहिए।" बा ने कहा, "नहीं, वाइसराय दिल्ली में था ही नहीं—ऐसा मैंने अखबार में पढ़ा था।" ज्यों-ज्यों उपवास की तलवार निकट आती जाती है, वातावरण में उदासी भरती जाती है। ऐसे वातावरण में भला कोई छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान दे सकता है, यह समझ में नहीं आता। मगर बापू ऐसी आशा सबसे करते हैं।

मीराबहन आज कह रही थीं कि उनकी तबीयत जितनी अच्छी इस समय है, उतनी अच्छी पिछले दस वर्षों में कभी नहीं थी।

आज अगस्त महीने की कतरनें निकालना पूरा किया।

बा ने दो दिन से मेरे साथ गीताजी पढ़ना फिर शुरू किया है। उनकी तबीयत अच्छी नहीं है। चिन्ता के बोझ के कारण वह एकदम कमजोर हो गई हैं। बगीचे में जाकर बैठने की भी उनमें हिम्मत नहीं। बापू मानते हैं कि समय आने पर वह बहादुरी दिखावेंगी, मगर भगवान जाने क्या होगा! मुझे तो बापू से भी अधिक बा के बारे में चिंता हो रही है।

कल घूमते समय बापू भाई से कह रहे थे, "मैं जो कुछ कहूं, वह यदि सचमुच वजनदार लगे तो नोट करने के बजाय उसे पचाकर अपने जीवन में उतार लेना चाहिए।"

५ फरवरी '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर मैं देर से पहुंची। गीता-पाठ करीब आधा पूरा हो गया था। बुरा लगा।

घूमते समय मीराबहन पक्षियों की बातें करने लगीं। उन्हें पक्षियों और पौधों का बड़ा शौक है। उनको खूब ध्यान से देखती रहती हैं और अनेक बातें जो हम लोग नहीं परख पाते हैं, वह जान लेती हैं। बापू एक दिन कह रहे थे, "मीराबहन तो सचमुच प्रकृति की पुजारिन है। पक्षियों, पौधों और जानवरों के बारे में जो पूछना हो, उससे पूछो। इन चीजों का वह अभ्यास करती है और उसमें से रस के घूंट लेती है।"

दोपहर में ढाई से तीन बजेतक काता। बापू पहले की तरह फिर रामायण में काट-छांट करने लगे हैं। कल काट-छांट द्वारा निकाला हुआ भाग ही पढ़ा। तुलसीदास के रामजी की बरात के लम्बे-लम्बे वर्णन सुनते-सुनते बा थक गई थीं। इसीलिए बापू ने उनमें से बहुत-से अंश छोड़ दिये हैं।

आज वाइसराय के उत्तर की आशा थी; मगर नहीं आया।

शाम को घूमते समय मैंने बापू से पूछा, "आप उपवास से क्या आशा रखते हैं?" बापू कहने लगे, "जो काम शुद्ध भाव से किया जाता है, उसका परिणाम अशुभ नहीं हो सकता है। जो होगा, अच्छा ही होगा। बात इतनी है कि मैं राजकोट की तरह कोई गलती न कर बैठूं। वहां मैंने वाइसराय को अपने और ठाकुर के बीच चलती हुई लड़ाई में ईश्वर का स्थान दे दिया था। वह भारी भूल थी। इसीलिए मैंने वहां सब मिली हुई चीजें फेंक दीं। वह भूल न करता तो राजकोट के उपवास का अद्भुत असर होनेवाला था। उपवास में मनुष्य का मस्तिष्क कहां-तक साफ रहता है, कहा नहीं जा सकता। पता नहीं कि ईश्वर ने क्या सोचा है? मैं लोप भी हो जाऊं तो वह अशुभ परिणाम नहीं कहा जा सकता। इसका अर्थ यह है कि भगवान दूसरी तरह से काम करना चाहता है। हमें ईश्वर के कामों की आलोचना करने का अधिकार नहीं।"

सरदी थोड़ी कम हुई है, मगर रात को एक बजे से सुबह सूर्योदय तक फिर बढ़ी थी।

कटेलीसाहब आज भी रात को बहुत कम सो सके। दिन में उनका दर्द कम रहता है, मगर रात को बढ़ता है।

शाम को मैं और भाई घूमने के बाद बैडमिंटन खेलने गये। रघुनाथ भी हमारे साथ खेलने आया। मीराबहन ने खेलना छोड़ दिया है। हम खेल चुके, तब सिपाही लोग खेलते रहे।

६ फरवरी '४३

आज शनिवार है। सुबह सरोजिनी नायडू समाधि पर आईं। बापू कह रहे थे कि उनकी नियमितता अद्भुत है। कुछ भी हो। वह शनिवार को नहीं चूकती हैं। मीराबहन भी आईं। बा नहीं आईं। वह आजकल थकी-सी रहती हैं। उन्हें चिंता खाये जाती है।

बापू ने बाइबिल के 'न्यू टेस्टामेंट' का मफेटवाला अनुवाद मंगाया है। मुझसे कह रहे थे, "शाम को 'न्यू टेस्टामेंट' पढ़ाना। तू बाइबिल लेकर बैठेगी, मैं अनुवाद हाथ में रखूंगा। 'ओल्ड टेस्टामेंट' अब अपने-आप पढ़ना।" मगर शाम को पहले तो उन्होंने मुझे खेलने भेज दिया। पीछे रामायण की काट-छांट दिखाकर मुझसे दूसरी दो रामायणों में निशान लगाने को कहा। उसमें सारा समय चला गया।

वाइसराय का उत्तर आज भी नहीं आया। शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "शायद उत्तर भेजें ही न। उत्तर की जगह उन्हें जो कुछ करना होगा, उसकी सूचना सीधी भंडारी इत्यादि के पास भेज देंगे।" भाई से कहने लगे, "मान लो, इस उपवास के कारण मैं लोप हो जाऊं तो तुम लोगों से मैं क्या आशा रखूंगा, यह समझ लो। महादेव की मैं भाट की तरह स्तुति करता हूं, मगर मेरा मन उसकी शिकायत भी करता है। उसकी मिसाल सम्पूर्ण या आदर्श नहीं मानना चाहिए। वह इस विचार का जप करते-करते चला गया कि 'मैं बापू के बाद क्या कर सकता हूं? बापू से पहले चला जाऊं तो अच्छा है।' मगर उसे तो कहना चाहिए था कि 'नहीं, मुझे तो जिंदा रहना है और बापू का काम करना है'। यह दृढ़ संकल्प उसे मरने से रोक भी लेता। मैं अगर इस उपवास में लोप हो जाऊं तो मैं अपना संदेश अधूरा छोड़ जाऊंगा। सत्याग्रह के विज्ञान को मैं पूरी तरह देश के सामने अभी नहीं रख सका। मेरे बाद मेरा संदेश जनता तक कौन पहुंचायेगा? जो लोग मेरे साथ रहे ही नहीं, मुझे जानते ही नहीं, वे लोग यह काम करेंगे या तुम लोग? मैं जानता हूं कि यह तुम्हारा काम है। यह कहना कि हम क्या कर सकते हैं, उचित नहीं। ईश्वर पर श्रद्धा रखोगे तो वह तुम्हें शक्ति देगा कि तुम मेरे संदेश को कैसे पूरा करो। मेरा कहना है कि जैसे मैंने किया है, जो सिद्धांत मैंने सबके सामने रखे हैं, जिनपर मैं आचरण करता हूं, उन सबको तुम लोग अपने जीवन में धारण करो। तुम्हारा मार्ग अपने-आप तुम्हारे सामने खुलता जायगा। तुम्हें और सुशीला को इसकी तैयारी करनी चाहिए। तुमने एक बार पूछा था कि सत्याग्रही जड़वत क्यों लगते हैं। मैंने उस दिन जो उत्तर दिया था, उसे स्मरण रखो। मेरे बाद वे जड़वत नहीं रहेंगे। जबतक कोई रास्ता बनानेवाला होता है तो सभी उसकी ओर देखते हैं और जब वह नहीं होता तो वे अपने-आप अपने पैरों पर खड़े होते हैं। सो सब हमारे लोग अपने-आप अपने पांव पर खड़े होंगे तो भगवान उन्हें अगला कदम सुझा देगा। आज से उसका विचार भी नहीं करना चाहिए।"

भाई कहने लगे, "इतना तो है ही कि आपके काम के लिए ही जीना अथवा मरना है। इससे अधिक आज क्या कहूं? पूछने को बहुत है, मगर आज हिम्मत ही नहीं होती। आपको कुछ और विशेष संदेश देना हो तो मुझे बता दें या लिख दें। मैं भी कुछ बातें आपके सामने लिखकर रखूंगा।"

: ३९ :

वाइसराय का उत्तर

७ फरवरी '४३

हम सबने सोचा था कि शनिवार को वाइसराय का उत्तर न आया तो फिर सोमवार को ही आयेगा। आज दस बजे डा० शाह आये। मैं उनसे बात करने को निकली तो सामने से कटेलीसाहब आ रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा, "आपको नीचे उतरने की इजाजत किसने दी?" हँसकर पूछने लगे, "बापू कहां हैं?" बापू मालिश करवा रहे थे। वहां जाकर मि० कटेली ने उन्हें एक बड़ा और एक छोटा लिफाफा दिया। बताया कि कल रात दस बजे एक एलची बम्बई से आया था। वह यह पत्र लाया था और आज सुबह ११ बजे उन्हें देने को कहा था। कटेली-साहब ११ बजे के करीब बापू को पत्र दे गये। मैंने बापू को सुनाया। वाइसराय का उत्तर बहुत खराब था, गुस्से से भरा था। छोटे लिफाफे में लेथवेट का पत्र था। उसने पत्र-व्यवहार छापने के बारे में लिखा था। कटेलीसाहब ने कहा था कि उत्तर भेजना हो तो खास एलची के द्वारा भेजने का हुक्म है। गाड़ी दोपहर दो बजे और रात को आठ बजे जाती थी। बापू ने दो बजेवाली गाड़ी से जाने के लिए एलची को तैयार रखने को कहा। खाना खाकर भाई को उत्तर लिखवाया। सब पूरा हो जाने पर केवल आधा घंटा बाकी रहा। इतने समय में साफ़ नकल नहीं हो सकती थी। एलची को आठवाली गाड़ी से भेजने का निश्चय हुआ।

बापू आराम करने को लेटे, मगर कोई-न-कोई बात करने को आ जाता था, इसलिए वह सो न सके। भाई को लेथवेट के पत्र का उत्तर लिखवाया। माला फेरी, चरखा काता। कातते समय भाई और मीराबहन ने कुछ सूचनाएं कीं। सवा तीन बजे सब काम करके उठे। पहले भाई से कहा था कि वह मुझे पत्र लिखवा दें, मगर फिर विचार बदला। भाई ने लेथवेटवाला पत्र टाइप किया। मैंने फल का रस निकाला। साढ़े चार बजे बापू खाने बैठे, तब मुझे लिखवाने लगे। बोलते-बोलते कई सुधार भी किये। एक घंटे में सब काम पूरा हुआ। घूमते-घूमते बापू ने उस पत्र को फिर से पढ़ा। वापस आकर मैंने और मीराबहन ने अपनी नकल पत्र के साथ मिलाई। पौने सात बजे तैयार करके कटेलीसाहब को दिया और प्रार्थना में बैठे। बापू का उत्तर बहुत अच्छा था। अपने-आप हृदय से निकला था। एक सांस में बापू

ने उसे लिखवा डाला था।

कटेलीसाहब कल रात इतना चले कि रातभर घुटने के दर्द के मारे सो नहीं सके। दिन में भी नहीं सोये। आज रात को उन्हें मार्फिया का इंजेक्शन दिया। सो गये।

सरोजिनी नायडू बड़ी सहयोग की भावना में थीं। मुझसे कहने लगीं, "सुशीला, तुम मुझे हुक्म देने में हिचकिचाहट न करना। मैं तुमसे आदेश लेकर काम करने-वाली हूं। जिम्मेदारी तुम्हारी है। बताओ, क्या-क्या चाहिए ?" मैंने बताया।

८ फरवरी '४३

सुबह भंडारी और डा० शाह आये। मैंने उन्हें आवश्यक चीजों की एक सूची दी। सलाह दी कि उपवास से पहले बापू के खून की परीक्षा और हृदय का चित्र वगैरा हो जाय। डा० शाह नाराज होकर बोले, "इससे क्या फायदा होगा ? मेरा तो इन चीजों में विश्वास ही नहीं। मैं पुराने फैशन का हूं। मैं लेबोरेटरी के बजाय अपने हाथ-पांव और आंखों वगैरा पर अधिक भरोसा करता हूं।"

मैंने कहा, "आप बड़े हैं। मेरी जो बात आप चाहें, रद्द कर सकते हैं। मैंने तो सलाह दी है कि यह करवाना चाहिए।"

डा० शाह कहने लगे, "नहीं-नहीं, मैं प्रयत्न करूंगा कि तुम्हें सबकुछ मिल जाय। मगर समय लगेगा। मुझे हुक्म है कि किसीसे उपवास का जिक्र न करूं, इसलिए मेरी स्थिति ज़रा कठिन है।"

भंडारी भी कह रहे थे, "यह सब क्यों करवाना चाहती हो ? क्या पहले उप-वासों में यह सब करवाया था ?

भाई कहने लगे, "हां"

दोनों बहुत घबराये हुए थे।

आज बापू का मौन था। सबने समय पर काता, दिन में अपना-अपना काम करते रहे। कल उपवास शुरू होगा, इससे सबके दिल बैठ हुए थे। शाम को मैं खाना ला रही थी तो मन में आया, "फिर कब इस तरह बापू के सामने खाना रखेंगे ?"

भाई टाइप करने में लगे रहे। शाम को बापू को खाना देकर साढ़े चार बजे हम लोग खाना खाने बैठे। इतने में पौने पांच बजे। कर्नल भंडारी और अरविन सरकार का उत्तर लाये थे। उत्तर पढ़कर बापू ने मौन न छोड़ते हुए अरविन को

लिखा—"इसमें मेरे साथियों का उल्लेख है, इसलिए मुझे अपने साथियों से बात करनी होगी। अगर आप बगैर तकलीफ के ९ बजे आ सकें तो अच्छा होगा।" अरविन ९ बजे आने को कहकर चले गये। ९ बजे आये और बापू ने अपना उत्तर उन्हें दिया। उसे पढ़कर अरविन ने कहा, "आपने लिखा है कि यदि जरूरत हो तो आप अपना उपवास एक दिन के लिए स्थगित कर देंगे। आप ऐसा जरूर करें, इससे हमें बहुत मदद मिलेगी।"

बापू ने यह स्वीकार कर लिया।

: ४० :

उपवास : अग्निपरीक्षा

पहला सप्ताह

१० फरवरी '४३

सरकार को दिये गए नोटिस के अनुसार बापू ने आज सुबह के नाश्ते के बाद उपवास शुरू किया। उपवास शुरू होते समय हमेशा प्रार्थना की जाती है। आज भी बापू के नाश्ते के बाद हम सबने छोटी-सी प्रार्थना की। बापू का दिन का कार्यक्रम रोज की तरह चला। सुबह-शाम घूमना, समाधि पर फूल चढ़ाना, दिन में पढ़ना-लिखना, कातना—सब रोज के निश्चित समय पर बापू ने किया।

मुझे बुलाकर कहने लगे, "उपवास में मेरी सेवा की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी तुझपर आनेवाली है। इसलिए तू लिखना-पढ़ना और डायरी लिखना इस वक्त भूल जा।" भाई को बुलाकर बोले, "इन दिनों की डायरी तुम्हें रखनी हो तो रखो। सुशीला से उसकी आशा न रखना। इन दिनों में डाक्टरी का काम सारा समय ले लेगा। मैं नहीं चाहता कि वह नींद वगैरा के समय निकालकर लिखने का काम करे।" मुझसे कहने लगे, "तू अगर लिखने का काम करेगी तो मैं तेरी सेवा नहीं लूंगा।" इस वजह से उपवास की यह डायरी भाई के नोटों और डाक्टरी कान्फरेंसोंवाले अपने नोटों के आधार पर तैयार की है।

सरकार ने बापू को कहलाया था कि वह अपने लिए कोई डाक्टर चुन सकते हैं। बापू ने कहा, "सुशीला मेरे पास है। मेरे लिए वह बस है। अगर उसे मदद

लेनी होगी तो वह मांग लेगी।" मैं विचारने लगी कि क्या बापू के उपवास की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले मुझे ही उठानी चाहिए ? स्थिति बिगड़े तो क्या एक लड़की की बुलेटिन को सरकार वजन देगी ? उपवास में दवा तो देनी नहीं होती, कोई खास इलाज तो करना नहीं होता तो भी छोटी-छोटी बातों में डाक्टरों की मदद ली जा सकती है। सबसे बड़ी सेवा तो यह होती है कि देश और सरकार को बापू की स्थिति से ठीक-ठीक वाकिफ रखा जाय। मैंने अपने विचार और उल-झनें बापू के सामने रखीं। वह बोले, "हां, तेरा बोझ हल्का करने के लिए दूसरों को बुला लेना अच्छा होगा।"

सो मैंने सरकार को लिखा है कि वह डा० गिल्डर, डा० विधान राय और डा० जीवराज मेहता को भेजें। पहले के उपवासों में भी वे बापू की देखभाल कर चुके थे। मालिश इत्यादि के लिए प्राकृतिक चिकित्सा-गृह के डा० दीनशा मेहता को बुलाने का विचार किया।

११ फरवरी '४३

आज सुबह बापू चलकर महादेवभाई की समाधि पर आये। बाद में मालिश इत्यादि का कार्यक्रम चला।

डा० गिल्डर को आज सुबह यरवदा-जेल से आगाखां महल में लाया गया। डाक्टरसाहब ने जेल में आकर दाढ़ी बढ़ा ली थी। उसे देखकर हम सब खूब हँसे। मैंने कहा, "डाक्टरसाहब, सिनेमा में जैसे लुई पास्चर लगते हैं, वैसे ही कुछ-कुछ आप दिखाई देते हैं।"

बापू ने दिनभर पानी पिया। अभीतक पानी पीने में बहुत ज्यादा तकलीफ नहीं होती। मतली अभी शुरू नहीं हुई, मगर कमजोरी लगने लगी है।

कर्नल भण्डारी ने उपवास के दरम्यान मुलाकातों आदि के बारे में बापू को निम्नलिखित सरकारी फैसला सुनाया :

१. किससे मिलना है, यह फैसला गांधीजी को करना होगा। वह जिसे चाहें, बुला सकते हैं।
२. जिस विषय पर वह चाहें, बात कर सकते हैं। इस बारे में कोई बंधन नहीं होगा।
३. मुलाकात के समय एक सरकारी अफसर हाजिर रहेगा।
४. बातचीत की रिपोर्ट अखबारों में नहीं छप सकेगी।

इसके जवाब में बापू ने सरकार को लिखा कि मुलाकात मांगने का बोझ उन-पर न डाला जाय। जो उनसे मिलना चाहें, सरकार उनसे बिना पूछे उन्हें इजाजत दे दे। जो आश्रमवासी सेवाकार्य में लगे थे, जिन्होंने पहले उपवासों में उनकी सेवा की थी, उन सभीको इस उपवास में उनकी सेवा की इजाजत दी जाय। इसके अलावा श्री मथुरादासभाई की तबीयत के बारे में भी खबर पुछवाई। अखबार में खबर थी कि भंसालीभाई भी बापू के साथ उपवास कर रहे हैं। बापू ने सरकार से प्रार्थना की कि वह उनका एक संदेसा टेलीफोन से भंसालीभाई को उपवास छुड़ाने के बारे में भेज दे।

१२ फरवरी '४३

बापू की कमजोरी बढ़ रही है। वजन करीब दो पौण्ड रोज के हिसाब से घट रहा है, मगर पानी पी सकते हैं। किसी-किसी वक्त मतली तो होती है, मगर उलटी नहीं हुई। समाधि तक चलकर फूल चढ़ाने के लिए आज उनमें शक्ति नहीं थी। हमलोग फूल चढ़ाकर समाधि पर प्रार्थना कर आये।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' को आज सरकारी नोटिस मिला कि उपवास की खबर बड़े-बड़े शीर्षकों में न छापे। कोई शीर्षक दो कालम की चौड़ाई से अधिक न हो और सरकारी खबरों के अलावा उपवास के बारे में और कोई भी खबर बिना सरकार द्वारा सेन्सर कराये न छापी जाय।

दिल्ली में असेम्बली के बजट-सेशन के लिए कई नेता आये हुए थे। सब लोग श्री हृदयनाथ कुंजरू के मकान पर मिले और फैसला किया कि नेताओं की एक कान्फ्रेंस जितनी जल्दी हो सके, बुलाई जाय। इस बारे में राजाजी व सर तेज-बहादुर सप्रू को तार दिये गए। अखबारों से पता चलता है कि सारा देश बापू के उपवास की खबर से दहल गया है।

गरमी एकाएक बढ़ गई है। बापू की खाट बरामदे में रखी थी। आज दोपहर को उसे भीतर लाना पड़ा।

अम्माजान (सरोजिनी नायडू) हम सबकी सम्हाल बहुत प्यार से कर रही हैं। अपनी बीमारी भूल गई हैं। कमर कसकर बापू की सेवा करने को तैयार हैं। सारा समय बापू के पास बैठती हैं। हमारे जेल सुपरिन्टेण्डेण्ट श्री कटेलीसाहब घुटने के दर्द के बावजूद भी दिनभर ऊपर-नीचे चक्कर काटा करते हैं। कर्नल शाह और कर्नल भंडारी भी आते हैं और बापू की तबीयत का हाल पूछकर चले

जाते हैं। इन सरकारी अफसरों पर दोनों ओर से बोझ पड़ रहा है। बापू के प्रति हर हिंदुस्तानी के दिल में मुहब्बत और इज्जत होना स्वाभाविक है, मगर साथ ही इन सरकारी नौकरों को सरकार को भी खुश रखना है। अपनी रोटी का सवाल है।

१३ फरवरी '४३

कल शाम से बापू की मतली बढ़ गई है। इसी कारण रात उन्हें अच्छी नींद भी नहीं आई।

अखबारों से पता चला कि दुर्गाबहन, नारायण और कनु कल रात पर्णकुटीर आ गये हैं। शाम को कटेलीसाहब ने कहा, "उन लोगों ने यहां आने की अर्जी दी है। बापू बुलायें तो उनका आना आसान हो जायगा।" बा बापू से कहने लगीं, "बुलाइये न। बेचारी दुर्गा को आश्वासन मिलेगा।" बापू बोले, "मैं किसीको बुलाऊंगा नहीं, यह सरकार को लिख चुका हूं। उसे जिसे आने देना हो, आने दे।" बा जरा निराश हुई और थोड़ी नाराज-सी होगईं। कटेलीसाहब से कहने लगीं, "सरकार से कहो कि श्रीमती गांधी दुर्गा, नारायण व कनु को बुलाती हैं। गांधीजी की सेवा के लिए इनकी जरूरत है।" बापू से बोलीं, "आप चाहें तो न बुलायें। मुझे भी तो कुछ हक है।" बापू हँसने लगे। बोले, "सरकार तेरा हक माने तो चला।"

खबर मिली कि आज शाम को डा० विधान राय अपने एक सहायक के साथ कलकत्ता से रवाना हो गये हैं।

कर्नल भण्डारी तीन बार आये। मुलाकातों के बारे में चर्चा चल रही थी।

१४ फरवरी '४३

मतली और उल्टी के कारण बेचैनी अधिक होगई। पानी पीने में भी कठिनाई आने लगी है। पानी में कुछ नींबू के रस की बूंदें और नमक या सोडा डालकर पीने का प्रयत्न करते हैं। बेचैनी और कमजोरी के कारण पढ़ना वगैरा भी कम हो गया है।

खबर मिली कि भंसालीभाई ने उपवास छोड़ दिया है।

सुनते हैं कि ढेरों खत और तार उपवास के बारे में आ रहे हैं, मगर सरकार उन्हें कहीं जमा कर रही है। अखबारों में देखा कि डा० विधान राय आज की जगह कल यहां आयेंगे। आज शायद बम्बई में रुक गये हैं। किसी अखबारवाले

ने उनसे पूछा कि क्या गांधीजी उपवास पूरा करेंगे ? डा० राय ने उत्तर दिया, "१९३८ में उनका जो उपवास हुआ था, वह छोटा-सा था। आज तो उपवास लम्बा है और गांधीजी की उम्र भी ज्यादा है, सो चिंता तो होती ही है। इस समय की परीक्षा कठिन है।"

बम्बई के सर्जन-जनरल कैंडी आज पूना आये हैं। बापू के कान में दर्द है। फुंसी-सी लगती है।

कई मित्र और रिश्तेदार पूना आकर बैठे हुए हैं और मुलाकात करने के विषय में सरकार की इजाजत की राह देख रहे हैं।

सुनते हैं कि ठक्कर बापा भी आज यहां आ गये हैं।

१५ फरवरी '४३

मतली, उल्टी और बेचैनी सता रही है। नींबू और नमक के साथ भी पानी पीने में कठिनाई आ रही है।

सुबह जनरल कैंडी, भंडारी, शाह और मजिस्ट्रेटसाहब बापू को देखने आये। रात को डा० विधान राय आये। उनसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। बाहर की ताजा हवा मिली।

आज दुर्गाबहन, नारायण और कनु को भी आगाखां महल में आकर रहने की इजाजत मिल गई है। उनके आने से बहुत अच्छा लगा। उनको महादेवभाई की समाधि पर ले जाते समय सबके दिल भरे थे, आंखें भीगी थीं। दुर्गाबहन के लिए बापू के पास आना इस समय दवा-रूप है। वे लोग उपवास पूरा होने तक यहीं रहेंगे।

कर्नल भंडारी और शाह आज तीन बार आये। प्रार्थना में लीन हो जाने पर बापू की तकलीफ अपने-आप कुछ कम हो जाती है। प्रार्थना तो हमेशा सुबह-शाम होती ही है। इस उपवास में गीता-पारायण नहीं करवाते।

दिनभर बापू का मौन रहा।

१६ फरवरी '४३

सुबह डा० गज्जर बापू के रक्त व गुर्दे के काम आदि की परीक्षा के लिए आये। बापू की हालत और बिगड़ी है। अशक्ति इतनी है कि पानी का गिलास पकड़ना भी कठिन हो रहा है। उन्हें पहियेदार खाट पर सुला रखा है। यह खाट पेट का आपरेशन हो जाने के बाद रोगी के काम आती है। उठाने-बिठाने के समय चाबी

घुमाने से खाट अपने-आप उठ जाती है।

बापू की अशक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ रही है। आवाज बहुत कमजोर हो गई है, मगर डाक्टर इत्यादि आते हैं तो सबसे हँसकर बात करते हैं। शांतिकुमार-भाई मिलने आये थे। उनसे बापू ने कहा, "कोई ऐसा न माने कि आज जो बाहर चल रहा है, उसमें मेरी सम्मति है। बम फेंकने में तो मेरी इजाजत हो ही नहीं सकती। रेल, तार, टेलीफोन आदि तोड़ने-फोड़ने के बारे में सत्याग्रह हो सकता है, मगर मेरी कल्पना आम कल्पना से बिल्कुल जुदा किस्म की है, यह अगर मैं बाहर होता तो बताता। उसमें छिपी नीति की गुंजाइश है ही नहीं। वह केवल मौत का निशान बन जाने का साधन-रूप है। जो लोग सत्याग्रह करना चाहें, वे खुले तौर पर ऐलान कर दें कि अमुक समय पर हम तार काटने आयेंगे। आप अपनी पुलिस और फौज बुला लें। एक-एक, दो-दो, आदमी वहां जायं और गोली खाकर प्राण दे दें। हजारों-लाखों को जहां तैयार करना हो, वहां छिपी नीति का स्थान नहीं।

"जो लोग छिपकर काम कर रहे हैं, उनसे मैं कहूंगा कि वे अपने-आपको सरकार के हवाले न करें; क्योंकि हो सकता है कि उन्हें बरसों तक जेल में रहना पड़े। उन्हें अपने-आप भीतर से लगे कि यह बात ठीक है, छिपी नीति से देश को नुकसान होता है तो वे खुले तौर पर अपने-आपको सरकार के हवाले कर दें।"

शांतिकुमारभाई ने पूछा, "छिपकर अहिंसा का काम किया जा सके तो क्या वह भी नहीं करना चाहिए?"

बापू बोले, "मेरी तो मान्यता यह है कि गुप्त नीति की जड़ में ही हिंसा है। इसलिए छिपाकर बुलेटिन निकालना भी हिंसा है। अपने मित्रों को मेरा यह संदेश पहुंचा देना।"

अखबारवालों ने डा० बिधान राय से पूछा, "क्या गांधीजी बच जायंगे?"

डा० राय का उत्तर था, "गांधीजी कभी-कभी डाक्टरों को चक्कर में डाल देते हैं, सो निश्चित रूप से मैं कुछ नहीं कह सकता।" आज बुलेटिन लिखते समय हम छह डाक्टर मौजूद थे—जरनल कैण्डी, डा० बिधान राय, डा० गिल्डर, कर्नल भण्डारी, कर्नल शाह और मैं। हमारी बुलेटिन सरकार के पास चली जाती है। पहले डा० गिल्डर और मेरे दस्तखतों से ही जाती थी। अब सबके दस्तखतों से जाती है। सरकार को जो ठीक लगता है, सो छापती है।

बापू का आज का दिन कल से अच्छा रहा, मगर स्थिति तो भी चिन्ता-

जनक है।

शांतिकुमारभाई के साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा, "हमारी शोभा अहिंसक मार्ग पर चलने में ही है। हमारे सामने चार आदमियों की बात नहीं, चार-सौ की नहीं, चार हजार की नहीं, बल्कि चालीस करोड़ की है। मैंने तो सीधा रास्ता बताया है। कुछ भी न कर सको तो अपना कपड़ा खुद पैदा करो। विदेशी माल बिल्कुल इस्तेमाल न करो। इतना समझ लो कि अंग्रेजी माल और विदेशी माल में कोई फरक नहीं है। तुम्हारे पिता ब्रुश विदेश से मंगवाते हैं। मैंने कारण पूछा तो कहने लगे, 'वहां अहिंसक मिलता है—यहां अहिंसक नहीं मिलता।' मैंने कहा—तो फिर ब्रुश छोड़कर दातुन इस्तेमाल कीजिये, मगर मेरे घर में ही ब्रुश इस्तेमाल होता है। सुशीला और प्यारेलाल के पास ब्रुश है और भूल नहीं करता तो महादेव का भी बिना ब्रुश काम नहीं चलता था। इन लोगों के बक्स में शायद और विदेशी चीजें भी मिल जायंगी, जैसे पेन है, घड़ी है, इत्यादि। तुम्हारे बक्स में भी होंगी। सो मेरा अपना ही घर फूटा है।

"मैंने जो अहिंसा का मार्ग बताया है, उसपर लोग न चल सकें तो अपने रास्ते पर चलें। पर मेरा नाम न इस्तेमाल करें। मैं जबतक बाहर न निकलूं, तबतक कुछ कह नहीं सकता। मैं तो जो था, वही हूं, सरकार भले वह न पहचाने। मगर सरकार पहचाने या न पहचाने, ईश्वर तो पहचानता है। मेरा मंत्र 'श्रीराम' नहीं, 'हे राम' है। वह मेरा साक्षी है। मैं जानता हूं कि वह मुझे पहचानेगा।

"इतना समझ लो कि मेरा उपवास किसीके सामने (विरुद्ध) नहीं है। मैं न्याय मांगता हूं। सरकार किसी निष्पक्ष आदमी को सबूत के साथ मेरे पास भेजे। वह मुझे समझा सके या मैं उसे समझा सकूं तो मुझे उपवास नहीं करना। बाहर जाकर मुझे यदि लगे कि इतने सालों में कुछ भी नहीं हुआ और न होगा तो मुझे उपवास करके मरना पड़ेगा। वह अलग बात रही।

"आज हजारों लोग भूखों मर रहे हैं। मैं बाहर जाऊं तो बहुत-कुछ कहूं और करूं भी, मगर इस बार सरकार की नीति अलग ही किस्म की है। उसे क्या पड़ी है! लोग मरें चाहे जियें। वाइसराय भला है, एमरी भी भला है। ये दोनों और चर्चिल एक गुट्ट ही हैं। एक ही स्कूल में रहे हैं। इसीलिए तो वाइसराय की मुद्दत इतनी बढ़ाई गई है। इन तीनों ने निश्चय किया है कि कांग्रेस को झुकाना है।

"लोगों को तोड़-फोड़ करना हो तो वह भी खुले तौर पर करना चाहिए।

हिंसा करनी हो तो वह भी खुले तरीके से । मारना है तो मारो। मगर याद रखो, इस रास्ते से हिन्द कभी आजाद नहीं होगा । कभी स्वराज नहीं होगा । कभी स्वराज नहीं मिलेगा । जर्मनी-जापान हिंसा का रास्ता ले सकते हैं। वे छोटे-छोटे रास्ते हैं, मगर हमारे देश हिन्द के चालीस कोटि लोग हिंसा-मार्ग ग्रहण करें तो दुनिया का नाश है । हम सीधे रास्ते पर चलें तो जगत को भी वही रास्ता बता सकते हैं ।

"मैंने सीधे-से-सीधा रास्ता बताया है । और सब छोड़ दो। घर में जो चीज बन सकती है, वह बनाओ और इस्तेमाल करो । सूत कातो और बुनो । एक-एक देहात को स्वतंत्र, स्वावलम्बी बनाओ, पीछे कोई सरकार तुम्हें दबा नहीं सकती । और आज तो सरकार को भी वह अनुकूल होगा ।

"कोई ऐसा न माने कि बाहर जो चल रहा है, वह सब मुझे पसंद है। मैं यह भी नहीं कह सकता कि वह अहिंसा की ढाल में आता है ।"

प्रश्न--"तो जो लोग छिपकर काम कर रहे हैं, वे अपने-आपको सरकार के हवाले कर दें ?"

बापू ने कहा, "छिपकर काम करना मेरी इच्छा के विरुद्ध है । मुझे यह अच्छा लग ही नहीं सकता । मैंने हमेशा छिपी नीति की निन्दा की है। मगर मेरे कहने से कोई अपने-आपको सरकार के हवाले न करें। मेरे विचारों को हजम कर लें तो ऐसा करें। इसका यह भी परिणाम हो सकता है कि उन्हें कई सालों तक अंदर रहना पड़े ।"

"जब हम पकड़े गये, तब जवाहरलाल ने मुझसे गाड़ी में पूछा, 'अहिंसा में गुप्त नीति को स्थान है ?' मैंने कहा, 'नहीं।' मैंने पकड़े जाने पर कहा था, 'पकड़े जाने पर मेरी सरदारी पूरी हुई । अब जिसे जो ठीक लगे सो करे । इतना जरूर है कि अहिंसा की चहारदीवारी में रहकर जो हो सके, वही करना ।' जो बाहर हैं, वे अपनी मति के अनुसार चलते रहें । अहिंसा को चला सकें तो चलायें । यह लड़ाई यदि अहिंसक तरीके से चल सकेगी तो हम बहुत आगे बढ़ सकेंगे । मैं समझता हूं कि तोड़-फोड़ का तरीका हमारे लिए नहीं है । अहिंसा के नाम पर यह सब चले तो ठीक नहीं ।"

दूसरा सप्ताह

१७ फरवरी '४३

आज मतली थोड़ी कम होगई है, पर कमजोरी और पानी पीने में तकलीफ बढ़ती जा रही है । बापू कभी सादा पानी पीते ही नहीं । कहते थे—सादा पानी की

आदत ही छूट गई है। हम लोगों को पानी का गिलास एक सांस में पीते देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ करता है। उपवास के पहले भी सामान्यत: सादा पानी पीने से उन्हें मतली-सी लगती थी। सो फल का रस या पानी में नींबू और शहद डालकर लेते थे। पर उपवास में शहद नहीं लिया जा सकता। फल का रस भी नहीं पी सकते। इसलिए उपवास का निश्चय करते समय उन्होंने ऐलान किया था कि पानी न पी सकें तो उसमें थोड़ा-सा फल का रस डाल लेंगे; क्योंकि पानी के बिना आदमी २१ दिन नहीं जी सकता। बा और दूसरे लोग बापू से कह चुके हैं कि अब तो वह फल का रस पानी में डालकर लिया करें, मगर वह मानते नहीं। कहते हैं कि अभी समय नहीं आया। इधर पानी कम जाने से पेशाब कम आ रहा है। शरीर में जहर इकट्ठा हो रहा है। सबकी चिंता बढ़ रही है।

आज बापू के हृदय की गति का चित्र (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम) लिया गया। खून इत्यादि की रिपोर्ट अभी नहीं आई। शरीर में पानी इकट्ठा न हो, इसलिए नमक और खाने का सोडा बंद किया है। उसकी जगह पोटेशियम के नमक मंगाये हैं।

सुनते हैं, वाइसराय की कौंसिल के तीन मेम्बरों—श्री एच० पी० मोदी, श्री एन० आर० सरकार और श्री अणे—ने इस्तीफा दे दिया है। इस्तीफे का कारण है बापू के उपवास के विषय में सरकार की नीति के साथ उनका मतभेद। इस्तीफा मंजूर भी होगया है। श्री एन० आर० सरकार ने एक छोटे-से वक्तव्य में कहा है, "हिन्दुस्तान के सबसे बड़े आदमी के बारे में सरकार की नीति से मतभेद होने के कारण मैंने इस्तीफा देने का निश्चय किया है। वह सबसे बड़ा आदमी हमारे स्वराज्य के ध्येय की जागती मूर्ति है। वह सामाजिक और जीवन के ऊंचे-से-ऊंचे आदर्शों को सामने रखनेवालों में सबसे आगे हैं। उनका जीवन हिंदुस्तान में अलग-अलग कौमों की मित्रता के लिए अत्यावश्यक है। हमारी क्षुद्र शक्ति उनका जीवन बचाने के लिए कुछ काम न कर सकी, मगर मुझे विश्वास है कि जहां हम निष्फल हुए हैं, वहां सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वयं उनकी रक्षा करेगा और हमारे लिए उन्हें बचा लेगा। मेरी यही प्रार्थना है कि देश की सेवा के लिए वह बहुत वर्ष जियें।"

आज ठक्कर बापा, अमतुलबहन और श्रीमती ठाकरसी बापू से मिलने आये। डाक्टर गिल्डर और मैं दिन-रात बापू के पास ही हैं। रात की ड्यूटी मेरी रहती है और दिन की डाक्टरसाहब की। मुलाकातियों से ज्यादा बातें न करने देने का काम डाक्टरसाहब के सिर डाला गया है। जैसे-जैसे बापू की शक्ति कम होती जाती है,

कोशिश की जा रही है कि वह बोलचाल कम करें जिससे शक्ति कम खर्च हो। उद्विग्न करनेवाली बातें नहीं होने देते, मगर काम कठिन है। इतने पुराने-पुराने साथी—मित्र मिलना चाहते हैं। सब जानते हैं कि उपवास के बाद बापू से नहीं मिल सकेंगे। उन्हें रोकना या जल्दी चले जाने को कहना कठिन है, मगर क्या किया जाय! डाक्टरों को तो यह कठिन काम करना ही पड़ता है।

बापू के पास जाने से पहले और पीछे बा और सरोजिनी नायडू लोगों के साथ बात करतीं हैं, भाई भी करते हैं। इससे मिलने आनेवालों को कुछ अच्छा लगता है। वे भी समझते हैं कि बापू को शक्ति-संग्रह करना चाहिए।

मुझे डाक्टरसाहब दिन में कुछ नींद लेने के लिए भेज देते हैं। इसलिए अक्सर दोपहर की मुलाकातों के वक्त मैं मौजूद नहीं होती।

ठक्कर बापा से बातें करते हुए बापू ने कहा, "किसी हकूमत ने ऐसा नहीं किया जैसे कि इस हकूमत ने किया है। इसने मर्यादा छोड़ दी है। झूठ की तो पहले से ही भरमार है। वाइसराय ने भी हद ही कर दी है।

"मैं कहता हूं कि मुझपर मुकदमा चलाइये, मेरे गुनाह का सबूत दीजिये। अगर मेरी भूल मुझे मालूम पड़ेगी तो मैं माफी मांगूंगा। ये लोग मुझपर कितनी तोहमतें लगाते हैं? मैं कहता हूं कि मैं गुनहगार नहीं हूं। रूस में भी मुकदमा चलता है। मगर मुझे उसका भी मौका नहीं दिया जाता। मुझे न्याय चाहिए।"

ठक्कर बापा बोले, "और वाइसराय कहता है कि अपने गुनाह के परिणाम से बचने के लिए आप उपवास करते हैं!"

बापू ने कहा, "बस, ऐसे है! नीचता की हद नहीं रही।" फिर कहने लगे, "देवदास मुझे देखने की ही खातिर आने की सोचता हो तो उसे संयम रखना चाहिए। वहां काम कर रहा हो तो यहां आने की जरूरत नहीं।"

१८ फरवरी '४३

कल रात को नींद अच्छी आई, बेचैनी कम हो रही है, मगर डाक्टर लोग इससे खुश नहीं हैं। पेशाब कम आ रहा है। यह नींद भी शरीर में जहर इकट्ठा होने का चिह्न हो सकती है। सुबह की परीक्षा में डा० विधान राय, डा० गिल्डर, मेजर जनरल कैण्डी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल भण्डारी, लेफ्टिनेण्ट कर्नल शाह और मैं थे। हम सबके दस्तखतों से सरकार को यह बुलेटिन भेजी गई :

"नौ घण्टे की नींद लेने के बावजूद भी गांधीजी ताजगी महसूस नहीं करते।

उनका मन और दिमाग हमेशा की तरह चौकन्ना नहीं है। हृदय बहुत दुर्बल है। स्थिति ज्यादा चिन्ताजनक है।"

रक्त-परीक्षा इत्यादि की रिपोर्ट आई। शरीर में पानी और जहर इकट्ठे हो रहे हैं। खबर मिली कि बम्बई सरकार के सलाहकार ब्रिस्टो और देवदासभाई पूना आने के लिए चल पड़े हैं। बाद में किसीने बतलाया कि यह तय करने के लिए ब्रिस्टो पूना आये थे कि अगर गांधीजी की मृत्यु हो जाय तो उनके शव को किस रास्ते से श्मशान ले जाना होगा। अर्थात, सरकार की तैयारी है कि बापू को उपवास में मरने ही देना है।

किसीने कहा, "गांधीजी ने तो कहा है कि अपनी शक्ति के अनुसार उपवास करेंगे। अब उनकी शक्ति समाप्त हो गई है, इसलिए उपवास क्यों नहीं छोड़ देते?" बापू ने समझाया कि शक्ति के अनुसार उपवास करने का यह अर्थ नहीं कि खतरा आने पर उपवास छोड़ देना। उसका अर्थ इतना ही है कि यह उपवास आमरण नहीं।" उन्होंने उपवास से पहले अन्दाज लगाया था कि २१ दिन का उपवास करने की उनकी शक्ति है, सो २१ दिन तो पूरे करने ही हैं। ईश्वर को रखना होगा तो रखेगा। ले जाना होगा तो ले जायगा। अगर उनका अपनी शक्ति का अंदाज गलत सिद्ध होगा तो उन्हें परिणाम भुगतना होगा।

भाई ने आज टॉटेनहम को जानेवाला खत तैयार करने के लिए और सब कामों से छुट्टी ली। दोपहर में वह खत तीन बजे गया। ठक्कर बापा मिलने आये। बापू उनसे बातें करते हुए कहने लगे, "प्यारेलाल ने खत तैयार किया। उसमें मेरे शब्दों का हवाला देकर बताया है कि जो हिंसा चली है, उसमें मेरा बिल्कुल हाथ नहीं।"

फिर बातचीत में कहने लगे, "बाहर जो चल रहा है, वह मुझे बिलकुल पसंद नहीं, मगर तो भी यहां बैठा तो उसकी खुली टीका या निन्दा करने को तैयार नहीं; क्योंकि उसके बारे में मुझे जो कुछ कहना है, उससे कहीं ज्यादा मुझे सरकार की नीति की टीका करनी है। सरकार लोगों को इतना उकसाये, उनसे हिंसा करवाने पर ही तुली हो तो वह इसमें सफल हो सकती है। आम जनता कोई फरिश्ता नहीं है। अहिंसा का मार्ग बतानेवाला कोई हो नहीं तो वह सहज ही हिंसा के प्रवाह में बह सकती है। मगर सरकार की हिंसा जनता की हिंसा से कहीं ज्यादा है। ऐसी हालत में केवल लोगों का यहां बैठकर टीका या निन्दा करना ठीक नहीं।

"अहिंसा के बारे में मेरे विचारों में जरा भी फर्क नहीं आया। अगर है तो इतना कि अहिंसा में मेरी श्रद्धा दृढ़ हुई है। हां, एक बात में फर्क कहा जा सकता है। अब मैं यह नहीं कहता कि देश भर में अहिंसा का वातावरण हो, तभी अहिंसा चल सकती है। मैंने सोचा कि अगर देश में कहीं भी हिंसा होने पर—सरकार तो किसी भी एक आदमी से हिंसा करा सकती है—मुझे अहिंसा का प्रयोग बन्द करना पड़े तो मैं अहिंसा की शक्ति को कभी सिद्ध ही नहीं कर पाऊंगा और हिंसा का जवाब तो मैं अहिंसा के प्रयोग को सिद्ध करके ही दे सकता हूं।"

दिन बढ़ने के साथ यूरीमिया का जहर भरने के चिह्न भी बढ़ते जा रहे हैं। रात को बापू कहने लगे, "कुछ अच्छा नहीं लगता। पेट में भी तकलीफ है, सिर में भी।" 'हे राम' वाला चित्र सामने टंगा था। उसकी बातें करते हुए बोले, "बस यही एक आधार है। ईश्वर, तू जो करता है, जो करेगा, वह ठीक है। मैं तेरी इच्छा के अधीन हूं, न कि तू मेरी इच्छा के। यही नाद अंदर से निकलता है।"

रात को गरम मिट्टी की पुल्टिस गुर्दों पर लगाई।

१६ फरवरी '४३

रात को बार-बार मुंह में राल आने से थूकना पड़ता था। इसलिए अच्छी तरह सो नहीं सके, किंतु सुबह तबीयत के बारे में पूछा तो कहने लगे, "बहुत अच्छा लगता है।" आसपास की बातों में आज बहुत रस ले रहे थे। मगर कमजोरी बढ़ रही है। पानी का गिलास हाथ में लेते हैं तो हाथ इतना कांपता है कि गिलास मानो गिर जायगा। मगर अपने हाथ से पानी पीने का आग्रह आज भी रखा।

डा० विधान राय, डा० गिल्डर और मेरे नाम पर सब मुलाकातियों से प्रार्थना की गई कि मुलाकात करने आकर वे बापू की शक्ति का व्यय न करें। पहले मुलाकातियों को २० मिनट देते थे। कमजोरी बढ़ने पर डा० गिल्डर ने समय आधा कर दिया। कल तो तीन-तीन मिनट की मुलाकात ही दी। आज इतनी भी शक्ति नहीं लगती।

शाम को तबीयत फिर ज्यादा बिगड़ी। कान का दर्द भी बढ़ गया। बात-बात में कहने लगे, "किसी तरह चैन नहीं पड़ता। पानी पीता हूं तो भी शान्ति नहीं होती। गले तक खट्टा-खट्टा भरा है।"

रामदासभाई सपरिवार बापू से मिलने आये।

भाई को बुलाकर बापू ने कहा, "महादेव के काम को पूरा न्याय देना हो तो

मेरी शरीर-सेवा का लोभ छोड़ना होगा। वह तो जब चाहो कर सकते हो। लोगों से मिलो, बातचीत करो।''

श्री वैकुण्ठ मेहता आये। उनसे दो-तीन मिनट बात करके बापू कहने लगे, ''और जो कुछ कहना हो, प्यारेलाल से कहो।'' बातचीत खादी-कार्य के बारे में थी। बापू ने उसके बारे में कहा, ''अगर जनता आज भी मेरे बताये मार्ग पर चलने को तैयार हो तो हफ्ते-दो-हफ्ते के अन्दर हम आजादी ले सकते हैं। अगर उसके लिए आज जनता तैयार नहीं है तो फिर बहुत धीरज रखना होगा।''

दिल्ली में आज तीन रोज से हड़ताल चल रही है।

नेताओं की कान्फ्रेन्स आज दिल्ली में शुरू हुई। श्री नलिनी सरकार, मोदी और अणे ने वक्तव्य निकाले, ''गांधीजी के उपवास के बारे में क्या करना, इस महत्व के प्रश्न पर हमारा सरकार से मतभेद हुआ। इसपर हमें लगा कि हम सब सरकारी पद पर नहीं रह सकते।''

लंदन में इण्डिया लीग ने सभा कराई। लॉर्ड स्ट्रैबोल्गी ने कहा, ''ब्रिटिश सरकार को चाहिए कि वह समझौते का रास्ता ढूंढ़ने का फिर से प्रयत्न करे।'' सभा ने प्रस्ताव पास किया कि गांधीजी को बिना शर्त तुरन्त रिहा कर देना चाहिए।

रात को बापू की स्थिति और भी चिन्ताजनक हो गई। पानी नहीं पी सकते थे। पानी अन्दर जाय तो गुर्दे काम करने लगें, पेशाब के साथ शरीर से जहर भी निकलने लगे। कार्बोनिटेड पानी पिलाने का प्रयत्न किया, मगर वह भी बहुत कम पी सकते हैं।

२० फरवरी '४३

बापू की स्थिति और बिगड़ी है। सुबह जब जनरल कैण्डी आये, तब बापू सो रहे थे, सरोजिनी नायडू से कहने लगे, ''अगर यह आदमी दो साल और जिये तो हिन्दुस्तान के लिए कितना फर्क पड़ जायगा? यह कैसे दुख की बात है कि ऐसे आदमी की जान खतरे में पड़े और इस कारण से कि जनता पर उसका इतना जबरदस्त सच्चा प्रभाव है और वह प्रभाव डालने की उसमें योग्यता है!''

कुछ चर्चा हुई कि क्या नस में पानी और ग्लूकोज नहीं चढ़ाया जा सकता? क्या एनीमा के पानी में ग्लूकोज नहीं डाल सकते? मैंने कहा, ''गांधीजी वैसा करना कभी स्वीकार नहीं कर सकते। सरकारी डाक्टर ५० सी० सी० की एक बड़ी पिचकारी ले आये। उनका रुख मुझे कुछ ऐसा लगा कि बापू की इजाजत न हो तो

भी नस में या एनीमा में ग्लूकोज दे देना है। आखिर डाक्टर का धर्म तो मरीज को किसी प्रकार बचाने का है ही न ! पर मुझे यह सब भयानक लगा। मैंने डाक्टर गिल्डर से चुपके-से कहा, "इन्हें समझा दीजिये कि बापू के साथ ऐसा करना बहुत खतरनाक होगा। इससे उनकी मृत्यु भी हो सकती है।" डा० गिल्डर ने फौरन बात उठा ली और इस तरह जबरदस्ती ग्लूकोज इत्यादि देने का जोरों से विरोध किया। डा० विधान राय आ गये। वह भी हमारे विचार से सहमत थे कि बापू के साथ धोखा नहीं किया जा सकता। जबरदस्ती भी नहीं हो सकती। हमने तय किया कि अगर सरकारी डाक्टर ऐसा कुछ करेंगे तो हम तीनों अपना लिखित विरोध सरकार के पास भेजेंगे। सरकारी डाक्टरों ने वह पिचकारी कटेलीसाहब से अपने पास रखने को कहा।

बापू के उठने पर हम सबने उनकी डाक्टरी परीक्षा की। परीक्षा के बाद जनरल कैण्डी ने बापू से एक मिनट बात करने की इच्छा प्रकट की। मैं उन्हें फिर भीतर ले गई। भाई और कनु बापू के पास थे। जनरल कैण्डी मुझे कुछ घबराहट में लगे। मैंने पूछा, "क्या आप अकेले बापू से बात करना चाहते हैं ?" उन्होंने सिर हिलाकर "हां" कहा। हम सब बाहर चले गये।

थोड़ी देर में जनरल कैण्डी पिछले दरवाजे से बाहर निकलकर पिछले बरामदे की तरफ चल दिये। हम लोग उनका इन्तजार कर रहे थे। डाक्टर गिल्डर को क्षणभर लगा कि वह रास्ता भूल गये हैं। उन्होंने दो बार पुकारा, "जनरल, इस तरफ।" मैंने रोका, "जनरल कैण्डी जानबूझकर उधर गये हैं। उनकी आंखों में आंसू भरे हैं।" डा० विधान राय शरारत करके उनके पीछे देखने गये। आवाज देने लगे, "जनरल, जनरल, रास्ता इधर है।" कैण्डी रुक गये। डा० विधान ने पूछा, "उन्होंने क्या कहा ?" आंखें पोंछते हुए जनरल कैण्डी ने कहा, "कुछ नहीं।" और आगे चल दिये।

बापू ने हमें बाद में बताया कि हमारे जाने के बाद जरनल कैण्डी कमरे में घूमने लगे। वह इतने उद्विग्न थे कि बोल नहीं सकते थे। थोड़ी देर बाद आकर बापू के पास कुर्सी पर बैठ गये, मगर बोल नहीं सके। फिर उठकर कमरे में चक्कर लगाने लगे। आखिर हिम्मत करके आये और कहने लगे, "मि० गांधी, एक डाक्टर की हैसियत से मुझे आपसे कहना चाहिए कि आपकी उपवास करने की शक्ति की मर्यादा खत्म हो गई है।" बापू चुपचाप सुनते रहे। मगर कैण्डी आगे नहीं बोल सके—रो पड़े।

बापू ने उन्हें आश्वासन दिया, "क्यों घबराते हो ? मैं ईश्वर के अधीन हूं। मैंने अपने-आपको उसके हाथों में रख दिया है। उसे ले जाना होगा तो ले जायगा। मैं जाने को तैयार हूं। काम लेना होगा तो रख लेगा।"

हम लोग जनरल कैण्डी को पिछले बरामदे में छोड़कर बड़े कमरे की एक मेज के पास जा बैठे। यहीं पर रोज बुलेटिन लिखी जाती है। कर्नल भण्डारी और शाह कहने लगे, "आज की बुलेटिन बहुत जोरदार शब्दों में लिखनी होगी।" हम लोगों ने एक मसविदा तैयार करना शुरू किया। करीब दस मिनट में जनरल कैण्डी शांत होकर वापस आये। हमेशा की तरह हमने उन्हींके हाथ में बुलेटिन लिखने के लिए कागज और कलम दी। उन्हें कुछ दिक्कत हो रही थी। करीब आधा मसविदा तैयार हुआ था। वह उनके सामने रख दिया। उन्होंने उसमें से वाक्य ले लिये। हमारे मसविदे के वाक्य "ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे हैं कि शायद कुछ अवयवों को स्थायी नुकसान हो जाय" के स्थान पर उन्होंने लिखा—"खतरे के चिह्न प्रकट हो चुके हैं।" बाद में हमें पता चला कि सरकार ने कैण्डी को गांधीजी को यह बता देने को कहा था कि उनकी जान खतरे में है, ताकि अगर मृत्यु हो जाय तो सरकार अपनी सफाई पेश कर सके। सरकार का अपना रवैया बदलने का इरादा बिल्कुल नहीं था। सो बेचारे कैण्डी के सिर यह आपद्-धर्म आ पड़ा। इससे वह बड़े संकट में पड़े।

देवदासभाई सपरिवार आये। बरेलवी भी आये। शांतिकुमार और ठक्कर-बापा से जो बातें हुई थीं, उसी ढंग की बरेलवी के साथ हुई। बरेलवी ने पूछा, "अगर आप बाहर होते तो जनता की हिंसा के बारे में क्या कहते ?"

बापू बोले, "जनता के बारे में जो कुछ भी कहता, उससे बहुत अधिक मुझे सरकार के लिए कहना पड़ता। मगर वह मैं आजादी में ही कर सकता हूं, जेल से नहीं। यह भी समझ लो कि किसी भी चीज के बारे में पूरी जांच-पड़ताल किये बिना मैं कोई राय दे ही नहीं सकता। यह चर्चा करना कि कोई खास काम अहिंसा में गिना जा सकता है या नहीं, उससे स्वराज मिलने में मदद मिल सकती है या नहीं यह एक बात है, और खुले तौर पर किसी चीज की टीका या निन्दा करना दूसरी बात है। ऐसा करने से पहले हर पहलू से उसकी पूरी जांच-पड़ताल करनी चाहिए। अगर मैं आजाद होता तो जो कई बातें हुई कही जाती हैं, उनकी टीका और निन्दा करता। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें होने ही नहीं देता। उनकी जगह मैं ज्यादा असरकारी रास्ता जनता के सामने रखता। वह ज्यादा असरकारी होता; क्योंकि

वह शुद्ध अहिंसा का मार्ग होता। मेरी लड़ाई की कल्पना आज बाहर जो हो रहा है, उससे अलग किस्म की थी। मगर जो लोग बरसों से अहिंसक मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें भयानक हिंसा के द्वारा कुचला जाय, यह क्या बात है? सरकार गुस्से से पागल बनकर बे-हथियार कमजोर स्त्री-पुरुषों पर कभी नहीं हुए ऐसे जुल्म करे और परिणाम में वे लोग निराश होकर पागल बन जायं और बिना सोचे-समझे कुछ उलटा-सीधा कर बैठें तो इतिहास उनकी हिंसा को सरकार की हिंसा के मुकाबले में अहिंसा ही कहेगा, जैसेकि मैंने 'हरिजन' में लिखा था न कि पोलैण्ड के लोगों की जर्मनी के हमले के सामने हिंसक लड़ाई लगभग अहिंसक ही कही जा सकती है?"

बरेलवी पूछने लगे, "अगर आप पकड़े न जाते तो क्या आपने कौमी एकता के बारे में भी कुछ करने की सोची थी?" बापू बोले, "करने को तो बहुत-कुछ सोचा था और आशा थी कि कुछ कर भी पाऊंगा, मगर विधाता ने कुछ और ही सोच रखा था। जिन्नासाहब के साथ मुलाकात तय होनेवाली थी। मैं शायद खास मुलाकात तय किये बिना ही उनसे मिलता और पता चलता कि हमारे मतभेद किस-किस चीज पर थे और उन्हें दूर करने का कोई रास्ता है या नहीं, मगर वह सब होने का नहीं था।"

देवदासभाई ने बापू को बताया कि तोड़-फोड़ में लगे रहकर भी हमारे लोगों ने इस बात का ध्यान रखा था कि किसीकी प्राण-हानि न होने पाये। उन्होंने यह भी बताया कि इसके लिए क्या-क्या कोशिशें की गई थीं।

बापू ने उत्तर दिया, "कुछ भी हो, अगर मैं बाहर रहता तो ऐसी चीजें भी न होने देता। जो चीज छिपी रीति से ही चल सकती है, उसकी जड़ में विफलता भरी है। गुप्त नीति सत्य की विरोधिनी है, इसलिए अहिंसा की विरोधिनी भी है। इसीलिए मेरी योजना में उसके लिए स्थान नहीं हो सकता। कई बार मुझे ऐसा लगता है कि तोड़-फोड़ के कार्यक्रम की तात्विक चर्चा भी मुझे नहीं चलने देनी चाहिए थी। सम्भव था कि आज जो हो रहा है, वह न होने पाता।"

❁

नेताओं की दिल्ली-कान्फ्रेन्स में डा० जयकर ने प्रस्ताव पेश किया कि हिन्दुस्तान के हित की और देशों की परस्पर मित्रता की खातिर गांधीजी को तुरंत छोड़ देना चाहिए। प्रस्ताव पास हो गया।

सप्रूसाहब ने अपने भाषण में कहा, "ब्रिटेन के इतिहास से एक पाठ सीखने को मिलता है । वह यह कि ब्रिटिश सरकार हमेशा बागियों से समझौता करती है, वफादारों से नहीं। गांधीजी को गृह-मंत्री ने बागी कहा है, मगर हम यही आशा रखते हैं कि इन बागियों के साथ भी सरकार समझौता करेगी ही और जब वह दिन आयेगा तब हमारे जैसों को कोई पूछेगा भी नहीं।" अंत में उन्होंने ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्रों मे अन्तर्मुख होकर विचार करने की सलाह दी और कहा, "आज वह अपना धर्म भलीभांति समझ लें।

डा० जयकर ने अपने भाषणों में कहा, "उपवास को एक तरफ रखकर भी सरकार को चाहिए कि वह गांधीजी को छोड़ दे। न्याय की खातिर और शांति की खातिर उन्हें छोड़ना जरूरी है। उपवास करके गांधीजी अन्याय के सामने अपनी आवाज उठा रहे हैं। सरकार ने उन्हें बेकार बनाकर बैठा दिया है। गांधीजी उसके सामने शिकायत करते हैं। गिरफ्तारियों से पहले उनके लेखों और भाषणों के पढ़ने से साफ जाहिर है कि वह झट-से कोई हलचल चलानेवाले नहीं थे। चलाते तो मजबूर होकर चलाते। यह भी स्पष्ट है कि लड़ाई के दरम्यान वह हिन्दुस्तान का राज्य-तन्त्र एकदम बदलने को नहीं कह रहे थे। वह कह चुके थे कि ब्रिटिश और अमरीकी फौजें लड़ाई के अरसे में हिन्दुस्तान में रह सकती हैं। वाइसराय के साथ पत्र-व्यवहार में गांधीजी की भाषा एक बागी की भाषा नहीं है। गांधीजी और दूसरे कांग्रेसी नेताओं को जेल में डाले छः महीने गुजर गये हैं। हुकूमत ने सिवा उसी इलजाम को बार-बार दोहराने के आज तक किया ही क्या है?"

❀

बापू को वाइसराय का उत्तर मिला। उसमें लिखा था कि १० फरवरी को सरकार ने जो वक्तव्य निकाला था, उसमें अपनी नीति स्पष्ट कर दी थी। उसके बाद कोई नई घटना नहीं हुई। उपवास की जिम्मेदारी गांधीजी की थी। उसे छोड़ने की जिम्मेदारी भी उन्हींकी है, हुकूमत की नहीं।

२१ फरवरी '४३

कमजोरी इस कदर बढ़ गई है कि बापू लेटे-लेटे ही नली से पानी पीने का प्रयत्न करते हैं। नली से चूसने के लिए भी शक्ति चाहिए। सो कभी-कभी चमचे से भी पानी मुंह में डालना पड़ता है, मगर इस तरह बहुत कम पानी पिया जाता है। कल दिन भर में केवल चालीस औंस पानी पी सके। इसमें भी दो औंस खट्टे

नीबू का रस था।

रात में नींद बहुत कम आई। करीब साढ़े चार घंटे ही सोये होंगे। दिन में किसी चीज में रस लेने की इच्छा नहीं थी। यूरीमिया का नशा-सा लगता था। सांस में ऐसीटोन की बू तो थी ही, यूरीमिया की बू भी कल शाम से लगती है। हृदय और नाड़ी बहुत कमजोर हो गई है। इस कमजोरी में वजन लेने के लिए उठना कठिन है। परसों १६ तारीख तक वजन १४ पौंड कम हो चुका था। आज की बुलेटिन में था—"यूरीमिया बढ़ रहा है। अगर अब उपवास छूटने में देर हुई तो जान बचाना कठिन हो जायगा।"

सुबह डा० शाह आये तो कहने लगे, "मैं और कैण्डी कल रात को बैठे सोच रहे थे कि यहां क्या हो रहा होगा और तुम लोगों का किसी समय भी टेलीफोन आ सकता है। हमने यहां आने की भी सोची, मगर फिर सोचा कि इससे तुम लोगों को कष्ट होगा। आखिर दस बजे पलंग पर जा पड़े। डर था कि रात को न जाने कब उठकर भागना पड़े!"

मैंने कहा, "जी हां, पासवालों को तो चिंता रहती ही है, मगर दूरवालों को तो और भी फिक्र रहती है।"

मेजर शाह बोले, "बेचारा कैण्डी तो बड़ी ही फिक्र में है। मुझसे कहता है कि कांग्रेस को छोड़ो, मगर यह आदमी तो कांग्रेस से ऊपर है। कांग्रेस भले खत्म हो जाय, यह आदमी नहीं खत्म हो सकता। उसे खत्म होने देना भी नहीं चाहिए। उसे बचाना ही चाहिए।"

दिन में अनुसूयाबहन, रामेश्वरदास बिड़ला, शंकरलाल बैंकर इत्यादि मिलने आये। आज सबको दर्शन के लिए ही लाया जा रहा था। बापू में बात करने की शक्ति ही नहीं थी। दिनभर अधिकतर चुपचाप ही पड़े रहे।

शाम करीब चार बजे बापू की हालत बिगड़ी। उस समय उनके कमरे में मैं अकेली ही थी। उन्होंने पानी पीने का प्रयत्न किया। नली से खींचकर पीने में बहुत थक गये। मुश्किल से एक-दो घूंट ही पी सके। थककर लेट गये। एकदम जोरों की मतली आई। छटपटाने लगे, बेचैनी से हाथ-पैर पटकने लगे। आंखें करीब आधी बन्द थीं। मुझे ऐसा लगा, मानो बेसुध हो रहे हैं। नाड़ी पर हाथ रखा तो इतनी कमजोर थी कि मुश्किल से हाथ आती थी। मेरा हृदय धड़कने लगा। अभी जाने क्या-क्या होनेवाला है! महादेवभाई की भांति क्या बापू भी आंखों के सामने चले

जायंगे ? मैं जानती थी कि अगर पानी पी सकें तो बच सकते हैं। सो हिम्मत करके पूछा, "बापू, वह समय नहीं आ गया है कि जब पानी में मोसम्बी का रस डालकर आपको दिया जाय ?" कुछ देर तक उन्होंने उत्तर नहीं दिया। आखिर धीरे-से सिर हिलाकर 'हां' कहा। मैंने डा० गिल्डर को बुलवाया था। वह आ गये। बापू को जो हुआ था वह समझाकर मैंने दो औंस मोसम्बी का रस निकाला और दो औंस पानी में मिलाकर औंस वाले गिलास से धीरे-धीरे बापू के मुंह में डाला। इसका असर जलते कोयलों पर पानी पड़ने-जैसा हुआ। बेचैनी कम होने लगी। बापू ने आंखें खोलीं। इतने में बा कमरे में आईं। मुझे लगा कि शायद बा की प्रार्थना सुनकर ही ईश्वर ने बापू को बचा लिया। बा जब बापू के कमरे में नहीं होती थीं तो अक्सर बालकृष्ण या तुलसी माता के सामने बैठी प्रार्थना किया करती थीं। जब बापू की स्थिति बिगड़ रही थी, बा यह सब कुछ न जानते हुए प्रार्थना में बैठी थीं।

थोड़ी देर के बाद फिर बापू को मोसम्बी का रस और पानी दिया। रात तक करीब १५-१६ औंस रस और उससे तिगुना पानी भीतर जाने से बापू की नाड़ी काफी सुधर गई। रात को उन्होंने करीब साढ़े पांच घंटे नींद ली।

बा जिस हिम्मत से मानसिक और शारीरिक श्रम बरदाश्त कर रही हैं, वह सचमुच आश्चर्यजनक है।

२२ फरवरी '४३

आज बापू का मौन था। कई मित्र लोग प्रणाम कर गये। उनमें श्री मथुरादासभाई, अमतुलबहन, श्री अम्बालाल साराभाई और स्वामी आनन्द थे। आश्चर्य की बात है कि जो बापू पूंजीवाद के कट्टर दुश्मन हैं, उनको पूंजीपति अपना पिता मानते हैं और बापू भी उनके प्रति उतना ही प्रेम दिखाते हैं, जितना कि स्वामी आनंद के प्रति, जिन्होंने अपना सर्वस्व बापू के अर्पण किया है। मथुरादासभाई उनके भानजे हैं और अमतुलबहन एक मुसलमान कुटुम्ब की लड़की, लेकिन बापू दोनों को समान प्यार करते हैं। बापू के पास जो आता है, वह यही अनुभव करता है कि बापू मुझे बहुत प्यार करते हैं, वह मेरे मित्र हैं, हितेच्छु हैं, उनके सामने मैं अपना हृदय खोल सकता हूं।

आज भी बापू पानी में मोसम्बी का रस मिलाकर लेते रहे। कमजोरी बहुत है, मगर हम लोगों की चिन्ता कम-से-कम है। डाक्टरी दृष्टि से ज्यादा पानी भीतर

जाने का खतरा कम हो गया है, मगर कुछ कहा नहीं जा सकता। मोसम्बी के रस की मात्रा वह कम-से-कम करना चाहते हैं।

देश तो कल की बुलेटिन से चिन्ता में पड़ा ही हुआ है। सरकार ने गांधीजी को छोड़ देने के बारे में नेताओं की अपील अस्वीकार कर दी थी। सो सर तेज ने देश से अपील करते हुए वक्तव्य निकाला कि वह बुरे समाचार के लिए तैयार रहे और यदि बापू चले जायं तो उनकी मृत्यु की चोट को स्वाभिमान, गंभीरता और हिम्मत के साथ बरदाश्त करे।

सावरकर इत्यादि कुछ दूसरे लोगों ने गांधीजी से प्रार्थना की कि सरकार तो नहीं मानती, आप ही देश की खातिर अपना उपवास छोड़ दें। मगर ये लोग बापू को समझते नहीं। बापू ने ईश्वर के नाम से उपवास शुरू किया है। मृत्यु को सामने देखकर उसे छोड़ेंगे नहीं। उनका एक ही मंत्र है, "ईश्वर को मुझसे काम लेना होगा तो मुझे बचा लेगा।"

२३ फरवरी '४३

रात में बापू को अच्छी नींद नहीं आई। दिन में थोड़ा-थोड़ा करके कई बार सोये। जबान मैली, नाड़ी कमजोर, अशक्ति बहुत है। डाक्टरों की मीटिंग में अब अक्सर मीठी चर्चा हुआ करती है। बेचारे कैण्डीसाहब नहीं समझ पाते कि बापू मोसम्बी का रस इतना कम क्यों लेते हैं। ज्यादा लें तो शरीर को पोषण भी मिले, मगर बापू को शरीर को पोषण देना ही नहीं है। उन्हें तो इतना ही रस लेना है कि जिससे पानी पी सकें।

आज सुबह जनरल कैण्डी पूछने लगे, "आज कैसे हैं ?" डा० गिल्डर बोले, "थोड़े अच्छे हैं। प्रफुल्लित लगते हैं।" कैण्डी भीतर गये। नाड़ी वगैरा देखकर बाहर आये। कहने लगे, "उनकी मुस्कान तो हमारा स्वागत करने के लिए है, उनकी अहिंसा का चिह्न है। शारीरिक स्थिति में तो मुझे कोई सुधार नहीं दिखाई पड़ता। नाड़ी ज्यादा कमजोर लगती है।" कर्नल शाह बोले, "हां, मेरा भी यही खयाल है।" कैण्डी मुझसे कहने लगे, "पानी में मोसम्बी का रस ज्यादा क्यों नहीं डाल देती हो ?" मैंने कहा, "वह हो नहीं सकता। बापू हमेशा पूछते हैं कि कितना रस लिया और कितना पानी। वह कम-से-कम रस लेना चाहते हैं ताकि उपवास, यानी शरीर को खुराक न देना, चलता रहे। खुराक का उपवास है, पानी का नहीं। चूंकि सादा पानी पी नहीं सकते, इसलिए उसमें रस की कम-से-कम मात्रा डालने

देते हैं।"

कर्नल शाह बोले, "फल क्यों नहीं खाते ?" शाह बेचारे बहुत भोले हैं। मैंने कहा, "जब फल का रस ही कम-से-कम लेते हैं तो फल कैसे खा सकते हैं ? वह लेने लगें तो उपवास टूटता है।"

कैण्डी बोले, "मैं फल खा सकता हूं, मगर रस लेने से तो मुझे मतली-सी होती है।" शाह ने कहा, "फल लेने से जीभ भी साफ हो जायगी।" मैंने कहा, "डा० राय ने नीबू के टुकड़े से जीभ साफ करने की सलाह दी थी, मगर बापू ने इन्कार किया। उपवास की सब व्यथा सहने की उनकी तैयारी है। फल के रस के उपयोग की छूट पानी पी सकने के लिए ही है।"

वह लोग चुप हो गये, मगर व्यथा बरदाश्त करने की बात उनकी समझ में नहीं आई। वे क्या जानें कि उपवास की सारी कल्पना ही इस आधार पर है कि आप व्यथा बरदाश्त करके सामनेवाले की आत्मा को जाग्रत किया जाय ? उसको उसकी गलती दिखाने के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी जाय।

बापू का दिमाग साफ है। सिर का चक्कर और दर्द आज नहीं है। आवाज बहुत कमजोर है। वह अधिकतर चुपचाप पड़े रहे। कई मुलाकाती आये। उनमें होरेस अलेक्ज़ैण्डर भी थे। वह अनेक अंग्रेज मित्रों की तरफ से शुभेच्छा और प्रेम का संदेश देने आये थे। बापू ने उनसे थोड़ी बातें कीं।

तीसरा सप्ताह

२४ फरवरी '४३

आज बापू की स्थिति और थोड़ी सुधरी है। सुबह डाक्टरी परीक्षा के बाद कैंडी कहने लगे, "आज तो हम बुलेटिन में अच्छी खबर दे सकते हैं। कल की उनकी मुस्कराहट झूठी थी, ऐसा तो म नहीं कह सकता, मगर वह कल मेहनत करके मुस्काराते थे। आज सचमुच अधिक प्रफुल्लित लगते हैं।" शाह बोले, "तो भी हमें चौकन्ना रहना होगा। खतरा गायब नहीं हो गया।" कैंडी ने कहा, "हां, वह तो ठीक है। यह सुधार क्षणिक हो सकता है। दीपक का आखिरी टिमटिमाना भी हो सकता है।" फिर सरोजिनी नायडू से कहने लगे, "हमने तो माना था कि गांधीजी जा रहे हैं, मगर उनकी हालत सुधर रही है। वह आश्चर्यजनक व्यक्ति हैं, चक्कर में डाल रहे हैं। आम गज़ से उनका माप नहीं लिया जा सकता।"

होरेस अलेक्जैण्डर बम्बई के गवर्नर सर जॉन कालिवल से मिले थे। सर जॉन कालिवल को बापू की बड़ी चिंता थी। होरेस ने उनके साथ बैठकर एक फारमूला तैयार किया। यदि बापू पसंद करें तो वह उसे दिल्ली सरकार के पास ले जायंगे। फारमूला का सार यह था कि सरकार अपने किसी नुमाइंदे को बापू और कांग्रेस पर लगाये गए आरोपों व सबूत के साथ बापू के पास भेजे। अगर बापू को संतोष हो गया तो वह अपनी भूल स्वीकार करेंगे। देवदासभाई आज यह फारमूला बापू के पास लाये। बापू ने उसे गौर से देखा, फिर कहने लगे, "इसमें एक कमी है। इतना और डालना चाहिए कि सरकार, अगर मुझे सरकारी सबूतों से संतोष न हुआ, तो एक न्याय की जांच-कमेटी नियुक्त करेगी और वह सब पहलुओं की जांच-पड़ताल करके अपना फैसला सुनायेगी।" यह नया फारमूला हमारे जेल सुपरिन्टेण्डेंट श्री कटेली को बताकर होरेस के पास भेजा गया। बापू की बड़ी बहन गोकीबहन आज उनसे मिलने आईं। मुलाकात का दृश्य बड़ा करुण था।

२५ फरवरी '४३

बापू ने कल से मोसम्बी के रस की मात्रा और भी कम कर दी है। आज सुबह अपने-आप कहने लगे, "आज कमजोरी ज्यादा लगती है।"

कैंडी आये तो उन्हें बहुत निराशा हुई। कहने लगे, "फल का रस कम क्यों कर दिया है ? आज तो सुधार देखने में नहीं आता। यह बहुत निराशाजनक है।"

मैंने कहा, "सुधार तो हुआ ही नहीं, कमजोरी भी बढ़ी है।" कैंडी बोले, "इतवार के दिन वह मौत के मुंह में थे। क्या फिर वैसी ही हालत चाहते हैं ? मृत्यु के साथ खेलना अच्छा नहीं।"

डा० राय बोले, "हां, वह खुद कह रहे थे कि इतवार को उन्हें लगता था कि जा रहे हैं। मोसम्बी का रस डालकर पानी पीना और जिन्दा रहना या मृत्यु, दो चीजें उनके सामने थीं। उन्हें पहली बात पसंद की। उन्होंने कहा कि वह मरना नहीं चाहते। मगर इसका अर्थ तो यह नहीं होना चाहिए कि सारे समय काल के गढ़े के किनारे खड़े होकर ही उसमें झांकते रहें।"

मैंने उन्हें बापू का दृष्टिबिन्दु समझाने की कोशिश की, "उनका हेतु मृत्यु से खेलना या मृत्यु की खाई के किनारे से मंडराना नहीं है। उन्होंने शुरू से कहा है कि पानी न पी सकें तो उसे पीनेलायक बनाने के लिए वे कम-से-कम मात्रा में मोसम्बी के रस का उपयोग करेंगे। जब इतवार को मैंने देखा कि वह किसी तरह पानी नहीं

पी सकते तो मैंने पानी में मोसम्बी का रस डालने की इजाजत मांगी, सो उन्होंने दे दी। अब वह उसकी मात्रा कम कर रहे हैं।''

डा० राय बोले, "हां, यह ठीक है। उन्हें खुद आश्चर्य हो रहा था कि इतने थोड़े रस का उनपर इतना बड़ा असर कैसे हुआ!" आज सुबह बापू हँसकर कैंडी से कह रहे थे, "अब मैं कहां उपवास कर रहा हूं?" मैंने कहा, "डाक्टरी दृष्टि से आप उपवास ही कर रहे हैं। आप अपने शरीर को जलाकर शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। मोसम्बी का रस ही आपके शरीर से जहर निकालने में मदद देता है। उसके सहारे आप पानी पी सकते हैं। पानी शरीर से जहर निकालता है।''

कैण्डी ने कहा, "उपवास तो है ही। मोसम्बी के रस में रखा क्या है? जहां-तक मुझे याद है, उसमें ९८ प्रतिशत पानी होता है, थोड़ा-सा रंग और ज़रा-सा ग्लूकोज।''

मैं बोली, "यह ठीक है, लेकिन इस ज़रा-से ग्लूकोज की भी वह कम-से-कम मात्रा लेना चाहते हैं।" कैण्डी कहने लगे, "यह भूल है। पिछले दिन संकट का समय आ गया था। रस का असर होने में २४ घंटे लगे। अगर फिर ऐसा मौका आये, उसी तरह हालत बिगड़े तो शायद उसमें से निकल ही न सकें या पूरी तरह न निकल सकें।" डा० राय से कहने लगे, "इतवार को जो हालत हुई थी, उसके बारे में आपकी क्या राय है? डाक्टरी भाषा में, उस दिन जो हालत बिगड़ी, वह क्या चीज थी?" डा० राय बोले, "डा० गिल्डर मौजूद थे। वह कह सकेंगे।" कैण्डी कहने लगे, "हां, मगर उस दिन के चिह्न का विचार कीजिये। सख्त मतली, बेचैनी, नाड़ी की कमजोरी, मुझे याद आ रहा था कि हृदय को खून पहुंचानेवाली नाड़ी तो कहीं बन्द नहीं हो गई।" डा० राय बोले, "हो सकता है, चिह्न तो ठीक बैठते हैं।" कैण्डी कहने लगे, "मुझे तो डर लगता है। दूसरा हमला ज्यादा खतरनाक हो सकता है।" मुझसे बोले, "क्या आप उन्हें जबरदस्ती ज्यादा रस नहीं दे सकतीं?" मैंने उत्तर दिया, "उनके साथ जबरदस्ती कौन कर सकता है?" कैण्डी पूछने लगे, "क्या वह खुद नियम बांधते हैं, खुद कानून बनाते हैं?" मैंने उत्तर दिया, "जी हां।"

वह बोले, "उनसे कहना कि वह बड़े खराब मरीज हैं। हम लोगों को मरीजों के बनाये कानून पालने की आदत नहीं।" सभी हँसने लगे।

शाह पूछने लगे, "उन्हें धोखा नहीं दे सकती हो? चुपचाप ज्यादा रस डाल दिया करो।" मैंने कहा, "उन्होंने हम सबको हमारे ईमान पर रखा है। उनके साथ

धोखा नहीं हो सकता।" कैण्डी कहने लगे, "मगर डाक्टर मरीज की जान बचाने के लिए झूठ बोले तो उसमें कौन-सी बात है ? अच्छा, यह बताओ कि रस नापती कैसे हो ?" मैंने कहा, "औंसवाले गिलास में।" वह बोले, "कल मैं नया औंस का गिलास लाऊंगा। पुराना गिरकर टूट गया है। समझीं ?" मैंने कहा, "फायदा क्या होगा ? उसी नये गिलास से पानी भी नापा जायगा। एक मात्रा रस और तीन या चार मात्रा पानी।"

शाह बोले, "डा० राय हमें बता रहे थे कि महाभारत में कहा गया है कि पांच तरह के मौके आ सकते हैं जब कि झूठ बोलने में दोष नहीं है। उनमें से एक है जान बचाने की खातिर।"

कैंडी कहने लगे, "कोई और मरीज होता तो सो झूठ बोलने में हिचकिचाहट न होती, मगर···। अच्छा, अब बुलेटिन में क्या कहना है ? यही कि 'डाक्टरी दबाव के नीचे उन्होंने मोसम्बी का रस लिया और हालत सुधरी'।"

मैंने कहा, "बापू नहीं मानेंगे कि डाक्टरी दबाव के नीचे उन्होंने रस लिया।" शाह बोले, "तो कहें कि डाक्टरी सलाह से लिया ?" डा० गिल्डर कहने लगे, "सलाह तो हमने कब से दी थी।"

सब चुप हो गये। मैंने कहा, "एक ही बात पर उन्होंने जोर दिया है, पानी पी सकें। जब पानी नहीं पी सकें तब पानी में रस मिला लें, जैसाकि उन्होंने उपवास करने से पहले ही कहा था। बस इतनी-सी बात है।"

बुटेलिन लिखी गई। डा० गिल्डर मुझसे मजाक करने लगे, "बहुत खूब ! आज तो बुटेलिन पूरी तुम्हारी है।" मैंने कहा, "मैंने वही कहा है जो था।" डा० गिल्डर बोले, "हां, होना भी यही चाहिए।"

भूलाभाई, मुन्शी और राजाजी आज बापू से मिलने आये। भूलाभाई ने बताया, "सरकार तो अकड़कर बैठी है। कोई दलील सुनने को तैयार ही नहीं। कुछ भी समझौते की बात करने से पहले वह कई तरह की शर्तें और गारण्टी मांगने की बात करेगी। एक ओर आपकी आवाज जेल की दीवारों में बन्द है, दूसरी ओर देश की हालत बिगड़ती ही जायगी।"

मुन्शी ने भी भूलाभाई का समर्थन किया। कहने लगे, "उनकी तैयारी तो आपको मरने देने की है। अगर परिणाम में जनता कुछ गड़बड़ करे तो उनकी तैयारी उसे भी गोली से उड़ा देने की है। कई तरह के लोग आज बाहर काम रहे हैं। उनमें

कइयों के नाम भी बापू नहीं जानते। मगर उन सबके कारनामों की जिम्मेदारी कांग्रेस पर डाली जाती है। इसका कुछ उपाय करना चाहिए। मगर मुझे इतना कहना होगा कि जहांतक मैं जानता हूं, किसी कांग्रेसवाले ने जान-माल का नुक-सान करने में हिस्सा नहीं लिया, मगर आपकी सीख के खिलाफ लोगों ने कई जगह काम किया है। अधिकतर वह अज्ञान और विचारों की गड़बड़ का परिणाम था।"

बापू ने उनकी बातें चुपचाप सुन लीं और राजाजी से बातें करने के लिए अपनी शक्ति का संचय किये रखा। राजाजी ने वाइसराय के साथ के अपने अनुभव सुनाये और बताया कि लार्ड लिनलिथगो ने तीन बार उनसे झूठ बोला था। वह कहने लगे, "आखिरी बार जब मैं उनसे मिला तो वह पूछने लगे, 'क्या गांधीजी उपवास करेंगे?' उस समय आपका खत उन्हें उपवास के बारे में मिल चुका था। इसी प्रकार एक बार कौमी मसले पर मेरे विचारों को 'बुद्धिमानी' कहकर बाद में उन्होंने उससे उल्टा वक्तव्य निकाला था। तीसरा असत्य तो इन दोनों असत्यों से भी बुरा है।"

राजाजी ने बताया कि लिनलिथगो को बापू के नाम से ही चिढ़ है। एक साहब उनसे बातें करने गये। बापू के नाम का जिक्र आते ही लिनलिथगो गुस्से में भरकर कमरे में चक्कर काटने लगे। किसीने उनसे पूछा कि उनकी कार्यकारिणी सभा के तीन मेम्बरों ने इस्तीफा दे दिया है, इसलिए क्या वह इस वजह से गांधीजी के प्रति अपनी नीति बदलेंगे? लिनलिथगो ने उत्तर दिया, "जितनों ने इस्तीफा दिया है उनसे दुगने नाम जगहें भरने के लिए जेब में पड़े हैं।"

इसके बाद राजाजी ने सरकार की तरफ से बापू पर लगाई गई तोहमतों की बात की। कहने लगे, "आपके लेखों को तोड़-मरोड़कर झूठी तोहमतों की मनमानी खिचड़ी तैयार की गई है।"

कांग्रेस ने बापू से देश की लड़ाई की योजना बनाने को कहा था। बापू ने पकड़े जाने से पहले कोई सूचनाएं नहीं निकाली थीं, लड़ाई की रूपरेखा नहीं बनाई थी जो बाहर रह गये, उनमें से किसीको कांग्रेस के नाम पर हिंसक या अहिंसक लड़ाई चलाने का अधिकार न था। कांग्रेस ने कहा था कि हरएक अपना सरदार है, सो हरएक स्त्री-पुरुष अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार था। कांग्रेस स्वयं किसीके किये की जिम्मेदार न थी। राजाजी का कहना था कि उसूलन बापू या कांग्रेस किसीके किये के लिए जिम्मेदार नहीं, मगर मौका आने पर यह स्पष्ट करना होगा कि हिंसक

प्रवृत्तियां कांग्रेस और आपकी नीति के विरुद्ध हैं। बापू से कहने लगे, "मैं जानता हूं कि जेल में बैठकर बाहर की प्रवृत्तियों के विरुद्ध निदान देना आपकी जीवन भर की नीति के विरुद्ध होगा। मगर क्या आप हमसे यह नहीं कह सकते कि यह सब आपको पसन्द नहीं ? जो लोग लड़ाई चला रहे हैं, वे अगर इतना स्पष्ट कर दें कि कांग्रेस के नाम पर नहीं, बल्कि अपनी जिम्मेदारी पर, अपनी प्रवृत्ति चला रहे हैं तो वे कांग्रेस की भी सेवा करेंगे और अपनी भी। मैं जानता हूं कि आप यहां बैठकर उनकी निन्दा नहीं करेंगे, टीका नहीं करेंगे, मगर इसमें शक नहीं कि आज जो कुछ बाहर हो रहा है, वह बन्द होना चाहिए। जिम्मेदारी किसीकी भी हो, मगर ऐसी प्रवृत्तियों से देश का भला नहीं हो रहा है।

"तीसरा है कौमी मसला। वह हल हो सकता है।" उन्होंने बापू को एक फारमूला बताया। सर तेजबहादुर सप्रू, राजा महेश्वरीदयाल और अन्य मित्रों के साथ राजाजी ने इस प्रस्ताव की चर्चा की थी। उन लोगों को यह पसन्द आया था। बापू से फिर कहने लगे, "इन लोगों में से किसीको आप इस मसले को हाथ में लेने की सत्ता नहीं दे सकते ?"

जब राजाजी सब कह चुके तब बापू ने उत्तर देना शुरू किया। उनकी आवाज बहुत कमजोर थी। बिल्कुल पास कान रखने पर ही सुन सकते थे। बापू कहने लगे, "आज मेरी तबीयत अच्छी है। मेरे मन में जो है सो सुना देता हूं। इन छः महीनों में मैंने अहिंसा का ही मनन किया है। मैंने देखा कि मेरी अहिंसा में एक दोष है और इस युद्ध के समय अगर अहिंसा को अपना चमत्कार दिखाना है तो वह दोष दूर करना होगा। वह दोष यह था, मैं कहा करता था कि अगर अहिंसा को अपना काम करना है तो देश में कहीं भी हिंसा नहीं होनी चाहिए। अगर कहीं हिंसा फूट निकली तो मैं अहिंसक लड़ाई बन्द कर दूंगा। मगर मैं देखता हूं कि आज मेरे चारों ओर हिंसा है। हिंसा की आग सारे जगत में फैली हुई है। तब क्या मेरी अहिंसा बेबस होकर चुपचाप यह सब देखा करे ?

"मुझे कहना होगा—नहीं, आज अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है। इतना मैं कह सकता हूं कि अगर मैं बाहर होता तो हमारे यहां हिंसा इस तरह न फूट निकलती। मैं उसे रोक लेता या रोकने की कोशिश में खत्म हो जाता। मैंने अपने आखिरी भाषण में लोगों से कह दिया था कि अगर उन्होंने एक भी अंग्रेज मारा तो वह मुझे जीता नहीं पायेंगे और मेरा खून उनके सिर पर होगा। आज

देश में जो हिंसक कार्य हो रहा है, उसके लिए मेरे हृदय के किसी भी कोने में सहानुभूति नहीं है। रही उसकी कड़ी निंदा की बात, सो जबतक मैं वैसे ही कड़े शब्दों में सरकार की निंदा न कर सकूं, तबतक जनता की निन्दा भी नहीं करना चाहता। आजकल की हमारी सरकार व्यवस्थित हिंसा का मानो एक दूसरा नाम है और हम उसे स्वीकार करते हैं, उसकी सत्ता के नीचे रहते हैं। मेरा मत है कि हमें इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। कई साल पहले मैंने बिहार में इस बात का इशारा किया था। वहांपर पुरुषों ने पुलिस को स्त्रियों का अपमान करने दिया, उनका सामना करने की जगह वे भाग गये। कहने लगे कि मैंने उन्हें हिंसा करने से मना किया था, इसलिए उन्होंने पुलिस का सामना नहीं किया। मैंने कहा कि मैंने उन्हें बुजदिल बनने को कभी नहीं कहा था। उनका तो धर्म था कि स्त्रियों की रक्षा में अहिंसक या हिंसक तरीके से अपनी जान लड़ा देते। इस किस्म के अन्याय के सामने कभी न झुकते। अगर बिल्ली चूहे पर हमला करे और कोई बहादुर चूहा सामने से अपने दांतों द्वारा अपनी रक्षा के लिए बिल्ली का सामना करे तो चूहे ने हिंसा की, ऐसा आप कहेंगे क्या? उस समय मैंने इस किस्म की दलील की थी, मगर इस विचार का महत्व और उसका पूरा अर्थ उस समय आज की तरह मेरे सामने स्पष्ट नहीं हुआ था। अब मैं कहता हूं कि अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर अपना काम करना है। इसलिए मेरी यह मांग है कि कानून में अहिंसक विरोध को स्थान होना चाहिए। अगर अहिंसा को हिंसा के बीच रहकर काम करना है तो यह आवश्यक है। मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि कानून तोड़नेवाले को सजा न हो। उसे आप चाहे जेल भेजें या फांसी पर लटका दें। अहिंसक सिपाही समझता है कि कानून तोड़ने की सजा उसे भुगतनी होगी और वह खुशी से सजा लेने जाता है। मगर उसकी पत्नी को, कुटुम्ब को या देहात को सजा नहीं हो सकती। आज ऐसा होता है। यह न्याय नहीं। हमें इस संगठित रूप से चलनेवाली सरकारी हिंसा के सामने झुकना नहीं चाहिए। हमें मृत्यु का भय छोड़ना होगा। इस बार हमें जापानियों से पाठ लेना चाहिए। जहांतक मैं जानता हूं, जापानी बहुत ही बहादुर कौम हैं, मगर उनकी महत्वाकांक्षा उन्हें अंधा कर रही है। उन्हें साम्राज्य चाहिए। वह सारे जगत को हजम कर जाना चाहते हैं। मेरी उनके साथ नहीं पट सकती, जैसेकि हिटलर के साथ नहीं पट सकती। हमारे विचारों में आकाश-पाताल का अन्तर है। मैं तो यहांतक जाता हूं कि इस हिंसा के सामने झुकने के बदले अगर लोग अपने

आपपर गोली चलाकर आत्महत्या कर लें तो उनका कृत्य अहिंसक होगा। मुझसे कहा गया है कि लोग थक गये हैं। सरकार ने अपनी फौजी मशीन के बल पर देश पर काबू पा लिया है। मेरा कहना है कि उन्होंने काबू खोया ही कब था! इन बातों का मुझपर असर नहीं होता। मेरे मन में निराशा नहीं है। कोई कुछ भी कहे, मैं फिर से दोहराना चाहता हूं कि मैंने छूटने की खातिर उपवास नहीं किया। मुझे छूटने की इच्छा नहीं। तो भी अगर छूट जाता तो उसका उपयोग कर लेता और मैं यह महसूस करता हूं कि परिस्थिति को सम्भाल लेता।

"आप कह सकते हैं कि यदि उपवास के बाद आपको पहले की तरह फिर जिंदा दफन कर दिया गया तब क्या? अगर आपको इस देश से ही ले जायं, ताकि भारत की भूमि पर होने के नाते जितना आपका यहां से संबंध है, वह भी न रहे, तब क्या? मेरा कहना है, मेरी आत्मा का संबंध तो रहेगा ही और वह और भी ज्यादा असरकारी होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बाहर कुछ भी हो, मगर मैं अकेला भी सच्चा रहा तो हिन्दुस्तान जरूर आजादी पायेगा। अहिंसा में विश्वास रखनेवाले मुट्ठीभर ही हैं तो क्या हुआ? अगर अकेला मैं ही अहिंसा की सम्पूर्ण मिसाल छोड़ जाऊं तो वही काफी होगा, कुछ काल के लिए, हमेशा के लिए नहीं। मगर इस काल में कोई बहुत बड़ी आत्मा आ पहुंचेगी और सारे देश को जगा देगी। इसलिए देश के भाग्य का फैसला करने की, जो सत्ता देने की बात आप कर रहे हैं, वह मैं नहीं दे सकता।"

यहांपर डाक्टरों को बातचीत बंद करानी पड़ी। इतने श्रम से बापू की नाड़ी कमजोर हो गई थी। जब वह कुछ आराम ले चुके थे, तब राजाजी ने बताया कि देश के भाग्य का राजनैतिक फैसला करने की सत्ता वह नहीं मांग रहे थे, वह तो कौमी मसले के फैसले की सत्ता मांग रहे थे।

बापू कहने लगे, "उसके लिए सत्ता मांगने की आवश्यकता ही नहीं और आप जानते हैं कि हमारा कितना ही मतभेद हो, एक-दूसरे के प्रति अविश्वास नहीं है।

२६ फरवरी '४३

कैण्डी आज फिर कहने लगे, "मोसम्बी का रस बढ़ाने में उन्हें क्यों उज्र है, यह मेरी समझ में नहीं आता।" मैंने समझाया, "बापू ने कहा है कि पानी को पीने लायक बना लें, बस इतना ही कम-से-कम रस लेना चाहते हैं। अपनी इस प्रतिज्ञा का आत्मा और वचन से पालन करना चाहते हैं।"

कैण्डी बोले, "यह तो पानी और हवा खाने पर भी अंकुश लगाने जैसी बात हुई।" शाह कहने लगे, "वह तपश्चर्या कर रहे हैं।" मैंने कहा, "उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था कि उपवास करके वह अपनेको सूली पर चढ़ायेंगे। आज वही कर रहे हैं।"

२७ फरवरी '४३

दो रोज से बापू के पेशाब की मात्रा कुछ कम है। जनरल कैण्डी को इससे चिन्ता हो रही थी। डा० विधान कहने लगे, "पिछले इतवार को तबीयत इस कदर बिगड़ी थी। उस वक्त भी दो-एक रोज तक पेशाब कम हो रहा था।" बापू उन्हें कुछ ज्यादा कमजोर दिखाई दिये और कैण्डी ज्यादा चिन्तित लगे। बुलेटिन क्या निकालनी चाहिए थी, इसपर चर्चा चली। मैंने 'चिंतित' शब्द निकलवा डाला। कल की बातों में बापू ने स्पष्ट किया था कि उन्हें किसी बात की चिन्ता न थी। वह चिन्तामुक्त होकर भगवान के भरोसे चल रहे थे।

अणेसाहब बापू से मिलने आये। वह लेडी लिनलिथगो का संदेश लाये थे कि अगर बापू अपने उसूलों को छोड़े बिना उपवास छोड़ सकें तो जरूर छोड़ दें। अनेक दूसरे मित्र भी उपवास छोड़ने को कह चुके थे और लिख चुके थे। सर मॉरिस ग्वायर का पत्र आया। उन्होंने भी उपवास छोड़ने की प्रार्थना की थी।

आश्रम से श्रीमती आशादेवी, श्री चिमनलाल शाह और डा० दास ने एक वक्तव्य निकाला है कि लोग बापू से मिलने की कोशिश न करें, ताकि उनकी शक्ति बची रहे और वह उपवास के शेष दिन पूरे कर सकें। सब लोग ईश्वर से उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना करें।

राजाजी फिर बापू से मिले। गुरुदेव के पुत्र रथीबाबू भी प्रणाम कर गये।

आज बापू ने हजामत कराई। सबको बहुत अच्छा लगा। सूखा हुआ चेहरा भी हजामत के बाद चमक उठता है।

२८ फरवरी '४३

जनरल कैण्डी ने दो-एक रोज पहले बापू को हजामत कराने की सलाह दी थी। आज यह जानकर कि बापू ने कल हजामत कराई थी, वह बहुत खुश हुए। मैंने कहा, "बापू कहते थे कि यह आपके सम्मान में है।" कैण्डी हँसकर कहने लगे, "मगर मैंने तो मोसम्बी का रस बढ़ाने को भी कहा था।"

हम सब बापू को देखने के लिए उनके कमरे में गये। कैण्डी उनसे बोले, "आज

आप सुंदर युवक दीखते हैं।" बापू ने कहा, "आपका हुक्म बजाया है।" मैंने कहा, "बापू, जनरल कैण्डी कहते हैं कि उन्होंने तो मोसम्बी का रस बढ़ाने को भी कहा था!" कैण्डी बोले, "हां, पूरी सलाह क्यों न मानी जाय?" बापू कहने लगे, "ईश्वर की इच्छा हुई तो बुध को मानेंगे।"

बापू के कमरे में आकर बुलेटिन तैयार की। कैण्डी ने अपनी २५ तारीख की रिपोर्ट में सरकार को लिखा था, "राजाजी से बातें करके गांधीजी बहुत थक गये थे।" सो इसका एक नया ही परिणाम हुआ। कर्नल भण्डारी को सरकारी टेलीफोन आया कि गांधीजी और राजाजी की बातचीत की पूरी रिपोर्ट भेजो। कटेलीसाहब को हुक्म मिला कि गांधीजी की सभी मुलाकातों की रिपोर्ट भेजो। बेचारे कटेलीसाहब भाई के पास आये। मुलाकातों में वह हाजिर रहते थे, मगर बापू की आवाज क्षीण होने के कारण वह उनकी बातें बहुत कम सुन पाते थे, सो भाई से कह गये कि सब मुलाकातों की रिपोर्ट वह उन्हें दे दें। बापू की सत्य और अहिंसा की नीति का यह प्रताप है कि जेलर कैदियों का इस तरह विश्वास करे। भाई ने उन्हें सब मुलाकातों की रिपोर्ट तैयार कर दी।

बापू से राजाजी की मुलाकात फिर हुई। उन्होंने कौमी मसले के बारे में अपने फारमूले की चर्चा फिर की। जाते समय उसकी नकल देने लगे। मगर कटेलीसाहब ने कहा कि उसके लिए इजाजत लेनी पड़ेगी। इसपर नकल रखने का विचार छोड़ दिया गया। बापू ने हमसे कहा कि फारमूले को ध्यान से पढ़ लो और फिर स्मरण करके उसकी नकल खुद बना लेना। इसपर भाई ने उसे एक बार फिर पढ़कर सबको सुनाया। राजाजी के जाने के बाद उन्होंने नकल तैयार की। डा० गिल्डर ने बापू की खाट के नीचे हाथ करके शॉर्टहैण्ड में कुछ नोट ले लिये थे। बाद में भाई की नकल उससे मिलाई। कुछ फर्क न था।

आज बहुत-से मुलाकाती आये। उपवास पूरा होने पर जेल के दरवाजे फिर बन्द हो जायंगे, इसलिए मित्र लोग दर्शन का लाभ ले लेना चाहते हैं।

बापू की तबीयत अच्छी रही।

१ मार्च '४३

कल राजाजी के जाने के बाद भाई बापू से कहने लगे, "आपने कौमी मसले पर राजाजी को कोरा चेक दे दिया है। क्या यह ठीक है? आप जानते हैं कि पाकिस्तान के मसले के बारे में आपके विचारों से उनके विचार भिन्न हैं?"

बापू बोले, "यह ठीक है। मगर मैंने विश्वास रखा है कि राजाजी मुझे किसी ऐसी परिस्थिति में नहीं डालेंगे, जो मेरी अंतरात्मा की आवाज के विरुद्ध हो। और अगर कुछ ऐसी ही बातें बन गई तो मैं आमरण उपवास करके अपनी भूल का प्रायश्चित्त करूंगा।"

सो आज राजाजी के आने पर बापू ने यह सब उनके सामने साफ किया। राजाजी कहने लगे, "मैं यह सब समझता हूं। आप चिन्ता न करें। मैं आपको ऐसी परिस्थिति में न डालूंगा कि आपको अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध कुछ करना पड़े।"

बापू काफी पानी पी लेते हैं। खुराक न जाने से कमजोरी होनी तो जरूरी है, मगर गुर्दे सब जहर निकाल रहे हैं। सो चेहरे पर ताजगी और प्रसन्नता पाई जाती है, तेज दिखाई देता है।

२ मार्च '४३

आज आखिरी बार मुलाकातियों के लिए आगाखां महल के दरवाजे खुले। लक्ष्मीबहन खरे और अन्य बहनों से विदा लेते समय बा की आंखों में पानी आ गया। कहने लगीं, "अच्छा बहन, यह आखिरी राम-राम है!" मैंने कहा, "बा, आप ऐसा क्यों कहती हैं? हम सब छूटकर जायंगे और सबसे फिर मिलेंगे।"

बा बोलीं, "हां, तुम सब जाओगी!" उनकी आवाज़ में करुणा थी, निराशा थी।

कर्नल भण्डारी से बातें करते समय बापू को पता चला कि कल उपवास छूटने के समय रामदासभाई और देवदासभाई के सिवा और कोई नहीं आ सकेगा। इसपर बापू ने सरकार को पत्र लिखवाया कि उनके लिए रिश्तेदार, मित्र और पुत्र, सब समान हैं। अगर उपवास छूटने के समय उनके विशाल कुटुम्ब के लोग उपस्थित नहीं रह सकते तो पुत्रों को अलग कोटि में रखना उन्हें पसन्द न था। सो कल उपवास छूटने के समय उनके जेल के साथी और अफसर ही मौजूद रहेंगे। जेल के साथियों में दुर्गाबहन, नारायण और कनु भी शामिल थे। वे बापू की सेवा के लिए आगाखां महल में ही रहते थे।

गरमी काफी बढ़ गई है। बापू की खाट हम बरामदे में ले आये थे। मुलाकातियों और दर्शनाभिलाषियों की कतारें प्रणाम करके उनके सामने से गुजरती रहीं। सबका हृदय भरा था। बापू सौम्य, प्रसन्न-मुख से हाथ जोड़कर सबका अभिनन्दन

करते थे।

राजाजी और अणेसाहब ने आधा-पौन घंटा फिर बापू से बातें कीं।

उपवास की समाप्ति

३ मार्च '४३

कल रात से हम सबका हृदय ईश्वर के प्रति धन्यवाद का गीत गा रहा है। इक्कीस दिन पहले ६ तारीख की रात को हममें से अधिकतर लोग बहुत कम सो पाये थे। चिंता थी, मन पर बोझ था कि इक्कीस दिन कैसे कटेंगे? अकेले बापू रातभर गहरी नींद सोये थे। कल रात फिर सब बहुत कम सोये। बापू की अग्नि-परीक्षा पूरी होती जान पड़ रही थी। डाक्टरी मत के अनुसार बापू के लिए इक्कीस दिन का उपवास पूरा कर सकना एक असम्भव-सी बात थी। पहले दो हफ्तों में बापू की हालत को देखकर हम लोग सचमुच कांपते थे और पिछले रविवार (२१ फरवरी) के रोज तो ऐसा लगता था कि बापू अब चले, मगर उसके बाद बापू ने पानी में थोड़ा-सा मोसम्बी का रस डालकर लेना शुरू किया। इससे वह पानी पी सके। इतना ही फर्क पड़ा। आठ-नौ औंस रस से शरीर को क्या पोषण मिल सकता है? मगर इतने थोड़े-से रस का भी अद्भुत असर हुआ। बापू की तबीयत सुधरी और खून में पेशाब मिल जाने की बीमारी, यूरीमिया, के चिह्न एक-एक करके दूर हो गये। २४ फरवरी को वजन का कम होना भी रुक गया और शक्ति बढ़ी। बापू को तो अपनी तबीयत इतनी अच्छी लगने लगी कि हँसी में एक रोज कहने लगे, "मैं तो आराम से चालीस रोज तक इस उपवास को चला सकता हूं।" मगर हम डाक्टरों को निश्चिंतता नहीं थी; क्योंकि हृदय दुर्बल था और पेशाब की परीक्षा बताती थी कि गुर्दे को अपना काम करने में कठिनाई हो रही है। किस समय फिर से परिस्थिति गम्भीर रूप धारण कर ले, यह कहना कठिन था, इसलिए कल रात को जब मंजिल पूरी होती देख पड़ी तो हम सब हर्ष के मारे सो न पाये। बापू भी बहुत कम सोये। वह कल दिन में डा० विधान राय से कह रहे थे, "जितना विचार करता हूं, उतना स्पष्ट नजर आता है कि इस उपवास को पूरा करने की शक्ति मुझे भगवान से ही मिली है।" सो वह पड़े-पड़े भगवान का दर्शन उसकी कृति में कर रहे थे।

सुबह चार बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद वह सामान्यतः सो

जाते हैं, मगर आज नहीं सो सके। कल मैंने पूछा कि उपवास छोड़ने से पहले गीताजी का पारायण करना है क्या? बापू कहने लगे कि करना अच्छा तो लगेगा, मगर कल सब डाक्टर आयेंगे, इसलिए छोटी-सी ही प्रार्थना करनी चाहिए। मगर आज सुबह प्रार्थना के बाद जब वह सो नहीं सके, तब कहा कि एक-एक करके तैयार होकर आते जाओ और गीता का पाठ शुरू कर दो। भाई तो उस समय लगभग तैयार थे। उन्होंने पांच बजे[1] यानी नये हिसाब से छः बजे पाठ शुरू किया। कुछ अध्यायों के पश्चात कनु आ गया। मैं दसवां अध्याय शुरू होने के समय पहुंची। सवा सात बजे पाठ पूरा हो गया। हम सबको बहुत अच्छा लगा।

जब पूरा होने को था तब डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ आये। बापू ने विचार किया था कि आज मालिश इत्यादि जल्दी पूरी कर लेंगे, मगर श्री कटेली को कर्नल भंडारी की आज्ञा चाहिए थी, इसलिए डा० दीनशा की पत्नी को भेजना पड़ा।

हम सब स्नानादि कर चुके थे। नाश्ता किया और फूल चढ़ाने नीचे महादेवभाई की समाधि पर गये। कल फूलों के बहुत-से हार आये थे। सब वहां पहुंचाये। सुंदर दृश्य था।

सवेरे सवा सात बजे स्वामी आनंद महादेवभाई की भस्म यहां से ले गये थे। जिस समय यहां ९ बजे बापू के उपवास छोड़ने की प्रार्थना चलती थी, उस समय उधर भस्म को नदी में प्रवाहित करने की विधि चलती थी। विचित्र संयोग था कि बापू के उपवास छोड़ने के समय ही यह क्रिया हो रही थी।

यह कोई सोच-विचारकर बनाया हुआ कार्यक्रम न था। कई दिन से दुर्गाबहन की अनुमति से सरकार की इजाजत लेकर यह निश्चय किया गया था कि भस्म का अधिकांश भाग यहीं नदी में प्रवाहित कर दिया जायगा। अस्थियां गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए रख ली थीं, मगर आजतक उसे नदी पर भेजने का प्रबंध नहीं हुआ।

एक आकस्मिक घटना और घटी। आज जमनालालजी का श्राद्ध था। संयोगवश बापू को अपना उपवास ९ फरवरी के बदले १० फरवरी को शुरू करना पड़ा। ऐसा न होता तो उपवास का छूटना और जमनालालजी का श्राद्ध होना, एक ही

---

[1] जब हम जेल में थे तब सरकारी घड़ियां एक घंटा आगे कर दी गई थीं।

रोज न पढ़ सकते थे।

प्रार्थना में बापू ने यह क्रम रखवाया था : पहले ईशावास्यमिदं···वाला श्लोक, फिर एकादश-व्रत फिर 'मैं भरोसे अपने राम के' वाला भजन, फिर रामधुन, 'अउज बिल्ला' और अंत में 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रॉस'। मगर कल रात मीराबहन ने अंग्रेजी भजन नहीं गाया, इसलिए बापू ने उसे मुझसे पूरा कराया। रात को मीराबहन के साथ वह भजन पांच मिनट तक गाया। एक बार सुबह गाया। डर था कि कहीं गाने में भूल न हो जाय।

कमरा ठीक करके बापू को भीतर लाये। एक तरफ डाक्टरों के लिए कुर्सियां रखीं और दूसरी तरफ लोगों के लिए जमीन पर बैठने की जगह की। पौन बजे डा० विधान राय आये और कहने लगे, "मैं तो जमीन पर बैठूंगा।" बापू बोले, "तो आपको फिर प्रार्थना में भी कुछ भाग लेना होगा।" बेचारे इधर-उधर कुछ ढूंढ़ने लगे। गीतांजलि हाथ आ गई। उसमें से दो सुन्दर अंश उन्होंने चुने।

बापू ने विचार किया था कि ८ बजकर ५० मिनट पर प्रार्थना शुरू की जाय, ताकि वह ९ बजे उपवास छोड़ सकें, मगर फिर विचार बदला। सरोजिनी नायडू कहने लगीं कि जनरल कैण्डी इत्यादि प्रार्थना में आ सकें तो अच्छा हो। उनके आने से पहले कनु और नारायण ने 'आनन्द लोके, मंगला लोके' गाया। सरोजिनी नायडू ने 'वैष्णव जन तो···' गाने को कहा। वह भी गाया। इतने में जनरल कैण्डी इत्यादि आ पहुंचे। प्रार्थना शुरू हुई।

गीतांजलि में से डा० विधान राय ने 'ह्वेन दि मांइड इज विदाउट फियर' और 'दिस इज माई प्रेयर टु दी, माई लॉर्ड', पढ़कर सुनाये। अच्छे लगे। इसके बाद बापू ने प्रार्थना का जो क्रम रखा, वह एक के बाद एक चला। अन्त में 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रास' गाया गया। भजन पूरा करके मैं उठी कि रस लाऊं, मगर वहीं-की-वहीं खड़ी रह गई। बापू आंखें बन्द किये पड़े थे। उनके होंठ हिल रहे थे। आंखें भीगी थीं। यह भजन बापू को हमेशा द्रवित किया करता है। आज और ज्यादा असर हुआ। विचार आया—दूसरा सलीब (क्रास) ढूंढ़ने की क्या आवश्यकता है ? वह तो हमारी आंखों के सामने है। सारी-की-सारी प्रार्थना बहुत असरकारी बन गई थी। वातावरण गम्भीर, सौम्य और करुण था।

बापू कुछ शांत हुए। मैंने प्याले में रस डाला। बापू ने छः औंस रस में एक औंस पानी डालने को कहा था। वह मिलाकर मैंने बा के हाथ में दिया। बापू की

खाट का पिछला भाग उठाया। बापू उसके सहारे बैठ गये और धीमे स्वर में बोले, "मैं डाक्टरों को धन्यवाद देना चाहता हूं...,"[1] उनका गला रुंध गया। दो-एक मिनट तक सब सन्नाटे में खड़े रहे। बापू ने सम्भलकर फिर कहना शुरू किया, "जो बड़ी सावधानी और प्रेम से मेरी देख-रेख करते रहे हैं...,"[2] गला फिर रुंध गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपना वाक्य पूरा किया, "सफलता उन्हींकी बदौलत मिली है, लेकिन इच्छा प्रभु की थी कि मैं इस अग्निपरीक्षा में से जीवित पार हो जाऊं। प्रभु ही मुझे अगला कदम सुझायेगा। मेरी कमजोरी के लिए आप लोग क्षमा करें।"[3]

नाड़ी बहुत कमजोर और उसकी गति तेज थी। डा० गिल्डर ने बापू को लिटाने की कोशिश की, मगर बापू ने इन्कार किया। जो कहना था, वह कहकर बा से रस का गिलास हाथ में लिया।

भाई ने भंडारी, कैण्डी और शाह को अंगूरों का गरम-गरम रस पीने को दिया और हँसकर बोले, "यह तुम्हारी शैम्पेन[4] है।" कल श्री कैण्डी मजाक कर रहे थे, "क्या शैम्पेन मिलेगी ?" हम लोगों ने 'सहनाववतु' का मंत्र पढ़ा और बापू ने रस लिया। डाक्टरों ने अपना पेय। श्री कैण्डी ने बापू की नाड़ी देखी और 'चलो' कहकर बाहर निकले। श्री भण्डारी बम्बई सरकार को टेलीफोन करने गये कि उपवास टूट गया है।

बाहर आकर छः जनों की सही से बुलेटिन लिखी गई। श्री कैण्डी खड़े बातें कर रहे थे। मैंने उनको धन्यवाद देते हुए कहा, "जनरल कैण्डी, विदा। आपकी सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!" वह कहने लगे, "नहीं-नहीं, मेरी समझ में नहीं आता कि आपके बिना हम लोग क्या कर सकते थे!" इतने में सरोजिनी नायडू आ पहुंचीं। कैण्डी की बातें सुनकर उसी ढंग में वह भी कुछ कहने लगीं। मैं

---

[1] "I wish to thank the doctors..."

[2] "who have surrounded me with so much care and affection..."

[3] "The triumph is theirs; but the will was God's that I should survive the ordeal. He will show me the next step. You must forgive me for this breakdown."

[4] एक प्रकार की शराब

भीतर चली गई।

इतने में डा० गिल्डर आ गये और डा० विधान राय की प्रेस-प्रतिनिधि-भेंट का हाल सुनाने लगे। तभी डा० विधान राय भी आ पहुंचे। वह आज जा रहे हैं। बापू के साथ कुछ बातें करके आ रहे थे। उनको उपवास के सम्बन्ध में एक चार्ट-सा बनाकर दिया था। हाथ में लेकर कहने लगे, "विज्ञान आपको श्रद्धा के क्षेत्र में नहीं ले जा सकता। उपवास-सम्बन्धी हरएक बात को आप विज्ञान से सिद्ध नहीं कर सकते।" बात सच्ची थी। कल-परसों मैं और डा० गिल्डर चकित हो रहे थे कि आठ-नौ औंस संतरे का रस लेने से वजन कम होना कैसे रुक सकता है! डा० दीनशा मेहता भी कह रहे थे कि उपवास में संतरे लेने पर भी वजन तो एक-आध पौण्ड प्रतिदिन गिरता ही है। बापू का निदान तो निश्चित था—"ईश्वर ने ही मुझे शक्ति दी है। इसमें शंका को स्थान नहीं है।"

डा० विधान राय चले गये। बापू की मालिश इत्यादि पूरी करके डा० दीनशा और उनकी पत्नी भी चले गये। महल सुनसान-सा लगने लगा।

बापू ने दिन में दो-तीन बार रस, शहद और पानी लिया और आराम करते समय 'टेल ऑव दि टू सिटीज़' और 'हाउण्ड ऑव हेविन' पढ़ते रहे।

शाम को खाना खाने के बाद महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाकर हम लोग बेडमिंटन खेलने लगे। इतने में देवदासभाई आये। रोज इतने लोग आते थे, मगर आज फाटक बन्द हो गये हैं। अब देवदासभाई व रामदासभाई को ही आने की इजाजत है। रात को रामदासभाई देवदासभाई को लेने आये। माताजी और बापू की बहन (फई बा) बाहर मोटर में थे, मगर हम उनको देख तक नहीं सकते थे।

रात को बापू अच्छी तरह सोये। उपवास पूरा होते ही सरकार का रुख बदल गया है। फिर वही कड़ी निगरानी और बात-बात पर हुज्जत! ऐसा लगता है, सरकार को इस बात का अफसोस हो रहा है कि उपवास क्यों पूर्ण रूप से सफल हुआ।

: ४१ :

परिचारकों की बिदाई

४ मार्च '४३

प्रातः पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद भाई बापू के पांव दबाने लगे। बापू उपवास की बात करते हुए बोले, "मैंने ईश्वर का दर्शन जितना स्पष्ट इस उपवास में किया है, दूसरे किसीमें नहीं किया। यों तो हरएक उपवास ईश्वर-दत्त था और उसमें मैंने भगवान का दर्शन ही किया, मगर वह उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। मेरी शक्ति क्या थी? ईश्वर ने शक्ति दी। मेरा दृढ़ विश्वास था, श्रद्धा थी कि मुझे इस उपवास में अधिक तकलीफ नहीं होगी और हुई भी नहीं।" मैंने कहा, "पहले दो हफ्तों को छोड़ दें तो।" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है।"

आज भी डा० दीनशा मेहता अपनी पत्नी के साथ बापू की मालिश आदि करने आये। भंडारी और शाह भी आये। बापू सोते थे। जब जागे, तब उन्हें देखकर बुलेटिन लिखी—जनता के लिए अलग और सरकार के लिए अलग—और उसके पास भेज दी।

खुराक में आज भी बापू ने फल ग्लूकोज ही लिया। कैलरी वैल्यू ७५० हो गई।

दोपहर को रामदासभाई आये। वह आज माताजी और फई बा को बम्बई ले जा रहे हैं। बापू के साथ कुछ समय बातें करते रहे। बापू उन्हें अहिंसक और हिंसक लश्कर का भेद समझाते रहे।

शाम को मीराबहन काफी समय बापू के साथ कविता इत्यादि की चर्चा करती रहीं।

खाने के बाद हम लोग खेल रहे थे कि इतने में देवदासभाई आये। उनसे खेलने को कहा, मगर उन्होंने इन्कार किया। जबतक उन्हें जितना चाहें यहां रहने की इजाजत थी, तबतक वह खेला करते थे, मगर जब से उनपर साधारण मुलाकातियों के-से नियम लागू किये गए हैं, तबसे वह थोड़े समय के लिए ही आते हैं। उतने कम समय में कैसे खेल सकते हैं।

घूमकर हम लौटे। देवदासभाई ने प्रार्थना में भजन गाया। प्रार्थना के बाद थोड़ा समय बापू के साथ बातें करके वह उठे और भाई के पास जा खड़े हुए। वह आज शाम को बम्बई से आये थे। मैंने उनसे कुछ खाने को कहा। उपवास के समय तो

भाई किसीको पूछते ही नहीं थे; क्योंकि आने-जानेवाले बहुत थे। मगर अब तो केवल देवदासभाई ही आते हैं। सो मुझे लगा कि पूछ सकते हैं और उन्हें भी लगा कि वह निमंत्रण स्वीकार कर सकते हैं। दो-तीन मिनट में वह खाकर उठने ही वाले थे कि बापू ने कहलाया कि देवदास जल्दी जाय। वह उठे और चल दिये। मैं दरवाजे तक पहुंचा आई। मगर बापू इस घटना से बहुत चिढ़ गये। उन्हें लगा कि इस तरह रुकने में खतरा है। देवदासभाई आज देर से आये थे, सात के बदले आठ बजे। इसलिए जाने में भी रोज से थोड़ी देर हुई। बापू को वह ठीक न लगा। मुझे बहुत दुःख हुआ। बापू क्यों इतनी छोटी-सी बात के लिए नाराज हुए? खाने में पांच मिनट भी न लगे होंगे। इस उधेड़बुन में एक बजे तक नहीं सो सकी। बापू भी एक बजे सोये। वह बहुत थक गये थे।

५ मार्च '४३

आज बापू ने थोड़ा-सा दूध लिया। सरोजिनी नायडू मजाक कर रही थीं, "नवजात शिशु तो चार औंस दूध ही ले सकता है न!"

बाबला और कनु को अंग्रेजी सिखाना शुरू किया है। डा० दीनशा मेहता जब मालिश आदि शुरू करते हैं, तब हम तीनों अभ्यास के लिए बैठ जाते हैं।

डा० दीनशा बापू के लिए कुछ फल लाये। उनमें पपीता भी था। बापू ने खाया, मगर दक्षिण अफ्रीका के फलों के बाद यहां के सामान्य फल उन्हें फीके ही लगते हैं।

भंडारी और शाह ने आकर बुलेटिन भेज दी। दिनभर सुनसान था। शाम को देवदासभाई के आने से काफी परिवर्तन हो जाता है। अच्छा लगता है।

उन्हें आज भी बम्बई में कुछ काम था। प्रार्थना के बाद बापू से थोड़ी बात करके वह चले गये।

श्री कटेली ने आज नये बेडमिंटन के बल्ले मंगवाये हैं। सो खुद भी खेलने को पहुंच गये। घुटने में चोट के कारण उन्हें खेलने की मनाही है, मगर उन्हें यह खेल इतना प्रिय है कि उसका सर्वथा त्याग करना उनके लिए बहुत कठिन है।

बापू को शाम के वक्त बेचैनी-सी लगती थी। पेट और सिर पर मिट्टी की पट्टी रखकर सो गये। अच्छी नींद आई।

६ मार्च '४३

देवदासभाई आज मथुरादासभाई के आपरेशन के लिए मिरज जाने का विचार

कर रहे थे। कल शाम कह गये थे कि मिरज जाऊं तो शायद अगली शाम को न आ सकूं।

यहां सुबह का कार्यक्रम रोज की तरह चला। भण्डारी और शाह आये। भंडारी कहने लगे, "अब कल से बुलेटिन की क्या आवश्यकता है?" हम लोग भी मान गये। आज की बुलेटिन में लिख दिया कि बिना विशेष आवश्यकता के अब आगे बुलेटिन न निकाली जायगी। भंडारी कहने लगे कि कल से वह नहीं आयेंगे। डा० शाह आया करेंगे और सरकार को खबर भेजा करेंगे।

डा० दीनशा मेहता और उनकी पत्नी मालिश करके चले गये।

बापू को खाना खिलाकर मैंने स्नान किया। जब खाना खाकर लौटी तो एक बज चुका था। इतने में श्री कटेली आये और कहने लगे, "अखबार में आया है कि देवदास कुछ घंटों तक बापू के पास रहे थे। परिणामस्वरूप कल से उन्हें यहां आने की इजाजत नहीं मिलेगी। आज आखिरी दिन है।" बहुत बुरा लगा। कौन जाने आज वह आ भी सकेंगे या नहीं। बापू से कहा गया था कि देवदास की मुलाकात बन्द करने से पहले उन्हें नोटिस दिया जायगा, मगर आज एकाएक सब बदल गया। बापू सोते थे। उठने पर मैंने उन्हें बताया। क्षणभर उन्हें लगा कि परसों यहां देर हुई थी, वही कारण होगा, मगर मैंने याद दिलाया कि अखबार में तो पहले ही आया था कि चार दिन तक उन्हें आने देंगे। आज चौथा दिन है। परसों देवदासभाई मुश्किल से दो घंटे ठहरे थे। इतने की तो उन्हें इजाजत थी ही। बापू कहने लगे, "तू ठीक कहती है, मगर मेरा स्वभाव है कि अपनी तरफ से कोई भी कारण मिल सके तो उसे पकड़ लेना चाहिए।"

बाद में बापू ने दुर्गाबहन और बाबला को बुलाकर कहा, "देवदास के लिए इस तरह एकाएक हुक्म आ गया है तो तुम लोगों को भी एकाएक यहां से जाने के लिए सरकार कह सकती है, इसलिए तुम लोगों से आज ही थोड़ी बातें कर लेना चाहता हूं।" फिर बाबला को क्या करना चाहिए, कहां रहना है, इस बारे में बातें करते रहे।

कल से देवदासभाई नहीं आयेंगे, इस खबर से एक तरह की उदासी-सी छा गई है।

देवदासभाई मिरज नहीं गये थे; क्योंकि मथुरादासभाई का आपरेशन मुल्तवी हो गया था। वह शाम को आये। रामदासभाई भी बम्बई से आ पहुंचे। उन्हें वहां

सेक्रेटेरियट से पता चला था कि गांधीजी की तबीयत अच्छी है, सुधार संतोषजनक है। कल से बुलेटिन नहीं निकलेगी, इसलिए मुलाकात भी कल से बन्द हो जायगी। बुरा लगा। मालूम होता तो दो-चार रोज बुलेटिन और निकालते।

प्रार्थना के बाद रामदासभाई बापू से बोले, "अब दूसरे उपवास के लिए हम पर दया रखना। हम तो पामर प्राणी हैं, इसका भी आपको विचार रखना चाहिए।" बापू कहने लगे, "यह तो तू ईश्वर से मांग, मैं कौन हूं! मुझसे जो मेरा मालिक करायेगा, वह मुझे करना पड़ेगा। यह उपवास भी मैंने कहां किया है? मैं तो जीना चाहता हूं। आगे ईश्वर की मर्जी!" दोनों भाई चले गये। श्री कटेली सारा समय साथ थे। अन्त में उन्हें पहुंचाने के लिए हम लोग कमरे से निकले। श्री कटेली ने हमें बरसाती से आगे जाने की मनाही की, इसलिए हम वहीं रुक गये।

बापू की मालिश हो रही थी कि इतने में श्री कटेली आकर कहने लगे, "भंडारी का टेलीफोन था कि श्रीमती देसाई और उनके लड़के को सोमवार तक चला जाना चाहिए।" यह दूसरा धक्का था, मगर इसके लिए पहले की अपेक्षा हम लोग ज्यादा तैयार थे। मैंने उन्हें खबर दी। नारायण को दुर्गाबहन से अधिक बुरा लगा। उसे यहां बहुत अच्छा लगता था। पहले तो वह कहता था कि उसे जल्दी जाना है; क्योंकि यहां जितना रहे, उतनी ही अधिक सम्भावना उसके लिए यहां से निकलने पर तुरंत पकड़े जाने की है। महादेवभाई की अस्थियां भी गंगाजी पहुंचाने को रखी थीं। उस कारण भी वे दोनों जल्दी जाना चाहते थे, इसीलिए बापू ने भंडारी से कहा था कि नर्सों में कनु ही रहेगा, मगर बाद में नारायण का मन बदला। वह भी कनु के साथ रहना चाहता था। मगर अब क्या हो सकता था!

दुर्गाबहन की मैंने मालिश की और उनसे बातें भी कीं।

७ मार्च '४३

महादेवभाई की समाधि पर सुबह फूल चढ़ाने बहुत दिनों के बाद आज मैं भी गई। लौटने के बाद थोड़े मिनटों में ही भंडारी और शाह आ पहुंचे। बापू ने भंडारी से बा के लिए एक नर्स का इन्तजाम करने को और मनु गांधी या मणिबहन पटेल को भेजने को कहा।

दोपहर को बापू ने दुर्गाबहन और नारायण के साथ थोड़ी बातें कीं। बाद में दुर्गाबहन मेरे साथ काफी समय तक बातें करती रहीं। वह पुराने दिनों को याद कर रही थीं और बात-बात पर उनकी आंखों में पानी आ जाता था।

रात को सोने जाने से पहले बापू ने मां-बेटे को फिर बुलाकर पूछा, "क्या कुछ कहना है ?" दुर्गाबहन बोलीं, "और तो क्या कहूं, आप जल्दी आयें और हम लोगों पर दया रखकर फिर उपवास की बात न करें।" बापू ने उत्तर दिया, "यह उपवास भी मैंने नहीं किया। मैं तो राम के अधीन हूं। अगर मैं कर्तव्य-पालन की एक सम्पूर्ण मिसाल जगत के सामने रख जाऊं तो मेरे लिए वह बस है।"

बाबला के साथ आज बेडमिंटन और रिंग खूब अच्छी तरह खेला। कल नहीं खेले थे। इससे वह निराश था, आज खुश हो गया।

८ मार्च '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाकर लौटे तो दुख हुआ था। आज नारायण की यह आखिरी पुष्पभेंट है। फिर वह वहांपर कब आ सकेगा, यह भगवान ही जानता है। नारायण के मन में था कि सम्भव है, किसी कारणवश उसका जाना टल जाय। कल भंडारी के साथ नर्स की बात होरही थी, तब बापू ने उससे कहा था कि अभीतक दुर्गा बा की मदद करती थीं। अब वह जायगी तो बा को दूसरे की आवश्यकता होगी। बापू ने जो नाम सुझाये, उनके अलावा किसीको बाहर से लाने की भी बात चली। दुर्गाबहन का नाम आया। भंडारी कहने लगे, "क्या वह ठहरेंगी ?" बापू ने कहा, "ठहर तो जायंगी।" मैंने कहा, "नारायण को उनसे अलग नहीं किया जा सकता।" भंडारी कहने लगे, "उस बेचारे को अनिश्चित समय के लिए कैसे रोका जा सकता है ? उसके लिए वह सजा हो जायेगी।" नारायण ने बाद में सुना तो कहने लगा, "उनसे कहो कि मेरे लिए यहां रहना कोई सजा नहीं। मुझे यहां बहुत अच्छा लगता है। सेवाग्राम की तरह मेरा अभ्यास भी यहां अच्छा हो सकता है।" मगर भण्डारी से कुछ कहना फिजूल था। दोपहर को मां-बेटे को लेने के लिए दिलीपकुमार मोटर लाये।

दुर्गाबहन के जाने से पहले बापू ने उनको बुलाया। दुर्गाबहन ने फिर कहा, "जल्दी आना।" बा कहने लगीं, "पापी छोड़ें तब तो ! वे किसीकी नहीं सुनते।" बापू का मौन था। उन्होंने लिखा, "सरकार भले न सुने, मगर सरकार के ऊपर भी एक बड़ा सरकार है। वह सबकी सुनता है। वह निर्बल का बल है।" साढ़े तीन बजे की गाड़ी पकड़ने के लिए वे लोग यहां से ढाई-पौने तीन बजे निकले। हम लोग बरसाती से ही वापस आ गये। बाहर जाने से कहीं कटेली रोकें न, यह सोचकर आगे बढ़े ही नहीं। मगर बा बाहर तक गईं।

घर बहुत सूना लगने लगा है। भाई तो बहुत ही उदास होगये। रात को बापू का काम भी नौ-सवा नौ बजे पूरा हो गया। बाद में कनु कुछ भजन सुनाता रहा, कुछ बातें करके भाई को हँसाता रहा। साढ़े दस बजे सब सोने को उठे।

९ मार्च '४३

आज केवल डा० शाह आये और सरकार को खबर भेजने के लिए कुछ बातें पूछ गये।

आज बापू का वजन लिया। ९९ पौंड निकला।

बा की मालिश आदि आज मैंने की। दोपहर में कुछ सो भी गई। मगर तो भी रात को थकान लगती थी। दिनभर घर में उदासीनता-सी भरी रहती थी। बुरा लगता था। कनु मेरे पास व्याकरण सीखता है। आज उसने सरोजिनी नायडू के साथ 'ट्रेजर आइलैण्ड' पढ़ना शुरू किया है।

कल से बकरी के दूध का मक्खन निकालना शुरू किया है; क्योंकि बापू की केलोरी वैल्यू[1] बढ़ाने के लिए मक्खन की आवश्यकता है। कल तो ½ औंस निकाला था, आज पौन औंस निकला।

डा० गिल्डर का हृदय की धड़कन का नक्शा आया। सरोजिनी नायडू का और बापू का नक्शा भी उन्होंने लिया। भाई का और बा का मैंने लिया। उनसे कार्डियोलोजी[2] की छोटी-सी किताब भी पढ़ने को लाई, मगर आज वह शुरू नहीं कर पाई।

१० मार्च '४३

आज से बापू ने भाई को भी अपनी सेवा में हिस्सा दिया, इसलिए मेरे पास दोपहर को दो-एक घंटे खाली बचे, जिनमें अखबार और कार्डियोलोजी की किताब देखती रही।

आज भाई ने मक्खन निकाला। रोज से ज्यादा निकला, मगर बकरी ने आज दूध बहुत कम दिया, इसलिए कल मक्खन नहीं निकाल सकेंगे। आज का आधा कल के लिए रख लिया।

कनु आज खेलने के लिए आया। बहुत हँसाता रहा। रात को भाई ने बापू का सब काम किया। कनु कल मीराबहन से अंग्रेजी बातचीत और भजन सीखता रहा।

---

[1] उष्णताजनक शक्ति

[2] हृदय-विज्ञान

मैंने कुछ पढ़ा।

गरमी बहुत पड़ने लगी है।

बापू का रक्तचाप सुबह नहीं देखा था। शाम को प्रार्थना से पहले देखा तो १२६/८२ निकला।

शाम को बापू के लिए गुड़ बनाया। दूध नहीं डाला। था ही नहीं।

११ मार्च '४३

आज से मीराबहन ने डा० दीनशा मेहता से एनीमा और मालिश इत्यादि लेना शुरू किया है। इसका असर उनकी तबीयत पर अच्छा होगा।

आज भंडारी आये। कहने लगे, "कनु को यहां से जल्दी जाना होगा। किसी दूसरे को सेवा के लिए दे सकेंगे।" मैंने कहा, "मगर बा की तरह नहीं होना चाहिए कि दुर्गाबहन चली गई और कोई आया भी नहीं।" वह कहने लगे, "तुम अपना मत लिख सकती हो।" इसलिए दोपहर को मैंने और डा० गिल्डर ने लिखा कि हमारी समझ में बा को रोज के लिए और बापू को एक महीने के लिए नर्स की आवश्यकता है। कनु रह सके तो सबसे अच्छा होगा; क्योंकि वह बापू की आवश्यकताएं समझता है।

बापू ने आज शाम को सब्जी नहीं ली, मगर रात को उन्हें कब्ज-सा महसूस हुआ, इसलिए कल से दोनों वक्त सब्जी लेंगे।

बापू का रक्तचाप आज सोते समय देखा। १५६/९८ निकला।

कलवाले गुड़ में नीबू का रस डालकर उसे आज फिर गरम किया। अच्छा बन गया है। अब बापू काफी गुड़ खा सकेंगे।

१२ मार्च '४३

आज भंडारी नहीं आये। दोपहर को उन्होंने कहलाया कि प्रेमाबहन यहां हैं और उन्हें बा के लिए बुला सकते हैं। चार लड़कों के भी नाम आये। उनमें से एक बालजीभाई का लड़का है। कनु की जगह कोई दूसरा आये, सरोजिनी नायडू को यह पसन्द न था। हम सबको भी। जितने दिन में नया आदमी काम समझेगा, उतने दिन में उसके जाने का समय आ जायगा। फिर वह सबके साथ कैसे हिल-मिल सकेगा, यह भी पता नहीं। मुझे तो एक ही चिन्ता है कि कोई भी आये या जाय, बा को और बापू को सन्तोष हो तो ठीक है।

१३ मार्च '४३

भण्डारी आज फिर आये और बापू से कहने लगे कि वह उन चारों नामों में से किसीको चुन लें। कनु को तो भेजना ही होगा। दूसरे कुछ नाम उनके पास और आनेवाले थे। प्रेमाबहन के सिवा किसी बहन का नाम नहीं दिया था, मगर वह कहने लगे, "कनु के बारे में लिखा है। उत्तर जल्दी आ जायगा।" बापू की इच्छा कनु के बदले में किसीको लेने की नहीं है, मगर भण्डारी आग्रह करने लगे, "प्यारेलाल और सुशीला पर बहुत दबाव पड़ेगा। आप किसीको चुन लें।" शायद सरकार को शर्म आती होगी कि इस स्थिति में भी बापू के पास कोई मदद के लिए न हो, यह ठीक नहीं। उनके जाने के बाद बापू ने मुझसे पूछा, "तुम लोगों को तय कर लेना चाहिए कि किसीको बुलाना है या नहीं।" मैंने कहा, "आप अगर किसीको नहीं बुलाना चाहते तो हमारी खातिर किसीको बुलाने की आवश्यकता नहीं है।" बापू को यह अच्छा लगा। खाने के समय भण्डारी को एक पत्र लिखवाया कि सरकार का इस तरह का वर्ताव उन्हें अच्छा नहीं लगा। उन्हें कनु की जगह किसीको लेना पसन्द नहीं; क्योंकि उसमें उनकी मानहानि है। पत्र श्री कटेली को दिया और उसे उन्होंने अधिकारियों के पास भेज दिया। हमें ऐसा लगने लगा कि शायद कनु को आज ही जाना पड़े।

डा० गिल्डर कहने लगे, "तुम, प्यारेलाल और मैं आठ-आठ घण्टे ड्यूटी कर लिया करेंगे।" मुझे यह अच्छा लगा। जहांतक बनेगा, हम डाक्टरसाहब को कष्ट नहीं देंगे। उनकी इतनी सहानुभूति दिखाना ही काफी है।

शाम को खूब खेले। अच्छा लगा। थकान भी लगने लगी। कनु ने आज भजन कराने को कहा था, मगर कराया नहीं।

डा० गिल्डर के साथ दोपहर कुछ दिल की धड़कन के चित्र देखे। कुछ समय बातें करते रहे।

१४ मार्च '४३

आज भण्डारी फिर आये। आज वह डा० दीनशा मेहता की जाने की बात करने लगे। उनके पास एक ही रोज कनु और दीनशा के बारे में आर्डर आया था, मगर वह हम लोगों को धीरे-धीरे खबर दे रहे थे। मैंने और डा० गिल्डर ने दोपहर को उन्हें एक पत्र लिखा कि डा० दीनशा को कम-से-कम इस महीने के अन्त तक आने देना चाहिए। शुरू में इस बारे में बात भी हो गई थी। उस वक्त ऐसा कहा गया

था कि कनु और डा० दीनशा के बारे में कोई मुश्किल नहीं आनेवाली है।

दोपहर को डा० गिल्डर काफी समय तक मुझे यह समझाते रहे कि गांवों और शहरों में डाक्टरी मदद कैसे पहुंचाई जानी चाहिए। मैंने उनके सामने इस बारे में बापू के कुछ विचार रखे। उन्हें लगता था कि सच्चे सेवाभावी लोग मिलें, तभी बापू की योजना सफल हो सकती है, अन्यथा नहीं।

कल से मैंने शाम को खाने से पहले स्नान करना शुरू किया है। बहुत अच्छा लगता है। कौन जाने कबतक यहां रहना है, इसलिए व्यवस्थित तरीके से जैसा जीवन चलना चाहिए, वैसा करना अच्छा है। कल बापू कह रहे थे, "मेरे मन में अब धीरज है। जबतक रहना पड़ेगा, रहेंगे।" यह धीरज कायम रहे तो हमारे लिए बस है।

१५ मार्च '४३

आज भण्डारी नहीं आये। कनु के बारे में भी कोई आर्डर नहीं आया। कल जो पत्र लिखा था, आज उसीमें कुछ सुधारकर फिर उसे भेजा। मीराबहन को डा० मेहता के न आने की बात सुनकर सबसे अधिक दुःख हुआ। कहने लगीं, "मेरा इलाज अधूरा रह जायगा।" बात सच है। डा० मेहता नहीं आयेंगे तो इच्छा होने पर भी हममें से कोई मीराबहन की मालिश नहीं कर सकेंगे।

शाम को खूब खेले। दिन में कोई खास घटना नहीं घटी।

बापू की चलने की शक्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है।

१६ मार्च '४३

आज सुबह डा० शाह आये। बापू का वजन लिया। १०२ पौण्ड निकला। तीन पौण्ड पिछले हफ्ते में बढ़ा है। बापू खाना खा रहे थे, तब कटेलीसाहब आये। उन्हें भण्डारी ने टेलीफोन किया था कि डा० मेहता दूसरा आर्डर आने तक आ सकते हैं। हमारे पत्र का कुछ असर हुआ दीखता है।

दोपहर को डा० गिल्डर के साथ करीब दो घण्टे बातें करती रही। पहले तो डाक्टरी ओहदों की बातें होती रहीं, फिर सेवाग्राम में डाक्टरी काम की योजना की बात चली। भविष्य में मेरे अपने काम की इसी सम्बन्ध में कुछ चर्चा हुई। कार्डियोलोजी की पुस्तक थोड़े समय तक देखती रही।

१७ मार्च '४३

कनु ने करीब एक हफ्ते बाद आज फिर मुझसे व्याकरण पढ़ना शुरू किया।

शाम बा को दिल की धड़कन का दौरा हुआ। करीब दो घण्टे चला। फिर अपने-आप ठीक होगया। गले के पीछे की एक नस को दबाने से हमेशा उनका दौरा बन्द हो जाता है, पर आज नहीं बन्द हुआ। उनके लिए 'क्विनिडीन सल्फेट' दवा मंगा भेजी, मगर दूकानवाले ने 'क्विनीन सल्फेट' भेज दिया। कैसा दूकानदार है! अगर कहीं किसी नुसखे में डाला होता तो भूल का हमें पता भी न चलता। रात को डा० शाह डा० कोयाजी के पास से १२ गोली क्विनिडीन की मांगकर लाये। हमारी दवा आयेगी तब इसे वापस करना होगा। यह दवा आजकल मिलती कम है।

रात को मीराबहन, कनु और मैं एक साथ 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रास' गया। अच्छा लगा। पीछे भाई के साथ थोड़ी देर पढ़ती रही।

बा रात को अच्छी तरह सो गई। गरमी सख्त थी।

१८ मार्च '४३

आज सुबह भंडारी आये। कहने लगे कि मेहता और कनु २६-२७ मार्च तक चले जायें तो उचित होगा। मैंने कहा कि लगभग ठीक है। बोले कि अब लगभग की बात न करो। फिर कहने लगे कि बहुत करके डा० गिल्डर अब यहीं रहेंगे। मनु आ जायगी, मगर मनोज्ञाभाभी और मनु गांधी दोनों में से किसको बुलाते हैं, यह उन्हें पता नहीं चलता था, इसलिए पूछ गये।

बा आज बिल्कुल अच्छी थीं। सुबह आराम करने को कहा तो मुझसे चिढ़ गईं। जब उनकी तबीयत ठीक रहती है, तब उन्हें बिठा रखना कठिन होता है।

दोपहर में सख्त गरमी थी। अभी रात को कुछ हवा चली है। अच्छी लगती है।

कल डा० गिल्डर की कुछ डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं आई हैं। उनमें से एक आज देखती रही।

: ४२ :

सरोजिनी नायडू की बीमारी और रिहाई

१९ मार्च '४३

आज सरोजिनी नायडू की तबीयत अच्छी नहीं है। सिर में चक्कर आते हैं। पतले दस्त हो गये हैं। नाड़ी तेज है और कमजोरी लगती है। रात में उनके पास

कनु को सुलाया। मैंने उनके पास सोने को कहा तो उन्होंने मनाही की। कहने लगीं, "तुम्हारी बापू के पास आवश्यकता होगी।" मुश्किल से कनु को वहां सोने दिया।

दिन में आज कुछ खास काम नहीं कर पाई। खूब गरमी पड़ती है। दिन योंही निकल जाता है।

सुबह डा० शाह आये। सरोजिनी नायडू की तबीयत उस समय अच्छी थी, मगर तो भी वह बहुत दिनों से बीमार-सी हैं। डा० शाह कह रहे थे, "अगर वह चली जायं तो तुम लोगों की देखभाल कौन करेगा ?" मगर हमारी देखभाल के लिए उन्हें रोका थोड़े ही जा सकता है ! उनकी तबीयत को देखते हुए उन्हें छोड़ना ही चाहिए।

२० मार्च '४३

आज भी सरोजिनी नायडू बीमार हैं। थोड़ा बुखार भी है। चक्कर तो आते ही रहते हैं। सुबह भंडारी और शाह आये। उन्होंने रिपोर्ट भेजी है कि सरोजिनी नायडू को बहुत बीमार समझना चाहिए। शाम को फिर आये। उन्हें अस्पताल जाने को कहने लगे। सरोजिनी नायडू ने इन्कार किया। उन लोगों ने काफी जोर लगाया, मगर वह न मानीं। तब वह बापू को बुलाकर ले गये। वह बोलीं, "अस्पताल के बजाय मैं घर जाना पसंद करूंगी।" मगर घर जाना तो सरकार के हाथ में रहा। आखिर इतना मानीं कि गुसलखाने उठकर नहीं जायंगी।

मनु भी शाम को आ गई नागपुर-जेल की बातें बताती रही।

भंडारी ने आज कहा कि डा० दीनशा का आना सोमवार से बन्द करने का विचार है। प्यारेलालजी उनकी जगह मालिश कर सकते हैं। भाई ने उन्हें दोपहर को पत्र लिखकर बताया कि वह दीनशा की जगह क्यों नहीं ले सकते।

२१ मार्च '४३

कल रात में सरोजिनी नायडू के पास सोई। वह काफी सोती रहीं। बीच-बीच में उठकर बैठ जाती थीं। बुखार तो था ही। सुबह छः बजे मापा तो १०१ निकला, दिन में फिर बढ़ा और दोपहर को १०५ तक गया। डा० शाह आये। भंडारी बम्बई गये थे। बापू ने डा० शाह से सरोजिनी नायडू के लिए एक नर्स लाने को कहा। डा० शाह कहने लगे कि साढ़े दस बजे भण्डारी बम्बई पहुंचेंगे। ग्यारह-बारह बजे उन्हें टेलीफोन करके वह पूछेंगे। मगर दोपहर को भंडारी का टेलीफोन आया कि सरकार ने सरोजिनी नायडू को छोड़ दिया है। वह कहां जाना चाहती हैं, यह पूछ लें।

सरोजिनी नायडू ने पर्णकुटीर जाना पसंद किया।

सुबह श्रीमती दीनशा मेहता आकर सरोजिनी नायडू की देखरेख करने लगीं। उनका बुखार तेज था। मैं और मीराबहन भी दूसरे कामों से समय निकालकर आते-जाते रहते थे। आज सुबह हमने सरोजिनी नायडू के कमरे से खाने की मेजें निकाली थीं, ताकि उनको आराम मिल सके। सामान की अलमारी निकालने की तैयारी में थे कि दोपहर को उनके छूटने की खबर आ गई। उनका सामान बांधा। मैंने जो तस्वीरें बनाकर उन्हें दी थीं, उनपर कोई चीज रखी जाने से धब्बे पड़ गये थे, इसलिए उन्हें ठीक किया। उन्हें तैयार किया। पांच बजे डा० शाह आये और एम्बुलेन्स कार मंगवाई। करीब साढ़े पांच बजे सरोजिनी नायडू रवाना हुईं। उनका बुखार १०२ पर आ गया, मगर उल्टियां खूब हो रही थीं। डा० दीनशा मेहता, उनकी पत्नी और डा० शाह उनके साथ गये। वह पर्ण-कुटीर जा रही थीं। उनके जाने के बाद घर सूना हो गया।

डा० दीनशा ने आज सरकार को एक खत लिखा है, जिसमें उपवास के बारे में अपने अनुभव की चर्चा की है और कहा है कि उन्हें गांधीजी की सेवा में और लम्बे अरसे तक रहने की आवश्यकता है।

: ४३ :

अहिंसा का प्रयोजन

२२ मार्च '४३

सरोजिनी नायडू के जाने से घर बहुत ही सूना हो गया है। उपवास के बाद जिस रोज माताजी पूना से गई थीं, उस रोज भी इतना सूना नहीं लगा था।

आज बापू की मालिश मैंने और भाई ने मिलकर की। डा० गिल्डर भी पास खड़े थे। बोले, "बापू को कहीं यह न लगने पाये कि दीनशा गये तो अब उनके लिए कुछ होता ही नहीं है। इससे तबीयत का सुधार रुक सकता है।"

२३ मार्च '४३

भाई का हाथ कट गया था, इसलिए मैं मालिश कर रही थी। इतने में डा० गिल्डर ने आकर दूसरी तरफ की मालिश करनी शुरू कर दी। भाई आये और

हँसते-हँसते कहने लगे, "ज़रा मैं भी तो देखूं कि दो एम० डी० कैसे मालिश करते है !" बापू से पूछा, "कैसा लगा ?" वह भी हँसने लगे। बोले, "चलेगा। मैं जल्दी प्रमाणपत्र देनेवाला नहीं हूं।"

शांतिकुमारभाई का कनु के लिए पत्र आया। लिखा था कि मेरी माताजी को तेज बुखार आता था। चिंताजनक स्थिति हो गई थी, मगर अब अच्छी हैं।

२४ मार्च '४३

बापू को आज करीब आधे फर्लांग तक चलाया। धीरे-धीरे चलना बढ़ा रहे हैं। मालिश आज भी डा० गिल्डर ने और मैंने की।

मनु ने बा का सेवा-कार्य अच्छी तरह संभाल लिया है। बा अब घर के काम में भी रस लेती हैं। उनकी तबीयत भी अच्छी जान पड़ती है।

गरमी बढ़ती ही जाती है। दोपहर को बापू के कमरे में करीब एक हफ्ते से पंखा चलता है।

आज माताजी की और खबर मिली। वह बहुत बीमार हैं। दस दिन से तेज बुखार आता था। दो दिन से कुछ कम है। इस खबर से बड़ी चिन्ता हो रही है। इस उमर में मधुमेह के साथ लम्बा बुखार मामूली बात नहीं।

२५ मार्च '४३

आज शाम को जब मैं कनु को व्याकरण सिखा रही थी तब देखा कि बा लेटी हैं। उठकर पूछने गई तो पता चला कि वही दिल की धड़कन का दौरा हो गया है।

आज पौने चार घंटे तक यह दौरा चला। रक्तचाप शुरू में १४०/९० था, बाद में ९६/६६ पर जा पहुंचा। थोड़ी देर शंका हुई कि सम्भवत: मस्तिष्क में खून की गांठ (कोरोनरी थ्रोम्बोसिस) होगी, मगर उसके जैसी बेचैनी न थी। बा का सामान्य रक्तचाप ११०/७० था। उस हिसाब से तो रक्तचाप बहुत नहीं गिरा था। मगर तो भी चिंता काफी हो गई। डा० शाह को खबर दी। वह आये। दिल की धड़कन का चित्र लेने के लिए कोयाजी को फोन किया। उनकी मोटर उन्हें उस समय नहीं मिल सकती थी, इसलिए डा० शाह उन्हें लेने गये। उनकी मोटर छोटी थी। सो घर जाकर अपनी बड़ी मोटर लाये। फिर कोयाजी के यहां थोड़ा रुकना पड़ा। वह दीनशा के बारे में अपना अनुभव डा० शाह को बताते रहे। नतीजा यह हुआ कि डा० शाह धड़कन का चित्र लेने की मशीन लेकर आये, उससे दो-चार मिनट पहले दौरा बन्द हो चुका था। ई. सी. जी. नार्मल निकला। अफसोस हुआ

कि मशीन वक्त पर नहीं पहुंची।

रात में बा को नींद अच्छी आई, मगर डरती थीं कि कहीं फिर से कुछ न हो जाय।

दोपहर को बा के नाम सेवाग्राम से लीलावती का पत्र आया। लिखा था कि शंकरन और पंजाब का झगड़ा हुआ था, इस कारण दवाखाना बन्द करना पड़ा है।

२६ मार्च '४३

आज मोहनलाल का अंग्रेजी में लिखा पत्र आया। वह उसने बम्बई सरकार के सेक्रेटरी के दफ्तर में बैठकर लिखा था। माताजी की अच्छी खबर थी। दो रोज से बुखार नहीं था, साथ ही सेक्रेटरी की ओर से संदेश था कि प्यारेलाल गुप्त ने संदेश भेजा है कि आप लोगों की मां सख्त बीमार हैं। दोनों पत्रों की तारीख २५ मार्च थी, मगर उन्हें संदेश पहले मिला होगा। भेजने में देर हुई होगी। मोहनलाल के पत्र की खबर ही हमने सच्ची मानी।

टॉटेनहम का उत्तर भाई को मिला। 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' वाली किताब के बारे में भाई ने उनसे पूछा था कि क्या वह उसे गांधीजी को भेजेंगे? उन्होंने लिखा कि गांधीजी चाहते हैं तो भेजेंगे।

मथुरादासभाई का पत्र आया। उन्हें पांचवां ऑपरेशन करवाना पड़ेगा।

बापू आज उपवास के बाद पहली बार शाम को महादेवभाई की समाधि पर गये। कनु चाहता था कि उसके जाने से पहले वह वहां हो आयें।

२७ मार्च '४३

आज कनु को जाना था। दिन का काफी समय उसके साथ बातचीत में गया। भाई की अपनी घड़ी ठीक होकर आ गई थी। उन्होंने वह मुझे कनु को देने के लिए दी। जाते समय घड़ी का रक्षाबंधन मैंने उसे बांध दिया। उसका जाना अखर रहा था, क्योंकि वह बहुत हँसाता रहता था और काम भी खूब करता था। उसके जाने से बहुत सूना लगने लगेगा। सोचा था कि जाने से पहले मुझे कुछ भजन भी सिखा देगा। मगर वह न कर सका। शाम को प्रार्थना के बाद गाड़ी उसे ले गई।

रात में काफी समय तक डा० गिल्डर, भाई, कटेलीसाहब और मैं साथ ही बैठे रहे। डा० गिल्डर अपने पुराने अनुभव सुनाते रहे।

सरोजिनी नायडू की खबर अच्छी है। बा अभीतक काफी अशक्त हैं।

आज शाम को भी बापू महादेवभाई की समाधि पर गये।

२८ मार्च '४३

आज मालिश के समय श्री कटेली खबर लाये कि रामदासभाई को एक मुलाकात की इजाजत मिली है। बापू ने चार बजे उन्हें बुलवाया था, लेकिन वह पांच बजे आये। बा को बहुत अच्छा लगा। हम हँस रहे थे। हफ्ते में एक बार एक पुत्र उन्हें मिल जाय तो उनकी तबीयत अच्छी रहे। मैंने डा० गिल्डर से हँसी में कहा, "आप नुसखा लिखिये।"

रामदासभाई के जाने के बाद हम लोग खाने बैठे। इतने में बापू नीचे समाधि पर फूल चढ़ाकर आये। पीछे हम लोग उनके साथ घूमे। आज बापू आधा घंटा घूमे।

दोपहर को भाई के साथ बातें होने लगीं। भाई बोले, "अहिंसा के असर से हिंसा की वृद्धि हो तो वह आश्चर्यजनक बात कही जा सकती है न! अपनी और मुस्लिम लीग की मिसाल लीजिये। जितनी आपकी अहिंसा बढ़ती है, उतना ही उन लोगों का जहर बढ़ता है। यह क्यों?"

बापू कहने लगे, "ऐसा ही होना चाहिए और यह मैं नई चीज नहीं कह रहा हूं। दक्षिण अफ्रीका में भी वही हुआ था। वहां एक वर्ग ऐसा पैदा हो गया था, जो मेरे खिलाफ जहर उगलता रहता था और मुझे मारने तक को भी तैयार था और वह ऐसी जगह में, जहां मैं बच्चे-बच्चे को पहचानता था। अहिंसा का काम ही है सब मैल ऊपर ले आना। दूसरे शब्दों में अहिंसा का काम भंगी की तरह सफाई करने का है।

"डोक जब मेरे बारे में अपनी किताब लिखकर लाया था तब मुझसे उसे नाम क्या देना, यह पूछने लगा। मैंने कहा—मैं नहीं बता सकूंगा। उसने नाम पसंद किया था: 'ए स्कैवेन्जर' (एक महतर), मगर उस नाम का एक उपन्यास भी था, इसलिए उसे वह नाम पसंद न था। मुझे तो पसंद था, मगर पोलक ने उसे रद्द किया। आखिर डोक की किताब को 'एन इण्डियन पैट्रियॉट इन साउथ अफ्रीका' (दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देशप्रेमी), यह नीरस-सा नाम मिला।" फिर डोक कैसे उनके पास आया, यह बताते रहे।

: ४४ :

गुप्त नीति का विरोध

२६ मार्च '४३

आज बापू का मौन था। श्री कटेली को बुखार आ गया। गला खराब है। बा का ठीक चलता है, लेकिन वह कुछ कमजोर हैं।

भाई ने बताया कि रात में सोते समय उन्होंने बापू से पूछा, "जनता में विचारों के समन्वय (Co-ordination of thought) के द्वारा संगठन हो सके तो सर्वोत्तम है, किंतु आज की परिस्थिति में अगर अहिंसा के मार्ग पर जनता को लाने के लिए गुप्त नीति अनिवार्य हो तो भी उसे आप क्या त्याज्य मानेंगे?"

बापू ने उत्तर दिया, "हां।"

बापू का मत है कि यह दलील भूल से भरी है। कहने लगे, "आज चाहे गुप्त नीति व्यवहार की दृष्टि से लाभदायक लगे, मगर अन्त में यह देखने में आयेगा कि उससे फायदे की जगह हानि अधिक होती है। इस रास्ते से हम सामुदायिक अहिंसक क्रांति के ध्येय को नहीं पहुंच सकते। उल्टे इस रास्ते में उससे रुकावट आ सकती है। मुझे इसमें शंका नहीं। इस चीज के गर्भ में ही उसकी निष्फलता के बीज पड़े हैं।"

३० मार्च '४३

आज अखबार में खबर थी कि डा० विधान राय को यहां आने की इजाजत नहीं मिली। बुरा लगा।

बापू को शाम को कुछ जल्दी घुमाने ले गई। थोड़ी देर घूमकर वह महादेव-भाई की समाधि पर फूल चढ़ाने को गये। मीराबहन नाराज होगईं कि इतनी जल्दी बापू को घुमाने नहीं ले जाना चाहिए था।

शाम को बेडमिंटन और रिंग एक-एक बार खेले। अच्छा लगा।

३१ मार्च '४३

आज डा०गज्जर परीक्षा के लिए बापू के खून का नमूना लेने को आनेवाले थे। सुबह उन्हें घूमने नहीं दिया। उन्होंने स्नानादि से जल्दी छुट्टी पाई जिससे कि बारह बजे तक उन्हें दो घंटे आराम मिल सके; क्योंकि खाना उसके बाद ही खा सकते थे। बारह-साढ़े बारह बजे गये, लेकिन डा० गज्जर का पता ही न था। आखिर

डा० विधान राय का श्री कटेली को टेलीफोन आया कि बापू को खाना खिला दो; क्योंकि डा० गज्जर दो-ढाई बजे से पहले नहीं आयेंगे। वह खून की कुछ परीक्षा आज करेंगे, कुछ कल।

डा० गज्जर चार बजे आये। 'ब्लड काउण्ट'[1] आज किया। कल 'ब्लड-केमिस्ट्री'[2] करेंगे। उनके साथ एक पुरुष और स्त्री मदद के लिए हैं। स्त्री हार्डिज कालेज की डा० डीमोन्टी की रिश्तेदार और बम्बई के एक पत्रकार मोराइस की पत्नी हैं। डा० गज्जर के साथ दो-तीन साल से पैथॉलोजी में काम करती हैं। कहने लगीं, "मेरे पति ने गांधीजी को'स्टोरी ऑव इण्डिया' किताब भेजी थी, वह मिली या नहीं ?" यहां आई ही नहीं। कौन जाने कितनी किताबें ऐसे ही पड़ी रहती होंगी ! सरोजिनी नायडू ने अपना बाकी सामान मंगवा भेजा है, इसलिए मैंने सब इकट्ठा करके भेज दिया।

डा० विधान राय नहीं आ सके। सरकार ने उन्हें इजाजत नहीं दी।

शाम को बापू मीराबहन के साथ बातें करने लगे। मीराबहन ने पूछा, "आपका विचार है कि जो लोग गुप्त रीति से आंदोलन चला रहे हैं, वे अपनेको सरकार के हवाले कर दें। मैं जानती हूं कि सतयुग की आदर्श स्थिति में ऐसा होना चाहिए, लेकिन हमें तो आज जैसी दुनिया है, उसीके साथ चलना है। बिना नेताओं के आंदोलन कैसे आगे बढ़े ?"

बापू बोले, "मेरा तो यही कहना है कि अपनेको सरकार के हवाले कर देने के फलस्वरूप आंदोलन खूब आगे बढ़ेगा। हमारे साधन जितने पवित्र होंगे, उतना ही देश के और लोगों के लिए अच्छा होगा। अगर मेरे बताये रास्ते पर चले होते तो दो में से एक बात होकर रहती : या तो सिर्फ वे लोग, जो सत्य और अहिंसा में पक्का विश्वास रखते हैं, आंदोलन में हिस्सा लेते, जिससे कि आंदोलन ठंडा न पड़ने पाता, जैसाकि वह पड़ गया है; या कोई भी उसमें हिस्सा न लेता। इन दोनों रास्तों से हमें गुप्त नीति जैसे गलत तरीकों से छुटकारा मिल जाता। तोड़-फोड़ के आंदोलन को हमारे सिर मढ़कर खूब प्रचार किया गया है। बेशक तोड़-फोड़वालों ने साहस और कुशलता तो बहुत दिखाई है, लेकिन इस सबका मेरे ऊपर कोई

---

[1] रक्तकण की गिनती

[2] रक्त की रासायनिक जांच

प्रभाव नहीं पड़ा। मैं जानता था कि तरीका गलत है और आंदोलन को जल्दी-से-जल्दी बन्द हो जाना चाहिए। जब सरकार ने कहा कि उसने परिस्थिति पर काबू पा लिया है तो मैंने उसकी बात पर विश्वास कर लिया, लेकिन सरकार में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह देशव्यापी आंदोलन पर काबू पा सके। आंदोलन तो हमेशा नया बल पाकर चलता रहेगा।"

मीराबहन बोलीं, "दुबारा जब आंदोलन होगा तो या तो पूर्ण अहिंसात्मक होगा या पूर्ण हिंसात्मक।"

मैंने पूछा, "आपने तो कहा था कि इस वक्त हमारा लड़ाई का तरीका जेलें भरना नहीं है, फिर सरकार के हवाले अपनेको कर देने की यह सलाह क्या उसके विरुद्ध नहीं है?"

बापू कहने लगे, "नहीं, मैंने कहा था कि हम गिरफ्तारी का आवाहन न करके मृत्यु का करें। अगर हमारे काम के दौरान में हम पकड़े जाते हैं तो कोई बात नहीं है। मान लो, जयप्रकाश अपनेको सरकार के हवाले कर दे तो इसमें शक नहीं कि उसे कड़ी सजा मिलेगी, लेकिन उससे हमारा पक्ष मजबूत बनेगा। सरकार के हवाले अपनेको करने से लोग अपने गलत कदम को वापस ले लेते हैं। उनसे हमें कोई नुकसान नहीं हो सकता।"

मीराबहन कहने लगीं, "आपका यह विश्वास कि लोगों के प्रकट होने और परिणाम भुगतने से परिस्थिति सुधर जायगी, तर्क के आधार पर नहीं लगता, आपकी अंतर्प्रेरणा के आधार पर ही समझना चाहिए।"

बापू बोले, "वह तो है ही। सत्य और अहिंसा से किसीको हानि नहीं हो सकती।"

१ अप्रैल '४३

आज सुबह नौ बजे डा० गज्जर आये। काम करते-करते ११—११-३० बज गये। पीछे बापू ने स्नान किया। खाना खाने को बहुत देर हो गई।

दोपहर को मैं बिलकुल नहीं सोई। 'हिस्ट्री ऑव मेयो क्लिनिक्स' पढ़ती रही।

शाम को बापू मीराबहन के साथ एमरी के भाषण की बातें करते रहे। बापू हँसकर कहने लगे, "या तो मैं इन बातों पर त्यौरी चढ़ाऊं या कटु बन जाऊं अथवा हँस दूं। हँस देना बहुत अच्छा है।"

पीछे बापू मनु की चौथी रीडर लेकर मीराबहन को उसमें से कुछ समझाते रहे और उनसे व मुझसे किताब पढ़ने को कहा। मनु को उन्होंने इतिहास और व्याकरण भी पढ़ाया।

दोपहर को सख्त गरमी रही। दिल्ली के जून महीने का-सा मौसम है। शाम को ठंडी हवा चली।

प्रार्थना का समय सवा आठ होगया है।

२ अप्रैल '४३

आज बापू को सुबह घूमते समय कमजोरी मालूम हो रही थी, कारण रात में नींद का कम आना और कल सुबह नाश्ता न करना हो सकता है। उपवास के समय पहले तीन-चार दिन तक बापू को कमजोरी महसूस नहीं होती थी। अब एक समय का नाश्ता छूटने का भी असर होता जान पड़ता है।

दोपहर को आज भी नहीं सोई, पढ़ती रही। सुबह भी प्रार्थना के बाद नहीं सोई थी।

वाइसराय का राजाजी आदि को जो उत्तर मिला है, वह गजब का है। समझ में नहीं आता कि कोई ठीक दिमागवाला आदमी कैसे इस तरह की बातें कर सकता है! नीरो के या जार के जमाने में चाहे ऐसा होता रहा हो, मगर आजकल के जमाने में दुर्योधन की तरह सुई की नोक जितनी जमीन भी देने से इन्कार करना मनुष्य को चकित कर देता है।

बा को कल से पेशाब में जलन की शिकायत है। आज और बढ़ी है। बुखार भी आ गया। पेशाब पानी-सा साफ नहीं है। स्याहीचूस से छानने पर भी साफ नहीं हुआ। उसमें थोड़ी-सी चर्बी और पीप है। पहले बी-कोलाई[१] हो चुका है। वही फिर उभरा होगा। सल्फा (Sulpha) की गोली दी, बहुत फायदा हुआ, पर कमजोरी बहुत लगती है। प्रार्थना के बाद बा कहने लगीं, "मेरे पास बैठी रहो।" मैं बैठी रही। उन्हें नींद आई तब मच्छरदानी लगाकर चली आई।

डा० गिल्डर बम्बई के मेयर चुने गये हैं।

मीराबहन बगीचे में सोने जाती हैं। बरामदे में गर्मी बहुत लगती थी।

---

[१] पेशाब में बी-कोलाई कीटाणु आ जाने से गुर्दे में जलन और सूजन की बीमारी।

४ अप्रैल '४३

बा की तबीयत काफी अच्छी है। कमजोरी है, लेकिन बुखार और जलन नहीं है। इतनी थोड़ी सल्फा का इतना असर !

कल से सुबह पंद्रह मिनट के लिए बेडमिंटन खेलने जाती हूं। अच्छा लगता है। बापू सुबह-शाम अब महादेवभाई के समाधि पर जाते हैं और आधा घंटा घूमते हैं।

गरमी कल से कुछ कम है। बापू के कमरे में तो तीन-चार दिन से खस की टट्टी लगी है, इसलिए वहां खासी ठंडक रहती है।

मैंने अभ्यास का एक कार्यक्रम बनाया है। कल से ठीक तरह चलने लगेगा, ऐसी आशा है।

५ अप्रैल '४३

बा की तबीयत कुछ अच्छी है। कमजोरी काफी है। बापू का मौन है। अच्छा नहीं लगता।

मेरे अभ्यास का क्रम कुछ ठीक चला।

: ४५ :

राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल '४३

आज वजन लेने का दिन है। बापू चार पौण्ड बढ़े। हँसकर कहने लगे, "ऐसा ही बढ़ता गया तो मुझे वजन कम करने के लिए उपवास करना पड़ेगा।"

शाम को घूमते समय मनु पूछने लगी, "हमारे लोगों ने जो आंदोलन चलाया था, वह अगर अच्छी तरह चलता रहता तो अंग्रेजों को झुकना पड़ता या नहीं ?" बापू बोले, "मगर यह तोड़-फोड़ की लड़ाई अहिंसक लड़ाई न होती।"

मनु कहने लगी, "न सही। अहिंसा को ये लोग समझते कहां हैं ?" बापू बोले, "तो भी अगर हिन्दुस्तान का इतिहास देखो तो पता चलेगा कि हिंसा के मार्ग पर चलकर हिन्द ने हमेशा मार ही खाई है।"

बापू सदा कहते आये हैं कि हिन्दुस्तान के अंग-अंग में अहिंसा भरी है। अहिंसा हिन्द के लिए स्वाभाविक है, हिंसा अस्वाभाविक।

७ अप्रैल '४३

आज याद आया कि कल से राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हुआ है। हम लोग उसे भूल ही गये थे। छः और तेरह तारीख को सामान्यतः हम लोग उपवास करते हैं। निश्चय किया कि अब तेरह को करेंगे। बापू को याद न आया तो हम उन्हें बारह को याद दिलायेंगे। मगर बापू थोड़े ही भूलनेवाले थे। समाचारपत्रों में भी राष्ट्रीय सप्ताह का उल्लेख है, इसीलिए बापू ने कल उपवास करने का विचार किया। कातते तो हम सब हैं ही। इस हफ्ते में कुछ अधिक कातेंगे। मीराबहन के सिवा कल सबका उपवास होगा।

८ अप्रैल '४३

बापू ने आज दो बार आधा-आधा घंटा करके काता। डा० गिल्डर भी मुझसे पूनी लेने आये और तीन पूनी ले गये। वह तकली पर कातते हैं। सुना है, सूत बारीक निकालते हैं, लेकिन गति बहुत धीमी है। मनु ने भी काता। बापू ने टॉटेनहम के सेक्रेटरी के पत्र का उत्तर तैयार किया। मैंने रोज से दुगनी पूनी कातीं।

बापू ने वाल्मीकि-रामायण का गुजराती अनुवाद पढ़ना पूरा किया। कल से संस्कृत शुरू करेंगे।

९ अप्रैल '४३

हमें जेल में आये आज आठ महीने पूरे हुए। भगवान जाने अभी और कितने पूरे करने होंगे।

मैंने बापू के साथ बीस श्लोक वाल्मीकि-रामायण के पढ़े। भाषा सरल है।

दो मालाओं में धागा डाला। काफी समय चला गया। इससे आज पढ़ाई का कार्यक्रम बिगड़ा।

आज गरमी कम पड़ी है, इसलिए बापू ने अपने कमरे में खस की टट्टी लगाने से मना किया।

मीराबहन थोड़े दिनों से रोज शाम को खेलने आती हैं। बहुत रस लेती हैं। रात को कैरम भी खेलती हैं।

बापू 'हाफुस' (अलफान्सो) आम खाने से इन्कार करते हैं। गरीबों को ये नहीं मिल सकते, इसलिए बापू भी नहीं खाना चाहते।

मैंने डा० गिल्डर के साथ आधा घंटा डाक्टरी चर्चा की, थोड़ा-सा पढ़ा और मनु को सिखाया।

११ अप्रैल '४३

आज मीराबहन के साथ ड्राइंग करने का मेरा विचार था, इसलिए डा० गिल्डर के साथ नहीं बैठी। पढ़ाई आज भी कम ही हुई। समय जाते पता नहीं चलता।

डा० शाह और भण्डारी आये। डा० गिल्डर से बापू की रक्त-परीक्षा की रिपोर्ट वगैरा के बारे में मत पूछा। बाद में लिख भेजने को कहकर चले गये।

१२ अप्रैल '४३

आज बापू का मौन है, इसलिए उनके साथ रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ी। दूसरी पढ़ाई भी बहुत कम हुई। कल कैदियों को कुछ खाना देने का विचार किया है। उसका प्रबंध करने में कुछ समय गया। पिछली दफा उपवास के दिन बापू ने कहा था कि कैदियों को दूध क्यों नहीं दिया, इसलिए मैंने निश्चय किया था कि तेरह तारीख को उपवास होगा, तब ऐसा ही करूंगी। कल दूध की चाय बनाकर साथ में गेहूं के आटे का हलुवा सुबह दूंगी और दोपहर को खिचड़ी, सब्जी और केले। दूध तो इतना होता नहीं है कि सबको पूरा हो सके।

१३ अप्रैल '४३

आज राष्ट्रीय सप्ताह का आखिरी दिन है। घर में सबका उपवास है। सब-का-सब दूध इकट्ठा करके कैदियों को चाय दी, साथ में हलुआ और थोड़े-थोड़े दाल-सेव। यह तो नाश्ता हुआ। दोपहर को चार बजे खिचड़ी, सब्जी और केले सबको बांटे। बापू ने उन्हें राष्ट्रीय सप्ताह क्या है और इसका जन्म कैसे हुआ, यह सब समझाया।

: ४६ :

सरकारी आरोप-पत्र और उसका उत्तर (१)

१४ अप्रैल '४३

सरकारी पुस्तिका 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' आ गया है। बापू उसे पढ़ते रहे। उसमें लाल स्याही से कई जगह सुधार किये गए हैं। सचमुच उन लोगों ने जल्दी-जल्दी उपवास में बापू की मृत्यु के साथ छपाने के लिए ही तैयार कराया

होगा। बा बहुत कमजोर हैं। मानसिक स्थिति शारीरिक स्थिति को और बिगाड़ती है।

१५ अप्रैल '४३

आज भी बापू टॉटेनहम की पुस्तिका पढ़ते रहे। अब उसका जवाब लिखना शुरू करेंगे। सुबह वह डा० गिल्डर को अपने कुछ पुराने अनुभव बता रहे थे और दादाभाई नौरोजी व गोखले इत्यादि का भी उल्लेख किया। सार यह था कि बुद्धिमान लोग भला काम करने के बाद किसीको उसका पता नहीं लगने देते।

१६ अप्रैल '४३

बापू ने टॉटेनहम को उत्तर लिखना शुरू किया।

बा थोड़ी अच्छी दिखती हैं।

१७ अप्रैल '४३

आज शनिवार है। महादेवभाई की बड़ी याद आ रही है। क्या मृत्यु के बाद भी प्रियजन सचमुच इकट्ठे होते हैं? यह विचार मन में उठता है।

शाम को खेलते समय भाई के पैर के अंगूठे में चोट आई। शायद हड्डी टूट गई हो। बहुत दर्द था।

डा० गिल्डर के कमर और टांग के दर्द (साइटिका) के लिए रात में सोने से पहले आधा घंटा उनकी मालिश की।

१६ अप्रैल '४३

कल रात कुछ आम आये थे। उनमें से अधिकांश कैदियों को बांट दिये। बाकी घर में काम आ गये।

बापू आज भी रात में दस बजे तक लिखते रहे। मैं बैठकर 'हरिजन' में से सरकार की किताब में उद्धृत किये गए अंशों को निकाल रही थी। उनके उत्तर भी उन्हीं लेखों में भरे पड़े हैं! मगर सरकार ने अपने काम के वाक्य चुन लिये थे। डा० गिल्डर भी बैठे थे। सोने को बारह बज गये।

बापू का मौन था, इसलिए रामायण और बाइबिल नहीं पढ़ सकी।

२० अप्रैल '४३

आज वजन का दिन है। बापू का वजन एक पौण्ड कम हुआ। मेरा भी एक पौण्ड कम हुआ है। और सबका बढ़ा है।

डा० शाह सुबह आये। कल बा के रक्त की परीक्षा करायेंगे। सल्फोनो-

माइड्स दो-तीन दिन से बंद की है। आज उनके पेशाब में फिर मवाद था।

२१-२७ अप्रैल '४३

सरकारी पुस्तिका के उत्तर में बापू की सहायता करने में चार दिन लगे। उसके बाद तीन रोज उसी विषय में भाई की मदद की। बापू के उत्तर में उन्होंने जो सुधार किये थे, उन्हें अलग उतारा। एक शाम उसमें गई। डा० गिल्डर, मीराबहन और मैंने, सबने साथ बैठकर वह काम किया।

मनु घूमते समय बापू से कहानी सुना करती है।

हां, हमारा हिरण चला गया है। बापू ने कहा था कि इसे बंद देखा नहीं जाता। बेचारा अकेला कैद में पड़ा है। इसे दूसरे हिरणों के साथ कहीं रखो या छोड़ दो। छोड़ा नहीं गया; क्योंकि इतने दिनों से कैद में रहकर उसकी दौड़ने की आदत चली गई होगी। अगर छोड़ें तो उसे जंगली जानवर खा जायंगे। सो आठ आदमी आकर उसे पकड़ ले गये। पता चला कि उसे ले जाकर किसीके घर में बांध रखा है।

२८ अप्रैल '४३

आज रामदासभाई मुलाकात के लिए आये। उन्होंने सरकार से बहुत कहा, मगर उत्तर मिला कि मुलाकात नहीं हो सकती। सब आशा छोड़ देने के बाद कल रात श्री कटेली का उन्हें टेलीफोन गया कि मुलाकात की इजाजत मिल गई है और कल चार बजे आइये। उन्होंने डा० मेहता की क्लिनिक के बारे में अधिक बातें कीं व देवदासभाई और अमतुस्सलामबहन की खबरें भी दीं।

शाम को छः बजे डा० पटवर्धन डा० गिल्डर की आंख की फुंसी का आपरेशन करने आये। डा० गिल्डर पट्टी बांधे घूम रहे हैं। जिस आंख में मोतियाबिन्द हुआ था, वह आंख खुली है, मगर उसमें आपरेशन के बाद फिर मोतियाबिन्द होने के कारण दीखता कम है। पढ़ नहीं सकते।

आज मनु की आंख दुखती है।

शाम को रिंग खेलते समय मेरे हाथ में चोट आई। बहुत जोर-से लगी। दर्द होता है। कल बापू की मालिश नहीं हो सकेगी।

जितना समय खाली था, भाई के साथ बैठकर उनकी मदद की।

बापू आजकल हँसकर कहा करते हैं कि हमें यहां सात वर्ष तक रहना है। रामदासभाई बताने लगे कि अमतुस्सलाम बहुत चिंता करती हैं कि बापू फिर उपवास

करेंगे तो क्या होगा ! बापू बोले, "हमारी तो सात वर्ष यहां रहने की तैयारी है।" रामदासभाई ने कहा, "तो ग्राप धैर्यपूर्वक सात वर्ष तक यहां रहना चाहते हैं, इसका मैं ग्रम्तुस्सलाम को ग्राश्वासन दे दूं ?"

बापू ने कहा, "ग्ररे, सात वर्ष तो क्या, मुझमें तो जिन्दगीभर यहीं रहने का धीरज है।"

२९ ग्रप्रैल '४३

कल शाम को खेलते समय हाथ में चोट लगने के कारण ग्राज बापू की मालिश नहीं कर सकी। शाम को पांच मिनट बांये हाथ से खेली। बापू नाराज हुए, "क्या दूसरा हाथ भी बिगाड़ने का शौक है ?"

सुबह मालिश के समय गड़बड़ हो गई। मैंने मान लिया कि डा० गिल्डर ग्रौर भाई समय पर पहुंच जायंगे। भाई ने सुबह कहा था कि वह मालिश करेंगे। मैं स्नान करने को चली गई। ग्राकर देखा तो बापू मेज पर पड़े थे। मालिश करनेवाला कोई नहीं था। डा० गिल्डर के पास गई। उनकी ग्रांख का कल ग्रापरेशन हुग्रा था। पट्टी बंधी थी। इसलिए वह मालिश करने नहीं ग्रा रहे थे। भाई को बुलाने गई। वह स्नान करने गये हुए थे। उन्हें बुलाकर लाई। साढ़े नौ बजे मालिश शुरू हुई। बापू कहने लगे, "तुझे देखना चाहिए था कि मालिश समय पर शुरू होती है कि नहीं।"

डा० गिल्डर की ग्रांख खोलकर पट्टी बांधी। ठीक है। शाम को डा० पटवर्धन ग्राये। उन्होंने पट्टी खोल दी। शाम तक डा० गिल्डर चुपचाप पड़े रहे। पढ़ भी नहीं सकते थे। मैंने ग्रखबार पढ़कर सुनाया। थोड़ा समय उनके साथ कैरम खेली।

रात में मनु की ग्रांख धोई। फिर ग्रपने हाथ को सेंका। इससे दर्द कुछ कम हो गया।

३० ग्रप्रैल '४३

मैंने नया कार्यक्रम बनाया। उसपर थोड़ा-सा ग्रमल भी किया है। पूरा ग्रमल तो भाई की मदद मिलने पर ही कर सकूंगी। दोपहर ग्रौर शाम को उनके साथ काम करती रही। टॉटेनहम को बापू जो जवाब लिख रहे हैं, उसीका काम है।

मालिश से ग्राज भी मुझे छुट्टी रही। सेंक करते-करते हाथ थोड़ा जल-सा गया। दर्द कुछ कम है।

डा० गिल्डर के घर से ग्रामों का पार्सल ग्राया। ग्राज उनके विवाह की २९ वीं

सालगिरह है। बा ने सुना तो बापू से पूछने लगीं कि उनके विवाह को कितने साल हुए हैं...?" बापू मजाक करने लगे, "बा भी अपने विवाह का दिन मनाना चाहती है ?" हम लोग खूब हँसे।

१ मई '४३

आज कलक्टर आनेवाला था। बापू ने जल्दी मालिश शुरू करवाई। तैयार भी जल्दी हो गये। आज भाई, डा० गिल्डर और मैं, तीनों जने मालिश में रहे।

बाद में मैंने डा० गिल्डर इत्यादि के लिए मिठाई बनाई। दोपहर के बाद निश्चित कार्यक्रम चला। कुछ समय भाई के साथ बैठी। शाम को बापू साढ़े सात की जगह सात बजे घूमने निकल पड़े। पीछे वापस आ गये और आधा घंटा शाम को और एक घंटा रात को लॉर्ड सैमुएल के लिए मुझे पत्र लिखाते रहे।

२ मई '४३

आज भी बापू ने काफी समय तक लिखवाया, इसलिए भाई को नाममात्र का ही समय दे सकी। मनु को भी आज नहीं सिखाया। मगर रामायण और बाइबिल की पढ़ाई बापू के साथ हुई। लॉर्ड सैमुएलवाला खत पूरा हुआ। रात को बापू ने उसे दुबारा पढ़कर कुछ और बढ़ाया। देखने की इच्छा हो रही थी, मगर उन्होंने वह मीराबहन को दे दिया। पीछे डा० गिल्डर के पास जायगा। अब तो एक-दो दिन बाद ही देखने को मिलेगा।

शाम को खूब आंधी आई। हवा-पानी का इतना वेग रहा कि आदमी उड़ जाय। भाई के कुछ कागज उड़े। उन्हें ढूंढ़ने नीचे गई। हवा के वेग से सीढ़ी पर से गिरती-गिरती बची।

३ मई '४३

आज बापू का मौन था। रामायण इत्यादि कुछ पढ़ना नहीं था। लगभग सारा समय भाई के साथ बैठी। शाम को फिर आंधी आई, पीछे जोर की वर्षा। बाहर तो खेल नहीं सकते थे। बरसाती में खड़े होकर थोड़ी देर तक हम लोग रिंग खेलते रहे। इतने में बापू घूमने को निकले। ऊपर बरामदे में ही घूमे। महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने के लिए भाई चले गये। हवा का रुख ऐसा बदल रहा था कि बरामदे में चारों ओर उसके साथ पानी के छींटे आते थे। आखिर मीराबहन के यानी भोजन करने के कमरे में घूमे।

रात को भाई के पास से बापू ने टॉटेनहम की किताब के उत्तर-सम्बन्धी कागज

मांगे। भाई ने बुधवार की रात को देने का वचन दिया। रात को उनके साथ मैंने करीब बारह बजे तक काम किया।

बापू ने जिन्नासाहब को पत्र लिखा।

४ मई '४३

मैंने सारा समय भाई के साथ काम किया। आज आंधी इत्यादि खाली डराने के लिए ही शुरू हुई। शुरू भी नहीं हुई, ऐसा लगा कि अभी शुरू होगी। इतने में बन्द भी हो गई। शाम को अच्छी तरह खेले। अच्छा लगा। भाई कल रात तीन बजे तक काम करते रहे थे, इसलिए आज रात जल्दी सो गये। मैंने ग्यारह बजे तक काम किया। बापू लॉर्ड सैमुएल के पत्र का काम करते रहे। मुझे लिखाना चाहते थे, मगर भाई की मदद की वजह से बुलाना ठीक न लगा। मैंने कहा कि आशा है, कल मैं आपके काम के लिए खाली हो सकूंगी।

बापू ने जिन्नासाहब को जो पत्र लिखा था, वह आज की डाक में गया। डा० गिल्डर ने टाइप किया था।

५ मई '४३

भाई सुबह पांच बजे उठकर काम करने बैठे, लेकिन उन्होंने उन्हीं कागजों को लेकर काम किया, जिन्हें मैं ठीक-ठिकाने रख चुकी थी। नये कागजों को संभालकर रखने का काम बाकी था। मैंने बापू से कहा था कि शाम को चार बजे मैं आपके पास पहुंचूंगी, लेकिन चार बजे काम पूरा नहीं हुआ। बापू दो-तीन बार कह चुके थे कि तू वह काम पूरा कर, पीछे मेरे पास आना। इसलिए मैं चार बजे नहीं आई। पांच बजे बापू का खाना तैयार करने आई तो बापू कहने लगे, "तूने अपना वचन तोड़ा है।" मैंने अपनी गलती मान ली। मेरी नासमझी थी। खाना तैयार करके उनके पास ही बैठ गई। जो काम मुझसे करवाना था, वह उन्होंने मुझे समझाया। पौने छः से पौने सात बजे तक वह काम मैंने किया। खत पढ़ा। कहां क्या करना था, वह समझा। प्रार्थना के बाद बापू को उसके बारे में अपनी सम्मति दी। उन्होंने कुछ सुधारा और कुछ सुबह सुधारने के लिए कहा। मेरे हिस्से का भाईवाला काम बाकी था। बापू ने कहा, "उसे छोड़ दो।" रात के ग्यारह बजे सब कागज बापू ने ले लिये। कहने लगे, "अब मुझे मदद लेनी होगी तो मैं बुला लूंगा।" वह कागजों को तकिये के नीचे रखकर करीब बारह बजे सोये। तीन बजे के करीब उठ बैठे। तैयार होकर प्रार्थना करने को आये तो साढ़े तीन बजे थे। मुझे जगाने का प्रयत्न

किया, ऐसा बताते थे, मगर मैं तो उठी नहीं। भाई ने और बापू ने चुपचाप प्रार्थना की। पीछे बापू सैमुएलवाले पत्र का काम करने लगे।

६ मई '४३

मैं पौने छः बजे बापू के नाक साफ करने की आवाज सुनकर उठी। पूछा कि क्या प्रार्थना का समय हुआ? बापू ने बताया कि प्रार्थना तो हो चुकी। अब कुछ काम करके सोने को जाते थे। मैंने तैयार होकर वह पत्र लिया। इतने में बापू ने भाई को उसी पत्र के सिलसिले में कुछ लिखवाना शुरू कर दिया। सोये नहीं। बापू ने आज मुझे मालिश से छुट्टी दे दी और मैं घूमने के बाद स्नान करके उस पत्र की साफ नकल करने बैठी। जहां कुछ सुधार की गुंजाइश देखी, वहां निशान लगा दिया।

दोपहर खाने के बाद बापू ने जो नया लिखाया था, उसका काम किया। जो-जो शंकाएं मुझे हुईं, उनके बारे में शाम को पूछा। खाने के बाद बापू ने वह पत्र फिर पढ़ा। प्रार्थना करने के बाद उन्होंने उसे पूरा किया और कुछ सुधार भी किये। फिर वही पत्र डा० गिल्डर को टाइप करने और ध्यान से पढ़ जाने को कहा।

दोपहर को थोड़ी देर डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं, थोड़ा काता और बाइबिल पढ़ी। रामायण भी आज शुरू की और मनु को सिखाया।

घर से माताजी इत्यादि के पत्र मिले।

८ मई '४३

रोज का कार्यक्रम चलाने का प्रयत्न किया। डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने के समय बापू को 'हरिजन' में से जो कुछ देखना था, वह बताया। शाम को अनुवाद के समय मनु का दूसरा वर्ग लिया। जितने दिन काम के कारण मनु को सिखाया नहीं, उतने दिन उसे दो-दो बार पढ़ाना होगा।

९ मई '४३

सुबह भंडारी और शाह आये। मनु की आंख की बात होने लगी। भंडारी ने मुझसे पूछा, "तुम्हारी आंख अब अच्छी है न?" मैंने कहा, "मेरी आंख को तो कुछ हुआ ही नहीं था। मनु की आंख खराब है। उसके चश्मे का नम्बर निश्चित करना चाहिए।" डा० शाह बोले, "पटवर्धन कह रहे थे कि चश्मे का नम्बर निश्चित करना आवश्यक नहीं।" मैंने कहा, "नहीं, वे तो इसीलिए यहां आनेवाले हैं। डा० गिल्डर ने मुझसे ऐसा ही कहा है।" वह बोले, "मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं।

डा० गिल्डर ने डा० पटवर्धन से तीन बार कहा था, लेकिन डा० पटवर्धन ने कहा कि वह इसे जरूरी नहीं समझते हैं। तो भी वह चश्मे का नम्बर निश्चित करेंगे।"

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, "झूठ बोलने का कोई प्रश्न ही नहीं। यह बात कहां से आई। खैर…।"

१० मई '४३

आज बापू का मौन है। मैक्सवेल का भाषण पढ़ गये, फिर 'डान' पढ़ते रहे। रात में मैक्सवेल का भाषण पढ़ना पूरा किया। उन्हें अफसोस था कि उन्होंने उसे पहले नहीं पढ़ा जबकि भाई ने पढ़ने को कहा था।

: ४७ :

मैक्सवेल को पत्र

११ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेल के नाम पत्र लिखवाया। दिनभर उसीमें गया। रामायण, बाइबिल और चरखा, सब छूट गये।

१२ मई '४३

बापू ने कुछ समय कलवाला पत्र फिर पढ़ा और बाकी समय में सैमुएलवाला पत्र। उसकी आखिरी नकल डा० गिल्डर टाइप करने के लिए ले गये। पीछे बापू मैक्सवेलवाले पत्र पर जुटे। आज काता, मेरे साथ रामायण पढ़ी, मनु को भी सिखाया। बाइबिल नहीं पढ़ी। मनु को सिखाते समय मैंने सैमुएलवाले पत्र में बापू को एक सुधार बताया। सुधार पहले बापू समझे नहीं। मैं छोड़ने को तैयार हो गई। मुझे लगा कि दलील करके उन्हें क्यों थकाऊं, मगर उन्होंने आग्रह किया, "बता तो सही, क्या कहना चाहती है?" तब मैंने बताया और उन्होंने सुधारा। बाद में समझाने लगे, "मैं धीरज रखकर तुझसे न समझ लेता तो तू यह छोड़ ही देनेवाली थी न? ऐसा नहीं होना चाहिए। तुझे धीरज से अपनी बात समझानी चाहिए और अपने में समझा सकने की शक्ति लानी चाहिए। भाषा पर तेरा खास अधिकार हो जाय, इसीलिए तो तुझे व्याकरण इत्यादि कराने का आग्रह करता हूं न!" बाइबिल के समय बापू ने मनु को भी सिखाया।

शाम को बापू की कहानी फिर शुरू हुई।

मैंने 'ट्रेजर आइलैण्ड' फिर से पढ़ना शुरू किया है। बचपन में पढ़ा था, पर कहानी भूल गई थी। बड़ा रस आता है।

१३ मई '४३

आज बापू ने मैक्सवेलवाले पत्र का काम किया। उसमें काफी सुधार कर रहे हैं। मैं 'ट्रेजर आइलैण्ड' पढ़ती रही। सारा समय उसमें गया। थोड़ी देर तक डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं। मैक्सवेलवाला पत्र बापू के कहने से पढ़ गई और शाम को बापू के सामने अपने विचार रखे। घूमते समय कहानी में बापू ने डाउन्स के साथ का अपना अनुभव सुनाया। समय की कीमत आंकने की बात करते समय यह चर्चा चली कि डरबन में उनके मित्र डाउन्स को गिरजाघर में प्रवचन देना था। समय रखा था शाम के ७ बजे। निश्चित समय पर वहां केवल एक श्रोता था। बिना किसीकी प्रतीक्षा किये उसीके सामने उन्होंने बोलना आरम्भ कर दिया।

१४ मई '४३

मैक्सवेलवाले पत्र के बारे में घूमते समय बापू कहने लगे, "मैंने तेरे सब विचार ले लिये हैं। खुश है न?" मैंने हँसकर कहा, "क्यों नहीं, खुशी से जमीन पर पांव नहीं पड़ते।" घूमते समय कहानी कहते-कहते बापू ने बताया कि कैसे उनके दक्षिण अफ्रीका जाने से गांधी-कुटुम्ब का उद्धार होगया था।

१५ मई '४३

बापू आज मैक्सवेलवाला पत्र दुरुस्त करते रहे। सैमुएलवाले पत्र की आखिरी नकल आज गई। भाई ने मैक्सवेल के पत्र को टाइप किया। बापू ने उसको इतना काटा-छांटा था कि पढ़ना कठिन हो गया। मैंने दोपहर को डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं।

शाम को घूमने जाते समय श्री कटेली आग्रह करने लगे कि खेलने आया करो, मेरी कसरत नहीं हो पाती।

१६ मई '४३

सुबह सोकर उठे तो बापू ने कहा, "मुझे लगता है कि तुझे खेलने जाना चाहिए। कटेली इतना कहते हैं कि उनको खेलने का शौक है। खेलने के लिए साथी चाहिए।" मुझे अच्छा नहीं लगता था, किन्तु बापू का कहना मानना हमारा पहला कर्त्तव्य है, इस विचार से मैंने जाने का निश्चय किया। कटेलीसाहब और डाक्टर

साहब मुझे देखकर बहुत खुश हुए। मैंने डाक्टरसाहब से कहा, "आपको लगता होगा कि कल रात इन्कार करके मैं सुबह कैसे आ गई?" वह बोले, "कोई अच्छी बात हो तो हम उसका कारण पूछते ही नहीं। हम लोग सोचते हैं कि लोग क्या कहते होंगे, मगर लोग ऐसी चीजों पर गौर करते ही नहीं।" डाक्टरसाहब हमेशा अनुभव और सहज बुद्धि से भरी सलाह देते हैं।

बा के पाखाने की जगह में जलन होती है। देखा, जरा-सा छिल गया है। उस पर मरहम लगा दिया। उनके पेशाब में भी जलन है। डाक्टरसाहब का नुस्खा आजमाने का विचार किया है।

दोपहर को मैक्सवेलवाले पत्र की सुधारी हुई नकल पढ़ी। पीछे रात को बापू के सामने अपने विचार रखे। दस बजे नींद ने घेर लिया। सो गई।

१७ मई '४३

सुबह पौने सात बजे उठी। चाय इत्यादि के बाद खेलने गई। मालिश से आज छुट्टी मिली। भाई ने वहां मेरी जगह ली। मैंने अपने कपड़े इत्यादि सम्भाले। अब अपनी डायरियां आदि पूरी कर लेती हूं, ताकि कल से सारा कार्यक्रम ठीक तरह चला सकूं।

दोपहर को कातते समय भाई बापू को लुई फिशर का एक भाषण सुना रहे थे। भाषण बहस के बाद का था। अच्छा था, इसलिए कातने में काफी समय गया। कल का अखबार भी दोपहर को पढ़ा। साढ़े चार बजे से रसोईघर में काम करती रही। पंद्रह-बीस मिनट तक बापू की 'आत्मकथा' पढ़ी।

बापू मैक्सवेलवाला पत्र फिर से पढ़ते रहे और सुधारते भी रहे। पत्र दस बजे तैयार हुआ।

१८ मई '४३

सुबह मालिश के समय मीराबहन ने मैक्सवेलवाले पत्र की सुधारी हुई नकल के बारे में अपनी सम्मति बापू के सामने प्रकट की। बापू ने 'ह्यूमन्स' (humans) शब्द इस्तेमाल किया था। वह कहने लगीं, "ह्यूमन बीइंग्स (human-beings) क्यों नहीं?" उन्होंने 'ह्यूमन्स' शब्द कभी सुना नहीं था। बापू ने बताया कि वह इस्तेमाल होता है। मैंने भी कह दिया कि मैंने भी यह शब्द इस्तेमाल हुआ देखा है। लेकिन वह मानी नहीं।

आज रामायण के पढ़ने के समय मैक्सवेलवाले पत्र की मैंने नकल पढ़ी और

अपने सुझाव दिये। एक सुधार करने में काफी साहित्य देखना पड़ा। आखिर बापू ने वह सुधार स्वीकार कर लिया और उसे लेकर एक नया पैरा ही बढ़ा दिया। सुधार बापू के उद्‌गार 'सब लोग अपनेको आज से स्वतंत्र मानो' के बारे में था। मैक्सवेल ने वह उद्‌धृत किया था। बापू ने इसका उत्तर लिखा था। प्रार्थना के पहले का कातने के सिवा आज का सब समय इस काम में गया। शेष कार्यक्रम नहीं चला सकी।

प्रार्थना के बाद मैंने अखबार देखे और भाई ने ज्वालामुखी और भूकम्प की उत्पत्ति समझाई।

१९ मई '४३

आज प्रार्थना के बाद सोई नहीं। सुबह चाय के बाद आजकल खेलने जाती हूं, मगर श्री कटेली चाहते थे कि एक-एक की ही जोड़ी रहे, सो आठ बजे महादेव-भाई की समाधि पर फूल चढ़ाने के बाद फिर उनके साथ दो बार बेडमिंटन खेली। थक गई।

स्नान के बाद मैं मेकमोर्डी की व्याकरण देखती रही। बाद में दस मिनट तक रामायण की मार्गोपदेशिका देखी। दोपहर में 'दि नो ब्रेकफास्ट प्लैन ऐण्ड फास्टिंग क्योर'[1] के अड़तालीस पन्ने पढ़े। दूसरा डाक्टरी अभ्यास आज नहीं किया। शाम को कैदियों को आम बांटे। मरोली से श्री एम० एच० पेटिल ने करीब डेढ़सौ आम भेजे थे। तेईस कैदियों को दो-दो आम मिले। कल सिपाहियों को बीस और दिये जायंगे। दस-पंद्रह सड़ भी गये हैं।

शाम को तूफान आया। साथ ही वर्षा भी। शाम का सारा कार्यक्रम बिगड़ गया। खाने के बाद थोड़ी देर और कैरम खेलते रहे, पीछे बापू के साथ घूमे।

प्रार्थना के बाद नया कार्यक्रम भाई ने और मैंने बैठकर बनाया। देखें, कितना चलता है।

२० मई '४३

आज मैक्सवेल के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई। बापू ने दस्तखत भी किये, मगर देर हो गई थी, इसलिए पत्र जा नहीं सका। कल छुट्टी है। शनिवार को जायगा।

---

[1] नाश्ता छोड़ने व उपवास का चिकित्सा-विधान

बापू सरकारी पुस्तिका के जवाब को देखते रहे। शाम को फिर वर्षा हुई।

आज मैंने आइसक्रीम बनाई है। बापू के लिए थोड़ी-सी बकरी के दूध की बनाई। उन्होंने एक ही चम्मच भर ली, बाकी भाई को दे दी।

शाम को हम लोग अपना एक खेल खेलते रहे। कपड़े की गेंद बनाई और उससे खेले। पीछे डोरी फांदते रहे। डाक्टरसाहब इसमें शामिल नहीं हुए। एक टांग की दौड़ में भी नहीं। पीछे एक डोरी बरामदे में बांधकर उसपर मेरी ओढ़नी को जाली के तौर पर रखकर रिंग खेलते रहे।

इतने में बापू घूमने को निकले। हम लोग भी साथ हो गये। घूमते समय ट्यूनीसिया-डे की बातें होती रहीं। दूसरी इधर-उधर की बातें हुईं, लेकिन कहानी नहीं सुनाई। सुबह भी कहानी शुरू हुई थी कि स्वेज नहर का जिक्र आया, फिर उसीकी बातें होती रहीं।

रात को प्रार्थना के बाद इतने पतंगे उड़ने लगे कि बापू बत्ती रखकर काम नहीं कर सके। सो गये। करीब साढ़े दस बजे फिर वर्षा हुई। हवा चलने लगी। बापू की खाट पर पानी आता था, इसलिए जगह बदली। सोने का वक्त हो गया था, सो गई। भाई दिनभर भाषण तैयार करते रहे।

२१ मई '४३

आज भी बादल थे। शाम को जोरों की वर्षा हुई। श्री कटेली ने बरामदे में रिंग खेलने के लिए कोर्ट बनवाया। लम्बाई ठीक है, मगर ४ फुट कम है। शाम को मीराबहन इत्यादि सभी वहां खेलते रहे। मैं बापू के पास थी। वह अपने कागजों में से कुछ कागज निकालकर मुझे देते रहे। घूमने के समय वर्षा बन्द होगई। बाहर घूमे।

मैक्सवेल का पत्र आज कटेलीसाहब को डाक में डालने के लिए सौंपा, मगर आज ट्यूनीसिया-डे की छुट्टी है, इसलिए कल जायगा।

: ४९ :

शैतान व ईश्वर

२२ मई '४३

आज शाम को बापू ने मीराबहन से शैतान और भगवान की बातें करते-करते नीचे लिखी बातें कहीं। मीराबहन उन्हें लिखकर बापू को दिखा गईं। बापू ने उसे पास किया। यह नकल मैंने देखी, तो अच्छी लगी। उसे यहां देती हूं : "शैतान कोई व्यक्ति नहीं है। वह एक उसूल है—सत्य का इन्कार, जबकि दैवी शक्ति सत्य का उसूल है। इसलिए वह जीवन देनेवाली चीज है, जीवन है, ब्रह्म है। सत्य का इन्कार तो मृत चीज है, मगर जैसे कभी-कभी शव में जीवन का आभास होता है, यह भी इन्सान को धोखे में डाल सकता है और माया से भ्रमित इन्सान इस मरी हुई चीज के पीछे भागता है और समझता है कि यही जीवन का मकसद है।

"शास्त्र बताते हैं और मैं भी इसे मानता हूं कि सतयुग में पहुंचने के पहले कलियुग या शैतान के युग में से गुजरना होता है। इसमें शक नहीं कि आज हम कलियुग में से गुजर रहे हैं। भले ही हम नये युग का प्रभात इस जीवन में देखें या न देखें, हमारे लिए हमारा यह पक्का विश्वास ही काफी है कि सतयुग आनेवाला है और उसे लाने के लिए हम जिन्दा रहते हैं और मेहनत करते हैं।"[१]

---

[१] "Satan is not a person, but a principle—the principle of negation (of Truth) whereas the divinity is the principle of Truth. It is, therefore, life-giving and is itself life, God. The principle of negation is a dead thing, but just as a corpse may look like a living being so does this negation deceive man deluded by *maya*, he pursues this lifeless principle, thinking it to be the thing for which to live.

"The scriptures tell us and I believe that the reign of untruth has to be gone through (the reign of Satan in the Bible and Kaliyuga in the Puranas) before man can again rise to Satyuga. Most surely we are passing through the period. What does it matter whether we live to see the dawn of the age to come. It is enough that we have unshakable faith and live and strive for that end."

आज भी बादल थे, मगर वर्षा नहीं हुई। शाम को भाई, मीराबहन इत्यादि सब खेले। मुझे बापू टॉटेनहम के पैम्फलेट का उत्तर लिखवाते रहे। रात को भी प्रार्थना के बाद वही काम चलता रहा। बापू कहते थे कि कल सब काम छोड़कर इसीमें लगेंगे।

कहानी कहते समय बापू ने स्वेज नहर की चर्चा करते हुए अरब और मिस्र की बातें बताईं।

२३ मई '४३

सुबह प्रार्थना जल्दी हुई, इसलिए प्रार्थना के बाद मैं सो गई। साढ़े छः बजे उठी। चाय के बाद खेलने गई। स्नानादि के बाद बापू को खाना देकर खुद खाकर पीछे दोपहर को मैं बापू के साथ बैठी। उन्होंने लिखवाना शुरू किया। एक बजे के करीब सो गई। ढाई से चार बजे तक फिर लिखवाते रहे।

शाम को कहानी में पोर्ट सईद और 'मुक्तिसेना' ('साल्वेशन आर्मी') की कथा सुनाते रहे।

२४ मई '४३

आज बापू का मौन है। दोपहर को मैंने 'नो ब्रेकफास्ट प्लैन ऐण्ड फास्टिंग क्योर' पुस्तक पूरी की। कुछ और चीजें भी पढ़ीं। दोनों वक्त खेली। आकाश आज साफ है। बापू को सब खाना आज बिजली की मशीन में एकरस करके दिया था। कुछ तो चबाने की क्रिया के निकल जाने के कारण, कुछ फुलाव अधिक हो जाने के कारण बापू की तबीयत बिगड़ी और खट्टी डकारें आईं, इसलिए शाम को उन्होंने खाना नहीं खाया। खाली गरम पानी पिया।

२५ मई '४३

आज बापू ने दोपहर को रामायण नहीं पढ़ी। कहने लगे, "अगर तू कर सके तो मैं तेरा अभ्यास कुछ समय के लिए बन्द कराना चाहता हूं। अपना सारा खाली समय तू मुझे दे दे और और मैं सारा समय इस पैम्फलेट का उत्तर तैयार करने में दूं। मुझे जो लिखाना हो लिखाऊं, जितनी दफा उसे फाड़ना हो, फाड़ूं।" मुझे इसमें क्या उज्र हो सकता है? बापू की सेविका बनकर यहां आई हूं। जितना समय बापू को चाहिए, वह लें। उस समय दूसरा कुछ करने का विचार ही नहीं किया जा सकता। बापू मेरे समय का उपयोग करें, इससे अधिक खुशी की बात मेरे लिए और क्या हो सकती है!

सुबह घूमते समय अफ्रीका की बातें होने लगीं। बापू ने बताया कि जुलू लोगों पर क्या-क्या जुल्म हुए हैं। फिर इन लोगों के साथ अंग्रेजों की लड़ाई की बातें बताते रहे। मेफिकिंग (Maffiking)[1] शब्द की व्युत्पत्ति बताई, पीछे हिन्दुस्तान पर आये। बोले, "इतने बड़े देश को, जिसकी सभ्यता इन लोगों की सभ्यता से बढ़-चढ़कर है, ये लोग इस प्रकार से दबाकर बैठे हैं? ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने क्या-क्या किया! मैं तो इन बातों का विचार करता हूं तो खून खौलने लगता है। मौलाना मुहम्मद अली कहा करते थे, हम लोगों से तो आप बहुत आगे जाते हो। आप हिंसा मानते नहीं हो, वरना आपमें इन लोगों को मजा चखा देने की शक्ति है; क्योंकि इस विषय में आपकी भावना बड़ी जबरदस्त है और फिर आपके पास बुद्धि भी है।"

२६ मई '४३

आज शाम को जब हम लोग खेल रहे थे, भंडारी आये और बापू को एक बन्द लिफाफा दिया। टॉटेनहम का पत्र था। लिखा था कि सरकार बापू का खत जिन्ना-साहब को नहीं दे सकती और इस विषय में एक विज्ञप्ति निकालनेवाली है। विज्ञप्ति की एक नकल भी साथ भेजी है। बापू ने रात को उसका उत्तर लिखवाया।

बापू ने सरकारी पैम्फलेट के काम के लिए दूसरा सब काम छोड़ दिया है। मेरा भी सारा समय उसीमें ले लिया है और लिखाया करते हैं। बेचारी बा सेवाग्राम में कभी सारा समय बापू के कमरे में नहीं बैठती थीं, इसलिए उन्हें क्या पता कि बापू कितना समय लिखने-लिखाने का काम करते हैं। यहां देखती हैं तो चकित होती हैं। कह रही थीं, "पहले तो कभी इतना नहीं लिखते थे। लिखते थे तो कोई किताब।" भाई ने समझाया कि हमेशा यही काम चला करता है।

२७ मई '४३

आज करीब पौन बजे टॉटेनहम को लिखे गये बापू के पत्र की साफ टाइप-नकल तैयार हुई और तुरंत ही कटेलीसाहब को डाक के साथ भेजने को दे दी गई। ढाई बजे अखबार आये। उनमें सरकार की विज्ञप्ति आ गई थी। बापू समझते

---

[1] मेफिकिंग शहर की याद में मेफिकिंग-दिन मनाने की प्रथा शुरू हुई थी। उस दिन शराब आदि पीकर जशन मनाया जाता था। उसपर से अंग्रेजी 'मेफिकिंग' शब्द बना, जिसका अर्थ है शराब पीकर आनंद मनाना।

थे कि शायद उनका उत्तर जाने तक वह नहीं छपेगी, मगर डा० गिल्डर ने कहा था, "यह सरकारी विज्ञप्ति की नकल तो आपको शिष्टाचारवश भेजी है। जैसे यहां आ पहुंची, वैसे ही प्रेस को भी दे दी होगी। ऐसा होगा तो आज दोपहर को पता लग जायगा।" यही हुआ। शाम को बापू ने टॉटेनहम को दूसरा पत्र लिखवाया।

ग्यारह बजे बापू मीराबहन के साथ बातें कर रहे थे, "अंग्रेजों ने क्या-क्या अत्याचार नहीं किये? सोते हुए जुलू लोगों को बच्चों-सहित गोली से उड़ा देते थे; क्योंकि उनके सरदार ने यह कहने की हिम्मत की थी कि हम तुम्हें टैक्स नहीं देंगे। उनपर पोल-टैक्स लगाया, ताकि टैक्स का पैसा पैदा करने के लिए वे लोग काम करें। हिटलर ने इससे अधिक क्या किया है?"

डा० शाह आ गये। जिस ठेकेदार के यहां से उनके अस्पताल में खुराक का सामान आया था, वह डा० शाह से हाथ मिलाने आया, क्योंकि वह बापू के यहां आते हैं।

२८ मई '४३

आज सुबह खेलने गई, मगर शाम को बापू लिखवाते रहे। जब वह घूमने गये, तब मैं खेलने को गई। रात को काफी समय बिगाड़ा। एक व्यर्थ की चर्चा में मैं और भाई पड़ गये, इसलिए बापू सिर्फ पन्द्रह मिनट तक ही लिखवा सके।

सुबह बादल थे। खेलते थे, तब बूंदे पड़ने लगी थीं। ऊपर बरामदे में आकर खेलते रहे। बापू बरामदे में घूमे। सवा आठ बजे महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने को गये। मुझे खेलने का समय देने के लिए ही इतनी देर की थी। जब हम सब फूल चढ़ाने को गये, तब वर्षा बन्द हो चुकी थी।

अखबार से पता चलता है कि जिन्ना ने वाइसराय को लिखे गये बापू के पत्र को रोकने के बारे में जबान नहीं खोली, पर अखबारों ने उनके भाषण का इस हेतु का जो हिस्सा उद्धृत किया था कि अगर बापू उन्हें पत्र लिखें और वाइसराय उसे न भेजें तो वह देख लेंगे, उसपर नाराजी बताई है। भाई कहने लगे, "वह कह सकता है, अगर सचमुच आपका हृदय-परिवर्तन हुआ है तो अपने सत्याग्रह के आंदोलन को वापस कर लो; क्योंकि हम इसके विरुद्ध हैं। हम इसे मुसलमानों के विरुद्ध मानते हैं।" बापू कहने लगे, "हां, सम्भव है।" मगर मुझे यह अशक्य-सा लगा।

आज टॉटेनहम को दूसरा खत गया। बापू ने कल उनका पत्र छापने की मांग

की थी।

२६ मई '४३

सुबह प्रार्थना के लिए देर से उठे। साढ़े पांच बज गये थे। प्रार्थना पूरी हुई तो छः बज गये। नाश्ते का सामान तैयार किया। इतने में सात बज गये। बापू प्रार्थना के बाद सोये नहीं थे, मगर मुझे लिखवाने के लिए रोका नहीं, खेलने को भेज दिया। खेलने के बाद घूमने के लिए बापू के साथ निकली तो सही, मगर बीच में से आना पड़ा। बापू बहुत अच्छी बातें बता रहे थे। भाई ने बात की कि ये एमरी वगैरा इस तरह से झूठ बोलते हैं। उन्हें लगता है कि हम तो इन्सान हैं ही नहीं। हमारे साथ झूठ इस्तेमाल करने में क्या हर्ज है? एमरी ने जो निवेदन भारत सरकार से किया है, वह श्वेतपत्र (व्हाइट पेपर) में छपा है। उसमें जापान के प्रति पक्षपात का आरोप नहीं है। इसीपर बात चली; क्योंकि जापान के प्रति पक्षपातपूर्ण आरोप तो सरकार की पुस्तिका में भरा ही पड़ा है। बापू कहने लगे, "यह तो है, मगर अपने यहां ही कितने आदमी इस किस्म के पड़े हैं कि झूठ और सच को परखने की मेहनत करें? ···को लो। आजाद हिन्दुस्तान में अपने प्रान्त में वही सामने आयेगा न! उसको क्या पड़ी है झूठ-सच की? इस तरह के कई अवसरवादी हिन्दुस्तान में पड़े हैं।" मैंने कहा, "बापू, तो फिर हिन्दुस्तान का होगा क्या? आजाद होने पर ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहेगी तो वह आजादी क्या होगी?"

बापू बोले, "यहां हम चार हैं—तू, मनु, प्यारेलाल और मैं। मनु तो छोटी है। तुझे भी ऐसी बातों का अनुभव नहीं, मगर मुझे और प्यारेलाल को तो है। मैं कहता हूं कि अगर हम चार सच्चे होंगे तो हिन्दुस्तान का भला-ही-भला है। मैं इससे भी आगे जाकर कहता हूं कि मैं अकेला भी आखिर तक सच्चा रहूंगा तो हिन्द का भला-ही-भला है। महाभारत में एक बड़ा संवाद है कि कृष्ण अकेले बिना हथियारों के क्या कर सकेंगे, मगर कृष्ण के पास तो धर्म था, सत्य था, इसीलिए उनकी जीत हुई।" मैंने कहा, "वहांपर पांडव भी तो सत्य पर थे न?" बापू ने कहा, "तू ऐसा मानती है तो गलती करती है। कौरवों की अपेक्षा पांडव अच्छे थे, मगर उनमें भी अनेक दोष थे और मनुष्य की हैसियत से कृष्ण भी सर्वथा दोषरहित कहां थे? गीता में कहा है न: 'अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते' अर्थात देहधारी के लिए अव्यक्त बनना, सर्वथा अनासक्त बनना, कठिन है। कठिन

क्या, अशक्य ही है, मगर जगत में इसी तरह से काम चलता है। सब मिलाकर जिधर भलाई अधिक रहती है, उसीको ईश्वर बचा लेता है।"

बापू टॉटेनहम की किताब का उत्तर लिखने को भाई से फिर कहने लगे, "मैं इतना तो देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक चीज को तुरन्त पढ़कर समझ लेने और याद रख सकने की शक्ति कम हुई है, मगर ईश्वर को जितना काम कराना होगा, उतनी शक्ति देगा। जितनी शक्ति देगा, उतना करके संतोष मानूंगा।"

सुबह घूमने जाने से पहले मुझसे भी वही बात कह रहे थे, "इस किताब (टॉटेनहम की पुस्तिका) के एक-एक वाक्य में जहर भरा है। इसका बहुत सचोट जवाब दिया जा सकता है। अगर मैं उसे कर पाऊं तो इसमें से अनेक परिणाम भी आ सकते हैं। मगर मैं देखता हूं कि मैं धीमा पड़ गया हूं। एक बार पढ़ता हूं तो कुछ-न-कुछ खुलता है। दोबारा पढ़ता हूं तो फिर कुछ और खुलता है। प्यारेलाल करे तो मुझे काफी मदद मिल सकती है। थोड़े अभ्यास के बाद तू भी कर सकेगी, ऐसा मुझे लगता है।" मैंने कहा, "आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आप धीमे पड़ गये हैं? यह किताब ऐसे पेचदार ढंग से लिखी है कि एक दफा पढ़कर उसे पूरी तरह समझ लेना कठिन है।"

मन में बड़ा बुरा लग रहा था। महादेवभाई का स्मरण हो रहा था। आज वह होते तो बापू को कितनी मदद दे सकते!

मालिश-स्नानादि के बाद बापू फिर लिखाने बैठे। दोपहर को सोने के बाद अखबार आये। जिन्ना का उत्तर करीब-करीब जिन शब्दों में भाई ने पहले से सोचा था, वैसा ही अखबारों में था। यह चकित करनेवाली बात है कि इन्सान किस हद तक जा सकता है।

सरकार ने बापू का खत जिन्ना को नहीं दिया। इसपर 'हिन्दू' में एक लेख था, जिसका शीर्षक था—'भगवान् हमें हमारे मित्रों से बचाये' ('गाड सेव अस फ्रॉम अवर फ्रेण्ड्स')। बापू शाम को भी लिखाते रहे। रात को साढ़ेनौ बजे कहने लगे, "अब मेरा दिमाग खाली हो गया है। बन्द करेंगे।" बापू पर यह जवाब लिखने का बोझ बहुत पड़ रहा है।

कल मीराबहन सोने के समय बापू को गीत सुनाने आईं तो कुछ बातें होने लगीं। बापू ने कहा, "मैं इस सरकारी पुस्तिका का उत्तर लिखने में बहुत महनत कर रहा हूं, मगर उसके पीछे हृदय से सतत यह प्रार्थना निकलती है कि मेरी कलम

से एक भी शब्द ऐसा न निकले, जिसमें सत्य की गूंज न हो अथवा जिसमें जरा भी हिंसा का रंग हो।"

आज रात को भी बापू के साथ उनकी थोड़ी बातें हुई।

कुछ बादल थे। पानी के दो-चार छींटे आये।

३० मई '४३

मीराबहन ने कल रात की बातों का सार लिखकर बापू को दिया। बापू ने उसे सुधारा। सुधारी हुई नकल यह है—"मैंने (मीराबहन ने) बापू से पूछा कि जिन लोगों के विचार ईश्वर के बारे में कच्चे हैं, उनकी मदद कैसे की जा सकती है? मेरा खयाल है कि उनके सामने धर्म की रूढ़िबद्ध बातें नहीं रखनी चाहिए, उनकी जगह सीधी-सादी भाषा में परम आत्मा की बात करना और जिन आदर्शों में हम विश्वास रखते हैं, उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर जीती-जागती मिसाल खड़ी करना चाहिए।" बापू ने उत्तर दिया, "तुम्हें परम आत्मा की बात करने की कोई जरूरत नहीं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सत्य अपने-आप काम कर लेता है। सत्य ही परमात्मा है। वह हमेशा मौजूद है और हरएक जीव में काम कर रहा है। इसलिए इन्सान उनके बीच अपना आदर्श जीवन रखे और उनकी आवश्यकतानुसार सेवा करे। लिखने-पढ़ने और सामान्य गणित जानने की भी कीमत तो है। इसलिए निरक्षर लोगों के ज्ञान की वृद्धि करना एक खास सेवा है। यह सेवा करना पढ़े-लिखों का धर्म है। बाकी, अगर हमारे जीवन में सचाई है तो उसका असर अपने-आप उन लोगों पर पड़ेगा। जो ईश्वर यानी सत्य को ढूंढ़ते हैं, उन्हें वह मिल जाता है। अगर हम सत्य यानी ईश्वर को अपने आस-पास के लोगों से ज्यादा पहचानते हैं—इस बारे में दावे से कुछ कहना कठिन है—तो हम उन्हें अधिक दे सकेंगे, वह अपने-आप उन्हें हमसे मिलेगा।"[1]

---

[1] "You should not even talk of the Supreme Soul. It is my profound conviction that Truth is self-acting. Truth which is God is ever present, ever working in all beings. Therefore one should simply live one's own life amongst them and serve them according to their needs. Three Rs have a value all their own. Therefore giving that knowledge to the illiterate is a spe-

दिन में बापू लिखवाते रहे। चार बजे लिखवाना बंद कर दिया। पीछे खुद उसे दोबारा पढ़ते रहे। रात को उसे दोहराकर पूरा किया।

जिन्नासाहब ने जो बयान कल निकाला है, उसमें उन्होंने कमाल ही कर दिया है। आज रविवार को तो अखबारों में उसपर कुछ निकला नहीं। कल पता चलेगा कि उसका लोगों पर क्या असर हुआ।

३१ मई '४३

आज बापू का मौन है। उन्होंने जो कल लिखाया था, उसे मैंने पढ़ा। उसमें कुछ भरना था, वह भरा। दोपहर को भाई के साथ बैठकर फाइलें वगैरा ठीक कराईं। सरकार का जवाब आया कि लार्ड सैमुएल को बापू का पत्र नहीं भेजा जा सकता। जिस कारण जिन्नासाहब को पत्र नहीं दिया गया, उसी कारण लार्ड सैमुएल को भी नहीं भेजा जा सकता। बापू को लगा कि जिन्नासाहब और लार्ड सैमुएल, दोनों को एक कारण लागू नहीं हो सकता।

डा० गिल्डर को आज छः पत्र मिले। अनेक ढंगों से उनमें लिखा था। '३१ मई', 'कौनसी ३१ मई?' '१९४...' इत्यादि। वह कहा करते थे कि ३१ मई को हम छूटनेवाले हैं। उसपर से किसीने मज़ाक किया था। करनेवाले कटेलीसाहब थे।

१ जून '४३

लार्ड सैमुएल को पत्र भेजने के विषय में आज बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर दिया।

३ जून '४३

भंडारी ने कहलवाया कि जिन्हें चश्मा चाहिए, वे अपने पैसे से लें। बापू को यह ठीक नहीं लगा। पहले विचार किया कि जाने दें, मगर बाद में विचार बदला। कहने लगे कि सरकार लोगों को बन्द करके रखे, उनकी कमाई का साधन बन्द करे तो पीछे उनका सब खर्च सरकार को उठाना चाहिए।

---

cial service and obligatory on those who have that knowledge. For the rest if we have Truth in us, it will go out to them without effort for It is self-acting. God i.e. Truth comes to *those who seek Him. If we know Him more than they* (of which we can never be sure), the more will go out to them."

४ जून '४३

बापू ने भण्डारी को लिखा कि सरकार मनु को चश्मा दे, नहीं देगी तो भले वह लड़की अपनी आंख खोये।

बा की सांस बहुत फूल जाती है।

५ जून '४३

बा को सुबह पांच बजे हृदय की धड़कन का दौरा हुआ। दो-तीन मिनट ही रहा। आज डाक्टरसाहब की तबीयत खराब थी। मनु कहने लगी कि अण्डी का तेल पीजिये। वह कहने लगे, "तू सुबह चार बजे आकर पिलाये तो पियेंगे।"

आज मनु का सोलहवां जन्मदिन था। भंडारी का उत्तर आया कि सरकार की तरफ से चश्मा मिलेगा।

कैदियों को आम और खजूर बांटे।

६ जून '४३

शनिवार की रात को मनु जागती रही। डाक्टरसाहब ने कहा था कि बिना किसीके उठाये चार बजे अण्डी का तेल पिलाने आवे तो पियेंगे, इसलिए बेचारी पहले बारह बजे उठी, फिर साढ़े बारह बजे, फिर दो बजे और फिर ढाई बजे। पीछे स्नानादि करने लगी। इतने में तीन बजे। फिर कोच पर पड़ी रही। चार के टकोरे हुए तो अण्डी के तेल की बोतल लेकर डाक्टरसाहब के पास जा पहुंची। डा० गिल्डर बिना मुंह बनाये पी गये। मनु को बहुत आश्चर्य हुआ। दिन में दो सिपाहियों को अंडी का तेल पिलाना था। मनु के हाथ से दिलवाया। उसे बड़ी खुशी हुई। सारा दिन हम लोग हँसते रहे।

८ जून '४३

शनिवार को चार बजे तक अखबार पूरे कर दिये, मगर बापू का काम रात को शुरू किया। रविवार-सोमवार तक उसी काम में लगी रही। आज भी वही चल रहा है। आज सुबह तो पत्र का टाइप होना भी शुरू हो गया है। अभी काफी काम बाकी है। परिशिष्ट (अपेन्डिक्स) भी अपने-अपने स्थान पर रखने हैं। यह जवाब तैयार करने में कम-से-कम एक हफ्ता और लगेगा।

बादल आते हैं। रोज डर लगता है कि वर्षा आयेगी और खेलना बन्द हो जायगा, मगर होती नहीं है। हवा खूब चलती है।

९ जून '४३

मीराबहन को गठिया का दर्द हो गया है। कंधे और हाथ के जोड़ों की मालिश मुझसे कराया करती हैं। मगर आज बापू ने उन्हें सलाह दी कि उपवास करके इसकी जड़ निकाल डालो। डा० गिल्डर से शाम को बातें कीं। उन्होंने उपवास के विषय में कोई अड़चन नहीं बताई, इसलिए कल से मीराबहन उपवास करेंगी। बापू को आशा है कि तीन-चार उपवास के बाद फल देना शुरू कर सकेंगे। मीराबहन उपवास के दौरान में यहां आने के बाद के अपने विचार और अनुभव लिख डालने का विचार कर रही हैं।

आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं। रात को जल्दी सो भी गई। कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। मन में विचार उठता था—भगवान महादेवभाई-जैसों को क्यों उठा लेता है और हमारे-जैसों को क्यों छोड़ जाता है?

सरकारी पुस्तिका के जवाब के परिशिष्ट की सामग्री तैयार करती रही। उसे आज करीब-करीब पूरा कर डाला।

१० जून '४३

मीराबहन सुबह मजाक कर रही थीं कि दस तारीख को बापू का उपवास शुरू हुआ था और चार महीने के बाद ठीक उसी तारीख को उनका भी उपवास शुरू होता है। आज उन्हें कुछ खास तकलीफ नहीं हुई। शाम को भूख लगी थी। सिर कुछ भारी था। वजन आज सुबह १३३ पौण्ड है। जबान साफ है। कुछ खास कमजोरी नहीं मालूम होती। पसीना वगैरा नहीं आया। इससे वह खुश हैं। उनके दर्द का मुख्य कारण ही यह था कि खेलने के बाद खूब पसीना आता था। उसके बाद हवा में घूमती थीं। इस घर में हवा से तो आदमी बच ही नहीं सकता। आज वह खेलीं नहीं तो पसीना भी नहीं आया।

कल भाई रातभर टाइप करते रहे—एक मिनट भी नहीं सोये। दिन में भी आधा-पौन घंटा ही सोये। दोनों वक्त खेले भी खूब। सुबह खेलने के बाद ताजा हो गये, ऐसा कहते थे।

आज सरकार का जवाब आया। जिन्नासाहब को लिखे बापू के पत्र पर निकाली गई सरकारी विज्ञप्ति के विषय में बापू को सूचना देने से इन्कार किया गया था।

अनपढ़ गंवार लोगों की सेवा कैसे करनी चाहिए, इस बारे में बापू ने मीरा-

बहन को जो लेख सुधारकर दिया था, वह बहुत संक्षिप्त था, मानो सूत्रों में लिखा गया हो। इसलिए उन्हें बापू से उसे समझना पड़ा। बापू ने कहा,[1] "जब मैंने

[1] "When I looked through what you had written down of our conversation, I saw that I should express what I had said in a shorter and clearer manner. I have now put it in the form of aphorisms. As a matter of fact, it was only yesterday that I fully realized the value of the three Rs. In the past I have often expressed indifference to them. But yesterday it came to me that the three Rs have a unique place and value and in serving illiterate people it is a vital part of one's duty to give them this knowlebge. The man who cannot read, write or add, must remain in many ways an ignoramus whereas with this knowledge at his command he can reach out to further and further development. Of course that means that when I impart the three Rs, I must try to do it in such a way as to whet the man's appetite for further knowledge. There can be no question for me of just counting beads and passing on. I do not impart this knowledge for all round advance. If he advances materially, all very well and good, though my concern is with his spritual development. It is through material service that I have to approach him. His body is all there. His soul is as yet unknown to him. Day by day as he goes on accepting my material services, he will become more curious about my life. He will begin to notice something more than the physical side of my life. Why do I sometimes sit in certain postures? Why do I shut my eyes at times? What is it I am murmuring? When this curiosity leads him to ask me what it all means, I can explain it to him. How the information will affect him is not my concern. It is not

तुम्हारी लिखी अपनी बातचीत की रिपोर्ट देखी तो मैं समझ गया कि मैंने जो कहा था, उसे अधिक छोटा और अधिक स्पष्ट करके मुझे कहना चाहिए था। मैंने अब उसे सूत्र रूप में लिख डाला है। सच्ची बात तो यह है कि कल ही मैं पढ़ने-लिखने और सामान्य गणित की कीमत पूरी तरह समझा। आजतक में उनके प्रति लापरवाह रहा हूं, मगर कल मैं समझ गया कि उनकी जो कीमत है और उनका जो स्थान है, वह और किसीका नहीं। निरक्षर लोगों की सेवा करते समय हरएक का यह धर्म है कि उन्हें ज्ञान दे। जो आदमी पढ़ नहीं सकता, लिख नहीं सकता, जमा और बाकी करना भी नहीं जानता, वह बहुत चीजों के बारे में अज्ञानी रहता है। मगर पढ़ने-लिखने और गणित के ज्ञान से वह अपना विकास उत्तरोत्तर कर सकता है। इसका यह अर्थ है कि जब मैं उसे लिखना-पढ़ना सिखाता हूं तो ऐसे तरीके से सिखाऊं कि उसकी अपनी ज्ञान बढ़ाने की इच्छा तीव्र बने। मेरे लिए तो यह सवाल ही नहीं उठता कि माला फेरी और चलते बने। मेरा उसको लिखना-पढ़ना सिखाने का यह मकसद नहीं कि सब तरह से उसे आगे बढ़ाना है। अगर मेरे सिखाने से उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरती है तो बहुत अच्छा है, लेकिन मेरा असल हेतु तो है उसकी आत्मा का विकास करना और उसके लिए मुझे उसकी भौतिक सेवा करके उसके निकट पहुंचना है। उसका शरीर तो सामने है, मगर उसकी आत्मा को अभी वह पहचानता नहीं है। दिन-प्रति-दिन जैसे वह मेरी सेवा स्वीकार करता जाता है, उसके मन में जिज्ञासा पैदा होगी कि मेरा अपना जीवन कैसा है।

"फिर वह मेरे भौतिक जीवन से आगे भी कुछ है, यह देखने लगेगा। वह सोचेगा कि मैं क्यों कभी-कभी आंखें बन्द करके आसन लगाकर बैठता हूं? मैं इस तरह बैठकर किसकी रटन करता हूं? जब इस जिज्ञासा के वश होकर वह मुझसे पूछेगा कि इन सब चीजों का क्या अर्थ है, तब मैं उसे बता सकता हूं। इस ज्ञान का उसपर क्या असर होगा, उसकी चिन्ता करना मेरा काम नहीं। आत्मा के काम में दखल देना

---

for me to interfere with the working of the spirit. When I am face to face with a man in proportion as I have God's spirit in me, will it go out to him. My purpose is not to give him my religion. My purpose is to let him see God through me if I have Him and express Him in reality in my daily doings."

मेरा काम नहीं। जब मैं किसी इन्सान के आगे खड़ा होता हूं, तब जिस हद तक ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान है, उसी हद तक वह मेरे सामने खड़े व्यक्ति में भी प्रवेश करेगा। मेरा हेतु यह नहीं कि वह मेरा धर्म स्वीकार करे। मेरा हेतु यह है कि वह मेरे द्वारा ईश्वर का दर्शन कर सके। वह तभी हो सकता है कि अगर ईश्वर मेरे हृदय में विराजमान हो और अपने दिन-प्रति-दिन के जीवन में, कार्य में, मैं सच-मुच उसको व्यक्त करता हूं।"

: ४६ :

सरकारी आरोप-पत्र और उसका उत्तर (२)

११ जून '४३

बापू कह रहे थे कि कल से पहले का सब कार्यक्रम फिर से शुरू होना चाहिए, मगर मैं समझती हूं कि वह नहीं हो सकेगा। टाइप-नकल को आज पढ़ना शुरू किया। कुछ समय बापू ने मेरे साथ पढ़ा और साथ-साथ सुधार कराते गये। कुछ समय मैंने अकेले पढ़ा। आज मीराबहन के साथ कुछ नहीं किया। पन्द्रह पन्ने ही पढ़ पाई। सब मिलाकर करीब ४० पन्ने हैं और परिशिष्ट अलग।

मीराबहन ने आज एक दर्जन मोसम्बी लीं। तबीयत अच्छी है। भूख बहुत है और कमजोरी भी है।

रात को सरकार का पत्र आया। टॉटेनहम के सेक्रेटरी ने बापू की जिन्नावाली विज्ञप्ति के बारे में जो दूसरा पत्र सरकार को लिखा था, उसकी और लार्ड सैमुएल को पत्र न देने के बारे में भेजे गये बापू के पत्र की पहुंच थी। लिखा था कि उस बारे में सरकार को कुछ और नहीं कहना है। वह अपना निश्चय बदल नहीं सकती। सभी यह पत्र पढ़कर हँसने लगे। बापू भी हँसकर कहने लगे, "जवाब देते हैं, यह उनकी मेहरबानी है!" मगर उन्हें सैमुएलवाले पत्र के बारे में सरकार के उत्तर से कुछ आश्चर्य हुआ। उन्हें आशा न थी कि उसका भी ऐसा ही उत्तर आयेगा। सरकार दूसरी विज्ञप्ति निकाल सकती थी। वे लोग लिख सकते थे कि आप ठीक कहते हैं। लार्ड सैमुएलवाला पत्र, जिन्नासाहब के पत्र के बारे में जो विज्ञप्ति निकाली गई थी, उसकी श्रेणी में तो नहीं आता, मगर हम उस पत्र

को दूसरे कानून से रोकते हैं।

१२ जून '४३

महादेवभाई को गये हफ्तों की जगह महीनों हो गये। क्या इसी तरह वर्षों चले जायंगे ? उनका स्मरण तो इतना ताजा है, मानो कल वह हमारे साथ ही थे। वह स्मरण इस जीवन में धुंधला थोड़े ही पड़ सकता है !

बापू आज भी मेरे साथ 'सरकारी बाइबिल'[1] के अपने उत्तर की टाइप-नकल पढ़ते रहे और सुधार भी करते रहे। ३२ पन्ने आज पूरे हुए। अभी आठ-दस और हैं। कल पूरे हो जायंगे।

मीराबहन को आज भी कमजोरी तो लगती है, मगर तबीयत ठीक है। दर्द कम है।

१३ जून '४३

आज 'सरकारी बाइबिल' पूरी की। बीच-बीच में बापू ने कई जगहों पर सुधार करते समय अक्षर बढ़ाये थे। परिणाम-स्वरूप कई जगहों पर खाली जगहें छूट गई थीं। भाई को ये जगहें भरनी पड़ीं।

भाई कुछ उदास थे। जिन्ना इत्यादि की गालियां पढ़ते-पढ़ते हम लोग ऊब जाते हैं, मगर बापू के मन पर उनका कोई असर नहीं होता। वह तो अचल बैठे हैं। वह जानते हैं कि आज जो भी हो रहा है, उस सबका परिणाम शुभ ही होनेवाला है हिन्दुस्तान के लिए। व्यक्तियों का तो उन्हें कभी विचार भी नहीं आता। अपने-आपकी, अपने मान की उन्हें कुछ पड़ी ही नहीं।

यह सब काम करते हुए बापू मनु को आधा घंटा जरूर सिखाते हैं। हर रोज थोड़ी गीता भी सिखाते हैं। दस-बीस मिनट तक एक रोज व्याकरण व एक रोज भूमिति सिखाते हैं। बापू पढ़ाने में बिल्कुल लीन हो जाते हैं। कह रहे थे, "मैं यह सब काम ('सरकारी बाइबिल' का उत्तर लिखना इत्यादि) तो करता हूं, मगर मुझे इसमें रस नहीं है, भाररूप लगता है। हां, भूमिति में, व्याकरण में, संस्कृत में मैं लीन हो सकता हूं।"

१४ जून '४३

आज भाई फिर कहने लगे, "मुझे लगता है कि ये लोग बापू को तबतक नहीं

---

[1] हम लोगों ने जेल में टॉटेनहम के पैम्फलेट को मजाक में 'सरकारी बाइबिल' नाम दिया था।

छोड़ेंगे जबतक वह काम करने लायक है। जब शरीर निकम्मा-सा हो जायगा, तभी छोड़ेंगे।" मैंने रोका, "आप इस प्रकार का विचार भी क्यों करते हैं?" वह कहने लगे, "अगर ईश्वर की यह मंशा होती कि बापू को बाहर जाकर पहले की तरह से काम करना है तो महादेव क्यों चले जाते?" मैंने कहा, "आज भी जो काम चल रहा है, उसमें भी महादेवभाई की आवश्यकता है। इसलिए आपकी दलील व्यर्थ है।" वह बोले, "सेवाग्राम का विचार भी मुझे काटता है। महादेव के बिना उस जगह में रह ही क्या गया! एक वही जगह थी, जहां जाकर घड़ी भर के लिए आदमी मन बहला सकता था, हलकापन महसूस कर सकता था।"

इसमें शक नहीं कि महादेवभाई के बिना आज बाहर के जीवन की कल्पना करना भी कठिन है, मगर भगवान को बापू से और काम न लेना होता तो बापू को उपवास से ही क्यों बचाता? मगर उसके साथ ही भगवान का महादेवभाई को इस तरह उठा लेना मेरी समझ में ज़रा भी नहीं आता। उनकी जगह हममें से किसीको क्यों नहीं उठा लिया?

आज बापू का मौन था, तो भी उन्होंने कुछ समय मेरे साथ परिशिष्ट की टाइप-नकल मिलाई। बापू के हाथ में 'हरिजन' था। मैं टाइप-नकल पढ़ती जाती थी। भूल मिलती तो बापू मेरा ध्यान खींचते थे। मैं सुधार लेती थी। बाकी समय वह संस्कृत और 'गुलीवर्स ट्रैविल्स' पढ़ते रहे। एक दिन कह रहे थे, "संस्कृत के दो वाक्य भी पढ़ लूं तो वे ज्ञान में वृद्धि ही करते हैं। इसलिए मुझे वह पढ़ना अच्छा लगता है।"

मीराबहन ने आज से मोसम्बी के साथ शहद और पानी लेना शुरू किया है। शहद पीकर आज वह खूब ही सोईं।

१५ जून '४३

वर्षा बन्द है, सो बेडमिंटन कोर्ट सूख गया है। चूने की कमी है, इसलिए डोरी की लाइनें बनाईं। इतने दिनों के बाद बाहर खेल सके। अच्छा लगा।

बा आजकल सब खेलों में बहुत रस लेती हैं। सुबह-शाम बेडमिंटन व रिंग देखने आती हैं। हम कुर्सी डाल देते हैं। वह बैठी देखा करती हैं। रात को कैरम देखती हैं। मीराबहन बता रही थीं कि बा शाम को अकेली कैरम खेलने का अभ्यास भी कर रही थीं। मीराबहन ने प्रोत्साहन दिया। बा ने कैरम बोर्ड की पॉकेट में सात बार मोहरा डाला। रात को कटेलीसाहब वगैरह ने बा से खेलने को कहा।

बा बहुत रस से खेलती रहीं। इन खेलों ने बा का जीवन बदल-सा दिया है। उनकी निराशा और उदासी बहुत कम हो गई है।

इसी तरह ग्रामोफोन से भी बा का खूब मनोरंजन होता है। सुबह घंटा-डेढ़ घंटा ग्रामोफोन बजता है। तब बा लीन होकर भजन सुनती रहती हैं। यह बहुत अच्छा है।

१६ जून '४३

आज रात को बापू ने टॉटेनहम के पैम्फलेट के उत्तर को दोबारा पढ़ लिया। आखिर के एक पैराग्राफ को सुधारना बाकी है, ऐसा कहते थे। सिर पर से भारी बोझ उतरा। मुझे भी ऐसा ही लगता है। पर मेरा काम तो अभी बाकी है। भाई अब उसे पढ़कर अपने सुझाव तैयार कर रहे हैं। पीछे हम सब बारी-बारी से पढ़ेंगे। फिर उसकी साफ नकल होगी। एक हफ्ता शायद इसे जाते-जाते और लग जायगा।

१७ जून '४३

आज सुबह बापू ४ बजे उठ गये। घड़ी एक घंटा आगे होने के कारण रोज पांच बजे उठते हैं। साढ़े चार तक बिस्तर पर पड़े रहे। सो नहीं सके। साढ़े चार पर प्रार्थना के लिए चले। बाद में सवा पांच-साढ़े पांच से लेकर साढ़े छः बजे तक सोये।

सुबह घूमते समय पंजाब के किसानों की खुराक की बात हुई। पंजाबी किसान की निडरता की बात मेरे मुंह से सुनकर बापू कहने लगे, "हां, पर याद रखो, एक गोरे को देखकर वे थर-थर कांपने लगते हैं।" बात सच्ची है। पठान क्या और जाट क्या, दूसरे किसीकी परवा उन्हें है नहीं। विशाल काया रखते हैं, मगर गोरों से थरथर कांपते हैं।"

पीछे कहानी चली। मिसेज डेनियल के यहां से कैसे निकले, अलग कमरे लेकर रहे, गाना, नाचना, भाषण देना सीखा और छोड़ा। यह सब सुनाया।

मालिश के बाद सोये नहीं। टॉटेनहम के पैम्फलेट के उत्तर की उन्हें बड़ी चिन्ता थी। आखिर का पैराग्राफ फिर से लिखना चाहते थे। करीब सारा दिन उसीमें गया।

भाई के साथ बैठकर बापू के पत्र को फिर से पढ़ा और बापू की स्वास्थ्य-डायरी पूरी की। मीराबहन का उपवास आज छूटा।

१८ जून '४३

आज बहुत दिनों के बाद दोपहर को रामायण पढ़ी। थोड़ी संस्कृत व्याकरण भी की। भाई के साथ कुछ देर काम किया। बाकी दिन योंही चला गया।

मीराबहन ने उपवास के हफ्ते में ७॥ पौण्ड वजन खोया। पहले दो दिन तो दर्द कम रहा, मगर फिर बढ़ गया। परसों तो बहुत ज्यादा था।

कल से उन्होंने खाना शुरू किया है। आज २॥ पौण्ड दूध पिया और सब्जी खाई। कहती थीं कि आज ५० प्रतिशत दर्द चला गया है। देखें आगे क्या होता है।

१९ जून '४३

रामायणादि का आज फिर नागा होगया। बापू के उत्तर के परिशिष्ट की सामग्री टाइप होकर आ गई थी। उसे देखती रही।

गेहूं का आटा नहीं मिलता। आज बाजरे की रोटी बनानी शुरू की है। बापू ने भी खाई।

आज बापू समझाते रहे कि कैदी की हैसियत से हमारा जीवन कैसा होना चाहिए। कहने लगे, "मेरा शरीर चल सके तो मैं इन कैदियों की ही खुराक खाऊं।" मैंने कहा, "मेरा तो चल सकता है। मुझे खाने दीजिये।" बापू ने उसकी इजाजत नहीं दी, मगर अम्माजान के वक्त जो कच्चा खाने का व्रत लिया था, उसमें इतना फेर करके कि 'बापू के लिए जो सब्जी बने वह लेना', उसे चालू रखने की इजाजत उन्होंने दे दी। यह फेर करने का कारण यह है कि कच्ची खाने लायक सब्जी यहां हमेशा नहीं आती है। जबतक जेल में हैं, तबतक यह व्रत चालू रहेगा।

आज एक दुखद घटना हो गई। बापू को ऐसा लगा कि ···ने झूठ बोला है। उससे वह खिन्न रहे।

भाई रात को तीन बजे तक काम करते रहे। 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर में जो सुधार करने का विचार वह रखते थे, वे सब किये।

२० जून '४३

सबेरे प्रार्थना के लिए सवा चार बजे उठी। मगर शर्म के साथ कहना पड़ता है कि गीताजी के पाठ के समय नींद आने लगी। मेरा स्वर ठीक न था। भाई पढ़ने लगे और मैं चुपचाप सुनती रही। सुनते-सुनते सो गई। कल भी ऐसा ही हुआ था।

बापू आज अपने लिखे उत्तर में भाई के किये हुए सुधारों को ध्यान से देखते रहे। मैंने दोपहर उनकी आत्मकथा पढ़ी। दो-तीन रोज में उसे पूरा करने का विचार

है। सोच रही थी—बापू दक्षिण अफ्रीका गये, तब चौबीस वर्ष के थे। मैं पच्चीस पूरे कर चुकी हूं। अर्थात मुझसे छोटी उमर में उन्होंने कितने बड़े-बड़े काम करने शुरू कर दिये थे और हम लोग यहां बच्चे-से बनकर बैठे हैं। मगर यह बापू का प्रताप है। उनके पास बैठने से ही ऐसी भावना उठती है। अगर अस्पताल में बैठी होती तो ऐसा नहीं हो सकता था। जो हो, बापू उस उमर में जितनी प्रगति कर पाये थे, हमारे जैसे सारी जिन्दगी में भी कर पायें तो बहुत है। इतने पर भी बापू कहते ह कि वह तो सामान्य आदमी हैं। जो उन्होंने किया, वह सब कर सकते हैं।

वर्षा धमकी देकर चली जाती है। अच्छा लगता है। सूखे कोर्ट पर हम खेल सकते हैं।

२१ जून '४३

आज बापू का मौन है। सुबह ही लिखकर कहा कि आज मालिश से मुक्ति लेकर टॉटेनहम की 'बाइबिल' का उत्तर पढ़ना। शाम को खाने के समय वह पूरा किया। दोपहर में दूसरा काम भी रहा ही था। रात में भाई नये सुधारों को टाइप करते रहे। उन्होंने रात भर टाइप किया।

शाम को प्रार्थना के बाद मैक्सवेल का बापू के पत्र का उत्तर आया। बापू यह रूखा-सूखा उत्तर पढ़कर बहुत हँसे।

२२ जून '४३

आज बापू ने मैक्सवेलवाले पत्र का उत्तर लिखा। भाई ने टाइप किया। 'बाइबिल' का उत्तर आज डा० गिल्डर पढ़ते रहे। भाई ने कल रात को जो टाइप किया था, उसे मिलाने में कुछ समय गया। दोपहर दो घंटे सोई, सो कुछ खास काम न कर पाई। शाम को बापू के साथ बाइबिल (असली बाइबिल) पढ़ी।

बापू अशांत-से लगते हैं। आज रक्त-चाप भी अधिक था। कल रात बारह बजे सोये थे।

रात को डाक्टरसाहब 'सरकारी बाइबिल' को पढ़ना चाहते थे। बापू ने कैरम में उनकी जगह मुझे भेजा। बा नहीं आईं। उन्हें नींद आ रही थी। जल्दी सो गईं। मैं, मीराबहन और कटेली खेले। मीराबहन ने हमें तीन बार हराया। वह कैरम बहुत ही अच्छा खेलती हैं। वहां से आई तो मनु और भाई बातें करते मिले। उन्होंने मुझे भी बिठा लिया। हम लोग बारह बजे के बाद सोये।

२३ जून '४३

आज डा० गिल्डर मालिश करने नहीं आये। वह 'बाइबिल' का उत्तर कल से पढ़ रहे हैं। ११॥ बजे बापू खाना खा रहे थे। उस समय वह उनके पास अपने सुझाव लाये। बापू ने बाद में कुछ बातों के बारे में हम तीनों से फिर विचार करने को कहा। शाम को हम लोग फिर आधा घंटा यहां बैठे। पीछे रात को भी करीब एक घंटा लगा। दो पैराग्राफ अभी और तैयार करने को रह गये हैं।

२४ जून '४३

आज डा० गिल्डर ने 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर पढ़कर बापू को वापस किया। कल बापू ने जो दो पैराग्राफ लिखने को कहा था, आज मालिश के बाद हम तीनों ने, मिलकर उन्हें लिख डाला। दोपहर को डा० गिल्डर ने बापू का उत्तर लौटाया, पीछे मुझे जो कुछ पूछना था, मैंने पूछा। डा० गिल्डर पहला पन्ना ले गये। आज से वह उसे टाइप करना शुरू करना चाहते थे।

मनु को तीन दिन से कब्ज था। उसने किसीसे कहा नहीं था। आज बापू से कहा। उन्होंने एनीमा लेने को कहा। उसने लिया। खाना न खाने का विचार किया था, मगर पीछे बा के कहने से कुछ खा लिया। परिणामस्वरूप उसे दो उल्टियां हो गईं।

२५ जून '४३

आज भी सरकारी 'बाइबिल' के जवाब में जिन-जिन चीजों के विषय में मुझे बापू को सुझाव देने थे या चर्चा करनी थी, वह मैं पूरी नहीं कर पाई, मगर चालीस पन्ने तक पहुंच गई। अब बारह-तेरह पन्ने ही शेष रहे हैं। एक पैरा अधूरा था, उसे पूरा करना था। मालिश से छुट्टी ली और उसे पूरा किया।

मीराबहन कहती थीं कि उनका दर्द दस फीसदी कम है, मगर उपवास के दूसरे दिन पचास फीसदी कम था। फिर पचहत्तर फीसदी बढ़ा। इसलिए अभी से कुछ कहना ठीक न होगा। कलक्टर आज आया।

मनु ने आज सुबह अण्डी का तेल लिया। शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। खाया नहीं—खेलने भी नहीं आ सकी। डा० गिल्डर को भी बुखार-सा था। कटेली के हाथ में दर्द था, इसलिए शाम को वह खेल नहीं सके।

२६ जून '४३

आज 'बाइबिल' के उत्तर के विषय में बापू के साथ चर्चा पूरी की। बापू आज उत्तर को आखिरी बार पढ़ने की आशा रखते हैं। डा० गिल्डर और भाई एक और

कच्ची नकल टाइप करेंगे, फिर उससे साफ नकल तैयार होगी। डा० गिल्डर ने तो सात पन्ने टाइप कर भी लिये हैं। भाई अभी एक बार सब-का-सब फिर से पढ़ जाना चाहते हैं, बाद में टाइप करना शुरू करेंगे। अब इस चीज से हम सब थक गये हैं। जेल में ही इसे इतना समय मिल सकता था।

आज 'हिंदुस्तान टाइम्स' की पिछले वर्ष की पूरी फाइल आई है। वापस लौटानी होगी। बा कह रही थीं, "अखबार क्या कम आते हैं ? इस फाइल की क्या आवश्यकता थी ?" मगर 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर के लिए यह मंगवाई गई थी।

रामायण में भरत-मिलाप पढ़ते-पढ़ते मैंने बा से कहा, "बाहर जाकर आपको भरत-मिलाप का सिनेमा दिखा लायेंगे।" बा कहने लगीं, "मैं अब यहां से कहां वापस जानेवाली हूं !" मैंने और डा० गिल्डर ने समझाया, तब मान गईं। कई बातों में बा बालक की तरह भोली हैं। बस शान्त मन से कैरम खेलने को चल दीं।

अखबार बहुत-से इकट्ठे हो गये थे। मैंने काफी पढ़ भी डाले। आशा है, सोने से पहले सब पुराने काम पूरे हो जायँगे।

मीराबहन का दर्द कम है, ऐसा वह कहती थीं। दर्द का ढंग भी कुछ बदला है।

: ५० :

मनोरंजक घटना

२७ जून '४३

मेरे बालों में चिकना, सफेद मैल बहुत है। निकलता ही नहीं। एक दिन विचार आया कि बाल निकालकर इसका इलाज करें तो शायद साफ हो जाय। भाई ने और बापू ने इस विचार का समर्थन किया। बापू कहने लगे कि उनके सिर में भी यही था, जो इसी तरह अच्छा हुआ था। मीराबहन से बात की। उन्होंने बाल काटने से मनाही की। डा० गिल्डर के बालों में भी यही तकलीफ है। मेरी बात सुनी तो वह कहने लगे कि पहले वह करके देखें, फिर मैं करूं। मगर बाद में उनका मन बदल गया। कहने लगे, "बापू कहें तो मैं बाल कटाऊं।" बापू कहने लगे, "मैं क्यों कहूं ?" आज मैंने बाल धोये थे। बापू कहने लगे, "बाल निकालना है तो आज ही निकालो।" मेरा मन काटने को होता नहीं था। यह भी विचार आया

कि ऐसा इलाज यहीं किया जा सकता है। बाहर जाकर यह नहीं हो सकेगा। बापू और भाई मजाक करने लगे कि हिम्मत नहीं पड़ती। मैंने कह दिया, "तो भले काटें।" बस कहने की देर थी। तुरंत बापू ने कैंची उठाकर पहले मेरी चुटिया काटी, फिर बाकी बाल काट डाले। बुरा तो लगा, मगर अब क्या हो सकता था। सब काटकर दामोदर कैदी से उस्तरा फिरवा दिया। मीराबहन तो रोने-जैसी होगईं। कहने लगीं, "मुझे पता होता कि तुम इतनी जल्दी फिसल जाओगी तो मैं तुम्हें ज्यादा रोकती।" कटेलीसाहब को भी बड़ा आघात लगा। कहने लगे, "हम सीपी-चन्दन मंगा देते, उससे तुम्हारा सिर साफ हो जाता। इतने अच्छे बाल क्यों निकाल दिये?" मनु, बा, सबको बुरा लगा। बापू कहने लगे, "कल्पना की बात है न। मुझे तो तुम्हारा यह बिना बालों का सिर और चेहरा अच्छा दिखता है।" रात में डा० गिल्डर मजाक करने लगे, "जब बुढ़िया हो जाओगी, तब इन बालों की 'विग' (टोपी) बनवाकर पहनना।" कटेलीसाहब कहने लगे, "मुझे पता दें कि कहां बनती है। अभी से बाल भेजकर 'विग' बनवा लें, ताकि अभी ही पहनी जा सके।" उनसे मेरा मुण्डा सिर नहीं देखा जाता।

रात में मैं सो न सकी। तकिये में सिर लगता तो तकलीफ होती। सिर की चमड़ी बहुत नाजुक थी। बालों की जड़ें कपड़े में अटकती थीं।

२८ जून '४३

बापू का आज मौन है। 'बाइबिल' का उत्तर आखिरी बार पढ़ते रहे। अब भी बाल मुझे तकलीफ देते हैं।

कल रात मैं सो न पाई थी। दिन में दो घंटे सोई और कुछ अखबार आदि पढ़े।

: ५१ :

सरकारी आरोप-पत्र और उसका उत्तर (३)

२९ जून '४३

बापू आज भी सरकारी 'बाइबिल' का उत्तर पढ़ते रहे। उससे बहुत थक गये हैं। रात कह रहे थे कि इतनी मेहनत उन्हें किसी दूसरी चीज पर नहीं करनी पड़ी।

मुझे जो चर्चा करनी थी, सुझाव देने थे, उनमें से कुछ तो दोपहर को दिये और कुछ रात को। सोने में करीब ग्यारह बज गये। कितने दिनों से ऐसा ही हो रहा है।

आज बा को बुखार था। कल रात से उनका शरीर दुखता था और सरदी लगकर बुखार आया था। छाती में नया कुछ नहीं। पेशाब में भी अल्बुमन का निशान तक नहीं। सम्भव है मलेरिया हो। आज जांच के लिए रक्त नहीं लिया। फिर आवश्यकता पड़ी तो लेंगे। बा को सुई लगवाना बहुत नापसन्द है।

शाम को···सिपाही से मैंने दो-चार रोटी बनाने को कहा, क्योंकि मनु बा के पास थी। उसने कोरा जवाब दिया और झट बोला कि वह तो रोटी बनाना जानता ही नहीं है। कटेलीसाहब ने बाद में उसे डांटा।

मुझे विचार आ रहा था कि रोटी खाना बन्द कर दूं। रोज मनु से बनवाकर खाना अच्छा नहीं लगता।

३० जून '४३

आज बा की तबीयत अच्छी है। बुखार नहीं। मीराबहन को भी काफी फायदा है। दो-तीन रोज से मिट्टी लगाती थीं। आज 'ओरियण्टल बाम' मलवाया है। विटामिन 'बी' और 'सी' भी लेती हैं और दवा पीती हैं। कहती हैं कि उनका सामान्य स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

रात को मीराबहन आकर कहने लगीं कि दर्द ज्यादा है। उसका कारण वह मालिश कराना बताती हैं।

आज भाई के कमरे में पुराने अखबार उठाकर ठिकाने पर रखे। काफी धूल खानी पड़ी। नये अखबार सब गोल मेज पर सजा दिये। महीना पूरा होने पर फाइलें यहां से उठा लूंगी।

आज सुबह मैं प्रार्थना में नहीं गई, क्योंकि रात को मुझे बुखार-सा लगता था। सिर में दर्द-सा था। मगर दिन में सब अच्छा रहा। इरादा है कि कल से अपना कार्यक्रम पूर्ववत चलाना शुरू कर दूं।

१ जुलाई '४३

आज मीराबहन के सुबह से ही दर्द ज्यादा है। शाम को और बढ़ा करता है। कहती थीं कि अब तो सौ फीसदी साबित हो गया है कि मालिश से ही दर्द बढ़ता है। उन्हें कौन समझा सकता है कि यह भ्रम है?

खाने के समय बापू लिखाने लगे। ढाई बजे तक लिखवाते रहे। फिर सोने को

लेटी। नींद मुश्किल से आई। साढ़े तीन बजे उठी तो सिर में दर्द था। बिस्तर से उठी तो बहुत ठंड लगने लगी। मापा तो १००.६ बुखार निकला। चाय के साथ दस ग्रेन कुनीन खाई।

शाम को लेटी रही। मीराबहन की लिखी हुई टीका, जो बापू के पास आई थी, पढ़ गई। कई भूलें थीं। बापू ने उन्हें सुधारने को कहा।

काफी अखबार पढ़े। रात में खूब सोई। बा आज शाम को पिंग-पौंग खेल रही थीं। मेरा पुराना कार्यक्रम आज शुरू न हो सका।

२ जुलाई '४३

सुबह उठकर अण्डी का तेल पिया। बापू को यह जुलाब विशेष अनुकूल लगता है। प्रार्थना बिस्तर में पड़े-पड़े सुनी। सुनते-सुनते सो गई। साढ़े सात बजे उठी। बुखार ९९.८ था। ग्यारह बजे तक उतर गया। अखबार देखे। बापू ने 'सरकारी बाइबिल' के उत्तर में जो नये सुधार किये हैं, वे देखे। कल और आज की डायरी लिखी। अब बापू की स्वास्थ्य-डायरी पूरी करके 'आत्मकथा' पढ़ूंगी। आज शाम को बाइबिल भी पढ़ी।

बापू बहुत थक गये हैं। आज खून का दबाव भी ज्यादा था। 'सरकारी बाइ-बिल' के उत्तर पर मेहनत करनी पड़ी है। आज शाम को घूमते समय कह रहे थे, "ईश्वर ऐसे मुझे उबार लेता है। उत्तर पूरा हुआ और थकान चढ़ी। इतनी मेहनत न करता तो जो सुधार किये हैं, वे कर नहीं सकता था।" रात को प्रार्थना के बाद उन्होंने तुरन्त सोने की तैयारी की। चार-पांच दिन के बाद ठीक तरह से सिर और पैरों की मालिश करवाकर सोये।

डा० शाह आये। मैंने मीराबहन के दर्द के बारे में उनसे बात की।

३ जुलाई '४३

मीराबहन के दर्द का कारण नहीं मालूम पड़ता। एक दिन कम हुआ और एक दिन बढ़ गया। डा० शाह से कल बापू ने सुबह कहा था कि डा० गिल्डर शायद उन्हें पूरी जांच के लिए अस्पताल भेजना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि भंडारी से बात करने के बाद जो कर सकेंगे, करेंगे। डा० गिल्डर दोपहर को कह रहे थे कि यहां से तो, जीवन-मृत्यु का सवाल हो तो भी, शायद ही किसीको अस्पताल भेजा जाय।

भाई ने रातभर टाइप किया।

४ जुलाई '४३

आज भंडारी आये। भंडारी की बात से लगता था कि मीराबहन को कहीं भेजने का उनका इरादा नहीं। कहते थे, "डा० शाह से सलाह करके कहूंगा कि क्या कर सकता हूं।"

भंडारी गवर्नर के आने की बात करते रहे। 'सी' श्रेणी के कैदियों ने विरोध-प्रदर्शन किया था, उन्हें सजा देने की चर्चा की। डा० गिल्डर ने कहा, "राजनैतिक कैदियों के साथ दूसरा ही बर्ताव करना पड़ता है; क्योंकि दूसरे देशों में जो आज राजनैतिक कैदी हैं, वे ही कल सत्ताधारी हो सकते हैं, और जो आज सत्ताधारी हैं, वे कल कैदी हो सकते हैं।" मगर हमारे यहां परदेशी राज्य है, इसलिए सब चलता है।

बापू ने टॉटेनहम की 'बाइबिल' का जो जवाब दिया है, उसके परिशिष्ट पर मैंने नम्बर डाले। शाम को सात बजे तक यही काम किया। पीछे खाने को गई। फिर घूमने को। खेलने नहीं गई। बाद में पता चला कि आज कटेलीसाहब भी खेलने में न थे। उनके हाथ में दर्द था, सो खेल बिगड़ा होगा।

५ जुलाई '४३

बापू का आज मौन है। उन्होंने आज टाइप-नकल समाप्त की। मैंने परिशिष्ट की और अन्य चीजों की सूची तैयार की।

बापू आजकल अखबार देखने का भी समय नहीं निकालते। आज 'डान' दो-तीन दिन के बाद आया। मैंने हँसते-हँसते कहा, "बापू, अब, तो दूसरा काम छोड़िये। आपके मित्र का अखबार आया है।" बापू ने कहा कि उन्होंने सबसे पहले आते ही 'डान' पढ़कर उसमें निशान भी लगा दिये थे। ऐसे ही दो-चार दिन पहले मैंने हँसी में कहा था, "सब अखबार छोड़कर—सब काम छोड़कर—आप 'डान' पढ़ने का समय निकाल लेते हैं। जिन्नासाहब के आप बहुत भक्त बनते जा रहे हैं।" बापू ने कहा, "भक्त के अधीन हूं।" मैंने कहा, "जिन्नासाहब यह बात सुनेंगे तो नाराज हो जायंगे।" हँसी चलती रही।

शाम को मनु को बुखार आ गया। खेलने में भाई, मैं और डा० गिल्डर थे। वर्षा आई, सो बन्द करना पड़ा।

६ जुलाई '४३

भाई मीराबहन के साथ टाइप नकल मिला रहे थे। बहुत धीरे काम चल

रहा था। बापू ने कहा कि यह काम पूरा होना ही चाहिए। शाम तक भाई ने पैंतीस पन्ने पूरे कर लिये थे। रात को मैं भी भाई के साथ पूरा करानेवाली थी, मगर मनु को फिर बुखार आ गया। उसे दवा-पानी देना था और बा की मालिश करनी थी, इसलिए बापू ने मुझे छुट्टी दी। गुसलखाने मे आकर वह खुद भाई के पास बैठ गये। दस बजे के बाद अपने दूसरे काम पूरे करके मैंने उनकी जगह ली और उन्हें सोने को भेजा। मैंने और भाई ने ग्यारह बजे के बाद सब पूरा किया। सोने को बारह बजे।

आज भी वर्षा थी। वर्षा में नीचे खेलना बन्द हो जाता है। ऊपर खेलने में पूरी कसरत नहीं होती।

मनु को बुखार था।···से रोटी बनाने को कहा। उसने नहीं बनाई और कैदी रसोइये को भी बनाने को मना कर दिया। पूछा तो बोला, "मैं खुद भी बनाना नहीं जानता हूं और कैदी भी नहीं जानता।" पहले दोनों कह चुके थे कि रोटी बनाना जानते हैं। मैंने उसे ऐसे झूठ बोलने से डांटा।···इसपर उसके सामने मुझसे नाराज होने लगीं। मैंने बापू से कहा, "ऐसे कैसे काम चलाया जा सकता है? मुझे आप रसोई-घर से मुक्ति दिलवाइये।" उन्होंने कहा, "···को समझायेंगे।" मैंने कटेलीसाहब को सिपाही की बात बताई। उन्होंने उसे बदल दिया।

७ जुलाई '४३

आज खूब वर्षा हुई। मुझे रसोई का काम ज्यादा करना पड़ा, इसलिए दोपहर में रामायण नहीं पढ़ पाई। दूसरे काम में समय चला गया। मनु को थोड़ा-सा बुखार आज भी था, सो बा का काम मुझे ही करना है।

शाम को बाइबिल पढ़ने के समय बीस मिनट तक बापू बातें सुनाते रहे।

८ जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन कह रही थीं कि उनके हाथ को आराम पहुंचा है, मगर आज सुबह उन्होंने बताया कि कुछ भी फायदा नहीं, अस्पताल जाना चाहिए। जेलवालों को उन्हें अस्पताल भेजना ही चाहिए। मुझसे पूछने लगीं, "अस्पताल में क्या-क्या करेंगे?" मैंने बताने का प्रयत्न किया। कहने लगीं, "सुई तो मैं कभी नहीं लगवाऊंगी।" मैंने कहा, "तब तो आपको अस्पताल जाना ही नहीं चाहिए।" बोलीं, "अभी यह बात क्यों कहती हो? मैं एक बार जाऊं तो सही। पीछे देखेंगे, क्या होता है। डाक्टर मेरा अस्पताल जाना आवश्यक न मानें तो भी मैं जो आव-

श्यक समझती हूं, वह कह तो सकती हूं न !" बाद में उन्होंने भंडारी को पत्र लिखा। उसे बापू को सुनाने लगीं कि इतने में कलक्टर आ गया और मीराबहन के हाथ के विषय में पूछने लगा। उन्होंने बताया कि तकलीफ कम नहीं होती। अस्पताल जाने की इच्छा प्रकट की। वह कहने लगा, "हां, वह हो सकेगा।" इसलिए मीराबहन ने अपने पत्र में कलक्टर के मत का भी जिक्र कर दिया।

आज भी वर्षा हुई। शाम को ऊपर 'रिंग' खेले। मनु को बुखार नहीं है, मगर अभी उसे आराम करना चाहिए, इसलिए मैंने उसे काम नहीं करने दिया।

बापू प्रार्थना के बाद भाई से बातें करते रहे।

९ जुलाई '४३

रातभर वर्षा हुई। आज दिन में भी होती रही। सुबह खासी वर्षा में बापू और मैं महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने गये। वर्ष पूरा होने को आया है। किसको कल्पना थी कि समय इस तरह से जायगा ! पिछले साल इन दिनों मैं भाई की बीमारी के कारण सेवाग्राम गई थी। महादेवभाई आखिरी रोज मुझे तांगे में बैठने के समय कहने आये, "तुम जल्दी आ जाना। मुझे बापू की चिंता रहती है। आनंदमयी देवी ने कहा है कि इस वर्ष बापू के जीवन का खतरा है।" उनका प्रेम और भक्ति अद्भुत ! खतरा किसके जीवन को था, वह हम आज जानते हैं। कौन कह सकता है कि बाबर की तरह उन्होंने बापू का खतरा अपने ऊपर नहीं ले लिया ? महादेवभाई तो गये, लेकिन उनके बिना अब बापू के आसपास के जीवन में वसंत ऋतु देखने में नहीं आती। सबके मन मुरझा गये हैं। महादेवभाई का मृदुल हास्य कठिन-से-कठिन समय के बोझ को भी हलका कर देता था। अब हम वह कहां से ला सकते हैं ?

मनु को बुखार नहीं, मगर आज भी उसे आराम करने दिया है। भाई की तबीयत अच्छी नहीं। मन अस्वस्थ है। उनका स्वभाव इतना कोमल है कि जरा-सी बात का उनपर गहरा असर हो जाता है।

फजलुल हक का निवेदन और गवर्नर को गया हुआ उनका पत्र अखबार में पढ़ा। पत्र बहुत अच्छा था।

काफी सरदी हो गई है। वर्षा बन्द ही नहीं होती। मीराबहन ने भंडारी से उन्हें अस्पताल ले जाने को कहा था। उन्होंने आज सिविल सर्जन को भेजा। उन्होंने मालिश करके रोग की गांठ को तोड़ने की सलाह दी और कहा कि अस्प-

ताल जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

१० जुलाई '४३

कल शाम को मीराबहन बापू से पूछ रही थीं कि आजाद हो जाने के पश्चात हिन्दुस्तान की जमीन का बंटवारा कैसे किया जायगा? बापू ने उन्हें स्काचमैन का किस्सा सुनाया—"वह जहाज के कप्तान से मिलने गया। जवाब मिला कि कप्तान नहीं है। वह उठा और यह कहकर चल दिया—'कप्तान से कह देना कि मालिकों में से एक मिलने आया था।' जहाज बनाने का उद्यम राष्ट्र का है, इसलिए राष्ट्र का हरएक स्त्री-पुरुष मालिकों में से एक है। यह उसकी दलील थी। यहां जमीन लोगों की है और हरएक उसका मालिक है। सम्पत्ति राज्य की होगी। दरअसल जो हल चलावेगा, उसकी जमीन होगी। शासनतन्त्र हर तरह उसकी मदद करेगा। अच्छा बीज देगा और जरूरी तालीम वगैरह देगा। दक्षिण अफ्रीका में आज यह सब हो रहा है। वहां राज्य तुम्हारे खेत में बाड़ लगा देता है, कुआं खोद देता है और हर तरह की मदद बिना नफा लिये पहुंचाता है। मुनाफाखोरी नहीं होती, इसलिए दाम बहुत कम पड़ते हैं। शर्त एक ही होगी कि जो जमीन लेता है, वह मेहनत करके उपज बढ़ाये, निकम्मा या आलसी बनकर न बैठा रहे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या आप ऐसी कोई परिस्थिति सोच सकते हैं जबकि किसान को निकाला जा सकता है?" बापू ने कहा, "नहीं, अगर वह जमीन को फिजूल न पड़ा रहने दे तो।" फिर उन्होंने बताया कि कैसे हेनरी जार्ज ने यह सिद्धांत चलाया था कि जमीन के सिवा दूसरी किसी चीज पर कर न लगाओ। जमीन को ठीक तरह काम में लाया जाय तो वह इतनी उपज दे सकती है कि सबके लिए काफी हो।

बापू बाद में संरक्षण (ट्रस्टीशिप) के सिद्धांत पर आ गये। बोले, "आजाद हिन्द में जमीन नये सिरे से तकसीम होगी। जमींदारों से हम ट्रस्टी बनने को कहेंगे और सुझायेंगे कि वे मन से मालिकपन की भावना निकाल दें। तब उन्हें खासा कमीशन मिलेगा।

"मगर उनको अपनी शक्ति और ज्ञान का उपयोग जनता के लिए करना होगा। मेरे सामने जमनालालजी की मिसाल है। उनका दान लाखों का था। अगर मैं उन्हें प्रोत्साहन देता तो वह सबकुछ दे डालते। लेकिन मैं नहीं चाहता था कि वह अपनी सामर्थ्य से बढ़कर कुछ करें। घनश्यामदास बिड़ला भी उस आदर्श पर अमल

करने की पूरी कोशिश कर रहा है, लोग भले उसके विरुद्ध कुछ भी कहें। आजाद हिंद में कानून बनेंगे और अगर कोई ट्रस्टी न बनना चाहे तो उसकी जमीन ले ली जायगी और उसे योग्य हरजाना भर ही दिया जायगा। जो वह मांगेगा, सो नहीं मिल सकेगा।

"गोलमेज परिषद् में सर तेज बहादुर सप्रू ने मुझसे पूछा, 'तो क्या लोगों की जागीरों की जांच-पड़ताल करेंगे ?' मैंने कहा, 'हां।' इतने से ही मैंने अनेक दुश्मन खड़े कर लिये। मगर हमें यह सब करना ही पड़ेगा। हमें देखना होगा कि कोई व्यक्ति जमींदार बना कैसे ? अगर उसका पिछला चलन अच्छा होगा तो उसे हरजाना देंगे।"

मीराबहन ने पूछा, "क्या इसी तरह निजी (प्राइवेट) व्यापार और निजी पूंजी भी उड़ा देंगे ?" बापू ने कहा, "नहीं, निजी पूंजी का उपयोग होना ही चाहिए, नहीं तो हम प्रगति नहीं कर सकते, मगर व्यापारियों को अपने कर्मचरियों को मुनासिब तनख्वाह देनी होगी, बुढ़ापे और बीमारी में उनकी सम्भाल का प्रबन्ध करना होगा और उनको रहने योग्य मकान भी देना होगा।"

आज डा० शाह आये। मीराबहन की मालिश की, पर उसके बाद भी दर्द कुछ ही कम हुआ।

बापू ने दिन में दो बार कातना शुरू किया है। एक समय मैंने उन्हें 'लाइट ऑव एशिया' पढ़कर सुनाई और एक दफा बाइबिल की साहित्यिक भूमिकावाला भाग सुनाया।

मनु ठीक है। आज शाम को घूमने भी निकली। शाम को बड़ी वर्षा हो रही थी। महादेवभाई की समाधि पर फूल चढ़ाने अकेली मैं ही गई।

११ जुलाई '४३

बापू द्वारा दिये गए टॉटेनहमवाले पैम्फलेट के उत्तर की आखिरी नकल को पहले प्रूफ के साथ मिलाने में मैंने काफी समय दिया। यह काम कल रात से चल रहा था। पांच-छः पन्ने करते ही बत्तियां बुझ गईं। कागज सम्भालकर सोने को गई तो बत्तियां फिर जल उठीं, मगर फिर तो सो ही गई।

आज सुबह कटेली को पकड़ा। दोपहर को भी उनसे सहायता ली और जितने टाइप किये पन्ने तैयार थे, उतने मिला डाले।

रात को अखबार पढ़े। दो दिन के इकट्ठे हो गये थे। भाई के साथ कुछ समय

बातें करती रही।

आज मनु को नहीं सिखा सकी। दोपहर को 'लाइट ऑव एशिया' भी नहीं पढ़ सकी। शाम को बापू के साथ मैंने बाइबिल पढ़ी। बापू राजाजी व मणिलाल-भाई की बातें करते रहे। बा को मणिलालभाई की बड़ी चिंता हो रही है।

१२ जुलाई '४३

आज आकाश कुछ खुला है। 'सरकारी बाइबिल' का उत्तर टाइप करना डा० गिल्डर कल पूरा करेंगे। परसों वह चला जायगा। बहुत बाड़ा बोझ सिर से उतरेगा। मजाक चल रहा है कि उस दिन को किस तरह मनाना चाहिए।

१३ जुलाई '४३

आज टाइप करने का काम पूरा हुआ। डा० गिल्डर, मैं और भाई—तीनों ने बैठकर प्रूफ सुधारे और दूसरी नकलों में वही संशोधन किये। तीन पन्ने फिर से टाइप करने को निकाले। डाक्टर साहब ने एक तो रात में टाइप कर डाला और दो सुबह करेंगे। थोड़ा-सा परिशिष्ट का काम भी है। पहले यह निश्चय हुआ था कि यह सब टाइप का काम भाई करें, मगर बाद में तय हुआ कि डा० गिल्डर भी कुछ भाग टाइप करें; क्योंकि दो जगह आधा-आधा पन्ना उनका टाइप किया हुआ था। उसीके नीचे दूसरा टाइप करना था। दोनों टाइपराइटरों में थोड़ा-थोड़ा फरक है, इसलिए ऐसा लगा कि डाक्टरसाहब करें तो अच्छा होगा। बापू ने कल दो-ढाई बजे उन सबको भेजने का काम मुझे सौंपा।

शाम को भाई की तबीयत अच्छी न थी।

१४ जुलाई '४३

सुबह बापू ने सब परिशिष्टों का एक सूचीपत्र तैयार करने को डा० गिल्डर से कहा। वह बोले, "इस सूचीपत्र के सिवा बाकी सब दो-ढाई बजे तक आपको मिल सकेगा। सूचीपत्र भी शाम को मिलेगा।" दोपहर को बापू ने सूचीपत्र टाइप करने का काम भाई को सौंपा। डा० गिल्डर ने कहा, "मेरी मशीन पर ही कर लो। मैं थोड़ा आराम कर लूं।" भाई उनकी मशीन पर टाइप करने बैठे। एक बजे से लेकर चार बजे तक आधा काम कर पाये। खयाल था कि आधे घंटे का काम है, मगर इस मशीन से वह वाकिफ नहीं थे। मशीन पुरानी है और कई जगह धोखा दे जाती है। उधर डा० गिल्डर का काम भी रुका पड़ा था। आखिर उन्होंने भाई को सलाह दी कि वह अपनी ही मशीन पर सब काम करें; क्योंकि इस नकल में कुछ दोष भी

आ गया था। भाई ने अपनी मशीन पर एक घंटे से भी कम अरसे में सब कर लिया। डा० गिल्डर ने भी अपना काम पूरा किया। मुझे कुछ आखिरी जरूरी देखभाल करनी थी। पन्नों को नम्बर देने आदि का काम मैंने किया। करीब साढ़े सात बजे शाम को बापू को सबकुछ दिया। सचमुच सिर से भारी बोझ उतरा। डा० गिल्डर तो एक हफ्ते से दिनभर टाइप में ही लगे रहते थे, यहांतक कि दोपहर का सोना और कैरम खेलना भी छोड़ रखा था।

डा० गिल्डर ने टाइप करना कैसे सीखा, उसका इतिहास बड़ा रोचक है। देश में पढ़ाई पूरी करके वह एम० डी० करने विलायत गये और वहां पांच साल पढ़े। वहींपर उन्हें बार-बार आनेवाला ज्वर (रिलैप्सिग फीवर) हुआ। उसके बाद एक आंख में मोतियाबिंद हो गया। मोतियाबिंद का कारण किसीकी समझ में नहीं आया। डर था कि कहीं दूसरी आंख में भी न उतर आये, इसलिए उन्होंने टाइप करना सीखा, ताकि आंख न रहे तो मरीज को नुसखा टाइप कर दिया करेंगे। ईश्वर-कृपा से दूसरी आंख बची रही। बाद में पता चला कि कभी-कभी 'रिलैप्सिग फीवर' के परिणामस्वरूप मोतियाबिंद हो जाता है।

बापू को टाइप-नकल सौंपकर हम खेलने गये। आज सूखा दिन था। नीचे खेल सकते थे। बापू ने हमारी खातिर प्रार्थना पन्द्रह मिनट देरी से की। घंटी इसलिए नहीं बजाई कि हम खेल पूरा करके आयें।

कल कटेलीसाहब अपने घर जा रहे हैं। बापू ने उनके बच्चों के लिए कुछ मिठाई भेजने को कहा था। शाम को मैंने बेसन की मिठाई और चिवड़ा बनाया। एक-एक डिब्बा भरकर उनको दे दिया। एक-एक यहां के लिए रखा।

बापू ने रात को टाइप-नकल देखी और दस्तखत कर दिये। एकाध सुधार करना था, वह मुझसे कराया। सवा दस बजे सोने को गये। मुझे भी आज कैरम खेलने का शौक हुआ। बा खेलकर आ गई थीं। टाइप-नकल को पंच करके बांधना, बादामी कागज का बड़ा लिफाफा बनाकर उसमें उसे डालना, यह काम मीराबहन ने लिया था। सब सामान उन्हें देने गई तो डा० गिल्डर, कटेली और मीराबहन खेल रहे थे। मैं भी उनके साथ बैठ गई। दस मिनट खेली। पीछे आकर सोने की तैयारी की। ग्यारह बजे आई। मीराबहन ने पौने ग्यारह के बाद अपना काम शुरू किया। कौन जाने कब सोई होंगी। भाई रात को साढ़े बारह बजे सोये। पढ़ते रहे थे।

१५ जुलाई '४३

सुबह मीराबहन बापू के उत्तर का लिफाफा ठीक करके ले आईं। बापू ने भाई को लिफाफे पर पता लिखकर कटेलीसाहब को दे देने के लिए कहा। करीब नौ बजे वह लिफाफा कटेलीसाहब के हाथों में गया। जाने के बाद पता चला कि सूची-पत्र को नम्बर देने में दो छोटी-सी भूलें रह गई थीं, पर अब वे सुधारी नहीं जा सकतीं। वे इतनी महत्व की भी नहीं थीं कि अलग पत्र लिखकर सुधारी जायं। 'वर्धा की इंटरव्यू' की तारीख और 'अमेरिकन ओपिनियन' में एक छोटा उप-शीर्षक देना भूल गये थे। ऐसा लगता था कि ये दोनों भूलें एक ही जगह हैं, मगर वे थीं अलग-अलग।

कटेली दोपहर को पांच दिन की छुट्टी पर गये। उन्हें एक मुकदमे में गवाही देने जाना था और उनकी मां भी बीमार थीं। उनसे मिलना था। दोनों काम हो जायंगे। करीब एक साल के बाद वह जेल से बाहर निकले।

सुबह आकाश खुला था। बेडमिंटन खेल सके। दोपहर पानी आया। शाम को नीचे का कोर्ट गीला था। ऊपर खेलना पड़ा।

डा० गिल्डर आज दोपहर में खूब सोये। पांच बजे जब चाय पीने आये, तब हम लोग हँसने लगे कि परीक्षा पूरी करने के बाद जैसे दिमाग हलका महसूस होता है और विद्यार्थी खूब सोते हैं, वैसे ही डा० गिल्डर भी सोये हैं।

१६ जुलाई '४३

रात को मेरे सिर में सख्त दर्द रहा। बापू 'एना किंग्सफोर्ड' की बात सुनाने लगे। उसने खुराक पर एक किताब लिखी है। कहने लगे, "वह बीमार रहा करती थी। उसे लगा कि दवा से वह अच्छी नहीं होगी, इसलिए नई शोध की। तुझे भी ऐसा करना चाहिए।"

रात को बापू ने विचार किया कि 'बापू ने आठ अगस्त-वाला प्रस्ताव वापस ले लिया है', इस अफवाह के बारे में उन्हें सरकार को लिखना चाहिए। सुबह ही लिखा कि सरकार को प्रकट कर देना चाहिए कि यह अफवाह गलत है। आगे लिखा, "मेरे पास वह प्रस्ताव वापस लेने की सत्ता ही नहीं और ऐसा करने की मेरी इच्छा भी नहीं।" डा० गिल्डर ने इसे टाइप कर दिया। डाक्टरसाहब आये थे। उनके हाथ यह पत्र भेजा। वह रोज आते हैं, लेकिन इन पांच दिनों से हमारा सरदार रघुनाथ जमादार है।

माली का आना बन्द कर दिया, इसलिए बगीचा सूना पड़ा है। रघुनाथ माली से सब पूछ आया है। उसने कल से कैदियों (कन्विक्टस) की मदद से फूल इत्यादि लगाना शुरू किया है। कहता था कि पांच दिन में सब पूरा हो जायगा। शंकर वार्डर बगीचे का काम जानता है, लेकिन वह दो-चार दिन में छूटनेवाला है। उसके जाने से पहले यह काम पूरा करने का रघुनाथ का प्रयत्न है।

मैंने आज फिर थोड़ी ड्राइंग शुरू की है।

: ५२ :

जेलखाना नहीं, सुधार-गृह

१७ जुलाई '४३

आधी रात से मेरे सिर का दर्द शुरू होगया था, इसलिए सुबह उठते ही जुलाब लिया। डा० गिल्डर की सलाह से कुनीन भी ली। शाम तक तो ठीक नहीं हुआ, मगर सोने पर ठीक होगया।

श्री कटेली की गैरहाजिरी में कैरम की चौथी जगह पूरी करने के लिए मुझे बापू ने हुक्म दिया है। रात को पौन घंटा उसमें जाता है। रात का पढ़ना बन्द है।

बापू ने फिर से रामायण के चुने-चुने हिस्सों पर निशान लगाने शुरू किये। एक संक्षिप्त रामायण निकालने का उनका विचार है। भाई उसका गुजराती अनुवाद कर लेंगे तो वह अच्छी चीज बन जायगी। प्रार्थना के बाद रात का समय बापू इस काम में लगाते हैं। दिन में दो बार करीब पौन-पौन घंटा कातते हैं, अखबार पढ़ते हैं और खाली समय में भूगोल की किताब पढ़ते हैं। मनु के साथ गीताजी, व्याकरण और ज्यामिति करते हैं, मेरे साथ बाइबिल, रामायण (वाल्मीकिकृत) और संस्कृत व्याकरण। मैंने उन्हें 'लाइट ऑव एशिया' सुनाना आरम्भ किया है। आजकल कोई-न-कोई किताब मुझसे सुना करते हैं।

१८ जुलाई '४३

सुबह भंडारी और शाह आये। हमारा बिजली का चूल्हा भी वह ठीक करवा रहे हैं।

आज बापू की स्वास्थ्यवाली किताब के अंग्रेजी अनुवाद का बाकी हिस्सा पूरा

करना आरम्भ किया। भाई ने रामायण का अनुवाद शुरू किया।

शाम को खेलने के बाद भाई की छाती में दर्द हो गया। तीन-चार बार ऐसे ही हो चुका है। अब उनका खेलना बन्द करने का हमारा विचार है।

१६ जुलाई '४३

बापू का मौन है। मैंने छुट्टी मनाई। दो बार पिंग पौंग खेला। मीराबहन ने भी खेलना शुरू किया है। भाई और मीराबहन शाम को फिर खेले। मैंने शाम को थोड़ी ड्राइंग की। रात को कैरम से छुट्टी मिली। बा की तबीयत अच्छी नहीं थी। मीराबहन और डाक्टरसाहब अकेले खेले।

२० जुलाई '४३

शाम को मीराबहन के हाथ में दर्द रहा। दर्द की दवा (एस्पिरिन) खाकर सो गई। खाना नहीं खाया और रात को कैरम नहीं खेली। दस बजे बापू के पास आकर थोड़ी देर बैठीं।

डा० गिल्डर ने फ्रेंच भाषा की डाक्टरी की एक किताब मुझे पढ़कर सुनाना शुरू किया है। आज बीस मिनट तक सुनाई। भाषा कठिन लगती है। धीरे-धीरे पढ़ें तो समझना आसान है, खासकर डाक्टरी की किताब।

२१ जुलाई '४३

सुबह हम लोग प्रार्थना पूरी करके सोने गये तो बरामदे में से सिपाहियों को जाते देखा। मैंने कहा, "श्री कटेली आज आनेवाले हैं, इसलिए ये लोग डर के मारे जल्दी उठ रहे हैं, नहीं तो कटेलीसाहब की गैरहाजिरी में सात बजे उठते थे। चाय के समय पता चला कि प्रार्थना चल रही थी, तब कटेलीसाहब आ गये थे। उनका सामान बाद में रघुनाथ लाया। मिठाई वगैरह काफी लाये हैं, दस पौंड बिस्कुट भी।

शाम को हम खूब खेले। कोर्ट सूखा था। बाहर खेल सके। डाक्टरसाहब को खाने के समय आज श्री कटेली का साथ मिला। कटेली और डाक्टरसाहब दोनों मांसाहारी हैं, साथ खाना खाते हैं।

२२ जुलाई '४३

सुबह बेडमिंटन खेलने लगे तो वर्षा आ गई। वापस आकर पिंग पौंग खेले। कल तो मीराबहन भी खूब खेली थीं, मगर बाद में हाथ दुखा, सो उन्होंने खेलना बन्द कर दिया है।

दिन में आकाश साफ हो गया है।

बापू की पुस्तक का अनुवाद चल रहा है। इस महीने के अंत तक पूरा नहीं हो सकेगा।

बापू अब रात को भाई का रामायणवाला गुजराती अनुवाद सुधारते हैं, इसलिए उन्हें दस बज जाते हैं।

२३ जुलाई '४३

डा० शाह आये तो हिरण के बारे में हमने पूछा। मुझे अफसोस है कि बेचारे को यहां से निकलवाकर हमने उसे और भी खराब हालत में डाल दिया।

मालिश में आज डा० गिल्डर नहीं आये। उनकी उंगली में सूजन है।

मीराबहन को एक टांग में भी दर्द शुरू हुआ है। बा को कल रात खूब खांसी आई और छाती वगैरह दुखी। उनके साथ में कुछ समय तक जागी। परिणामस्वरूप सुबह प्रार्थना में न उठ पाई। बुरा लगा। बिजली का चूल्हा फिर बिगड़ गया है, जिससे मीराबहन को बड़ी कठिनाई होती है।

२४ जुलाई '४३

डा० गिल्डर को जाड़ा लगकर बुखार आ गया। उनके शरीर का दर्द भी उंगली पकने के कारण नहीं, बल्कि मलेरिया के कारण ही होगा।

श्री कटेली पिंग पौंग की मेज को खाने के कमरे में ले आये हैं; क्योंकि वहां रोशनी अच्छी है।

२५ जुलाई '४३

बापू की मालिश करने आज मैं गई, इसलिए अनुवाद का समय उसमें गया। आज डाक्टरसाहब के पास फ्रेंच सीखने भी नहीं गई; क्योंकि उन्हें कल बुखार था। आज वह आराम कर रहे थे।

आज भंडारी नहीं आये। कर्नल शाह के हाथ बिजली का चूल्हा भेजा है। इसकी मरम्मत न हो सके तो नया लाने को बापू ने उनसे कहला दिया है।

बापू और भाई अखबारों की कतरनें निकालने का काम करते रहे। कल रात ग्यारह बजे सोने गये, इससे खून का दबाव बढ़ रहा है।

२६ जुलाई '४३

बापू का आज मौन था। कल रात को बापू जल्दी बिस्तरे पर चले गये थे, इसलिए आज सुबह खून का दबाव कुछ कम रहा—१७६/१०४ के लगभग।

डाक्टरसाहब का बुखार उतर गया है। मनु को आज फिर बुखार आ गया है। मीराबहन के पास ड्राइंग सीखने गई।

२७ जुलाई '४३

बापू का खून का दबाव आज बहुत ज्यादा है—२०६/११६। एक कारण यह है कि सुबह प्रार्थना के बाद वह सोये नहीं।

उन्होंने 'थियोलोजी इन इंग्लिश पोएट्स' पढ़ ली है। इसे पढ़कर उनके मन में विचार उठा है—"जिन लोगों में इस प्रकार के साधु पैदा हुए हैं, उन्हींमें से आज के सरकारी राजनीतिज्ञों जैसे लोग कैसे निकल सके हैं ? इन लोगों के मन में भी कहीं-न-कहीं भलाई का अंश होगा ही।" इसलिए बापू को लगा कि लिनलिथगो को एक छोटा-सा पत्र अपना हार्दिक दुःख बताने के लिए लिखना ही चाहिए। कहते थे कि न सो सकने का कारण ये विचार न थे। उन्हें दूसरा काम करना था। कतरनें निकालने में भाई की मदद करना स्वीकार करने के बाद उन्हें वही काम करना चाहिए था। इसलिए वह विचार करते रहे कि कतरनों की अनुक्रमणिका (क्रॉस-इन्डेक्स) कैसी बनानी चाहिए। आश्चर्य है कि बापू छोटी-से-छोटी चीज को उठाते हैं तो उसमें अपने प्राण उडेल देते हैं।

श्री कटेली जबसे वापस आये हैं, बहुत उदास रहते हैं। अब वह इस जेल से उकता गये हैं।

दिन में थोड़ी-थोड़ी वर्षा होती रही। बापू ने कतरनों की अनुक्रमणिका बनाई। खून का दबाव दिनभर बढ़ा ही रहा।

मनु को आज फिर बुखार आया है।

माताजी आदि के पत्र मिले।

२८ जुलाई '४३

रसोईघर के सिपाहियों और कैदियों को बुखार आ गया, इसलिए मुझे रसोई में काफी समय देना पड़ा।

मनु को बुखार नहीं है। डाक्टरसाहब के पास थोड़ी-सी फ्रेंच पढ़ी, थोड़ा समय डाक्टरी पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने में लगाया। मालूम नहीं क्यों, यहां पढ़ने के लिए इतना कम समय मिलता है।

मीराबहन की तबीयत अच्छी नहीं।

२९ जुलाई '४३

सुबह आकाश खुला। दिन में थोड़ी वर्षा हुई।

मनु, मीराबहन और मैं—तीनों सलवार और कुरता पहनने लगे हैं। यह पंजाबी पोशाक यहां खूब चली है। बापू को भी पसन्द है। मैंने एक दिन सलवार और कुरता पहना तो कहने लगे, "बस, यही पोशाक पहनो।" फिर मनु को भी वही पोशाक पहनने को उन्होंने कहा। मेरे कपड़े उसके ठीक आ गये। यहां रोज घर में धो लेते हैं। थोड़े कपड़ों से काम चल जाता है।

श्री कटेली रात को उपवास करते हैं। उनके घुटने में और हाथ में दर्द है, इसीलिए उन्हें ऐसा करना ठीक लगता है।

३० जुलाई '४३

बापू खूब काम करते हैं। कतरनें निकालना, कातना, मनु को सिखाना, मेरे साथ रामायण और बाइबिल पढ़ना, आदि। अब उन्होंने लैन्सबरी का जीवन-चरित पढ़ना शुरू किया है और सम्भवतः जल्दी पूरा कर डालेंगे।

रात को बापू जल्दी सो जाते हैं, इसलिए खून का दबाव कम हो रहा है। बाहर होते तो रक्त-चाप या थकान कितनी भी होती, काम किये बिना न चलता।

३१ जुलाई '४३

बापू ने ४८ दिन तक सरकारी आरोपों का जवाब तैयार करने में लगे रहने के कारण काता नहीं था। ८ जुलाई से कातना शुरू किया तो रोज दो बार कातने लगे। कातने में खूब समय देते थे। सब दिनों का कातना, ७५ तार रोज के हिसाब से पूरा करना और ३१ जुलाई तक रोज दो बार कातना चाहते थे। आज वह सब हिसाब पूरा हुआ। तार हिसाब से अधिक निकले।

शंकरन का पत्र आया। दवाखाने की रिपोर्ट भेजी थी।

१ अगस्त '४३

आज से बापू की मालिश करना मेरा काम और स्नान में उनकी मदद करना भाई का काम तय हुआ, सो साढ़े आठ से दस बजे तक भाई और साढ़े नौ से सवा ग्यारह बजे तक मैं काम कर सकूंगी।

सुबह घूमते समय जेल की बातें होने लगीं। हमारे यहां एक पंद्रह-सोलह वर्ष का कैदी लड़का है। उसने थोड़ा-सा अनाज चुराया था। इस भुखमरी में कौन नहीं चुरा सकता? उसके लिए उसे साल या दो साल की सजा मिली है। सबके साथ

वह भी शायद पक्का चोर होकर निकलेगा। भाई कह रहे थे, "यह क्रम बदलना चाहिए। कैदियों को काम का वेतन भी मिलना चाहिए। अमरीका में तो न जाने कितना रुपया अपनी ही कमाई का लेकर कैदी जेल से निकलते हैं।"

बापू कहने लगे, "मेरा मत तो यह है कि जेलखाना होना ही नहीं चाहिए। सब सुधार-गृह होने चाहिए। इसी तरह सजा की मुद्दत भी नहीं होनी चाहिए। जब कैदी सुधर जाय और प्रमाण-पत्र प्राप्त कर ले, तभी छूट जाय। आज जो चलता है, सब करुणाजनक है।"

अमरीका की जेलों में दिल बहलाने के कैसे-कैसे साधन हैं, भाई इस बारे में बताते रहे। कोई जेल में बहुत तूफान मचाये तो उसे जेल के सामाजिक कार्यक्रम में से तथा दिल-बहलाव की चीजों में से निकाल देते हैं। यह बहुत बड़ी सजा हो जाती है, लेकिन इसकी बहुत कम आवश्यकता पड़ती है।

आज बापू का रक्त-चाप आदर्श निकला—१६६/९८। उन्होंने चार रात और पांच रोज से जल्दी सोना शुरू किया है। इससे अब सब ठीक होगया है। कह रहे थे, "रात को काम न कर सकना मुझे चुभता है, मगर कोई चारा नहीं है।"

रात को भाई कहने लगे, "८ अगस्त को कुछ करना चाहिए।" मैंने कहा, "१५ अगस्त का दिन मनाना चाहिए, जिसमें कैदियों को खिलाना, उपवास और गीता-पारायण का क्रम हो।"

भाई ने कहा, "तबतक गीता कण्ठ कर लो।"

२ अगस्त '४३

बापू का मौन है। सरकार का पत्र आया है कि वह ८ अगस्त के प्रस्ताव को वापस लेने-संबंधी अफवाह को रद्द करने की आवश्यकता नहीं समझती।

३ अगस्त '४३

इन दिनों कुछ खास घटना नहीं हुई। आठ तारीख को शाम को झण्डा-वन्दन और स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का कार्यक्रम तय हुआ है। बापू शायद प्रतिज्ञा में कुछ परिवर्तन करेंगे। उपवास करने का विचार था, मगर डा० गिल्डर से बापू उपवास नहीं कराना चाहते थे। अगर सब करेंगे तो वह भी करेंगे, इसलिए उपवास का विचार हमने छोड़ दिया है। पंद्रह तारीख को हम उपवास करेंगे। डाक्टर-साहब न करें, ऐसी सलाह उन्हें दी तो है, पर डर है कि वह मानेंगे नहीं।

बापू और भाई कतरनें निकालने के काम में जुटे हैं। बापू ने लैन्सबरी का

जीवन चरित पढ़ डाला और अब 'रेड वर्ब्स' पढ़ रहे हैं।

रूस के प्रति बापू के मन में मान बढ़ा है। कहते थे, "अगर लड़ाई में कोई जीतने के लायक है तो रूस। रूस में सबकुछ लोगों का है, इसीलिए वे इतनी बहादुरी दिखा रहे हैं।"

७ अगस्त '४३

मीराबहन ने आज ऊपर जाने की सीढ़ी के नीचे की जगह पर अंगीठी रखकर खाना खाया। कहती थीं, "इस वर्षभर में पहली ही बार आराम से खा सकी हूं।" उनका दर्द आज फिर ज्यादा है।

आज मैंने बाइबिल नहीं पढ़ी। रामायण भी थोड़ी ही पढ़ी।

भाई पृथ्वी का पत्र स्यालकोट जेल से आया है। वह वहां खूब बहादुरी से काम कर रहे हैं। अच्छा लगा। कनु का पत्र आया है। सरकार ने उसमें बड़ी काट-छांट की है।

: ५३ :

'हुकूमत जाओ'-दिन की संवत्सरी

८ अगस्त '४३

सुबह डा० शाह और कर्नल भण्डारी आये। मीराबहन की नाक के पानी की परीक्षा करवाने का विचार किया है। 'हुकूमत जाओ'-दिन की पहली संवत्सरी है। गत वर्ष आज के दिन शाम को मैं बंबई पहुंची थी। उस रोज किसीको खयाल भी न था कि क्या-क्या घटनाएं इतने समय में होनेवाली हैं।

दोपहर को बापू, भाई, डा० गिल्डर, मनु और मैं—सबने ढाई से साढ़े तीन बजे तक काता। मीराबहन और बा को बीमारी के कारण छुट्टी थी।

सुबह स्नान के बाद बापू ने स्वतन्त्रता-दिवसवाली प्रतिज्ञा को थोड़ा बदलकर 'हुकूमत जाओ'-दिवस की प्रतिज्ञा तैयार की। शाम को झण्डा-वन्दन था, इसलिए चाय के बाद हम लोग झण्डा-वन्दन के लिए भजन तैयार करने बैठे। पौने सात बजे झण्डा-वन्दन किया। झण्डे का गीत गाकर डाक्टरसाहब ने झण्डा फहराया और प्रतिज्ञा पढ़ी। प्रतिज्ञा यह थी :

"हिन्दुस्तान सत्य और अहिंसा के द्वारा हर मानी में पूरी आजादी हासिल करे—यह मेरा प्रत्यक्ष उद्देश्य है और वर्षों से रहा है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए में आज 'हकूमत जाओ'-दिवस की पहली संवत्सरी के रोज प्रतिज्ञा करता हूं कि जबतक यह उद्देश्य पूरा न हो जाय, तबतक न मैं खुद चैन लूंगा, न जिनपर मेरा असर है, उन्हें चैन लेने दूंगा। मैं उस अदृष्ट दैवी शक्ति से, जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा आदि परिचित नामों से पहचानते हैं, इस प्रतिज्ञा के पूरा करने में इमदाद मांगता हूं।"

पहले प्रतिज्ञा अंग्रेजी में और हिन्दुस्तानी में डा० गिल्डर पढ़ गये। फिर हिन्दुस्तानी में हम सबने उनके पीछे-पीछे उसे दोहराया।

प्रतिज्ञा के बाद 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गाया, फिर 'वंदेमातरम्' गाकर समारोह पूर्ण किया। झंडा गाड़ने की जगह लिपाई की थी और गोल चक्कर के किनारे-किनारे गमले रखे थे। सुन्दर दृश्य था।

रात में बापू ने पौने ९ बजे मौन लिया।

९ अगस्त '४३

सुबह यरवदा-जेल की तरफ से जयजयकार की आवाजें आने लगीं। हम याद कर रहे थे कि कैसे पिछले साल इस समय बापू को गिरफ्तार करके स्टेशन पर लाया गया था और कैसे वह यहां आये, आदि-आदि। स्वतंत्रता का प्रण लेकर हम सब निकले थे—महादेवभाई उसे पूरा कर गये। कोई ऐसा दिन नहीं जाता, जब महादेवभाई का स्मरण बार-बार न हो आता हो।

दोपहर को भाई का कमरा साफ किया। उनसे कुछ कागज लिये हैं, उन्हें अभी ठीक करना है।

१० अगस्त '४३

अखबारों में, देश ने नवीं अगस्त को मनाने का कैसे प्रयत्न किया, इसकी खबर थी। इतनी सख्ती और इतनी भुखमरी होते हुए भी लोग इतना कर सके, यह हिम्मत की बात है। लेकिन देश की शक्ति अगर इतनी ही रह गई है तो हमें सचमुच यहां सात वर्ष और बैठना होगा।

आज और कल मैंने अनुवाद नहीं किया। कल भाई की जगह बापू के काम मैंने किये। आज मुझे रसोईघर का भी काम करना पड़ा। रसोईघर में चोरी होने लगी है, इसलिए वहां ताला लगाने का विचार हो रहा है।

११ अगस्त '४३

सुबह श्री कटेली ने खुद बैठकर अपने सामने खाने का सामान एक अलमारी में रखवाकर ताला लगा दिया।

पन्द्रह तारीख को गीता-पारायण करने का विचार है। मैं, मनु और भाई आगे से बापू के पास शाम को चार बजे गीता-पाठ करेंगे। आज शाम को देर से बैठे, इसलिए पांच ही अध्याय हो सके। मनु तो पहले-दूसरे अध्याय के आगे नहीं चल सकी। भाई बैठे कातते रहे। पाठ में शामिल नहीं हुए।

१२ अगस्त '४३

मनु आज पाठ में नहीं आई। भाई के पास गीता का तीसरा अध्याय सीखती रही। मैंने तीसरे से आठवें तक पाठ किया।

आज मुझे बुखार-सा लगता है। यहां मलेरिया बहुत सता रहा है।

१३ अगस्त '४३

रात में मुझे बुखार रहा। सुबह अण्डी के तेल का जुलाब लिया।

शाम को १ से १८ अध्याय तक गीताजी का पाठ बापू के सामने किया।

: ५४ :

महादेवभाई की बरसी

१४ अगस्त '४३

आज महादेवभाई को गये ५२ हफ्ते पूरे होगये।

कल कैदियों को खाना खिलाना है। दस बजे प्रार्थना में बैठेंगे। हम सब लोग उपवास करेंगे। मीराबहन को मैंने फल सजाने में मदद देने को कहा है। 'ह्वेन आई सर्वे दि वण्डरस क्रास' वह प्रार्थना में गायेंगी। दोपहर को एक घंटा सामूहिक कताई होगी।

बा की तबीयत अच्छी नहीं। दो-चार रोज से उनका शरीर दुखता है। मेरी तबीयत भी ढीली है। कल जबसे जुलाब लिया है, तबसे उल्टी का-सा आभास होता है, इसलिए आज सिर्फ मोसम्बी खाई।

दोपहर दो बजे के करीब बा को दिल की धड़कन का दौरा हुआ। चार बजे

के करीब कुछ कम हुआ, पर छः बजे देखा कि फिर चल रहा था। शाम को मैंने डा० शाह से दिल की धड़कन का चित्र लेने की मशीन लाने को कहा। वह कोयाजी के यहां गये। उनका सहायक शाम की छुट्टी पर गया हुआ था, वह मुश्किल से मिला। यहां बापू ने प्रार्थना जल्दी पूरी कराई। भजन और रामायण छोड़ दिये, ताकि डा० शाह वापस आयें, तबतक सब लोग तैयार हो जायं। राह देख-देखकर बापू गुसलखाने गये। आकर सोये तबतक कहीं सवा नौ-साढ़े नौ बजे मशीन आई। दौरा अभी जारी थी। चित्र लेकर वे लोग वापस गये। करीब ग्यारह बजे मैंने देखा कि दौरा बन्द हो गया था। रात को वह अच्छी तरह सोईं। मनु करीब बारह बजे तक बा के पास सोई, पीछे अपनी खाट पर गई। मैं सुबह प्रार्थना में नहीं उठी; क्योंकि उस वक्त पसीना आकर बुखार उतर रहा था। कल शाम को चार बजे के लिए भजन का और ईशोपनिषद् का अभ्यास किया।

१५ अगस्त '४३

रात में पानी पड़ रहा था। डर था कि सवेरे भी ऐसे ही रहा तो समाधि की सजावट करने और प्रार्थना करते समय अड़चन आयेगी, परन्तु तीन बजे बारिश थम गई। भाई सुबह प्रार्थना के बाद नहीं सोये। मैंने भी न सोने का इरादा किया था, मगर मतली आती थी और चलने-फिरने से बढ़ती थी, इसलिए सो गई। सात बजे उठी, तब तबीयत ठीक थी। आकाश में बादल घिरे थे। पिछले वर्ष भी महादेव-भाई की मृत्यु के दिन ऐसा ही था। जल्दी से स्नानादि से छुट्टी पाई। बापू सवा सात बजे घूमने जानेवाले थे। मैं सात बजकर बीस मिनट पर पहुंच गई और फूल इकट्ठे किये। पौने आठ बजे हम लोग महादेवभाई की समाधि पर गये। मीराबहन डाक्टरसाहब, कटेलीसाहब, सब आये थे। मनु कुछ देर से आई। बा के पास थी। मीराबहन ने फूल सजाने में मदद की। बहुत सुन्दर सजावट हो गई। कल शाम को गोबर से लिपाई कराई थी। सब सुन्दर लगता था। डेलिया का एक फूल भी लह-लहा रहा था, मानो महादेवभाई की खातिर ही आज खिला हो। उसे ॐ के बीच लगाया। गीताजी का पाठ रोज की तरह किया। आज वातावरण में गम्भीरता अधिक थी।

महादेवभाई की समाधि (बा ने इसे 'महादेव का मंदिर' का नाम दिया है) से लौटकर भाई बापू की मालिश करने गये। मैंने कैदियों के लिए खिचड़ी, सब्जी और कढ़ी का सामान दिया। पीछे सफाई पर लगी। जिस कमरे में महादेवभाई के

शव को पिछले साल रखा था, वहां का सामान निकलवाया। कमरा जैसा उस समय था, वैसा ही कर दिया। कमरे में उसी तरह बीच में जेल की चद्दर बिछाई। मीराबहन ने जिस तरह जेल की चादरों के बीच पड़े शव पर फूल सजाये थे, उसी तरह आज चद्दर पर सजाये। जहां महादेवभाई का सिर था—उनका मधुर मुख था, वहां फूलों का 'ॐ' बनाया, पांवों के पास सलीब। सिर के पास एक कटोरे में सुगन्धि सामग्री सुलगाकर रखी। शव के पास जहां बापू बैठे थे, वहीं उनकी गद्दी रखी, उनके पास ही बा की बैठक, सामने डाक्टनसाहब और कटेलीसाहब के लिए जगह। बीच में धूप इत्यादि के पास बापू के बाद मैं, फिर भाई, फिर मनु और उसके बाद मीराबहन अर्धचन्द्र-सा बनाकर बैठे। सामग्री में से खूब धुआं उठ रहा था। गले में जाता था, सो ज़रा पीछे हटाकर रखना पड़ा। जिधर शव के पांव थे, उधर मनु ने तुलसी की बत्ती जलाकर रखी। पौने दस बजे बापू स्नानघर से निकले। महादेवभाई के कमरे में आये। मैंने कहा, "बापू, देखिये, सिर की जगह 'ॐ' है, क्योंकि महादेवभाई 'ॐ' में लीन हो गये न?" बापू कहने लगे, "हां, वह तो है ही।" दीवारों पर, जो फर्नीचर रह गया था, उसपर और अलमारियों आदि पर मीरा बहन ने सुन्दर फूल सजाये। सुलगती हुई सुगंधि-सामग्री गत वर्ष शव के पास सुलगाई हुई सामग्री का शेष भाग थी।

डा० शाह आये और कहने लगे, "मुझे पता नहीं था कि आज महादेवभाई की संवत्सरी है।" बापू ने हँसकर जवाब दिया, "कोई हर्ज नहीं। आप भले आये। आपको हम बाहर नहीं निकालेंगे।" डा० शाह कहने लगे, "हां, खास करके महादेवभाई की संवत्सरी से आप मुझे कैसे निकाल सकते हैं?"

दस बजने में पांच मिनट पर घंटी बजाने को बापू ने कहा। मैंने जाकर बजाई। ठीक दस बजे प्रार्थना शुरू हुई। ईशोपनिषद् का पहला और आखिरी श्लोक, फिर 'वैष्णव जन' गाया गया। पीछे मीराबहन ने 'नारायण-नारायण' की रामधुन चलाई। भाई ने 'ओजअबिल्ला' और डाक्टरसाहब ने 'मजदा-अनमोई' चलाया। मीराबहन ने 'ह्वेन आई सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया। इसके बाद मीराबहन, डाक्टरसाहब और कटेलीसाहब चले गये। हमने 'ॐ पार्थाय प्रतिबोधिताम' से शुरू करके गीता-पारायण किया। साढ़े ग्यारह बजे सब समाप्त हुआ। बात-बात में बापू भाई को बताने लगे कि महादेवभाई की मृत्यु के दिन कमरे की बिल्कुल ऐसी ही सजावट थी। शव के स्थान पर आज फूलों की सेज बनाई थी। मुंह की जगह 'ॐ' था, जो अब की

तरह पीले कनेर के फूलों से घिरा हुआ था। पांवों की जगह 'सलीब' बनाया था। मैंने पूछा, "महादेवभाई की आत्मा क्या इस समय यहां होगी?" बापू बोले, "मुझे इसमें जरा भी शक नहीं।"

बापू को और बा को गरम पानी और शहद तथा मीराबहन को गरम दूध देकर मैं और मनु नीचे रसोई में कैदियों का खाना देखने गईं। कढ़ी बननी बाकी थी। महादेवभाई को कढ़ी कितनी प्रिय थी! अपने हाथ से बनाकर उन चार दिनों में उन्होंने हमें खिलाई थी, इसलिए उनकी स्मृति में कैदियों के लिए कढ़ी बनाई गई थी।

बापू के कहने से मैंने सोडा की गोली खाई और पानी पिया। इतनी सख्त मतली होने लगी कि मुझे खाट पर पड़ना पड़ा। साढ़े बारह बजे कैदियों का खाना तैयार किया। बापू ने खिचड़ी, मीराबहन ने कढ़ी और डा० गिल्डर ने सब्जी बांटी। मुझे वहां से जाना पड़ा; क्योंकि बहुत मतली होती थी। बापू ने कैदियों को बताया कि आज उन्हें क्यों खिलाया जा रहा है। सब सामान सिपाहियों को भी भेजा गया। कटोरी में थोड़ा-सा मेरे चखने के लिए रखा।

बापू कैदियों को खिलाकर लौटे। मुझे लेटे देखा तो नाराज होने लगे और बोले कि मोसम्बी का थोड़ा रस लेना चाहिए था। पूरा उपवास नहीं करना चाहिए था। मैंने रस लिया। तो भी मतली बन्द नहीं हुई। साढ़े तीन बजे तक पड़ी रही, इसलिए कातने में शामिल नहीं हो सकी। मनु रात में कम सो सकी थी। वह भी साढ़े तीन बजे सोकर उठी। हम दोनों ने जाकर रसोईघर में काम करना शुरू किया। कैदियों के लिए हलुआ और चाय बनाई। जितना अच्छा हलुवा मैं बना सकती थी, बनाया। उसमें बादाम, इलायची, लौंग इत्यादि सब डाला। बापू के लिए सब्जी और दूसरों के लिए रोटी और सब्जी बनाई। साढ़े पांच बजे कैदियों को मीराबहन ने चाय बांटी और बापू ने हलुआ। पौने छः बजे बापू खाने बैठे और सवा छः पर दूसरे सब लोग। बापू ने हलुआ चखा। "मिठास कुछ ज्यादा थी, नहीं तो बहुत अच्छा बना था," ऐसा उन्होंने कहा। कैदियों को बहुत अच्छा लगा।

खाने के बाद पिंग पौंग खेले। प्रार्थना के बाद बापू ने मौन लिया। रात को मैं और भाई दस बजे सो गये।

१६ अगस्त '४३

रात में एक बजे बापू ने जगाया। चंद्रग्रहण पड़ रहा था। आधा चन्द्रमा ढका

था। मनु को भी जगाकर दिखाया। डेढ़ बजे फिर देखा कि तीन-चौथाई चांद ढक गया है। पीछे सो गये। सुबह प्रार्थना के बाद मैं फिर सो गई। थकान थी। साढ़े छः बजे उठी। तैयार होकर घूमने गई। सवा आठ बज गये थे। आकर बा की मालिश आदि की। मनु का हाथ कट गया था, सो उसे छुट्टी दी। खाने के बाद डाक्टरसाहब के पास थोड़ा पढ़ा। एक बजा। उन लोगों का खाना बाहर से आता है। डेढ़ बजे तक नहीं आया, इसलिए जो कुछ घर में था, वह मैंने उन्हें डेढ़ बजे खिलाया। दो बजे उनका खाना आया। वह शाम के लिए रखा।

कल एक सिपाही का हाथ गरम चाय पड़ने से जल गया था सुबह उसके छाले को ज़रा काटकर पट्टी की थी। अभी उसे देखने जाती हूं। सुना है, उसे बुखार आ गया। देखा तो उसे बुखार नहीं था, जख्म भी साफ था। मुझे डर लग रहा था कि जरा ऐसी-वैसी सफाई करके ही छाले काटे थे, कहीं जहरीला न हो गया हो।

बा को आज भी बहुत कमजोरी लगती है और शरीर दुखता है। मेरी तबीयत अभी अच्छी तरह सुधरी नहीं है। आज भाई की फाइलों का काम करना था, वह नहीं हो सका।

: ५५ :

अहिंसा का बाह्य चिह्न—चरखा

१७ अगस्त '४३

सुबह घूमते समय बापू बताने लगे, "पंद्रह तारीख को तू कात नहीं सकी, वह मुझे चुभा। तबीयत ठीक नहीं थी, मगर तबीयत को ठीक रखना तेरा काम था। दृढ़ संकल्प रहता कि तबीयत ठीक रखकर कातना है तो वह होता ही। मेरी दृष्टि में चरखा गीता का अमल है। गीता सिद्धांत बताती है। गीता-पाठ का महत्व है, पर यदि मुझसे कोई पूछे कि गीता-पाठ करूं या चरखा कातूं तो मैं कहूंगा कि चरखा कातो। जो समझपूर्वक कात सकता है, उसे गीता पढ़ने की आवश्यकता नहीं। चरखा कार्यरूप में परिणत अनासक्ति है।" मैंने पूछा, "यह कैसे ? क्या आप यह कहना चाहते हैं कि गीताजी में कर्मयोग का जो पाठ है—'अनासक्त होकर, फल का विचार न करके, लोगों की हँसी की परवा न करके कातना' यह उस पाठ पर

अमल करना है ?"

बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं। कर्म का फल तो है ही, मगर जो फल प्रत्यक्ष नहीं है, उसके बारे में दृढ़ विश्वास रखना अनासक्ति है—जैसेकि कातने से हम स्वराज्य लानेवाले हैं, इस श्रद्धा में भी आसक्ति तो है, पर वह अनासक्ति है। राम-नाम में आसक्ति आसक्ति नहीं कहलाती। राम-नाम में आसक्ति रखनेवाला आदमी दूसरी वस्तु के बारे में अनासक्त है। यही नियम मैं चरखे को भी लागू करता हूं। चरखे के कारण मेरी बड़ी हँसी हुई है। अभीतक होती है, पर मुझे उससे क्या ? मेरा विश्वास दृढ़ है, मुझे इस बारे में कोई शंका नहीं है।"

चर्चा पूरी नहीं हुई थी कि इतने डाक्टरसाहब और कटेलीसाहब बेडमिंटन खेलने आये। बापू ने मुझे खेलने को भेज दिया।

बा की मालिश के बाद मीराबहन को देखा। उनके स्नायु-संस्थान (Nervous System) की अच्छी तरह परीक्षा की।

जबसे रसोईघर की चीजों पर ताला पड़ा है, तबसे रसोईघर में अधिक समय लग जाता है।

शाम को काता। दो-तीन दिन के नागों के बाद आज काता था। रात को थोड़ा अखबार वगैरह देखकर साढ़े दस बजे सो गई।

आज सुबह प्रार्थना के बाद मनु की खाट पर चूहा आ गया। उसे भगाया। वह चूहे से बहुत डरती है। उस खाट पर फिर वह सोई ही नहीं, हम लोग मजाक करने लगे कि रोटी लेकर खाती-खाती सोई होगी, नहीं तो चूहा खाट पर क्यों आता !

१८ अगस्त '४३

आज भी सुबह प्रार्थना के बाद उठ गई। उठकर साढ़े छः तक स्नानादि से फारिग हो गई। आध-पौन घंटा पढ़ने को मिल गया। पीछे घूमी, खेली, बा की मालिश की और डाक्टरसाहब के साथ पढ़ा। अभी पौने ग्यारह बजे अनुवाद करने बैठती हूं।

आज बा ने मनु से अपने लिए बेसन भरकर बैंगन का साग बनाने को कहा। मनु ने मुझसे पूछा। बा की तबीयत अभी ठिकाने नहीं आई। कल रात को भी पेट दर्द बता रही थीं। मैंने उन्हें दो-चार रोज तक ऐसी भारी चीज न खाने की सलाह दी। मनु सबके लिए ऐसी सब्जी बना रही थी। मैंने उसे बनाने से रोक दिया।

बा बहुत नाराज हो गईं। बापू के पास जाकर शिकायत करने लगीं, "किसी दिन मैं कुछ खाना चाहूं तो मुझे क्यों रोका जाय ?" बापू ने समझाने का प्रयत्न किया। मैंने भी समझाया, लेकिन उनका गुस्सा कम नहीं हुआ। मुझे बहुत बुरा लगा। क्या करूं, कुछ समझ में न आया। खाने दो तो मुश्किल, रोको तो मुश्किल।

दोपहर और रात को मैं 'लौस्ट वर्ल्ड'[1] पढ़ती रही। बहुत अच्छी किताब है। रस से भरी है। भाई की फाइलों का थोड़ा-सा काम भी किया।

१६ अगस्त '४३

आज सुबह प्रार्थना के बाद सो गई। बा ने मनु से और बापू ने भाई से मालिश कराई। बाद में स्नान के समय कपड़े वगैरह धोने का काम मैंने किया। आज अनुवाद नहीं कर सकी और डा० गिल्डर के साथ पढ़ा भी नहीं। 'लौस्ट वर्ल्ड' ही पढ़ती रही और पूरी करके उठी।

सुबह घूमते समय बापू उस दिनवाले चरखे और अनासक्तिवाले प्रसंग पर फिर आये। बोले, "तूने पंद्रह तारीख को कातने का संकल्प किया था तो उस संकल्प को पूरा करने के लिए जो हो सके, करना चाहिए था। तबीयत सम्भालनी चाहिए थी। संकल्प शुभ हो, दृढ़ हो, तो पूरा तो होता ही है। फिर दोपहर को नहीं कात सकी तो रात को या दूसरे दिन उस संकल्प को पूरा करना चाहिए था।" मैंने कहा, "तबीयत सम्भालने की खातिर, पंद्रह तारीख को अच्छी-भली रहने के लिए ही तो अण्डी का तेल लिया था, मगर असर उलटा हुआ। मैं यह नहीं समझी थी कि दोपहर की जगह शाम को या रात को भी काता जा सकता है।" बापू कहने लगे, "क्यों नहीं ? कातना कोई ऐसी चीज नहीं, जो दूसरे समय पर नहीं हो सकती ! और अगर कातना अच्छी चीज है तो एक रोज ही नहीं, हर रोज कातना चाहिए, पहले से ज्यादा दृढ़ होकर कातना चाहिए। चरखे की बहुत हँसी उड़ाई गई है, अब भी उड़ाई जाती है, मगर मुझपर उसका कुछ असर नहीं होता। मनु भी सवाल किया करती है कि 'दिन भर काता जाय तो ढाई-तीन गुण्डी ही तो कात सकते हैं न ! इससे क्या फायदा ? कातना मानो वक्त खोना है।' मगर मैं कहता हूं कि तीस कोटि लोग पंद्रह मिनट भी काता और बुना करें तो हिन्दुस्तान को करीब-करीब मुफ्त में कपड़ा मिल सकता है। ऐसा करें तो स्वराज आज हाथ में है। गरीब-से-गरीब, दीन-से-दीन को स्वराज दिलाने का दूसरा रास्ता नहीं। दूसरी

[1] लेखक आर्थर कॉननडॉयल

तरह से तो तानाशाही ही आ सकती है, जैसाकि जर्मनी और इटली में चलता है। रूस में भी वही हाल है, मगर चूंकि वहां राज सबके लिए है, सचमुच प्रजा के लिए है, इसलिए वह अच्छा दिखता है, लेकिन उसकी शोभा भी टिक नहीं सकती। उसके टिकने का रास्ता एक है: अहिंसा को लें और हिंसा का त्याग करें। चरखा अहिंसा का बाह्य चिह्न है। अब रही अनासक्ति की बात, सो दूसरी सब चीजों में अनासक्ति अच्छी है, मगर चरखे में आसक्ति रखना तो और भी अनासक्ति है।"

जिस सिपाही का हाथ जला था, उसका जला स्थान कहीं रगड़ खा गया, इसलिए छाले की चमड़ी उधड़ गई। कुछ विषाक्त होगया है। थोड़ी सूजन और मवाद भी है। उसे अस्पताल भेजना मुझे अच्छा नहीं लगा। इसलिए यहां पर उसकी मरहम-पट्टी कैसे करूं, यह विचार करने लगी। आखिर कैंची और रुई आदि आवश्यक चीजों को पानी में उबाल लिया। तब सिपाही की जली हुई चमड़ी काट डाली। 'सलफा नेलीमाइड' की दो गोलियों को पीसकर जख्म पर पाउडर डाला और लिक्वीड पैराफीन में कपड़ा उबालकर उसकी ऊपर से मरहम पट्टी की। शाम को वह कह रहा था कि अब दर्द नहीं है।

बा आज भी नाराज हैं। कल से दूध मात्र पीती हैं—शाक-भाजी, कुछ नहीं लेतीं।

२० अगस्त '४३

बा की नाराजगी चल रही है। मनु का हाथ काम करने से पक गया है। आज डाक्टरसाहब ने बा से कहा कि उससे मालिश नहीं करानी चाहिए। तब मैंने मालिश की। पीछे अनुवाद इत्यादि करती रही। ग्यारह बजे के बाद बापू को खाना देकर स्नान करने को गई। दोपहर दो घंटे सोई। पढ़ाई का क्रम बिगड़ा। थोड़ी देर वर्षा हुई। मगर शाम को कोर्ट सूखा था। सभी खेल सके।

२१ अगस्त '४३

महादेवभाई को गये आज दूसरे वर्ष का पहला शनिवार आ गया है। मगर उनका जाना तो कल का-सा है। बार-बार विचार आता है कि भगवान उन्हें इस तरह से ऐसे समय पर क्यों ले गये?

बा आज भी नाराज हैं, मुझपर और बापू पर विशेष रूप से। लेकिन कटेलीसाहब और डा० गिल्डर से खुश हैं।

आज दोपहर बापू को कतरनों के काम में मदद देती रही।

आज खूब वर्षा आई। शाम को खेल नहीं सके।

: ५६ :

हिंसा के बीच अहिंसा

२२ अगस्त '४३

बहुत दिनों के बाद सुबह बेडमिंटन खेली। कटेलीसाहब का हाथ दुखता है, खेलने में कठिनाई आती है, तो भी खेलना उन्हें अच्छा लगता है।

सेवाग्राम से किताबें, टाइपरायटर, चरखा, घी इत्यादि चीजें आईं। भंडारी सुबह अपने साथ लकड़ी की दो पेटियां लाये थे।

दोपहर को डेढ़ घंटा कतरनें निकालने का काम किया।

बा की नाराजगी चालू है। नाराजगी के कारण परहेज रखने से उनकी तबीयत सुधरती है, इसलिए बापू उनसे खाने के लिए आग्रह नहीं करना चाहते।

शाम को वर्षा होने लगी। लेकिन खेलने के समय आकाश खुल गया। मैं और डाक्टरसाहब एक तरफ थे—कटेली और मनु दूसरी तरफ। हम हारे, मगर खेल अच्छा रहा।

प्रार्थना के बाद बापू का मौन शुरू हुआ। मैं रात को बहुत कम काम कर पाई। सिर में दर्द था।

२३ अगस्त '४३

आज जन्माष्टमी है। बा ऐसे दिन कैदियों वगैरा को सामान्यतः कुछ देना चाहती है, मगर पूछने पर उन्होंने इन्कार किया।

दिन में मैंने भाई की फाइलों का काम किया। मीराबहन ने बालकृष्ण की मूर्ति के आस-पास सुन्दर फूल सजाये। बा वहां जाकर खूब भक्ति-भाव से पूजा कर रही थीं।

बा ने आज दूध का उपवास छोड़ा। शकरकंदी खाई, टमाटर खाया। कल रात खूब खांसी हुई थी, मगर आज की रात अच्छी गई।

२४ अगस्त '४३

बा ने सब्जी वगैरह बनवाई। शाम को उनका शरीर दुखने लगा। बापू मानते

हैं कि खाने से ही उनकी तबीयत बिगड़ी है और हमेशा बिगड़ती है।

मीराबहन ने आज भी सुन्दर फूल बालकृष्ण की पूजा में सजाये थे, मगर मैं देखने जाना भूल गई।

दिन में मैं कतरनें निकालने का काम करती रही। २५१ नम्बर की कतरन तक के संग्रह का कार्य पूरा किया। बाइबिल का समय भी उसीमें गया।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से फिर पूछने लगीं कि स्वराज्य में जमीन का बटवारा कैसे किया जायगा? बापू ने बताया, "जमीन राज्य की होगी। मैं मान लेता हूं कि शासन-तंत्र ऐसे लोगों का होगा, जो इस आदर्श को माननेवाले होंगे। अधिकांश जमींदार खुशी से अपनी जमीन छोड़ देंगे। जो नहीं छोड़ेंगे, उनसे कानून छुड़वा लेगा।" मीराबहन ने कहा, "तो पहला काम होगा लोकमत को तैयार करना?" बापू ने उत्तर दिया, "लोकमत को तालीम मिल चुकी है। वह आज लगभग तैयार है।"

अचानक बाहर से 'इन्कलाब जिन्दाबाद'–'महात्मा गांधी की जय'–'गांधीजी को छोड़ दो' के नारों की आवाज आने लगी। पता लगा कि पन्द्रह बिहारी मोर्चा लेकर आये थे। सब गिरफ्तार हो गये हैं। सब सिपाही उधर ही भाग गये थे। हम हँसने लगे, "सब पहरेदार उधर चले गये हैं। इधर से हम भाग सकते हैं।" बापू कहने लगे, "वे उधर इसलिए चले गये हैं कि वे तुम्हारा विश्वास रखते हैं कि तुम लोग ऐसा कुछ नहीं करोगे।" हो सकता है कि यह बात ठीक हो और बाहर के ७२ पहरेदार हमें बाहर जाने से रोकने को नहीं, पर बाहरवालों को अन्दर आने से रोकने को ही रखे गये हों।

२५ अगस्त '४३

आज सुबह ग्यारह बजे के करीब फिर जय-जयकार सुनाई दी। बापू कहने लगे, "ऐसा लगता है कि मेरे पहले शिक्षण के अनुसार इन लोगों ने सर्वथा अहिंसक लड़ाई का यह तरीका निकाला है। पकड़े जाने के ही लिए आते हैं और एक बार पकड़े गये तो पूर्णतया शान्त रहते हैं। एक भी सिपाही दस-बीस की टोली को पकड़ने के लिए काफी है।"

शाम को भाई बहुत दिनों के बाद रिंग खेलने को आये। खेलने से कुछ तकलीफ नहीं हुई। मनु नहीं खेली। उसे थोड़ा बुखार था। आज से उसे कुनीन मिक्सचर देना शुरू किया है। गोली काम नहीं करती लगती।

कल 'धम्मपद' पढ़ा। आज 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' पढ़ना शुरू किया है। रात को भाई के साथ फिर वही पढ़ा। वह कुछ उस समय के इतिहास की बातें बता रहे थे।

२६ अगस्त '४३

आज भी मनु को थोड़ा बुखार है। कल से वा की रात की मालिश मैंने शुरू की है। लगता है कि वा की नाराजगी अब चली गई है।

रात को भाई के साथ 'पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट' पढ़ रही थी—एक जगह वह कहने लगे, "यह 'कॉर्न लॉ' से सम्बन्ध रखता है।" यह सुनकर मैं आगे पढ़ने लगी। मैं समझी थी कि अब और उन्हें कुछ कहना नहीं है, मगर उन्हें लगा कि मैं 'कॉर्न लॉ' के बारे में जानना ही नहीं चाहती। बुरा लगा।

दोपहर का समय कतरनों में जाता है। डाक्टरी अभ्यास नहीं होता। यह चुभता है। इसके लिए कुछ करना ही होगा।

शाम को घूमते समय मीराबहन बापू से कुछ पूछा करती हैं। मैंने बापू से कहा कि चर्चा का विषय आज क्या था? उन्होंने बताया, "उनके (मीराबहन के) मन में कुछ गलतफहमी है कि हम जापान का सामना किस तरह से करेंगे। मैंने समझाया कि सरकारी फौजें अपने ढंग से, हिंसक लड़ाई से, उनका सामना करेंगी और हम अहिंसक तरीके से। पहले मैं कहा करता था कि हिंसा चलती हो, तब अहिंसा नहीं चल सकती, मगर अब मैं आगे बढ़ा हूं। हिंसा के बीच अहिंसा न चल सके तो वह अहिंसा अपंग है।" भाई ने पूछा, "क्या अहिंसा और हिंसा का सहयोग हो सकता है?" बापू ने उत्तर दिया, "क्यों, नहीं, अभी देखो, हम रूस और चीन की मदद करना चाहते हैं न? हिन्द आजाद होकर जापान का सामना अहिंसक तरीके से करे तो क्या रूस को या चीन को मदद नहीं मिलेगी? यद्यपि रूस और चीन हिंसक लड़ाई लड़ रहे हैं, हमारी अहिंसा उनकी मदद करेगी।" भाई ने आगे सवाल उठाया। मगर प्रार्थना का समय हो गया था। बापू ने बाद में यह चर्चा चलाने को कहा।

२७ अगस्त '४३

आज मनु को बुखार नहीं आया। मैंने दोपहर को कतरनों का काम पौन घंटा ही किया। दूसरा पौन या एक घंटा अपना अभ्यास किया। शाम को वर्षा हुई। फिर बन्द हो गई। हम लोग खेल सके। कल से सुबह बेडमिंटन खेलने मनु भी आयेगी। डाक्टरसाहब कह रहे थे, "यह या तो काम किया करती है या पढ़ा करती

है, यह ठीक नहीं।" बात यह है कि उसके पास खाली समय तो खूब है, मगर और लोग अपने-अपने काम में लगे हों तो वह अकेली पड़ जाती है। पढ़े न तो करे क्या? सभी सुबह-शाम अच्छी तरह खेलते हैं और ज्यादा समय खेलने में दें, यही हो सकता है। बा ने सुना तो बोलीं, "मेरी मालिश में मनु का तो आधा घंटा भी नहीं जाता। रसोई का काम भी मैं उससे नहीं करवाती। दोपहर को आधा-पौन घंटा मुझे पढ़कर सुनाती है। बाकी सब समय उसका खाली ही तो रहता है। पहले सरोजिनी तुम्हारे बारे में कहती थी, "बेचारी सुशीला सारा दिन काम करती है। बेचारी बालक है, बड़ों के बीच में कैसे खेल-कूद सकती है? अब ये लोग मनु के बारे में कहते हैं।" मैंने समझाया, "ठीक है, मनु सुबह-शाम ज्यादा खेलेगी तो काम ठीक चलेगा।"

२८ अगस्त '४३

मेरे दाहिने हाथ में चीरा लगा है। मालिश इत्यादि बाएं हाथ से करती हूं।

महादेवभाई को गये आज दूसरे वर्ष का दूसरा शनिवार आया। समय बड़े-से-बड़े घाव को भी भर देता है। कोई दिन आयेगा कि हफ्तों और महीनों की जगह हम लोग वर्षों की गणना करने लगेंगे।

डेलिया के फूल महादेवभाई की समाधि पर चढ़ते हैं। जीवन में जिनका उपयोग वह न कर पाये, उनकी समाधि पर वही फूल रखकर हम संतोष मानते हैं।

२६ अगस्त '४३

आज दोपहर को एक सुंदर पक्षी बा की खाट पर आ बैठा। मैं खाना खाकर आई तो बापू बा की खाट के पास खड़े उसे देख रहे थे। वह काला था। उसके पंख लम्बे थे और पीछे की तरफ लम्बी-तीखी पूंछ का-सा उसका आकार था। मैंने कहा, "मीराबहन को बुलाऊं?" बापू बोले, "हां!" मीराबहन कमरे में न थीं। बापू को और भाई को लगता था कि पक्षी बीमार है। मीराबहन इसे ज्यादा होशियारी से पकड़ सकेंगी। आखिर मीराबहन डा० गिल्डर के कमरे में मिलीं। वह आईं। सबकी आवाज सुनकर पक्षी फर्र से उड़ गया। मुझे अफसोस हुआ। मैंने अच्छी तरह देखा न था। मीराबहन की ही खोज में रही थी।

घूमने में हम लोग जब नहीं होते, तब मीराबहन बापू के साथ आती हैं। कोई और आ जाता है तो भाग जाती हैं। मैंने उनसे एक बार इसका कारण पूछा तो बोलीं, "दो की बात और है। वे अच्छी तरह बातें कर सकते हैं।" मैंने कहा, "आप

भले बातें करें, हम सुनेंगे। और हमारी बात तो कोई ऐसी है नहीं कि दो में हो हो सके।" वह कुछ घबराहट में पड़ गई। सच यह है कि उन्हें मनुष्यों की अपेक्षा वृक्षों, बकरियों और पक्षियों का साथ अधिक अच्छा लगता है। आज मीराबहन घूमने के समय बापू के साथ आई।

कल शाम घूमते समय मैंने बापू से पूछा था, "हम लोगों ने अंग्रेजों की मदद करने की बात सोची थी। पहले आपने कहा था कि उन्हें बिना शर्त मदद देनी चाहिए। लेकिन अब आप कहते हैं कि अगर वे हिन्दुस्तान की मांग स्वीकार न करें तो उनके साथ लड़ना चाहिए। इन दोनों परिस्थितियों में सचमुच विरोध नहीं है, क्योंकि आज हम मानते हैं कि हम स्वतन्त्र हुए बिना उनकी मदद नहीं कर सकते। क्या मेरी यह धारणा सही है ?" बापू कहने लगे, "इसमें मैं इतना ही कहूंगा कि उस समय की हालत में बिना शर्त मदद देना ही उचित था। मेरी बात कांग्रेस ने मानी होती तो नुकसान नहीं होनेवाला था। बाद में क्या होता, यह कहा नहीं जा सकता, मगर कांग्रेस ने यह न माना। वल्लभभाई ने भी, जो हमेशा मेरी बात मानते हैं, कहा कि यह मैं नहीं मान सकता। इसका परिणाम यह हुआ कि हम अंग्रेजों को उनके असली रूप में देख पाये। उसे देखकर हम बिना शर्त मदद की बात नहीं कर सकते। चीन और रूस की हमें मदद करना हो तो हमें पहले स्वतन्त्र होना चाहिए।"

मैंने पूछा, "क्या अहिंसक और हिंसक लड़ाई में सहयोग हो सकता है ? वे लोग हिंसक लड़ाई लड़ते हैं और हम अहिंसा द्वारा उनकी मदद करना चाहते हैं। इसी तरह अंग्रेज यहां रहकर जापान के साथ हिंसक लड़ाई करें और हम अहिंसक लड़ाई करके उनकी मदद करने की बात करें तो क्या यह सम्भव है ?" बापू कहने लगे, "इसे सहयोग का नाम न दिया जाय। हम अपनी अहिंसा के द्वारा अपनी रक्षा करते हैं, इसका परिणाम यह आता है कि रूस को, चीन को, अंग्रेज को, जो हिंसक लड़ाई करते हैं, इससे फायदा पहुंचता है। इसमें हिंसा के साथ सहयोग करने की बात नहीं आती। जापानी हिंसक लड़ाई करते हैं तो अहिंसक पक्ष क्या चुपचाप बैठा रहे ? यह नहीं हो सकता। हमें अहिंसक लड़ाई चलानी होगी। इस तरह हमारी अहिंसा पूरी तरह दीप्यमान नहीं होगी, यह ठीक है, मगर अहिंसा को हिंसा से भरे जगत में अपना स्थान बनाना हो तो उसे हिंसा के बीच आकर काम करना होगा। उससे हिंसक लड़ाई करनेवालों को भी बिना फायदा पहुंचे नहीं रह सकता

और अन्त में अहिंसा की सफलता देखकर वे हिंसक मार्ग को छोड़ भी सकते हैं। लेकिन यह सवाल निरर्थक-सा है। मौका आने पर क्या होगा, यह कौन कह सकता है? अहिंसक ऐसे मौके पर अपना मार्ग देख लेगा।"

३० अगस्त '४३

बापू का मौन है। दिनभर वह अपनी कतरनों का काम करते रहे। कई बार कह चुके हैं कि उन्हें इस काम में बड़ा रस आता है। असल में जो भी काम वह हाथ में लेते हैं, उसीमें उन्हें रस आने लगता है। पिछले साल मैंने और भाई ने कुछ कतरनें निकाली थीं। उनमें पर्चियां[1] आदि लगाने का काम पहले बापू ने मीराबहन को सौंपा था। थोड़ा-सा करने के बाद मीराबहन कहने लगीं, "शायद इससे भी हाथ को तकलीफ होती है। कतरने खोयें नहीं, इससे बापू को लगा कि छोटी-छोटी कतरनें रखनी ही न चाहिए, जोड़कर लम्बी कर लेना ज्यादा अच्छा है। मेरा एक बड़ा गत्ता पड़ा था। उसे काटकर दो किये, ताकि तीन-चार कालम चौड़े और पूरे अखबार की लम्बाई की कतरनें उसमें आ सकें, मगर जब कतरनें बढ़ गईं तो उन्होंने देखा कि उठाते समय गत्ता लचक जाता है, इसलिए कटेलीसाहब से लकड़ी के पट्टे बनवाने को कहा। मैंने प्लाईवुड का पता लगाया तो ७ × ३२ इंच की माप के तख्ते का दाम ५०) के करीब पड़ता था। बापू इतना खर्च करवाना नहीं चाहते थे, इसलिए जेल में मामूली लकड़ी के पट्टे बनाये गये। बापू अब कतरनें रखते हैं। उन्हें दिनभर पर्चियां लगाने का काम करते देखकर मैंने भी उनकी मदद करना शुरू किया। परसों पुराना संग्रह पूरा हो गया। कल से बापू अनुक्रमणिका बनाने के काम में लगे हैं। २५-२५ कतरनों को सीकर, उनका बण्डल बना लिया है। नई कतरनों में पर्चियां लगाने का काम मुझे दिया है। रोज के नये अखबारों की कतरनें भाई निकालते हैं। दस रोज के पुराने चार अखबारों—हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड और स्टेट्समैन की निकालने लायक कतरनों पर भाई निशान करते हैं। बापू उन्हें देख जाते हैं, फिर वे अखबार डा० गिल्डर और कटेलीसाहब के पास जाते हैं। वे लोग उनमें से कतरनें निकालकर पर्चियां वगैरह लगाकर बापू के पास लाते हैं। बापू उन्हें नम्बर देकर अनुक्रमणिका बनाते हैं। इस तरह सब घर कतरनों के काम में लगा हुआ है। आशा है, एक महीना और

[1] कतरनों के सिरे पर अखबार का नाम, तारीख इत्यादि डालने के लिए पर्चियां चिपका दी जाती थीं।

लगेगा और यह पुराने अखबारों में से कतरनें निकालने का काम पूरा हो जायगा।

आज शाम को जब भाई खेलने जाने लगे, तब मुझसे एक अखबार की कतरनें निकालने और कुछ कतरनों पर तारीख डालने को कह गये। मैंने तारीख तो डाली, मगर जब कतरनें काटने का काम करने लगी तो भाई का निशान ठीक समझी नहीं और काटने लगी। बाद में गलत कटी हुई कतरनों को जोड़ना पड़ा। आधा घंटा लग गया और तब भी एक पन्ना बिना कटा रह गया।

मैंने रविवार के दिन रसोईघर में काम कम करने का विचार किया था, ताकि काम करनेवालों को आराम मिले। रविवार को सफाई भी करानी होती है, इसलिए शनिवार की शाम को खाखरा वगैरह करवा लेने और रविवार को खिचड़ी मात्र पकवाने का विचार था, लेकिन शनिवार की शाम को खाखरा और मीराबहन की रोटी कराना भूल गई। इसलिए रविवार के दिन सबके लिए रोटी कराई। बापू को पता लगा। उन्होंने सोमवार के दिन सबको छुट्टी देने को कहा। आज सोमवती अमावस्या भी थी। बापू ने कच्चा साग, दूध और बादाम खाये। मनु ने और भाई ने सुबह कोको ली। मैंने चाय और बा ने दूध-मुरब्बा। डा० गिल्डर और कटेली-साहब का खाना तो बाहर से आया ही था। शाम को मैंने, भाई ने और मनु ने कोको ली और खाखरा खाया। सिर्फ मीराबहन के लिए खाना पका, वरना दिन भर काम करनेवालों को छुट्टी रही।

३१ अगस्त '४३

कल शाम को कनुभाई का पत्र बा और मनु के नाम आया। वल्लभभाई की तबीयत अच्छी नहीं लगती। भाई बहुत उदास रहे। कहने लगे, "एक-के बाद-एक बापू के स्तम्भ जा रहे हैं। जमनालालजी गये। राजेन्द्रबाबू और वल्लभभाई भी बीमार से रहते हैं।" मैंने कहा, "आप क्यों चिन्ता करते हैं? भगवान को बापू से काम लेना है तो सहायक और साधन देगा ही।" भाई कहने लगे, "आजतक जो गये हैं, उनकी जगह नये कौन-से आये हैं?"

मीराबहन का दर्द बढ़ा है। आज भंडारी को मैंने फिर पत्र लिखा कि उनकी अच्छी तरह परीक्षा होनी चाहिए। कल फिर सिविल सर्जन आयेंगे। आज उनके रोग का ब्यौरा लिखकर तैयार किया है।

१ सितम्बर '४३

आज सुबह मैं जल्दी खेलने को चली गई थी। बापू के घूमने निकलने के थोड़ी

देर बाद में खेलकर आ गई। मनु खेलने को गई। भाई भी बापू के साथ थे। सो उस दिनवाला प्रश्न आगे चलाया। घूमने के समय हम लोग खेलते हैं, इसलिए कुछ पूछने का समय ही नहीं मिलता। आज हम लोग बापू के साथ घूमने चले। भाई ने बात चलाई। उन्होंने उस रोज पूछा था, "अंग्रेजों को आप यहां लश्कर रखने की इजाजत देते हैं, मगर जापान कह सकता है कि इसमें तो हम मर जाते हैं। तुम्हारे घर से ये हमें पत्थर मारते हैं, इसलिए या तो तुम्हीं इन्हें निकालो या हमीं को निकालने दो। तब अहिंसा क्या उत्तर देगी?"

मैंने कहा, "मैं जो इस प्रश्न का उत्तर समझी हूं, वह बापू सुनें और मुझे सुधारें। एक तो यह कि अंग्रेज इतने समय से यहां हैं। वे हमें अपनी आजादी न्याय-पूर्वक लेने देते हैं, मगर अपनी रक्षा के लिए यहां रहना भी चाहते हैं तो हमारा उनके प्रति यह कर्तव्य है कि हम उनकी अनुकूलता का विचार करें और उन्हें रहने दें। जापान के प्रति हमारा कोई फर्ज नहीं है। दूसरे हमारी सहानुभूति अंग्रेजों के साथ है। हम नहीं चाहते कि वे युद्ध में हारें। जिस काम के करने में उन्हें हार का डर हो, वह हम उनसे नहीं करवाना चाहते।" बापू कहने लगे, "यह ठीक है, मगर इसमें मेरी दलील पूरी-पूरी नहीं आ जाती। सम्पूर्ण अहिंसा के सामने हिंसा टिक नहीं सकती, यह शाश्वत नियम है। अगर सारा हिन्दुस्तान अहिंसक होता तो अहिंसा द्वारा जापानी आक्रमण का सफल मुकाबला किया जा सकता है, इसे अंग्रेज स्वयं देख सकते। तब यहांपर हिंसक साधनों से जापान का मुकाबला करने के लिए उनके यहां रहने का सवाल ही न रह जाता। किन्तु बात यह है कि अंग्रेजों के सामने आज है क्या कि जिससे वे यह मान सकें कि हमारी अहिंसा सफल होगी? ऐसी हालत में मेरी अहिंसा मुझे मजबूर करती है कि मैं उन्हें यहां रहने दूं। अपनी रक्षा के लिए अपने खर्च पर वे यहां रहें तो मैं उन्हें इन्कार नहीं कर सकता। अगर सारा हिन्दुस्तान अहिंसक रहता तो उनके यहां रहने का प्रश्न उठ ही नहीं सकता था। कोई कहे कि ऐसी अहिंसा लोगों में कभी आने की नहीं है तो उससे यह नियम नहीं बदलनेवाला। मगर आज जब सारा हिन्दुस्तान अहिंसक नहीं है, तब मैं अंग्रेजों से अहिंसा में विश्वास रखकर यहां से चले जाने को कैसे कह सकता हूं?"

यह बात करते-करते हम महादेवभाई की समाधि पर पहुंच गये। फूल चढ़ाकर प्रार्थना करके वापस लौटे तो भाई कोई दूसरी बात करने लगे, मगर बापू ने कहा, "मेरा मन अभी उसी प्रश्न पर है। तुम्हें याद रखना चाहिए कि इस चीज की

उत्पत्ति कैसे हुई। मेरे स्वभाव में यह चीज पड़ी है कि अपनी भूल देख लूं तो उसे ढांप नहीं सकता। दूसरे लोग तर्कपूर्ण ढंग से बात करने पर जोर देते हैं। उन्हें डर रहता है कि एक बात कहकर कुछ दूसरी ऐसी बात मुंह से न निकल जाय, जिससे पहले की बात अतर्कपूर्ण मालूम पड़े। मुझे ऐसा कुछ है ही नहीं। मुझे एकमात्र सत्य से वास्ता है। दक्षिण अफ्रीका में अपने एक मुकदमे के हिसाब में मैंने भूल देखी। मैंने बड़े वकील से कहा। उन्होंने मुझे समझाया, 'ऐसी भूल स्वीकार की तो समझो कि मुकदमा तो हाथ से गया ही, साथ ही वकालत भी खत्म। मुझसे तो यह न हो सकेगा। मुझे तो वकालत चलानी है।' मैंने नम्रता से कहा, 'तो मुझे भूल स्वीकार करने दीजिये।' मैं गया और मुकदमा जीतकर आया। भूल सुधारने से मेरे मव-क्किल को कुछ ज्यादा देना पड़ता था। जज इस बात को पहले न देख सके। बोले, 'मि० गांधी, तो क्या यह धोखादेही न थी?' मैंने भी ज़रा तेज होकर उत्तर दिया, 'क्या आप मेरी भलमन्साई का ऐसा दुरुपयोग करेंगे?' तब वह सीधे हो गये। आज भी उनका चेहरा मुझे याद है। सो जब लुई फिशर ने मेरी योजना की त्रुटि मुझे बताई तो उसके इशारा करते ही मैं कायल हो गया। यह ठीक है कि मैंने खुद पहले से ही यह चीज देख ली होती और 'अंग्रेजो जाओ' इस मंत्र के साथ ही उसे भी रखा होता तो वह अधिक सुशोभित होती। मुझपर आज जो जहरीले हमले इस बारे में हो रहे हैं, वे न होते, मगर वह तो नहीं हुआ। तो जब मुझे त्रुटि नज़र आ गई, तब मुझे उसे सुधारना ही था। हरएक चीज के दो पक्ष होते हैं। मेरे काम से जापान को नुकसान भी हो तो मैं करूं। जो चीज मेरे सामने है, उसे यथाशक्ति मैं शुद्ध भाव से सम्पूर्णतया अहिंसक बना सकूं तो मेरे लिए बस है। उसके दूसरे परिणामों का हम आज विचार न करें; क्योंकि यह सनातन सत्य है कि शुभ कार्य का परिणाम अशुभ नहीं आ सकता। वे लोग भले रहें, जैसे रक्षा करनी है, करें। मैं अपनी रक्षा अहिंसा से करूंगा। अपनी अहिंसा को सफल करके बता सकूं तो मुझे उनके साथ अहिंसक मार्ग लेने के लिए दलील करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वह अपने-आप इस तरफ आयेंगे।"

भाई बोले, "हम इन्हें बर्मा को गुलाम बनाने में क्यों मदद दें? अगर ये लोग सच्ची नीयत से हिन्दुस्तान का राज्य छोड़ते हैं तो इन्हें बर्मा को स्वतन्त्रता की घोषणा पहले से करनी चाहिए। यह करवाकर हम इनकी मदद करें।"

बापू कहने लगे, "ऐसा करना अपने ऊपर बेईमानी का आरोप लगवाना होगा।

वे कहेंगे कि हम लोग कुछ करना ही नहीं चाहते, इसलिए एक-के-पीछे-एक हुज्जत निकालते हैं। हमें दूर की बात में नहीं पड़ना चाहिए। अहिंसा के सिद्धांत के अनुसार हमारा अंग्रेजों के प्रति ठीक व्यवहार क्या है, इतना हमें विचारना है। बाकी श्रद्धा रखनी चाहिए कि शुद्ध विचार से जो कार्रवाई की जाय, आगे जाकर उसके परिणाम भी ठीक ही निकलेंगे। तुम इतना समझो कि हिन्दुस्तान सचमुच आजाद हो जाय तो उसके परिणाम बहुत दूर तक जायंगे। बर्मा की आजादी उसके गर्भ में पड़ी है।"

आज कर्नल भ्रौल मीराबहन को देखने आये। किसी दूसरे आदमी को परामर्श के लिए बुलाना चाहते हैं। सरकार से पूछना होगा। उसके बाद आवश्यकता होगी तो एक्स-रे करायेंगे।

२ सितम्बर '४३

आज अखबार में बापू और वर्किंग कमेटी के साथवालों को छोड़कर बाकी कैदियों को महीने में एक मुलाकात मिलने की खबर थी। डा० गिल्डर के लिए अवश्य ही एक समस्या खड़ी होगई। मुलाकात की इजाजत से लाभ उठाना हो तो उनको वापस यरवदा जाने के लिए सरकार के साथ झगड़ा करना चाहिए। क्या ऐसा करना उचित है? यरवदा जाकर एक तो जेल-की-जेल, दूसरे खर्च, और तीसरे बापू का साथ छोड़ना। वैसे भी यहां का वातावरण उन्हें अनुकूल है। यह सब छोड़ना या मुलाकात छोड़ना? मैंने कहा, "खर्च की उन्हें क्या परवा है?" बापू कहने लगे, "ऐसा नहीं, कौन जाने कबतक यहां रहना है। वह प्रतिष्ठावाले आदमी हैं। अब कांग्रेस को कभी छोड़ेंगे नहीं। यह भी जानते हैं कि मैं लोगों को भिखारी बनानेवाला हूं, सो जो धन है, उसे संभालकर रखेंगे, ताकि वह उनकी लड़की को मिल सके।"

मैंने कहा, "क्या और एक वर्ष में यहां भी मुलाकातें नहीं शुरू की जायंगी?" बापू कहने लगे, "छः वर्ष में जरूर शुरू होंगी।"

आज मैंने अनुवाद पूरा किया। कल उपवास की कहानी लिखना शुरू करने का विचार है।

३ सितम्बर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन सोवियत रूस-सम्बंधी एक किताब के बारे में बात करने लगीं। वहां तीन-चार व्यक्ति गये थे। जो जिस विषय में रस रखता

था, उसके बारे में उसने लिखा। मैंने हँसकर पूछा, "मीराबहन, आप जायं तो किस विषय को लें?" वह कहने लगीं, "मास्को तो सामान्य हालचाल का पता लगाने ही जाऊं, मगर वहां के देहातों में खास ध्यान देने की बात हो सकती है। मेरा खयाल है कि बापू के चुने हुए उन तीन-चार लोगों के साथ जाना चाहिए, जो खास-खास विषयों में ज्ञान रखते और रूस में उन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हों! ठीक है न बापू?" बापू हँसकर बोले, "छः साल के बाद यह चर्चा करना।" मीराबहन भी हँस पड़ीं। उन्हें विश्वास है कि वह जल्दी ही छूटनेवाली हैं। छः साल की बात तो हम सबको बढ़ाई हुई लगती है, मगर मीराबहन की तरह बहुत जल्दी छूटने की भी हम आशा नहीं रखते। समय बतायेगा कि किसका अनुमान ठीक है। आज तो काफी काम यहां पड़ा है। उसमें समय का उपयोग कर लें तो बस है।

आज उपवास पर लिखना शुरू न कर सकी। यह सोचती रही कि कौन-सा कागज इस्तेमाल करूं।

शाम को मन बहुत चिन्तित था। माताजी इत्यादि का बहुत दिन से पत्र नहीं आया।

४ सितम्बर '४३

महादेवभाई को गये आज दूसरे वर्ष का तीसरा शनिवार है। सुबह समाधि पर बहुत-से फूल ले गई और डेलिया के फूलों का स्वस्तिक बनाया। चारों कोनों पर 'ॐ' के बिंदु पर भी वही फूल रखे और शेष पर डेजी के और एस्टर के। डेजी के फूलों का सलीब भी बनाया। सब दृश्य बहुत सुंदर दीखता था।

आज दोपहर बाइबिल नहीं पढ़ी। भाई ने कुछ लिखने को कहा था, वही लिखती रही। कार्लाइल पढ़ा। कल से कतरनों की अनुक्रमणिका बनाने में बापू की मदद करूंगी।

भाई की उंगली बिजली की बत्ती की एक टूटी हुई हांडी से कट गई थी, अब वह पक गई है। उन्हें बापू के काम से छुट्टी दी।

रात को बापू की मालिश करते समय बरामदे में सन्नाटा-सा छा रहा था। दूर से मीराबहन वगैरह के कैरम खेलने की आवाज आती थी। सामने बगीचे में भी सन्नाटा था। मैंने बापू से पूछा, "आप इतनी बार जेल गये हैं, अकेले भी रहे हैं, तकलीफें सही हैं, पर कभी आपको अकेलापन अथवा निराशा मालूम होती थी?"

बापू बोले, "अकेलापन तो कभी नहीं लगा। दक्षिण अफ्रीका में मुझे एकांत

कोठरी में रखा था, मगर मुझे उसमें कुछ तकलीफ नहीं लगती थी। उलटा सुपरिंटेंडेण्ट आता था तो चुभता था कि अब यह मेरा थोड़ा समय बरबाद करेगा। मैंने अपना कार्यक्रम बना रखा था। संस्कृत सीखना, तमिल सीखना और अंग्रेजी की किताबें तो पढ़नी थीं ही। मैं जूते बनाने का काम भी सीखने लगा था। इसलिए मेरी कोठरी में ही मुझे जूते बनाने का सामान दे दिया गया था। मुझे किसीके साथ तो काम करने दिया ही नहीं जा सकता था। मगर मुझे तो अकेले काम करना अच्छा लगता है। सब कार्यक्रम बना और छूटने का हुक्म आया। हर दफा जेल छोड़ना मुझे बुरा-सा लगा है। निराशा और शून्यता भी कभी नहीं महसूस हुई। हां, दक्षिण अफ्रीका में कभी-कभी उदासी आ जाती थी। बाहर क्या होता होगा, यह विचार मन में उठते थे। यहां ऐसा कभी नहीं हुआ, कारण कि मैंने, जेल में क्या भाव रखना चाहिए, इसकी एक नई फिलासफी बना ली है और इस बारे में काफी लिखा है। लिखता तो दक्षिण अफ्रीका में भी था, मगर वहांपर तो यह नया सिलसिला था और यहां की तरह पढ़े-लिखे बहुत चर्चा करनेवाले लोग भी नहीं थे। यहां तो इतने लोगों के साथ इस बारे में वाद-विवाद करना पड़ा है कि वह चीज दिमाग पर काबू पा गई। दक्षिण अफ्रीका में बीजगणित सीखना शुरू किया था; क्योंकि गणित सीखने से मन को एकाग्र करने की शक्ति आती है।"

मैंने पूछा, "क्या अब भी आपको मन को एकाग्र करने के लिए अभ्यास करने की आवश्यकता हो सकती है?" बापू बोले, "अब भी हो सकती है, मगर तब तो बहुत थी।"

५ सितम्बर '४३

सुबह प्रार्थना के बाद बापू ने मुझे बुलाया और कहा, "आज पारसियों की पटेती[1] है। रांगोली से साल मुबारक लिखना चाहिए। चाय की मेज पर मेरी मेज के फूल रख दो।" कल शाम को ही रामायण में एक जगह वर्णन आया था कि एक भी बानर ऐसा न था, जिससे राम ने कुशल-क्षेम न पूछी हो। बापू भी छोटी-से-छोटी बात नहीं भूलते।

मैं आटे से 'साल मुबारक' लिख रही थी और एक दरवाजे पर पूरा करके दूसरे पर शुरू कर रही थी कि कटेलीसाहब एक तश्तरी लिये नीचे आये। डाक्टर

[1] पारसियों का नये साल का त्योहार।

साहब आये तो उन्हें भेंट किया। मैंने दोनों को सिन्दूर का टीका लगाया। पीछे दोनों जने बापू को प्रणाम करने आये। चाय के बाद सब्जी इत्यादि चढ़ाकर कुछ समय बेडमिंटन खेले। सिपाहियों से मैंने कह रखा था, सो वापस आने तक सब तोरण बंध गये थे। मैंने मालिश के काम से छुट्टी ली। कटेली और डाक्टरसाहब के दरवाजों पर चावल के आटे से 'साल मुबारक' लिखा। उनके लिखने-पढ़ने की मेज पर फूलों से लिखा। डेलिया के फूल सजाये, पीछे स्नान किया और कपड़े धोये। पौने बारह बजे खाली हुई। साढ़े आठ बजे के नाश्ते के समय के लिए सबेरे मीरा-बहन ने मेज पर फूल रखे थे। दोपहर उन्होंने सलाद तैयार की, मगर वे लोग उसे खाना भूल गये।

दिन को हवा जोर से चली। उससे डाक्टरसाहब के दरवाजे के सामने जो 'साल मुबारक' रांगोली में लिखा था, उसका कुछ हिस्सा मिट गया। लिखा रह गया 'साल म।' डाक्टर साहब ने सबको बुला-बुलाकर दिखाया। हम लोग खूब हंसे।

श्री कटेली ने सूरत से मिठाई मंगाई थी, सो घर में कुछ करने की मनाही की।

६ सितम्बर '४३

बापू का मौन था। रामायण इत्यादि का पाठ बन्द रहा। दोपहर के समय 'डान' के छूटे हुए अंकों की एक सूची बनाई। यह पत्र बहुत अनियमित आता है। बापू शिकायत लिखवाना चाहते हैं। शाम को सवा सात बजे कोई खेलने नहीं गया। पीछे मैं और मनु व डाक्टरसाहब और कटेलीसाहब थे। अच्छी कसरत हो गई।

७ सितम्बर '४३

आज मीराबहन को डा० सिम्काक्स देखने आये। वह कहते थे कि उनकी बांह की मांस-पेशियों में कुछ विकार है। उसे ठीक करना होगा।

डाक्टरसाहब के पास सरकारी पैम्फलेट 'कांग्रेस की जिम्मेदारी' की कल एक दूसरी प्रति आई है। पहली को फिर से छापा है। पहली में लाल स्याही के जो सुधार थे, उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया।

८ सितम्बर '४३

कल वजन का कांटा नहीं आया था। आज सबका वजन लिया गया। मनु चार पौण्ड घटी। उसने सुबह-शाम खेलना शुरू किया है, मगर खाना कम कर दिया है। अब वह उबला खाना खाने लगी है और मीठी चीजें नहीं खाती। इस बात की

चर्चा सभी कर रहे थे। डा० गिल्डर ने भी बापू से कहा कि उसकी खुराक बढ़नी चाहिए। बा को लगता था कि कसरत कम करनी चाहिए। दोपहर बा ने उसे घी-वाला साग आग्रहपूर्वक खिलाया। शाम को उन्होंने उसे आग्रह करके और ज्यादा खिलाया। खाने के बाद मैं बापू का सूत उतार रही थी तो मनु गुसलखाने से निकली। मैंने पूछा, "क्या हुआ ?" कहने लगी, "उल्टी हुई।"

रात को बापू की मालिश के बाद अखबार आदि देखकर और भाई के साथ थोड़ा पढ़कर साढ़े दस बजे सो गई।

बा अच्छी हैं, मगर कमजोरी बहुत आ गई है। 'सल्फा' दवा के कारण भी कमजोरी हो सकती है। कल से बंद करूंगी।

शाम को बापू के पास थोड़ी देर तक बाइबिल पढ़ी। वह बता रहे थे कि उनकी दृष्टि से डाक्टर को स्थितप्रज्ञ होना चाहिए और कभी किसी वजह से संतुलन नहीं खोना चाहिए।

९ सितम्बर '४३

सुबह उठी तो मेरे सिर में दर्द था। बेडमिन्टन खेलने को नहीं गई। बापू के साथ घूमती रही। मीराबहन से मैंने कहा, "आप खेलने कब आती हैं ? हम लोग आपकी राह देखते हैं।" कहने लगीं, "सुबह थोड़ा खेलना शुरू करने का विचार करती हूं।" थोड़ी देर बाद देखा तो बेडमिन्टन खेल रही थीं।

शाम को बापू के पास पढ़ने बैठी तो समझा रहे थे कि कुछ भी हो, किसी भी चीज से मन का संतुलन बिगड़ना नहीं चाहिए। किसी भी चीज का दुःख क्यों माना जाय ?

रात में भाई के सिर में दर्द रहा। उनके साथ पढ़ा नहीं। उनका सिर वगैरह दबाकर साढ़े दस बजे सोने को गई।

१० सितम्बर '४३

आज पारसियों का त्योहार है। जरथुस्त का जन्म-दिन है। मैं सुबह प्रार्थना के बाद सोई नहीं।

थोड़ी देर में डा० गिल्डर सुबह-ही-सुबह स्नान करने आये। नये साल के दिन भी बहुत सवेरे नहाये थे। मनु ने उनके लिए आज पूरनपोली बनाई। दोपहर कटेलीसाहब और डाक्टरसाहब शिकायत करते थे, दूसरे किसीने पूरनपोली क्यों नहीं खाई ? हमने तो कहा था कि सब लोग खायें तभी बनाना।" दो-एक रोज पहले

कटेलीसाहब मिठाई के बारे में भी ऐसे ही कह रहे थे, "तुम लोग नहीं खाते हो तो हम भी छोड़ देंगे।" शाम को सबने खाया।

सच्ची बात तो यह है कि दूसरों को इन चीजों का शौक नहीं है।

बापू ने सरकार को पत्र लिखा कि 'बाइबिल' के उत्तर की पहुंच अभीतक क्यों नहीं आई ?

भाई की तकली का सूत उतारा। उसमें बहुत समय जाता है। बापू की कतरनों का थोड़ा काम किया। आज भी दिनभर कुछ नहीं पढ़ा।

११ सितम्बर '४३

महादेवभाई को गये आज दूसरे वर्ष का चौथा शनिवार है। वह होते तो बापू को छोटी-छोटी अनेक झंझटों से बचा लेते।

भाई को यहां आये आज एक वर्ष पूरा हुआ। गये वर्ष उनके आने की आशा छोड़ देने पर एकाएक वह आज के रोज करीब बारह बजे दोपहर के समय आ पहुंचे थे। इस एक साल में न जाने क्या-क्या देखना पड़ा है। आनेवाला वर्ष अच्छा जाय तो बस है।

कल माताजी का पत्र आया था। वह बहुत परेशान हैं, इससे बहुत चिन्ता होती है। दुःख होता है।

कल शाम को महादेवभाई की समाधि पर बहुत सुंदर फूल सजाये थे। आज सुबह भी वे बिल्कुल ताजा लगते थे, इसलिए उन्हें बदला नहीं। बहुत सुंदर दृश्य है। डाक्टरसाहब और कटेलीसाहब भी आये थे। डाक्टरसाहब सरोजिनी नायडू की तरह हर शनिवार को आते हैं।

आज सुबह चार बजे उठी और डायरी लिखी। प्रार्थना के बाद भी काम किया। आंख कुछ ठीक थी। थोड़ा पढ़ सकी।

बापू कतरनों के काम में लगे हुए हैं। एक दिन कह रहे थे, "मैं अपने जीवन के आखिरी दिनों में तुम लोगों के लिए एक खासी चीज तैयार कर जाऊंगा।" मैंने कहा, "आखिरी दिनों में क्यों ? अभी तो आप को कम-से-कम पचास वर्ष और रहना है। १२५ वर्ष की बात तो आपने भरी सभा में की थी।" बा कहने लगीं, "किसके लिए छोड़ जाओगे ? सुशीला के लिए ?" बापू कहने लगे, "जो मेरा काम करेंगे, उनके लिए।" बा बोलीं, "अभी तो सुशीला और प्यारेलाल ही सब करते हैं न ?"

बापू को कतरनों के काम से बहुत संतोष है। भाई से कह रहे थे, "तुम देखोगे कि एक सुन्दर चीज़ बन गई है। जो कतरन चाहिए, उसे निकालते एक मिनट की देर भी नहीं लगती। लाइब्रेरी की अलमारियों की तरह इनमें एक क्रम है। अनुक्रमणिका देखो और जो चाहो निकाल लो। अनुक्रमणिका सम्पूर्ण है। तो भी मैं अख़बारों में से एक-एक की कतरनों को तारीखवार रखने का प्रयत्न कर रहा हूं, ताकि बिना सूची के भी कोई देखना चाहे तो उसे बहुत मुश्किल न पड़े।" मीरा-बहन से कह रहे थे, "मेरा मन मां का-सा हो गया है। मां जितना अपने बच्चे को दूध पिलाती है, उतना ही ज्यादा उसे प्यार भी करती है। मैं भी जितना ज्यादा इस काम में लगता हूं, उतना ही ज्यादा उसमें दिल लगता है।

"मैं रोज उसे ज्यादा अच्छा करता हूं। सरकारी पैम्फलेट-जैसी यह चीज नहीं है। वह तो करना ही था, इसलिए किया था। यह तो खुशी से करता हूं, सो इसमें लीन हो जाता हूं। मुझे बाकी सात साल यहां पर यही काम करना हो तो मुझे वह खटकेगा नहीं।"

मीराबहन हँसी करने लगीं, "हां, क्योंकि यह आपका बच्चा है और जबतक दूसरे बच्चे इसकी जगह न लें, यह आपपर कब्जा रखेगा। यहां से जाने से पहले दूसरे बच्चे इसकी जगह लेने ही वाले हैं।"

आज वर्षा थी। कल रात भी रही। दिन में आकाश खुला था, मगर सुबह खेलने की जगह भीगी होने के कारण खेल न सके। शाम को खेलने के समय वर्षा आ गई, सो दोनों वक्त का खेलना गया।

मीराबहन ने बालकृष्ण की पूजा में कल और आज बहुत ही सुन्दर फूल सजाये।

१२ सितम्बर '४३

सुबह पौने पांच बजे उठी। प्रार्थना के बाद आधा घंटा लिखने का काम किया। दोपहर को बहुत सोई। शाम को वर्षा आ गई। खेलना बन्द हो गया। शाम को घूमने के समय वर्षा बंद हो गई। घूमते समय बहुत दिनों बाद बापू ने अपनी कहानी सुनाई। मनु ने कोई कहानी कहने को कहा था। बापू इधर-उधर की सुनाते थे। वह भी अच्छा लगता था, मगर मैंने कहा, "बापू, आप अपनी कहानी सुनाइये न?" तब बापू ने जो आरम्भ की थी, उसीको आगे कहना शुरू किया। विलायत में जब एक

कमरा लेकर रहते थे, तब का वृत्तान्त था। सुबह दलिया, एक पाइंट[1] दूध और थोड़ी रोटी लेते। दोपहर को बाहर छः पेनी (आना) वाला भोजन लेते। शाम को दो छोटे सेब और रोटी घर पर खाते। दिन भर अभ्यास करते। मैट्रिक्युलेशन की तैयारी के लिए उन्होंने ट्यूटर रखा था, जो हफ्ते में दो बार घंटे-दो-घंटे का समय अन्य दो विद्यार्थियों के साथ उन्हें देता था। लैटिन में खास मदद की आवश्यकता पड़ती थी। पहली बार तीन महीने की तैयारी के बाद परीक्षा दी, फिर भी लैटिन में असफल रहे। दूसरी बार रसायनशास्त्र की जगह 'उष्मा' (Heat) और 'प्रकाश' (Light) लिया था। एर्वालिंग की पुस्तक पढ़ी और परीक्षा देकर तुरंत ब्राइटन चले गये और वहां वह एक महीना रहे। एक-एक मिनट अभ्यास में लगाते थे। साथ में फ्रान्सीसी भाषा की राबिन्सन क्रूसो ले गये थे। उसे पढ़ते थे। अपना खाना स्वयं पकाते थे। उनका खर्च सत्रह शिलिंग प्रति हफ्ते का था। बताने लगे कि कैसे वह परीक्षा के नतीजे के तार की राह देखते थे। आखिर एक दिन बाहर से आ रहे थे तब सीढ़ी चढ़ते समय मकान मालकिन ने उनके हाथ में तार दिया। पास हो जाने की खबर से कितने खुश हुए, यह सब बताया।

यही सब बातें उनकी 'आत्मकथा' में लिखी हैं, लेकिन बापू के मुंह से सुनने में और ही रस आता है।

सुबह चाय के समय, बापू के जन्म-दिन पर क्या करना चाहिए, इसपर बात चली। देशी तारीख के अनुसार जन्म-दिन २६ सितम्बर को आनेवाला है।

बापू का मौन है। रामायण इत्यादि का पाठ बन्द रहा। बहुत-से अखबार इत्यादि इकट्ठे हो गये थे। उन्हें पढ़ा। थोड़ी-सी यूरोपियन हिस्टरी पढ़ी। अभी 'पास्ट ऐंड प्रेजेण्ट' पढ़ने का विचार है। रात में वर्षा होती रही, मगर इस वक्त आकाश खुला है। आज रसोईघर में भी छुट्टी का दिन है। सब घर सूना-सूना-सा लगता है। वायुमण्डल में गरमी की ऋतु का आभास है।

रात को मौन छोड़ने के बाद भाई बापू से कहने लगे कि उन्हींकी पसंद के उनके लेखों का एक संग्रह निकाला जाय। बापू बोले, "वह अच्छा तो होगा, मगर इस बारे में इतना काम हो चुका है कि अभी और न किया जाय तो भी चल सकता है। प्रभु कर रहा है। निर्मल बोस का काम अच्छा माना जाता है। आनन्द ने भी

[1] एक पाइण्ट—बीस औंस यानी लगभग पौने दस छटांक।

खूब मेहनत की है। गुजराती में नगीनदास अमुलकराम के काम की पूरी कीमत नहीं आंकी गई, मगर उस काम पर अपार मेहनत हुई है।"

भाई कहने लगे, "उस गुजराती संग्रह का बहुत-सा भाग अंग्रेजी में नहीं आया है, इसलिए उसका अनुवाद होना चाहिए।"

भाई आजकल बहुत उत्साहित हैं। खूब काम करते हैं। बापू को इससे बड़ा संतोष है। यहांपर नियमितता की आदत पड़ जाय तो बाहर जाकर उनका काम बहुत आसान हो जायगा।

१३–१६ सितम्बर '४३

इतने दिन डायरी नहीं लिख पाई। अच्छा नहीं लगता था। एक अनुभव लिया है। सुबह बापू से पहले उठ जाती थी, सो घंटा-डेढ़ घंटा सुबह काम के लिए मिल जाता था। एक दिन तो ढाई बजे उठ गई। सुबह उठना बहुत अच्छा लगता है।

१७ सितम्बर '४३

आज सुबह नहीं उठी। इससे सुबह कुछ काम नहीं कर पाई। बापू की मालिश व स्नान के बीच थोड़ा समय मिला। उसमें कुछ पढ़ा। दोपहर भी आज बहुत कम काम हो पाया।

शाम को वर्षा आई। बाहर खेलना बन्द हुआ। भीतर पिंग-पौंग खेले। डाक्टर-साहब के घुटने में थोड़ा दर्द है। दो रोज पहले बहुत खेले थे। उससे ऐसा हो गया। इसलिए वह थोड़े दिन तो खेल ही नहीं सकते।

कल से शाम को कातने के समय कार्लाइल की किताब भाई बापू को पढ़कर सुनाते हैं। मैं उतने समय में कात लेती हूं और फिर मनु को सिखाती हूं। भाई को यह कार्यक्रम अनुकूल है।

आज सुबह घूमते समय बापू मीराबहन के साथ इज़ाबेला डन्कन की बात कर रहे थे। उन्हें लगता था कि जिन पुरुषों के सम्पर्क में वह आई, उन्होंने अगर उसकी निर्दोष बुद्धि की रक्षा की होती तो कौन जाने आज वह कितनी उन्नति कर गई होती। कुछ रुककर बोले, "मेरा यह दृढ़ मत है कि स्त्री जब भी गिरती है, उसे गिरानेवाला पुरुष होता है। पुरुष अधिकतर मेरे साथ इस विषय पर सहमत नहीं होते, मगर मेरा मत अचल है।" मीराबहन को यह पुरुषों के प्रति कठोर मत लगा, मगर लौटने का समय हो गया था, इसलिए चर्चा आगे

चल नहीं सकी।

रात को मालिश के समय भाई बापू से बोले, "आज सरकार की नीति का विरोध बाहर रहकर पूर्णतः अहिंसा के द्वारा कैसे किया जा सकता है?" बापू कहने लगे, "अहिंसा के द्वारा ऐसा करने का सबसे अच्छा रास्ता अनशन है। हजारों की संख्या में लोग ऐसा करें तो चमत्कारी परिणाम आ सकता है, मगर इस रास्ते पर चलनेवालों में भी पूर्ण अनासक्ति व अहिंसा और ईश्वर में दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिए।" भाई ने कहा, "अनशन कठिन है। लोग करना शुरू तो करें, मगर उस पर टिके रहना आसान नहीं है। इससे तो हाराकिरी ज्यादा आसान है।" बापू बोले, "अनशन में ईश्वर को जैसा करना हो, वैसा करने का मौका मिलता है। वह स्वाभाविक और सीधी क्रिया है, इसलिए हाराकिरी से यह तरीका ज्यादा अच्छा है।"

१८ सितम्बर '४३

परसों सरकार की तरफ से खबर आई थी कि मध्यप्रान्त की सरकार मनु को छोड़ने का विचार कर रही है। अगर स्वेच्छा से रहना चाहे तो आज की शर्तों के मुताबिक रह सकती है। मनु ने रहना पसन्द किया।

मीराबहन को मित्रों को पत्र लिखने की इजाजत मिली है। आज उनसे पुछवाया गया कि वह जिन्हें पत्र लिखना चाहती हैं, उनके नाम बतायें और कारण बतायें कि उन्हें क्यों लिखना चाहती हैं। नाम तो उन्होंने पहले से ही दे रखे हैं। बापू का मत है कि ज्यादा कड़ा जवाब होना चाहिए। मीराबहन आज उत्तर तैयार कर लाईं, मगर वह काफी कड़ा नहीं था। अब दूसरा उत्तर लिखने का प्रयत्न करेंगी।

आज बापू ने सीताफल (शरीफा) के बीज बोये। पांच गड्ढे खुदवाये थे। तीन में दो-दो बीज बापू ने डाले और दूसरों में डा० गिल्डर से डालने को कहा। पांच बीज काफी थे। डाक्टरसाहब ने तीन एक गड्ढे में और दो दूसरे गड्ढे में डाले। पानी डालकर हम लोग वापस आ गये। महादेवभाई की समाधि के चारों ओर भी सीताफल बोने के लिए गड्ढे खुदवाये हैं।

१९ सितम्बर '४३

सुबह खेलने के समय वर्षा हो रही थी। शाम को आकाश खुला था। थोड़ा खेल सके। आजकल अंधेरा जल्दी हो जाता है। महादेवभाई की समाधि पर सवा सात बजे फूल चढ़ाने आने का सुझाव कटेलीसाहब ने दिया है; क्योंकि सर्पादि

और दूसरे जंगली जानवरों का डर है। इसलिए आज बापू जल्दी फूल चढ़ाने गये।

कल शाम को अपने तैल-चित्र के रंग खोलकर देख रही थी। कचरे में से लकड़ी का एक टूटा टुकड़ा भाई को मिला, उसीपर मैंने एक पहाड़ी चित्र बनाया। सबको तस्वीर खासी जंची। पहाड़ियों पर का सन्ध्या-काल का दृश्य है। चित्र बनाना मुझे अच्छा तो बहुत लगता है, परन्तु समय निकालूं तो कहां से ! मुझे अभी कितना सीखना है ! कितना काम करना है !

२० सितम्बर '४३

सुबह साढ़े चार बजे उठी। सवा पांच तक लिखा। इतने में बापू उठ गये। प्रार्थना के बाद सो गई। आज बापू का मौन है, इसलिए हमारी छुट्टी रही।

रसोईघर में मैंने रोटी बनाने में एक घण्टा लगाया। कल शाम को सिपाही··· ने रोटी नहीं बनाई थी, लेकिन आज बनाने को तैयार है। उसकी छुट्टी के रोज उसे रोकना मुझे ठीक नहीं लगा, तो भी सुबह वह रसोईघर में ही रहा। उसने बताया कि उसने एक दूसरे सिपाही के साथ दूधी (घिया) का मुरब्बा बनाया और कमरे में रख आया है। शाम को मैंने देखा तो मुरब्बे का चौथा हिस्सा भी नहीं रह गया था। बा ने सिपाहियों के जमादार से कहा, "सिपाही लोग बेचारे···का मुरब्बा खा गये होंगे।" इसपर जमादार ने···को खूब डांटा कि उसने शिकायत की है। बेचारा रोने-जैसा हो गया। एक तो मुरब्बा गया और दूसरे डांट खानी पड़ी !

दोपहर को मैंने 'मून वॉयेज'[1] पुस्तक पूरी कर ली, शाम को चित्र पूरा करने गई, मगर अंधेरा जल्दी हो गया। अंधेरे में पूरा करने की कोशिश की। कल दिन में पता चलेगा कि वह सुधरा या बिगड़ा।

२१ सितम्बर '४३

चित्रकारी का अभ्यास में सोमवार के दिन ही करती हूं, मगर भाई कहते हैं कि तस्वीर जल्दी पूरी करूं तो अच्छा हो। मैंने उनके पास से सुबह का वक्त लिया। वह बापू की मालिश में गये। मैं चित्र बनाकर पौने बारह बजे लौटी। आकर जल्दी खाना खाया, ताकि रामायण में ज्यादा देर न हो। भाई ने बापू से जाकर कहा, "इसे रामायण न कराइये। जल्दी खाना खाती है।" बापू को पहले से ही बुरा लग रहा था कि आज कार्यक्रम तोड़कर चित्रकारी का अभ्यास करने को गई। खूब डांट

---

[1] फ्रान्सीसी लेखक जूल्स वर्न का उपन्यास, जिसमें पृथ्वी से चन्द्रलोक तक की यात्रा का वैज्ञानिक आधार पर काल्पनिक वर्णन आता है।

पड़ी। बोले, "अगर जाना ही था तो मुझसे पूछ लेना चाहिए था।" मैंने गलत स्वीकार की। नतीजा यह हुआ कि रामायण केवल पन्द्रह ही मिनट हुई।

२२ सितम्बर '४

सुबह घूमते समय बापू मीराबहन के साथ बातें करने लगे। मीराबहन बोलं "सरकार आपकी अहिंसा को पहचानती नहीं है। थोड़ी हिंसा देखकर उसे लगत है कि सब हिंसा-ही-हिंसा है। क्यों न हो, आखिर आपको भी तो इतने वर्ष यह पह चानने में लगे कि हिंसा के बीच अहिंसा काम कर सकती है अथवा नहीं। आप त कहते थे कि ज़रा भी हिंसा हो तो अहिंसा नहीं चल सकती।" बापू ने कहा, "ह अगर वह इस चीज़ को पहचाने तो उसका व्यवहार दूसरा ही हो। और मुझे दे लगी, इसका मुझे अफसोस नहीं है। मेरे लिए तो यह मेरा स्वाभाविक विकास था। अन्य प्रकार से मैं इस तरह आगे चल ही नहीं सकता था। मुझे तो एक-एक कद टटोलकर चलना है न! नया रास्ता निकालना है, सो इसी तरह मैं प्रगति क सकता हूं।"

२३ सितम्बर '४

आज सुबह ग्यारह बजे स्नान-घर में मैं नहाने के टब में खड़े होकर फव्वारे नीचे स्नान कर रही थी। पैर में साबुन लगाया था। इससे फिसली और टब गिरी। सिर टब के किनारे पर लगा। घड़ी भर बेसुध-सी रही, मगर ठंडा पानी त ऊपर से पड़ ही रहा था, इसलिए होश में आ गई। पर उठा नहीं जाता था। सि में खूब चोट आई थी। मुश्किल से साबुन धोकर कपड़े पहने और आकर बा व खाट पर सो गई। किसीकी आवाज सहन नहीं होती थी, इसलिए भाई के कम में दरवाजे बन्द करके दिनभर पड़ी रही। दिमाग को चोट लगी थी। उठने य चलने से या आवाज से तकलीफ होती थी। बोलना तो बहुत ही बुरा लगता था थोड़ी और चोट आई होती तो खोपड़ी फूट गई होती और मैं चल दी होती। बा का जन्म-दिन बिगड़ता।

शाम को हिम्मत करके उठी और कतरनों में कुछ पर्चियां लगाईं। पीछे बहु ही धीरे-धीरे चली। आवाज से सिर में धक्का-सा लगता था। रात को प्रार्थना भी नहीं बैठ सकी। नींद अच्छी आई।

: ५७ :

जेल में बापू का दूसरा जन्मदिन

२४ सितम्बर '४३

आज भी पड़ी रही और दोनों वक्त की प्रार्थना में नहीं बैठी। खाने को उठी। बाद में कतरनों का काम किया। रसोईघर का काम देखा। पढ़ना-लिखना वगैरह कुछ नहीं किया। मंगलवार की रात को हम लोग विचार कर रहे थे कि बापू के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में क्या करना चाहिए। आज भाई कहने लगे कि हम सब धर्मों का एक मंदिर बनाकर उसे अच्छी तरह सजायें। मैंने इसमें जोड़ा, "और हम सब धर्मों के प्रतिनिधि बनकर बापू को साल-मुबारक कहने जायं। उस मंदिर में बापू के दीर्घायु होने की प्रार्थना करें।" भाई को यह पसन्द न था। बापू को किसी तरह की कृत्रिमता पसन्द नहीं है और अभिनय से अरुचि है। मीराबहन आदि खेल रहे थे। मैंने मीराबहन से जाकर बात की। वह कहने लगीं, "धार्मिक चीज यानी प्रार्थना आदि के साथ अभिनय की चीज को मिलाना मुझे अच्छा नहीं लगता। अगर कुछ देशों के नेताओं वगैरह की नकल हो तो ठीक है।" मैंने कहा, "तो ऐसा ही कीजिये। डा० गिल्डर को स्टालिन और कटेली को रूजवेल्ट बनाइये। आप स्वयं च्यांग काई-शेक बनिये।" वह बोलीं, "तुम मैडम च्यांग काई-शेक बन जाओ। उसका भी तुम्हारी तरह छोटा कद है और बाल कटे हुए। प्यारेलाल को चर्चिल बनना पड़ेगा। वही एक मुंछकटा है।" "मगर वह सब लोग मोटे हैं। हमसे ऐसा मोटा कैसे बना जाय? सब अपने-अपने काम का विचार करें।" यह कहकर मैं साढ़े दस बजे लौटी।

दूसरे रोज भाई बोले, "मुझे तो अभी भी यह नहीं जंचता। मैं मीराबहन से बात करूंगा।" मीराबहन से उन्होंने बात की तो उन्होंने सब धर्मों के मंदिर की बात पसन्द की। भाई ने कागज का मंदिर बनाने को कहा, पर मीराबहन ने मिट्टी का बनाने का विचार किया। सब धर्मों के प्रतिनिधि भी बापू को साल मुबारक कहने आये। मंदिर में प्रार्थना करने हम लोग न जायं, यह उनकी सलाह थी। मीराबहन कहने लगीं, "सुशीला को फ्राक और टोपी पहनाकर पारसी लड़की बनायेंगे। मैं सिख बन जाऊंगी, डाक्टरसाहब पठान, प्यारेलाल क्रिश्चियन और मनु हिन्दू साधु।"

मनु के बाल लम्बे होने के कारण आखिर उसे ही पारसी लड़की बनाने का विचार किया गया। मुझे रोमन कैथोलिक साधु और भाई को मद्रासी ब्राह्मण बनाने की सोची। भाई की नापसंदगी जारी थी। कहने लगे, "मुझे तो अच्छा नहीं लगता। करना ही है तो मुझे छोड़ दो।" मैं चुप रही। शाम को मीराबहन मुझे बुलाकर ले गईं और क्या करना चाहिए, यह सोचने लगीं। मैंने कहा, "भाई से पूछ लो, तब पीछे कुछ तय करेंगे।" रात को मैं बैठी अखबार पढ़ रही थी। भाई जल्दी सो गये थे। मुझे कल और आज दिनभर सोने के कारण रात को नींद नहीं आ रही थी। इतने में मीराबहन आकर बातें करने लगीं। उनके हाथ में दर्द अभीतक होता है। आज ज्यादा था। बोलीं, "वह विशेषज्ञ चला गया है। दो-चार बार और कसरतोंवाला इलाज करता तो मेरा हाथ अच्छा हो जाता।" मैंने कहा, "डा० गिल्डर से क्यों नहीं इलाज करातीं?" कहने लगीं, "नहीं, इन्होंने ऐसा काम किया नहीं है। उस विशेषज्ञ का गुण तो उसीके साथ गया।" मीराबहन को डर है कि कहीं गर्दन उतर न जायं।" मैंने कहा, "गणपति के दिन हैं। हाथी का सिर तो यहां नहीं मिलेगा, मगर किसी बकरी का पसन्द कर लो तो वह लगा देंगे।"

आज पता लगा कि मीराबहन को सचमुच यही डर है। मैंने समझाने की कोशिश की कि डरने की आवश्यकता नहीं है, पर उन्हें संतोष नहीं हुआ। बोलीं, "आखिर गर्दन तो मेरी है। मैं कोई खतरा उठाना नहीं चाहती।"

२५ सितम्बर '४३

आज भी सुबह प्रार्थना में नहीं उठी। रात को नींद बहुत देर में आई थी। साढ़े तीन बजे बा को बड़ी खांसी आई थी, तब उठी थी। उसके बाद अच्छी नींद आई, सो सुबह तक सोती रही। सुबह भाई फिर कहने लगे, "स्वांग भरने में मैं भाग नहीं लेना चाहता।" मीराबहन से भी यही कह आये। मैंने समझ लिया कि यह प्रस्ताव अब गया। पारसी कपड़े मंगाये थे, सो लौटा दिये। भेजकर आ रही थी कि मीराबहन ने मुझे बुलाया। कहने लगीं, "पूरा स्वांग हम करेंगे।" मैंने कहा, मैंने तो कपड़े लौटा दिये।" बोलीं, "वापस मंगवाओ।" मैंने कहा, "अब आप ही मंगवाइये।" उन्होंने जाकर मंगाये। फिर अपनी एक सलवार डाक्टरसाहब को दी। उन्होंने एक सफेद कुरता, ऊपर से वास्कट व चेक का एक लम्बा कोट पहना। भाई ने पगड़ी बांध दी। डाक्टरसाहब खासे पठान बन गये। मीराबहन ने डाक्टरसाहब की पतलून, लाल कुरता, सफेद कोट और अपने ओढ़ने की लहरियादार पगड़ी पहनी। कोट के

ऊपर की जेब में रेशमी रूमाल बाहर झांक रहा था। भाई ने मेरे कटे बालों की दाढ़ी बनाकर उन्हें दी। पेस्टिल रंग से मूंछ बनाई। बस, दयालसिंह कॉलेज का सिख जवान तैयार हो गया। उसी तरह से अकड़कर चलती थीं। हँसते-हँसते हमारे पेट में बल पड़ गये। मनु को पारसी कपड़े पहनाये गए। मैंने मीराबहन का एक लम्बा काला-सा ऊन का चोगा पहना। कमर में रस्सी बांधी। पेस्टिल से कुछ नई जमती हुई दाढ़ी-मूंछ मीराबहन ने बना दीं। खिस्ती साधुओं के जत्थे में दाखिल होनेवाला नया नवयुवक तैयार हो गया। भाई आज तैयार नहीं हुए।

फैसला किया गया कि नवयुवक साधु एक गुलदस्ता और ईसाई धर्म फैलाने की किताबें भेंट करे। पारसी लड़की फल दे। सिख जवान हलुवा और मिठाई तथा पठान सूखी मेवा और मद्रासी ब्राह्मण नारियल व नीबू भेंट करे।

कल कैदियों को देने के लिए बेसन की मिठाई और चिवड़ा मैंने और मनु ने मिलकर बनाया। बहुत थक गई। रामायण पढ़ी। बापू ने बाइबिल पढ़ी और मैंने सुनी। सुनते-सुनते कतरनों का काम भी करती रही। दोपहर सो नहीं सकी, सो साढ़े तीन बजे सो गई। डर था कि आज रात को जागना ही होगा, इसलिए दिन में जो नींद न ली तो काम बिगड़ेगा। शाम को घूमते समय बापू कहने लगे, "पिछले साल तुम लोग रातभर जागे थे, इस बार मत जागना।" भाई कहने लगे, "बापू, सारा साल आपका, एक रात हमारी।" मैंने कहा, "बापू, कल के कार्यक्रम का निश्चय कर लें।" कार्यक्रम की बात के सामने और बातें टल गईं।

आज शान्तिकुमारभाई के यहां से सामान आया। बापू की तीन धोतियां, हाथ पोंछने के दो रूमाल, एक छोटा रूमाल और एक नारियल। नारियल पर स्वस्तिक का चिह्न था और उसे एक पीली पगड़ी पहनाई हुई थी। साथ में सुंदर सूत का कता एक हार था।

रात को भाई ने जेल के सुपरिन्टेण्डेंट के नाम एक खत लिखा। डा० गिल्डर ने उसे टाइप किया। दोनों ने मिलकर सबके नये नाम रखे। भाई ने सबके विजिटिंग कार्ड तैयार करने का काम अपने ऊपर लिया।

दोपहर मैंने सिपाहियों और कैदियों के लिए थालियों में मिठाई रखी। रात को मीराबहन, मनु और डाक्टरसाहब की भेंट के लिए सामान तैयार कराया। भाई ने बरामदे में श्लोक लिखे। मीराबहन ने दोनों किनारों पर रेखाएं खींचीं। मैंने उनपर रांगोली डालकर उसे पूरा किया। पहले सफेद रांगोली से श्लोक

लिखना आरम्भ किया, मगर सफेद संगमरमर पर वह अच्छा उठता नहीं था। मीराबहन ने कुछ कुंकुम, कुछ गुलाल और सफेद रांगोली, सब मिलाकर बहुत सुन्दर हल्का तरबूजी रंग बनाया। मेरा काम रात के दो-ढाई बजे पूरा हुआ। डेढ़ बजे मीराबहन आईं। मेरे लिए अभी तीन लाइनें और आखिर का ॐ पूरा करना बाकी था। इसलिए मीराबहन ॐ बनाने लगीं। उन्हें पौन घंटा लगा होगा। उतने समय में मैंने तीनों लाइनें करीब-करीब पूरी कर लीं। दो-तीन शब्द रह गये। पूरा करके हम लोग सोने को चले। ढाई बज चुके थे।

बरामदे की सजावट पूरी हुई तो इस तरह की थी—नीली पेन्सिल के निशान सफेद रांगोली के थे, स्याही के निशान तरबूजी रांगोली के, लाल पेन्सिल के निशान गुलाल के।

बापू के कमरे की तरफ से शुरू करके पहले कमल का-सा आकार बनाया, फिर लिखा :

सत्यमेव जयते नानृतम्
जीवेम शरद: शतम्
पश्येम शरद: शतम्
शृणुयाम शरद: शतम्
अदीनास्याम शरद: शतम्
प्रब्रवाम शरद: शतम्
भूयश्च शरद: शतात्
असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय

अन्त में ॐ और स्वस्तिक के चिह्न अंकित किये। बापू घूमने को निकलें, तब सामने से यह सब पढ़ सकें, इस तरह लिखा था।

२६ सितम्बर '४३

सवेरे पांच बजे बापू ने मुझे प्रार्थना के लिए उठाया। बापू को प्रणाम करके प्रार्थना की तैयारी की। मनु प्रणाम करना भूल गई। प्रार्थना के लिए सब लोग बैठ गये, तब मैंने उसे याद दिलाया। वह समझती थी कि जब हार देंगे, तभी प्रणाम भी करेंगे। जब मैंने कहा तब भागी-भागी गई। बापू खाट पर लेट गये थे। वहीं

जाकर प्रणाम कर आई।

साढ़े छः बजे डा० गिल्डर उठे। विजिटिंग कार्डों पर नाम टाइप करना बाकी था। भाई रात में नहीं टाइप कर सके, क्योंकि आवाज होती थी। मैंने डा० गिल्डर को टाइप करने को कहा। उन्होंने तैयार कर लिया।

सात बजे कटेलीसाहब आये। वह पारसी पगड़ी और लम्बा सफेद कोट पहने थे। एक सुन्दर, हाथ के बने बटुवे में ७५) रु० हरिजन-फण्ड के लिए बापू को भेंट किये और प्रणाम कर गद्‌गद् कंठ से कहने लगे, "बहुत जीओ और आपके मनोरथ सफल हों। आपकी फतह के लिए मैं दुआ करता हूं।"

सुन्दर दृश्य था! डाक्टरसाहब ने खत तैयार करके मुझे दिया और मैंने कटेलीसाहब को दे दिया। उसमें बापू को उनके जन्म-दिवस पर बधाई देने के लिए भेंट करने की सरकार से आज्ञा मांगी थी।

जल्दी से चाय-दूध पीकर हम लोग अपने-अपने कपड़े पहनकर चले और डाइ-निंग रूम के खाली हिस्से में जा बैठे। कटेलीसाहब बापू के पास खत लेकर गये। बापू ने मेहमानों से मिलने आने में थोड़ी देर लगाई। मुझे डर लगा कि बापू को कहीं यह सब नापसन्द न हो। मगर बापू तो अपना काम पूरा करके उठाना चाहते थे, ताकि सीधे घूमने को जा सकें। बापू आकर खड़े हुए। हँसते-हँसते बोले, "आप कहां से आये हैं?" पहले जेरबाई (मनु) बैठी थी। वह अपनी फल की टोकरी लेकर उठी और बोली, "महात्माजी, साल मुबारक।" उसके बाद ब्रदर लारेंस (मैं) बैठे थे। वह अपना गुलदस्ता और 'माउण्ट ऑव ब्लेसिंग्स' भेंट करते हुए बोले, "भगवान करे, आप दीर्घायु हों।" पीछे रामाचुल्लू नम्बूद्रीपाद (भाई) बैठे थे। अपने नारियल और नीबू की भेंट लेकर। कोखती[1] पहने बैठे थे। मलयाली भाषा का अभिनय करते बोलते हुए बापू के सामने लेट गये और साष्टांग प्रणाम किया और भेंट दी। फिर सरदार शमशेरसिंह (मीराबहन) मिठाई का थाल भेंट करते हुए 'सत् श्री अकाल' बोले और आखिर में सरदार सिकन्दर अकबरखान (डा० गिल्डर) सूखे मेवों और सेवों की टोकरी लेकर आगे आये। बोले, "तीड़ा माशे मलंग बाबा[2]।" और हाथ मिलाया। सब लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे

---

[1] ओढ़ने का वस्त्र जिसे ट्रावनकोर की यात्रा में इस्तेमाल किया था।

[2] पठान अभिवादन, जिसका शाब्दिक अर्थ है, "आपको कभी थकान न हो।"

थे। बापू और बा भी बहुत हँसे। बापू कह रहे थे कि सबका भेस सम्पूर्ण था।

बापू मेहमानों को साथ लिए महादेवभाई की समाधि की ओर चले। नीचे उतरे तो सिपाहियों की कोठरियों के पास आने पर कटेलीसाहब ने जोर-से पुकारा, "जमादार किधर है?" बेचारा...तैयार नहीं था। उन्होंने फिर पुकारा, "जमादार किधर है? बाहर के आदमियों को कैसे आने दिया?"...आंखें मलते-मलते जल्दी से कपड़े पहनकर निकला। श्री कटेली उससे फिर वैसे ही बोले। उस बेचारे का चेहरा देखने लायक था। पीला पड़ गया। इतने में सब लोग हँस पड़े। बाद में कह रहा था कि उसने डाक्टरसाहब और मीराबहन को तो बिल्कुल ही नहीं पहचाना।

समाधि पर फूलों का एक हार महादेवभाई की तरफ से बापू को पहनाया। फूल चढ़ाकर और प्रार्थना करके वापस लौटे। मीराबहन अपनी बकरियों को सजाने लगीं। मैं और मनु ऊपर आये। कपड़े बदले। मुझे तो वह ऊनी पोशाक बहुत चुभ रही थी। बकरियों के लिए बिस्कुट लेकर नीचे गये। सब बकरियों को हार भी पहनाये गए। अच्छी दिखती थीं। तीन ने बिस्कुट खाये। बाकी को बिस्कुट पसंद न थे।

बापू ने कहा था कि आज खेलना जरूर चाहिए। जाली लगवाकर हम लोग बेडमिंटन खेल आये।

आज बा ने बापू के हाथ के कते सूत की लाल किनारी की साड़ी पहनी। मनु बता रही थी कि जब सेवाग्राम से वह जाने लगीं, तब बा ने उससे कहा था, "यह साड़ी जानकीबहन के यहां रख दो। यहां कहीं जब्ती वगैरह हो तो यह सुरक्षित रहे। मरते समय यही मेरी देह पर हो।"

मनु ने और मैंने भी लाल किनारी की साड़ी पहनी। अच्छा लगा।

घूमने से लौटकर भाई और डा० गिल्डर ने बापू की मालिश की। मैंने कैदियों के लिए खाना पकवाने का सामान निकाला। फिर सुबह जो मिठाई आदि आई थी, वह सम्भाली। बापू के लिए बाजरे की खिचड़ी चढ़ाई।

बापू ने कहा था, "देखो, ऐसा न करना कि हम लोग स्वाद के चक्कर में पड़ जायं। हमें तो ऐसा कार्य करना है जिससे यह जाहिर हो कि हम असलियत में बंगाल के भुखमरे लोगों की विपदाओं में हिस्सा बंटा रहे हैं।" सो यह तय हुआ कि हम सब लोग बाजरा खायें। कैदियों के लिए भी बाजरे की खिचड़ी, सब्जी और कढ़ी

पकाई गई। बापू के लिए सादी खिचड़ी बिना छौंक और मसाले के तैयार की और उसीमें थोड़ी-सी सब्जी भी डाल दी। बा, मीराबहन और मैंने उसीमें से थोड़ी-थोड़ी ले ली। मनु और भाई ने कैदियोंवाला खाना खाया। मैंने और डा० गिल्डर ने भी कढ़ी चखी। उसमें बहुत मिर्च थी।

बापू स्नान करने निकले। उस समय हम लोग अपने-अपने सूत के हार तैयार कर कर रहे। एक बापू के लिए और दूसरा बा के लिए। हारों के नीचे गेंदे का एक-एक फूल लगाया और गुलाल के ७५ टीके। साढ़े ग्यारह-पौने बारह बजे सब तैयार होकर गये। डा० गिल्डर, मीराबहन और कटेलीसाहब ने फूलों का हार पहनाया, फिर भाई ने। आखिर में मैंने और मनु ने बापू और बा के टीका किया और हार पहनाया।

डा० गिल्डर और कटेलीसाहब भी पीछे टीका करने आये और बा के लिए चप्पल, लकड़ी का चम्मच और कांटा, अपने यहां के पेड़ के नारियल और गुड़ और गेहूं की एक-एक कटोरी लाये थे। उनके फूलों के हार बहुत ही सुन्दर थे। एक चन्दन की माला भी लाये थे। बापू और बा फूलों के ढेरों में बहुत ही सुन्दर दीख पड़ते थे। सुबह शांतिकुमारभाई के यहां से फूलों की टोकरी आई थी। रघुनाथ भी बाहर से फूल लाया था। मीराबहन ने कमरे में उन्हें सजाया। सिपाही लोग तोरण सवेरे ही बांध गये थे। कमरा महक रहा था।

इसके बाद प्रार्थना में बैठे। पहले 'ओ गॉड आवर हेल्प इन एजेज पास्ट' गाया। फिर 'मूकं करोति वाचालं', 'ईशावास्य मिदं सर्वं', 'अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्', 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव', 'असतो मा सद्गमय' आदि श्लोक[1] गाये।

[1] (१) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम्॥

'सब मार्गों के जाननेवाले, हे अग्निदेव! जिस रीति से हमें (अपने) ध्येय की (निश्चित) प्राप्ति हो, उस रीति से, तुम हमें अच्छे रास्ते ले चलो। हमसे हमारे कुटिल पापों को अलग कर दो (मिटा दो)। हम तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हैं।'

(२) ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतंगमय॥

'हे प्रभो! मुझे असत्य से सत्य में ले जा। अंधेरे से उजाले में ले जा। मृत्यु से अमरता में ले जा।'

श्लोकों के पाठ के बाद 'अउज बिल्ला' और 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' गाये और राम-धुन चलाई। सबकुछ भली प्रकार सम्पन्न हुआ। तब बापू को खाना खिलाया। बा भी बैठ गईं। दोनों ने साथ खाया। खाने के बाद सिपाही हार पहनाने आये। सबको एक-एक संतरा और एक-एक मोसम्बी दी। इतने में कैदियों का खाना आया। खिचड़ी, कढ़ी, सब्जी और एक-एक मोसम्बी सबको दी। पीछे हम लोगों ने खाया। पौने दो बजे लेटी, मगर नींद न आई। ढाई से साढ़े तीन तक काता। सूत उतारकर कतरनों के काम में बैठ गई। आज सबका संकल्प था कि सब लोग मिलकर पर्चियां चिपकाने का काम पूरा करें। साढ़े चार बजे बापू ने बाइबिल पढ़ी। मैंने सुनी।

पांच बजे कैदियों की चाय तैयार हो गई। सबको बेसन की मिठाई, चिवड़ा, गांठिया,[1] नमकीन सेव और चाय के दो-दो प्याले दिये। सिपाहियों को मिलाकर ३२ आदमी थे। इन्हें भी खिलाया। साढ़े पांच बजे कतरनों का काम पूरा हुआ।

बापू को दूध दिया और हम लोगों ने खाखरा, दूध तथा फल खाये। इतने में वर्षा आ गई। खेलना तो हो ही नहीं सकता था।

मीराबहन शाम के चार बजे से मिट्टी का सार्वधार्मिक मंदिर बनाने में लगी थीं। भाई भी मदद कर रहे थे। दोनों घूमने नहीं आये। आठ बजे घूमकर लौटे तो बापू के कमरे का दरवाजा बन्द था। वहां मंदिर सजाया गया था। लकड़ी के एक पट्टे पर गीली मिट्टी की तह जमाकर उसके ऊपर एक तरफ मस्जिद, एक तरफ गिर्जाघर और बीच में महादेव का मंदिर बनाया था। उसके पास ही सरकण्डों के छिलकों का मण्डप बनाकर उसके अंदर पीले कनेर के फूलों से अगियारी[2] का स्थान

---

(१) त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

'हे देवों के देव! तू ही मेरी माता है, तू ही मेरा पिता है, तू ही मेरा भाई है और तू ही मेरा मित्र। तू ही मेरी विद्या है, तू ही मेरा धन है और तू ही मेरा सब कुछ है।'

[1] बेसन की बनी नमकीन।

[2] पारसियों का पूजा-गृह।

बनाया था। सामने बगीचा। फूलवाली छः-छः नौ-नौ इंच की छोटी टहनियों को गीली मिट्टी में गाड़कर बगीचा बनाया था। आटे के छोटे-छोटे दीपक बनाकर उनमें घी की बत्तियां सामने और दायें-बायें रखकर जलाई थीं। बापू प्रार्थना के लिए भीतर आये, तब बिजली बन्द थी। वहां छोटे-छोटे दीपक जल रहे थे। पीछे की तरफ जंगली झाड़ियों के गमले और सामने दोनों तरफ फूलों के गमले थे। सुन्दर दृश्य था। कमरे के बीच-सामने फूलों का 'ॐ' और उसके दोनों तरफ फूलों के स्वस्तिक बने थे। जितने फूलों के हार इत्यादि आये थे, वे दीवारों पर लटका दिये गये। कमरा फूलों से महक रहा था। बड़ा अच्छा लगता था। प्रार्थना में पहले 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया गया, फिर हमेशा की तरह प्रार्थना हुई। 'हरि ने भजतां हजी कोई नी लाज जती नथी जाणी रे' भजन गाया। मीराबहन ने 'गोपाल राधेकृष्ण' 'गोविन्द गोबिन्द गोपाल' की धुन चलाई। प्रार्थना के बाद बापू की सिर-पैर की मालिश इत्यादि करके सब लोग सो गये। बहुत थके थे।

२७ सितम्बर '४३

सुबह उठकर कल का बनाया हुआ दृश्य देखा तो विचार आया कि स्वप्न-चित्र की तरह यह सब विलीन हो जायगा। उसकी स्मृति को स्थायी कैसे बनाया जाय, यह सोचते हुए भाई मुझसे कहने लगे, "इस मंदिर की एक तस्वीर बनाओ।" मैं अपने तैलवाले रंग और ब्रुश लेकर बैठी और सवा ग्यारह तक काम किया। फिर बापू का खाना लाने को गई। दोपहर कुछ अखबार देखे, कुछ पढ़ा, डायरी लिखनी शुरू की। समय बीत गया।

शाम को बा के साथ प्रार्थना के बाद रामायण का अर्थ करके मैंने गीताजी के श्लोकों का अर्थ किया।

आज मुझे बुखार-सा लगता था, इसलिए जल्दी सो गई।

सुबह हम लोग बापू के कमरे से फूलों के हारों और गुलदस्तों का ढेर महादेवभाई की समाधि पर ले गये। खूब सजावट की। सुन्दर दृश्य था।

२८ सितम्बर '४३

सुबह साढ़े ग्यारह बजे तक मैंने चित्रकारी की। डा० गिल्डर की तबीयत अच्छी न थी, इसलिए बापू की मालिश भाई ने और मैंने की। पौने दस बजे तक बापू के कमरे में बा की मालिश होती है। कमरा बन्द रहता है। उसके बाद ही चित्रकारी हो सकती है।

दोपहर बाद मनु को मैंने अंग्रेजी सिखाई। कुछ स्वयं पढ़ा और कुछ कतरनों का काम भी किया।

आज सुबह कलक्टर और डा० शाह ने मंदिर देखा। कलक्टर ने कहा, "मेरे खयाल में ये फूल इसी बगीचे के हैं।" डा० शाह देखकर खुश हुए।

२६ सितम्बर '४३

आज मंदिर मीराबहन के कमरे में चला गया। साढ़े नौ बजे चित्रकारी करने बैठी और साढ़े ग्यारह बजे तक की। बाकी दिन का कार्यक्रम हमेशा जैसा ही रहा।

शाम को अंधेरा जल्दी हो जाता है। कल कटेलीसाहब ने बापू को सूचना की कि घूमने को सात बजे निकलें ताकि पौने आठ बजे वापस आ सकें। कल डाक्टरसाहब खेलने का समय पांच से छः बजे का करने को कहते थे। पहले तो मैंने इन्कार किया। साढ़े पांच बजे बापू को खाना देना होता है और पांच से साढ़े पांच तक उनके पास पढ़ना, मगर बापू को पता लगा तो उन्होंने आग्रहपूर्वक पांच का समय रखने को कहा। बापू शाम को साढ़े छः बजे कातेंगे। उसी समय पढ़ने का क्रम रखा जायगा। खाना वह पौने छः बजे लेंगे। मैं पौने छः बजे वापस आ जाया करूंगी, यह तय हुआ। आज पांच बजे खेलने को गये। नीचे कोर्ट गीला था। ऊपर बरामदे में खेले।

बापू का खाना पौने छः बजे हुआ और कातना साढ़े छः से सात तक। सात बजे वह घूमने चले गये। पौने आठ से सवा आठ तक मैंने भाई के साथ इतिहास पढ़ा। प्रार्थना के बाद अखबार इत्यादि देखे। बैठी थी कि जोर से आंधी, तूफान और वर्षा आई। बाहर पड़े हुए सब बिस्तर अन्दर लाने पड़े। सब लोग अन्दर ही सोये। मच्छरों ने सबको खूब हैरान किया।

आज अवन्तिकाबाई गोखले के यहां से बापू के लिए दो जोड़ी धोती आई। बापू कहते थे कि जरूर आयेंगी। आज तक वह इसमें कभी चूकी नहीं हैं।

३० सितम्बर '४३

आज भी सुबह साढ़े ग्यारह तक चित्रकारी की। कल बापू ने कहा था कि एक दिन से ज्यादा और समय चित्र के लिए नहीं मिलेगा, मगर मैं पूरा नहीं कर पाई। बापू से पूछकर कल उसे पूरा करने की इजाजत ली है। चित्रकला ऐसा काम है कि इसे उठाओ तो दूसरा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाता है। सुबह का सारा वक्त इसमें चला जाता है।

दोपहर को आज मनु की परीक्षा थी। कल उसे प्रश्न लिखाये थे। आज उसने उत्तर लिखे और मेरे पीछे पड़ गई कि अभी देख दो। मैंने रात को प्रार्थना के बाद देखा। वाक्य बनानेवाला प्रश्न उसने बहुत खराब किया था। दूसरे अच्छे थे। दिन-भर से शोर मचा रही थी, "मैं फेल हुई तो रात को पढ़ा करूंगी।" उसकी आंखें कमजोर हैं, इसलिए रात को पढ़ने से बापू मना करते हैं।

मनु पास हो गई, तो भी रात में पढ़ने की इजाजत बापू से मांगने लगी। मगर बापू कब इजाजत देनेवाले थे! रात को दिलरुबा बजा सकती है, इतनी इजाजत उन्होंने दी।

दिन का कार्यक्रम कल के जैसा चला। भाई के साथ शाम को इतिहास पढ़ा। प्रार्थना के बाद अखबार देखे। सोने को बहुत देर हो गई। नींद आने में और देर लगी। साढ़े बारह बजे के बाद सो सकी। बुरा लगा।

१ अक्तूबर '४३

सुबह चाय के समय कटेलीसाहब कहने लगे, "२२ अक्तूबर को डा० गिल्डर का जन्म-दिन है। उस दिन क्या करना है?" दो विचार मुझे आये। उनमें से एक तो बाद में रद्द हो गया और दूसरा स्वेटर तैयार करने का अभी है, सो अच्छी ऊन मिली तो तैयार करेंगे।

आज मैंने पौने बारह बजे तस्वीर पूरी की। भारी बोझ सिर पर से उतरा। फिर दोपहर को बैठकर डायरी पूरी की।

अब दो अंक 'सोशल वेलफेयर' के और एक 'मेडिकल जरनल' पढ़ने को हैं। फिर पिछड़ा हुआ पढ़ने का काम खत्म हो जायगा।

कल शाम को भाई पृथ्वीचन्द का पत्र आया। उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। लिखा था कि उन्होंने सरकार को तार-पर-तार दिये, पर समय पर न छोड़े जाकर वह पत्नी की मृत्यु के बारह दिन बाद पैरोल पर छोड़े गये। हिन्दू स्त्री के लिए मृत्यु से पहले पति का दर्शन बड़ी चीज है। बहुत करुणाजनक घटना है। भाई पृथ्वीचंद बड़े अशांत हैं। हम उन्हें पत्र भी नहीं लिख सकते। आखिर शांति देने-वाला भगवान ही तो है न!

२ अक्तूबर '४३

आज महादेवभाई को गये दूसरे वर्ष के छः हफ्ते पूरे हो गये।

३ अक्तूबर '४३

सुबह बहुत-से फूल तोड़े थे, मगर मैं पहुंची तबतक बापू ने प्रार्थना शुरू करवा दी थी। उनके कहने से फूल वापस ले आये। शाम को फूलों की चार थालियां समाधि पर लेकर गये। बा कहने लगीं, "शंकर भगवान से कहना कि प्रसन्न हों और हमें जेल से निकालें।" बा हमेशा महादेवभाई की समाधि को महादेव या शंकर भगवान का मंदिर कहती हैं। आज समाधि की सजावट बहुत सुन्दर हुई।

कल दोपहर को मैंने खाने के कमरे का सामान ठीक कराया। वह कमरा सामान का लगता था। सरोजिनी नायडू के समय में सजा रहता था, बाद में कटेली-साहब ने कुछ सामान वहां रखवा दिया। इससे कमरा भद्दा लगने लगा। आज सब सामान जब ठिकाने लगवाया तो कमरे की शकल बदल गई।

अभ्यास वगैरह फिर से नियमित शुरू हुआ है। अच्छा लगता है। लिखना कल से शुरू करूंगी।

४ अक्तूबर ४३

आज मैंने मालिश से छुट्टी ली। सुबह इतिहास पढ़ा। दोपहर सारा समय संस्कृत-व्याकरण पढ़ती रही। शाम को कतरनों का काम करने और कातने के समय भाई पं० जवाहरलालजी की 'ग्लिम्पसेज ऑव वर्ल्ड हिस्टरी' ('विश्व इतिहास की झलक') पढ़कर सुनाते रहे। कार्लाइल की किताबें लाइब्रेरी से फिर से निकालने के लिए कहा है।

रात को अखबार आदि देखे।

५ अक्तूबर '४३

सुबह प्रार्थना में पौने छः बजे उठे। पीछे सोने का सवाल ही नहीं था।

बापू की मालिश के बाद इतिहास पढ़ा। दोपहर एक घंटा डाक्टरी अभ्यास किया और आधा घंटा अखबार पढ़ा। बापू अपनी कतरनों के काम में लगे हैं। भाई को अब यह बहुत अखरता है। "बापू का समय क्या ऐसी चीजों में लगने देना ठीक है?" यह सवाल उन्हें सताता है, मगर बापू अब उसे छोड़ने को तैयार नहीं। आज मैंने पूछा, "इन कतरनों पर इतनी मेहनत होती है। इनका उपयोग कितना होगा?" बापू कहने लगे, "यह तो तुम लोग जानो। प्यारेलाल तो उपयोग करेगा ही। मैं नहीं करनेवाला हूं। मगर मैंने अपने जीवन में ऐसी बहुत-सी चीजें की हैं, जिनका उपयोग मेरे अपने लिए नहीं था।"

बापू पाखाने चार दफा जाते हैं। उस समय वह जवाहरलालजी का लिखा इतिहास पढ़ते हैं—थोड़ी देर तक मालिश के समय भी पढ़ते हैं। सब मिलाकर डेढ़ घण्टे से अधिक नहीं होता है। बाकी समय अखबार देखने या अनुक्रमणिका बनाने के काम में लाते हैं। एक घंटा मेरे और मनु के लिए निकालते हैं। दोपहर खाने के समय मेरे साथ उनकी रामायण भी होती है और मीराबहन बाइबिल का कुछ अंश, जो उन्हें अच्छे लगे या उनकी समझ में न आये, पढ़कर सुनाती हैं। शाम को अखबार सुनाती हैं। आधा घंटा बापू कातने के लिए निकाल लेते हैं, तब भाई पढ़कर सुनाते हैं। दो-तीन रोज से करीब पौन घंटा बा बापू से लेती हैं। गीता का उच्चारण सीखती हैं। बापू अर्थ भी बताते हैं। आजकल हम सब एक-एक मिनट नियमित हिसाब से काम में लगाते हैं।

६ अक्तूबर '४३

शाम को साढ़े चार बजे खूब तूफान आया। वर्षा आई। दिन में बहुत गरमी थी। तूफान के बाद ठंडक हो गई।

मैंने शाम को घूमना बंद कर दिया है। सात बजे डा० गिल्डर के पास जाती हूं। उन्हें कुछ डाक्टरी पाठ लिखने थे। मैंने कहा, "मुझसे लिखाया कीजिये, जिससे कि आपका काम भी हो जायगा और मुझे भी कुछ अनुभव और ज्ञान हो जायगा। साथ ही सभी चीजें दुहरा लूंगी।" उनके पास शाम का ही वक्त था। बापू ने इस काम के लिए घूमना छोड़ने की इजाजत खुशी से दे दी।

सुबह बहुत-से फूल तोड़कर बापू का कमरा सजाया। शाम को उन्हें समाधि पर ले गई। यह बापू की आज्ञा थी।

७ अक्तूबर '४३

आज भी शाम को वर्षा और तूफान आये। सुबह आज भी नहीं खेल सके। कल भी नहीं खेल सकेंगे। शाम को ऊपर बरामदे में ही खेले।

आज बा को बुखार है। मनु उनके पास थी—खेल में नहीं आई। हम पिंग-पौंग खेल रहे थे। वर्षा शुरू हुई। मैंने सिपाही को बाहर के कपड़े उठा लाने को भेजा। थोड़ी देर में मीराबहन आकर नाराज होने लगीं, "वर्षा आई है। कपड़े भीगते हैं।" मैंने कहा, "मैंने सिपाही को भेज दिया है।" वह कहने लगीं, "एक आदमी क्या कर सकता है? सभी कुछ भीग गया है। मनु भी भीग गई है।" बाद में पता लगा कि कुछ भी नहीं भीगा था। मनु भी नहीं भीगी थी। सब आदमी

बरामदे में ही थे और कपड़े उठा लिये गए थे।

बा को रात में १०२·४ डिगरी बुखार हो गया।

८ अक्तूबर '४३

आज से शाम को सवा सात से सवा आठ बजे तक डा० गिल्डर के पास जाने का समय रखा है। १५ मिनट घूमने के निकाले, बिल्कुल न घूमने से स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। बा को आज बुखार नहीं है। मनु रात को अच्छी तरह सो नहीं सकी, बा के पास थी। दिन में बारह से साढ़े तीन बजे तक सोई। उसे सिखाने का समय मैंने भी सोने में खोया। पौने तीन बजे उठी। करीब एक घंटा सोई थी। परिणामस्वरूप रात को नींद बहुत देर से आई। तूफान आज भी शाम को आया, मगर छः बजे शुरू हुआ। हम लोग खेलना पूरा कर चुके थे।

९ अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गये आज ५९ हफ्ते पूरे हो गये। दूसरे वर्ष के भी सात हफ्ते चले गये। सुबह बहुत-से फूल तोड़कर समाधि को सजाया। बापू ने हर शनिवार को पहले से जाकर सजावट करने को कहा।

१० अक्तूबर '४३

एक-दो रोज से बापू का यह क्रम रहने लगा है कि जवाहरलालजी का लिखा जितना इतिहास वह पढ़ते हैं, उसका सार मुझे दोपहर को सुनाते हैं, ताकि शाम को कातने के समय वह किताब पढ़ी जाय तो उसका क्रम बराबर मिल जाय। इससे मेरे सोने में देर हो जाती है, फिर उठती देर से हूं। मनु को देर तक सिखाती हूं। परिणामस्वरूप पढ़ने के लिए बहुत कम समय रह जाता है। आज मनु पत्र इत्यादि लिखने में बा के पास ही लगी रही, मुझे छुट्टी मिल गई। बापू के पास अनुक्रमणिका बनाने की सब कतरनें खत्म हो गई हैं। अब नई मिलें तो आगे काम चले। भाई ने हर रविवार को नये अखबारों की कतरनें देने की बात की थी, मगर आज पूछा तो कहने लगे कि आज कतरनें काटने का काम करेंगे। देंगे कल से। आज वह काफी समय वही काम करते रहे।

११ अक्तूबर '४३

बापू का आज मौन था। भाई दिनभर कतरनों का काम करते रहे। शाम को मैं भी उनके साथ बैठी। रात को साढ़े ग्यारह बजे काम पूरा हुआ। करीब पौने दोसौ कतरनें तैयार हुई। अखबारी कालम की लम्बाई के बराबर कतरनोंवाली

पर्चियां बनीं। कई-एक पर्चियां छोटी-छोटी पर्चियों को एक साथ जोड़कर बनी थीं।

शाम को खेलने के समय मैंने भाई से ३३ कतरनें लाकर बापू को दीं। उनपर नम्बर इत्यादि नहीं दिये थे। खेलने गई तो डा० गिल्डर, कटेलीसाहब, मीराबहन और मनु को पिंग-पौंग खेलते पाया। जल्दी वापस लौट आई और कतरनों पर नम्बर लगाये। इतने में वे लोग भी आ गये। भाई ने आज सब कामों से छुट्टी ली। पौने छः बजे जब मैं बापू को दूध वगैरह देने आई तो सबने खेलना बंद कर दिया था।

आज मैंने जुलाब लिया।

१२ अक्तूबर '४३

आज बापू ने दो दिन की कहानी इकट्ठी सुनाई। बीस मिनट लगे, इतने में मीराबहन आईं। मगर बापू ने उन्हें यह कहकर भगा दिया, "तुम्हारे सोने का यह वक्त नहीं है, मगर मेरा है।" मुझे लगा कि बापू कहानी न कहें तो अच्छा है। सोने को देर होती है। मैंने कहा भी, मगर वह माने नहीं।

सोकर उठी तो कतरनें लेकर बैठी, फिर मनु को सिखाया। मैंने बापू को सुबह चालीस कतरनें दी थीं। सोचा था कि दिनभर चलेंगी, मगर उन्होंने साढ़े ग्यारह बजे तक पूरी कर डालीं। मुझे अब दूसरी जल्दी तैयार करके देनी हैं। विचार किया कि अब सब पूरा करके ही उठना अच्छा है। भाई भी मेरी मदद करने आ बैठे। पांच बजे खेलने की घंटी हुई। उस समय थोड़ा काम बाकी था। मैंने सोचा कि शायद आज भी ये लोग पिंग-पौंग खेलेंगे। काम पूरा करके ही उठना चाहिए। आज नीचे का कोर्ट खेलने के लिए तैयार था। सब लोग सीधे वहां गये थे। कुछ मिनट तक हमारी राह देखी। सिपाही को हमें बुलाने भेजा। मैंने कहलाया कि अभी आती हूं, मगर उसके दो मिनट बाद ही सब लोग वापस आ गये। डा० गिल्डर कल से नाराज हैं, आज और चिढ़ गये। बहुत मुश्किल से उन्हें मनाकर खेलने भेजा, छः बजे तक खेले। वह बहुत अच्छा खेलते हैं। शाम को जब मैं उनके पास लिखने गई, तब उन्होंने वही बात चलाई। उन्हें कई दिनों से चिढ़ आ रही थी। भाई अक्सर देर से आते हैं। मुझे भी कई दफा पांच-सात मिनट की देर हो जाती थी। जेल में जहां चार-पांच खेलनेवाले हों, वहां वक्त पर सबको आना चाहिए। इस बात पर डाक्टरसाहब जोर दे रहे थे।

: ५८ :

सच्चा धर्म

१३ अक्तूबर '४३

आज शरत् पूर्णिमा है। बा ने दूध पिया और पकौड़ी बनाने को कहा। थोड़ी-सी खाई। मुझे बहुत डर लग रहा था कि कहीं उन्हें तकलीफ न हो जाय, मगर कुछ नहीं हुआ।

शाम को गुड़ के चाकलेट बनाने में समय गया।

२२ तारीख को डाक्टरसाहब का जन्म-दिन है। उस दिन क्या करना है, यह हम सब विचार करते थे। बापू ने कहा, "डाक्टरसाहब के लिए गुड़ के सिगार बनाओ।" कल मावा बनवाया था, उसमें कोको डालकर लम्बे-लम्बे चाकलेट बनाये। डाक्टर-साहब से मैंने सुनहरी वर्क और सिगारों के खाली डिब्बे मांगे थे। भाई ने गुड़ के सिगार कागज में लपेटकर दो सुन्दर पैकेट तैयार कर दिये। सिगारों में एक सिगार असली भी था। इसे हम नमूने के तौर पर चुराकर लाये थे।

शाम को खूब वर्षा हुई, रात को और भी जोर से।

१४ अक्तूबर '४३

सिगार के तीसरे पैकेट पर तैल-चित्रकारी की। उसमें कतरनें निकालने का सामान रखने का विचार था। एक मेजपोश बनाकर देने का सुझाव बापू ने दिया।

कल गुड़ बनाते समय मेरा हाथ जल गया, इसलिए मालिश में भाई गये। चित्रकारी करने के लिए मैं तीसरे पैकेट को धोने लगी। पैकेट का ढकना अलग जा गिरा। वह कागज से ही जुड़ा हुआ था। मैंने कटेलीसाहब को उसे जुड़वाने के लिए दिया और स्वयं मैं मेजपोश बनाने में लगी। दोपहर को अखबार देखे।

शाम को ऐसी वर्षा आई कि अभीतक कभी नहीं आई थी। मूसलाधार पानी बरसा।

१५ अक्तूबर '४३

आज सुबह घूमने के समय बापू ने जवाहरलालजी की किताब की कहानी सुनाई। फिर जेलों में उन्होंने क्या-क्या अभ्यास किये, यह सब बताते रहे। रानडे की 'दि राइज ऑव मराठा पावर' और जदुनाथ सरकार की शिवाजी पर पुस्तक जरूर पढनी चाहिए, यह सुझाया।

आज भी मेजपोश बनाने, मनु को सिखाने और 'डॉन' की दो-तीन प्रतियां पढ़ने में समय गया। डाक्टरी अभ्यास बंद रहा। डा० गिल्डर को भी शाम को कतरनों का काम करना था, इसलिए वहां से भी छुट्टी मिली। शाम को घूमने गई।

रात को अखबार देखे। हफ्ते की डायरी पूरी की। दुबारा ऐसे नागे न होने चाहिए, क्योंकि यह तो मुझे बापू ने लिखने को कहा था। मुझे नियमित रूप से लिखना चाहिए, नहीं तो इसकी कोई कीमत नहीं है।

साढ़े ग्यारह बज रहे हैं, सोने के लिए जाती हूं।

१६ अक्तूबर '४३

आज महादेवभाई को गये दूसरे वर्ष के आठ हफ्ते पूरे हो गये हैं। सुबह खूब फूल तोड़े। मैं और मनु, दोनों सजावट करने गई। सोचा था कि सजावट करके घूमेंगे, मगर इतने में बापू घूमकर वहां आ पहुंचे। जल्दी से सजावट पूरी की, प्रार्थना करके वापस लौटे।

पैकेट को चित्रित करने में ढाई-तीन घंटे लगे। चीज सुन्दर तैयार हुई है। उगता हुआ चन्द्रमा और चढ़ता सितारा, यह चित्रकारी ढकने पर की है और चारों ओर नीला रंग। मीराबहन को बहुत पसंद आया। अब सामने 'घणुं जीवो'[1] लिखना बाकी है। मेजपोश भी तैयार करना है।

मीराबहन का भी मन अब तैल-चित्र की ओर आकर्षित होने लगा है।

आज वर्षा नहीं हुई। बादल छाये हैं। शायद रात को पानी आये। खेलने का कोर्ट मौरंग वगैरह डालकर पक्का कर रहे हैं, कल से लाग लगी है। अभी पांच-सात दिन लगेंगे, तबतक ऊपर ही खेलना होगा।

बापू के पास अनुक्रमणिका बनाने के लिए कतरनें नहीं हैं। इससे सारा खाली समय अब पढ़ने में देते हैं।

आज भाई ने कुछ कतरनें दीं। एक-दो दिन में डाक्टरसाहब के पास से भी आ जायंगी। तब काम फिर बढ़ जायगा। बापू को इस काम का बोझ नहीं लगता। कहते थे, "यह काम पूरा होगा तब मुझे फिक्र होगी कि कौन-सा दूसरा ऐसा ही काम हाथ में लूं।"

१७ अक्तूबर '४३

आज सुबह मैंने, भाई ने और डा० गिल्डर ने मिलकर बापू की मालिश की।

---

[1] 'जुगजुग जिओ'

मैंने पेट और छाती की, भाई ने टांगों की और डा० गिल्डर ने हाथ, पीठ और सिर की। १।। बजे सब पूरा हुआ।

दोपहर को मैं मेजपोश ही बनाती रही। शाम को डा० गिल्डर ने मनु को कहानी सुनाई। मैं घूमने गई। मैंने डाक्टरसाहब से कहा था कि वह लिखने से रविवार को छुट्टी रखें, ताकि घूमने के समय बापू का मौन न हो।

दोपहर को जोर की वर्षा आई। शाम तक सोती रही। फूल चढ़ाने को अकेली मैं ही गई। भाई कलरनों के काम में लगे रहे। मनु डाक्टरसाहब के पास थी।

घूमते समय मीराबहन बता रही थीं कि इंग्लैण्ड में राजा से मिलने जाने के समय क्या-क्या भेंट देनी चाहिए।

सुबह घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी। बापू ने बताया कि किस प्रकार एक समय आगाखां ने मुसलमानों को पत्र लिखा था कि पाकिस्तान इस्लाम के विरुद्ध और मुसलमानों के लिए शर्म की बात है। बोले, "वह सच्चे हृदय का आग्रह था। आज भले ही वह बदल जाय तो भी उस उद्‌गार की कीमत कम नहीं होती, जैसेकि मैं आज कहने लगूं कि अहिंसा निकम्मी है तो एक समय मैंने जो अहिंसा का सिद्धांत लोगों के सामने रखा था, उस सत्य की कीमत कम नहीं होगी।"

बात सिखों और मुसलमानों के सम्बन्ध पर आई। मुसलमानों का गुरु को मारना, गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों को जीते-जी चिनवा देना, इसपर चर्चा होने लगी। किस प्रकार इस कारण से सिखों के मन में मुसलमानों के प्रति तिरस्कार है, गुरु गोविन्दसिंह के लड़कों को पकड़वाने में ब्राह्मण रसोइये का हाथ था, इसलिए सिख ब्राह्मण के प्रति भी तिरस्कार कर सकते हैं, आदि बातें हुई। मैंने कहा, "पंजाब में तो ब्राह्मण के प्रति मान है ही नहीं, यह कहा जा सकता है।" बापू कहने लगे, "हां, यह है। जब मैं पंजाब गया था तब मुझे तो लगा कि वहां कोई ब्राह्मण है ही नहीं। बात तो यह है कि ब्राह्मण बहुत समय से अपना ब्राह्मणत्व खो बैठे हैं। नहीं तो हिन्दुस्तानी गुलाम बनता ही नहीं।" मैंने पूछा, "क्या आप मानते हैं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका और वह अच्छा नहीं हुआ?" बापू बोले, "मैं मानता ही नहीं कि शंकराचार्य ने बौद्ध धर्म को निकाल फेंका। उसका अच्छे-से-अच्छा भाग उन्होंने ले लिया। आज जितना बौद्ध धर्म हिन्द में है, उतना न चीन में है, न जापान में, न बर्मा में, न लंका में। बुद्ध भगवान अगर आज आयें तो कहेंगे कि बौद्ध धर्म का सत्व तो हिन्दुस्तान में ही है, बाकी तो सब भूसा है।"

मीराबहन कहने लगीं, "ईसा आयें तो कहेंगे कि आज ईसाइयत कहां है ?"

बापू बोले, "हां, ईसा आज जिन्दा हों तो सारे यूरोप को अपनाने से इन्कार करेंगे और कहेंगे कि यूरोप आज ईसाई नहीं है।"

मीराबहन बोलीं, "लेकिन साम्यवादियों को छोड़कर ! ईसा ने कहा है—'मैं भूखा था। तुमने मुझे खाना खिलाया।' किसीने पूछा—'कब ?' उन्होंने कहा—'मेरे इन अदने-से-अदने भाइयों के लिए तुमने जो किया, वह मेरे लिए किया।' और साम्यवादियों ने तो समाज के पिछड़े हुए, दबे हुए लोगों के लिए, बहुत-कुछ किया है।"

बापू ने उत्तर दिया, "हां, मगर साथ ही ईसा साम्यवादियों से यह पूछें कि उन्होंने इतने खून और कत्ल किये, सो क्यों ?"

मीराबहन ने कहा, "नहीं जी, आपकी तरह ईसा जीव-हत्या के विरोधी नहीं थे।"

बापू बोले, "तो क्या तुम उस मत की नहीं हो जो यह मानते हैं कि ईसा ने कहा था—'जो तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसके सामने तुम बायां गाल भी कर दो ?' वह क्या सिर्फ उनके बारह शिष्यों के लिए ही था ?"

मीराबहन इसका उत्तर न दे सकीं। कहने लगीं, "मगर दूसरों ने साम्यवादियों से कहीं अधिक खून बहाया है।"

बापू बोले, "हां, मगर तो भी ईसा उन्हें क्षमा नहीं कर सकते। यह सब ईसा के शिक्षण के साथ मेल नहीं खाता।"

मीराबहन कहने लगीं, "अच्छा बापू, मैं इस बारे में विचार करूंगी।"

१८ अक्तूबर '४३

आज बापू का मौन है। मैंने दिनभर मेजपोश का काम किया। शाम को मीराबहन के साथ पिंग-पौंग खेली। वहां से आकर बापू के लिए दूध ले जाने की तैयारी में थी और फलों का सलाद बना रही थी कि जमादार रघुनाथ को बरामदे में दौड़ते देखा। पूछा तो पता चला कि सरकार का पत्र आया है। जाकर देखा कि 'बाइ-बिल' वाले बापू के उत्तर का जवाब था, खासा लम्बा और जहर से भरा। सरकार ने ढिठाई की हद कर दी। बापू ने पढ़ा तो हँस दिये। सबने पढ़ा और सबको लगा कि आजतक आनेवाले पत्रों में यह पत्र सबसे खराब है। भाई तो तिलमिला उठे। बोले, "साफ जाहिर है कि सरकार बापू को किसी प्रकार उत्तेजित करके उनके

प्राण लेना चाहती है।"

१६ अक्तूबर '४३

सुबह घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "वाइसराय के जवाब में और टॉटेनहम के कलवाले पत्र में कितना फर्क है? वाइसराय ने आपके पत्र का उत्तर देने की तकलीफ उठाई और फिर जो भी कहना था, नरमी के साथ कहा; मगर टॉटेनहम ने तो पूरी कोशिश करके अपने खत में जहर भर दिया है। जीत से इन लोगों का दिमाग़ ठिकाने नहीं रहा।"

बात चली कि जो सचमुच बड़े होते हैं, उनकी जबान ज्यादा मीठी होती है। इसपर बापू कहने लगे, "यह क्यों भूल जाते हो कि उपवास के समय वाइसराय का आखिरी खत इससे भी ज्यादा खराब था।"

बापू के साथ जितना पढ़ती हूं, उतना पढ़ा। बाकी समय मेजपोश के बनाने में लगाया। वह लगभग पूरा हो गया है।

बा की तबीयत अच्छी नहीं है।

शाम को घूमते समय मीराबहन कहने लगीं, "बापू, आप नहीं मानते कि आपको जेल में रखने की इतनी कोशिश ये लोग कर कर रहे हैं, उसका कारण यह नहीं कि आपने कुछ किया या करते, मगर अंग्रेजों को यह अनुकूल है कि आप सब लोगों को वे बन्द रखें, जिससे आपकी गैरहाजिरी में वे लोग हिन्दुस्तान के बारे में अपनी गन्दी चालबाजी को अमल में ला सकें।"

बापू बोले, "इसमें कोई शक नहीं है।"

मीराबहन कहने लगीं, "अगले रोज मैंने हटिंगडन की किताब में पढ़ा था कि हिन्द तीन चौथाई से अधिक अंग्रेज साम्राज्य का भाग है, तब मैं उनकी चालबाजी समझ पाई।"

इसी सिलसिले में आस्ट्रेलिया और अफ्रीका में अंग्रेजों ने क्या-क्या किया, इसपर बात चली। मीराबहन ने कहा, "यह सब न्याययुक्त है, इसे सिद्ध करने के लिए बस बाइबिल के पन्ने खोलने की जरूरत है।" सच है। धर्म को जैसा चाहे वैसा रंग दिया जा सकता है।

२० अक्तूबर '४३

मेजपोश मैंने पूरा किया। कपड़े के बीच में कुछ और भी काढ़ने का इरादा था, मगर बापू नाराज होने लगे, "मेरा तो इतनी मेहनत करने का इरादा ही नहीं

था। कल चारों कोनों पर काम किया, उसके लिए रात को देर से सोई। जो तेरा संकल्प था कि दूसरे कामों में विघ्न न पड़े, उसको तूने भंग किया। मीराबहन ने कहा है, इसलिए तू अभी और करना चाहती है। पीछे दूसरा कोई और कहेगा तो और करने लगेगी। मेरे खयाल में इस तरह काम करनेवाले गिरते हैं।"

मैंने मेजपोश के बीच में जो काढ़ना आरम्भ किया था, उसे उधेड़ डाला। पीछे पैकेट पर चित्र बनाया। बापू ने उसपर 'घणुं जीवो' लिखा। मेरा बारीक ब्रश अच्छा नहीं है। उससे लिखना बापू के लिए कठिन था, इसलिए बापू से कलम की नोक से लिखवाया। रंग तैलरंग थे। साढ़े ग्यारह बजे कलक्टर आया। पीछे खाने के बाद रामायण पढ़ी। थोड़ा सोई, पर नींद नहीं आई। मेजपोश के एक कोने में बापू ने तमिल में, दूसरे कोने में भाई ने उर्दू में, तीसरे कोने में कटेलीसाहब ने गुजराती में डाक्टरसाहब के नाम का पहला अक्षर लिखा। चौथे कोने में मीराबहन ने कल हिन्दी में लिख दिया था।

२१ अक्तूबर '४३

सुबह महादेवभाई की समाधि पर खूब फूल लेकर चढ़ाने गई। जाकर वहां पहले सजावट की। बापू जब आये, तब सब तैयार हो गया था। प्रार्थना करके आई, तब घूमने के सात मिनट बाकी थे। बापू को डर था कि समाधि पर मैं तैयार नहीं होऊंगी, सो ज्यादा समय लेकर आये थे। समाधि से लौटकर वह सात मिनट फिर घूमे।

बापू ने हजामत बनवाई। हम तीनों ने उनकी मालिश की। रसोईघर में कुछ काम किया और अखबार देखा। इतने में दामोदर आया। दोपहर को अखबार देखे। ब्लेड का चाकू बनकर आ गया है, उसपर मैंने रंग लगाया।

रात को पन्द्रह मिनट तक कैरम खेली। डाक्टरसाहब के लिए बनाई हुई सब चीजें मैंने कटेलीसाहब को दे दी हैं, वह डाक्टरसाहब को उनका पार्सल बनाकर देंगे। मीराबहन ने बकरी पर एक कविता लिखी है। कविता के पृष्ठ में ऊपर बकरी का एक चित्र बनाया। एक कैदी से मिट्टी की बकरी बनवाई है, सुन्दर बनी है। दोपहर को बकरियां आवाज कर-करके डाक्टरसाहब को सोने नहीं देतीं, ऐसी शिकायत एक दिन वह करते थे। इसी बात को लेकर मीराबहन ने कविता बनाई है। कुल मिलाकर पांच पार्सल बन गये हैं—बकरी का, पेन्टिंगवाले पैकेट का, मेजपोश का और दो पैकेट सिगार व चाकलेट के।

बापू ने अपने सूत के ६२ तारों का हार उनके लिए बनाया है। हम सब उन्हें फूलों के हार पहनायेंगे।

२२ अक्तूबर '४३

सुबह साढ़े सात बजे हम सब डा० गिल्डर के कमरे में गये। बा ने उन्हें टीका लगाया, हार पहनाया और नारियल वगैरह दिये। बापू ने अपना सूत का हार पहनाया। कटेलीसाहब ने फूलों का हार पहनाकर टीका लगाया। फिर उन्हें खाने के कमरे में ले गये। डाक्टरसाहब ने चाय पीते-पीते सब पार्सलों को खोला। यह सब करते-करते करीब आठ बज गये, बापू भी वहां बैठे थे। पीछे हम सब घूमने गये। लौटकर डाक्टरसाहब बापू की मालिश करने लगे।" मैंने और मीराबहन ने बापू का कमरा फूलों से सजा दिया।

दोपहर को मैंने कैदियों को खाना खिलाया, शाम को उन्हें चाय इत्यादि दी। बाद में नीचे नये कोर्ट में खेलने गये। मीराबहन भी आईं। रात को बा तीन दिन के बाद कैरम खेलने गईं।

बापू ने टॉटेनहम के पत्र का उत्तर लिखा।

२३ अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गये आज ६१ हफ्ते हो गये। काफी फूल तोड़े। बापू के कमरे में जो फूल रखे थे, उन्हें शाम को समाधि पर ले गई।

२४ अक्तूबर '४३

बापू टॉटेनहम के पत्र का उत्तर सुधार रहे हैं। यदि तैयार हो गया तो कल सुबह ही डाक से जायगा।

बापू तीन-चार दिन से बा को गरम-ठण्डा कटि-स्नान देते हैं। आधे घण्टे से बढ़ाते-बढ़ाते एक घण्टे तक ले जायेंगे।

२५ अक्तूबर '४३

बापू का मौन है। मैंने कोई काम नहीं किया। खूब सोई। दिन में बहुत सोई थी। रात को देर तक नहीं सोई। भविष्य के बारे में सोचती रही, सब अंधेरा-सा लगता था।

२६ अक्तूबर '४३

डा० गिल्डर ने जो लिखाया था, उसे दुहराकर उन्हें दिया। बाकी समय रोज का कार्यक्रम चला। 'मार्गोपदेशिका' कल पूरी हो गई थी। आज भण्डारकर की

दूसरी किताब शुरू की। यह ज्यादा कठिन है।

सुबह घूमते समय बापू से भाई ने पूछा, "आपको श्रीनिवास शास्त्री की खुली चिट्ठी कैसी लगी?" बापू ने उत्तर दिया, "भाषा तो अच्छी है, मगर और कुछ नहीं है।"

भाई ने कहा, "उनका तो यही कहना है न कि किसी भी प्रकार आप बाहर निकल आयें!"

बापू बोले, "वह इतनी बात नहीं समझते कि 'किसी भी' तरह बाहर आकर मैं कुछ काम नहीं कर सकता हूं।"

भाई कहने लगे, "शास्त्रीजी के पत्र का उत्तर लिखूं?"

बापू ने कहा, "उत्तर तो एक मिनट में लिखा जा सकता है। यह इतना ही है—'आप क्यों नहीं समझते कि अपनापन खोकर मैं हिन्दुस्तान के काम का न रहूंगा।"

२७ अक्तूबर '४३

आज दोपहर थोड़े-सी डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं। दो-चार रोज में ये सब वापस जानेवाली हैं। इसलिए जितनी पूरी कर सकूं, करना चाहती हूं।

मीराबहन की आंख में कल से दर्द है। शाम को वह पढ़ नहीं सकीं और पिंग-पौंग अधिक समय तक खेलीं। पीछे रिंग खेलने गईं और छः बजे तक खेलती रहीं।

शाम को घूमते समय पाकिस्तान के बारे में मीराबहन ने बात चलाई। बापू कहने लगे, "मैं तुम्हें अपना मत बता चुका हूं। पाकिस्तान नहीं बनेगा; क्योंकि मुसलमान खुद पाकिस्तान लेना नहीं चाहेंगे। अर्थशास्त्र की दृष्टि से वह चल नहीं सकता। इसी कारण वह राजनीति की दृष्टि से भी नहीं चल सकता। जिन्नासाहब उसे देखकर भयातुर हो उठेंगे और उसकी इच्छा नहीं करेंगे।"

२८ अक्तूबर '४३

आज भाई के कमरे की सफाई कराई। वहां अक्सर पानी चला जाता है और भाई को दरवाजे बन्द रखने पड़ते हैं। वहां कुछ बदबू भी आने लगी थी। कमरे से निकाली हुई पुस्तकों की एक सूची बनाने में मेरा, भाई का और मनु का दोपहर का सारा समय गया।

बा की तबीयत बहुत अच्छी है, जलन बिल्कुल नहीं है। बापू ने उन्हें गरम और ठंडे पानी का कटि-स्नान देना आरम्भ किया था, उसीका यह फायदा दीख पड़ रहा है।

: ५६ :

जेल में दूसरी दीवाली तथा अन्य उत्सव

२६ अक्तूबर '४३

आज हम लोग जेल में दूसरी दीवाली मना रहे हैं। जब आये थे, तब कल्पना तक न थी कि इतने अरसे तक रहना होगा।

सुबह महादेवभाई की समाधि पर खूब फूल सजाये। रात को अगर की बत्तियों की दीपावली का आयोजन किया। अगरबत्तियों का 'ॐ' और सलीब अंधेरी रात में बहुत सुन्दर लगते थे। बापू घूम-फिरकर वहां आये। भाई और डा० गिल्डर वहां पहले से ही बत्तियां सजा रहे थे। बत्तियों को जलाने के पहले अंधेरा हो चला था, इसलिए मिट्टी का एक दीपक जलाया। दीवार पर रखने का विचार था, मगर वैसा करने से दीपक बुझ जाता था। फिर, वहां रखने से ॐ की शोभा भी कम होती थी।

दिन में रोज की तरह सब कार्यक्रम चला। शाम के समय कैदियों को खजूर, चाय और पकौड़े दिये।

सुबह प्रार्थना में बापू ने 'और नहीं कुछ काम के, मैं भरोसे अपने राम के'[1] और शाम को 'श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन' वाले भजन गवाये। इस प्रकार दीवाली खत्म हुई।

३० अक्तूबर '४३

महादेवभाई को गये ६२ हफ्ते पूरे हुए। सुबह बेडमिंटन से जरा जल्दी छूटी, इसलिए जाकर समाधि की सजावट के लिए फूल इकट्ठे किये। गेंदे के फूलों का 'ॐ' बनाया। बहुत सुन्दर लगता था। बा भी नीचे आईं, लेकिन लौटते समय थोड़ा थक गईं।

बापू की मालिश के बाद ग्यारह-साढ़े ग्यारह तक मैंने डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं। बापू का बाकी काम भाई ने किया, साढ़े ग्यारह तक अच्छा चला।

आज नया हिन्दू वर्ष आरम्भ होता है। इच्छा थी कि दिन अच्छा निकले, सब काम व्यवस्थित हो, मगर साढ़े ग्यारह के बाद सब बिगड़ा और रात तक बिगड़ता

---

[1] और नहीं कछु काम के, मैं भरोसे अपने राम के—और०
दोऊ अच्छर सब कुल तारे, वारी जाऊं उस नाम पै—और०
तुलसीदास प्रभु राम दयाघन, और देव सब दाम के—और०।

ही चला गया। मेरे खराब दिनों में से एक दिन यह भी कहा जा सकता है।

मनु के सिर में दर्द है, शायद मलेरिया की तैयारी होगी। इसलिए रात में बापू, बा और मनु की व्यवस्था करके साढ़े दस बजे सोई।

३१ अक्तूबर '४३

बाइबिल का शुरू किया हुआ भाग आज पूरा किया है। 'ओल्ड टेस्टामेंट' ('पुराना करारनामा') नामक अध्याय अब आरम्भ किया है।

कर्नल भण्डारी आये। बापू स्नान को चले गये थे, उन्हें मिल नहीं सके।

शाम को खेलते समय मेरी आंख के नीचे कटेलीसाहब की कोहनी ज़ोर से लगी। आंख काली-नीली-सी हो गई।

रात को चन्द्रमा बहुत सुन्दर लगता था। कल बादलों के कारण नहीं दिखाई दिया था।

रात को मैं बापू की मालिश करने के बाद कुछ पढ़ने बैठी, मगर कल रात अच्छी नींद नहीं आई थी।

सुबह पढ़ने के समय नींद लगती थी। कम काम कर पाई।

डा० गिल्डर की डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पूरी पढ़कर जल्दी लौटानी थीं, मगर जल्दी सो गई। साढ़े ग्यारह बजे तक तीन बार नींद में से चिल्लाकर मैं उठी, माताजी को पुकारती थी। बापू बता रहे थे कि तीसरे समय तो इतने करुण-क्रन्दन की आवाज निकली थी कि उनसे सहन नहीं हो सकी।[1]

१ नवम्बर '४३

बापू के काम से छुट्टी लेकर डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पूरी कीं और लौटा दीं। दूसरी नई ले आई। गुरुवार तक सब पूरी करनी हैं। बापू का मौन था, मगर बाइबिल तो उनके साथ पढ़ी। मनु को भी बापू ने सिखाया। पता नहीं 'मार्गोपदेशिका' मौन रहकर कैसे सिखाई होगी!

बा की तबीयत कुछ ढीली है। आज दोपहर को उन्होंने कटि-स्नान नहीं किया। बापू आजकल एक घंटा (३ बजे से ४ बजे तक) बा को स्नान कराने में देते हैं। कल शाम को कहते थे, "मुझे यह बड़ा अच्छा लगता है कि इस अवस्था में मुझे बा

---

[1] बाद में पता चला कि उस दिन मेरी भाभी का, जो मुझे सगी बहन की तरह प्यार करती थीं, आपरेशन हुआ। वह सारा समय मुझे याद करती थीं, पुकारती थीं। आपरेशन बिगड़ने से उसकी मृत्यु हो गई।

की सेवा करने का अवसर मिल गया है। इससे मुझे पूरा संतोष है। बा को भी अच्छा लगता है। बा अब इसमें तन्मय हो गई है, हँसती है और खुलकर बातें भी करती है। बा मेरा समय बचवाना चाहती है, मगर मैंने उसे समझाया है कि मेरे काम की वह चिन्ता न करे। वह हुआ तो क्या और न हुआ तो क्या! बा को स्नान से फायदा भी बहुत है। कहती थी कि जलन तो बरसों से थी, मगर मालूम नहीं अब वह कहां चली गई।"

२ नवम्बर '४३

सुबह मालिश करके पढ़ने को बैठी। बा की तबीयत ज्यादा ढीली है, मगर उन्होंने दोपहर को कटि-स्नान लिया।

शाम को बहुत जोरों से वर्षा आई। खेलने का कोर्ट भीग गया।

बापू को शाम को कुछ थकान लगती थी। वह जवाहरलाल की लिखी पुस्तक 'ग्लिम्पसेज ऑव वर्ल्ड हिस्टरी' की बात करते रहे। कह रहे थे, "मुझे कुछ लिखना हो तो मैं इसी किताब का अनुवाद करूं और वह मुझे अच्छा भी लगे।"

हम लोग बापू के पीछे लगे हैं कि वह अब कतरनों का काम छोड़कर कुछ लिखना शुरू करें। आश्रम का इतिहास, महादेवभाई के संस्मरण, आत्मकथा का दूसरा भाग—सभी कुछ तो लिखना है। अभी 'स्वास्थ्य की चाबी' नामक पुस्तक भी पूरी करनी है।

३ नवम्बर '४३

बापू ने आज महादेवभाई के विषय में अपने संस्मरण लिखने शुरू किये। शाम को पन्द्रह मिनट मिले। उसी समय में लिखना शुरू कर दिया। भाई कह रहे थे, "मुझे बड़ी ईर्ष्या होती है कि इतने थोड़े समय में बापू कैसे लिख सकते हैं।" मैंने कहा, "अगर मालूम हो कि क्या लिखना है तो वह हो सकता है।" भाई बोले, "इतना हृदय भरा होना चाहिए कि बस पानी उंडेलने की तरह अपने-आप कलम चलती जाय।" बापू के साथ तो ऐसा ही होता रहता है।

मैंने डाक्टरी अभ्यास आज काफी किया।

४ नवम्बर '४३

मुझे आज जुकाम ने खूब दबाया है। डाक्टरी अभ्यास ढीला पड़ गया। बापू ने कहा है कि मैं जो कुछ पढ़ूं, उसकी सूची बना लूं। उपयोगी सलाह है। ऐसा ही करना आरम्भ किया है।

५ नवम्बर '४३

खाली समय में डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ीं और मीराबहन के लिए गुड़ बनवाया।

६ नवम्बर '४३

आज'''नहीं आया। बापू का टब वही भरा करता था। मैंने देखभाल की।

जुकाम के कारण बुखार-सा लगता है। शाम को खेलने गई, पर जल्दी लौट आई। मीराबहन नहीं खेल सकीं। पिंग-पौंग की गेंद कल टूट गई थी। अभीतक नई नहीं आई।

७ नवम्बर '४३

मीराबहन को बापू के पास आये १८ साल हो गये। आज १९वां वर्ष आरम्भ हुआ है। बापू के पास आने के दिन को वह अपना जन्म-दिन मानती हैं, इसलिए आज उनका जन्म-दिन मनाया गया। सुबह जब वह साढ़े सात बजे के करीब बापू के पास आईं, तब हम सबने उन्हें हार पहनाये। बापू ने उन्हें अपने सूत का हार पहनाया। मजाक किया जा रहा था कि मीराबहन की १९वीं वर्षगांठ उनकी ५२ साल की उमर में आई है।

मैंने उन्हें अपनी एक बारीक साड़ी दी। बापू को यह बहुत अच्छा लगा। साथ ही खादी का एक तौलिया और बनाया हुआ गुड़ दिया। बापू को भेंटस्वरूप आया हुआ गोदरेज साबुन और ब्राह्मी तेल भी उन्हें दिया।

कैदी पहलवान ने एक गाय, दो बैल, एक बछड़ा, एक बकरी और दो लेले मिट्टी के बनाये थे। वे भी भेंट किये। वे बहुत सुन्दर बने थे, उनपर रोगन लगाया गया था—सब लकड़ी के एक खोखे में बन्द थे। दूसरी चीजें—टीका, दियासलाई, साबुन इत्यादि के पार्सल बनाये थे। बापू के पास ही मीराबहन को नाश्ता और बा को चाय ला दी। पीछे पार्सल खुलने लगे। इसमें सवा आठ बज गये और बापू घूमने चले गये। हम लोग थोड़ा खेले।

डा० गिल्डर ने कार्ल मार्क्स की प्रसिद्ध पुस्तक 'कैपिटल' के दोनों भाग एक साथ मंगाये थे। १२) में मिले। सामान्य कीमत ७) से अधिक नहीं है। किताबों की कीमत स्थिर करने के उद्देश्य से कल-परसों एक सरकारी हुक्मनामा निकला है, ताकि मनमानी कीमतें न ली जा सकें। डा० गिल्डर ने यदि दो दिन बाद पुस्तक खरीदी होती तो पांच रुपये बचते।

८ नवम्बर '४३

बापू को थोड़ा-थोड़ा जुकाम लग रहा है, नाक बहुत टपकती है। दिनभर उनका मौन था। सुनसान-सा लगता था।

बा ने आज तुलसी की शादी मनाई है। तुलसी के ऊपर गन्नों का मण्डप बनाया, हार पहनाये, फूल चढ़ाये, फल की भेंट सामने रखी और रांगोली वगैरह बनाई। सुन्दर दृश्य था।

९ नवम्बर '४३

बापू का जुकाम खूब जोरों पर है। शाम को डा० शाह आये, तब मजाक होने लगा। बापू को पहले-पहल जुकाम मैसूर से लौटने पर हुआ था। मैंने कहा, "आप मैसूर से जुकाम लाये हैं और वह यहां सबको बारी-बारी से दबा रहा है।" वह बोले, "हां, जुकाम बहुत खराब चीज है। मुझे खांसी इस जोर से आती है कि क्या कहूं।"

शाम को बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया कि आपके पत्र पर विचार किया जा रहा है। बापू ने वह पत्र लिखते समय बहुत संयम से काम लिया था। कह रहे थे कि पहले उन्होंने तीखा जवाब देने का विचार किया था, फिर सोचा कि व्यंग में उत्तर दें, मगर अन्त में मीठे-से-मीठा उत्तर देने का निश्चय किया। वेवल नया आया है, उसको पहले-ही-पहल व्यंगभरा तीखा पत्र भेजना ठीक नहीं है। इसलिए सरकार के पत्र में भरे हुए जहर को पी गये और शांतचित्त होकर उत्तर लिखा।

अबकी बार सरकार का अपमानभरा दो शब्दों का उत्तर नहीं आया, नहीं तो लिखा होता कि सरकार ने आपको जो लिखा है, उससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है।

आज बा ने तुलसी-विवाह का प्रसाद नारियल, शक्कर, अनार और गन्ना कैदियों और सिपाहियों में बांटे।

: ६० :

भाभी का आपरेशन और मृत्यु

१० नवम्बर '४३

सुबह बापू ने अण्डी का तेल लिया, खूब असर हुआ। मालिश के समय तबीयत अच्छी थी। स्नानघर में जब स्नान कर रहे थे तो मुझे थके-से लगे। मैं चश्मा वगैरह धोने लगी। लौटकर देखा तो पैर धो रहे थे, मगर बहुत धीमे-धीमे। टब में स्नान कर रहे थे, तभी मैंने पूछा था—"आप थके-से लगते हैं।" कहने लगे, "नहीं, यों ही सुस्ता रहा हूं।" तब मैं दूसरा काम करने लगी। साबुन में कपड़े भिगोने लगी। इतने में देखा तो बापू तौलिये से मेरी तरफ इशारा कर रहे थे। बाद में बताते थे कि उन्होंने मुझे बुलाया भी था, मगर मैंने सुन नहीं पाया। मैंने पूछा, "क्या चक्कर आता है?" कहने लगे, "नहीं, तू मेरी देह को पोंछ दे।" मैंने कहा, "बैठ जाइये।" मगर बापू ने इन्कार कर दिया। मैंने देखा कि उनके पैर कुछ लड़खड़ा रहे थे, इसलिए मैंने उनकी कमर में दोनों हाथ डालकर उन्हें उसी पाटले पर बिठा दिया, जिसपर वह खड़े थे।

कहने लगे, "पाखाने की हाजत है।" मैंने पूछा, "कमोड यहीं लाकर रख दूं?" उन्होंने इन्कार किया, पर बाद में मान गये। उन्हें कमोड पर बिठाकर सहारा दिये खड़ी रही। बापू को जम्हाई बहुत आ रही थी। वह सफेद होते जा रहे थे। नाड़ी की गति बहुत धीमी पड़ गई थी। मैंने भाई को बुलाया। उन्होंने आकर बाल्टी वगैरह हटाकर जगह खाली की। गादी बिछाई। पूछा, "डा० गिल्डर को बुलाऊं?" बापू ने इन्कार किया, मगर भाई कहने लगे कि वह बुरा मानेंगे कि उन्हें खबर नहीं दी। डा० गिल्डर बुलाये गए। बापू को गादी पर सुलाया गया। दो-तीन मिनट में वह बिल्कुल ठीक हो गये। रक्त-चाप मापा तो १३५।८२ निकला। इतने में बा आईं। पूछने लगीं, "यह क्या किया?" मन में उनके चिन्ता थी। ऊपर से हँसने का प्रयत्न कर रही थीं। बापू ने उत्तर दिया, "अब तो कुछ भी नहीं।" पन्द्रह-बीस मिनट बाद वह उठकर बाहर आये। थोड़ा-सा सोये, फिर उठकर खाना खाया। दोपहर को खूब सोये, पर कमजोरी दिनभर रही।

मैं दोपहर को एक मिनट भी नहीं सो सकी। बापू बाहर सोने गये थे। मैं भी बाहर ही थी। मुझे लगा कि शायद उदासी के कारण नींद नहीं आती। दोपहर को

मैं बाहर से उठकर अन्दर आई। भाई ने मुझे आते ही मोहनलालभाई का पत्र दिया। मेरी भाभी शकुन्तला के ऑपरेशन के बारे में था। अस्पताल में दाखिल करा दिया गया था, तो भी समय पर इतनी ढील हुई कि जान के लाले पड़ गये। खत में लिखा था कि शरीर में नाड़ी में रक्त देने की तैयारी कर रहे थे, मगर उसके बिना ही तबीयत सुधर रही थी। अभी खतरे से बाहर नहीं है। मुझे, हो सके तो, पैरोल पर आने के लिए लिखा था। सरकार भेजेगी तो चली जाऊंगी। बाकी इस सरकार से भीख कौन मांगे! बाद में दो-तीन तार लगातार आये थे। पहला पांच तारीख को आया। उसी दिन मिल जाता तो भी मैं आठवीं तक पहुंच जाती, पर आठवीं को पहुंचने में फायदा ही क्या था!

११ नवम्बर '४३

कल रात मैं बारह बजे तक सो नहीं सकी। माताजी, शकुन्तला और मोहनलाल की याद आती रही। सुबह प्रार्थना के बाद भी नहीं सो सकी। बापू के उठने पर उनसे पूछकर मोहनलाल और डा० हरजगीर को तार किया कि शकुन्तला की खबर तार से भेजो। सरकार ने मोहनलाल का तार सीधा भेजने की इजाजत दी, मगर डा० हरजगीर को बम्बई सरकार की मार्फत तार गया। बाद में पता चला कि तार गया ही नहीं। सरकार का हुक्म है कि रिश्तेदारों को ही तार-खत भेजा जा सकता है, इसपर भी डाक्टर को तार नहीं कर सकते।

बापू की तबीयत अच्छी है। कल से बा को दोपहर का स्नान देना शुरू किया है।

१२ नवम्बर '४३

मेरे तार का उत्तर तो नहीं आया, पर मोहनलाल का भेजा हुआ ४ नवम्बर का तार आज दोपहर को मिला। मोहर से पता लगा कि यह तार यहां ५ नवम्बर को आ गया था, मगर यहां से बम्बई और बम्बई से यहां फिर आया है। इसमें शकुन्तला के आपरेशन की खबर है, उसकी हालत नाजुक है। बहुत बुरा लगा। अप्रैल में इसी तरह माताजी की बीमारी के समय खबर देर से मिली थी। पर सौभाग्य से माताजी अच्छी हो गई थीं। लेकिन शकुन्तला का न जाने क्या हाल हुआ हो। शाम को विचार आया कि वहां सब कुशल ही होगी, नहीं तो अभीतक खबर जरूर आती।

१३ नवम्बर '४३

सुबह खबर मिली कि ६ नवम्बर को मोहनलाल का एक दूसरा तार आया था, किन्तु बम्बई भेज दिया गया है। बस, इस खबर से तो होश गुम हो गये। तार में क्या लिखा होगा ? शकुन्तला है भी या नहीं ! दिन भर सख्त बेचैनी रही।

बम्बई सरकार को पत्र लिखा कि इस तरह की खबर देने में इतनी ढील करना समझ से बाहर की बात है, पर सरकार को क्या पड़ी थी ? उसकी निगाह में कैदी इन्सान थोड़े ही था ! दिनभर उत्तर की राह देखती रही, पर कोई उत्तर न आया।

१४ नवम्बर '४३

आज भी तार की राह देखते-देखते दिन गया। मैं बड़ी बेचैन हो गई। बापू कहने लगे, "जब हमें दूसरा तार, जो बम्बई गया है, मिलेगा, तभी पता चलेगा। मेरी समझ में पहले तार का उत्तर ही वह तार है—भला हो या बुरा। मैं मानता हूं कि बुरा नहीं हो सकता। मृत्यु होती तो देवदास जरूर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में उसकी फोटो देता और उसके बारे में कुछ लिखता। शकुन्तला स्वयं भी इतनी योग्यता रखती थी कि उसकी मृत्यु अखबार में दी जाय।" मुझे डर लगा कि पहले तार में आया था—'हालत खतरनाक है' तो दूसरे में होगा—'चल बसी।' बापू बोले, "ऐसा हो सकता है, मगर मैं मानता हूं कि तार अच्छा ही होगा। डाक्टर ने ही शायद तार किया हो कि शकुन्तला की हालत नाजुक होने के कारण तुझे पैरोल मिलने में आसानी हो। शायद उनसे सरकार की तरफ से कहा गया हो कि वह अर्जी देंगे, तभी पैरोल मिल सकती है। ऐसी हालत में डाक्टर तुझे तार करेंगे।" मैंने यह बात मानने की कोशिश तो की, पर दिल बुझा रहा। भाई भी कहने लगे, "तुम व्यर्थ ही चिन्ता करती हो, मुझे तो निराशा नहीं लगती।" बाद में मैं सोचने लगी, "शायद शकुन्तला अच्छी हो रही होगी और मोहनलाल अधिक कुछ कहना न चाहता हो। शायद वह सोचता हो कि चलो, इसी बहाने पैरोल पर मैं वहां हो आऊंगी।"

शाम की प्रार्थना में 'हरि तुम हरो जन की भीर' गाकर 'डूबते गजराज राख्यो' ज्योंही गाया कि मेरा गला रुंधने लगा।

१५ नवम्बर '४३

आज बापू का मौन था। मैं दोपहर खाना खाकर सो गई। एक बजे उठी। बापू के पैरों में मालिश करते समय मैंने पूछा, "क्या श्री कटेली वगैरह खाना खा

गये हैं ?" बापू को मालूम न था। आज तो कोई उत्तर आयेगा ही, ऐसी आशा थी। बम्बई से ही तार आयेगा। जो आदमी खाना लेकर आता है, वही डाक भी लाता है, इसलिए मुझे लगा कि श्री कटेली जब खाने आयेंगे, तब कुछ खबर लायेंगे। सोचती थी कि बापू के पैरों की मालिश करके खाने के कमरे में देखने जाऊंगी कि प्लेटें उठ गई हैं कि नहीं। इतने में श्री कटेली को बरामदे में से जाते देखा। मेरा माथा ठनका, लगा कि कुछ खराब खबर है। इसलिए मुझे तार देना नहीं चाहते, भाई को देकर आये हैं। मन में हुआ कि बापू से कहूं। दौड़कर भाई से पूछूं। मगर अपने-आपको रोका। बापू सोने की तैयारी में हैं। उनकी नींद क्यों बिगाड़ूं ? बाद में पूछ आऊंगी। और शायद श्री कटेली उधर किसी दूसरे ही काम से गये हों। यह विचार चल ही रहा था कि भाई ने तार लाकर बापू के हाथ में दिया। मैंने कहा, "बोलते नहीं हो, खराब खबर है न ?" बापू ने सिर हिलाकर 'हां' कहा। मैंने पूछा, "शकुन्तला गई ?" बापू ने सिर हिलाया, "हां।" डर तो था ही, पर आशा बंधी थी कि वह तो अच्छी ही होगी। मगर वह कहां से ? वह तो सोमवार, ८ नवम्बर को ही चल बसी थी। मैं उठकर बगीचे में एकान्त में जा बैठी। दुःख के मारे फटते हुए हृदय से सोचती रही कि माताजी और मोहनलाल अब क्या करेंगे। ऐसी देवी जगत में कहां मिल सकती है ? रिश्तेदार क्या, मित्रवर्ग क्या, जिस किसीको मिली, उसीका मन हर लिया। उसकी हँसती मूर्ति मेरे सामने नाचने लगी। उसकी मीठी आवाज मेरे कानों में गूंजने लगी।

भाई आकर मुझे वापस ले गये। उठकर कातना शुरू किया। पढ़ना तो असम्भव था ही। आंखों से अश्रु-धारा बह चली। बापू ने आकर यह देखा तो उन्होंने अपना मौनव्रत तोड़ना चाहा, पर मैंने ऐसा न करने को कहा। उन्होंने सब कार्यक्रम चालू रखने को कहा, मगर मेरे सामने तो शकुन्तला थी।

फिर विचार चले। रविवार के रोज डाक्टर लोग छुट्टी की धुन में होंगे और शकुन्तला वहांपर इतनी अशक्त हो गई होगी कि आपरेशन सहन न कर सकी होगी।

मीराबहन आईं। सहानुभूति दिखाने लगीं, "तुम वहां होतीं तो उसका तुम्हारे प्रति विश्वास ही उसे बड़ी मदद करता।" पर मैं वहां होती कैसे ? सरकार की तरफ से तार देने में इतनी ढील हुई थी कि भाभी ८ तारीख को ही गुजर गई और मुझे १५ तारीख को उसकी मृत्यु का तार मिला।

हम घर में तीन बहनें हैं—तीनों डाक्टर। और शकुन्तला के काम एक भी न आई ! मोहन ने प्रकाश या सत्या को बुला लिया होता ! मुझे भी तो उसने आपरेशन करवाने के बाद ही लिखा। नतीजा यह हुआ कि खबर मुझे उसके आपरेशन के समय नहीं, बल्कि मृत्यु की मिली।

शकुन्तला की बच्ची का खयाल आने लगा, बेचारी बनी रहे। मीराबहन कहने लगीं, "अब तुम्हें बच्ची की देखभाल करनी चाहिए।" मैंने कहा, "वहां के लोग तो करते ही होंगे।" वह कहने लगीं, "हां, मगर तुम यहां से भी मदद कर सकती हो।"

शाम को प्रार्थना में 'मंगल मंदिर खोलो' गाया। 'जीवन वन अति वेगे वट व्यूं' गाते समय आवाज जवाब दे गई। मनु को किताब दी कि गीत को चलाये, पर वह भी रोने लगी। मुश्किल-से किसी तरह भजन पूरा किया। रामायण की एक चौपाई पढ़कर बन्द कर दिया।

डायरी लिखकर सोने को गई, मगर नींद कहां ! आंखों के आगे शकुन्तला थी। माताजी और मोहन का विचार आने लगा। शव को अस्पताल से कहां ले गये होंगे ? श्मशान कहां ढूंढ़ा होगा ? शाम को पौने पांच बजे मृत्यु हुई तो शव को कब जलाया होगा ? और वह नन्हीं-सी बच्ची ! उसका अब क्या होगा ? मोहन का क्या होगा ? माताजी की पौत्र पाने की इच्छा का क्या होगा ? बिना शकुन्तला के तो मैं उस घर की कल्पना ही नहीं कर सकती।

१६ नवम्बर '४३

सुबह एक-एक अंग दुखता था। सिर में सख्त चोट खाये हुए इन्सान की-सी मेरी स्थिति हो रही थी। कल शाम को बच्ची के विषय में पूछने को तार तैयार किया था, आज सुबह वह भेजा। दोपहर को मोहनलाल का तार आया कि तुम कहो तो बच्ची को तुम्हारे पास ही भेज दूं, सरकार को इस बारे में लिखता हूं, इत्यादि। सरकार आने दे तो मैं उसे खुशी से रखूं, मगर सरकार कभी आने नहीं देगी। मनु तो उछल पड़ी कि बेबी आये तो बड़ा अच्छा लगेगा, मगर इस बात का विचार करना भी बेकार है। मोहनलाल तार से उत्तर मांगते हैं। तार लिखा—"तार मिला। इजाजत मिलनी मुमकिन नहीं लगती। मेरी सलाह है कि दूसरी दो बहनें बारी-बारी से माताजी के पास रहें, जबतक कि बच्ची खतरे से बाहर नहीं हो जाती।"

बापू कह रहे थे, "तू पैरोल की अर्जी देकर चली जा।" मैंने कहा, "उससे क्या फायदा? महीने-डेढ़ महीने में बेबी बड़ी और समझदार तो हो नहीं जायगी। फिर मेरे साथ हिल जायगी तो मेरे यहां आने के समय उसे और भी कष्ट होगा। माताजी को दुबारा सदमा होगा। इससे तो यही अच्छा कि मेरी दो चचेरी बहनें बारी-बारी से महीने-महीने की या अधिक छुट्टी लेकर वहां रहें। पीछे बेबी जब सफर करने लायक हो जाय तब उसे और माताजी को अपने साथ ले जायं।"

तार कल जायगा, पीछे पत्र लिखना होगा। बापू ने कल शाम सरकार को भजने के लिए एक पत्र तैयार किया था। उसमें मुझे तार देर से मिलने के बारे में शिकायत थी। कहा गया था कि उनके साथ रहनेवालों को कैदियों के साधारण हकों से भी वंचित रखा जाता है, यह ठीक नहीं। मिसाल के तौर पर डा० गिल्डर की बीमार पत्नी अथवा उनकी लड़की उनसे मिलने नहीं आ सकतीं। ऐसे ही बा के और मनु के बारे में लिखा था। शाम के चार बजे वह पत्र गया। सामान्यतः यहां की डाक रजिस्ट्री से जाती है, मगर रजिस्ट्री का समय बीत गया था, इसलिए बापू के कहने पर पत्र बिना रजिस्ट्री के ही गया। कल उसकी नकल रजिस्ट्री द्वारा भेजी जायगी। बाद को प्रार्थना के समय बापू डा० गिल्डर से मजाक कर रहे थे, "डाक्टर, मुलाकातों के लिए तैयार रहना।" मुझे लगा कि या तो मुलाकाती लोग आयेंगे या जिन्हें यहां की बन्दिशें नहीं चाहिए, उन्हें बिस्तरा गोल करने का हुक्म आयेगा।

१७ नवम्बर '४३

आज दोपहर को बा के नाम छगनलालभाई का पत्र आया। 'शकुन्तला का ऑपरेशन करना पड़ा। अब चिन्ता का कोई कारण नहीं है।' हां, अब चिन्ता काहे की! अब तो शकुंतला भगवान की गोद में सुरक्षित है। पीछे पत्र में लिखा था कि उन्होंने बा के पत्र से समझा था कि मनु और सुशीला को सरकार ने छोड़ दिया है, मगर वे दोनों अपनी खुशी से बा और बापू की सेवा कर रही हैं। बा को यह खटका। उन्होंने बापू से जाकर तार तैयार कराया कि यह बात गलत है। सिर्फ मनु को ही छोड़ने की बात थी, सुशीला को नहीं। मैंने समझाया कि तार की क्या आवश्यकता है, मगर वह नहीं मानीं।

सवेरे बहुत धुन्ध थी। सामने का दरवाजा भी नहीं दिखाई देता था।

१८ नवम्बर '४३

आज सुबह आकाश साफ है। खासी गरमी पड़ती है। श्री कटेली के घुटने में दर्द है, कल से खेलते नहीं। कल सुबह मैं और मनु दोनों अकेले ही खेले थे, आज नहीं खेले।

दिन अधिकांश में बेकार गया। रात को भी कुछ नहीं पढ़ा।

१९ नवम्बर '४३

दिन बहुत खराब गया। गीताजी में रोज पढ़ती हूं कि मृत्यु का स्वरूप क्या है, मगर जब उस ज्ञान पर अमल करने का अवसर आता है तब असफल सिद्ध होती हूं। बीते वर्षों में महीनों तक महादेवभाई की मूर्ति आंखों के सामने नाचती रहती थी, इस वर्ष शकुन्तला की है। प्रार्थना के लिए आंखें बन्द करती हूं, पर शकुंतला सामने आ खड़ी होती है—वही मधुर मुस्कान, वही हँसता हुआ चेहरा। रात को सोने के लिए आंख बन्द करती हूं, तब फिर वही हाल होता है। मेरे जैसे, जिन्हें ईश्वर ने इतना सब दिया है, असन्तुष्ट रहते हैं, मगर वह लड़की हमेशा सन्तुष्ट थी। निराशा-जैसी चीज़ उसके पास थी ही नहीं। वह चली गई और हम यातना भुगतने को रह गये।

सरकार पर गुस्सा आता है, जिसने हमें बन्द करके इस तरह प्रियजनों का वियोग दिखाया—जब तकतन में प्राण हैं, म सरकार से लड़ती ही रहूंगी। वह खतम होगी या हम !

२० नवम्बर '४३

शकुन्तला की बातें होती रहीं। बेबी बच जाय तो बड़ी बात है। मां ने इसी बच्ची के कारण प्राण दिये।

महादेवभाई की समाधि पर सुबह खूब फूल सजाये। अब तो कुछ फूल रहे ही नहीं। सब सूख गये, इसलिए फूलों के अभाव में मीराबहन पूजा में भी अधिकतर पत्तों से ही काम चलाती हैं।

महादेवभाई की समाधि पर प्रार्थना करते समय उनकी मूर्त्ति के साथ-साथ शकुंतला की मूर्त्ति भी रहती है।

२१ नवम्बर '४३

मीराबहन को थोड़ा-सा बुखार है। जुकाम अच्छा हो जाने पर भी अभीतक उनका गला खराब है। हाथ में भी बहुत दर्द होता है। मृत्यु की खबर ने भी उन

पर असर किया है।

यहां बैठे-बैठे जानती थी कि शकुंतला वहां आराम से होगी, इसलिए संतोष था, मगर एक तार ने दुनिया ही बदल दी है। वह अलौकिक लड़की हमारे पास क्यों रहती ? हम उसके लायक नहीं थे।

२२-२३ नवम्बर '४३

दो दिन तक डायरी नहीं लिखी। कुछ करने को मन नहीं होता। बापू कल मुझसे कह रहे थे, "मुझे नहीं मालूम था कि तुझमें इतना राग है।" मैंने कहा, "मैंने कभी किसीपर ऐसा असर नहीं डाला कि मुझमें वैराग्य है।" बापू कहने लगे, "वैराग्य भले न हो, पर उसमें और राग में फर्क है।" जो भी हो, मैं शकुंतला को भूल नहीं सकती।

लक्ष्मी भाभी ने बा को पत्र भेजा है। शकुंतला की मृत्यु का भी थोड़ा हवाला था—'बहुत दुख और वेदना उसने सहन की; मगर मृत्यु के एक घंटा पहले तक सबको पहचानती थी। शव को नहला-धुलाकर और लाल चुनरी ओढ़ाकर लाये तो नई दुलहन-सी लगती थी।' वह नई दुलहन भगवान की थी, उसीके पास चली गई।

लक्ष्मी भाभी का एक तार भी आया है। उससे 'बेबी अच्छी है' यह जानकर संतोष हुआ। ईश्वर उसे दीर्घायु करे!

मीराबहन ज्यादा बीमार हैं, बुखार अधिक था, गले की गांठें फूली हैं। उनमें से गले में अन्दर मवाद निकलता देखा जा सकता है।

२४ नवम्बर '४३

'कांग्रेस की जिम्मेदारी' पैम्फलेट के सम्बन्ध में बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। कोरा जवाब था—'आपने आठ अगस्तवाले प्रस्ताव के बारे में मत नहीं बदला। कांग्रेस कार्यकारिणी ने भी अपना रुख नहीं बदला। सो आपको मिलने देने में कोई फायदा नहीं।' बम्बई सरकार को बापू ने जो पत्र लिखा था, उसका भी जवाब आया कि आगे से तार जल्दी मिला करेंगे। डा० गिल्डर की मुलाकात के बारे में उनकी लड़की ने भी लिखा है। उसी सिलसिले में बापू का पत्र दिल्ली भेजा गया है।

आज मीराबहन को १०२ डिगरी तक बुखार रहा। सल्फा शुरू किया तो उतर गया। कमजोरी बाकी है।

२५ नवम्बर '४३

मीराबहन के खून की परीक्षा करने के लिए डाक्टर को बुलाया, लेकिन वह परीक्षा करने का सामान नहीं लाया था। वह केवल खून की स्लाइडें[1] ले गया। हम तो स्लाइडें पहले ही भेज चुके थे। गले के मवाद का फोआ बनाकर भी परीक्षा के लिए ले गया।

आज मीराबहन की तबीयत थोड़ी अच्छी रही, बुखार ९९.४ से ऊपर नहीं गया। सारी दोपहरी उनकी सेवा में गई। एनीमा दिया और स्पंज भी किया। यहां डाक्टरी और नर्सिंग दोनों करने पड़ते हैं।

२६ नवम्बर '४३

प्रकाश का पत्र आया है। उसे भी मृत्यु का ही तार मिला था। बेचारी तुरंत आई। माताजी को बीस-बीस दस्त आते थे, तीन दिन के इलाज से कुछ फायदा हुआ। बेबी को अस्पताल से लाई। उसे हरे दस्त आ रहे थे, मुंह में दाने भी थे; पर अब अच्छी है।

२७ नवम्बर '४३

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है, यानी शनिवार। सुबह जितने फूल इकट्ठे कर सकी, किये। उनमें से मीराबहन की पूजा के लिए भी ले आई—बाल-कृष्ण को महादेव का प्रसाद मिला।

२८ नवम्बर '४३

सोचती हूं कि मृत्यु से इतना क्या घबड़ाना, जबकि सभीको आगे-पीछे एक-न-एक दिन जाना ही है! मगर यह विचार तो पीछा ही नहीं छोड़ता कि शकुंतला अब कभी नहीं मिलेगी।

बेबी का विचार आता था। भण्डारी आये तो मैंने पूछा, "मेरे भाई ने मुझे तार किया था कि वह बेबी को मेरे पास रखने के लिए अर्जी दे रहे हैं। उसका क्या हुआ?" उन्होंने बताया, "अर्जी मेरे पास आई थी। सरकार को भेजी है।" मालूम नहीं, सरकार इजाजत देगी भी या नहीं।

२९ नवम्बर '४३

आज बापू का मौन है। डा० गिल्डर को आज मुलाकात का अवसर मिलेगा भंडारी कल कह गये थे। डाक्टरसाहब जल्दी तैयार हुए, मगर गाड़ी करीब साढ़े

[1] परीक्षा के लिए खून की बूंद शीशे की पटरी पर फैलाकर ले जाते हैं।

बारह बजे आई। दो सिपाही साथ गये। साढ़े तीन बजे डाक्टरसाहब वापस आये। अभी एक मुलाकात मिली है, दूसरी मुलाकातों की बात चल रही है। दो हफ्ते में पता चलेगा। डा० गिल्डर बहुत खुश हैं।

बापू ने मोहनलाल के पत्र-तार आदि दोपहर को मांगे। रात के समय सरकार को भेजने के लिए एक पत्र तैयार किया। बेबी के विषय में सरकार को मोहनलाल ने लिखा है। सरकार स्वीकार करे तो अच्छा है, नहीं तो मुझे पेरोल पर छोड़ दे। हां, इससे कुछ दिक्कतें अवश्य बढ़ जायंगी। बापू और बा को कष्ट होगा, वह कष्ट सहन कर लेंगे। मुझे लगता है, बापू एक व्यक्ति के बारे में इन लोगों को क्यों लिखें? उनके पास बहुत बड़े काम पड़े हैं, मगर बापू ने लिखा ही। वह छोटी चीजों से ही बड़ी चीजों पर आते हैं।

मेरी चचेरी बहन सत्या का पोस्टकार्ड पंद्रह दिन बाद आया।

: ६१ :

बा के बारे में चिंता

बा की तबीयत परसों से अच्छी नहीं है। कल स्नानघर में उन्हें इतनी कमजोरी लगने लगी कि उन्होंने मुझे आवाज दी। मैं जाकर उन्हें बाहर लाई। अपने आप उठने की हिम्मत न होती थी।

३० नवम्बर '४३

कल रात बापू ने सरकार को लिखा था कि वह मोहनलाल की अर्जी के अनुसार बेबी को न भेज सके तो सुशीला को पेरोल पर छोड़े। मुझे लगा कि बापू तो पेरोल के खिलाफ हैं, फिर मेरे लिए क्यों लिखें? बापू इस बात पर विचार कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में मैंने भाई से भी बात की।

आज इस पत्र ने ही दिन का सारा समय ले लिया।

बा का दम खूब फूल रहा था। रात को आक्सीजन मंगाकर रखी; क्योंकि बा की हालत किसी भी समय बिगड़ सकती है।

१ दिसम्बर '४३

आज मेरे बहुत रोकने पर भी बापू का पत्र गया। मैंने और डा० गिल्डर ने

सरकार को पत्र लिखा कि बा की हालत अच्छी नहीं है। उन्हें नियमित मुलाकात मिलनी चाहिए। वह दवारूप काम करेगी। कच्ची नकल मैंने तैयार की थी, जिसे रात में टाइप कर लिया।

२ दिसम्बर '४३

मालिश के समय बापू को उस पत्र के बारे में बताया, जो कल बा के सम्बन्ध में तैयार किया था। डा० गिल्डर से उन्होंने कहा, "अगर यह पत्र भेजना डाक्टरों को अपना धर्म लगे तो भेजें।" डा० गिल्डर को लगता था कि अभी तो बापू ने उनके और मेरे बारे में भी सरकार को लिखा है। एक और मांग करना शायद ठीक न हो। मुझे लगता था कि भेजना हो तो जल्दी ही भेजना चाहिए; क्योंकि आज बा की तबीयत इतनी बिगड़ गई है और दो हफ्ते बाद अच्छी भी हो सकती है। दूसरी बार बिगड़े तबतक की राह न देखनी चाहिए। अगर मुलाकात बा के लिए दवारूप है, तो उसमें देर क्यों की जाय! बा हर बार खतरे से बच ही जायंगी, यह मानने का कोई कारण नहीं। आखिर डा० गिल्डर कहने लगे, "हम डा० शाह से सब हाल कह देंगे। वह अपने-आप लिखें तो ज्यादा अच्छा होगा।" डा० शाह आज आये नहीं, सो कुछ कर नहीं सके।

बा की तबीयत कुछ ज्यादा ढीली है। उनमें स्नान करने की शक्ति नहीं है, इसलिए उन्होंने स्पंज ही किया।

बापू बहुत विचार में दीखते हैं, बा की चिन्ता में हैं।

३ दिसम्बर '४३

आज बा की तबीयत कुछ अच्छी है। डा० शाह आकर कहने लगे कि उन्होंने बा को छोड़ने के लिए लिखा है। डा० गिल्डर ने बताया कि वह छूटना तो चाहती नहीं हैं। मुलाकात की सुविधा के लिए लिखना चाहिए था जिससे बा का मन कुछ शान्त हो। शायद डा० शाह इस बारे में लिखेंगे। मीराबहन के बारे में भी डा० शाह ने लिखा है कि या तो उन्हें अस्पताल में भेजा जाय या उन्हें छोड़ दिया जाय। यहां उनका इलाज नहीं हो सकता।

मीराबहन बापू से कुछ सवाल पूछना चाहती हैं, ताकि एकाएक छूटने का हुक्म आ जाये तो उन्हें कठिनाई न आये।

४ दिसम्बर '४३

आज शनिवार है, महादेवभाई की मृत्यु का दिन। आजकल फूल नहीं हैं।

सिपाही ने थोड़े फूल इकट्ठे किये, उन्हींकी सहायता से समाधि की सजावट की।

कल रात में बा की तबीयत बहुत खराब थी। दम के कारण बहुत कम सो सकीं। हम लोग भी कम सो पाये। सवेरे दातुन वगैरह उन्हें खाट पर ही कराई।

मैंने शाम को बाइबिल के समय भी संस्कृत पढ़ना शुरू किया है, ताकि अगर पेरोल पर जाना हो तो संस्कृत की दोनों किताबें घर से ही पक्की कर लाऊं, परंतु शंका है कि सरकार जाने की इजाजत दे ही देगी।

तीन दिन पहले हम शाम को खेलकर लौट रहे थे तो सीढ़ी के पास कैना (अकीक) के फूलों में एक छोटा-सा पक्षी बैठा फड़फड़ा रहा था। भाई ने पकड़ लिया। कहने लगे कि मीराबहन को दिखायेंगे। ऊपर लाये। मीराबहन ने कहा, "यह शकरखोरा का बच्चा है। इसे दो-चार दिन रक्खें और जब इसमें उड़ने की शक्ति आ जाय तब जाने दें।" बापू की छोटी-सी रद्दी की टोकरी थी। उसमें पत्ते बिछाकर, बीच में एक दातुन आरपार रखी। उसपर उसे बिठाया। टोकरी के मुंह पर वह पकड़ा बांध देती हैं कि कहीं बिल्ली न खा जाय और हवा भी अन्दर जाती रहे। उसे शहद खिलाती हैं; पानी पिलाती हैं। बापू के पास जब बाइबिल पढ़ने आती हैं तो उसे साथ लाती हैं। दरख्त की एक टहनी वहां रख देती हैं और जंगल का-सा वातावरण पक्षी के लिए बन जाता है। फूल लेने जाती हैं तो उसे साथ ले जाती हैं। वह धूप में उछलता-कूदता रहता है। पहले दिन मीराबहन को डर लगा था कि वह बीमार-सा लगता है। मगर धूप में खूब उछलने लगा, इसलिए उनको लगता है कि एक-दो दिन में वह उड़ जायगा।

बा की तबीयत अच्छी नहीं। दोपहर को स्पंज किया। बाद में उन्होंने थोड़ी नींद ली। आज वह इतना घबरा रही थीं कि एक बार कहने लगीं, "बस, मैं अब चार-पांच घंटे की मेहमान और हूं।" मैंने कहलाया, "नहीं बा, अभी तो चार-पांच वर्ष हैं।"

शाम को वह कुछ स्वस्थ हुईं। सुबह कटेलीसाहब पूछ गये थे कि बा किस-किस-से मिलना चाहती हैं। बापू ने लम्बी सूची दी और कहा कि याद आयेंगे तो और नाम बतायेंगे।

रात में नींद कम आई। बापू भी कम सोये। बापू का रक्तचाप ज्यादा है।

५ दिसम्बर '४३

भंडारी और शाह आये। खबर मिली कि सरकार ने देवदास और राम-

दासभाई को आने के लिए तार दिया है। रामदासभाई ने टेलीफोन किया कि नीमू भाभी आज दोपहर तक पहुंचेगी। वह खुद और बच्चे नहीं आ सके। वह लोग सरकार के तार से घबरा गये होंगे।

बा की तबीयत आज अच्छी है। रात में नींद अच्छी आई। मुलाकात की आशा से उनकी तबीयत में काफी सुधार है। नीमू भाभी तो शाम को सवा छः बजे आईं। एक घंटे की मुलाकात थी। खाली बा और बापू को वहां रहने की इजाजत थी। श्री कटेली सारा समय हाजिर रहे।

पता लगा है कि देवदासभाई कल आ रहे हैं।

कल रात में बड़ी सरदी थी। सुबह मीराबहन ने देखा कि पक्षी रात की सर्दी में खत्म होगया था। बहुत बुरा लगा। मीराबहन ने गड्ढा खोदकर उसे दबाया। वहां एक पत्थर स्मृति के तौर पर रखा और उसपर कुछ लिखा भी।

कल से शाम को कटेलीसाहब ने खेलना शुरू किया है, अच्छा लगता है।

कल मीराबहन ने बापू से कुछ प्रश्न पूछे थे। आखिरी प्रश्न समाजवाद पर था। बापू कहने लगे, "इस प्रयोग की ओर आदमी उदासीनता नहीं रख सकता और रखनी भी नहीं चाहिए।

"मुझे इसमें बहुत रस आ रहा है। चीन और रूस का इतिहास पढ़ा। इसमें शक नहीं कि ये लोग जनता की सेवा के लिए ही सबकुछ कर रहे हैं, मगर उनका पाया हिंसा में है। हिंसा के बिना वे रह नहीं सकते और हिंसा हमेशा टिक नहीं सकती। इसलिए यह प्रयोग भी अन्त में निष्फल होगा, ऐसा मुझे लगता है। आज तक हिंसा ऊपर के वर्गवालों के हाथ में थी, अब वह जनता के हाथ में आई है। यह कोई नहीं कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।"

मीराबहन ने चीन की बात चलाई। कहने लगीं, "हिंसा के प्रश्न को छोड़कर अगर देखा जाय तो समाजवादियों में और आपके शिक्षण में ज्यादा अन्तर नहीं।" बापू ने कहा, "मशीन का प्रचार भी तो है।" मीराबहन बोलीं, "मगर वह इतना बुरा नहीं। उसे आसानी से फेंका जा सकता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?" बापू कहने लगे, "मुझे तो उससे उलटा लगता है। उद्योग का, मशीन का, प्रचार हिंसा की जड़ है और उसे निकालना आसान नहीं। उसे निकालना शायद हिंसा को निकालने से भी ज्यादा कठिन है।

मीराबहन ने कहा, "मगर वे लोग जल्दी ही समझ जायंगे कि इसपर चलना

मूर्खता है। रूस की आबादी कम है, सो वे तो सदियों अपनी मूर्खता समझे बिना इस रास्ते जा सकते हैं, मगर चीन की आबादी ज्यादा है। वे लोग जल्दी ही समझ जायंगे कि उद्योग बढ़ाने में उनकी बरबादी है।"

६ दिसम्बर '४३

आज बापू का मौन है। बापू ने बा की मुलाकातों के बारे में एक पत्र सरकार को लिखा, मगर बाद में उसे न भेजने का निश्चय हुआ। डा० शाह आये। कहने लगे, "श्रीमती रामदास को आने की इजाजत फिर मिलनी चाहिए।" वह भंडारी से भी यही कहकर आये होंगे। रात को खबर मिली कि उन्हें आने की इजाजत मिलेगी।

दोपहर को अखबार में देखा कि देवदासभाई आज दोपहर पूना पहुंच रहे हैं। शाम को हम लोग खाने की तैयारी में थे कि पता चला कि देवदासभाई आये हैं। बा ने तो कह दिया कि कल आयें, आज बापू का मौन है। मगर बापू ने अभी आने को कहा। कारण पूछा तो बापू ने लिखा, "अगर बा को रात में कुछ हो जाय तो?" मौन छोड़ने के बाद रात को समझाने लगे, "महादेव ने जाते समय क्या एक घंटे का भी नोटिस दिया था? वह तो बीमार नहीं था, मगर बा तो, हम सब जानते हैं, किसी भी दिन बगैर नोटिस दिये जा सकती है। कहीं कुछ हो जाय तो हमेशा के लिए मन में अफसोस रह जाय। देवदास तो बा से मिलने आ रहा है, मुझसे नहीं। मेरे मौन के कारण उसे रोकना ठीक न था।"

देवदासभाई आये। उन्होंने बापू को शकुन्तला का सब हाल सुनाया। बाद में माताजी, मोहनलाल और बेबी के समाचार बताये। बेबी अच्छी है, सब लोग हिम्मत रख रहे हैं।

सभी कहते हैं कि अगर मैं शकुंतला के पास रहती तो शायद उसके लिए कुछ कर पाती, मगर सच तो यह है कि जब किसीको जाना होता है तो बचने के साधन भगवान गायब कर देता है। बुद्धि भी ऐसी ही उत्पन्न करता है कि बचने की सूरत ही न रहे, इसलिए बार-बार बिसूरने से लाभ क्या?

माताजी को मेरे पत्रों से बड़ा संतोष मिला, यह बताकर देवदासभाई ने बापू से कहा कि सुशीला के पत्र माताजी के लिए ताकत की दवा (टानिक) का काम करेंगे, इसलिए बापू को चाहिए कि वह मुझे नियमित रूप से पत्र लिखने का आदेश दें। दुख हुआ। लिख सकूं तो मुझे भी बड़ा अच्छा लगे, मगर जब एक बार निश्चय

कर लिया कि नहीं लिखना है तो निश्चय किस तरह तोड़ा जाय ? सरकार भी कहेगी कि देख लिये ये लड़नेवाले, जरा-सी तकलीफ हुई नहीं कि फिसले !

बापू ने मुझसे आवश्यकता पड़ने पर पत्र लिखने को कहा। मुलाकात में बापू और बा को ही रहने की इजाजत थी। देवदासभाई अभी बैठे ही थे कि इतने में बा की छाती में दर्द अधिक होने लगा। बापू ने देवदासभाई को भेज दिया। बाद में हम लोग बा की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहे।

बा की तबीयत कुछ अच्छी दीख पड़ी, इसलिए हम लोग घूमने आये और प्रार्थना के बाद काता। प्रार्थना भीतर हुई; क्योंकि कल से बा ने अन्दर सोना शुरू किया है। बा के पास रात के १२ बजे तक बैठी और उन्हें सुलाकर सोई।

७ दिसम्बर '४३

आज से बापू ने सुबह घूमने जाने का समय आठ बजे का कर दिया है; क्योंकि सुबह सरदी बहुत पड़ती है। धूप में घूमना अच्छा लगता है। शायद कल से सवा आठ पर ही निकलें।

डा० गिल्डर वगैरह ने सुबह का नाश्ता छोड़ दिया है, साढ़े दस-ग्यारह बजे खाना खाते हैं। रसोईघर का सिपाही बीमार है, इसलिए कल से मैं ही रोटी बनाती हूं। एक दूसरे कैदी को भी सिखाया है, शायद वह अब बना लेगा।

नीमू भाभी साढ़े तीन बजे आईं और घंटे भर बाद गईं। पीछे देवदासभाई आये। बापू को वह सब समाचार सुनाते रहे। माताजी ने सरकार को अरजी दी थी कि वह या तो मुझे छोड़े या उन्हें मेरे पास रखे। यह न हो सके तो महीने में कम-से-कम एक मुलाकात की व्यवस्था करे। पंद्रह दिन बाद जवाब आया कि इन बातों में से एक भी नहीं हो सकती।

मैंने जब यह सुना तो बड़ा अफसोस हुआ। बापू को भी अच्छा नहीं लगा। उनका मत है कि मुझे छुड़वाने की कोशिश करना फिजूल है। सत्याग्रही को यह शोभा नहीं देता। जो करने या मरने की बात कहकर आते हैं, उन्हें तो सरकार छोड़े तो भी वे फिर जेल जाने की तैयारी किये रहते हैं।

बेबी के विषय में देवदासभाई ने बापू को बताया कि उससे तो क्या माताजी और क्या मोहन—सबका मन लगा हुआ है, इसलिए उसको वहां से हटाने की कोशिश ही नहीं करनी चाहिए। इसपर बापू विचार करने लगे। सोचने लगे कि जो खत लिखा था, वह वापस ले लेना चाहिए या नहीं। पैरोल बेबी के लिए मांगी

थी, उसके लिए आवश्यकता न हो तो मेरी या मेरी माताजी की खुशी के कारण पैरोल मांगना ठीक नहीं। मुझे भी लगा कि बापू का जो पत्र गया है, उससे किसी तरह का गोलमाल नहीं होना चाहिए। माताजी की खातिर पैरोल मांगें तो वह एक स्वतंत्र विषय होगा, बेबी के साथ वह विषय मिलाना नहीं चाहिए। घूमते समय यही चर्चा चली।

देवदासभाई के जाने के बाद बापू को दूध वगैरह दिया, पीछे घूमने गये। प्रार्थना के बाद काता।

८ दिसम्बर '४३

सब सोच-विचारकर बापू ने बेबी के यहां आने या मेरे पैरोल पर छोड़े जाने के बारे में अपनी मांग को वापस न लेने का निश्चय किया था, मगर देवदासभाई ने यह पसन्द नहीं किया। उन्हें लगता था कि बेबी का क्या भरोसा है। फिर माताजी व मोहनलाल की बड़ी समस्या के कारण भी यह बात इष्ट थी। मैंने बापू से कहा कि उन्हें जो ठीक लगे वह करें, मगर बापू को लगा कि देवदास ने जो खबर दी है, उसका आश्रय लेकर कुछ भी करना हो तो उसकी सम्मति से ही करना चाहिए।

किशोरलालभाई की तबीयत जेल में बहुत खराब रहती है। वजन ७५ पौण्ड हो गया है। इस बारे में बात करते-करते बापू कहने लगे, "मैंने तो किशोरलाल को खोने की पूरी तैयारी कर ली है। मुझे यह सुनकर जरा भी आश्चर्य न होगा कि किशोरलाल महादेव की तरह नागपुर जेल में ही चल बसा। अहिंसक लड़ाई दूसरी तरह चल नहीं सकती।"

इस परिस्थिति में भी सत्याग्रहियों को जेल से छुड़ाने के लिए आंदोलन की बात करते हुए बापू कहने लगे, "व्यक्तियों के लिए ऐसा करना ठीक नहीं है, खासकर सरकारी अमलदारों से मिलकर उनसे ऐसी मांग करना तो एकदम अनुचित है। जो आदमी इन लोगों के पास कुछ भी मांगने जाता है, वह कुछ खोकर आता है। अपना तो खोता ही है, मगर हिन्दुस्तान का भी कुछ खोकर आता है। खुला सार्वजनिक आंदोलन लोग कर सकते हैं, मगर वह तो ऐसे सबके लिए होगा, एक अकेले व्यक्ति के लिए नहीं।"

बा की तबीयत अच्छी नहीं है। दिन में तो कुछ ठीक रही, मगर शाम को ज्यादा बिगड़ी। पेट में तकलीफ थी। भाई बाहर से उन्हें उठाकर अन्दर लाये। शाम को हम लोग घूमने गये थे, उस समय भी बा को कुछ घबराहट हुई थी। मुझे

बुलवाया था, तभी मैंने निश्चय किया था कि जबतक बा कुछ अच्छी न हों, उन्हें एक मिनट भी अकेले नहीं छोड़ूंगी।

बापू का रक्तचाप कभी-कभी ज्यादा रहता है, सामान्यः सुबह १६२/१०४। उन्हें बा की काफी चिंता रहती है। कहते थे, "मुझे आशा थी कि बा को साथ लेकर बाहर जाऊंगा, मगर अब वह आशा छूट गई है।"

बा को 'स्ट्रोफैन्थस' नाम की दवा देना बन्द कर दिया है। आज नीमू भाभी और देवदासभाई बा से मिलने आये। सबका स्वागत करने और विदा करने का काम बापू को करना पड़ता है; क्योंकि दूसरों को तो उन्हें मिलने की इजाजत नहीं है।

९ दिसम्बर '४३

आज रामीबहन, मनु मशरूवाला, बा के भाई और देवदासभाई बा से मिलने आये। दोनों बहनें साथ आईं, फिर मामा और देवदासभाई आये। सुना है कि जब बापू ने मनु की पीठ जोर से ठोंकी, तब रामीबहन की बच्ची इतना डर गई कि सारा समय रोती रही। मनु की बच्ची मजे में रही। मनु ने बा को 'कहं के पथिक, कहं कीन्ह है गमनवां', गाकर सुनाया और उसकी बच्ची ने नाचकर बताया। दूर से मीराबहन गाना सुन रही थीं। बोलीं, "असल गाना ग्रामोफोनी गाने से कितना अच्छा लगता है।"

बा को आज 'डेरीफिलिन' के दस बूंद दिये। उससे छाती का दर्द बैठा। बारह-एक बजे के बाद उनका दिन अच्छा गया और रात को नींद भी अच्छी आई।

१० दिसम्बर '४३

आज बा के साथ देवदासभाई की आखिरी मुलाकात है। अगर सरकार ने इजाजत दी तो लक्ष्मी भाभी और बच्चों को लेकर देवदासभाई फिर आयेंगे।

बा की तबीयत दिन भर अच्छी रही। रात में बहुत अच्छी नींद आई। खांसी के मिक्सचर के अलावा उन्हें कोई दवा नहीं दी। ऐसा सुधार चालू रहेगा तो बा बहुत जल्दी अच्छी हो जायंगी। बापू को इसमें शक है। वह बहुत कम आशा करते हैं।

शाम को भंडारी आये, कल से छुट्टी पर जा रहे हैं। वह देवदासभाई से बात करके चले गये। श्री कटेली मुलाकात की रखवाली करने में लगे थे, इसलिए भंडारी को लेने या विदा करने नहीं गये।

११ दिसम्बर '४३

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनकी समाधि पर प्रार्थना करते समय शकुंतला की याद हो आती है।

रोज डाक की राह देखा करती हूं। न घर से ही कोई खबर आती है, न बापू के पत्र का सरकारी जवाब ही आता है।

बा की तबीयत दिनभर अच्छी रही।

पेट के ऑपरेशन के बाद जो पलंग इस्तेमाल किया जाता है, वह आ गया है और वह कल से बा के काम में लाया जायगा।

मनु की तबीयत अच्छी नहीं और भाई की भी शाम को बिगड़ी, इसलिए बापू और बा की मालिश मैंने ही की। सोने को जाते-जाते ग्यारह बज गये।

१२ दिसम्बर '४३

बा को आज नये पलंग पर लिटाया। सुबह के समय वह अच्छी थीं; पर दोपहर में ढीली पड़ गईं। शाम को फिर अच्छी दिखती थीं।

सुबह कर्नल भंडारी की जगह कर्नल अडवानी आये। महादेवभाई की मृत्यु के दिन उन्हें देखा था। आज फिर देखा।

आज मैंने सर फीरोजशाह मेहता की जीवनी पढ़ डाली। डाक्टरी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने का इरादा फिर किया है। सब्जी पीसने की बिजली की मशीन का शीशा मुझसे फूट गया।

१३ दिसम्बर '४३

भाई की तबीयत कल रात से ढीली थी, आज दोपहर उन्हें बुखार आ गया और १०३.२ डिगरी तक पहुंच गया। शाम से उन्होंने कुनैन लेना आरम्भ किया है। हमेशा शेखी बघारते रहते थे—"मुझे मलेरिया नहीं हो सकता।" मच्छरदानी लगाकर तो सोते नहीं थे, इसीलिए मलेरिया का आक्रमण हुआ है। कुनैन के असर से रात में केवल एक घंटा सोये।

बापू का मौन है। मेरे विषय में जो पत्र उन्होंने सरकार को लिखा था, उसका सरकारी उत्तर दोपहर को आया। सरकार ने मुझे पैरोल पर छोड़ने की या बेबी को यहां रखने की, दोनों प्रार्थनाओं को नामंजूर कर दिया है।

मोहनलाल का लम्बा पत्र आया है। लगता है कि डाक्टरों ने शकुंतला के मामले में बड़ी ढील और लापरवाही से काम लिया। मगर ईश्वर की इच्छा के

बिना क्या हो सकता है ?

एक के बाद एक प्रियजनों की मृत्यु सरकार के कारण हो रही है।

बापू ने लिखा, "मुझे तू लड़ने दे तो मैं पेट भरकर लड़ूं।" परन्तु यह बात ठीक नहीं लगी। बापू लड़ाई में उतरें तो कहां जाकर अटकें, इसका पता नहीं चल सकता।

बा अच्छी हैं। रात को खूब सोईं।

१४ दिसम्बर '४३

बापू ने सरकार के पत्र का उत्तर लिखा और भाई ने उसे टाइप किया। पत्र का भाव यह है कि सरकार की कार्रवाई अनुचित हुई है।

भाई को ९९.६ डिगरी बुखार है, मगर काम तो वह करते ही रहे।

कल मैंने अपना ऊनी शाल उधेड़ डाला, बेबी के लिए उसमें की ऊन से कपड़े बनाकर भेजूंगी। यहां नई ऊन तो कहां से मिल सकती है ?

कल से हम लोगों ने बेडमिंटन खेलना आरम्भ किया है। रात में बा कम सोईं।

१५ दिसम्बर '४३

भाई को आज भी ९९.६ डिगरी बुखार आया। शाम के वक्त वह खेलना चाहते थे, मगर डा० गिल्डर ने मना कर दिया। तब बापू के साथ घूमने निकले।

कल से डा० गिल्डर ने बांह के अन्दर की ओर की नाड़ी के लकवे पर (पैरेलेसिस ऑव रेडियल नर्व) पर लेख लिखवाना शुरू किया है।

डा० शाह आज कह रहे थे कि बा के लिए किसी भी चीज की आवश्यकता हो तो बता दें। मैंने कुछ दवाएं लिखकर दीं और एक पहियेदार कुर्सी के लिए भी कहा। बाहर धूप में से बा को गुसलखाने ले जाने के लिए कुर्सी पर उठाकर लाना पड़ता है। तीन आदमी—मैं, भाई और मनु उठाते हैं। बा को यह अच्छा नहीं लगता। पहियेदार कुर्सी में एक ही आदमी ला सकेगा।

आज मीराबहन बापू से कहने लगीं कि वह 'जंगली जानवर और अहिंसा' पर प्रकाश डालें। बापू बोले, "मेरी अहिंसा मनुष्य तक ही जाती है। जंगली जानवरों को खोज-खोजकर मारने की सलाह नहीं दूंगा, मगर शेर या चीता कहीं हमला करे तो उसे वहां के लोग मारें। उसके लिए तालीम लें तो मैं रोकूंगा नहीं। जितनी जल्दी हो सके, कम-से-कम तकलीफ देकर उसे मारना चाहिए।"

सवाल उठा कि यह तालीम सभी लोग लें या एक व्यक्ति ? और एक व्यक्ति

जो चुना जाय, वह शारीरिक बल के आधार पर या अन्य गुणों के कारण ? बापू ने कहा, "अगर एक को ही चुनना हो तो वह सार्वजनिक मत से चुना जाना चाहिए, शारीरिक बल के कारण नहीं, मगर लोगों का वह कितना विश्वासपात्र है, इस माप से। मुझे लगता है कि यह तालीम गांव के सब लोग लें तो अच्छा है, नहीं तो एक आदमी दूसरों पर बाद में सत्ता जमा सकता है। वह ऐसा न भी करे तो भी लोगों के मन में ऐसा भाव पैदा तो होगा कि वह तालीमयाफ्ता आदमी उनसे ऊंचा स्थान रखता है। यह उचित नहीं है।

बा रात को खूब अच्छी तरह सोईं।

१६ दिसम्बर '४३

बा आज रात को देर से सोईं। मैं बारह बजे तक उनके पास थी। मनु मेरे जाने के बाद बा के ही पास सो गई। भाई के सिर में दर्द था, पर बाद में अच्छा हो गया और वह रात के बारह बजे तक पढ़ते रहे।

१७ दिसम्बर '४३

सुबह बा आठ बजे के बाद उठीं।

मैंने मीराबहन के साथ साढ़े सात से पौने आठ तक सवेरे कसरत करना शुरू किया है।

मंगलवार से शाम को बाइबिल का पढ़ना फिर शुरू किया है। मीराबहन 'किंग डेविड' तक पढ़ गईं और मैं 'लेविटिक्स' तक पहुंची हूं। आशा है, उन्हें शीघ्र ही पकड़ लूंगी।

बा के लिए पहियेदार कुर्सी आ गई है। शाम को बा को उसपर बिठाकर घुमाया। उन्हें बहुत अच्छा लगा।

बा की तबीयत कुछ ठीक थी। शाम को एकाएक धड़कन का दौरा हो गया, लेकिन गर्दन की एक विशेष नस को दबाने से चन्द मिनटों में ही बन्द हो गया। उसके बाद वह निर्बल हो गईं और दस बजे रात को सो गईं। अचानक दो बजे उन्हें बड़ी खांसी आई—करीब घण्टे भर परेशान करती रही, पीछे चार बजे सो पाईं। शाम को क्विनीडीन की गोली दी थी। ताकत के लिए 'ईस्टन सिरप' देती हूं; क्योंकि बा शक्ति की दवा मांगती हैं।

भाई के साथ मैंने रात में उमर खय्याम की रुबाइयां पढ़ीं।

१८ दिसम्बर '४३

दिन में बा ने करीब पांच घण्टे की अच्छी नींद ली। शाम को डा० शाह और अडवानी उनसे मजाक करने लगे, "सरकार का हुक्म है कि रात में अच्छी तरह सोना।" रात को खबर मिली कि देवदासभाई कल तीन-साढ़े तीन के बीच आयेंगे। आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है, परन्तु फूल बहुत कम होने के कारण सजावट न हो सकी।

१९ दिसम्बर '४३

कल रात में बा एक बजे के करीब सो पाईं। मैं उनके पास अढ़ाई-तीन बजे तक बैठी रही। बाद में सो गई। परिणामस्वरूप सुबह की प्रार्थना में आज भाग नहीं ले सकी।

भाई प्रार्थना के बाद दिनभर खाली समय में मोहन और तारा[1] के लिए तस्वीरों का एक अलबम तैयार करते रहे। वे लोग लगभग साढ़े तीन बजे आये। अल्बम की किताब साढ़े चार बजे तैयार हुई। मैंने भी दो-एक घण्टे उसमें दिये। मनु ने थोड़ा समय दिया। भाई ने तैयार करके बापू को दिखाई, बापू ने उसे पसन्द किया।

देवदासभाई के बच्चों के स्वास्थ्य को देखकर बापू को असन्तोष हुआ। शाम को घूमते समय कहने लगे, "मैं अपने-आपको आदर्श पिता मानता हूं। मेरे किसी भी बच्चे का शरीर ऐसा सूखा न था। सभी बालक हमेशा स्वस्थ रहे हैं। ये बच्चे तो दुष्काल में से आये लगते हैं।"

बा की तबीयत अच्छी रही। अडवानी सुबह आये तो कहते थे कि देवदासभाई को एक ही मुलाकात मिलेगी; परन्तु बम्बई सरकार द्वारा उन्हें सूचित किया गया था कि मुलाकातें अधिक मिलेंगी।

२० दिसम्बर '४३

आज श्री कटेली सरकार की ओर से आकर पूछने लगे कि बा को हृदय का रोग कब से है। मैंने बताया कि खांसी तो बरसों की है और उससे हृदय का कमजोर हो जाना भी स्वाभाविक है। मगर हृदय में अब का-सा दर्द पहले नहीं था, दर्द तो पिछले साल सितम्बर से शुरू हुआ है। कटेलीसाहब ने डा० गिल्डर से भी यही

[1] देवदासभाई के बच्चे

बात पूछी। गिल्डर को भी हृदय में कभी कुछ मिला न था। बाद में बा को आनेवाले हृदय के दौरों की तारीख भी उन्होंने मुझसे मांगी।

कल रात में नींद न आने के कारण बा के कहने पर मैं उन्हें अपनी खाट पर ले गई। वहां भी उन्हें नींद नहीं आई। पास ही होने के कारण बापू भी नहीं सो सके। डेढ़ बजे उन्हें अन्दर लाई। मैं दो बजे के बाद और बा तीन बजे के बाद सोई।

दो बजे से मनु बा के पास बैठी और उनके पास ही सो गई। पांच बजे उठी तब अपनी खाट पर गई। वे दोनों सुबह आठ बजे तक सोती रहीं।

आज भी दिन में देवदासभाई लक्ष्मीबहन और बच्चों समेत आये। बापू का मौन रहा।

२१ दिसम्बर '४३

कल रात में बा को बहुत कम नींद आई, दम का दौरा-सा था। कुछ नाराज भी थीं, इसलिए किसीको पास भी नहीं बैठने दिया। रोज एक-दो बजे से आठ बजे तक सोती थीं, मगर आज तो सुबह ६ बजे से ही सोईं और आठ बजे उठ गईं। कुल मिलाकर मुश्किल से दो-तीन घंटे सोई होंगी। हम लोग भी नहीं सो पाये। देवदासभाई सपरिवार आज फिर आये। कल सुबह लक्ष्मीबहन और बच्चे दिल्ली चले जायंगे।

डा० शाह से मैंने कहा कि बा के लिए वे नर्स भेजें। सरकार ने किसी औरत रिश्तेदार को बुला लेने की इजाजत दी है।

बा कनु को बुलाना चाहती हैं, प्रभावती का नाम भी दिया है। वह कहती हैं, "एक कनु आये तो काफी है। मुझे और किसीकी जरूरत नहीं है।"

शाम को बहुत दिनों बाद मीराबहन खेलने आईं और बेडमिंटन खेलीं।

२२ दिसम्बर '४३

कल रात को मैंने बा के पास रातभर रहने का निश्चय किया था। बा को इससे संतोष रहेगा। बापू की खाट मीराबहन के कमरे के नजदीक ले गये। मेरी खाट बा ने दरवाजे के सामने रखवाई और मनु भी उनके नजदीक ही भीतर सोई। मगर मैं तो बा के पास ही रही।

खांसी के डर से बा ने आज भी नींद की दवा मांगी। मैंने बारह बजे उन्हें एक गोली दी, ग्रामोफोन बजाकर सुनाया। बा एक बजे सो गईं, मगर सोते में आवाज

बहुत करती थीं। आवाज सुनकर बापू डेढ़ बजे के करीब आये। भाई और डा० गिल्डर भी आये। डाक्टरसाहब हम तीनों को खड़ा देखकर डर-से गये, मगर मैंने बताया कि चिंता का कोई कारण नहीं है। बा शाम को कुर्सी पर बैठकर हम लोगों का खेलना देखने आई और रात को कैरम भी देखा। दिन में उन्होंने कुछ नींद भी ली और कल से आज का दिन अच्छा गया।

कल वेवल का भाषण पढ़ने के बाद मीराबहन ने यहां से जल्दी जा सकने की आशा छोड़ दी है।

२३ दिसम्बर '४३

कल रात बा कैरम का खेल देखते-देखते अपनी सब बीमारी भूल गईं और सुबह आठ बजे तक सोती रहीं। दिन में कभी-कभी दर्द बताती थीं, मगर नींद अच्छी आई।

दोपहर मणिलालभाई का पत्र आया। पत्र के साथ ही उनके बच्चों के चित्र भी थे। बा चित्र देखकर खुश हुईं।

बा ने दिन में दो बार एनीमा लिया। रात को वह आज फिर कैरम देखने गईं। दस बजे मैं उन्हें ले गई तो उन्होंने मुझे एक खेल खेलने को बिठा लिया। वह मानती हैं कि मीराबहन जीतें तो उनकी जीत है; क्योंकि वह खेल में उनकी साथिन रही हैं। मीराबहन अकेली खेलती हैं तो हार जाती हैं। मनु को सर्दी लगती थी सो बा की मालिश वगैरह मैंने की।

२४ दिसम्बर '४३

बा सुबह सवा आठ के बाद उठीं। मनु और मैं बारी-बारी से खेलने जाती हैं। एक बा के पास रहती है तो दूसरी खेलने जाती है।

मेरी और मनु की रीढ़ की हड्डी सीधी नहीं। उसके लिए बापू ने लोहे का एक डण्डा लटकने के लिए लगवाया है, इसलिए उसपर थोड़ी देर लटकी; पर शरीर जरा-सा अकड़ गया।

दिन में बा को दर्द की कुछ शिकायत रही। शाम के समय कहने लगीं कि कैरम देखने नहीं आऊंगी, इसलिए डा० गिल्डर वगैरह बा की खाट के पास ही कैरम ले आये। बा ध्यान लगाकर दस बजे तक खेल देखती रहीं। अपना सब दर्द भूल गईं। बाद में मालिश करवाकर सोईं।

दोपहर को मुझे कुछ-कुछ हरारत-सी लगती थी, रात को ठीक हो गई।

कल से मैंने शाम को रामायण या संस्कृत और दोपहर में बाइबिल पढ़ने का निश्चय किया है।

: ६२ :

अहिंसा में विचार-शुद्धि

२५ दिसम्बर '४३

आज बड़ा दिन है। मगर यहां तो सब दिन समान हैं। महादेवभाई की मृत्यु का दिन भी आज ही है। सुबह थोड़े-से चम्पा के फूल लाई थी, इसलिए सजावट सुन्दर हो गई।

खबर मिली है कि देवदासभाई कल आयेंगे। अडवानी और शाह शाम को आये और बोले कि सरकार ने कनु और प्रभावती को यहां भेजने से इन्कार कर दिया है। किसी दूसरे को बुलाने के लिए वह कहने लगे। तब बापू ने कहा, "मैं सरकार को बार-बार 'न' कहने का मौका नहीं देना चाहता। मैं उसका दृष्टिबिन्दु भी जानता हूं। उसे लगता है कि यह आदमी दगाबाज है, जापान के साथ मिला है, इसलिए वह मेरी हरएक चीज को अविश्वास की नजर से देखती है।"

किसीने पूछा कि उपवास के समय सरकार ने कनु वगैरह को क्यों आने दिया था? बापू बोले, "तब उसे आशा थी कि यह आदमी बचेगा नहीं, मगर अब वह देखती है कि इसके हाथों अभी तो उसे और तकलीफ मिलनी है। इसीलिए वह ऐसा कर रही है।"

शाम को बा की मालिश मैंने की। मेरा मन कुछ खिन्न हो रहा है। भविष्य की बात सोचती हूं। लगता है कि हम लोग जब छोटी-छोटी बातों से ही घबरा जाते हैं तो आजादी लाने में क्या सहयोग देंगे? अगर वे काम करने की योग्यता नहीं रखते तो यहां बैठकर देश का क्या भला करेंगे? जिस लड़ाई के सिपाही ऐसे हों, उसका अन्त कहां जाकर होगा, कौन जानता है।

सुबह बात करते-करते मैंने बापू से पूछा, "जितना प्रचार आपके और कांग्रेस के विरुद्ध इस समय हो रहा है और हुआ है, वैसा कभी पहले भी हुआ था? इतना प्रभाव विरोधी लोग कभी डाल सके हैं क्या?" बापू बोले, "आजतक भी वे कोई

प्रभाव नहीं डाल पाये। मुझे तो निराशा नहीं होती है; क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे मन में जरा भी असत्य या हिंसा नहीं है, इसलिए इस लड़ाई का परिणाम बुरा नहीं हो सकता। अगर मैं अपने मन में असत्य या हिंसा पाऊं तो दूसरी बात है। तब तो मैं खुद ही कांप उठूंगा।"

मैंने पूछा, "जिन्ना के भाषण से स्पष्ट है कि वह चाहता है कि आप किसी भी प्रकार जेल से न निकलें। मुस्लिम लीग भी आपकी गैर-हाजिरी में अपना प्रभाव जमा रही है। इसका क्या किया जाय?" बापू कहने लगे, "जिन्ना तो चाहता है कि जबतक कांग्रेस जेल में है, वह अपना सिक्का जमा ले, जितना कर सकता है करवा ले; मगर मैं नहीं मानता कि वह सचमुच प्रभाव डाल रहा है। हिन्दुओं पर तो उसका कुछ भी असर नहीं। मुसलमानों पर भी मेरी दृष्टि से बहुत कम है; क्योंकि वह सत्य-पथ पर नहीं है।"

२६ दिसम्बर '४३

आज बा का दिन बहुत अच्छा गया। स्नान के बाद दो ग्रेन एस्प्रीन दी थी, उससे दर्द वगैरह शान्त रहा। दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आये। बापू ने जल्दी भेज दिया ताकि दूसरे भी आ सकें। उनके बाद जमनादासभाई आये। बाद में सामलदासभाई सपरिवार आये। उनके बाद रामदासभाई और कनु। सबको बापू ने जल्दी-जल्दी विदा किया। तो भी साढ़े छः के बाद ही घूमने निकल सके।

श्री कटेली का सारा समय मुलाकातों की निगरानी में ही जाता है। चाय तक नहीं पी सकते। खाने को भी देर हो जाती है।

२७ दिसम्बर '४३

आज दोपहर को देवदासभाई, रामदासभाई और कनु आये। कनु शायद बुधवार को फिर मिलने आयेगा।

बापू आज चाहते थे कि हम लोग खेलने जायं, इसलिए मुलाकातों के तांते को पांच बजे खत्म करना चाहते थे। सबके जाने के बाद हम लोग साढ़े पांच से छः बजे तक खेले।

आज बा के लिए पागलखाने से डा० शाह ने एक आया भेजी है। बेचारी हमारे साथ कैद हो गई है। अब घर नहीं जा सकेगी। घर में उसके तीन बच्चे हैं, वे नानी के पास रहेंगे।

२८ दिसम्बर '४३

आज बा के पेट में कुछ गड़बड़ रही।

दोपहर को देवदासभाई सपरिवार आये।

शाम को मोहनलाल का पत्र आया—शकुन्तला का अन्तिम वर्णन किया है। दुःखद है।

२४ तारीख के दिन बापू जब घूमकर आये थे तो मुझे बता रहे थे कि मीराबहन को उन्होंने समझाया कि अहिंसा में विचार-शुद्धि अनिवार्य बुनियादी चीज है। मीराबहन ने उस दिन की बातों का सार लिख लिया था, जो इस प्रकार है—"अहिंसा में सबसे आवश्यक चीज है सही विचार-धारा। प्रश्न उठ सकता है कि सही विचार क्या है? सही ध्यान और सही योजना बनाना ही सही विचार नहीं है, वह है मूल तत्त्वों की ठीक पहचान। मिसाल के तौर पर, 'ईश्वर है' यह सही विचार है; 'ईश्वर नहीं है'—यह गलत विचार है। 'मुझे ईमानदार होना चाहिए'—यह सही विचार है; 'बेईमानी भी कर सकता हूं' यह गलत विचार है। जब आदमी को सही विचार की आदत पड़ जाती है तो सही कार्य अपने-आप होता है, मानो कि परिस्थिति के कारण हम कार्य तो सही करते हैं, पर सही विचार की आदत नहीं। तब उस सही कार्य का उतना असर नहीं होगा और करनेवाले को सच्चे-सही कार्य का फल नहीं मिलेगा। सही विचार के बिना अहिंसा में श्रद्धा या निष्ठा की जीवित शक्ति नहीं होगी और जिसे सही विचार की आदत नहीं, वह चाहे भी तो ऐन मौके पर उसका कार्य सही नहीं हो सकता।"

२९-३१ दिसम्बर '४३

बा की तबीयत साधारण है, मगर नींद अच्छी ले लेती हैं। बुध (२९) के दिन कनु, धीरू, मनु के पिताजी, उसकी बहन व कुछ और लोग आये। कनु ने बा को दो भजन सुनाये।

शुक्रवार (३१) को मीराबहन ने मेरे तैल-रंग लेकर बापू के लिए लकड़ी के तख्ते पर 'हे राम' और 'ॐ' बनाया। सुन्दर बना।

१-६ जनवरी १९४४

इस हफ्ते में सामलदास गांधी, केशुभाई, राधाबहन, संतोकबहन, कुंवरजीभाई और उनकी बड़ी लड़की—इतने लोग बा से मिलने आये। बापू और बा के सिवा मुलाकात में और कोई नहीं रहता। कुंवरजीभाई ने मुलाकात के समय बुलाया तो

मैंने कहला दिया कि आने की इजाजत नहीं है।

बा को रात में अच्छी नींद नहीं आई थी। वह ढीली थीं। छः तारीख को देवदासभाई और कांति आये। देवदासभाई बेबी की तस्वीरें लाये। उन्होंने मुझको बुलवाया। मेरी इच्छा जाने की नहीं थी, पर जब मनु ने आकर कहा कि बापू, कटेली और देवदासभाई बुलाते हैं तो मैं गई।

रात को सरकार की तरफ से खबर मिली कि बापू तार के बाहर धूप में नहीं घूम सकते और कनु एक दिन छोड़कर आया करेगा।

७ जनवरी '४४

आज दोपहर को देवदासभाई, काशीबहन, बच्चू और प्रभुदासभाई की पत्नी अपनी दोनों लड़कियों के साथ आये। हम लोग भी थोड़ी देर के लिए बुलाये गए।

डा० गिल्डर को रात में बुखार आया था, इसलिए बापू और बा की मालिश मैंने की।

मनु की आंख दुखती है।

१५ जनवरी '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। मैं पौने बजे बा का काम पूरा करके नीचे गई। बापू समाधि पर फूल चढ़ा आये थे। वह वहां आज जल्दी गये थे। कल शाम को चाबी न मिलने के कारण बाहर जा ही नहीं सके थे। ६ बजे से बा का काम फिर चला। मालिश के वक्त आजकल धूप बरदाश्त करना कठिन हो जाता है।

६ तारीख के दिन से बापू घूमने के समय मौन रखते हैं। बाकी समय में भी बा के काम के और मेरे व मनु के साथ पढ़ने के समय को छोड़कर वह लगभग मौन ही रहते हैं। घर का वातावरण इसी कारण गम्भीर बन गया है।

मीराबहन दो रोज से फिर बीमार हैं। जुकाम है, साथ ही थोड़ा बुखार भी है। बा की खुशी के लिए हम लोग उनके पास ही कैरम खेलते हैं।

बा ने कल कहा था, "संक्रान्ति है, इसलिए तिल की मिठाई बांटनी चाहिए।" कल तो बाजार से सामान आ नहीं सकता था, इसलिए आज मंगाकर मिठाई बनाई। मूंगफली और दो-दो लड्डू सब सिपाहियों को और कैदियों को बांटे। हम लोगों ने भी थोड़ा खाया।

रात को मेरे सिर में दर्द होने लगा। बाद में मतली भी होने लगी। डा० गिल्डर को भी ऐसा ही हुआ। मैंने तिल की मिठाई को दोष दिया और डा० गिल्डर ने धूप

को; क्योंकि मिठाई सबने खाई थी, मगर बापू की मालिश में धूप तो डा० गिल्डर और मैंने ही खाई थी। इसीलिए तकलीफ भी हमीं दोनों को हुई।

प्रभावतीबहन ११ तारीख की शाम को आ गईं। बा की सेवा में वह खूब हाथ बंटाती हैं।

रात को बा सो नहीं पातीं, इसलिए पास में किसी-न-किसीको बैठना ही पड़ता है।

१७ जनवरी '४४

बापू का बाहर धूप में घूमना बंद हुआ, तब उन्होंने अडवानीसे कहा कि पूरब की तरफवाली बाड़ को सीधा करवा दिया जाय तो खुले में घूमने को हो जाय। सरकार ने शीघ्र ही बाड़ सीधी करवा दी। खासा अच्छा रास्ता तैयार होगया है।

बा की तबीयत सुधरती नहीं दीखती। सुबह अच्छी रही तो शाम को खराब—यही क्रम चल रहा है। जेल की तकलीफों ने उनकी परेशानी और भी बढ़ा दी है। मुलाकाती आते हैं तो कुछ ठीक रहती हैं। उनके जाने पर फिर वही हाल होता है। मन-बहलाव की व्यवस्था होती है तो वह शरीर की व्यथा भूल जाती हैं।

बापू का आज मौन है, पर इस तरह आजकल रोज ही रहता है। उनका रक्त-चाप ज्यादा रहता है। इस बारे में मैंने डा० गिल्डर से बातें कीं।

रात में सोते-सोते मैंने माताजी को दो-चार बार पुकारा। बहुधा ऐसा होता है।

१८ जनवरी '४४

आज भी बापू का रक्तचाप बहुत बढ़ा है। सरदी के कारण बढ़ जाता है, वैसे गरमी के कारण दिन में गिर जाता है। सर्पगंधा देने से सुबह की सरदी में भी बढ़ने नहीं पाता, नहीं तो सुबह बहुत बढ़ जाता है।

बापू ने आज खजूर नहीं खाये; क्योंकि पांच चीजों से अधिक तो वह खाते ही नहीं हैं। दवा का स्थान भी पांचों में गिना जाता है।

आज दोपहर को देवदासभाई आये। भाई की पुरानी शाल के अन्दर खादी लगवा दी है। जहां फटी थी, रफू करवा दी है। सुन्दर हो गई है।

बा की तबीयत दिनभर अच्छी रही। शाम को साढ़े चार बजे घबराहट शुरू हुई। मुझे बुलाया, जाकर कुछ तसल्ली दी और खाट को धूप से साये में किया, पानी पिलाया, दबाया। बाद में कुछ ठीक लगीं। देवदासभाई सवा पांच बजे गये।

बाद में शाह और भंडारी जब आये तो बा ने उनसे देवदासभाई को कल फिर भेजने को कहा।

रात को बारह बजे तक मैं, एक बजे से प्रभावहन और साढ़े तीन बजे से भाई बा के पास बारी-बारी से बैठे।

१६ जनवरी '४४

सुबह घूमकर मैं जब लौटती हूं तो तुरंत बा को एनीमा देती हूं। बाद में दस बजे तक बापू की मालिश करती हूं। फिर बा की मालिश, स्नान आदि कराकर स्वयं स्नान करती हूं। समय मिलता है तो अगर भाई बापू के कपड़े नहीं धो पाते हैं तो मैं ही उन्हें धोती हूं। फिर नित्य का काम चलता है। यह करते-करते ११।।-११।।। बज जाते हैं। खाना खाकर रामायण, बाइबिल, आधा-आधा घंटा (१२ से १ तक) चलता है। देर से जाऊं तो उतना ही कम समय मिलता है। तब बापू के पैरों की मालिश करके आराम करती हूं और २-२।। बजे भीतर आती हूं। रसोई का थोड़ा काम देखकर पढ़ने बैठती हूं। पांच बजे तक कातना, पढ़ना, बा का कोई काम हो तो वह, यह सब करती हूं। पांच से छः बजे तक सब लोग खेलते हैं। ६ से ६।।-६।।। तक बापू को खाना देने, खुद खाने और रसोई का काम देखने का क्रम चलाती हूं। बाद में घूमने जाती हूं। बापू साढ़े छः बजे निकल जाते हैं। मुझे अक्सर देर हो जाती है। वह ७। बजे तक वापस आ जाते हैं।

बापू जब अपने पैर धोने लगते हैं, तबतक मैं उनका चरखा तैयार रखती हूं। पीछे रक्तचाप का माप लेकर बापू को चरखा कातते समय शेक्सपियर पढ़कर सुनाती हूं। २० मिनट से आधा घंटे तक पढ़ने का समय मिलता है।

सवा आठ बजे प्रार्थना होती है। रात को बापू की मालिश की जाती है। पीछे कैरम खेलना पड़ता है। १०।-११ बजे तक भाई के साथ शेक्सपियर पढ़ती हूं और बाद में सो जाती हूं। आजकल यही दिनचर्या है।

आज दोपहर देवदासभाई दो से तीन बजे के बीच आये। बा अच्छी थीं, लेकिन शाम के चार बजे उनकी तबीयत कुछ घबराती थी। मैं 'सांप और सीढ़ी' का खेल ले आई। उसमें उनका मन बहल गया।

शाम का कार्य-क्रम रोज जैसा चला।

२० जनवरी '४४

आज दोपहर कनु, मनु की बहन और बहनोई दो बच्चों के साथ बा से मिलने

आये। कल बा कहती थीं, "माताजी नहीं आ सकतीं।" कैसे आयें !

दोपहर माताजी और मोहनलाल का पत्र आया। बेबी अच्छी है।

२१ जनवरी '४४

आज मेरा गला बैठ गया है। बा को एनीमा तो दिया, मगर बापू और बा की मालिश तथा स्नान का काम न कर सकी। थोड़ा बुखार भी हो गया।

शाम को भंडारी आये, तब बापू ने मुलाकातियों और लाइब्रेरी की किताबों के बारे में उनसे बातें कीं।

: ६३ :

बा की निराशा

२२ जनवरी '४४

बा की तबीयत ठीक नहीं है। उन्हें दिन में बेचैनी रही और सारी रात खराब गई। उनके मन में से अच्छी होने की इच्छा और आशा ही उठ गई है। देवदास-भाई नहीं आये। कनु आया तो बा को भजन वगैरह सुनाकर चला गया।

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनकी याद बहुत आती है। सेवाग्राम में पहले दिनों का उनका और मेरा परिचय याद आ रहा है। जीवन का क्या भरोसा है ! सात गुलाब के फूल मिल गये तो उनसे समाधि पर सलीब बनाया।

सरकार के तीन नोटिस आये हैं। उनमें यह बताया गया है कि मैं और मीरा-बहन—दोनों क्यों नजरबन्द किये गये हैं। लिखा है—"तुम लोग गांधीजी से निकट का सम्बन्ध रखती हो और चूंकि सार्वजनिक सत्याग्रह की हलचल में हिस्सा लेना तुम्हारे लिए सम्भव था, इसीलिए तुम्हें नजरबन्दी में रखा गया है।" बापू ने इसका उत्तर लिखा है, जिसे मैंने अभी देखा नहीं है।

२३ जनवरी '४४

आज बापू और मीराबहन के उत्तर तैयार हो गये। भाई रात को बैठकर टाइप करते रहे।

बा के पास एक रात मैं और मनु तथा एक रात भाई और प्रभावती रहें, यह तय किया गया है। रात को बा के पास ११ से २। बजे तक मैं रही, बाद में सुबह



'भारत छोड़ो' आंदोलन के
मूल मंत्रदाता
(बांए-दांए : बा और सरदार)

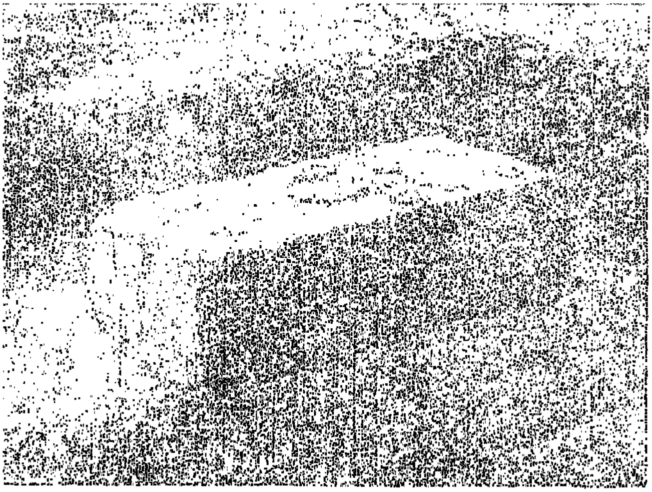


कांग्रेस महासमिति के
८ अगस्त १९४२ के
ऐतिहासिक अधिवेशन में :
महादेवभाई बापू के साथ



आगाखां महल बंदी-गृह बना

(दांई ओर से चौथे कमरे में बापू २१ मास नजरबंद रहे)



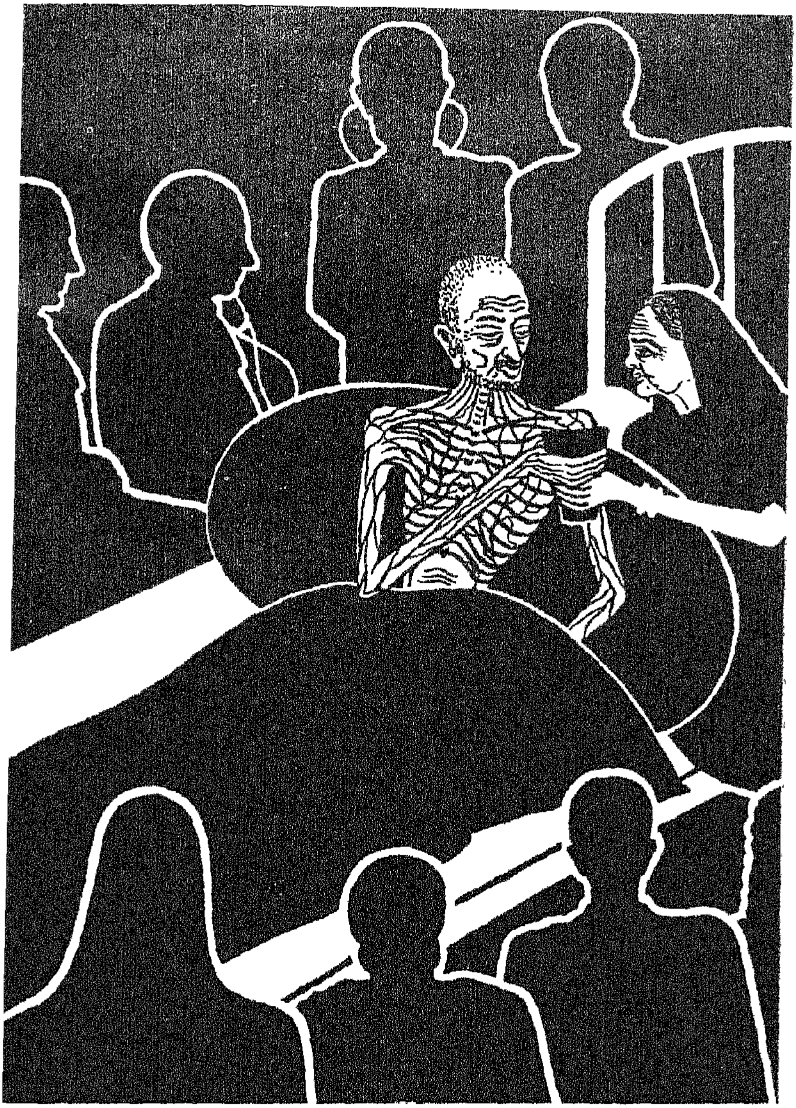
जेल में पहली
आहुति
महादेवभाई
की समाधि



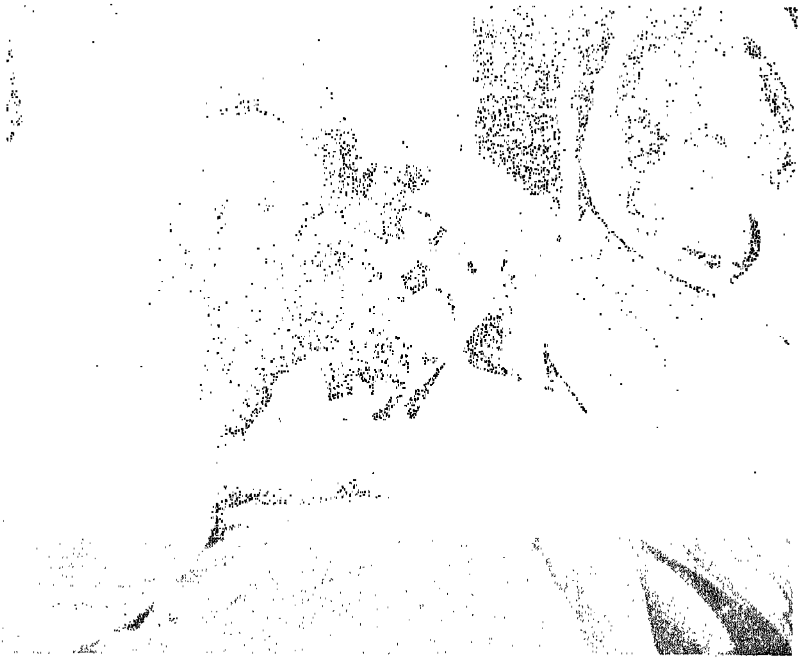
प्यारेलाल भाई ने
काम संभाला



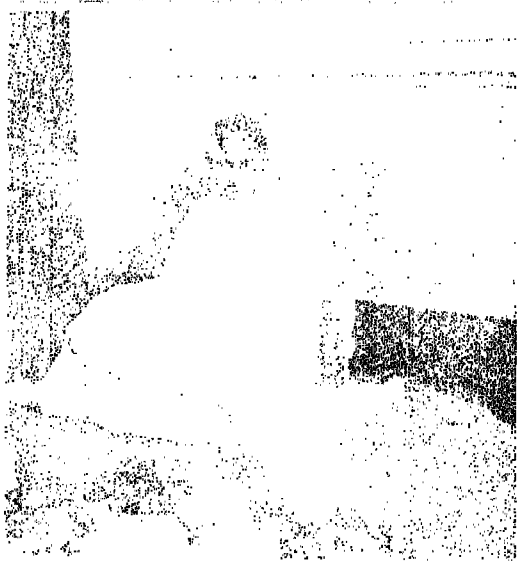
अग्नि परीक्षा
बापू का इक्कीस दिन का उपवास



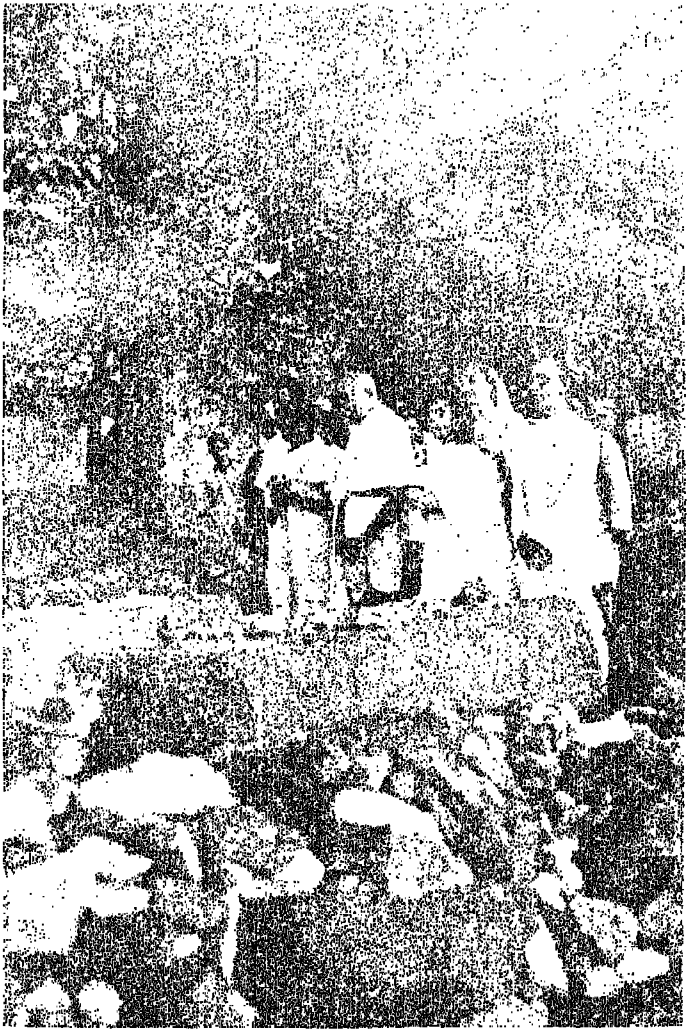
उपवास की समाप्ति



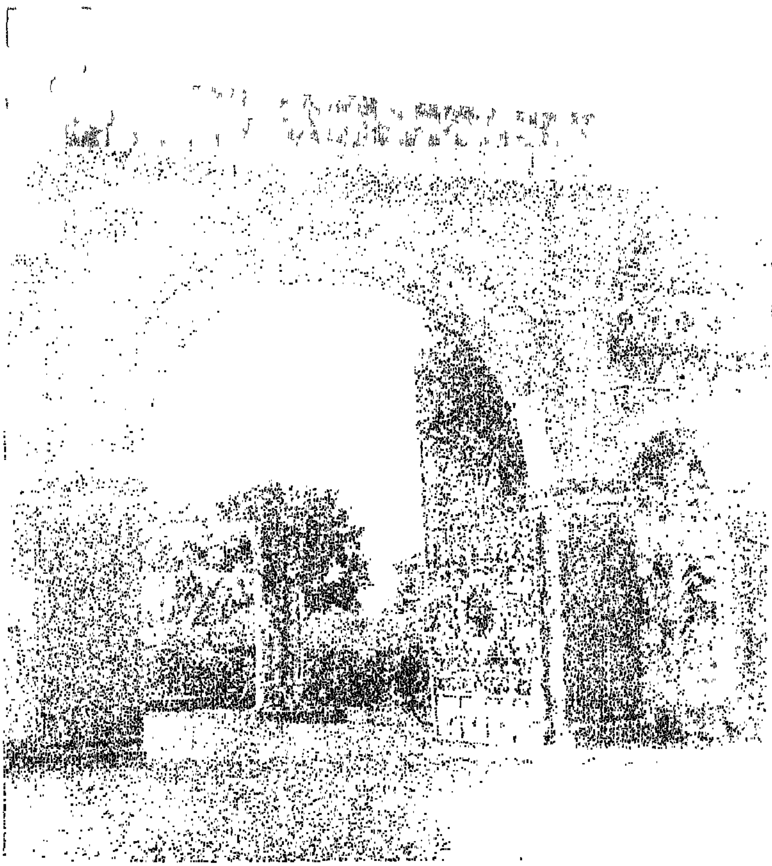
दूसरी आहुति



बा भी गई



बंदीवास में अंतिम प्रार्थना



आखिर आगाखां महल का फाटक खुलकर ही रहा।

प्रार्थना के समय तक मनु रही।

कैरम खेलने से अब हमें छुट्टी मिल गई है। अब डा० गिल्डर, कटेली और मीराबहन ही खेला करेंगे।

२४ जनवरी '४४[1]

बापू और मीराबहन ने सरकारी पत्र के जवाब आज भेजे। रामदासभाई, सुमित्रा और हरिलालभाई बा से मिलने आये। कनु भी आया, मगर बातों के कारण भजन वगैरह अच्छी तरह नहीं हो सके।

२५ जनवरी '४४

आज डा० सिम्काक्स सुबह के समय मीराबहन को देखने आये। शाम को फिर आये। उन्होंने मीराबहन को बेहोश करके उन जोड़ों को तोड़ा, जहां मांस-पेशियां जुड़ गई थीं। डाक्टरसाहब बुद्धिमान जान पड़ते हैं। वह बापू से भी मिले।

दोपहर देवदासभाई, रामदासभाई, सुमित्रा और हरिलालभाई मुलाकात करने आये।

२६ जनवरी '४४

रात में मीराबहन को बुखार आ गया।

आज स्वतंत्रता-दिन है। सबने चौबीस घंटे का उपवास किया। कैदियों के लिए पकोड़े और चाय बनाई।

शाम को सवा सात बजे झंडाभिवादन करने गये और वर्ष की प्रतिज्ञा पढ़कर तीन भजन गाये।

आज के मुलाकातियों में रामदासभाई, सुमित्रा, कनु और हरिलालभाई थे।

२७ जनवरी '४४

डा० गिल्डर आज अपनी पत्नी और लड़की से मुलाकात करने गये। पिछली दफा की तरह जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल के दफ्तर में मुलाकात हुई। डेढ़ घंटा मिला।

डा० सिम्काक्स सुबह मीराबहन को देखने आये। तीन हफ्ते बाद फिर आयेंगे। मीराबहन का बुखार दूर हो गया है।

बा की तबीयत साधारण रही।

---

[1] २४ जनवरी से २७ जनवरी तक का विवरण भाई की डायरी से लिया गया है।

—सु० नै०

२८ जनवरी '४४

कल रात मैं दो बजे तक बा के पास रही। बाद में मनु बैठी। उसने बताया कि बा केवल २ से ५ बजे के बीच आधा घंटा ही सोई थीं। उसके बाद अच्छी नींद ली। दोपहर रामदासभाई और सुमित्रा आये।

सुमित्रा बा के पैर दबाती थी और उनकी पीठ पर हाथ फेरती थी। कल रामदासभाई और सुमित्रा नागपुर वापस जायंगे।

२९ जनवरी '४४

बापू सुबह चार बजे उठ गये। प्रार्थना जल्दी हुई। 'टाइम्स' में सर चिमनलाल सीतलवाद का पत्र प्रकाशित हुआ है। पहला भाग तो कुछ ठीक था, मगर आखीर का बहुत खराब था।

३० जनवरी '४४

बापू आज भी साढ़े चार बजे उठ गये। दिन में भण्डारी वगैरह आये। बा की रात खराब गई। अचानक प्रभावती की घड़ी का एलार्म बज गया, उससे बा बहुत डर गईं।

बापू शेक्सपियर पढ़ने में लगे हैं। कहते थे कि इसीलिए उनका उर्दू पढ़ना रुक गया है। वह यह नहीं निश्चय कर पाते कि क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें। सच तो यह है कि बा की बीमारी के कारण उन्हें भी पढ़ने का समय कम मिलता है। चिन्ता तो रहती है।

३१ जनवरी '४४

रात में बा को मुश्किल से पौन घण्टा नींद आई। एनीमा के बाद बहुत दम चढ़ा, नाड़ी भी खराब थी। ऑक्सीजन और कोरामीन दी, तब कुछ दबा। रक्त-चाप का माप लिया तो ९०/५० निकला। पेट और छाती में बहुत दर्द और बेचैनी रही। लगता है कि हृदय की किसी छोटी-सी रक्तवाही नाड़ी में खून जम गया है।

डा० गिल्डर ने और मैंने सरकार को लिखा कि डा० जीवराज मेहता और डा० बिधानचन्द्र राय को सलाह देने के लिए भेजा जाय। बापू ने सरकार को याद दिलाया है कि कनु, दीनशा और मुलाकातियों पर से प्रतिबंध हटा लिये जायं।

दोपहर को श्रीमती पंडित का पत्र बापू को मिला। सरकार ने लिखा है कि यह पत्र आपको अपवादस्वरूप दिया जाता है। आपका पत्र भी (यदि कोई खटकने-वाली बात न होगी तो) अपवादस्वरूप ही भेजा जायगा।

कनु आया। उसे शाम के सात बजे तक रहने दिया गया। बा को अच्छा लगा। भण्डारी दो बार बा को देखने आये। बा को दिन में काफी बेचैनी रही।

१ फरवरी '४४

रात में बा को नींद कल से अच्छी आई। पिछले २४ घंटों में कमजोरी बढ़ गई है। अगर तबीयत जल्दी नहीं सुधरती तो बा को खो देने का अंदेशा है।

मैं सुबह बापू की मालिश के बाद १० बजे से लेकर १२ बजे तक बा की सेवा में थी। स्पंज आदि करके उनको मैंने एनीमा दिया तो एनीमा लेने के बाद उनके लिए उठकर बैठना कठिन हो गया। दिन में भी बेचैनी काफी रही। खबर मिली कि कनु आज भी आ सकता है और शाम के ७ बजे तक रह सकता है। कनु एक बजे आया। थोड़ी देर बाद संदेश आया कि वह हमारे कैम्प में दाखिल हो सकता है। कनु ने खबर दी कि कल प्रेमाबहन और मणिबहन छूटकर आ गई हैं। शाम को पौने छः बजे भण्डारी डा० जीवराज मेहता को लेकर आये। डा० मेहता बापू को नहीं देख पाये। बा को उन्होंने देखा और नया नुस्खा लिखा। बा को अच्छा लगा।

कनु शाम को पांच बजे अपना सामान लेने गया था, वह रात को साढ़े आठ बजे वापस आया और रात को मीराबहन के साथ मैं और वह कैरम खेले।

बा की देखभाल के लिए बारी-बारी से ड्यूटी करने के लिए एक सूची बनाई। उन्हें पांच मिनट भी अब अकेले नहीं छोड़ा जा सकता।

२ फरवरी '४४

बा की तबीयत कुछ अच्छी है। रक्तचाप भी आज कुछ ज्यादा है। परसों ९०/५० था, कल ८८/५६ और आज १००/५८ है। आवाज में भी कुछ तेजी है। सुबह स्पंज कराने के बजाय उन्होंने स्नान किया।

बापू को कल सर्पगन्धा दिया था। सुबह उनका रक्तचाप थोड़ा कम रहा। दोपहर को खूब उतर गया—१४४/८४ था। शाम को १५६/९८ हो गया, इसलिए शाम को सर्पगन्धा फिर दिया, ताकि कल सुबह न बढ़े।

आज शाम को कनु ने प्रार्थना कराई। अच्छा लगा। दिन में उसने रोज की तरह बा को भजन सुनाये।

शाम को खेल में कनु ने बहुत हँसाया। हँसने से ही कसरत हो गई। भाई, श्री कटेली और कनु के हाथ में से रिंग मुश्किल से ही किसी दूसरे के हाथ में आती थी।

आज काता भी और दोपहर में कुछ पढ़ा भी।

३ फरवरी '४४

कल रात में बा बहुत कम सोईं और दिन में बहुत बेचैन रहीं। रक्तचाप का माप ८४/५२ था। चिन्ता हो गई कि रात को ही कहीं कुछ न हो जाय। इसी विचार से रात को अपनी ड्यूटी लगाने का निश्चय किया, मगर बापू के कहने से यह विचार छोड़ दिया। उन्हें लगता है कि बा समझ जायंगी कि सुशीला खतरे के कारण उनके पास बैठी है। इसका असर उनपर खराब होगा।

रात में भंडारी और शाह आये; क्योंकि शाम को भंडारी को खबर दी थी कि बा की तबीयत ठीक नहीं है।

४ फरवरी '४४

कल रात में बा को बड़ी अच्छी नींद आई। दिन में भी बहुत सोईं। दो बार अपने-आप दस्त हुआ। ब्रोमाइड के असर के कारण चेहरा अच्छा नहीं दीखता, तो भी कल से तबीयत अच्छी कही जा सकती है।

सुबह डा० शाह आये। बा ने उन्हें किसी वैद्य को बुलाने को कहा। उन्होंने स्वीकार किया। बा पहले भी वैद्य के लिए कई बार आग्रह कर चुकी हैं।

दोपहर को बापू के पत्र का सरकारी उत्तर आया। लिखा था कि कनु जेल में रह सकता है। वैद्य और डाक्टर आदि लाने के बारे में सरकारी डाक्टर विचार करेगा। मुलाकात के समय कितने लोग उपस्थित रहें, इसका निश्चय जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल करेंगे।

बापू ने सुझाया कि हम अपना खाना खुद पका लिया करें, जिससे कि सिपाहियों और कैदियों या और किसीकी मदद न लेनी पड़े और लड़ाई-झगड़े का मौका ही न आये। शाम को कटेलीसाहब से बापू ने इस सम्बन्ध में बातें कीं।

५ फरवरी '४४

बा की तबीयत खराब है। कल रात को तो घबराकर कह उठीं कि मैं जाती हूं। गीता-पाठ कराया और भजन कराया। बापू भी करीब घंटाभर बैठे। बाद में दो घण्टे तक सो नहीं सके।

सुबह मालिश के समय बापू ने डा० गिल्डर से बातें कीं। आज से दीनशा का आना शुरू हुआ है। पहले सूचना मिली कि उनके आने के समय डाक्टरों के सिवा और कोई नहीं रह सकता, बापू इससे बहुत उत्तेजित हो गये। सरकार को पत्र लिखाया, मगर बाद में कहा गया कि सरकारी सूचना को समझने में थोड़ी भूल

हुईं। बापू और दूसरे परिचारक भी जा सकते थे, मगर बा के रोग के सिवा दूसरी कोई बात नहीं कर सकते थे। तब बापू ने पत्र को फाड़ डाला।

६ फरवरी '४४

बापू ने दीनशा के दो बार आने की इजाजत ली। उनके आने पर खुद और नर्सों के बा के पास जाने के बारे में भी उनका मत जाना। शाम को बापू ने डा० गिल्डर से बातें कीं। रात में बा के कारण तीन घण्टा जागे थे, इसलिए थकान थी। बा की तबीयत तो गिरती ही जाती है। वैद्य लाने के बारे में भण्डारी ने पूछने पर कहा कि वह सरकार से मालूम करेंगे।

७ फरवरी '४४

प्रार्थना देर से हुई। बापू ने सरकार को खत लिखे, जिनमें पूछा कि उनके पिछले पत्र का जवाब मिलेगा या नहीं और अगाथा हैरीसन को उनका जवाब भेजा गया या नहीं?

कल रात बा के पास मेरी ड्यूटी थी, इसलिए सोने का प्रयत्न करते-करते दिन बहुत खराब गया। शाम को बापू और भाई की कुछ बातें सुनीं, फिर बापू की मालिश करके सोने गई, पर बहुत कम सो सकी।

: ६४ :

हालत और बिगड़ी

८ फरवरी '४४

बा रात में बहुत बेचैन रहीं। आज पहली बार पांव पर सूजन साफ दीख पड़ी है। दीनशा मेहता ने एनीमा दिया, पर निकला कुछ नहीं। बा ने मुझे बुलाया और बोलीं, "तू एनीमा दे।" मैंने समझाया कि डा० मेहता से अधिक अच्छी तरह एनीमा मैं नहीं दे सकती, मगर बा नहीं मानीं। आखिर मैंने दिया। कुछ मल निकला। फरक इतना ही था कि मैंने पानी बहुत धीमे-धीमे चढ़ाया था।

मेहता और डा० गिल्डर में 'एलिमिनेशन क्राइसिस'[1] के सम्बन्ध में चर्चा हुई,

---

१ नैसर्गिक उपचारवादियों का सिद्धांत कि शरीर-शुद्धि की क्रिया के फलस्वरूप रोगी के कई चिह्न उग्र रूप धारण करने लगते हैं, यह स्वास्थ्य लौटने का पूर्वगामी लक्षण माना जाता है।

गरमागरम बहस होने लगी। मैंने जाकर दोनों को शांत किया। इतना कर सकी, यह अच्छा लगा।

बा का दिन आज भी खराब गया। बापू शाम को कहने लगे कि अब बा को एनीमा देना छोड़ दो। कमजोरी इतनी है कि कमोड पर अपने-आप बैठी नहीं रह सकतीं, इसलिए कपड़े वगैरह खराब हो जाते हैं।

बापू मुझे रात की ड्यूटी से मुक्त करना चाहते हैं, मगर मैं नहीं मानी।

अगर इजाजत मिली तो डा० मेहता के आरोग्य भवन से डबल रोटी मंगाई जा सकेगी।

९ फरवरी '४४

रात में मैं बा के पास थी। पौने दो बजे बा जागीं और खांसीं, बेचैनी थी। १२ से पौने दो बजे तक वह अच्छी तरह सोई थीं। उनके पास बैठी-बैठी थोड़ी देर के लिए मैं भी सो गई। पीछे सोचा कि ऐसे नहीं सोना चाहिए। अगर कुछ हो जाय तो! मैंने कुछ भजन वगैरह सुनाये और शर्बत दिया। ढाई बजे जब मैं सोने जा रही थी, तब बा कनु से अत्यन्त करुण स्वर में कह रही थीं, "कनुभाई, सुशीला मेरी बहुत सेवा करती है।" बहुत चोट लगी। कितने दिनों तक अब यह स्वर सुनने को मिलेगा? हमारी सेवा क्या प्रभु निष्फल ही जाने देगा? मैं इस चिन्ता के कारण फिर सो ही नहीं पाई। दिन में भी बहुत कोशिश की, पर नींद न आई।

बापू ने वैद्य बुलाने की इच्छा पूरी करने के लिए डा० शाह से कहा। डा० शाह ने भण्डारी से कहा। भण्डारी ने आयंगर को फोन किया। आयंगर ने दिल्ली को फोन करने की बात कही। कोई नतीजा नहीं निकला।

दिन में बेचैनी, खांसी और नींद न आने के कारण बा को बड़ी तकलीफ रही। उनकी खुराक भी बहुत कम हो गई है। डा० दीनशा वैद्य को बुलाने के विरोध में थे। सबसे बात की। तब समझे कि बा वैद्य बुलाना चाहती हैं तो हमें रोकना नहीं चाहिए।

१० फरवरी '४४

रात में बा को बिलकुल नींद नहीं आई। बापू ३—३० से ५—१५ बजे तक उनके पास रहे। डा० गिल्डर को उन्होंने बा को आक्सीजन देने के लिए जगाया। मुझे बहुत थकी जानकर नहीं जगाया।

दिन में बा की बेचैनी कम रही। नींद भी अच्छी आई। पेशाब बहुत कम

आता है। कल बा ने पानी और दूध वगैरह लगभग ४४ औंस लिया, पर पेशाब सात ही औंस निकला। कुछ दस्त के साथ भी। तो आज पेशाब लाने की दवा दी। कोई उपाय न सूझा तो पेशाब लाने के लिए इन्जेक्शन देना पड़ेगा।

आजकल बा की बीमारी के कारण पढ़ना, लिखना या कातना, कुछ भी नहीं कर पातीं।

सुबह ९ बजे प्रेमलीलाबहन बा को देखने आईं। बा को बड़ा अच्छा लगा। रो पड़ीं। प्रेमलीलाबहन वैद्य का इन्तजाम कर रही हैं, ताकि सरकार से इजाजत मिलते ही उसे तुरंत बुलवाया जा सके।

११ फरवरी '४४

आज सुबह बापू वैद्य भेजने के बारे में सरकार को पत्र लिख ही रहे थे कि भण्डारी आकर कहने लगे, वैद्य या हकीम—कोई भी बुलाया जा सकता है। हां, जिम्मेदारी बापू को ही लेनी होगी। इसलिए पत्र फाड़ डाला गया। बापू ने यहीं के किसी वैद्य को तुरंत बुलाने के लिए कहा और शिवशर्मा नामक वैद्य को बुलाने के लिए तार करने को कहा।

शाम को पूना के वैद्य श्री जोशी आये और हेमगर्भ व अभ्रकभस्म की चार पुड़ियां दे गये। यह भी कह गये हैं कि उनके साथ दूसरी दवा नहीं दी जा सकती। बापू ने उनकी दवा न देने का निश्चय किया है। शर्मा आयेंगे तब देखा जायगा।

रात को एफ्रेडीन मंगवाई ताकि रक्तचाप बढ़ाया जा सके। मैंने एक बार यही दवा देने को कहा था, मगर डा० गिल्डर ने सुझाया था कि इसके देने से रक्तचाप के बढ़ाव को हृदय बरदाश्त नहीं कर सकेगा; लेकिन आज बोले, "यह खतरा उठाया ही जाना चाहिए।" बात यह है कि इतने धीमे रक्तचाप से गुर्दे काम नहीं कर सकेंगे और पेशाब भी कम आयेगा। इस कारण शरीर में जहर इकट्ठे होते हैं और स्थिति भयंकर हो जाती है। रात को भण्डारी ने यह दवा भेजी। दवा का असर यह हुआ कि रात में पेशाब आठ औंस हुआ और नींद अच्छी आई।

१२ फरवरी '४४

रात को खबर मिली कि शर्मा सुबह साढ़े दस बजे आयेंगे।

शर्मा बारह बजे आये। बापू खाना खाते-खाते उठे। दो बजे शर्मा चले गये, तब उन्होंने खाना पूरा किया। शर्मा कुशल जान पड़ते हैं। आकर्षक व्यक्तित्व है। डा० गिल्डर कहते थे, "अगर यह डाक्टर बनता तो बहुत सफलता पाता।" बापू

का मत है, "शर्मा वैद्य होकर ज्यादा सफलता पा रहा है; क्योंकि डाक्टर तो अनेक कुशल होते हैं, सो उनमें यह पहला नम्बर नहीं होनेवाला था, जैसाकि वैद्यों में है।"

शर्मा की दवा शुरू हो गई है। दोपहर को एक छोटी पुड़िया दी, रात के नौ बजे जुशांदा और बड़ी पुड़िया दी और १०॥ बजे सौंफ का अर्क और छोटी पुड़िया।

सुबह मैगसल्फ दिया था। उससे बा के चार बार कपड़े बिगड़े, सब कपड़े बदलने पड़े। अब तबीयत कुछ सुधरी है। सुबह जुलाब लेकर बहुत घबराई थीं, बाद में सूजन कम हुई। देखकर खुशी हुई।

रात को ग्यारह बजे से बा को बड़ी बेचैनी शुरू हुई। रात के सवा दो बजे लिख रही हूं। नींद नहीं आ रही है। दिमाग भी ठिकाने नहीं है। बापू तीन बार आ चुके हैं। अब भाई आकर बैठे हैं। शर्मा को फोन किया था। वह कहते हैं कि पेशाब न होने के कारण ही बेचैनी है, लेकिन किया ही क्या जाय! उन्होंने बा के सिर में मालिश आदि करने को कहा था। सो सब किया, मगर हालत में तबदीली नहीं हुई।

१३ फरवरी '४४

रात में डा० गिल्डर को जगाकर पूछा कि बा को क्या कुछ देना चाहिए? दवा तो वैद्य की चल रही है। हम लोग कुछ दें भी कैसे? आखिर बापू की सलाह से शर्मा को फोन किया। बा की बेचैनी बढ़ी-सी लगी। घबरा गईं। कहने लगीं कि तुम्हीं लोग दवा दो। उनको समझाया।

बा को नींद नहीं आ रही थी, इसलिए डा० गिल्डर से बोलीं, "मुझे अपने कमरे में ले चलो।" बापू आये तो उनसे बोलीं, "मुझे अपनी खाट पर ले चलो।" पीछे मुझसे कहने लगीं, "मुझे प्यारेलाल के कमरे में ले चलो।" तड़के के समय तो खाट से उठकर खड़ी हो गईं और बोलीं, "बापू के पास जाती हूं।" मच्छरदानी में थूकने लगीं, बस कुछ ठिकाना ही न था। मुश्किल से रात कटी। ढाई से सवा तीन बजे तक भाई भी आये। कनु को भी जगाया। वह अकेले बैठने में डरता था, इसलिए साढ़े तीन तक मैं उसके साथ रही और बाद में सो गई।

दिन में बा को दो बार दस्त हुआ, उससे तबीयत कुछ हलकी हुई। शर्मा आये तो बा ने शिकायत की। उन्होंने समझाया। वह शान्त हो गईं।

सबेरे पुड़िया खिलाते समय बा बापू के सामने आनाकानी करने लगीं। शर्मा ने छोटी पुड़िया देने को कहा था, जिसे खिलाते-खिलाते मुझे और बापू को पौन घण्टा लग गया। बा मानती ही न थीं। बोलीं, "सुशीला को ही खिलाओ, नहीं तो

आप खुद खा लो।" बाद में मैंने कहा कि शर्मा ने कहा है कि बा से हाथ जोड़कर विनय करके कहना कि वह दवा खा लें। इसपर वह पिघलीं और दवा खाई।

दिन में बा ने दसमूलारिष्ट व पाउडर खाया। शाम को उन्हें इतना अच्छा लगा कि आठ-दस दिन के बाद आज फिर कुर्सी पर बैठकर घूमने की इच्छा प्रकट करने लगीं। इसलिए घर के बरामदे का एक चक्कर लगाया, बालकृष्ण के पास सात मिनट और तुलसी के पौधे के पास पांच मिनट रहीं। हम लोग घूम रहे थे, सुना तो ऊपर आ गये। बा हमें देखकर खूब हँसीं। सभी बहुत खुश हुए।

प्रार्थना के बाद बा का दाहिना कन्धा और हाथ कांपने लगे। शायद यह एल्कोहल का असर हो।

रात में फिर बेचैनी हुई। एक बजे तक नींद नहीं आई। तब शर्मा को बुलाया। उन्होंने आकर एक ऐसी गोली दी कि खाते ही बा सो गईं।

शर्मा दिनभर यहीं रहे। शाम को पांच बजे बाहर गये। रात को साढ़े नौ बजे फिर आ गये और रातभर बाहर मोटर में सोये। भीतर सोने की इजाजत न थी। सुबह भण्डारी आये। बापू ने इस बात पर कि वैद्य को उचित लगे तो वह भीतर क्यों न सोये, भण्डारी से काफी कहा; मगर कुछ न हुआ। लाचार होकर उन्हें अगले दिन फिर मोटर में ही सोना पड़ा। दूसरा कोई चारा ही न था।

१४ फरवरी '४४

पूछने पर शर्मा ने कहा कि अरिष्ट में २ प्रतिशत से अधिक एल्कोहल नहीं था। डा० गिल्डर का कहना है कि १२ प्रतिशत तक होता है। शर्मा यह भी कहते हैं कि अरिष्ट के कारण बा के हाथ नहीं कांपे। बा का दिन अच्छा नहीं गया। पाखाना न होने से बेचैनी रही। शर्मा ११॥ बजे आये, पर बा की बेचैनी देखकर वापस गये और ४ बजे आकर उन्हें जुशांदा पिलाया और पेट पर कुछ लेप किया। उन्होंने कुछ दूध-फल लिया, हमारे साथ खेले और ६ बजे टोस्ट और उबली सब्जी खाई। बाद में आयुर्वेद और दूसरे वैदिक विज्ञानों की बातें करके वह सात बजे चले गये।

साढ़े सात बजे बा को दस्त हुआ। रात को एक बार हुआ। बापू की सलाह से मैंने और डा० गिल्डर ने जाकर देखा कि बा के पैरों की सूजन बढ़ी ही है, कम नहीं हुई। पेशाब भी कम निकलता है। फेफड़े पीछे की ओर से साफ थे, मगर आगे की ओर बलगम से भरे हुए थे। ऐसा इसीलिए है कि वह आगे की ओर झुककर बैठती हैं। नाड़ी भी वैसी ही है।

सवा दस बजे शर्मा आये। बापू ने उनसे कहा कि डाक्टरों के अनुसार तो बा में कोई सुधार नहीं दीखता। शर्मा भी कहने लगे कि दो दिन में कुछ कहा नहीं जा सकता। बापू ने कहा, "जबतक आपको आत्म-विश्वास हो तबतक आप इलाज करें और जो देना चाहें, दें। जब आपसे कहा जाय, तब इलाज छोड़ने और दुबारा इस मामले को हाथ में लेने की तैयारी रखें।" आखिर शर्मा एक पाउडर देकर चले गये।

शर्मा आज भी मोटर में ही सोये। बापू ने इस विषय में सरकार को कड़ा पत्र लिखा है कि आवश्यकता पड़ने पर वैद्य को यहां सोने की इजाजत होनी ही चाहिए। दूसरा एक और पत्र उन्होंने मुलाकातियों के विषय में लिखा; क्योंकि कल दोपहर सामलदास गांधी वगैरह आये, उन्होंने बताया कि अब मुलाकात की इजाजत मिलने में कठिनाई होनेवाली है।

सरकार का उत्तर आया कि जिन शर्तों पर डा० गिल्डर को मुलाकात मिली थी, उन्हींके अनुसार हम लोगों को भी मुलाकातें मिलेंगी।

बा ने मेरी माताजी से मिलने की इच्छा प्रकट की थी, सो वह यहां आ सकें तो अच्छा हो, मगर क्या सरकार इजाजत देगी?

१५ फरवरी '४४

कल रात में बा को बेचैनी रही, इसलिए उन्हें आक्सीजन दी और उन्हींके पास बैठी रही। तीन बजे बापू और सवा तीन बजे वैद्य आये। दवा दी, मगर नींद तब भी नहीं आई। सवा चार बजे भाई को बा के पास बिठाकर मैं सोने गई।

दिन में बा अच्छी रहीं, पर शाम के ८ बजते ही बेचैनी बढ़ गई। ९९ डिगरी बुखार है, पेट में पानी है और शायद अब फेफड़े में भी भरने लगेगा। सूजन भी ज्यादा है। वैद्य ने सुबह पेशाब लाने का इंजेक्शन देने को कहा। बापू बोले कि इंजेक्शन तभी देना, जब उसके बिना काम न चले। इस खयाल से इंजेक्शन लगाने का विचार कल शाम तक के लिए स्थगित कर दिया गया। बेचैनी के कारण बा के पास पहले मैं और प्रभाबहन और मनु बैठी हैं। मनु को बिठाना अच्छा नहीं लगता। बापू लार्ड वेवल के नाम का एक पत्र मुझे पढ़ने के लिए दे गये हैं। मैंने पढ़ लिया है।

१६ फरवरी '४४

रात को मैंने कनु को बा के पास बिठाया; क्योंकि एक बजे मैं सोने जा रही थी कि बापू ने कहा कि मनु की तबीयत अच्छी नहीं। कटेलीसाहब वैद्य को बाहर

पहुंचाकर खुद सोने गये। बापू को यह देखकर दुःख हुआ कि कटेलीसाहब को भी हम लोगों की खातिर जागना पड़ता है।

दिन में दो बजे बापू ने भण्डारी के नाम एक पत्र लिखा कि वैद्य को तो भीतर ही सोने की इजाजत मिलनी चाहिए। तीन बजे वह सो गये। नमक के कानून के विषय में एक तार सरकार को भेजने का विचार कर रहे थे।

पत्र काफी सुधार के बाद साढ़े ग्यारह बजे दिया गया। उसमें हम लोगों के सुझाये हुए सुधार करके बापू ने उसे कनु को लिखाया था। मीराबहन ने बापू को स्नान कराया।

मथुरादासभाई सकुटुम्ब और राधाबहन बा को देखने एक बजे आये और पौने तीन बजे चले गये। चार से पांच बजे तक बापू और मैंने थोड़ी नींद ली। ५ से ६ तक बापू ने हम सबके साथ वेवलवाला पत्र सुधारा।

दिन में बा का पेशाब नहीं उतरा। वैद्य कहने लगे, "अभीतक मैं डरकर चलता था, मगर आज तो जो कर सकूं, करना शुरू कर दिया है। पेशाब न उतरे और बा की तबीयत में दो दिन में सुधार न हो तो मैं दूसरे चिकित्सकों को भी अवसर दूंगा।"

मीराबहन ने दोपहर को बापू के पास ही बैठना और सोना आरम्भ किया है।

१७ फरवरी '४४

रात दो बजे तक बा के पास मेरी ड्यूटी थी। बा को नींद बहुत कम आई। बेचैनी अधिक नहीं थी, पर सांस बहुत फूलता था।

वैद्य ने आकर एक गोली बा को खिलाई। बा आध घण्टे तक सोईं, बाकी समय भजन सुनती रहीं और कभी-कभी खुद भी मेरे साथ गाने लगती थीं।

बापू ने कनु और मीराबहन के विषय में थोड़ी बात की।

दोपहर सरकार से आध घण्टे की इजाजत लेकर हरिलालभाई आये। बा को यह अच्छा नहीं लगा। बोलीं, "दो भाइयों में इतना भेद क्यों किया जाता है? देवदास रोज आ सकता है, लेकिन हरिलाल एक बार और वह भी आधे घंटे के लिए! यह क्या बात है?"

बापू वहीं बैठे हजामत बनवा रहे थे। यह सुनकर बा से पूछने लगे, "हरिलाल क्या हर रोज आये?" बा ने कहा, "हां!" बापू ने कटेलीसाहब से कहा। हरिलाल-भाई अब रोज आया करेंगे। पूना में आठ रोज रहेंगे। बापू ने उन्हें मेहता के यहां

रहने की सलाह दी, मगर हरिलालभाई को धर्मशाला अधिक पसन्द है।

दिन में बा को दम की बड़ी शिकायत रही, पर बेचैनी नहीं थी। मैंने तीन बार आक्सीजन दी। वैद्य की दवा से दस्त तो काफी हो गये, मगर पेशाब नहीं उतरा। रात में बा को १००.२ डिगरी बुखार हो गया, साथ ही बेचैनी भी हो गई। बापू मुझसे कहने लगे, "बा तुम्हारे हाथ में फिर आये तो मेरी सलाह तो यह है कि सब दवा देना बन्द कर दो।" मैं बोली, "यह कैसे हो सकता है? जबतक किसी दवा से फायदा होता दीख न पड़े, तबतक डाक्टर रोगी को दवा देता ही जायगा न?"

कल बा के फेफड़े देखेंगे। वैद्य की दवा का असर अगर कल तक अच्छा न दीख पड़ा तो शायद वह चले जायं। वह आज यहीं सोयेंगे।

मनु को बुखार आ गया।

१८ फरवरी '४४

रात में बा को नींद नहीं आई। भाई उनके पास थे। ३॥ बजे मैं और बापू जब बा को देखने गये तो उन्होंने बताया कि वैद्य ने बा को दो बार दवा दी है तो भी उन्हें नींद नहीं आई। बुखार भी रात में १००.२ डिगरी रहा। ४ बजे हम लोग बा के पास से हटे तो बापू कहने लगे कि अब प्रार्थना क्यों न कर ली जाय।

बापू प्रार्थना के लिए तैयारी कर ही रहे थे कि वैद्य ने आकर कहा कि वह चिंता के मारे रात भर सो नहीं सके, क्योंकि बा का इलाज करने में वह सफल नहीं हो रहे ह।

रात में वैद्य ने बा को अच्छे-से-अच्छे रसायनों की दवा दी, मगर नतीजा कुछ न निकला। उनके कहने पर बापू ने मुझसे और डा० गिल्डर से कह दिया है कि हम लोग बा का इलाज जैसे चाहें वैसे करें। इसलिए मैंने तुरंत पेशाब लाने और दिल को ताकत पहुंचाने के लिए दवाइयां दीं। डा० दीनशा ने मैगसल्फ का एनीमा बा को दिया। बाद में कहते थे कि मल बहुत निकला। मैं आई, तबतक सब फेंक चुके थे।

दोपहर को डरते-डरते पारे के इंजेक्शन की आधी मात्रा बा की नस में दी। इंजेक्शन का पता बा को नहीं चला और प्रयत्न सफल रहा। सैकड़ों में एक को ही इस इंजेक्शन से तुरन्त नुकसान होता है। पांच बजे पांच औंस पेशाब हुआ। हम सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। बा भी दिन में खूब सोई। चार बजे एक संगीत-मण्डली आ गई। बा उठीं, तब कुछ संगीत हुआ। पौने पांच बजे बा को पेशाब लगा, इस

लिए उसे रोक दिया गया।

बापू ने वैद्य के आने के विषय में भण्डारी को फिर लिखा। भण्डारी ने शाम को आकर कहा कि वह आते रह सकते हैं, लेकिन रात को भीतर नहीं ठहर सकेंगे। आज हरिलालभाई नहीं आये। मेहता के यहां टेलिफोन करने को कह गये थे। जब फोन से बताया गया कि उन्हें आने की इजाजत मिल गई है तो पता चला कि वह वहां गये ही नहीं। शाम को मेहता के आने तक उनकी खबर न थी।

शाम को छः-सात बजे बा को बेचैनी शुरू हुई। परीक्षा करने पर पता लगा कि दाहिने फेफड़े के ऊपरी भाग में निमोनिया के चिह्न मिले। रात को ये चिह्न और बढ़े। यह देखकर रात की दवा में सल्फा की दो गोलियां भी शामिल कर दीं। डर था कि पेशाब कम है, सल्फा कहीं गुर्दों में बैठकर और अधिक तकलीफ न दे। मगर आखिर खतरा उठाया ही। रात को बुखार १०० डिगरी रहा। मैं बा के पास २ बजे तक बैठी। १२ बजे तक नींद की आधी मात्रा दवा देने पर उन्होंने २ बजे तक अच्छी नींद ली। दो-ढाई घंटे तक आक्सीजन भी ली।

माताजी और मोहनलाल के मुझे पत्र मिले।

१९ फरवरी '४४

आज बा को १॥ सी० सी० पारे की दवा और २५ प्रतिशत ग्लूकोज भी नस में दिया, मगर पेशाब नहीं हुआ। इससे निराशा हो रही है। सुबह कुनीन में आधा चम्मच सुनहरी मैगसल्फ दी थी, इसलिए दो-तीन पाखाने हो गये और पेशाब केवल एक बार चार औंस हुआ। बाद में दो बार करके एक औंस और हो गया। अगर सेलिर्गन (Salyrgan) का असर हो जाता तो देती। दिन में बा काफी सोईं, मगर नींद थकान और दवा के कारण है। बहुत चिन्ता हो रही है।

बापू बा के पास काफी समय तक बैठते हैं। वैद्य भी आये थे। बापू से बातें करते रहे। बापू पर उनका बहुत अच्छा असर पड़ा है।

२० फरवरी '४४

रात को बा ने खासी नींद ली। लगभग रात भर आक्सीजन चलती रही। बार-बार 'राम-राम' चिल्लाती थीं। साढ़े तीन बजे आक्सीजन की नली बा ने निकाल डाली। सुबह सवा पांच बजे से उन्हें बड़ी बेचैनी लगने लगी। मैंने आक्सीजन की नली फिर डाली, तब थोड़ा शांत हो सकीं। बापू आये और बा की खाट पर बैठकर ही प्रार्थना करने लगे। कल के सेलिर्गन के इंजेक्शन का असर न

होने के कारण निराशा छाई थी। तिसपर बा की बेचैनी ने और चिंता बढ़ा दी। दो बजे बाद बापू ने मुझे बा के पास से भेज दिया।

सबको लग रहा है कि अब बा जाती हैं। बा 'हे राम, हे राम' इतने करुण स्वर से कहती हैं कि सुना नहीं जाता।

१ बजे बा की नाड़ी खराब हो गई, मगर थोड़ी देर में सुधर गई और दिनभर इधर-उधर चलती रही। रामधुन और भजन बा के पास दिनभर होते रहे। वह भी बीच-बीच में जोरों से गाती थीं। बापू काफी समय तक बा के पास बैठे।

सुबह सवा नौ बजे दिमाग शांत करने की दवा दी। परिणामस्वरूप बा घंटे-डेढ़-घंटे के लिए सो गईं। उठीं तो दातुन मांगी। अच्छी तरह घिस-घिसकर दातुन की। नाक में पानी चढ़ाया। तत्पश्चात चाय भी पी।

सबको बड़ा आश्चर्य हुआ कि बा में इतनी शक्ति कहां से आ गई, मगर थोड़ी देर बाद बेचैनी शुरू हुई। पेशाब बहुत कम हुआ।

बा शाम को एनीमा के लिए चिल्लाने लगीं। बापू बोले, "अब बा की दवा राम-नाम ही है, दूसरा सब उपचार छोड़ दो।" सुबह दवा देने के अलावा मैंने फिर दवा नहीं दी, लेकिन मुझे यह बात पसन्द नहीं आई। इच्छा थी कि दिल की ताकत बढ़ानेवाली दवा पूरी मात्रा में दूं। बापू से मैंने इसके लिए कहा भी, पर वह बोले, "मेरी तो वृत्ति है कि बा को पानी और शहद के सिवा कुछ भी न दो। वह खुद मांगे तो अलग बात है। ऐसी ही दवा की बात है। बा जाय तो भले। बा की व्यथा का दृश्य करुण है, मगर मुझे बहुत प्रिय है। बस राम-धुन के सिवा उसे चैन नहीं। आज मैंने उसके मुंह से 'राम' के सिवा और कुछ सुना ही नहीं। मैं दवा को मानता ही नहीं। लड़कों की कैसी-कैसी बीमारी में भी मैंने दवा नहीं दी। बा के बारे में मैंने ऐसा नहीं किया। अब समय आ गया है कि अब तो दवा छोड़ूं। ईश्वर को बचाना होगा तो ऐसे ही बचा लेगा, नहीं तो बा को मैं जाने दूंगा।"

इसलिए बा ने जब एनीमा मांगा तो बापू ने उसे टालने का प्रयत्न किया और कहा, "अब राम-नाम ही तेरी दवा है।" मगर मैंने कहा, "वह चाहती हैं तो लेने दीजिये।" तब बापू मान गये। एनीमा दिया, खूब मल निकला। बा तब शांत होकर करीब दो घंटे तक सोईं।

डा० दीनशा मेहता दिनभर यहीं रहे। रात के लिए भी इजाजत मांगी।

बम्बई से टेलीफोन आया है कि वह रह सकेंगे।

शाम को एनीमा के बाद की हालत इतनी अच्छी रही कि मैंने बापू से कहा कि यदि ऐसी ही हालत रात के बारह बजे तक रही तो मैं दवा देना शुरू कर दूंगी।

भण्डारी, शाह और वैद्य सुबह बा की हालत पूछने आये। तभी खबर मिली कि बा की मृत्यु यदि हो गई तो कोई व्यक्ति बाहर न जा सकेगा। वैद्य यह सुनते ही जल्दी चले गये। उन्हें साढ़े तीन बजे की गाड़ी से जाना था।

इस खबर से जान पड़ता है कि सरकार का इरादा महादेवभाई की तरह बा कि अन्तिम क्रिया यहीं होने देने का है, मगर क्या सरकार उनके लड़कों के मांगने पर भी शव उनको न देगी?

सुना है कि रामदासभाई नागपुर से चल पड़े हैं। शायद देवदासभाई भी आ रहे हैं। शाम को बा एकाएक बहुत तेजी में आकर हरिलालभाई के न आने पर नाराजी दिखाने लगीं। जब उन्हें बताया गया कि दो लड़के आ रहे हैं, तब कुछ शांत हुईं।

मैंने भण्डारी से पेनिसिलीन के लिए कहा। वह कोशिश करेंगे। फौजी अस्पताल में तो नहीं मिली। डा० बिधान राय यहां होते तो ऐसी चीजें उनके द्वारा खोजी जा सकती थीं। जेल में बैठे-बैठे आदमी क्या कर सकता है?

साढ़े नौ बजे से बा की बेचैनी फिर शुरू हुई है। मीराबहन रामधुन सुना रही हैं।

: ६५ :

अन्तिम रात्रि

२१ फरवरी '४४

रात में नींद की दवा देने पर १२ बजे तक खूब सोने के बाद बेचैनी फिर शुरू हुई, पर आक्सीजन देने पर वह सो गईं।

अब बा के पास एक व्यक्ति से काम नहीं चलता। मनु के आग्रह पर मैंने उसे बारह बजे जगाया। मेहता भी १। बजे आ गये। डेढ़ बजे मैंने मनु को सुला दिया। बापू रात को दो बार आये। १ से १॥ बजे तक वह बा के पास बैठे, मगर बा ने बैठने

नहीं दिया। इतनी बीमारी में भी उन्हें बापू के आराम का खयाल था। बापू डेढ़ बजे उठकर चले और साथ ही बा का थूक पोंछने के दो रूमाल उठाकर धोने ले गये। मैंने कहा, "लाइये मैं धो दूं।" मगर उन्होंने धोते-धोते कहा, "मुझे ही धोने दे।"

कल दिन में डा० गिल्डर मुझसे कहने लगे, "जरा ध्यान रखो। निमोनिया है। बा के आसपास काफी जहरीले कीड़े फैल रहे हैं। बापू वहां बहुत न बैठें।" मैंने कहा, "मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं कुछ कहूं। कल दोपहर खाने-पीने के बाद बापू बा के पास बैठे थे। बा ने उनसे जाने को कहा; क्योंकि वह सोना चाहती थीं। मैंने कहा कि अब आप उठ जाइये; क्योंकि बा आपका सहारा लेकर सो गईं तो फिर आप उठ न सकेंगे। तब बापू उठ तो गये, मगर बाद में बोले, 'मुझे थोड़ी देर बैठने दिया होता तो क्या था!' मुझे लगा कि मैंने उन्हें उठने के लिए कहा ही क्यों। वह खुशी से बैठें। इसीलिए आज मेरी हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं बापू से कुछ भी कहूं।"

डा० गिल्डर कहने लगे, "पास भले बैठें, मगर मुंह के नजदीक न रहें।" मैंने कहा, "यह कहना भी कठिन है।" तो वह बोले, "हां, मैं अब समझा। आखिर, बापू यह देखते हैं कि साठ साल का साथ छूट रहा है, इसलिए वह बा से दूर नहीं रह सकते। हम भी उनसे कुछ नहीं कह सकते।" रात के करीब ११।। बजे बा मेरी गोद में पड़ी थीं। मेरा एक हाथ उनकी नाड़ी पर था। एकाएक नाड़ी इतनी कमजोर हो गई कि मिलती ही न थी। मुझे लगा कि बा क्या सोते-सोते ही चली जायंगी। प्रभावतीबहन को आवाज दी कि नाड़ी वापस आ गई और रातभर ऊंची चलती रही। दो बजे मैं सोने को गई और सात बजे तक सोती रही। यहांतक कि बापू ने मुझे जगाकर कहा कि डा० गिल्डर बहुत देर से बा के पास खड़े हैं। उन्हें मुक्त करने मैं गई तो गिल्डर जा चुके थे। नाड़ी वगैरह ठीक थी।

मैं जब बा के पास गई तो वह मुझसे कहने लगीं, "मुझे अण्डी का तेल दे।" मैंने समझाने की कोशिश की कि अब उसकी आवश्यकता नहीं, उससे आपको थकान होगी। वह तेल मांगना भूल जायं, यह सोचकर मैं वहां से हट गई। इतने में प्रभावतीबहन आईं और कहने लगीं, "बा अण्डी के तेल के लिए चिल्ला रही हैं।"

मैं और डाक्टर दोनों नहीं देना चाहते थे। इतने में बापू ने जाकर बा को समझाया कि तू गुस्सा करना छोड़ दे। करना है तो अकेला मुझपर ही कर। दूसरे,

अब दवा लेनी छोड़ दे। कल से तू राम-नाम लिया करती है, वह मुझे बहुत भला लगता है। अब तो राम-नाम को हृदय पर अंकित कर ले। राम-नाम जिन्दा रखेगा तो जीयेंगे, नहीं तो चले जायंगे।

बा ने बापू की सब बातें सुनीं। ऐसा लगता था मानो उन्होंने सबकुछ स्वीकार भी कर लिया। थोड़ी देर बाद जब मैं बा के पास गई, तो बापू बा से कह रहे थे, "रोगी कभी अपनी दवा खुद नहीं करता। और मैं तो तुझे कहता हूं कि अब तू दवा छोड़ दे। सबकुछ भूल जा। मुझे भी भूल जा। राम में ही मन को पिरोले।"

बाद में बापू मुझसे बोले, "बा अण्डी का तेल नहीं मांगेगी।" मैंने कहा, "अच्छी बात है।" फिर बापू घूमने को गये। बा मेरी गोद में पड़ गई। १० बजे मैं उठकर गई। थोड़ी देर बाद जब बा के पास फिर पहुंची, बापू भी आ गये। बा मेरी तरफ उंगली हिलाकर बोलीं, "तो अण्डी का तेल नहीं दिया न?" मैंने कहा, "शाम तक अगर पाखाना न होगा तो अण्डी का तेल दूंगी।" डा० गिल्डर ने भी समझाया। दीनशा ने भी। आखिर आधी चमची अण्डी के तेल में लिक्विड पेराफीन डालकर दी। बा ने वह लिया। बाद में पानी भी। डेढ़ बजे आक्सीजन शुरू करके मैं सोगई। डा० गिल्डर उनकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। मैंने बापू से कहा, "बा अण्डी के तेल लेने के लिए इतना आग्रह करती हैं तो दूसरी दवाएं रोकना कहांतक ठीक है?" बापू का मौन था। उन्होंने लिखकर दिया, "विरोध करने की अब मेरे लिए बात ही नहीं रहती।"

एक प्याले में हृदय को ताकत देनेवाली दवा निकाली और डा० गिल्डर से यह कहकर कि बा के जागने पर दवा पिला दें, मैं सोने चली गई।

एकाएक चार बजे गीता-पाठ की ध्वनि सुनकर उठ बैठी, मगर कोई खास बात न थी। बा को सुनाने के लिए गीता-पाठ हो रहा था।

दोपहर साढ़े तीन बजे हरिलालभाई आये।

मैंने रामधुन सुनाना शुरू कर दिया। बा शान्त होकर सुनने लगीं। छाती में दर्द बताने लगीं। मैंने उन्हें दवा दी और वह मेरी गोद में पड़ी रहीं। पांच बजे मैं खेलने गई।

सवा छ: बजे के करीब देवदासभाई वगैरह आये। बा उनसे मिलकर रोने लगीं। मनु भी रोने लगी। मैंने बा से पूछा, "क्या मनु भजन सुनाये? बा ने 'हां' कहा। मनु ने गाना आरम्भ किया, तब दोनों का रोना बन्द हुआ। बा देवदासभाई से भी

मिलकर रोईं और बोलीं, "बापू तो साधू हैं। उनको तो बहुत काम है और बहुत जिम्मेदारियां हैं।...इसलिए तू सबको संभालना।"

देवदासभाई ने बताया कि बा के पास रात को रहने की इजाजत तो उन्हें है, मगर दूसरों को नहीं है। कहने लगे, "संतोकबहन और मनु बा के पास रहें तो बा को अच्छा लगेगा।" देवदासभाई ने इसीलिए मुझे बापू के पास भेजा कि वह जाकर श्री कटेली से संतोकबहन के रहने की इजाजत लें। बापू ने कागज पर लिखा, "कटेली सरकार को फोन करें कि बा की सेवा के लिए तो जरूरत नहीं है, लेकिन उसकी शान्ति के लिए संतोकबहन को रहने के लिए सरकार इजाजत दे तो अच्छा हो।"

आठ बजे तक तो उन लोगों को जाना था ही, वे चले गये।

करीब सात-साढ़े सात बजे से मैं बा के पास बैठी। कनु ग्रामाफोन बजा रहा था। बा मेरा सहारा लेकर १।। घण्टा सो गईं। साढ़े नौ-पौने दस पर प्रभावतीबहन को बा के पास बिठाकर मैं बापू की मालिश करने गई। लौटकर देखा तो बा सो रही थीं।

बा ने आज न के बराबर खाया। खाने में उनकी अरुचि कई दिनों से बढ़ती जा रही है। बापू ने कहा था, "अभी बा को दूध-चाय भी न दो। अपने-आप मांगे तो अलग बात, नहीं तो शहद और पानी ही दो।"

आज बा को पानी और शहद से भी अरुचि हो गई। निगलने में कठिनाई होती थी। मैंने पूछा, "खांसी की दवा लोगी?" पर 'हां' कहकर भी उन्होंने दवा नहीं ली। कहती थीं, "मुझे सुला दो।" प्रभाबहन से बोलीं, "हम दोनों यहीं सो जायं।"

बा को दवा देने के लिए बत्ती जलाई तो देखा कि बिस्तर में उन्होंने पाखाना किया है और उन्हें कुछ मालूम न था। प्रभाबहन की मदद से मैंने बा के सब कपड़े बदले। फिर बा को सहारा देकर बैठी। प्रभाबहन कपड़े धोने गईं और फिर आकर बा के पास बैठीं। मैंने उठकर बा की बीमारी की नोट-बुक में सब हाल लिखा। ११ बजे देवदासभाई आये और १ बजे तक बा के पास रहे। मैंने १ बजे प्रभावती-बहन को सोने भेज दिया।

बा की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। आधी नींद में रहती जान पड़ती हैं। सिर में दर्द भी बताती हैं। देवदासभाई खड़े-खड़े उनका सिर दबा रहे थे। उन्हें लगा कि बा सो गई हैं, इसलिए उन्होंने दबाना बन्द किया, पर बा फिर मुझसे कहने

लगीं, "सुशीला, तू भी थक गई !" मैंने कहा, "मुझे थकना क्या ! लाओ न, मैं दबाऊं !" मैंने सिर दबाना शुरू किया।

डेढ़ बजे बा को पेशाव की हाजत हुई। पेशाबदान मांगा। डा० मेहता का लाया हुआ रबड़ का पेशाबदान काम में लाई। पेशाब ढाई औंस हुआ—कुछ चादर पर भी पड़ा। बा पेशाबदान पर बैठी थीं, तभी बापू भी आ गये। बा अस्पष्ट शब्दों में कुछ बोलीं। दो बजे तक नशे की-सी हालत में पड़ी रहीं। सिर में चक्कर था—दर्द था। तीन बजे के बाद सोईं। बा की स्थिति अच्छी नहीं लगती थी।

२२ फरवरी '४४

सात बजे उठकर मैं हाथ-मुंह धोकर बा के कमरे में घुसी ही थी कि बा ने मुझे आवाज दी—"सुशीला।" मैंने पास जाकर पूछा, "क्या है बा ?" कहने लगीं, "सुशीला, मुझे घर के अन्दर ले जा। मेरी टहल कर।" मैंने कहा, "बा, तुम घर के अन्दर ही तो हो। यह देखो, तुम्हारे पास 'हे राम' का चित्र है।" थोड़ी देर में वह फिर बोलीं, "मुझे घर में ले चलो।" मैंने कहा, "बापू के कमरे में जाना है ?" बा बोलीं, "हां !" मैंने कहा, "बापू के कमरे में ही तो हो।" मुझे लगा कि शायद बापू के पास जाना चाहती हैं। बापू बगल के कमरे में फल के रस का नाश्ता कर रहे थे। जब घूमने जाने को निकले तो मैंने कहलाया कि नीचे जाने से पहले दो मिनट बा के पास हो जायं। बापू बा वाले कमरे में गये। थोड़ी देर खड़े रहे, फिर बोले, "मैं घूम आऊं।" बा ने कहा, "ना।" बा हमेशा खुद ही बापू को कहा करती थीं कि घूमने जाओ, मगर आज उन्हें लगा कि मेरे पास बैठें तो ज्यादा अच्छा हो। सो बापू बा की खाट पर बैठ गये। दस बजे तक बैठे रहे। बा बस उनकी गोद में पड़ी थीं।

बापू उनसे 'राम' में ध्यान लगाने को कहते थे। दूसरी जो सेवा चाहिए, बैठे-बैठे करते थे।

मैं दस बजे तक आई। देवदासभाई के साथ बैठी। उन्हें नाश्ता कराया। उन्होंने बा के बारे में टॉटेनहम से जो बातें हुई थीं, वे सुनाईं। उसने साफ कहा था, "अगर हम बा को छोड़ दें और उनकी हालत ज्यादा बिगड़े, पीछे गांधीजी को न छोड़ा जाय तो तुम्हें वह निष्ठुरता की पराकाष्ठा लगेगी।"

बा बापू की गोद में शान्ति से पड़ी रहीं। उनके चेहरे का भाव इतना शान्त था और उस समय बा और बापू की जोड़ी इतनी भव्य लगती थी कि डा० गिल्डर कह उठे कि यह दृश्य तो चित्र लेने लायक है।

दस बजे मैंने बा से कहा, "अब मैं बैठूं ? बापू नहाने-धोने जायं ?" बा ने 'हां' कहा। बापू उठे। पहले थोड़ा घूमे, फिर थोड़ी मालिश कराई और स्नान किया। मैं अकेली बा के पास थी।

एकाएक मन में विचार उठा कि बा से अपनी सब जाने-अनजाने की हुई भूलों की माफी तो मांग लूं। मगर मेरे मुंह से शब्द निकले ही नहीं। यह भी विचार आया कि बा कहीं ऐसा न समझ बैठें कि वह जा रही हैं, इसलिए मैं उनसे माफी मांग रही हूं।

आज सुबह साढ़े सात बजे जब बा मेरी गोद में पड़ी थीं तब बोलीं, "सुशीला, कहां जायंगे ? मर जायंगे ?" बा जब पहले कभी ऐसी बात करती थीं, तब मैं कहती थी, "नहीं, नहीं बा, यह क्या बोलती हो ? हम सब साथ घर जायंगे।" मगर आज बा को इस तरह कहने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी। मैंने कहा, "बा, एक दिन हम सबको मरना ही है न ? किसीको आगे, किसीको पीछे, एक ही ठिकाने जाना है।"

इसपर बा शान्त हो गईं। सिर हिलाकर 'हां' कहा। उस भावना को मैं फिर जगाना नहीं चाहती थी। कठिनता से मैंने कहा, "बा, तुम मुझसे नाराज हो ? कल अण्डी के तेल के लिए नाराज हो गई थीं न।" मुझे लगा कि किसी बात को लेकर मैं बा से आगे-पीछे की माफी मांग लूं। मगर बा थकी बहुत थीं। उन्होंने कुछ जवाब दिया, शायद कहा, "नाराज नहीं हूं।" मगर मैं पूरा समझ न सकी। आगे नहीं बोलीं।

आज पहली बार बा ने दातुन करने से इन्कार कर दिया। मैंने उनकी जीभ बोरे ग्लिसरीन से साफ करने का प्रयत्न किया, मगर वह भी न कर पाई।

मेहता और देवदासभाई गये। मेहता घर गये हैं और देवदासभाई पेनिसिलीन लेने। एकाएक बा ने कहा, "मेहता कहां गया ? मालिश करे।" मैंने कहा, "घर गये हैं, थोड़ी देर में आते हैं।" मगर कनु ने कहा, "अभी गये नहीं हैं, जा रहे हैं।" बुलाने पर मेहता आये और पाउडर की मालिश बा के हाथ-पैरों पर कर दी। दस-पंद्रह मिनट बाद वह चले गये।

भण्डारी बापू से मिलने आये। बोले, "देवदासभाई बा का फोटो लेना चाहते हैं। सरकार ने आपकी राय लेने के लिए मुझे भेजा है।" बापू ने कहा, "जहांतक मेरा सम्बन्ध है, मुझे इन चीजों की परवाह नहीं; मगर बेटे, रिश्तेदार और मित्र फोटो लेने का आग्रह कर सकते हैं। इसलिए मैं मानता हूं कि सरकार को फोटो

लेने की इजाजत देनी चाहिए और आजकल तो ऐसे फोटो लेने का रिवाज हो गया है।"

भण्डारी ने आश्चर्यभरे स्वर में कहा, "ऐसी बात है?" बापू बोले, "आप क्या मृत्यु-शय्या पर पड़े या मरे हुए लोगों के फोटो हर रोज अखबारों में नहीं देखते?" भण्डारी ने उत्तर दिया, "हां, तो मैं सरकार से यही कहूं न कि आपके लिए फोटो लेना या न लेना—दोनों बातें समान हैं।" बापू कहने लगे, "हां, मुझे दोनों समान लगते हैं, मगर मैं देखता हूं कि सरकार की शोभा यह दरख्वास्त स्वीकार करने में है।"

भण्डारी चले गये। प्रभावतीबहन को बिठाकर मैं भी चली गई। स्नान किया और पंद्रह मिनट घूमने में प्रार्थना की।

लगातार दो रोज से मेरे हृदय में 'मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्' की भावना उठा करती है। भगवान, क्या तुम बा को अच्छी नहीं कर सकते हो? पौने बारह बजे मैं बा के पास आई और प्रभावतीबहन को खाने को भेजा। बापू नहाकर निकले, मगर बाहर चले गये। एक बार खाकर बैठें तो अच्छा है। उनकी यही इच्छा रहती है; क्योंकि एक बार बा के पास बैठकर उनका वहां से उठने का मन ही नहीं होता। आजकल वह तीन-चार रोज से मशीन की पीसी हुई सब्जी और दूध ही लेते हैं। सो दस-पंद्रह मिनट में पूरा हो जाता है। साढ़े बारह बजे के लगभग बापू बा के पास बैठे। थोड़ी देर में बा खाट पर सीधी सो गईं। महीनों से वह सीधी न हो सकी थीं। हमें लगा कि कहीं जाती तो नहीं हैं। देवदासभाई को फोन कराया। वह सोने की तैयारी में थे। फौरन आ गये। थोड़ी देर में दीनशा मेहता भी आ पहुंचे। बा से भजन और रामधुन के बारे में पूछा तो उन्होंने इन्कार कर दिया। बापू की सलाह से महादेवभाईवाले कमरे में गीता-पाठ होने लगा, जिसमें बा के कान में भी ध्वनि जाती रहे। पहले कनु बैठा। इतने में देवदासभाई कैमरा लेकर आये और उन्होंने गीतापाठ शुरू कर दिया। कनु देवदासभाई का लाया हुआ कैमरा सुधारने लगा, लेकिन सुधार न सका। तब देवदासभाई दूसरे कैमरे का प्रबन्ध करने गये। दीनशा को इसके लिए बाहर भेजा।

कल रात से बा को पानी पीने में अरुचि हो गई है, मगर जब सुना कि देवदास-भाई गंगाजल लाये हैं तो मुंह खोल दिया। बापू ने एक चम्मच गंगाजल मुंह में डाला। बा तुरंत पी गईं और बोलीं, "बस?" मानो कि उन्हें और चाहिए। बापू कहने लगे,

"बस अब फिर लेना।" बाद में गंगाजल फिर लिया। जल में तुलसी के पत्ते भी डाले गये थे।

थोड़ी देर में बा को कुछ शक्ति मिली। उठ बैठीं और संतोकबहन, केशुभाई, मनु, रामीबहन वगैरह से बातें कीं। भीड़ न हो, इसलिए दूसरे सब चले गये।

गीता-पारायण के बाद संतोकबहन और मनु ने बा को भजन सुनाये।

संतोकबहन वगैरह के आते ही बापू बा के पास से उठकर बाहर चले गये और अपनी खाट पर जाकर सो गये। मैं तो बा के पास थी। कभी बा मेरी गोद में लेट जाती थीं, कभी बैठ जाती थीं। दो बार बा को थोड़ा पाखाना हुआ। सफाई की। इसके बाद मैं थोड़ी देर आराम करने को चली गई। मगर कोई बुलाकर ले आया। बा का फोटो लेना था। चार बजे के करीब बा के पास से उठी।

फोटो के खयाल से बापू बा के पास बैठनेवाले नहीं थे। बापू अकस्मात बा के पास बैठे हों तो हम भले फोटो ले लें मैंने उनसे कहा कि अभी आप बा के पास बैठें। मैं थोड़ा सो लूं। बापू मान तो गये, पर बा के पास बैठे नहीं। बा दोपहर उनपर थोड़ा नाराज हो गई थीं। वह दुखी थीं। सबपर कभी-कभी नाराज हो जाती हैं। बापू कहने लगे, "अभी उसको अच्छा नहीं लगेगा। जब बुलायेगी तब जाऊंगा।"

मैं दूसरे कमरे में गई। वहां देवदासभाई आदि बैठे थे। पेनिसिलीन आ गई है, मगर दोपहर बा की हालत इतनी खराब थी कि वह इस्तेमाल नहीं की। अभी हालत अच्छी थी, सो देवदासभाई को लगता था कि क्यों न आजमाई जाय।

दोपहर बा संतोकबहन से कहने लगीं, "देवदास ने मेरे लिए बहुत धक्के खाये हैं। बहुत सेवा की है।"

देवदासभाई से भी कहा, "तूने मेरी बहुत सेवा की है। बहुत धक्के खाये हैं। अब तू अपना कर्तव्य पूरा कर।"

देवदासभाई बोले, "बा, सेवा तो डा० गिल्डर, सुशीला, मनु, इन लोगों ने की है। मैंने क्या किया है ?"

अंतिम समय पर देवदासभाई के आ जाने से बा को बड़ा आनन्द और संतोष था। रामदासभाई के विषय में देवदासभाई ने कहा, "बा, रामदासभाई आये हैं।" बा बोलीं, "क्या जरूरत थी ?" उनके मन में हमेशा यह भावना रहती है कि रामदासभाई को सफर का खर्च नहीं पड़ने देना चाहिए। देवदासभाई से बातें करके

बा ने आंखें बन्द कर लीं और ईश्वर की प्रार्थना करने लगीं—"हे कृपालु राम, अब तो तेरी भक्ति चाहिए, तेरा ही प्रेम चाहिए।" पीछे बोलीं, "हे भगवान, पशु की तरह पेट भर-भरकर खाया है। क्षमा करना।"

उनकी वृत्ति बिल्कुल सात्विक हो गई थी—उनका चेहरा उस समय देखने लायक था।

शाम को साढ़े पांच बजे भण्डारी और शाह पेनिसिलीन लाये। डा० गिल्डर को बापू का मत जानते हुए उसे देने में संकोच होता था। भंडारी और शाह ने बापू से पूछा तो वह बोले, "सुशीला और डा० गिल्डर देना चाहें तो भले दें।" थोड़ी देर बाद डा० गिल्डर ने मुझसे आकर कहा कि बापू बिगड़ रहे हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं था कि पेनिसिलीन के इंजेक्शन बार-बार देने पड़ेंगे। बापू का मत है कि बा मृत्यु-शय्या पर है, इसलिए अब पेनिसिलीन क्या देना। और लोगों का मत है कि जबतक श्वास है तबतक उपाय करना चाहिए। इतने में बापू ने मुझे देखा, पूछा "तुमने क्या तय किया है?" मैंने कहा, "पेनिसिलीन देंगे।" बापू बोले, "क्या तुम और डा० गिल्डर, दोनों मानते हो कि देनी चाहिए?" मैं 'हां' न कर सकी। देवदास-भाई से बातें करते समय यही बात हुई थी। मुझको निराशा हुई—इसलिए कि बा को बचाने का उपाय होते हुए भी उसका उपयोगनहीं कर पा रही हूं। साथ ही मानसिक शांति भी मिली कि व्यर्थ ही बा के शरीर को छेदना नहीं पड़ेगा।

प्रभावतीबहन अभी बा के पास जा बैठी थीं तब बा ने करुण स्वर में पुकारा था—"बापूजी!"

प्रभावतीबहन ने कहा, "बुलाऊं?" बा कुछ बोली नहीं। बापू सवा सात बजे घूमने को चले जाते हैं। आज पेनिसिलीन के कारण पहले डा० गिल्डर से बात की, पीछे देवदासभाई को समझाया। सो उन्हें देर हो गई थी। जाने के लिए गुसलखाने में तैयार होने को आये। इतने में प्रभावतीबहन ने बुलाया। बापू आकर बा के पास बैठ गये। बा दो बार उठकर सीधी बैठीं। बहुत बेचैन थीं। बापू ने पूछा, "क्या होता है?"

अजाने प्रदेश में खड़े एक छोटे बालक की तरह अत्यन्त करुण स्वर और तोतली जबान से उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ पता नहीं चलता।"

मैंने नाड़ी देखी—बहुत कमजोर थी। मगर मुझे लगा कि ऐसा तो कई बार हो चुका है, बा अभी ठीक हो जायंगी। इसलिए मैं बरामदे में कनु से कहने गई कि अब फोटो ले लो। मगर उसने कहा कि बापू ने मना किया है। मैंने कहा कि

फोटो के बारे में उन्होंने कहा था कि अकस्मात ले लोगे तो भले ले लेना, अब उसके लिए भी मना कर रहे हैं।

बा के भाई माधवदास आये। बापू कहते थे कि बा ने उन्हें पहचाना, उनकी आंखों में पानी आया, परन्तु वह उनसे बात नहीं कर सकीं।

इतने में भीतर कुछ गड़बड़ सुनी। देखा कि बा अंतिम बार उठने की कोशिश कर रही हैं और बापू कह रहे हैं, "अब पड़ी ही रह न!" बा उनकी गोद में पड़ गईं, आंखें पथरा-सी गईं और गले में घड़घराहट आरम्भ हो गई। ये सब मृत्यु के स्पष्ट लक्षण थे। अचानक श्वास लेने के लिए मुंह खुल गया और दो-चार श्वास लेकर बा सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो गईं।

: ६६ :

बा चली गईं

बापू ने सब तकिये निकालकर बा का सिर अपने हाथ पर ही टिका लिया। खाट की आड़ की गई थी, वह नीची कर दी गई। सब लोग आसपास खड़े थे। बापू ने आंखें बंद कर लीं। अंत समय में सब लोग 'राजाराम राम राम सीताराम राम राम' गाने लगे। मेरे मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। किंकर्तव्यविमूढ़ की भांति मैं खड़ी रह गई। डाक्टर होकर भी मृत्यु को तटस्थता से देखना मैंने नहीं सीखा।

दो-तीन रोज से बार-बार यही भावना उठती है कि ईश्वर किस प्रकार मनुष्य का घमण्ड उतारता है। जमनालालजी की मृत्यु की खबर सुनी तो लगा कि मैं पास होती तो उन्हें बचा लेती। उसके बाद ईश्वर ने मिनटों में दूसरा अवसर मेरे सामने महादेवभाई की मृत्यु का रखा। तब मुझे लगा कि मेरे पास सब साधन न थे—जेल में सब साधन कहां से होते? आज ईश्वर ने बा को मेरे ही सामने उठाया और चुनौती-सी दी कि कुछ कर सकती है तो कर; मैं कुछ न कर पाई। गिल्डर-जैसे अनुभवी डाक्टर, शर्मा-जैसे कुशल वैद्य और दीनशा-जैसे प्राकृतिक चिकित्सक, कोई बा के काल को न टाल सका।

७-३५ पर बा की आत्मा मुक्त हुई। रामधुन पूरी हुई। देवदासभाई फूट-फूट-

कर रोने लगे और 'बा-बा' पुकारने लगे। बापू ने उन्हें शांत करने का प्रयत्न किया। सबकी आंखें भीग गईं, पर मेरी सूखी थीं। अभी तक मेरी विमूढ़ता दूर न हुई थी। अवसर आने पर हमेशा मेरा यही हाल रहा है। महादेवभाई की मृत्यु के समय भी ऐसा ही हुआ था और अपने काका की मृत्यु के समय भी।

आखिर बापू उठे और मुझसे कमरा खाली करवाने को कहा। बा को स्नान कराने के बारे में आदेश देते हुए बोले, "तू और मैं दोनों मिलकर बा को स्नान करा देंगे, जैसाकि महादेव के वक्त किया था।"

बा को आज विशेष लाल किनारी की साड़ी, जो बापू के काते हुए सूत से बनाई गई थी, पहनाई जायगी। बा जब बापू के साथ सेवाग्राम से बम्बई जाने लगीं, तब यही साड़ी उन्होंने मनु को दी थी।

अफवाह थी कि आश्रम जब्त हो जायगा। इसीलिए बा ने कहा, "यह मेरी साड़ी संभालकर रखना। जब मैं मरूं, तब मुझे यह पहननी है। दूसरी तो बापू के हाथकते सूत की कौन जाने कब मिलेगी।"

मनु ने तब यह जानकीबहन के यहां रखवा दी थी। बा यह साड़ी यहां मंगवाना चाहती थीं, मगर पता न चला था कि कहां रखी है। मनु जब यहां आई तो उसने आश्रमवालों को एक पत्र लिखा और बा के लिए उसे मंगवा लिया। आज बा के लिए यह साड़ी पहनने का दिन आ गया।

बा के शव को बापू के स्नान-घर में रखा। इतने में भण्डारी आ गये। सरकार ने पुछवाया था कि शव के बारे में बापू की क्या इच्छा है। बापू ने तीन प्रस्ताव सरकार के सामने रखे :

"(१) सबसे अच्छा तो यह होगा कि शव मेरे लड़कों व रिश्तेदारों को सौंप दिया जाय। इसका अर्थ यह होगा कि अंत्येष्टि-क्रिया आम जनता के सामने होगी और सरकार उसमें रुकावट न डालेगी।

"(२) अगर यह न हो सके तो महादेव की भांति दाह-क्रिया यहीं हो। सरकार यह कहे कि सिर्फ रिश्तेदार ही क्रिया के समय हाजिर रह सकते हैं तो मैं इसे स्वीकार न कर सकूंगा, जबतक कि मेरे वे सब मित्र, जो मेरे लिए कुटुम्बियों के समान हैं, उसमें शामिल न हो सकें।

"(३) अगर सरकार को यह भी मन्जूर न हो तो वे सब लोग, जिन्हें बा से मिलने के लिए यहां आने की इजाजत दी गई थी, वापस चले जायंगे और अंत्येष्टि-

क्रिया में वे ही मौजूद रहेंगे, जो मेरे साथ यहां नजरबंद हैं।"

तब बापू भण्डारी से कहने लगे, "बा अपना राज्य लेकर चली गई, अब मेरा राज्य है। उसकी खातिर मैं बहुत-सी बातों को बरदाश्त कर लेता था, मगर अब मुझे वैसा करने की जरूरत नहीं। मेरे लिए मित्रों और रिश्तेदारों में कोई फर्क नहीं है।"

बापू कहते गये, "आप साक्षी हैं कि अपनी पत्नी की इस सख्त बीमारी से किसी प्रकार का राजनैतिक लाभ न उठाने की मेरी हमेशा कोशिश रही है, मगर हमेशा मेरी इच्छा यह रही है कि सरकार जो कुछ भी करे, अच्छे ढंग से करे। मुझे डर है कि आजतक उसका अभाव रहा है। क्या यह आशा रखना बड़ी बात होगी कि कम-से-कम मरीज की मृत्यु के बाद सरकार जो कुछ करेगी, अच्छा ही करेगी!"

भण्डारी के पूछने पर बापू ने बताया कि मित्रों की संख्या लगभग सौ होगी और देवदास ही निश्चय करेगा कि कौन आये, कौन नहीं।

उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि सार्वजनिक दाह-क्रिया होगी तो जनता का प्रदर्शन पूर्णतया शान्त होगा। "मेरे लड़के मर जायंगे, मगर अशान्ति नहीं फैलने देंगे।"—बापू ने कहा।

बा जब विदा ले रही थीं, तब मथुरादासभाई सपरिवार दरवाजे पर खड़े थे, मगर उन्हें अन्दर नहीं आने दिया गया। भण्डारी ने बापू से कहा, "अगर वह अन्दर आकर फिर बाहर गये तो खबर फैल जायगी और फलस्वरूप शहर में गड़बड़ हो सकती है।"

बापू बोले, "अगर वह भीतर आजायं और एक-दो घंटे यहीं रहें, तबतक आप सरकार से हुक्म जारी करा सकेंगे तो सब काम ठीक हो जायगा न? बजाय इसके कि सड़क पर खड़े-खड़े इंतजार करें, अंदर हों तो ज्यादा अच्छा होगा।" इसपर मथुरादासभाई को भीतर आने की इजाजत मिली।

बापू बा के शव को नहलाने से पहले मुंह-हाथ धोने लगे। इतने में कटेली-साहब बापू के पास आये और बोले, "दाह-क्रिया यदि सार्वजनिक रूप से हो तो आप बाहर तो न जाना चाहेंगे?"

बापू ने उत्तर दिया, "मैं नहीं जाऊंगा। मेरे लड़के ही सब-कुछ कर लेंगे।"

शव को स्नान कराते समय बापू ने कहा कि जो बहनें चाहें, अन्दर आ सकती हैं। मैं और बापू साबुन लगाकर बा का शरीर साफ करने लगे और प्रभावतीबहन

पानी डालने लगीं। मनु और कनु बा के कमरे में फिनाइल का पोता लगा रहे थे। मैंने बा के बाल धोये और पैर साफ किये। फिर पीठ साफ की।

बा को नहलाकर और शरीर पोंछकर जेल की एक चादर पर लिटा दिया और उसपर गंगाजल छिड़का। इसके बाद उन्हें बापू के सूत की लाल साड़ी पहनाई। श्रीमती ठाकरसी की भेजी हुई हरे किनारे की एक साड़ी को गंगाजल में भिगोकर सुखाया और शव के नीचे बिछा दिया। बा के बालों को कंघी की। बापू कहने लगे कि बालों को खुले ही रहने दो। बा के बाल बांधने की डोरी उन्होंने स्वयं धोई।

बा की कंठी और चूड़ियां उतार ली गईं। मनु जयसुखलाल ने बा की कंठी के साथ-साथ बापू से बा की चूड़ियां भी ले लीं।

संतोकबहन ने तुलसी की एक नई कंठी बा को पहनाई और बापू के सूत का हार भी उनके गले में डाला। बापू के सूत को रंगकर उसके गजरे बनाये और बा के हाथों में पहनाये। मनु मशरूवाला ने माथे पर कुंकुम का लेप किया और चन्दन का टीका लगाया। ऐसा लगता था, बा सो रही हैं। बहुत सुन्दर लगती थीं।

उन्हें उठाकर बाहर लाये। जेल की एक चादर पर उन्हें लिटाया। मीराबहन ने चूने से एक लम्बी चौक बनाई थी। चौकी के सिरहाने ॐ बनाया था और पैताने स्वस्तिक बनाई थी। मृत्यु के बाद व्यक्ति लम्बा हो जाता है। यह अनुभव मुझे महादेवभाई की मृत्यु के समय पर पहली बार हुआ और आज भी उसीकी पुनरावृत्ति हुई। बा के पैरों ने स्वस्तिक को ढंक लिया। उनके सिरहाने और पैताने 'हे राम' के चित्र शोभित हो रहे थे। हम लोग कम्बल बिछाकर बा के चारों ओर बैठ गये।

इतने में भण्डारी सरकारी जवाब लेकर आये और बताया कि आम जनता के सामने दाह-क्रिया करने की इजाजत तो सरकार नहीं दे सकती, मगर मित्र और रिश्तेदार सौ तक की संख्या में यहां सम्मिलित हो सकते हैं। देवदासभाई दरवाजे पर रहकर जिसे अन्दर आने देना चाहेंगे, वे सभी अन्दर आ सकेंगे। स्वामी आनन्द, श्रीमती ठाकरसी और शांतिकुमार भी आ पहुंचे। मीराबहन और मनु वगैरह ने शव पर फूल चढ़ाये। जो दीपक बा तुलसी के पौधे के पास रखा करती थीं, वही घी का दीपक बा के सिर के पास आज जल रहा है। दोनों तरफ धूप सुलगाई गई है।

बापू सिर के पास एक ओर बैठे। प्रार्थना करवाई गई। गीता-पाठ करनेवाले बा के पांवों के पास बैठे। उनमें जमनादासभाई, केशुभाई, राधाबहन, भाई, कनु,

प्रभावहन, मनु और मैं थे। पहले बापू ने कहा कि सब जने दो-दो अध्याय बोलें, मगर यह ठीक न लगा। कनु कहने लगा कि सबकी ध्वनि बदला करेगी—अच्छा नहीं लगेगा। मैंने कहा कि देवदासभाई स्वर उठायें—हम सब उनके पीछे बोलेंगे। बापू कहने लगे, "पाठ मधुर नहीं होगा तो मैं कहीं भी बन्द कर दूंगा।" अन्य भजनों के साथ-साथ गीता का सम्पूर्ण पारायण १ घंटा २५ मिनट में पूरा हुआ। बापू उसमें एकदम तल्लीन हो गये। बाद में कहने लगे, "बहुत ही अच्छा चला। बड़ा ही मधुर पाठ था। देवदास अपनी पुरानी चीज को भूल नहीं गया, यह मुझे बड़ा अच्छा लगा।"

अब कल कौन-कौन आयगा, इसपर बात चली। प्रस्ताव रखा गया कि बम्बई से आनेवालों के लिए बा की दाह-क्रिया का समय कल क्या ६ बजे से बढ़कर ११-१२ बजे का नहीं हो सकेगा! बापू ने उत्तर दिया, "मैंने मित्रों को बुलाने की बात जब की थी, तब बम्बई मेरी कल्पना से बाहर थी। मैंने तो सोचा था कि पूना से ही मित्र लोग आयेंगे। इसलिए तुम लोग बम्बई की बात छोड़ दो।"

हम लोगों ने प्रार्थना की, "बापू, बा को देखने की कितनी अधिक लालसा लोगों में होगी, आप इसका खयाल करें। और इसी निमित्त आपके भी दर्शन उन्हें हो जायंगे तो वे शांति पायेंगे और आज के बाद तो इस महल के दरवाजे पर दोहरा ताला लगनेवाला है ही।"

तब बापू बोले, "तो भी मैं बा की मृत्यु का ऐसा उपयोग नहीं करना चाहता। लोगों को खबर हो जायगी तो वे आना ही चाहेंगे। फिर हम खामखा क्यों किसी-को तकलीफ दें।"

किसीने कहा, "कम-से-कम फोन तो करने दीजिये कि जिसके पास साधन हों, वे आ सकते हैं।"

मगर बापू नहीं माने। उन्होंने श्रीमती ठाकरसी से कहा कि स्थानीय लोगों को ही बुलायें। इसके बाद मनु और संतोकबहन के सिवा अन्य लोगों को बाहर भेज दिया जाय।

एक बजे के करीब बापू खाट पर लेटे। बा को पेनिसिलीन देने के बारे में बापू ने मना किया था। उसकी बात करते हुए वह कहने लगे, "ईश्वर ने मेरी श्रद्धा की परीक्षा ली। मना करके मैंने ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा और सिद्धांत की दृढ़ता बता दी। ऐसा न करता तो भी बा को इंजेक्शन देने का समय ही नहीं रहा था।"

मैंने कहा, "हां, पिचकारी अभी उबल ही रही थी कि बा चल दीं।"

बापू बोले, "कुछ होनेवाला तो था ही नहीं। मैंने अगर मना न किया होता तो बस मेरी लाज जानेवाली थी।"

देवदासभाई कह उठे, "फोटो के बारे में भी यही बात है। बापू ने मना न किया होता तो भी कनु कुछ नहीं कर पाता। कैमरे में फिल्म बैठाता ही कि इतने में बा चल देतीं।"

एक बजे के करीब बापू खाट पर लेटे। २॥ बजे तक मैं देवदासभाई के पास बैठी बा के स्मरणों की बात करती रही। प्रभावहन, मनु मशरूवाला और देवदास-भाई शव के पास तीन बजे तक बैठे। तीन से पांच तक कनु और संतोक बैठे। पांच से सात बजे तक मैं और भाई बैठे। शव के पास बैठकर बापू ने प्रातःकाल की प्रार्थना कराई।

: ६७ :

अन्त्येष्टि-क्रिया

२३ फरवरी '४४

बापू साढ़े छः बजे उठे, प्रार्थना कराई और फल का रस लिया। तब उन्होंने सबको नाश्ता करने की सलाह दी, मगर संतोकबहन ने कहा कि शव को जलाकर स्नान किये बिना पानी नहीं पिया जा सकता। यह जानकर हम लोगों ने कुछ नहीं खाया-पिया। केवल डा० गिल्डर और श्री कटेली ने चाय पी।

७॥ बजे फिर रात की जगह आकर बैठ गये। हम लोगों ने बगीचे में से ताजे फूल लेकर सजावट की।

मैं, कनु और कटेली दाह-क्रिया की जगह देखने गये। महादेवभाई की समाधि के पश्चिम की तरफवाली दीवार हटा दी गई थी। समाधि के पास ही बा के शव के लिए स्थान तैयार हो रहा था। बा हमेशा कहा करती थीं, "मुझे कहां बाहर जाना है! मुझे तो महादेव के पास ही आखिरी नींद में सो जाना है।"

वह सच ही हुआ। मुझे हमेशा आशा रही थी कि बा को अपने साथ लेकर जायंगे। वह आशा मिट्टी में मिल गई। स्वतंत्रता की वेदी पर इस जेल में यह दूसरा

बलिदान हुआ। क्या ऐसे-ऐसे बलिदान हर साल देने पड़ेंगे ? हमें यह सहर्ष स्वीकार हो सकता है, मगर भगवान बापू को इस जेल से सही-सलामत बाहर निकाले और पूर्ण विजयी बनने की शक्ति प्रदान करे। यही अन्तरात्मा की प्रभु से विनती है।

धीरे-धीरे लोग बाहर से आने लगे। सबसे पहले नरगिसबहन, पीछे और सब लोग। श्रीनिवास शास्त्री, केलकर, कृष्णा हठीसिंग और उनके पति आदि आये। पता लगा कि शांतिकुमार की पत्नी हवाई जहाज से आ रही हैं।

महादेवभाई की दाह-क्रिया जिन ब्राह्मणों ने कराई थी, वे ही फिर आ पहुंचे।

कटेली ने शव के लिए शुद्ध खादी मंगाई थी, लेकिन बापू ने उसे यह कहकर अलग करा दिया कि खादी बेकार जलाना नहीं चाहता। यह गरीबों के काम आयेगी।

रात को श्रीमती ठाकरसी ने चन्दन की लकड़ी के बारे में बापू से बात की। बापू ने उत्तर दिया, "जब मैं गरीबों को चन्दन की लकड़ी से नहीं जला सकता तो बा को, जो उस व्यक्ति की पत्नी है, जो अपने-आपको गरीब-से-गरीब मानता है, चन्दन से कैसे जला सकता हूं ?"

कटेली बोले, "मेरे पास चन्दन के दो पेड़ कटे पड़े हैं।" बापू कहने लगे, "तुम तो जो दोगे, वही काम में आयेगा। आखिर सरकार को ही तो सारा इंतजाम करना है।"

ब्राह्मणों और रिश्तेदारों ने मिलकर अर्थी तैयार की। ब्राह्मण-लोग देवदास-भाई से पूजा करवाने लगे। इसके पहले मनु मशरूवाला ने बा की आरती उतारी थी। 'वैष्णवजन'-वाला भजन गाया गया और रामधुन चलाई गई। यह सब हो चुकने पर सब लोगों ने बा को प्रणाम किया। मैं स्वयं बा के चरणों पर सिर रख-कर अपनी भूल-चूकों के लिए क्षमा मांगने लगी। उस समय मैं अपने-आपको रोक न सकी, आंखों से आंसू गिरने लगे। मैं जल्दी से गुसलखाने की ओर चली गई। कल से मैं मनु और प्रभावतीबहन वगैरह को समझा रही थी कि रोने से मृतक की आत्मा को क्लेश होता है, सो मुझे रोते देखें तो ठीक नहीं।

लीलावती आसर आईं, कल दिनभर पूना में थीं, मगर जीवित बा के दर्शनों का सौभाग्य उनके लिए नहीं था। बापू की गोद में गिरकर फूट-फूटकर रोने लगीं। जब लोग आने लगे तो बापू दरवाजे के पास ही खड़े हो गये। मृदुला भी पहुंच गई। बालकोबा गेरुवे कपड़े पहने इकतारा और करताल बजाते हुए कीर्तन कर रहे

थे। लोग दर्शन करके बगीचे में जाकर बैठते थे।

साढ़े नौ बजे के बाद अर्थी सजी। बालुकाका के लाये हुए तिरंगे झण्डे से शव को ढंक दिया गया। सिंदूर में रंगे हुए सूत की आंटियों से शव को अर्थी पर बांधा गया। यह सूत मेरा काता हुआ था। झंडे को फूलों से सजाया।

कनु ने उस समय कई फोटो लिये। जीवित बा के पास बैठे हुए बापू का चित्र तो वह न ले सका, पर मृत बा के पास बैठे हुए बापू का फोटो लिया। फोटो लेकर कैमरा श्री कटेली को सौंप दिया गया। वह ही सब सामान अपने पास रखेंगे।

श्मशान में कुछ आवश्यक पूजा आदि के पश्चात कनु, जयसुखलालभाई, शांतिकुमारभाई, कमलनयन बजाज वगैरह ने चिता की लकड़ी चिनी। शव को चिता पर रखवाकर बापू ने प्रार्थना करवाई। ईशावास्यमिदं सर्वं, असतो मा सद्गमय, अउज़-अ-बिल्ला, मजदा अ मोइ वहिश्ता, ल्हेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रॉस, मंगल मन्दिर खोलो, रामधुन (राजा राम राम) तथा गीता का बारहवां अध्याय चला।

तब देवदासभाई ने साढ़े दस बजे चिता में आग दी।

बापू एक लकड़ी का सहारा लिये खड़े थे। कुछ लोगों ने दौड़कर कुर्सी का प्रबन्ध किया और कुछने उनसे बैठने की प्रार्थना की; पर बापू ने बैठने से इन्कार कर दिया। मीराबहन ने बापू के ऊपर अपने छाते से छाया कर ली।

ज्वाला जब खूब भड़की तब लोगों को कुछ पीछे हटना पड़ा। बापू भी हटे और इमली के पेड़ के नीचे जाकर कुर्सी पर बैठे। आशा थी कि बारह बजे तक क्रिया पूरी हो जायगी, मगर अग्निदाह ही साढ़े दस बजे शुरू हुआ।

बा के शरीर में पानी भरा था, चिता भी उचित रीति से चिनी नहीं गई थी, इसलिए जलने में बड़ा समय लगा। अधजला शव जब बांस से चिता पर ठीक रखने के खयाल से हटाया जाता था, तब बार-बार नीचे लुढ़क जाता था। भयानक दृश्य था। सिर के पास अभी और लकड़ियां रखने की आवश्यकता थी। दूर से फेंकने पर लकड़ियां ठिकाने पर न पड़कर इधर-उधर गिरती थीं। आखिर कनु हिम्मत करके पास जाकर लकड़ी ज्वाला में रखकर आया। उसकी आंखों की पलकें, मुंह और हाथ झुलस गये। शान्तिकुमारभाई सब समय लकड़ी डाल रहे थे। सगा पुत्र अपनी मां के शव की दाहक्रिया में इससे अधिक प्रेम और भक्ति से काम नहीं कर सकता।

लगभग दो घण्टे बाद बापू से कहा गया कि वह जायं, हम लोग पूरा करके आयेंगे। बापू उठनेवाले थोड़े ही थे, बोले, "६२ वर्ष साथ रहकर अब आखिर के

दिन मुझे इतनी क्या जल्दी लगी है ! बा भी क्या कहेगी !" यह सुनकर सब चुप हो गये। बहुत-से लोग चले गये और बहुत-से बैठे रहे, पर बापू नहीं उठे।

साढ़े चार बजे सब क्रिया सम्पन्न हो गई। बापू तब ऊपर आये। मैं स्वयं साढ़े तीन बजे के बाद बहुत घबरा गई थी। धूप में खड़े रहने से प्यास बढ़ रही थी, थकान-सी चढ़ी थी और सिर चकरा रहा था। इतने में आई हुई एक बहन ने कहा कि उसे गुसलखाने में ले चलूं। कटेली से पूछकर मैं उसे ऊपर ले गई। जाकर पहले तो ठंडे फर्श पर लेट गई, फिर स्नान किया, जिससे कि लोगों के आने पर उनकी मदद कर सकूं। फिर नीचे गई, मगर वापस आना पड़ा। श्मशान में खड़े रहने की शक्ति स्नान के बाद भी नहीं आई थी। चार बजे कृष्णा हठीसिंग ऊपर आईं। उनके सिर में दर्द था। 'एस्प्रिन' चाहिए था। डा० गिल्डर ने गोली दी, चाय पिलाई। दुबारा नीचे आई, तब बापू ऊपर आ रहे थे। उनके स्नान की तैयारी कराई, मगर उन्हें तो पहले सबको विदा करना था। सो कुछ लोग बरामदे में खड़े रहे। आखिर सब लोग एक-एक करके चले गये, तब बापू ने स्नान करके भोजन किया। केवल देवदासभाई इसलिए रह गये कि उन्हें बा के फूल चुनकर शुक्रवार के दिन जाना है। शुक्रवार तक वह बाहर न जा सकेंगे।

रामदासभाई अभीतक नहीं आये। आये तो यहां रह सकेंगे। छः बजे भण्डारी आये। बापू ने उनसे कहा कि बा की सेवा के लिए जो लोग आये थे, उनमें से कनु भले जाय, मगर थोड़े दिन बाद। उसे बाहर बहुत काम है। मनु यहां अभ्यास के लिए रहना चाहती है। बापू रखने को तैयार हैं—सरकार रहने दे तो। नहीं तो उन्हें अपने पास उसे रखने का कोई कारण नहीं है। प्रभा तो कैदी हैं। उनको या तो यहीं रहने दें, अगर यहां से ले ही जाना हो तो उन्हें बिहार वापस ले जायं। दूसरी जगह न ले जायं। भण्डारी ने इन बातों को ध्यान में रखने का वचन दिया।

देवदासभाई और भाई साढ़े छः बजे खाने को बैठ ही रहे थे कि रामदासभाई आ पहुंचे। उन्हें बहुत सदमा हुआ था। खूब रोये। फिर देवदासभाई उन्हें चिता पर ले गये। उसके बाद वह स्नान करने गये। देवदासभाई और भाई खाने को बैठे। रामदासभाई को मनु ने खाना खिलाया। ७। बजे हम सब नीचे गये—महादेवभाई व बा को फूल चढ़ाये, फिर ८। बजे प्रार्थना हुई। बा के शववाले स्थान पर घी का दिया जलाया और धूप-अगरबत्ती सुलगाई। घर सूना है। बा का कमरा सूना है। हम सबका मन सूना है। बा की मृत्यु आदर्श भले ही हो, मगर करुण भी बहुत है।

उनकी तीव्र इच्छा थी कि एक बार बाहर जाकर अपने लड़के-बच्चों के बीच बैठें, मगर ईश्वर को यह मंजूर न था।

बातों के दौरान में बापू से पूछा गया कि बंगाल के दुष्काल के बारे में उनका मत क्या है। बापू ने कहा, "मैं मानता हूं कि कांग्रेस बाहर होती तो यह होता ही नहीं, अर्थात् कांग्रेस उसको निबटा लेती और और इतने लोग नहीं मरते।" इसपर किसीने पूछा, "तो क्या इसका यह मतलब नहीं कि कांग्रेस को किसी भी तरह बाहर न जाना चाहिए ? कई लोग कहते हैं कि क्या ऐसी हालत में अपने स्व-मान को लेकर जेल में बैठे रहना अनुचित नहीं है ?" बापू ने उत्तर दिया, "अपना स्व-मान रखने के लिए जो जेल में जाता है, वह मूर्ख है।"

प्रश्नकर्त्ता ने जल्दी से अपना प्रश्न सुधारा, "अपना स्व-मान नहीं, देश का स्व-मान।" बापू बोले, "जो देश के स्व-मान की खातिर प्राणों की बाजी नहीं लगाता, वह मूर्खों का सरदार है। बात यह है कि परिस्थिति में कांग्रेस बाहर रहकर भी कुछ नहीं कर सकती। उसके हाथ में सत्ता हो तभी कर सकती है और वह है नहीं। इसी-लिए कांग्रेस आज बाहर नहीं है।"

इसके बाद दूसरी बातें हुईं। पता चला है कि सरकार के गोपनीय आंकड़ों के अनुसार सन् '४२ की लड़ाई में हमारे ५०,००० आदमी उन्होंने मार डाले हैं। मगर ऐसी चीज़ वह प्रकट थोड़ा ही करने देने वाले हैं।

प्रार्थना के बाद बापू ने काता। कुछ तार आये थे। भाई उन्हें पढ़कर सुनाते रहे। थोड़े समय बातें चलीं। सोने को गये तो बारह बजे थे। मैं तो खाट पर साढ़े बारह बजे जाकर पड़ी, मगर नींद कहां। दो बजे का घण्टा सुनने के बाद सो सकी। सोचा था कि डायरी पूरी करने के बाद सोऊंगी, मगर सब सोने को चले गये थे। बा के कमरे के सिवा और कहीं बत्ती नहीं जलाई जा सकती थी; क्योंकि सब जगह लोग सो रहे थे। बा के कमरे में इतना सूना लगता था कि वहां बैठना कठिन था, इसलिए जल्दी खाट पर जा पड़ी।

देवदासभाई ने बापू के पैरों की मालिश की, भाई ने सिर की। रामदासभाई संकोचवश नहीं गये थे—"कहीं ठीक न कर सकूं तो!" यह बात उनके नम्र स्वभाव की सूचक थी।

: ६८ :

वियोग-वेदना[1]

२४ फरवरी '४४

सुबह प्रार्थना के लिए सब उठे। प्रार्थना मधुर थी। फिर कई लोग सोये। कनु, प्रभा और मनु—तीनों कातने बैठे। देवदासभाई ने कहा था कि घूमने के समय उन्हें जरूर जगा लिया जाय। एक बार उन्हें जगाया। वह फिर सो गये। पहले विचार किया कि दुबारा न जगाया जाय, मगर फिर उनके आग्रह का विचार करके और यह सोचकर कि वे यहां दो-तीन दिन ही हैं, कौन जाने बापू से फिर कब मिल पायेंगे, उन्हें फिर जगा दिया।

बापू सुबह घूमने जाने लगे तब सभी लोग उनके साथ हो लिये। बापू यह देखकर बोले, "आज तो मण्डल भरा है। जो बात बा के जीते-जी न हो सकी, वह उसके चले जाने के बाद अपने-आप हो गई है।"

बा की समाधि के स्थान पर हम लोग गये। चिता अभी तक धधक रही थी। बापू ने कहा कि राख रखनी हो तो अभी रख ली जाय; मगर देवदासभाई ने कहा कि अभी तो पूरे २४ घंटे भी नहीं हुए हैं। श्री कटेली और डा० गिल्डर भी फूल लाये। कुछ सिपाही भी फूल लाये थे। समाधि को सजाकर प्रार्थना की।

महादेवभाई की समाधि को फूलों से खूब सजाया और प्रार्थना पूरी की। बा की एक बात याद आगई, दिल भर आया। वह कहा करती थीं—"मुझे तो महादेव के पास जाकर आखिरी नींद सोना है।" आज सचमुच ही वह महादेव के पास ही पड़ी हैं। उनकी याद के सामने मुझे शकुन्तला की याद भूल गई है।

खाने के समय बापू को समवेदना के १५० तार पढ़कर सुनाये गये। चार बजे के करीब बा का सामान खोला गया और देवदासभाई की सहायता से यह निश्चित किया गया कि बा की कौन-सी चीज किसे देनी है। पिछले साल बा ने एक सफेद शाल मुझे दिया। देवदासभाई ने वह मुझे फिर दे दिया। मेरा आग्रह यह था कि घर के आदमियों को देने से कुछ बचे तो मुझे दिया जाय। भाई के सूत की एक साड़ी

---

[1] यह विवरण २७ फरवरी को लिखा गया था।

बा के पास थी। वह देवदासभाई मुझे देने लगे। भाई ने वह लक्ष्मीभाभी को देने को कहा। मैंने कहा, "मुझे साड़ी देनी ही हो तो राजकुमारी के सूत की कती हुई साड़ी, जो पिछले साल नये वर्ष के दिन मुझे बा देना चाहती थीं, वह दे दीजिये।" अन्त में देवदासभाई ने बा का बिस्तर खोलकर वह निकाली और मुझे दे दी। बा का नमदा बापू के लिए रखा गया।

रात को बापू ११ बजे तक बात करते रहे। बा के स्मरणों की बातें थीं।

बा के श्राद्ध के बारे में बातें करते समय देवदासभाई कहने लगे, "गंगा में अस्थियां प्रवाहित करने से कोई लाभ नहीं होगा।" परन्तु बापू बोले, "बा की श्रद्धा और भक्ति के विचार से उसकी अस्थियां गंगा में ही जानी चाहिए।" बाद में प्रयाग ले जाना तय हुआ। बापू १२ बजे के बाद सोये।

रामदासभाई और देवदासभाई ने मिलकर बापू की मालिश की। दोपहर को रामदासभाई ने उनके पैरों की मालिश की थी। सुबह घूमते समय तय हुआ था कि हम लोग जबतक कनु, मनु, प्रभा, देवदासभाई, रामदासभाई यहां हैं, तबतक उन्हें बापू की सेवा करने का मौका दें; क्योंकि दोनों भाई कल चले जायंगे। कनु वगैरह का भी कुछ ठीक नहीं है।

२५ फरवरी '४४

सुबह की प्रार्थना में देवदासभाई ने भजन गाया। बड़ा ही मधुर था। बेचारे रात को सो नहीं सके थे। बहुत खिन्न-चित्त हैं। अभी कह रहे थे, "जीवन का सब सौन्दर्य और माधुर्य धीरे-धीरे जा रहा है। पहले महादेवभाई गये और अब बा।"

भाई से बातें करते-करते कहने लगे, "क्या कहूं, तुम लोग अन्दर हो और हम बाहर हैं; मगर बा पर जो यहां बीती, वह मुझपर कितने अरसे से बीत रही है। ऐसा लगता है कि जीवन में से कुछ हमेशा के लिए चला गया है और पहले जैसे दिन अब वापस आने वाले नहीं हैं।"

भाई बोले, "हां, एक ही आश्वासन है कि थोड़े ही दिनों में हमें भी अनन्त विश्राम करने को मिलेगा। हमारे प्रियजन पहले से ही वहां हमारी राहें देख रहे हैं। वहां जाकर फिर सब इकट्ठे होंगे।"

सुबह जब हम लोग घूमने गये तो मनु और प्रभावती ने बा के शव की राख शीशियों में भर ली। कल शाम को भी भरी थी। चिता पर बा के शव के साथ पांच कांच की चूड़ियां भी डाली गई थीं। प्रभावतीबहन और रघुनाथ को पांचों चूड़ियां

मिल गई। इतनी प्रचंड ज्वाला में भी वे न तो पिघलीं और न टूटीं। ब्राह्मण कह रहा था कि यह शुभ शकुन है, अखण्ड सौभाग्य का चिह्न है।

ब्राह्मण एक बजे आया। देवदासभाई से पूजा कराई। चिता अभी तक बड़ी गरम थी, इसलिए अस्थियां चुनने से पहले पानी डालना पड़ा। अस्थियां चुनी जाने के बाद राख इकट्ठी की गई। बापू पहले तो खड़े रहे, पर बाद में नीम के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गये। हरिलालभाई भी आ पहुंचे।

साढ़े दस बजे ब्राह्मण ने बापू से कहा कि पौन घंटे बाद उनकी जरूरत पड़ेगी। इसपर बापू मालिश आदि पूरी करवाकर ११॥ बजे फिर नीचे गये और आवश्यक पूजा वगैरह पूरी की। इसके बाद उन्होंने ऊपर आकर खाना खाया।

चिता पर से आकर देवदासभाई और रामदासभाई ने स्नान किया। एक बजे देवदासभाई, रामदासभाई, हरिलालभाई, तथा भाई एक साथ भोजन करने बैठे। बापू हरिलालभाई को खाने के समय देखने आये। हरिलालभाई के दांत तो हैं नहीं, इसलिए डबल-रोटी, कोको और सब्जी ले रहे थे। खाते-खाते कहने लगे, "यह सब मुझे दक्षिण अफ्रीका की याद दिलाता है।"

मैं सोच रही थी कि अपने बेटों को एक साथ बैठे देखकर उन्हें खिलाते हुए बा कितनी खुश होतीं। देवदासभाई कहने लगे कि बा होतीं तो वे भी बापू की तरह हरिलालभाई को देखने आतीं।

बापू ने हरिलालभाई से बातें कीं।

बा की चीजों को अपने यहां रखने के लिए किसी संग्रहालय ने बापू से प्रार्थना की थी। बापू को यह नापसन्द है। कहते हैं, "यह तो मूर्त्ति-पूजा हुई। जो बा को पहचानते हैं, जिन्होंने बा की सेवा और भक्ति की है, वह भले ही बा की चीजें अपने पास रखें। मनु बा का डोरा पहनती है तो उसे लगेगा कि यह डोरा पहनकर कोई भी बुरा काम कैसे किया जा सकता है। मैं इस तरह की योजना पसन्द करता हूं, लेकिन संग्रहालय में कोई चीज रखना मुझे पसन्द नहीं है।"

प्रार्थना के बाद तीनों भाई सामान संभालकर चलने लगे। देवदासभाई ने जो साड़ी लक्ष्मीबहन के लिए निकाली थी, वह मुझे मेरे आग्रह पर दे दी। अब लक्ष्मी-बहन को वह साड़ी मिलेगी, जिसे भाई ने बा के लिए बनाया था। मुझे यह बात अच्छी लगी। गर्मी के दिनों में बा की साड़ी पहनूंगी और ठंडक के दिनों में उनका दिया हुआ शाल ओढूंगी।

रात को पौने दस बजे तीनों भाइयों को विदा किया। देवदासभाई जब बा का बिस्तरा बांध रहे थे तब बापू उधर से गुजरे और बोले, "देखो, बिस्तरा वैसे ही बांधना जैसे बा बांधती थी।" बा सचमुच ही अपना बिस्तरा बड़ी सुघड़ता से बांधती थीं।

२६ फरवरी '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। मगर अब उनके पास बा भी पहुंच गई हैं।

बा की मृत्यु के धक्के से बापू अभी संभल नहीं पाये हैं। बासठ वर्ष का साथ—विलायत के तीन वर्ष और जेल-यात्राओं आदि के कुछ और समय के अलावा वह कभी बा से अलग नहीं रहे। बचपन में भी वह साथ खेला करते थे। शादी से भी पहले यानी बासठ वर्ष से पांच-सात वर्ष पहले से वे दोनों साथ ही खेला करते थे। ऐसे साथी का चला जाना साधारण घटना नहीं है।

देश को बा के जाने का भारी धक्का पहुंचा है। सैकड़ों तारों के अलावा मालवीयजी का भी तार देवदासभाई के नाम आया है कि बा के फूल लेकर त्रिवेणी आओ। देवदासभाई तो पहले से ही तैयार बैठे हैं।

बा की राख का बोरा एक मोटर में रखकर देवदासभाई अन्य लोगों के साथ गये। हरिलालभाई न थे, इससे बापू को दुःख हुआ।

सुबह ८। बजे बापू घूमने निकले। उनके और मनु के अलावा सबने स्नान कर लिया था। ८।।। बजे बा और महादेवभाई के 'मंदिर' पर फूल चढ़ाने गये। बापू ने बा की समाधि पर गुलाब का फूल चढ़ाया। मीराबहन ने इस फूल को बीच में रख कर चारों ओर फूल सजाये। सबने अपनी-अपनी पुष्पांजलि अर्पित की। डा० गिल्डर और कटेली अभी रोज आते हैं, थोड़े फूल भी लाते हैं। सजावट होने पर बारहवें अध्याय का हमेशा की तरह पाठ होता है। कनु और प्रभावहन ने बापू की मालिश की। प्रभाबहन ने स्नान कराया और कनु ने उनके कपड़े धोये। मनु ने खाना दिया।

आज शाम को बापू कहने लगे, "मेरा मन बा को छोड़कर और किसी चीज का विचार ही नहीं करता। आज 'डॉन' में एक लेख पढ़ते-पढ़ते मुझे लगा कि बेवल कौन है—वाइसराय है या और कोई!" मैक्सवेल के व्याख्यान को लेकर जो पत्र बापू ने लिखा था, उन्होंने उसे खाने के समय सुधारा और कनु ने उसे टाइप किया।

मैंने बापू से कहा, "बापू, बा के जाने का असर आपपर महादेवभाई के जाने से भी अधिक हुआ है।" बापू बोले, "हां, हो सकता है। महादेव तो क्षणभर में चला गया, मगर बा ने हफ्तों तक कठिन वेदना सही। मुझे वह दिन भूलते ही नहीं हैं।" बापू दो बजे बाद सोये और तीन बजे उठे। तब बा की मृत्यु पर आये हुए गवर्नर के पत्र का उत्तर लिखा। मिट्टी की पट्टी पेट पर रखकर सो गये। उनका रक्तचाप इस समय आदर्श है। सुबह १७०/९८ तथा शाम को १५६/९६ रहा। मगर थकान बेहद है।

जिस मेज पर बा सिर रखकर सोती-बैठती थीं, वह बापू के आदेश से उनके पास लाई गई। इसपर अब उनका नाश्ता रखा जायगा। कहते हैं, "मेरे लिए यह मेज बड़ी ही कीमती हो गई है। इसपर सिर रखे बा का चित्र मेरे सामने हमेशा रहता है। एक ओर मुझे इस बात से संतोष है कि बा मेरे हाथों-ही-हाथों गईं और दूसरी ओर ६२ वर्ष से भी अधिक समय की साथिन को खोकर मैं दिग्मूढ़-सा हो गया हूं।" शाम को घूमते हुए भी बा की बातें होती रहीं।

अन्त समय की बात करते हुए बापू बोले, "बा का इस तरह अन्तिम समय मुझे बुलाना और मेरी गोद में जाना यह एक अद्भुत बात है।"

मैंने उत्तर दिया, "बापू, इससे साफ जाहिर होता है कि ऊपर से बा चाहे जितनी भी आपसे नाराज रही हों, अन्दर से आपमें उनकी बड़ी श्रद्धा और अटूट प्रेम था। मुझे कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिला कि जहां पत्नी इस तरह से पति की गोद में सोई हो।"

बापू बोले, "वह तो है ही, मैंने स्वयं ऐसा उदाहरण कहीं नहीं पाया। हम लोगों में तो ऐसा पति-पत्नी-सम्बन्ध सामान्यतः रहता ही नहीं है।"

मेरे साथ पढ़ने की बात करते हुए बापू बोले, "पढ़ना तो शुरू करना ही है।" मैंने कहा, "बापूजी, थकान दूर हो जाने दीजिये। इसमें एक या दो हफ्ते भले चले जायं।" बापू कहने लगे, "हां, थकान तो मुझे बहुत है। बस अभी मुल्तवी रखेंगे।"

शाम को ७। बजे घूमने निकले। फूल चढ़ाकर ८ बजे लौटे। ८। बजे प्रार्थना की। बापू बाद में अखबार पढ़ते रहे।

२७ फरवरी '४४

प्रार्थना के बाद थोड़ा सोये। ७ बजे उठे और अनार के दानों का रस पिया। ७॥। बज गये। मुझे घूमने जाने को देर हो गई। प्रभाबहन और मनु के यहां रह

सकने के प्रश्न पर आज बापू ने भण्डारी साहब को गुसलखाने में ही बुलवाकर पूछा। भण्डारी ने उत्तर दिया कि वह बम्बई से कुछ जवाब भेजेंगे। बापू ने कहा कि क्या सरकार को इस बारे में पत्र लिखा जाये। भण्डारी बोले कि हां, इससे उन्हें काम बनाने में बड़ी मदद मिलेगी।

एक बजे बापू ने खाना खाया। मनु ने पैरों की मालिश की। मंगलवार को बा की मृत्यु को आठ दिन हो जायेंगे। मनु के कहने से हम लोगों ने उस रोज अखंड चरखा चलाने का क्रम बनाया। बापू सुबह ७-४० से ८-३० तक कातेंगे। अखंड चरखा शुरू करेंगे और बुधवार को शाम के ६-३५ से ७-३५ तक कातेंगे।

बापू की थकान अभी चल रही है। बा का स्मरण उन्हें उसी तरह व्यथित करता रहता है। आज फिर कह रहे थे, "बा की मृत्यु भव्य थी। मुझे उसका बहुत हर्ष है। जो दुःख है वह तो अपने स्वार्थ के लिए। ६२ वर्ष के साथ के बाद उसका साथ छूटना चुभता है। कितनी ही कोशिश करूं, अभी मैं उन स्मरणों को मन से निकल नहीं सकता।" बापू की पानी की बोतल को गीले कपड़े में लपेटने की जरूरत थी, बापू ने अपना पुराना मिट्टी बांधने वाला पट्टा फाड़कर इस्तेमाल करने को कहा। बोले, "यह बहुत बार बा के लिए इस्तेमाल होता था, इसलिए इसकी मेरे पास बहुत कीमत है।"

घूमने के बाद प्रार्थना हुई। पीछे प्रभावतीबहन और मनु के यहां ठहर सकने के विषय में बापू ने सरकार को पत्र लिखा। भाई ने उसे टाइप किया।

२८ फरवरी '४४

बापू रात को दो बजे तक जागते रहे। बाद में पता नहीं, वे कब सोये। उनका आज मौन है। सुबह नाश्ते के बाद भण्डारी को लिखे गये कलवाले पत्र को उन्होंने फाड़ डाला और दूसरे पत्र में लिखा कि दोनों लड़कियों को यहां रखने के विषय में सरकार से दरख्वात करना अनुचित है। इसी विचार के कारण वे सो नहीं सके। अपनी दरख्वास्त वापस चाहते थे। मनु को बाहर जाना अच्छा नहीं लगता है, इसलिए उसे इस बात से आघात पहुंचा।

मैंने और डा० गिल्डर ने मालिश से पहले बापू के फेफड़ों तथा अन्य अंगों की परीक्षा की। सब कुछ ठीक है। खून का दबाव १७४/१०० है।

आज मैंने कृष्णा हठीसिंह की लिखी किताब 'विद नो रिग्रेट्स'[1] पढ़ डाली।

१. इसका अनुवाद 'कोई शिकायत नहीं' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

बहुत अच्छी है।

शाम को जाकर देखा कि बा की समाधि भी महादेवभाई की बगल में तैयार होगई है। कनु ने अखंड चर्खे का कार्यक्रम तैयार किया।

: ६९ :

सत्याग्रह और सत्ता

२९ फरवरी '४४

बा को गये आज एक सप्ताह हो गया। बा के बिना सन्नाटा छाया हुआ है। करीब डेढ़ साल पहले ८ अगस्त १९४२ की शाम को किन आशाओं को लेकर मैं बम्बई पहुंची थी। भय था तो यही कि पहुंचने से पहले सब लोग कहीं पकड़ न लिये जाएं। अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन के पंडाल में भाई और महादेवभाई से मिलकर कितना हर्ष हुआ था! ९ अगस्त को बापू वगैरह पकड़े गये और बाद में बा, मेरी और भाई की बारी आई; लेकिन हृदय में उल्लास था। उमंग थी। हंसते-हंसते सूली पर चढ़ जाने की तैयारी थी। आज इस डेढ़ साल की ठोकरें खा-खाकर वह उमंग, वह आशा और उत्साह सब खाक हो चुके हैं।

पुण्यवान् लोग एक-एक करके जा रहे हैं। जो लोग यहां कुछ कर सकते हैं, उनकी आवश्यकता बाहर भी है; किन्तु जो यहां पर फालतू हैं, उन्हें ईश्वर भी ठुकराता है।

सुबह मैंने अखबार में देवदासभाई का बा-सम्बन्धी लेख पढ़ा तो अपने को रोक न सकी और आंसू बहने लगे।

आज अखण्ड चर्खा-कताई शुरू हुई। पहले बापू ने एक घंटा काता, फिर मीराबहन ने आधा घंटा, मनु ने दो घंटे, प्रभावतीबहन ने दो घण्टे, भाई ने तीन घंटे और मैंने दो घंटे काता। पीछे ४ बजे से ८ बजे रात तक कनु ने काता। बापू ने शाम को ६-३५ से लेकर ७-३५ तक काता; क्योंकि वे जल्दी घूम लिये थे।

जयप्रकाश और प्रभावतीबहन की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "ऐसा उदाहरण जगत् में मिलना कठिन है। इन दोनों ने विषय-सुख कभी भोगा ही नहीं।

यह बात नहीं कि मैंने प्रभा को मना किया था। मैंने तो उसे समझा दिया था कि अगर कभी जरा-सी भी इच्छा हो जाय तो उसे दबाना नहीं। जयप्रकाश भी समझ गया। इसीलिए उसने कभी प्रभा पर दबाव करने का विचार तक नहीं किया। इन दोनों का प्रेम तो पराकाष्ठा पर है और इनके जीवन का एक-एक क्षण देश के ही अर्पण है। यह छोटी चीज़ नहीं है।"

मैंने पूछा, "स्वतन्त्रता देवी के आगे तो महान् बलिदान चढ़ते जा रहे हैं। मगर देवी प्रसन्न कब होगी ?"

बापू बोले, "प्रसन्न तो हो रही है।"

मैंने पूछा, "प्रसन्न होकर अपना साक्षात्कार कब करावेगी ? मैं उस दिन की बात कर रही हूं, जब हिन्दुस्तान पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करेगा।"

बापू ने उत्तर दिया, "सच्चे अर्थों में पूर्ण स्वतंत्रता की बात तो कौन कह सकता है !"

मैंने कहा, 'पूर्ण स्वतंत्रता' शब्द का अत्यन्त व्यापक अर्थ मैंने नहीं लिया। इसका आशय तो इतना ही है कि विदेशी सत्ता हटे और लोग अनुभव करें कि अब उनका अपना राज्य है !"

बापू कहने लगे, "वह तो है। वह आवेगी ही।··· मगर मैंने तो कहा है न कि सत्याग्रह हमें अपने ध्येय की ओर ले जा सकता है, परन्तु सत्याग्रहियों के हाथ में सत्ता न आवे तो भी वे सत्ताधारियों पर अंकुश रख सकेंगे।"

मैं बोली, "आपने गये वर्ष भी यही बात कही थी, लेकिन स्पष्ट शब्दों में लिखा कहीं नहीं है। कांग्रेस-मिनिस्ट्री को पुलिस का उपयोग जब करना पड़ा था तब आपने कहा था कि अगर राजकाज इतनी भी हिंसा के बगैर नहीं चल सकता तो सत्याग्रही सत्ताधारी नहीं बनेंगे, बल्कि उनपर अंकुश रखकर संतुष्ट रहेंगे।"

बापू कहने लगे, "हां, मैंने लिखा है; मगर कलम दबा-दबाकर, ताकि हमारे लोगों को दुःख न हो। कहीं वे यह सोचकर निराश न हों कि अब तो हमें सत्ता मिल ही नहीं सकती। मेरे मन में यहां आकर एक विचार और पक्का होता जा रहा है कि हो सकता है कि सत्ता सत्याग्रह की मर्यादा से बाहर की चीज हो।"

बापू की बात पूरी हुई। हम फूल चढ़ाने गये और प्रार्थना की। मन भारी था। किसी भी चीज के लिए उत्साह नहीं है। पता नहीं, कहां से आये, कहां आये और कहां जा रहे हैं।

१ मार्च '४४

मैंने १० से ११॥ बजे तक काता, १० मिनट में खाना खाया, कपड़े धोये और चर्खे पर बैठी। ३–२० पर मैंने कातना बंद कर दिया। चार बजे तक मीराबहन कातने आनेवाली थीं, पर वह सो गईं और देर से उठीं।

बापू के पत्र का उत्तर वेवल ने भेजा। बा की मृत्यु पर उन्होंने सहानुभूति प्रकट की है। बा की बातों का उत्तर उनके भाषण में आगया था, यह कहकर भाषण की नकल भी पत्र के साथ ही भेजी है। मैं जब खेलने गई तभी बापू ने घूम लिया और ७–३५ पर उनका कातने का समय पूरा हुआ। फिर प्रार्थना की। प्रार्थना में मनु और प्रभावहन रोने लगीं। प्रभावहन तो अचानक उठकर चली गईं। प्रार्थना के बाद मीराबहन ने आकर बताया कि प्रभावहन को हिस्टीरिया का दौरा हो गया था, प्याज वगैरह सुंघाने से ठीक हो गया। उनको ऐसा दौरा कभी-कभी हो जाता है।

रात को दो बजे के लगभग प्रभावहन के रोने की आवाज आई। मैं देखने गई तो बापू ने कहा कि नींद में रो रही है। तुम सो जाओ।

२ मार्च '४४

सुबह पांच बजे सब लोग उठे और गीता-पारायण किया गया।

बा की मृत्यु के बाद आज दसवें दिन मैंने और कनु ने २४ घंटे का उपवास किया। मनु ने आठवें दिन फलाहार किया था, इसलिए आज उपवास नहीं किया।

आज से बापू ने मनु को अपने सामने बिठाकर खाना खिलाना शुरू किया है। वह बहुत जल्दी खाती है। मैंने और प्रभाबहन ने बड़ी कोशिश की, लेकिन उसकी यह आदत न छुड़ा पाये। अब बापू ने ही यह काम संभाला है।

बापू शाम को कहने लगे, "बा का जाना एक कल्पना-सा लगता है। मैं उसके लिए तैयार था, मगर जब वह सचमुच ही चली गई तो मुझे कल्पना से अधिक एक नई बात लगी। मैं अब सोचता हूं कि बा के बिना मैं अपने जीवन को ठीक-ठीक बैठा ही नहीं सकता हूं। इसी तरह इन लड़कियों (मनु और प्रभा) के जाने की बात है। मुझे लगता है कि सरकार इन्हें ले जायेगी। मैं नहीं कह सकता कि इसका मुझपर क्या असर होगा। तुम सभी एक-एक करके चले जाओ तो हो सकता है कि मैं अकेला ही रह जाऊं। हां, वह दयाजनक स्थिति होगी।"

शाम के वक्त प्रभाबहन को एक नोटिस मिला है कि उनकी गिरफ्तारी क्यों हुई थी ?

: ७०

फिर अपने-अपने कर्त्तव्य पर

४ मार्च '४४

कल के अखबारों में एक लेख बटलर द्वारा कामन्स-सभा में बा के सम्बन्ध में दिये गए भाषण के आधार पर निकला है। उस लेख को पढ़कर बापू विचार में पड़ गये हैं। सुबह चार ही बजे उठ बैठे और प्रार्थना आदि के बाद भाई को जल्दी से पत्र लिखवाया। पत्र मुझे दिया गया और मैंने उसमें सुधार किये, इसी प्रकार सब के सुधार लिये गए।

एक पत्र बापू ने और लिखवाया। बापू के खर्च के विषय में गृह-मन्त्री ने असेम्बली में जो भाषण दिया था, उसी के सम्बन्ध में यह पत्र था। बाद में बापू ने इस पत्र में और सुधार किये।

२-१० पर दोनों पत्र लिखवाकर भेजे गये।

शाम को बापू ने उस नोटिस का उत्तर लिखवाया, जो प्रभाबहन को दिया गया था। मैंने उसका अंग्रेजी-अनुवाद करके साफ नकल तैयार की।

शाम को बापू घूमते समय कनु से बात कर रहे थे कि बा के स्मारक के लिए पैसा इकट्ठा करना है। बापू की अगली जयंती पर ७५ लाख रुपया इकट्ठा करने की बात पहले से ही चल रही थी। कनु बापू से इस विषय पर पूछ रहा था। बापू ने कहा, "दोनों फण्ड साथ मिला दो। बा मुझमें समा गई थी। कौन है ऐसी स्त्री, जो इस तरह अपने पति की गोद में प्राण दे? अन्तिम समय में उसने मुझे बुलाया। तब मैं नहीं जानता था कि वह जा रही है। और मैं घूमने नहीं चला गया था, वह भी ईश्वर का ही काम था। पेनिसिलीन के कारण ही मैं रुका। मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई को इंजेक्शन क्या देना था? मगर जब बा के पास बैठा तो समझ गया कि बा अब जाती है। बा के नाम से विश्वविद्यालय खोलना मैं एक निकम्मी बात समझता हूं। उसे विश्वविद्यालय में रस कहां था! चर्खा इत्यादि में तो वह

रस लेती थी। यह फण्ड हम दोनों के निमित्त इकट्ठा हो तो लोगों पर बोझ नहीं पड़ेगा! बा का हिस्सा मेरी जयंती में हमेशा रहा है। इस फण्ड का उपयोग चर्खा और ग्रामोद्योग के लिए होगा। नारायणदास को उसके कारभार में पूरी मेहनत और जिम्मेदारी लेनी होगी।" पीछे दूसरी घरेलू बातें उससे करते रहे। इतने में फूल चढ़ाने का समय हुआ। वहां से आकर प्रार्थना की।

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। प्रार्थना-स्थान पर पहले से अधिक गाम्भीर्य और शांति होती है। बा, महादेवभाई और शकुन्तला, यह त्रिमूर्त्ति अब प्रार्थना के समय मेरी आंखों के सामने रहती है। तीनों के चेहरे प्रफुल्लित देखने में आते हैं।

५ मार्च '४४

बापू सुबह तीन बजे उठ गये। फिर नहीं सो सके। चार बजे प्रार्थना के लिए सब उठे। कनु और भाई रात को देर से सोये थे। बापू को उन्हें उठाना ठीक नहीं लगता था, मगर कनु का आज यहां आखिरी दिन है, सो उसे उठाया। प्रार्थना के बाद बापू सो गये। कनु कुछ लिख रहा था। बापू से उसे कुछ और बातें पूछनी थीं।

बापू सुबह वेवल को पत्र लिखने के बारे में विचार कर रहे थे। सुबह लिखवाने का विचार किया, मगर फिर प्रभावहन के उत्तर का अनुवाद देखने लगे। बोले, "अगर प्रभा को जाना पड़े तो उससे पहले यह जवाब यहां से भेज सकें तो अच्छा है। सो यह काम पहले करना चाहिए।"

घूमने के बाद मालिश के समय वेवल को जाने वाला पत्र मुझे लिखवाने लगे। कटि-स्नान लेने के समय भी लिखवाया। स्नान-घर से निकलकर फिर थोड़ा लिखवाया। दोपहर में सोने के बाद फिर लिखवाने लगे। शाम को साढ़े छः बजे पत्र पूरा हुआ। कनु साथ-ही-साथ टाइप करता जाता था। यह कच्ची नकल है। नौ बड़े-बड़े फुलस्केप कागज तैयार हुए। बापू की धारणा से पत्र ज्यादा लम्बा हो गया है।

शाम को घूमने के समय बापू ने कनु से थोड़ी बातें कीं। प्रार्थना के बाद तो उसे जल्दी जाना ही था। सामान उसने तैयार रखा था। बापू मौन लेने लगे तो कनु कहने लगा, "मुझे भेजकर ही अब मौन लीजिये।" उसे जाना अच्छा नहीं लगता था। वह आग्रह करता तो शायद बापू उसे रखते भी, मगर बाहर वह काफी काम कर सकता है। इस दृष्टि से उसे आग्रह करना अच्छा नहीं लगा।

साढ़े नौ बजे कनु को हम सब नीचे छोड़ने गये। मनु दही और शक्कर उसके लिए ले गई थी। सबको प्रणाम करके उसने वह खाया, फिर दो बार बापू को प्रणाम करके चलने लगा। मैंने कहा, "कनु भाई, अब तो बाहर ही आकर मिलेंगे।" डा० गिल्डर बोले, "हां भाई, अब इस तरह न आना।" भाई कहने लगे, "नहीं, हमें लेने के लिए आना।" कटेली हँसने लगे, "आप लोग जाओगे तब खबर किसको होने वाली है। दूसरे दिन अखबार में ही लोग देखेंगे कि बापू छूट गये।" मगर कनु किसी को उत्तर देने की स्थिति में न था। वह रो रहा था। दरवाजे के पास पहुंचा तब तो सिसकियां लेने लगा। मैंने उसकी पीठ ठोंकी, "कनु भाई, तुम ऐसा करते हो?" मगर मन में मुझे लग रहा था कि उसकी स्थिति में मेरी भी वही हालत होती।

कनु को विदा करके वापस आये। घर में सन्नाटा छा रहा था। भाई तुरंत सोने को चले गये। हम लोग—प्रभाबहन, मनु और मैं—दस बजे बापू के पैरों की मालिश करके फारिग हुए और सोने की तैयारी की।

ग्यारह बजे के बाद जाकर देखा तो भाई अभी तक खाट पर पड़े जाग रहे थे। करीब एक बजे तक उनका सिर दबाती रही, फिर आकर अपनी खाट पर लेटी। दो बजे नींद आई होगी। तीन बजे बिल्ली ने जगा दिया। उसने यहां पर छः सुंदर बच्चे दिये थे। एक सिपाही ने वे बच्चे किसी नर्स को दे दिये। बेचारी मां अब रात-भर अपने बच्चों को ढूंढती है और रोती फिरती है। उठकर बिल्ली को निकाला, फिर सोने को लेटी। नींद बहुत कम आई। विचारों में पड़ी रही।

बापू का आज मौन है। मौन का दिन तो इतनी जल्दी आ जाता है कि क्या कहना।

सुबह की प्रार्थना में कनुभाई की कमी महसूस होती थी। इस कमी को दूर करने के लिए सवा सात बजे की प्रार्थना में खूब जोर-जोर से श्लोक बोलना शुरू किया।

६ मार्च '४४

प्रार्थना के बाद रोज का कार्यक्रम चला। नाश्ता वगैरह करके सवा आठ बजे बापू घूमने निकले। सड़क पर किसी की मधुर बंसी बजाने की ध्वनि सुनाई दे रही थी।

फूल चढ़ाकर वापस लौटे। प्रभावतीबहन की जगह मनु ने और कनु की जगह

डा० गिल्डर ने बापू की मालिश की। डा० गिल्डर इतने दिन बापू की सेवा न कर सकने के कारण बेचैन-से हो गये थे। वे बहुत प्रेम से मालिश करते हैं।

डा० गिल्डर और कटेली सवेरे घूमते समय समाधि के लिए प्रेम से फूल चुनते हैं, सबके साथ मिलकर समाधि सजाते हैं और प्रार्थना में हिस्सा लेते हैं।

स्नानादि के बाद बापू ने वेवल वाला पत्र और हम लोगों के बारी-बारी से सुझाव मांगे। सबके सुझावों को देखकर कल सुबह बापू पत्र को फिर पढ़ेंगे।

मनु को शाम के समय सर्दी लगकर बुखार आ गया। दो-तीन घण्टे रहा। खाने-पीने में वह बड़ी लापरवाही करती है, इसीलिए कभी जुकाम से पीड़ित रहती है तो कभी बुखार से।

आज भंडारी की राह देखी, मगर वे नहीं आये। प्रभाबहन और मनु को इसी बात की चिंता रहती है कि न जाने कब उन्हें बाहर निकालना पड़े। मुझे नहीं लगता कि अब किसी को भी जाना पड़ेगा, मगर निश्चित रूप से तो क्या कहा जा सकता है।

जैसे-जैसे दिन जा रहे हैं, बा के बगैर घर ज्यादा-से-ज्यादा सूना लगता जा रहा है। उनकी बीमारी में चौबीस घंटे की दौड़-धूप रहती थी। अब तो कुछ काम ही नहीं। बहुत बुरा लगता है।

बापू ने हम सबसे बा की मृत्यु के बाद तुरंत अपने-अपने संस्मरण लिखने को कहा था। वे स्वयं भी लिखने का विचार करते हैं। मैंने संस्मरण लिखने शुरू कर दिये हैं।

आज से मैंने प्रभावतीबहन के साथ आई हुई 'स्नेहयज्ञ' नामक किताब पढ़नी शुरू की है।

७ मार्च '४४

बा को गये आज दो हफ्ते पूरे हो गये, मगर कल की जैसी ही बात लगती है। इसी तरह एक के पीछे एक प्रियजन विदा होते जाएंगे।

सुबह सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। बाद में बापू वेवल वाला पत्र सुधारते रहे। स्नानघर से निकलकर खाते समय, पीछे दोपहर सोने के बाद पांच बजे तक वही क्रम चला। इतने परिवर्तन हुए कि भाई को उसकी कच्ची टाइप नकल फिर तैयार करनी पड़ी। अभी वह फिर पढ़ा जायेगा।

सुबह और शाम बापू पंद्रह मिनट जल्दी घूमने निकले। शाम की प्रार्थना १५

मिनट देर से हुई---सवा आठ की जगह साढ़े आठ बजे। भण्डारी आज भी नहीं आये।

८ मार्च '४४

सवेरे सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। प्रार्थना के बाद फिर सब सो गये। ६॥ बजे उठे। मनु सोती रही। उसे रात में ९९ डिगरी बुखार रहा।

बापू ने वेवल वाले अपने जवाबी पत्र में फिर इतने सुधार किये हैं कि मीरा-बहन को बैठकर लिखवाना पड़ा। भाई ने भी दिन का अधिकांश समय उसे टाइप करने में लगाया, खा-पीकर सात बजे फिर बैठे और रात को एक बजे तक पत्र का कार्य करते रहे। मीराबहन एक बजे उठकर चली गईं तब भाई ने अकेले ही काम करने का निश्चय किया, पर पहली ही लाइन में भूल हुई। टाइप किया हुआ पैराग्राफ फिर से टाइप करने लगे। मुझसे कहने लगे कि जो कुछ हुआ, वह मैं किसी से न बताऊं। मगर बापू स्वयं थोड़ी देर बाद वहां आ पहुंचे और उन्होंने जब पूछा कि कितना टाइप हुआ तो भाई को सब बताना पड़ा।

सुबह मैंने बापू से पूछा कि वेवल को जाने वाले जवाबी पत्र का क्या अच्छा परिणाम निकलने वाला है? वे बोले, "मैं कोई आशा बांधकर नहीं बैठा। उसके भाषण में एक-दो वाक्य ऐसे मिले कि उनके आधार पर मुझे लिखने जैसा लगा, सो लिख डाला है। जो होना होगा सो होगा।"

मैंने प्रभावतीबहन की लाई हुई किताब 'स्नेहयज्ञ' लगभग समाप्त कर ली है।

९ मार्च '४४

कल ११-१५ पर 'स्नेहयज्ञ' को पूरा कर लिया। इतने में बापू भी उठे। बिल्ली ने चिल्लाना शुरू किया। मैंने उसे भगाया। भाई कलवाला पत्र टाइप करने में लगे हैं। मैंने भी हाथ बटाया। मीराबहन ने फिर भाई का साथ दिया और एक बजे दिन में पत्र तैयार हुआ। बापू उसे पढ़ते-पढ़ते सो गये और ढाई बजे उठे, तब पढ़ना पूरा किया। पत्र सवा तीन बजे रवाना हुआ।

भाई और मीराबहन ने दो बजे खाना खाया।

दोपहर को मैंने 'गुड अर्थ' पढ़ना शुरू किया। बापू भी उसे पढ़ते हैं, इसलिए अधिक देर तक उसे नहीं पढ़ पाती। भाई भी उसे पढ़ने लगे हैं।

भण्डारी कह गये हैं कि मनु और प्रभाबहन के यहां से जाने के सम्बन्ध में

बम्बई सरकार ने दिल्ली को लिखा है। बापू को लगता है कि अब इन दोनों के जाने का हुक्म आने वाला है।

१० मार्च '४४

सुबह सवा पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। फिर आधा घंटा सोये। शाई नहीं सोए। ६।। बजे उठकर सुबह का काम और बापू का काम—गादी बिछाना, रस निकालना, दूध छानना, चाय तैयार करना वगैरह काम किये। स्नान करके निकली तो आठ बजे थे। घूमते समय बापू पुरानी बातें करने लगे। आजकल मनु बापू की आत्मकथा पढ़ रही है। अफ्रीका में बापू के अपमानों का वर्णन पढ़कर कहने लगी, "अरे, बापू ने कितने अपमान सहे! मेरे जैसा व्यक्ति तो रो-रोकर ही मर जाता।" मैंने कहा, "रोने से और ज्यादा अपमान होता।"

फिर यह चर्चा होने लगी कि कुछ वर्ष पहले जब बापू आये तो भारत के लोग अंग्रेजों के सामने कितना झुककर रहते थे। मैंने स्वयं फीरोजशाह मेहता की जीवनी में पढ़ा है कि वे इतने प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हुए भी अंग्रेजों के प्रति मधुर और खुशामद-भरी बातों से काम लेते थे। बापू बोले, "यह ठीक है। मेरी भाषा में वही चीज़ थी, जो लोगों के अपने मन में थी; मगर लोग यह बात कह नहीं पाते थे। इसीलिए तो मेरे पीछे पागल हुए। फिर मैं लोगों की ही भाषा में बोलता था, जिससे वे मेरी बात समझ सकें। अंग्रेजी कभी नहीं बोलता था। उस समय का रिवाज था कि ऐसी भाषा बोलनी चाहिए, जिसे जनता समझ ही न पाए। मैंने इससे उल्टा शुरू किया। नतीजा यह हुआ कि बिहार में मैं अदालत में हाजिर हो ही रहा था कि जनता ने दरवाजे तोड़ डाले। सारा बिहार मेरे पीछे पागल हो गया।"

मैंने कहा, "कितने ही लोग टीका करते हैं कि गांधी और नेहरू आज जो हैं उसका कारण अंग्रेजों द्वारा उनका अपमान करना है। अंग्रेज लोग भी यही कहते हैं कि इन लोगों में हमने ऊंच-नीच का भाव पैदा किया, इसीलिए ये आज हमें तकलीफ दे रहे हैं।"

बापू बोले, "बात सच्ची है। दक्षिण अफ्रीका में मेरा अपमान न होता तो मेरा जीवन दूसरा ही होने वाला था। अपमान वहीं से शुरू हुआ। उसीके परिणामस्वरूप मैंने काठियावाड़ छोड़ा। फीरोजशाह का यह कहना कि 'ऐसे अपमान तो अनेक सहने पड़ेंगे', मुझपर बड़ा असरकारी हुआ। मगर इस बात को ऊंच-

नीच का भाव नहीं कह सकते।"

मैं कहने लगी, "बहुत-से लोग कहते हैं कि रूस के गत बीस वर्षों का और हिन्दुस्तान का इतिहास देखो तो पता चलेगा कि कितना फेर है।"

बापू ने उत्तर दिया, "यह बात भी ठीक है, मगर उन लोगों ने हिंसा के आधार पर ही सब कुछ किया है। हमारी अहिंसा की शक्ति ऐसी है कि उसका माप ही नहीं हो सकता। उन लोगों की हिंसा के द्वारा पाई हुई चीज कितने दिन टिक सकेगी, यह कौन जानता है।"

मैंने कहा, "मेरे विचार से हिन्दुस्तान के आज के इतिहास की तुलना रूस के पिछले बीस वर्ष के इतिहास से नहीं करनी चाहिए, बल्कि आने वाले सौ वर्षों के इतिहास से करनी होगी। ये हमारी तैयारी के दिन हैं—जागृति लाने के दिन। अहिंसा के द्वारा जनता में जागृति ज्यादा जल्दी आई है। इतना तो सब लोग मानते हैं कि गांधी जी ने देश में जागृति तो पैदा कर दी है, मगर आगे क्या? मेरा उत्तर है कि जागृति जल्दी आ सकी है; क्योंकि अहिंसा को हिंसा की तरह छिपकर काम नहीं करना पड़ा। स्वतन्त्रता भी इस रास्ते से हिंसा के रास्ते की अपेक्षा जल्दी आने वाली है।"

बापू कहने लगे, "मुख्य बात अहिंसा की है। हिंसक रास्ते से पाई हुई स्वतन्त्रता सच्ची स्वतन्त्रता नहीं होती, स्थायी नहीं होती। हिन्दुस्तान का प्रयोग बिल्कुल नया है। इसका परिणाम क्या आता है, वह देखने की बात रही।"

प्रभावतीबहन ने बापू की मालिश की। मनु को रोज बुखार आता है। वह खाट पर पड़ी थी, मगर बापू को खाना देने के लिए आई। दिन में भी काफी घूमती रही, इसलिए शाम को फिर बुखार आया।

मीराबहन को लगता है कि बापू के पत्र के परिणामस्वरूप अगर सरकार उन्हें छोड़ दे तो उसके लिए उनकी तैयारी होनी चाहिए। वे अपने आश्रम के नक्शे भी बना रही हैं और कनु से इस बारे में काफी चर्चा कर चुकी हैं।

शाम की प्रार्थना साढ़े आठ बजे होती है। बापू साढ़े नौ बजे खाट पर पहुंचते हैं। दस बजे उनका काम पूरा होता है। हम लोग साढ़े दस-ग्यारह बजे सोते हैं। मैं पर्ल बक की 'गुड अर्थ' पढ़ती रही।

बापू ने बा के मृत्यु-संबंधी आये हुए पत्रों की सूची बनाने और उन्हें नम्बर देने का काम प्रभावतीबहन को सौंपा। दोपहर को भाई के साथ कागज फाइल

कराने का काम किया। समय जाते पता नहीं लगता।

कल से बापू ने प्रभावतीबहन को गीताजी का उच्चारण, संस्कृत और अंग्रेजी सिखाने का निश्चय किया है। रोज भण्डारी की राह देखते थे कि आयें तो पता चले कि प्रभावती और मनु के बारे में क्या तय हुआ। वे कल आये तो, पर कुछ खबर न दे सके, इसलिए बापू को और प्रभावतीबहन को लगा कि जितने दिन हैं, उनका तो ठीक उपयोग कर लिया जावे।

११ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। बा की मृत्यु का दिन मंगल का है। इसलिए अब समाधियों की लिपाई हफ्ते में दो बार हुआ करेगी। आजकल फूल बहुत होते हैं। डा० गिल्डर और कटेली फूल इकट्ठे कर लाते हैं, इसलिए सारे हफ्तेभर अच्छी सजावट होती है। प्रभावतीबहन बापू से रोज कहा करती हैं कि समाधियों के दरवाजे के स्थान पर एक ऊँचा दरवाजा बने और उसपर बेलें चढ़ाई जायं। पहले तो बापू उनसे यही कहते रहे कि उनका यहां रहना निश्चित हो जाय तो दरवाजे का काम करेंगे, लेकिन इतने दिनों से किसी प्रकार का सरकारी आदेश नहीं आया, इसलिए बापू आज मान गये। बापू काफी देर तक 'गुड अर्थ' पढ़ते रहते हैं और रोज के अखबार देखते हैं।

मीराबहन आजकल दोपहर को पौन घंटे तक और शाम को एक घंटे तक बापू से सवाल पूछती हैं।

बापू अभी तक स्थिर-चित्त नहीं हो पाये। कहते हैं कि सुचित्त हो जाने पर वे बा के संस्मरण लिखना शुरू करेंगे।

मनु को आज बुखार नहीं था, मगर दो बार उल्टी हुई। मलेरिया की दवा का असर हुआ लगता है।

१२ मार्च '४४

सुबह पांच बजे प्रार्थना को उठे। पीछे हमेशा का कार्यक्रम चला। ६ बजे घूमकर लौटे। मनु व प्रभावतीबहन को ४ से ५ तक सिखाया। आज शाम को खेलते वक्त वर्षा के साथ-साथ ओले पड़े और बाद में इतनी गरमी बढ़ गई कि प्रार्थना के समय बापू ने पंखा उठाया।

भाई आजकल टाइप करने और फाइलों को व्यवस्थित करने में लगे हैं। शाम को घूमने भी नहीं निकलते।

आज मैं साढ़े दस बजे रात तक बापू का काम करती रही। फिर डायरी लिखी। नींद नहीं आ रही थी, लेकिन बापू का कहना है कि समय होने पर तो खाट पर जाना ही चाहिए।

: ७१ :

मीराबहन की आश्रम-योजना

१३ मार्च '४४

बापू का आज मौन है। एक-दो रोज पहले वे और अधिक मौन लेने का विचार करते थे। एक सोमवार का ही मौन हम लोगों के लिए इतना कष्टकर होता है तो बापू के अधिक मौन लेने से हमारी क्या गति होगी! असल बात तो यह है कि आजकल बापू की मनःस्थिति ठीक नहीं है, इसलिए उनसे कुछ भी कहने में डर लगता है। उनमें भीतर-ही-भीतर बड़े-बड़े परिवर्तन होते दीखते हैं; पर यह सब है क्यों, इसका पता नहीं लगता।

मैंने 'गुड अर्थ' पढ़ी, थोड़ा लिखा और प्रभावतीबहन को एक घंटा सिखाया। मीराबहन ने मान लिया है कि वे अब जल्दी ही छूटने वाली हैं। उनकी हरेक बात से यही ध्वनि निकलती है, परन्तु छूटने की सम्भावना बहुत कम है। बापू भी कहते थे, "इसके भोलेपन और इसकी कल्पना-शक्ति का कोई पार नहीं है।"

समाधियों के दरवाजे पर हरे बांसों का एक तोरण बनाया है। उसपर तीन तरह की बेलें चढ़ाई जाएंगी, जो बकरियों से बच जायं तो ठीक है। वर्षा ऋतु के बाद समाधि-स्थान के चारों कोनों में सरव के चार वृक्ष लगाये जाएंगे।

मीराबहन ने अपने आश्रम की सारी योजना बनाकर बापू से उसे स्वीकृत करा लिया है। आश्रम के ध्येयों में से एक बात भाई को खटकी है। वह यह कि 'लोगों को आत्म-रक्षा (Non-aggressive defence) के लिए तैयारी कराना।' अहिंसा के सिद्धान्त के साथ यह ध्येय कहां तक संगत है, भाई की समझ में यह नहीं आता। वे कहते हैं, "मैं जानता हूँ कि मीराबहन के द्वारा इस ध्येय का दुरुपयोग नहीं होगा, मगर दूसरे लोग इसे लेकर इसका दुरुपयोग अवश्य करेंगे।" बापू का मौन छूटने पर वे उनसे इस बारे में पूछेंगे।

१४ मार्च '४४

समाधियों के नये दरवाजे को मनु ने आज खूब सजाया। बड़ा सुन्दर दीखता है।

घूमते समय बापू भाई को मीराबहन के आश्रम-सम्बन्धी प्रश्न को लेकर समझाने लगे, "किसी पर हमला किये बिना अपनी रक्षा करने में हिंसा का समावेश नहीं है। यह देखना चाहिए कि मीरा ने कौनसी भाषा का प्रयोग किया है। एक जगह उसने लिखा है—गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम चलाना ही उसके आश्रम का ध्येय होगा। तो वह तो शुद्ध अहिंसा हुई।"

भाई ने कहा, "'हमला किये बिना आत्म-रक्षा' (Non-aggressive Selfdefence) एक खास अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है ..."

बापू बोले, "लोग क्या समझेंगे या क्या कहेंगे, मुझे इसकी कुछ नहीं पड़ी है। 'अहिंसा-अहिंसा' कहने से ही अहिंसा थोड़े आती है! जब हम अहिंसा पर अमल करके दिखा देंगे तब लोग अपने-आप देख सकेंगे कि हम क्या करना चाहते हैं या क्या कर रहे हैं। सो इसका काम भी जब आगे बढ़ेगा तब लोग अपने-आप उसे देख सकेंगे।"

: ७२ :

अंग्रेजों की नीति

खाने के समय मीराबहन उस पत्र की चर्चा करने लगीं, जो बापू वेवल वाले पत्र के जवाब में भेज रहे हैं। बापू ने उसमें बा के विषय में काफी लिखा है। बापू कह रहे थे कि उनके मनोभावों को समझाने के लिए उस भूमिका की आवश्यकता थी। वे कहते हैं, "सामान्यतः लोग यह मानते हैं कि हिन्दुस्तानियों को अपनी पत्नियों की परवाह नहीं होती है। उनकी इस मान्यता के कारण भी हैं। पत्नी की परवाह करना हिन्दुस्तान में कुछ हद तक नई चीज है, मगर मेरे लिए बा की कितनी कीमत थी, यह बताने के बाद ही वेवल को मैं यह समझा सकता था कि उसके झूठे वक्तव्य से मुझे कितना दुःख हुआ।"

इसके बाद वेवल के पत्र में एक जगह आता था, 'पीपल्स आव इंडिया'

(Peoples of India), इसके बाद 'हुकूमत जाओ', और यह बापू को अखरा। मैंने और बापू ने 'गुड अर्थ' पढ़ लिया है।

१५ मार्च '४४

खाने के समय मीराबहन से 'पीपल' और 'पीपल्स' वाले पैराग्राफ की बात करते हुए बापू कहने लगे, "अगर वह (वेवल) हिन्दुस्तानियों को एक 'प्रजा' मानता है तो हिन्दुस्तान के कुदरती ऐक्य की दलील को भी अपनी बात के समर्थन में इस्तेमाल कर सकता है। अगर वह यह मानता है कि हिन्दुस्तान में एक से अधिक 'प्रजाएं' हैं तो देश के कुदरती ऐक्य की बात करना फिजूल है। कुदरती तौर पर तो यूरोप भी एक मुल्क है, मगर हम जानते हैं कि वहां कई राष्ट्र हैं। इसलिए उसे एक मुल्क या वहां के लोगों को एक नहीं कह सकते।

"इसी तरह अगर हिन्दुस्तानी लोग एक प्रजा नहीं हैं तो पर्वतों की दीवार या समुद्रों का विस्तार हिन्द को एक राष्ट्र नहीं बना सकता।

"अंग्रेज लोगों को गर्व है कि राजनैतिक दृष्टि से उन्होंने हिन्दुस्तान को एक राज्य बनाया। एक तरह से यह सही भी है। भूतकाल में भी ऐसे प्रयत्न हुए हैं। अशोक और दक्षिण भारत के कुछ राजाओं ने इस प्रयत्न में काफी सफलता पाई थी, मगर पूरी सफलता अंग्रेजों ने ही पाई है, चाहे इसमें भी उनका निजी स्वार्थ ही क्यों न रहा हो। अब अंग्रेज अपने किये पर पानी फेरना चाहते हैं। यह कैसी शर्म की बात है कि अगर वे हिन्दुस्तान का शोषण नहीं कर सकते तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

'हुकूमत जाओ' के आंदोलन की बात करते हुए बापू बोले, "उन्हें समझना चाहिए कि उन्होंने किस तरह से हिन्दुस्तान को चूसा है। हिन्दुस्तान का सारा खून चूसा जा रहा है। एक-एक विदेशी सिपाही हिन्द को भारी पड़ता है। तुम तो यहां सरकारी अमलदार की बेटी की हैसियत से भी रही हो और मेरे साथ एक हिन्दुस्तानी की तरह भी। तुम जानती हो कि दोनों के रहन-सहन में कितना फर्क है। तुम्हारा खर्च तब कितना होता था और अब कितना होता है? हिन्दुस्तान कहां से उनके लिए खाना लावे? मुझसे यह मत कहो कि वह सब खर्च हिन्दुस्तान में ही होता है। खर्च तो हिन्दुस्तान का खून ही होता है न! आज हिन्द में जो कागजी रुपया चल रहा है, उसकी कीमत ही क्या है? फौजी लोग नोटों की गड्डी उठा लाते हैं और सब्जी, दूध, घी, फल जो भी चाहें, उठा ले जाते हैं। गरीब हिन्दुस्ता-

नियों के लिए कुछ नहीं बचता, उनके बच्चों के लिए दूध नहीं मिलता और वे सब कठिनाइयां सहन करते हैं विदेशी सरकार की खातिर। सिपाहियों की कुर्बानियों की बातें करते हैं। कहते हैं कि परदेशी लोग हमारी रक्षा के लिए यहां आये हैं, मगर क्या सचमुच वे हमारी सेवा करने के लिए हैं? मैं कहता हूं कि वे यहां इसलिए हैं कि उन्हें वेतन मिलता है। वेवल से लेकर नीचे तक के सरकारी अमलदारों को लो। उनमें से कोई भी 'वालंटियर' कहलाने का अधिकारी नहीं है। कहा यह जाता है कि हिन्दुस्तानी सिपाही 'वालंटियर' हैं। सिपाहियों को 'वालंटियर' कहते हैं। वह बिचारा गरीबी का मारा भरती होता है और भूख का मारा होने से सिपाही बनता है। जितने विदेशी लोग यहां पड़े हैं, वे यहां की गरीबी को और जनता की भुखमरी को बढ़ाते हैं। ये सिपाही यहां चाहे थोड़े-से ही हों, मगर उनका खर्च इतना हो जाता है, जितना खर्च हिन्दुस्तान के करोड़ों भूखों पर होता है।

"इससे जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति कटुता का भाव आने लगा है। इसे रोकने के लिए कुछ करना चाहिए। शायद वे कहें, 'हम हिन्दुस्तान को आजादी देना चाहते हैं, मगर जरा धीरज रखो।' तुम्हारा जवाब यह होना चाहिए, 'नहीं, हिन्द को आजाद करने का मौका आज है। आज ही यह कटुता मित्रभाव में बदली जा सकती है।' मैं जानता हूं, वे कहेंगे कि जो चल रहा है, उससे उन्हें संतोष है। और ऐसा क्यों न कहें? उन्हें जो चाहिए सो हिन्द से मिल सकता है। बाल्डविन से जब मैंने क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्स के कारनामों की बात की तो उसने मुझे जवाब दिया, 'हमने हिन्दुस्तान में जो किया है, उसका हमें गर्व है।' वे अब भी ऐसा ही कह सकते हैं। तब मेरा जवाब यही होगा, जो मैंने बाल्डविन को दिया था कि, 'ऐसी हालत में मुझे आपसे कुछ कहना नहीं है।'

" 'हुकूमत जाओ' आन्दोलन ने लोगों के हृदय में अंग्रेजों के प्रति अपना गुस्सा प्रकट किया। उस गुस्से को निकालने का यह एक सीधा और निर्दोष रास्ता था और ब्रिटेन को समझाने का प्रयत्न था कि वह कुछ करे, जिससे इस गुस्से की जगह मित्रता और कृतज्ञता की भावना लोगों के हृदय में उठे। मगर मेरी शिकायत यह है कि उन्होंने कांग्रेस के दृष्टिबिंदु को समझने की कोशिश तक न की। 'हुकूमत जाओ' आंदोलन के नाममात्र से वे इतना चमकते हैं, यही बताता है कि उनकी नीयत साफ नहीं। हिन्द को लूटना बन्द करने का उनका इरादा नहीं, नहीं तो

मौलाना साहब और जवाहरलाल की अपील की तरफ ध्यान देते और मेरे भाषण पर गौर करते। आठवीं अगस्त के 'हुकूमत जाओ' प्रस्ताव में भी कांग्रेस ने ब्रिटेन के प्रति उचित मित्रता बताने की कोशिश की। कांग्रेस चाहती है कि मित्रराष्ट्र युद्ध में जीतें और उनकी जीत पक्की करने के लिए ही कांग्रेस ने कहा, 'हिन्दुस्तान के साथ न्याय करो।' अगर वे इस चीज को समझते तो बाकी सब ठीक हो सकता था। अब भी समझें तो हो सकता है।"

१६ मार्च '४४

डा० गिल्डर की टांग में 'साइटिका' का दर्द है। मनु और भाई ने मिलकर बापू की मालिश की। मुझसे ही मालिश करवाने वाले थे, मगर कुछ कारणों से ऐसा हो न सका।

आज मनु को कुनीन का इंजेक्शन दिया, इससे उसे रात के समय सिर में चक्कर आते रहे।

गृह-मन्त्री ने असेम्बली में बा को दी गई सुविधाओं के सम्बन्ध में जो वक्तव्य दिया था, वह अखबारों में प्रकाशित हुआ है। हम सबको वह चुभा है। इतनी तकलीफें देकर और झगड़े करने के बाद अब सरकार यह बताना चाहती है कि उसने बा की सभी आवश्यकताएं पूरी कीं।

बापू शाम को भाई से कहने लगे, "हो सके तो तुम इसका उत्तर लिखो।" भाई ने मुझसे भी अभ्यास के तौर पर उत्तर लिखने को कहा।

१७ मार्च '४४

भाई पत्र लिखने में व्यस्त हैं, इसलिए बापू ने मनु से मालिश कराई।

१८ मार्च '४४

भाई ने दिन में वह पत्र लिखकर बापू को दिया तो बापू ने देखा कि उस पत्र में लिखी हुई लगभग सभी बातें वे अपने पत्र में संक्षेप में पहले ही लिख चुके हैं। इसलिए पत्र को रोक दिया। वे खुद ही फिर लिखेंगे।

खाने के समय बापू मीराबहन से बोले, "मानो कि वाइसराय आज कहे कि 'हमें हिन्दुस्तान से इतना रुपया मिल रहा है, इतने सिपाही मिल रहे हैं तो कांग्रेस क्या इससे ज्यादा देगी? कांग्रेस को खुश करने से हमें और क्या मिलेगा?' तब मैं कहूंगा कि 'कांग्रेस और कुछ भी करने वाली नहीं। हां, उसके द्वारा आपको लोगों का दिल और आत्मा मिलेगी और आम लोगों की सद्भावना।' सिपाही को

अपनी तनख्वाह की पड़ी है और व्यापारी को अपनी तिजारत की। मगर किसान, जो हिन्दुस्तान की नव्वे प्रतिशत जनता है, हिन्दुस्तान की जमीन के साथ बंधे हैं। अगर किसान आजादी के उल्लास का अनुभव करेगा तो अपने देश की आजादी के लिए आखिरी दम तक लड़ेगा।

"अगर हिन्दुस्तान खुश होगा, संतुष्ट होगा तो आप एक-एक हिन्दुस्तानी सिपाही को पूर्वी लड़ाई के मैदान में भेज सकते हैं। हिन्दुस्तानी सिपाही ब्रह्मदेश की लड़ाई में लड़ने के लिए अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। अंग्रेज या अमरीकन सिपाहियों की निस्बत हिन्दुस्तानी सिपाही सस्ते भी पड़ेंगे। आज आप हिन्दुस्तानियों को पूर्व में इस्तेमाल नहीं कर सकते; क्योंकि आपको डर है कि हिन्दुस्तानी सिपाही हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने लगेंगे।

"हिन्दुस्तानी सिपाहियों को आपको आधुनिक लड़ाई की तालीम देनी होगी, मगर उसके लिए हम आपके कुछ अफसर मांग लेंगे, चाहे वे अंग्रेज हों या अमरीकी या रूसी।"

मीराबहन बोलीं, "आपने फिशर से कहा था कि मित्रराष्ट्रों की फौजें अपने खर्च पर यहां रह सकती हैं। तो फिर इन हिन्दुस्तानी फौजों के खर्च का क्या होगा?"

बापू ने उत्तर दिया, "खर्च के बारे में जो आज व्यवस्था है, वही रहेगी। एक तो बाकायदा हिन्दुस्तानी फौज होगी। उसके अलावा मित्रराष्ट्र अपने लिए सहायक सेना की भरती करेंगे और उसका खर्च उन्हें देना होगा, सिवा इस हालत के कि हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए इस्तेमाल हो या लड़ाई लड़ने में हिन्दुस्तान का अपना हित सधता हो, जैसे कि ब्रह्मदेश में और उसके लिए वह अपने सिपाही वहां भेजें।

"मैं यह कहूंगा कि अगर अंग्रेजों को इनमें से कोई भी बात नहीं जंचती तो उन्हें जापान पर जीत बहुत महँगी पड़ेगी। लड़ाई के अंत में गुस्से से भरा असंतुष्ट हिन्दुस्तान उनके सामने खड़ा होगा।"

बापू के कहने से भाई ने मीराबहन से 'Non-aggressive Self-defence' के अर्थ के बारे में स्पष्टीकरण के लिए बात की थी। मीराबहन का कहना था कि उनका इससे तात्पर्य 'अहिंसात्मक ढंग से आत्मरक्षा' (Non-violent Self-defence) ही है। भाई ने जब कहा कि आजकल 'अहिंसात्मक ढंग से आत्म-

रक्षा करने' का अर्थ रूढ़ हो गया है तब मीराबहन ने स्वीकार किया कि एक प्रसिद्ध संस्था के विधान की भाषा ऐसी चौकस होनी चाहिए कि कोई भी उसका दूसरा अर्थ न कर सके। उसमें विपरीत अर्थों की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए।

मनु को मैंने आज कुनीन का दूसरा इंजेक्शन दिया।

अखबार में किसी ने बापू को यहां से हटाने की मांग की है। गृह-मंत्री ने उत्तर दिया है कि इसपर विचार किया जायगा। इस पर बहुत चर्चा चली। बापू को लगता है कि यह उनके पत्र का परिणाम है। उन्होंने लिखा था कि सरकार उनपर इतना खर्च क्यों करती है। वे मानते हैं कि उन्हें अब यहां से हटाया जावेगा, लेकिन मुझे इसमें शक है।

१६ मार्च '४४

आज सुबह जब भण्डारी आये तो बापू को यहां से हटाने की बात पर मजाक चलता रहा।

आज बहुत दिन बाद मैंने बापू की मालिश की और स्नान कराया।

मनु बुखार के कारण तीन दिन तक आराम करेगी, इसलिए उसका काम प्रभावतीबहन करेंगी।

दोपहर बाद कनु, रामदासभाई, नीमुभाभी और मामाजी के पत्र आये। उन्हें पढ़ते-पढ़ते मनु और प्रभावतीबहन को सिखाने का समय हो गया।

बा को दी गई सुविधाओं के सम्बन्ध में गृहमंत्री ने जो वक्तव्य दिया था, बापू ने उसका जवाब एक संक्षिप्त किन्तु शानदार विरोध-पत्र द्वारा दिया है।

कल डा० सिम्कॉक्स मीराबहन को देखने आयेंगे। मनु और प्रभावहन के जाने के बारे में अभी तक कोई हुक्म नहीं आया, मगर बापू मानते हैं कि कुछ-न-कुछ हुक्म तो जरूर आयेगा। बापू को यहां से हटाने का विचार होता होगा, इसलिए हुक्म आने में देरी लगी है।

: ७३ :

जेल में मन-बहलाव

२० मार्च '४४

बापू का बा के बारे में विरोध-पत्र आज गया है। उनका आज मौन-दिन है, इसलिए वे दिनभर 'अरेबियन नाइट्स' पढ़ते रहे।

डा० सिम्कॉक्स सुबह दस बजे आये और मीराबहन को बेहोश करके उनकी बांह को खूब हिलाते-डुलाते रहे। शाम को उन्हें फिर देखने आये। मनु को बुखार नहीं था। उसे मैंने आज तीसरा इंजेक्शन दिया। दोपहर को भाई की फाइल का सूची-पत्र तैयार कराने का काम किया। आधा कर पाई। हम रोज गाते हैं: 'यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः॥' आदमी अपने विचार और वाणी से कभी-कभी अनिच्छा और विरोधी प्रयत्न के बावजूद भी अपना काम कर लेता है। दूसरी ओर खूब सतर्क रहने पर भी वह नासमझी कर बैठता है।

२१ मार्च '४४

आज बा की मृत्यु का दिन है। सिपाही काफी फूल इकट्ठे कर लाये, मगर दरवाजे पर रखने के लिए फूल जरा देर से पहुंचे। समाधियों के दरवाजे को फूलों से सजाया गया।

पारसी लोगों का आज त्यौहार है। बा हमेशा त्यौहार के दिन डा० गिल्डर और कटेली के लिए कुछ-न-कुछ बनाने की व्यवस्था करवाया करती थीं, मगर आज उनके लिए बाहर से इतना खाने को आ गया कि और बनाना बेकार लगा। आज की जगह कल पूरन-पूरी बनाने का विचार किया। मालिश के समय डा० गिल्डर जरा देर से आये। बापू ने कारण पूछा। मैंने बताया कि बाहर से खाना आने में देर हो गई थी, इसलिए डाक्टर साहब को नाश्ता करना पड़ा। इसपर बापू को लगा कि उनके लिए हमें भी कुछ करना चाहिए था। दोपहर को बापू के फिर कहने से मैंने लकड़ी के एक छोटे-से रंगीन डिब्बे में एक रूमाल पर डा० साहब का नाम लिखकर उसमें रखा और पार्सल बनाया। रामनायक ने बापू के लिए एक बड़ा चौरस रूमाल बनाया था, जिसके बीच रंगीन धागे का काम था, उसे भी लिया।

प्रभाबहन से बारीक खादी लेकर रामनायक ने दो रूमाल और बना दिये। बड़े रूमाल के किनारे हम तीनों ने मिलकर बनाये और उन्हें धोकर इस्त्री करके तीनों रूमालों पर नाम डालकर एक दूसरा पार्सल बनाया।

शाम को प्रार्थना होने के समय डा० साहब को कुंकुम का तिलक लगाकर फूलों की माला पहनाई और पार्सल की भेंट दी। बक्स पर स्वयं बापू ने नाम लिख दिया था, इसलिए उसकी बड़ी कीमत हो गई। आज का दिन इसी काम में गया।

डा० सिम्कॉक्स भी आये थे। वे मीराबहन को देखकर चले गये। अगले महीने फिर आयेंगे।

७४ :

बा की स्मृति

२२ मार्च '४४

बा को गये आज एक महीना पूरा हुआ। इसी तरह उस दिन तारीख २२ और तिथि तेरस थी। सुबह प्रभावतीबहन ने पूजा की, मनु ने बा की तस्वीर रखकर पूजा की। जहां महादेवभाई की राख रखी थी, वहीं बैठकर प्रभावतीबहन पूजा करती हैं। यह विचित्र बात है। उन्हें इस बात की खबर तक न थी, अकस्मात् ही उन्होंने उस जगह को पूजा के लिए चुन लिया था। साढ़े आठ बजे प्रार्थना में ईशावास्यमिदं, नम्यो, असतो मा सद्गमय, अउजबिल्ला, मजदा और गीता के बारह अध्याय पढ़े। सजावट बड़ी अच्छी थी। कैदियों को खिलाने और प्रार्थना का कार्यक्रम रखा गया।

पकौड़ी, हलुवा और पूरनपूरी बनाई। दो बजे बापू पूछने आये, "बा पुछवाती है कि कितनी देर है।" उसी समय मैंने कैदियों को बुलवाया था। सबको साथ ही पौने तीन बजे खिलाना शुरू किया और सबने भरपेट खाया। साढ़े छः बजे बापू को घूमने निकलना था और सात बजकर पैंतीस मिनट पर प्रार्थना शुरू करनी थी।

बीमारी के दिनों में बा की खाट बापू के कमरे में रहती थी। वहां जिस मेज पर बा सिर रखा करती थीं, उस पर मैंने मेजपोश डालकर विष्णु और लक्ष्मी की मूर्तियां प्रतिष्ठित कीं। उनके चरणों के पास वह चित्र रखा, जिसमें बा बापू के

पांव पखारती हुई दिखाई गई हैं। इसके नीचे मीराबहन का बनाया हुआ मिट्टी का विष्णु-मंदिर रखा। लगता था, मानो बा मन्दिर से उठकर भगवान् के चरणों में पहुंच गई हैं। इस दृश्य के पीछे तुलसी के पौधे रखे, ऊपर दीवार पर 'हे राम' की तख्ती लटकाई और सामने के भाग में रांगोली से सजावट की। उसमें ॐ और स्वस्तिक बनाये, सुन्दर दृश्य था।

बापू और भाई के नाम माताजी के पत्र आये हैं। मोहनलाल का पत्र भाई के नाम आया है, जल्दी मुलाकात के लिए आयेंगे।

सात बजकर पैंतीस मिनट पर प्रार्थना शुरू हुई। हमेशा प्रार्थना के साथ-साथ 'वैष्णवजन', 'गोपाल राधाकृष्ण', 'गोविन्द गोविन्द गोपाल' (यह धुन बा को बहुत प्रिय थी) 'ह्वेन आइ सर्वे दि वंडरस क्रास' तथा रामायण हुई। मीराबहन ने करताल बजाई। पीछे गीताजी का पारायण किया। सवा नौ बजे सारा कार्यक्रम अच्छी तरह समाप्त हुआ। प्रभा, मनु और मैं नीचे जाकर समाधि पर बत्ती रख आये। रात को बैठकर कातने की बापू ने मनाही की।

२३ मार्च '४४

बापू से मैंने रामायण और व्याकरण साढ़े ग्यारह से साढ़े बारह तक पढ़ना शुरू किया है। शाम को आधा घंटा लिन्-यू-टांग की किताब पढ़ी।

शाम को घूमते समय बापू कुछ थके-से लगे। पूछने पर कहने लगे, "एक तो मेरे पत्रों के सरकारी जवाब नहीं आते हैं, इसलिए मन पर बोझ है। दूसरे, बा के जाने का धक्का अभी दूर नहीं हुआ। बुद्धि कहती है कि इससे अच्छी मृत्यु बा के लिए हो नहीं सकती थी। मुझे हमेशा यह डर रहता था कि बा अगर मेरे पीछे रह जाएगी तो अच्छा नहीं। मेरे हाथों में ही चली जाये तो मुझे अच्छा लगे; क्योंकि बा मुझमें समा गई थी। मैं शोक में पड़ा रहता हूं, ऐसा भी नहीं है। बा का विचार करता हूं, वह भी नहीं। क्या है, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।"

: ७५ :

असंतोष और प्रगति

कटेली साहब ने खबर दी है कि २७ तारीख (सोमवार) के दिन माताजी

मुलाकात करने आयेंगी। मनु बेबी के लिए फ्राक बनाना चाहती है। मेरे पीछे लगी है कि मैं कपड़ा काट दूं, मगर मैं तो फ्राक काटना जानती नहीं हूं। कैदियों में एक दर्जी है। कल उससे पूछूंगी।

२४ मार्च '४४

प्रभावतीबहन ने रोटी बनाई। हम सबको बड़ी अच्छी लगी। जबतक आटा है, डबल-रोटी नहीं मंगायेंगे।

दोपहर को भाई रामायण पढ़ने के समय कातते हैं, पीछे खाने को बैठते हैं। इसलिए इस समय का उपयोग करने के लिए भाई से मैंने भूगोल सीखना आरम्भ किया है।

सवेरे घूमते समय चर्चा चली थी कि जापानी अगर सचमुच आगे बढ़ें तो हमें क्या करना होगा। बापू बोले, "हो सकता है कि जब भी हम जेल से निकलें, हमें जापान का सामना करना पड़े। उनके वश में होने का तो सवाल उठता ही नहीं। लोगों से हम क्या करवा सकते हैं, किस प्रकार उनपर काबू रख सकते हैं, यह तो उन्हें देखकर ही तय करना होगा।" आश्चर्य है कि ऐसे आदमी को सरकार जापान की तरफ झुकने वाला कैसे कहती है!

२५ मार्च '४४

आज महादेवभाई की मृत्यु का दिन है। उनको डेढ़ वर्ष से अधिक हो गया है, इसलिए हफ्तों की गिनती तो भूल गई है; मगर वह दिन इतना ताजा है कि मानो सारी घटना कल ही हुई हो। अब उनके साथ बा भी जा मिली है। मन में आया है कि यह चितास्थान जगदम्बा और महादेव के मन्दिर के नाम से पूजा जायेगा। वहां जो नीम लगाया था, उसपर नये पत्ते आ रहे हैं।

गर्मी बढ़ने लगी है, इसलिए बापू सुबह शाल लेकर नहीं निकलते।

शाम को माताजी की मुलाकात के बारे में बात हुई। प्रभाबहन ने कहा, "इतनी दूर से आने वाले को एक से अधिक मुलाकातें मिलनी चाहिए। देवली में मिलती थीं।" बापू बोले, "वे दिन गये।" रात में मैंने भाई की फाइलों का काम किया।

२६ मार्च '४४

बापू ने भण्डारी और शाह से पूछा, "सुशीला की माताजी इतनी दूर से फिर नहीं आ सकेंगी, इसलिए एक से अधिक बार मिलने नहीं दिया जा सकता क्या?"

भण्डारी ने बम्बई सरकार से दरियाफ्त करने को कहा। बाद में बापू कहने लगे, "माताजी को अनुकूल हो तो उन्हें एक महीना रोक लिया जाए। दीनशा के वहां वे अपना इलाज भी करायें, लड़की की भी संभाल हो। फिर दुबारा मिलकर महीने के बाद जायें।"

भाई को संकोच हो रहा था कि दीनशा पर इतना बोझ कैसे डाला जाय, लेकिन बापू को कोई हर्ज नहीं लगता था। बोले, "उसके यहां मैं किसी भी रोगी को भेज सकता हूं, यह बरसों से उसके साथ समझौता है।"

भण्डारी कहते थे कि माताजी का पत्र देर से आया था, इसलिए उसका जवाब २२-२३ को भेजा गया। उनको वह समय पर मिल भी सकता है और नहीं भी मिल सकता है।

२७ मार्च '४४

बापू का मौन है। मुलाकात के लिए उन्हें मौन में ही जाना होगा, यह अच्छा नहीं लगा। पर इससे यह फायदा भी था कि आज जाने से रामायण वगैरह में नागा नहीं पड़ेगा। सोमवार को यों ही नागा होता है।

दोपहर की डाक से मोहनलाल का पत्र आया कि वे आज आ रहे हैं। हमने तो मुलाकात की आशा छोड़कर दिन का कार्यक्रम शुरू कर दिया था। मैंने ६-७ अंक 'डान' के पढ़े, मनु और प्रभा को सिखाया, खेलने गई और खाने के बाद बापू के पास लिन्-यू-टांग की किताब पढ़ी। इतने में घूमने का समय हो गया।

बापू की शिकायत का सरकारी उत्तर आया है। बुरा है। काशीबहन का भी पत्र आया है।

बापू ने मीराबहन के साथ बातें करते हुए उन्हें बताया कि चीनी सहयोग मंडलियां (Chinese Co-ops) हिन्दुस्तान के लिए क्यों उपयोगी नहीं हैं? चर्खा-संघ में और इंडस्को[1] (Industrial Co-operative) में क्या फर्क है?

रात को एक बड़ा सांप बरामदे में पाया गया। मीराबहन के हाथ में टार्च थी इसलिए वे बाल-बाल बच गईं, नहीं तो पैर उसीपर पड़ता। सिपाहियों ने आकर उसे मार डाला।

कटेली साहब ने बताया कि कल ११ बजे हम लोगों की मुलाकात होगी।

---

[1] औद्योगिक सहयोग मण्डल

२८ मार्च '४४

आज सुबह घूमते समय बापू सात्त्विक, राजसिक और तामसिक असंतोष का भेद समझाने लगे, "प्रगति के लिए असंतोष आवश्यक है, मगर असंतोष जिस प्रकार का होगा, प्रगति उसीके आधार पर होगी। तामसिक असंतोषवाला मनुष्य मात्र ईर्ष्या के वश होकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करेगा। राजसिक असंतोष वाले के मन में निर्दोष स्पर्द्धा का भाव रहेगा, किन्तु सात्त्विक असंतोष में किसीके साथ मुकाबले का सवाल ही नहीं उठता। मनुष्य स्वतंत्र होकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। फिर राजसिक असंतोष वाला मनुष्य राजसी वृत्ति से काम करेगा। वह दौड़-धूप से भरा रहेगा। सात्त्विक भाव से प्रयत्न करने वाला शान्ति से, सौम्यता से काम करेगा।"

डेढ़ वर्ष से ऊपर हो गया जब इस दरवाजे के अंदर हम सब आये थे। उस रोज वा भी मेरे साथ थीं और मैंने आशा की थी कि हम लोग बाहर भी एक साथ ही जाएँगे, मगर वह कुछ न हुआ।

जमादार···हमें मोटर में इंस्पेक्टर-जनरल पुलिस के ऑफिस में ले गया। हम लोग सीढ़ियां चढ़ रहे थे तब ऊपर के बरामदे में से माताजी को आते देखा। बेबी ने पेशाब कर दिया था, इसलिए वे कपड़े धोने गुसलखाने गई थीं और वहीं से आ रही थीं। उन्होंने हमें नहीं देखा। आफिस के दरवाजे पर हम उनसे मिले और साथ ही भीतर गये।

बेबी बड़ी सुन्दर लगती है। वह भूखी थी, इसलिए दूध पिलाने पर सो गई। थोड़ी देर में माताजी ने उसे जगा दिया। वह खेलने लगी, मगर बाद में रोने लगी और तूफान मचाने लगी। माताजी ने उसे संतरा चुसाया। शकुन्तला की बातें चलीं।

हमें आशा थी कि दूसरी मुलाकात मिलेगी, मगर भण्डारी तो बम्बई चले गये थे। अडवानी इस बारे में कुछ जानते न थे। इसलिए यह तय हुआ कि खुद मोहन-लाल बम्बई जाकर पता करें और माताजी को दीनशा के यहां छोड़ जायें।

हम लोग दो बजे वहां से वापस लौटे। बापू तभी उठे थे। उन्हें सब बताया तो बातों में तीन बज गये। मुलाकात पूरी हुई है, मुझे ऐसा नहीं लगता; क्योंकि दूसरी मुलाकात की आशा है।

: ७६ :

बा के बारे में सरकार की सफाई

बापू रातभर सो नहीं सके। सुबह चार बजे उठकर बा-सम्बन्धी सरकारी उत्तर का जवाब तैयार करने लगे।

२६ मार्च '४४

आज बा की मृत्यु पर लार्ड जार्ज का समवेदना-पत्र बापू को मिला।

३० मार्च '४४

आज पता चला कि हमें दूसरी मुलाकात न मिल सकेगी। बुरा लगा।

बापू ने अपना पत्र सुधारा। हम सबने भी उसे देखा। प्रार्थना के बाद बापू कहने लगे, 'बा की अंत्येष्टि-क्रिया के बारे में सरकारी पत्र में था—'पूछने पर पता चला कि पहले या दूसरे चुनाव में आपका किसी तरफ खास पक्षपात न था।' और यह उनको खटका था। मैंने और भाई ने इस वाक्य की ओर उनका ध्यान दिलाया था, मगर बापू ने आज इस वाक्य को पकड़ा और हम लोगों से कहने लगे, "मैं ध्यान न दूं तो मेरे साथ झगड़ा करना चाहिए। अगर डरते रहेंगे कि बापू का रक्तचाप बढ़ जावेगा या बापू नाराज हो जायेंगे तो मेरा काम नहीं कर सकोगे।"

३१ मार्च '४४

प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। सरकार को पत्र लिखने के विचार से इतने भरे थे कि घूमने के बाद २०४। ११६ रक्तचाप निकला। स्नान करते समय भी उसी विचार में लीन रहे। उसके बाद बाहर निकलकर लिखना शुरू किया।

साढ़े छः बजे बापू मुझसे बोले कि मैं उन्हें लिन्-यू टांग की किताब पढ़कर सुनाऊं, मगर मैंने उनसे आराम लेने को कहा, तब वे आंख मूंदकर लेटे और सो गये।

१ अप्रैल '४४

मैंने जब डा० गिल्डर से कहा कि बापू के पत्र का पांच बार संशोधन हो चुका है तो वे बोले, "छठी बार मैं संशोधन कराऊंगा।" उन्होंने जो कमियां निकालीं, वे मुझे भी खटकी थीं। मैं एक पत्र तैयार करके बापू के पास ले गई। उन्होंने पत्र को खूब काट-छांट डाला था। हमारे सुधारों को समझकर वे घूमने गये। अपना सुधारा हुआ पत्र वे हमें दे गये कि जिससे हम उसे अच्छी तरह देख लें और दोनों में से जो

पसन्द करें, वे उसे ही भेजने का निश्चय करेंगे। हम लोगों ने दोनों पत्रों को मिला कर एक तीसरा पत्र तैयार किया। बापू पौने दस बजे वापस आये तब डा० गिल्डर ने किये हुए परिवर्तनों को पढ़कर उन्हें सुनाया। बापू ने स्वीकार किया। स्नान-घर में मुझसे उन्होंने वह पत्र पढ़कर सुनाने को कहा। उन्होंने उसमें कुछ और सुधार करवाये, यहां तक कि खाते समय भी सुधार करवाते रहे। बारह बजे पत्र पूरा हुआ। भाई ने तीन बजे तक टाइप कर दिया और चार बजे वह साधारण डाक से चला गया। सोमवार को इसी पत्र की एक नकल रजिस्ट्री से भेजी जावेगी।

भाई रात गये तक पत्र की नकलें टाइप करते रहे। चाहते हैं कि सोमवार के लिए नकलें तैयार हो जावें। नकलों के साथ परिशिष्ट भी टाइप की, यहां तक कि उनके सिर में दर्द हो गया।

प्रभाबहन के सिर में भी बड़ा दर्द रहा। उनमें खून की कमी है। मैंने उन्हें लोहा सेवन करने की सलाह दी है।

२ अप्रैल '४४

सवेरे बापू को घड़ी देखने में देर हो गई, इसलिए छः बजकर बीस मिनट पर प्रार्थना के लिए उठे, वह भी प्रभाबहन के उठाने से। वे उस समय साढ़े चार का समय समझ रहे थे। घंटे और मिनट की सुइयां देखने में भूल हो गई थी।

घूमते समय बापू कहने लगे कि पिछले साल की निस्बत इस साल कम गर्मी पड़ रही है। पिछले साल उपवास के बाद मार्च में पंखा चलाना पड़ता था, मगर इस साल अभी तक पंखे की जरूरत नहीं है।

बा की शिकायतों वाले बापू के पत्र में स्पष्ट किया गया था कि किस प्रकार बार-बार बा के लिए सहूलियतें मांगी गई और किस तरह बार-बार कहने के बाद मौका निकल जाने पर सहूलियतें मिलीं—इससे भण्डारी को चिन्ता हो गई कि कहीं उनपर विपत्ति न आ पड़े; इसलिए वे अपने बचाव की खातिर आज आकर कहने लगे, "यह पत्र की क्या बात है? आपने मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया?" डा० गिल्डर बोले, "बुलाया तो था, मगर आप यहां नहीं थे।" भण्डारी ने कहा, "दीनशा को इसीलिए पहले नहीं भेजा कि आप उनकी जरूरत नहीं समझते थे।" गिल्डर बोले, "मैंने तो आपसे कभी नहीं कहा कि दीनशा की सेवाओं की आवश्यकता नहीं।" भण्डारी ने उत्तर दिया, "हां, वह तो ठीक है। मैंने भी ऐसा कुछ नहीं कहा। मैंने यह कहा था कि उन्हें सलाह के लिए नहीं बुलाया जा

सकता; क्योंकि वे डिगरीधारी डाक्टर नहीं हैं। पता नहीं, सरकार इससे क्या समझी।"

बापू बोले, "और दाह-क्रिया के बारे में सरकार कहती है कि उसने पूछा और पता चला कि मुझे पहले दो चुनावों में कोई पक्षपात नहीं था, यह क्या बात है?"

भण्डारी ने जवाब दिया, "मैंने तो शब्दश: आपका संदेशा टेलीफोन पर पढ़कर सुनाया था। और मैंने कुछ नहीं कहा।"

फिर भण्डारी भाई से पत्र लेकर डा० गिल्डर के कमरे में बैठकर पढ़ने लगे। बापूकी मालिश पूरी करके डा० गिल्डर वहां गये और भण्डारी से बातें करते रहे। बापू ने मुझसे कहलाया कि वे भण्डारी को भी एक पत्र लिखेंगे। मैं कहने गई तो भण्डारी मुझसे बोले, "यह पत्र लिखने से पहले मुझे बुला क्यों न लिया?" मैंने बताया, "आपको बुलाया तो था, मगर आप चले गये थे। मैं तो खुद आपसे मिलना चाहती थी; क्योंकि आपने कहा था कि माताजी से मेरी दूसरी मुलाकात हो सकेगी।" वे बोले, "हां-हां, वह तो अडवानी कर सकता था।" मैंने कहा, "अडवानी से कहा था। उन्होंने कहा कि वे कुछ नहीं कर सकते।" भंडारी बोले, "मुझे तो लगता है कि उसमें कोई दिक्कत नहीं हो सकती थी।" डा० गिल्डर ने बतलाया सुशीला का भाई आयङ्गर के पास गया था, वहां से 'न' मिली।" भण्डारी बोले, मैं करता तो ऐसा न होता।"

मैंने कहा, "मेरी माताजी इस समय बम्बई में हैं। यहां आने वाली हैं। बापू ने उन्हें इलाज के लिए दीनशा के यहां रहने को कहा है। इसलिए आप अब भी कुछ कर सकते हों तो करें।" वे कहने लगे, "उनके आने पर मुझे खबर करना।" बाद में उन्होंने किया-कराया कुछ नहीं।

सुबह बापू ने भण्डारी को पत्र लिखा। शाम को भंडारी स्वयं आये और फिर वही बातें कहने लगे, "दीनशा के बारे में मैंने पहले समझा था कि आप उसे डाक्टरी सलाह के लिए बुलाते होंगे। इसीलिए मैंने कहा था कि उसे बुलाया नहीं जा सकता।" बापू बोले, "मैंने तो आपसे स्पष्ट कहा था कि वह डाक्टरों के नीचे काम करेगा।" भण्डारी ने कहा, "जब आपने यह कहा तब मैंने उसके आने की इजाजत मांगी थी।" बापू बोले, "बा तो बहुत दिनों से कह रही थी। मुझसे जैसे ही आपने पूछा, मैंने स्पष्ट कर दिया था कि वह आकर क्या करेगा।"

भण्डारी कहने लगे, "बा ने पहले अडवानी से कहा था कि दीनशा को

भेजो। अडवानी ने मुझसे कहा था नहीं, यह मुझे याद नहीं। मैं १७ जनवरी को आया। उसके बाद ही बा ने मुझसे कहा। बा के कहने पर तो मैंने कुछ किया नहीं, मगर आपके कहने पर फौरन अमल किया।" बापू बोले, "मैंने तो हताश होकर सरकार को लिखा था; क्योंकि जबानी कहने का कोई असर देखने में नहीं आया।" भण्डारी ने जवाब दिया, "यह पता चलते ही कि आप उन्हें सलाह के लिए नहीं, बल्कि इलाज और एनीमा या मालिश करने के लिए बुलाते हैं, मैंने उनके आने का इंतजाम किया।" डा० गिल्डर ने बताया, "मगर सलाह के लिए उन्हें बुलाने का कभी सवाल ही नहीं उठा।"

दाह-क्रिया के बारे में भी भण्डारी ने कहा, "मैंने तो अक्षरशः आपकी दरख़्वास्त उन्हें सुना दी थी। कल जाकर मैं सब कागजात देखूंगा। आपको उत्तर की जल्दी तो नहीं है न ?" बापू ने कहा, "नहीं।" अपने और कागजों के साथ भण्डारी बापू का कलवाला पत्र भी मांग गये।

बापू ने कौंसिल आव स्टेट में दिये गए कोनरन स्मिथ के वक्तव्य के बारे में भी एक पत्र सरकार को लिखा। शर्मा को बुलाने की तारीख उन्होंने ६ फरवरी बताई थी, जब कि ३१ जनवरी के अखबारों में शर्मा का नाम आ गया था और २ फरवरी को फिर से याद दिलाई गई थी।

: ७७ :

बापू की जागरूकता

३ अप्रैल '४४

भाई ने आज भी काफी टाइप का काम किया। बापू का मौन है। वेवल का उत्तर आया है जिसमें मुझे तो सूखी 'न' लगती है। मीराबहन और भाई उसमें से कुछ आशाजनक अर्थ निकलने की सोच रहे हैं। अभ्यास के तौर पर बापू ने उसका उत्तर लिखने को कहा। परसों वाले पत्र की आज एक नकल रजिस्ट्री से गई।

डा० गिल्डर को थोड़ा बुखार है।

४ अप्रैल '४४

आज सबका वज़न लेने का दिन है। डा० गिल्डर का वज़न ६ पौण्ड घटा। मनु का और मेरा वही-का-वही रहा। मीराबहन और बापू एक-एक पौण्ड घटे। प्रभाबहन और भाई का वज़न बढ़ा।

बा की समाधि पर मीराबहन ने शंखों का 'हे राम' बनाया। हम लोगों ने शाम को देखा।

मीराबहन ने अपना उत्तर पाठरूप में लिखकर दोपहर में बापू को दिया। मैंने भी चालीस मिनट में अपना जवाब लिखकर बापू को दिया। उन्हें अच्छा लगा।

शाम को घूमते समय पाकिस्तान की बात होने लगी। बापू कहने लगे, "मैंने कहा है कि जिसे मैं पाप समझता हूं, उसमें 'हां' कैसे करूं! मगर तुम्हें लेना हो तो लो। तुम्हें कौन रोक सकता है। मैं गौ-हत्या को पाप मानता हूं, मगर उसके लिए मुसलमानों के साथ झगड़ा नहीं करता। अपनी बात मैं उन्हें सुना देता हूं, उन्हें वह चुभती नहीं। खिलाफत के दिनों में मैं उनसे कहता था कि खिलाफत तुम्हारी गाय है। मैं उसे अपनी गाय मानता हूं। मेरी गाय को तुम अपनी गाय मानो। मगर मुझे तुम्हारे साथ सौदा नहीं करना है। जो करना है, अपने आप करो। एक साल तक यह चला भी। लाखों गाएं बचीं। मुसलमानों ने अपने-आप उन्हें बचाया।"

५ अप्रैल '४४

डा० गिल्डर ने अपना उत्तर लिखकर आज बापू को दिया। भाई तो रात उत्तर लिख चुके थे। आज उसे टाइप किया।

शाम को चार बजे बापू प्रभाबहन की डायरी देखते-देखते उन्हें गुजराती भाषा के बारे में और बाद में दूसरी और बातें बताते रहे। एक घंटे तक उनकी बात चलती रही। मैं भी सुनती रही। बाद में उन्हीं बातों का विचार आता रहा।

आज सुबह खाने के कमरे से जाते समय बापू ने देखा कि वहां लिखने की मेज पर खाने का सामान रखा है। उन्हें वह चुभा और सबको उन्होंने ऐसा न करने की हिदायत दी, "लिखने की मेज पर यह सब सामान देखा तो मुझे चुभा। मुझे लगा कि कटेली को भी बुरा लगता होगा, मगर हमें बुरा न लगे, इसलिए वे कुछ कहते नहीं। मैं उन्हें इस परिस्थिति में नहीं डालना चाहता। उनसे मेहरबानी भी

नहीं चाहता। वे मेहरबानी करके हमें यह मेज इस तरह इस्तेमाल करने दें तो उससे तो बेहतर यह है कि हम उसे काम में न लें। इसीलिए मैंने यह हिदायत की। पहली बात तो यह है कि कटेली से पूछना चाहिए। उन्हें इसके इस तरह इस्तेमाल में लाने में कोई हर्ज न हो तो मुझे भी नहीं है। मुझे खुश करने के लिए तुम कुछ न करो।"

मीराबहन ने कटेली से बात की। परिणामस्वरूप वहां संगमरमर की एक मेज आ गई और लिखने की मेज कोने में चली गई। उस मेज के खाने इस्तेमाल किये जाएंगे। दूसरा सामान संगमरमर की मेज पर रखा जावेगा।

: ७८ :

जेल में दूसरा राष्ट्रीय सप्ताह

६ अप्रैल '४४

आज राष्ट्रीय सप्ताह शुरू होता है। कल शाम बापू बता रहे थे कि सन् १९१९ में उन्होंने ६ अप्रैल के दिन सत्याग्रह को जन्म दिया और रौलट एक्ट का विरोध करने के लिए प्रार्थना, उपवास और हड़ताल का एलान किया। देश-भर में जबर्दस्त हड़ताल हुई। उससे पहले हड़ताल शहरों में ही होती थी। अब देहातों में भी आरम्भ हुई। हड़ताल का निश्चय जिस समय किया गया, उस समय वक्त इतना कम था कि लोगों तक संदेश पहुंचाना कठिन था। मगर इस चीज में ईश्वर का हाथ था। इसलिए जागृति की लहर तो अपने-आप ही लोगों में फैल गई और छः अप्रैल को देशभर में व्यापक हड़ताल हुई। अधिकाधिक संख्या में लोगों ने २४ घंटे का उपवास किया। हड़ताल कई-कई स्थानों में तेरह अप्रैल को मनाई गई। लोगों की मांग थी कि सत्याग्रह करने से पहले एक हफ्ते का समय और दिया जाय ताकि सत्याग्रह के लिए कुछ तैयारी की जा सके। अमृतसर में सारा हफ्ता मनाया गया। लोगों की मान्यता थी कि तेरह तारीख को जनरल डायर द्वारा गोली चलवाने से पहले सरकार ने डुग्गी पिटवाकर घोषणा की कि जलियांवाला बाग में सभा होगी और वहां जो आदमी भाषण करने वाला था, वह सरकार का ही आदमी था। इस तरह लोगों को वहां इकट्ठा करके, बिना किसी तरह का नोटिस दिये, डायर ने उन पर गोली चलवाई। वह तो मशीनगन लाने वाला था, लेकिन

गली तंग थी, इसलिए नहीं ला सका। बाद में उसने स्वयं कबूल किया कि अगर बारूद न खतम हो गई होती तो वह गोली चलवाता रहता।

प्रभाबहन ने पूछा, "उसे सजा नहीं हुई ?" बापू ने उत्तर दिया, "जांच कर-वाई गई थी और कामन्स-सभा ने उसे जनरल के पद से हटा दिया, किन्तु लार्ड-सभा ने उसका स्वागत किया और उसे हीरों से जटित तलवार भेंट की।" भाई बोले, "बर्मिंघम नगर के निवासियों ने भी उसका ऐसा ही स्वागत किया था। आश्चर्य है कि उस समय की इन घटनाओं के बावजूद भी अगस्त १९४२ के समय सरकार हमारे लोगों से बम्बई में सड़कों पर झाड़ू लगवा सकी।"

प्रभाबहन ने कहा, "बिहार में ऐसा ही हुआ।" बापू बोले, "हां, एक तरफ सारे देश में जागृति आई है और दूसरी तरफ यह है कि लोग आज भी डरकर ऐसे काम कर देते हैं। मगर बात तो यह है कि उस वक्त लोग सरकार के डर से थर-थर कांपते थे। आज दो वर्ष से सरकार का जो दमन चल रहा है, उसके सामने रौलट एक्ट और जलियांवाला बाग कोई चीज नहीं है। तो भी लोग इस समय कांपते नहीं हैं, उन पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ है।"

बापू एक और अवसर पर बात करते हुए कहने लगे, "सरकार की इतनी सख्ती के परिणाम से कांग्रेस बहुत ऊंची उठ गई है। आज सब कांग्रेस का ही नाम लेते हैं। दूसरे दलों के लोग सरकारी झंझटों में नहीं पड़ते। पड़ें तो बहुत-कुछ उन्हें मिले भी। लेकिन ऐसे दलों के लोग समझ गये हैं कि इससे देश को कोई फायदा नहीं होने का। देश के लिए कुछ करना हो तो वह कांग्रेस के ही मार्फत हो सकता है। इसीलिए सभी लोग कांग्रेस को रिहा किये जाने की मांग करते हैं।"

आज सभी का २४ घंटे का उपवास रहा। सुबह छः से शाम के छः बजे तक अखण्ड चर्खा चलाया। मैंने, मीराबहन ने और भाई ने दो-दो घंटे, मनु ने साढ़े तीन घंटे, प्रभाबहन ने ८ घंटे तथा बापू और डा० गिल्डर ने एक-एक घंटा काता।

बापू ने सुबह प्रार्थना के बाद उठकर वेवल के पत्र का उत्तर तैयार किया। हम सबको जरा तीखा लगा, मगर बापू को लगता था कि दूसरा रास्ता नहीं है। कहने लगे, "वह पत्र तीखा है ही नहीं।" स्नान के बाद उसे फिर से पढ़ा। दोपहर को भाई ने कच्ची नकल टाइप की। मैंने उन्हें लिखवाया।

मैंने और भाई ने बापू से कहा, "इस तरह का पत्र न लिखें तो क्या हर्ज है ?"

वे बोले, "लिखना तो चाहिए। न लिखूं तो मैं नीचे उतरता हूं और लिखूं तो ऐसा ही लिख सकता हूं।"

रात को डा० गिल्डर प्रार्थना के बाद बोले, "यह पत्र लिखने का हेतु क्या है ? क्या आगे के लिए पत्र-व्यवहार बन्द करने का ?" बापू ने कहा, "हां, यह परिणाम हो सकता है।" डा० गिल्डर ने कहा, "मगर इसका असर क्या होगा ? न सिर्फ आप, बल्कि सारा आंदोलन, सारी लड़ाई बदनाम होगी।"

बापू ने कहा, "हां, वह भी हो सकता है। लोग कह सकते हैं कि इस आदमी से तो हमारी कभी पट ही नहीं सकती। इसके साथ बात क्या करना ? मगर इस डर से कि जगत् क्या कहेगा, सत्याग्रही कभी कोई काम नहीं करता। वाइसराय के पत्र में मैं कोई रास्ता खुला पाता ही नहीं हूं। देखूं तो झट कूद पड़ूं। जैसा उसका पत्र है, वैसा ही जवाब होना चाहिए, ताकि वह समझले कि मैं उसका अर्थ समझ गया हूं। अगर कोई रास्ता निकलना भी होगा तो इसी तरह निकलेगा।"

बापू फिर दक्षिण अफ्रीका की बात करने लगे कि कैसे स्मट्स ने वहां उनसे बात करने से भी साफ इन्कार कर दिया। वे ट्रांसवाल पर चढ़ाई कर रहे थे और ३,००० आदमियों को अपने हाथों खिलाते थे। स्मट्स ने कहा, "बात करना है तो यहां से लौट जाओ।" मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे और आगे बढ़े। अन्त में उसे उनके साथ समझौता करना पड़ा।

बापू कहने लगे, "उस लड़ाई के आरम्भ में सब लोग मेरे विरुद्ध थे। बा समेत सोलह आश्रमवासियों को लेकर मैंने लड़ाई शुरू की। जो लोग मेरे साथ चर्चा करते, उनसे मैं कहता, 'भाई, मैं कहां यह लड़ाई चला रहा हूं। भगवान् मुझसे जो कराता है, मैं करता हूं।' आखिर छः महीने में उस लड़ाई का सफल अन्त आया। सत्याग्रह का यह नियम है कि 'कोई क्या कहेगा' इस विचार से सत्याग्रही कभी कोई कदम न उठावे। मैं सच्चा हूंगा तो मेरे हाथों हिन्दुस्तान का बुरा कभी होने वाला नहीं है। अभी मैं जो कहता हूं, उसे घमण्ड न माना जाय, मगर मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। बिगाड़ूं तो मैं ही बिगाड़ सकता हूं। मैं कभी हिन्दुस्तान को बिगाड़ूंगा नहीं। लोगों को लगे कि मुझसे निभ ही नहीं सकती तो वे मुझे छोड़ सकते हैं। मैं तो नाचूंगा। मैं तो यहां बैठा हूं। उन्हें जो करना है, करें।"

डा० साहब बाद में कहने लगे, "बापू जब सत्याग्रह के कानून की बात करते

लगते हैं तब हमारा मुंह बन्द हो जाता है।"

७ अप्रैल '४४

सुबह घूमते समय मैंने बापू से पूछा कि जिस सत्याग्रह की बात वे कल कर रहे थे, क्या वह दक्षिण अफ्रीका का आखिरी सत्याग्रह था ? उन्होंने जवाब दिया, "हां, वह आखिरी सत्याग्रह था। शुरू किया गया था १६ जनों को लेकर, मगर वह जंगल की आग की तरह फैला और इतना प्रचण्ड साबित हुआ कि छः महीनों में समझौता हो गया। हमारी गैरहाजिरी में बच्चों ने फिनिक्स का आश्रम चलाया। देवदास और प्रभुदास-जैसे १२-१२ बरस के लड़के रह गये थे और १६ बरस से ऊपर के सभी जेल में थे। पहाड़-जैसे जुलू लोग आसपास पड़े थे। गोरों का मिजाज इतना बिगड़ रहा था कि कुछ ठिकाना न था, मगर बच्चों के साथ क्रूरता करना कठिन था। बच्चों का काम बहुत अच्छी तरह चला। जोहांसबर्ग के दफ्तर का काम मिस श्लेजन ने संभाला। वह करीब २२ वर्ष की थी, मगर बड़े-बूढ़े तक उससे सलाह लेने आते थे। उसने वास्तव में अद्भुत काम किया—हिसाब संभालना, लड़ाई चलाना और 'इंडियन ओपीनियन' प्रकाशित कराना—यह सब उसके जिम्मे था। उसके लेख भी उन दिनों अद्भुत हुआ करते थे।"

मैं बोली, "यह तो यही हुआ कि उन दिनों उसकी जीभ में सरस्वती आकर बैठी थी।"

बापू ने कहा, "बस यही है, नहीं तो उसने इस तरह का काम न पहले किया था, न बाद में।"

भाई को बापूवाले मसविदे से संतोष नहीं था, इसलिए उन्होंने एक नया तैयार किया है। खाने के समय बापू उसे लेकर बैठे और मुझे एक नया ही पत्र लिखवा डाला। तीन बजे मैंने, मीराबहन ने और भाई ने अपने-अपने सुझाव उनके सामने रखे। बहुत-से सुधार किये गए और ७-८ बजे बापू ने फिर से नया पत्र लिखवा डाला। लिखाते समय भी सुधार करवाते रहे। आठ बजे घूमने निकले और २० मिनट घूमे। रात को विचार आया कि डा० गिल्डर की भी राय ली जाय और सुधार किये जायं। चाहते थे कि पत्र आज चला जाय अथवा न जा सके तो कम-से-कम पूरा तो हो ही जाय।

डा० गिल्डर कल सुबह बापू के सामने अपने सुझाव पेश करेंगे।

८ अप्रैल '४४

बापू ने अपने पत्र में कहा है कि समानता के बिना सहयोग नहीं हो सकता। डा० गिल्डर ने अपने सुझाव में इसका विरोध किया। इसी तरह बापू ने लिखा है कि हाकिम और रैयत एक होकर काम नहीं कर सकते। इसका विरोध भी डा० गिल्डर ने किया। बापू ने कहा, "सचमुच राजा-प्रजा एक मंच पर नहीं इकट्ठे हो सकते। जब ऐसा संभव नहीं होता तब राजा प्रजा का सेवक बन जाता है, राजा नहीं रहता।" अनेक राजतंत्रों की चर्चा करते हुए बापू ने कहा, "इंग्लैंड, अमेरिका या रूस—कहीं भी राजा-प्रजा में सच्चा सहयोग नहीं है।" बाद में उन्हें विचार आया कि कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां भी आ सकती हैं, जब राजा-प्रजा में तथा स्वामी-सेवक में सहयोग हो सकता है।

घूमते समय बापू ने हम लोगों को समझाया, "मानो कि एक मालिक बिल्कुल गुंडा है और नौकर पर जुल्म करता है। मगर एकाएक सर्प निकलता है और दोनों पर हमला करता है। तब वे दोनों सहयोग करेंगे और मिलकर सर्प को मारेंगे। इस तरह अनेक परिस्थितियां ऐसी हो सकती हैं, जिनमें असमान व्यक्तियों या दलों में सहयोग हो सकता है, इसलिए मेरा यह कहना कि सच्चा सहयोग समान दलों में ही हो सकता है, ठीक नहीं है। यह सच है कि इस खास जगह पर समानता के बिना सच्चा सहयोग नहीं हो सकता, मगर सामान्य नियम के रूप में यह चीज सच्ची नहीं है। मुझे यह बात सूझनी ही चाहिए थी, मगर हम सब अक्सर ऐसी भूल करते हैं और झट सामान्य नियम पर आ जाते हैं। अगर मेरा यह पत्र ज्यों-का-त्यों चला जाता तो मेरी हँसी होती। डा० गिल्डर ने तो सिर्फ इशारा किया, मगर अब मैं उनसे भी आगे जाता हूं। अब यह पत्र नया ही लिबास पहनेगा और छोटा भी हो जाएगा।"

सबेरे घूमकर, फूल चढ़ाकर ऊपर आये और स्नानादि के बाद बापू पत्र लेकर बैठे। बारह-साढ़े बारह बजे से लिखाना आरम्भ किया। पत्र दो बजे से पहले पूरा हो गया।

बापू ने कल से प्रभावहन को गीता का उच्चारण सिखाना आरम्भ किया है। आज उन्हें और मनु को बीस मिनट सिखाया, साथ ही संस्कृत भी पढ़ाई।

९ अप्रैल '४४

खाने के समय रोज की तरह रामायण वगैरह पढ़ा। आजकल बापू थके-से

रहते हैं। रामायण दो-चार मिनट पहले ही बन्द कर देते हैं। पहले वे नियत समय से अधिक पढ़ा करते थे। मैंने पूछा तो बोले, "रामायण में रस तो और ज्यादा आता है, मगर आजकल शक्ति कम है।"

खबर मिली है कि प्रभाबहन को मंगलवार के रोज भागलपुर भेजने का हुक्म आया है। बापू की बात सच निकली कि एक-न-एक दिन प्रभावती को जाना ही होगा।

बापू कहने लगे, "यह तो बस चलने का आरम्भ है। दूसरा नम्बर मनु का होगा, पीछे बाकी सबको यहां से हटावेंगे। मैंने तो तीन चीज में भविष्य कहा है। तीनों होने ही वाली हैं। लेकिन इसमें भविष्यवेत्ता की बात नहीं है, केवल अनुभव की ही है।"

मैंने प्रभावहन और मनु के लिए एक डिब्बे पर चित्रकारी करनी शुरू की है, कल सुबह पूरी होगी।

सुबह भण्डारी आयें थे। उस समय प्रभावहन के बारे में कुछ नहीं कहा। शायद बाद में खबर आई होगी।

१० अप्रैल '४४

प्रभाबहन को कल सवा पांच बजे जाना है। बड़ी हिम्मत से काम ले रही हैं। बापू का मौन उन्हें आज बहुत अखर रहा है। उन्होंने ही आज बापू की मालिश वगैरह की।

११ अप्रैल '४४

सवेरे उठते ही प्रभाबहन कहने लगीं, "कल इस वक्त मैं कहां हूंगी। बापू, अब तो थोड़े ही घंटे रह गये।" बापू बोले, "इसी तरह थोड़े मिनट रह जाएंगे और फिर तू चली जायगी।"

घूमते समय बापू बोले, "तेरा जाना चुभता तो है। एक तरफ से लगता है कि तू यहां पर रहती तो तेरा अभ्यास वगैरह अच्छी तरह से चलता। दूसरी तरफ से खुशी होती है कि भले तू जावे। यहां पर तो सुख का जीवन बन गया है। जेल में हम तकलीफें सहन करने के लिए जाते हैं, तपश्चर्या करने जाते हैं। यहां तकलीफ नहीं है। दूसरी जगह तुझे कुछ तकलीफें तो सहन करनी पड़ेंगी। मेरी दृष्टि से वह इष्ट है। मैंने तुझे समझाया है कि कैसे अपने-आप अभ्यास किया जाता है। ऐसा करेगी तो तेरा कल्याण ही है।"

सुबह नाश्ते के समय और बाद में खाने के समय प्रभावतीबहन बापू से कुछ प्रश्न पूछने लगीं।

बापू को लगता है कि सम्भव है, थोड़े दिनों बाद बिहार सरकार प्रभावती को छोड़ दे। छूटने के बाद वह क्या करेगी, इस बारे में वे बोले, "मैं यहां बैठा तुझसे बहुत नहीं कह सकूंगा। बाहर का क्या वातावरण है, दूसरे कार्यकर्त्ता व मित्रगण क्या राय देते हैं—वह सब देखकर तू तय करेगी। इतना कहे देता हूं कि आज जेल जाने की खातिर जेल जाने की बात मेरे पास नहीं। मगर तू देखे कि बाहर रहकर कोई काम ही नहीं कर सकती, खादी का काम भी नहीं कर सकती, तो जेल में जायगी। जेल से बचने की खातिर तू कुछ न करेगी। काम करते-करते तुझे पकड़ लें तो भले पकड़ लें। मगर मुझे लगता है कि तुझे इस बारे में विचार करने में कुछ कठिनाई नहीं आने वाली। वातावरण में से तू अपना रास्ता अपने-आप ढूंढ़ लेगी।"

साढ़े बारह बजे से लेकर अढ़ाई-तीन बजे तक कटेली ने प्रभाबहन के सामान की तलाशी ली। पीछे सब सामान बन्द करके चाभी अपने साथ ले गये। जो सिपाही प्रभावतीबहन को लेने आवेंगे, उनके मुखिया को वे चाभी दे देंगे। प्रभावतीबहन कहती थीं कि इतनी बारीकी से उनकी तलाशी आज ही हुई है।

तीन बजे के करीब कटेली साहब आये—कहने लगे, "अभी-अभी टेलीफोन आया है कि जिस गाड़ी से प्रभाबहन को ले जाना था, वह आज नहीं जा रही है। अब उन्हें कल सुबह दस बजे तैयार रहना होगा।" हम सब बहुत खुश हुए।

प्रभाबहन के पास रास्ते में पहनने के लिए रंगीन साड़ी नहीं है। बबूल के रंग में रंगी एक साड़ी, जो बा ने दो-एक महीने यहां पहनी थी और मुझे दी थी, मैंने उन्हें दी। उन्होंने बापू की दो धोतियां, एक तौलिया, एक छोटा रूमाल और उनके सूत की आंटी भी ली।

१२ अप्रैल '४४

सुबह उठे तो लगता था कि कौन जाने आज भी पुलिस जाना मुल्तवी कर दे। घूमने के बाद प्रभाबहन और डा० गिल्डर ने बापू की मालिश की। मैंने डिब्बे पर चित्र पूरा किया। सबको बहुत पसन्द आया। प्रभाबहन इस 'हे राम' वाले डिब्बे में बा का कोई चिह्न रखेंगी।

ऐसा लगता था कि बापू स्नानघर में होंगे, तब प्रभाबहन चली जावेंगी। पर

जब कोई नहीं आया तो बापू ने हमें दोनों को खाना खाने के लिए भेज दिया। १२॥ बजे बापू सोने के लिए लेटे। वे कह रहे थे, "अगर आज नहीं ले जावेंगे तो कल मैं भेजूंगा नहीं।"

इतने में खबर मिली कि मोटर आ गई है और सामान नीचे जा रहा है। सब उठे। प्रभाबहन तार के अन्दर से जाकर समाधियों को प्रणाम कर आईं। मैं और मनु साथ थीं। हम सब उन्हें पहुंचाने दरवाजे तक गये। एक बड़ी-सी पुलिस-लारी खड़ी थी। उसमें करीब आधे दर्जन सिपाही और एक मेट्रन थी। वह तो यहां सुबह से ही आकर बैठी थी।

प्रभाबहन ने बड़े धीरज से काम लिया, मगर तार के दरवाजे से बाहर जाने के बाद उन्हें साड़ी के पल्ले से आंखें पोंछते देखा। क्या स्थिति है कि मन का दुःख हलका करने के लिए अगर आंसू भी आवें तो इतने लोगों में उनकी नुमाइश होगी, इस डर से उन्हें रोकना पड़ता है! आखिर जेल जेल है और कैद कैद ही है।

एक बजे उन्हें विदा करके हम लोग ऊपर आये। प्रभाबहन के जाने से घर इतना सूना हो गया है कि बा के अवसान के समय का-सा वातावरण फिर बन गया है।

बापू तीन दिन से शाम को इतना थक जाते हैं कि बड़े धीरे-धीरे चलते हैं। अच्छा नहीं लगता। विचार आता था कि क्या किसी रोज सचमुच इतने दुर्बल हो जाएंगे कि इतना धीमा चलें!

१३ अप्रैल '४४

आज राष्ट्रीय सप्ताह पूरा हुआ। सुबह से प्रभाबहन की याद आ रही है। बेचारी को रास्ते की गर्मी में उपवास भारी पड़ेगा। बापू ताकीद करने वाले थे कि रास्ते में मोसम्बी का रस तो ले ही, मगर कहना भूल गये। आशा रखते हैं कि वह लेगी। रास्ते में काता भी होगा। उनकी गैरहाजिरी में आज भी १२ घंटे का अखंड चर्खा चलाया, मगर सूत छः तारीख वाले दिन से बहुत कम निकला; क्योंकि उस दिन प्रभावतीबहन ने ८ घंटे काता था। दो हजार से ऊपर के तार तो उन्हींके हो गये थे।

बापू का लिखा हुआ टॉटेनहम के पत्र का उत्तर आज डाक से गया। छः तारीख को उसका पत्र आया था। बापू ने दिन में बिलकुल आराम नहीं लिया। उपवास भी था। शाम को उनकी कमजोरी के कारण घूमते समय कुछ कम धीमे चलते थे।

पांव घसीटकर चलने जैसी बात न थी। पिछले दो दिन की कमजोरी का कारण मुझे तो हल्का बुखार लगता है। परसों प्रभाबहन ने रात में उनसे कहा था, "बापू, लगता है कि आपको बुखार है।" बापू ने हंसकर टाल दिया। मगर कल रात को उन्हें खूब पसीना आया। पसीना आने का दूसरा कोई कारण न था, बुखार उतरा होगा। सो आज जब कि उपवास था, बुखार न होने से शक्ति अधिक लगी।

शाम को सवा सात बजे झंडा-वंदन हुआ। वहां से सीधे फूल चढ़ाने गये, घूमे, प्रार्थना इत्यादि के बाद सोने की तैयारी की। बापू आज कहने लगे, "जो आदमी प्रार्थना के समय नियम का पालन नहीं करता, मेरी दृष्टि से वह दूसरा कोई नियम पालन नहीं कर सकता।"

डायरी लिखने की चर्चा करते हुए बोले, "भले लगे कि यह काम तो रोज करते हैं, इसे लिखने में क्या फायदा, तो भी लिखने में फायदा तो है ही। आखिर सूर्य रोज निकलता है तो वह निकम्मा थोड़े ही है। हम अपना कार्यक्रम व्यवस्थित बना लें, समय पर सब काम करें तो पीछे डायरी लिखने में कोई मुश्किल आ ही नहीं सकती। हम अपना काम यन्त्र के समान समय पर करें, मगर यन्त्र बनकर नहीं। यह सब प्रकार की प्रगति और सफलता के लिए अमोघ शस्त्र है।"

: ७६ :

बापू को मलेरिया

१४ अप्रैल '४४

प्रातः हमेशा की तरह प्रार्थना के लिए उठे। नाश्ते के बाद घूमने गये। खाने के बाद मैंने उनके साथ रामायण पढ़ी, फिर भाई के साथ शेक्सपीयर पढ़ा। पीछे सो गई। ढाई बजे उठी तो देखा कि भाई ने मोहनलाल का एक पत्र बापू को दिया। उसके साथ और कई कागज थे। मैं मनु को सिखाने दूसरे कमरे में चली गई। बापू पेट पर मिट्टी रखकर वह पत्र पढ़ने लगे। तभी आकर भाई मुझे बताने लगे कि पत्र पढ़ते समय बापू के हाथ बहुत ही कांप रहे थे।

तीन बजे बापू की आवाज सुनी। मुझे लगा कि भाई के साथ बातें कर रहे हैं। मगर मनु ने कहा—नहीं, तुम्हें बुला रहे हैं। मैं गई तो कहने लगे, "पूरी दस

आवाजें दी हैं। पेशाब की बोतल ले आ।" मुझे बड़ा दुःख हुआ। देखा कि बापू कांप रहे हैं। पूछा, "क्या हुआ बापू?" कहने लगे, "बुखार आवेगा। बोतल लाई?" बाद में मैंने उनकी पीठ और मनु ने उनके पैर दबायें। पेट पर मिट्टी रखते ही बापू को सर्दी लगने लगी थी। उठकर किसी तरह पिछला दरवाजा बन्द कर आयें, मगर गुसलखाने जाने की हिम्मत न हुई, गिर जाने का डर लगा और इसीलिए मुझे आवाज दी। मन-ही-मन में निश्चय किया कि कुछ भी हो, बापू को अकेले छोड़ के नहीं जाऊंगी। जो कुछ करना होगा, यहीं बैठकर करूंगी और दूसरा कोई पास बैठा होगा तभी उठकर जाऊंगी।

थोड़ा देर बाद उनका कांपना कम हुआ। बुखार ६८.६ डिगरी था। 'ब्लड-स्लाइड' लेने का विचार किया। स्लाइडें घर में न थीं। कटेली से कहकर अस्पताल से मंगवाईं। चार बजे खून की फोटो (Blood Smars) लीं। उस समय बुखार १०२.६ डिगरी था। पांच बजे भण्डारी आये। तब बुखार १०३.६ डिगरी था। मैंने, भण्डारी और डा० गिल्डर ने बापू से कुनीन लेने को कहा। मगर वे कहने लगे, "कल बुखार आवेगा तो लूंगा।" हम सबने कहा, मगर कल तो बुखार की *बारी है न?" वे बोले, "तो परसों सही। अगर परसों बुखार आया तो मैं कुनीन* लेने में हुज्जत नहीं करूंगा। मैं मानता हूं, आज दोपहर को मैंने कुछ भी न खाया होता तो बुखार आने वाला नहीं था। अब मुझे खाना छोड़ने का उपचार करके देखने दो।" आखिर हम लोगों ने आग्रह छोड़ दिया। बुखार में उनके साथ दलील करके उन्हें थकाना ठीक नहीं लगा।

भण्डारी के जाने के बाद बापू को सरसाम होने के कुछ आसार दीख पड़े। बापू पांच-पांच, दस-दस मिनट पर समय पूछते थे। एक बार तो हठपूर्वक पेशाब करने गुसलखाने गये। बाद में उन्हें यह बात याद तक नहीं रही। साढ़े पांच बजे हम लोगों से घूमने जाने को कहने लगे। उन्हें लगा कि साढ़े सात बज गये हैं। छः बजे बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ६६.६ डिगरी था। पसीना खूब आया। नींद भी अच्छी ली। खाने में नीबू का पानी तथा शहद लिया।

१५ अप्रैल '४४

आज महादेवभाई का मृत्यु-दिन है। मैं सोचती हूं कि बापू के बुखार के कारण वे कितने घबरा गये होते और बा का तो न जाने क्या हाल होता!

कल बापू कह रहे थे, "अच्छा हुआ, बा के सामने मुझे बुखार नहीं आया, नहीं

तो वा तुम सबको मेरी सेवा में धकेलती और खुद किसी की सेवा न लेती।" मैंने कहा, "वह तो है ही। मगर वे तो उससे भी आगे जातीं। बीमार होकर भी वे उठकर आप की सेवा करने लगतीं।" बापू बोले, "हां, बा का काम ऐसा ही है।"

फिर जरा संभले। कहने लगे, "मैंने कहा, 'ऐसा है', मगर कहना चाहिए था 'ऐसा था।' " मैं बोली, "आपके लिए तो बा आज भी हाजिर है, चली थोड़े ही गई हैं।" बापू ने कहा, "हां, यह ठीक है।"

दोपहर को उन्हें बुखार न लगता था, मगर पेट पर मिट्टी रखकर बुखार मापा तो ९९.६ डिगरी निकला। सुबह बापू समाधि-स्थान पर आये थे। समाधि की शोभा अद्भुत थी बहुत सुंदर फूल सजाये थे। बाद में मीराबहन के बालकृष्ण-मंदिर में भी गये थे। साढ़े चार बजे १०१ डिगरी था। बापू को स्वयं इतना बुखार नहीं लगता था। पांच बजे भण्डारी आये तब बापू का बुखार १०२.१ डिगरी था। सबके कहने पर भी बापू ने कुनीन नहीं लीं। केवल फलों का रस और मोसम्बी के रस में पानी मिलाकर पिया। वे मानते हैं कि इससे कल बुखार नहीं आयेगा। शाम को साढ़े छः बजे उनका बुखार उतरना शुरू हुआ। रात को नौ बजे ९९.४ डिगरी था।

वे दिनभर लेटे रहे और 'कान्स्टिटपेशन एण्ड अवर सिविलाइज़ेशन' किताब पूरी की।

कल से आज उनकी तबीयत अच्छी है।

१६ अप्रैल '४४

सुबह बापू प्रार्थना करने के लिए उठे। दातुन करने गुसलखाने गये और कुर्सी पर बैठकर की। मगर कहते थे कि उन्हें कुर्सी की जरूरत नहीं थी। प्रार्थना के बाद रोज की तरह सोये। साढ़े छः बजे उठे, तैयार हुए और नाश्ते के बाद लेटे-लेटे पढ़ते रहे। समाधि पर फूल चढ़ाने नीचे आये।

साढ़े ग्यारह बजे तक बापू की तबीयत ठीक रही। इतने में मीराबहन ने आकर कहा कि बापू को बेचैनी-सी है और उन्हें बुखार आने वाला है। मैं आई तब बापू आंखें मूंदे पड़े थे और भाई पांव दबा रहे थे। थोड़ी देर बाद उन्होंने करवट ली तो मैंने बुखार मापने की बात की, मगर बापू ने कहा कि सोकर उठूं तब लेना। एक बजे वे सोकर उठे तो बुखार १०१.७ डिगरी था। मैंने कुनीन लेने की बात की तो बोले कि शाम को लेंगे, मगर बाद में मान गये और सेवाग्राम से आई हुई

कुनीन में से अंदाज से तीन ग्रेन ली। उसे नीबू के रस में घोलकर छः औंस पानी और थोड़ा-सा सोडा बाईकार्ब डाला तब धीरे-धीरे दस मिनट में उस कड़वे शरबत को पिया। पीते जाते थे और मजाक में कहते जाते थे, "खूब, बहुत खूब।" हमसे (मनु और मुझसे) कहते थे, "तुम भी बोलो, 'बहुत खूब।' " बाद में अफीमचियों का किस्सा सुनाने लगे। फिर नीलाम की बातें करते रहे। मनु हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई। मैंने दो-तीन बार कहा, "बापू, बोलने में शक्ति न खर्च करें।" लेकिन वे माने नहीं, "यह तो कुनीन का अमल चढ़ाने के लिए है। 'राम अमल मां राता माता…।' " भजन की यह कड़ी दो-तीन बार जोर-जोर से बोले। मुझे शक होने लगा कि यह बुखार का दिमाग पर असर तो नहीं है। था कुछ ऐसा ही।

कुनीन पी चुकने के बाद ही उन्हें जोर-जोर से सर्दी लगनी शुरू हुई। बहुत कांपने लगे। पौने दो बजे उल्टी हुई, पीछे चुपचाप पड़े रहे। सवा दो बजे भाई ने मुझसे आग्रहपूर्वक आराम लेने को कहा। तीन बजे जब मैं वापस आई तो पता चला कि ढाई बजे फिर उल्टी हुई थी। उस समय बापू बहुत थक गये थे, पेशाब भी हुआ था। मैंने पेशाब देखा, उसमें उल्टी पड़ी थी—पीली, पित्त की उल्टी थी। मैंने बापू से पूछा कि मतली शान्त हुई या नहीं? तो कहने लगे कि अब शान्त है। कुछ पानी वगैरह लेने को कहा तो इन्कार कर दिया। थर्मामीटर कांपते हुए हाथ से मुंह में रखकर उन्होंने बुखार मापा तो १०४.८ निकला। उन्होंने कई बार कहा कि गुसलखाने जायेंगे, मगर रोकने से रुक गये। बोतल में पेशाब किया। वे बुखार की बेहोशी में बोल रहे थे। मैंने डा० गिल्डर की सहायता से उनको स्पंज किया और सिर तथा पेट पर ठंडी मिट्टी रखी। बुखार उतरना शुरू हुआ। मीरा-बहन ने श्री कटेली से कहलाया कि दीनशा को बुला दें। पांच बजे भण्डारी और दीनशा आये। सवेरे जब भण्डारी आये थे तब बापू अच्छे थे और वे उनसे ऊपर छत पर सोने को कह रहे थे कि जिससे मच्छरों से बचाव हो सके।

दीनशा बिना कुनीन के इलाज करने की बात कर रहे थे। मैंने और डा० गिल्डर ने विरोध किया। बिना कुनीन लिये बुखार रुक भी जाये और बार-बार आये तो यह खतरा उठाना हम पसन्द नहीं करते थे। बापू के लिए एक ऊंचा पलंग बिछाया। रात में पौने सात बजे वे सो गये और साढ़े सात तक सोये। खूब पसीना आया। भीगे हुए कपड़े बदलकर पीछे कुनीन की दूसरी मात्रा दी। इस बार उसमें दो औंस पानी डाला। ऊपर से मौसम्बी का रस पिलाया। थोड़ी देर तक मतली

हुई, फिर थम गई। आठ बज गये थे। मैं और मनु समाधि पर फूल चढ़ाने गये, मगर चाबी न मिलने के कारण तार में से ही सिपाही को फूल देने पड़े। वह उन्हें समाधि पर रख आया। प्रार्थना के बाद डा० दीनशा अपने घर लौट गये।

बापू का बुखार ९८.४ डिगरी रहा। कमजोरी अभी काफी है।

१७ अप्रैल '४४

बापू को आज तीन खूराक कुनीन (एक बार में तीन ग्रेन की मात्रा) दी। उन्होंने मोसम्बी का रस, नीबू, पानी और शहद ही लिया। दूध नहीं लिया। उन्हें चार दस्त आये, चौथा कुछ पतला आया। इसलिए डर लगने लगा कि अधिक दस्त आ गये तो काम कठिन हो जाएगा।

उनका बुखार आज साधारण से भी नीचे रहा, पर रात को ९९ डिगरी हो गया।

आज उनका मौन-दिन है। सुबह पांच बजे वे बोले थे; क्योंकि उनके विचार से अपनी या दूसरों की बीमारी के समय मौन रखना कठिन हो जाता है। बाद में हमेशा की तरह उन्होंने पूरा मौन धारण किया।

सरकार ने एक छोटी-सी विज्ञप्ति बापू की बीमारी के सम्बन्ध में अखबारों में दी है। 'टाइम्स' ने इस विज्ञप्ति को स्थान तो मुखपृष्ठ पर ही दिया है, लेकिन इतने छोटे टाइप में कि पहली निगाह में उसपर ध्यान ही नहीं जा पाता। विज्ञप्ति में लिखा था कि गांधीजी को तीन दिन से मलेरिया है और कमजोरी भी है, किन्तु उनकी हालत इस उमर में जितनी अच्छी हो सकती है, उतनी है। लगा कि आखिरी वाक्य लिखकर भविष्य में किसी भी प्रकार की गम्भीर स्थिति पैदा होने पर सरकार ने अपना बचाव कर लिया है।

शाम को बापू बालकृष्ण-मंदिर में पहियोंवाली कुर्सी पर बैठकर गये और बरामदे का एक चक्कर लगाया। मुझे बा की याद आ गई। ईश्वर बापू को दीर्घायु दे और अन्त तक उनकी सब शक्तियां कायम रखे, यही मेरी प्रार्थना है।

१८ अप्रैल '४४

बापू की आज बुखार की बारी थी, पर बुखार नहीं आया। कुनीन की तीन मात्रा लीं। कुनीन तो लेते ही हैं, दूध लेना भी शुरू किया है। शाम को वे कुर्सी पर बैठकर समाधि-स्थान पर आये। वहां से लौटकर थोड़ी देर नीचे ही हवादार स्थान में बैठे। सब सामान नीचे लाये। सिपाहियों की लालटेन ली और प्रार्थना की,

किन्तु लालटेन का तेल कम होने से रामायण की एक ही चौपाई हो सकी।

कर्नल शाह बाहर गये हुए हैं, इसलिए भण्डारी को रोज यहां आना पड़ता है।

रात में सख्त गर्मी पड़ी। अब तो ऋतु-परिवर्तन-सा हो गया है और गर्मी के दिन आरम्भ हो गये हैं।

: ८० :

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

१९ अप्रैल '४४

आज सुबह बापू ने कुनीन नहीं ली। उन्हें चक्कर-से आने लगे हैं और कम सुनाई देने लगा है। कहते थे कि मेरा सिर चकराया हुआ-सा महसूस होता है। कुनीन बन्द कर देना चाहते थे। बहुत समझाने-बुझाने के बाद उन्होंने और दो दिन तक तीन-तीन ग्रेन की मात्रा में कुनीन लेना स्वीकार किया था, किन्तु आज फिर छोड़ दिया। बुखार नहीं आया और सुबह-शाम चलकर समाधियों तक गये। थकान महसूस नहीं हुई।

रात में सोते समय भी कुनीन की ही बातें करते रहे। कुनीन लेना उन्हें अच्छा नहीं लगता।

२० अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। दोपहर को अच्छी नींद ली। दोपहर के भोजन के बाद बापू भाई से बोले, "मुझे लगता है कि मनु की भलाई अब उसे यहां से भेज देने में है। वह बा की खातिर आई थी, सो अब वह बात तो रही नहीं, मेरी सेवा के लिए रखने का तो कभी सवाल था ही नहीं। मुझे सेवा की आवश्यकता भी नहीं है। रहा उसे उसके अभ्यास के लिए यहां रखने का प्रश्न, सो मुझमें अब वह आत्मविश्वास नहीं है जो पहले था कि मैं उसे बहुत-कुछ दे सकूंगा। इसलिए उसे रखने का उत्साह नहीं होता। मैं मानता था कि वह जो मुझसे पा सकती है, वह कहीं से नहीं पा सकती, मगर आज मैं टूट गया हूं। मैं मानता था कि मुझे मलेरिया कभी नहीं आवेगा, तुम सबको भले ही आ सकता है, मगर मेरा वह घमंड दूर हुआ। मैंने हमेशा माना है मनुष्य बीमार पड़ता है अपने पाप के कारण।

जिसका अपने मन पर पूरा काबू है, जिसका मन पूर्णतः स्वस्थ है, वह बीमार नहीं पड़ सकता। मैं कहां हूं, यह नहीं जानता; मगर अपने-आपको जहां मानता था, वहां तो नहीं हूं। इस विचार ने आज मुझपर काबू पा लिया है। मेरे मन की कैसी दयाजनक स्थिति है, वह तुम लोग नहीं जानते हो।"

मैंने कहा, "यह तो मलेरिया के कारण आई हुई कमजोरी और कुनीन का असर है। थोड़े दिनों में यह सब दूर हो जाएगा। शरीर में शक्ति आवेगी और उदासी चली जाएगी।"

बापू बोले, "शरीर में शक्ति भले आ जावे, मगर पहले-जैसा आत्मविश्वास कैसे वापस आ सकता है ?"

मैंने उत्तर दिया, "मलेरिया तो आपको पहले भी आ चुका है—सेवाग्राम में, साबरमती में, चम्पारन में। उससे तो आप निराश नहीं हुए। फिर ऐसा क्यों सोचते हैं ? उसके बाद भी तो आपने बड़े-बड़े काम किये हैं।"

बापू कहने लगे, "काम तो अब भी करूंगा। चम्पारन में मलेरिया आया था, तब से लेकर आज पच्चीस वर्षों में क्या मैंने कुछ भी प्रगति नहीं की ? मैं मानता था कि मैं उस स्थिति से बहुत आगे बढ़ गया हूं, मगर अब उस मान्यता के विषय में शक पैदा हो गया है।"

भाई ने समझाया, "आध्यात्मिक दृष्टि से तो आप आगे बढ़े हैं, पर समय के बीतने के साथ-साथ शरीर जीर्ण भी तो होता है न !"

बापू बोले, "नहीं, शरीर दुर्बल भले हो, लेकिन जिसने अध्यात्म में प्रगति की है, वह बीमार नहीं पड़ता। उसकी सब शक्तियां और स्वास्थ्य अन्त तक कायम रहते हैं।"

भाई ने कहा, "दूसरे शब्दों में वह जीवन्मुक्त हो जाता है। मैं आपकी बात समझता हूं। यह तो एक तरह की सिद्धावस्था की बात हुई, सो उसतक आप नहीं पहुंचे।"

बापू कहने लगे, "सिद्धावस्था की भी बात नहीं है। हां, जहां तक मैं अपने को पहुंचा हुआ मानता था, वहां तक नहीं पहुंच पाया हूं।"

मैं बोली, "आप किसी भी पहुंचे हुए, अत्यंत संयमी, पूर्ण स्वस्थ मन वाले व्यक्ति को लाइये, मैं उसे मलेरिया का बुखार चढ़ा देने का ठेका लेती हूं। एक दफा नहीं तो दस दफा मच्छरों के काटने से उसे मलेरिया होगा और वह कुनीन से

उतर भी जावेगा।"

बापू ने कहा, "इस बुद्धिवाद से तू मेरी मान्यता को हिला नहीं सकेगा। मैं जानता हूं कि अपनी बात सिद्ध करने के लिए मेरे पास सबूत नहीं है, तो भी मेरी वर्षों की यह मान्यता है कि जिसका मन पूर्णतः स्वस्थ यानी स्वच्छ है, उसका शरीर स्वस्थ रहना ही चाहिए।"

दोपहर को बापू ने दही लिया और शाम के समय दूध तथा सवेरे केवल फल का रस लिया। तबीयत ठीक है, पर कमजोरी बहुत आ गई है।

शाम को बापू ने जेल-बदली और मनु को छुड़वाने के विषय में सरकार को पत्र लिखा। मनु वाला पत्र मनु के आग्रह के वश नहीं भेजा।

२१ अप्रैल '४४

सुबह प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं। रात को अच्छी नींद ली।

बापू ने कल कुल मिलाकर एक पौण्ड भोजन लिया था; दूध-दही मिलाकर आज सवा पौण्ड लिया। चीजें सब कल की जैसी ही थीं। सुबह मोसम्बी का रस, दोपहर को दही और शाम को दूध। कुनीन खाने का कोर्स आज पूरा हो गया।

शाम को सरकार द्वारा भेजे हुए बा की मृत्यु के सम्बन्ध में सहानुभूति-सूचक बहुत से पत्र आये। बा पर लिखी हुई टॉमस की किताब भी आई है। पहले ही पन्ने पर लिखा था कि बा के तीन ही लड़के जीवित हैं—रामदासभाई को उन्होंने छोड़ ही दिया है। अन्दर कितना सही लिखा होगा, वह कौन जाने। सुबह-शाम जितनी शक्ति हो, उतना बापू ने चलना आरम्भ किया, मगर बहुत चलने की शक्ति उनके पैरों में नहीं। बस एक चक्कर बगीचे का लगाया। बापू के लिए नई टार्च आई है। कल २२ तारीख है और बा के जाने का दिन है।

२२ अप्रैल '४४

आज बा की मृत्यु का दिन है। उन्हें गये दो महीने पूरे हो गये हैं। बा के बिना बापू को अपना जीवन बिताना आज भी करीब उतना ही कठिन है, जितना कि बा के जाने के बाद पहले हफ्ते में था। शायद ही बापू पूरी तरह से वैसा कर सकें। उनके मलेरिया-ग्रस्त होने में एक कारण यह भी है। बा के चले जाने से उनका शरीर इतना दुर्बल हो गया कि मलेरिया का सामना करने की शक्ति बहुत कम हो गई। सो मलेरिया आया।

प्रातः ८ बजे फूल चढ़ाने गये, लौटकर सीधे ऊपर आये—बगीचे में एक भी

चक्कर नहीं लगाया। पहले दिन की दो खूराकों से ही उनका बुखार उतर गया। वे मानते हैं कि बाद में दी हुई कुनीन अनावश्यक थी।

बापू ने कुल मिलाकर ३६ ग्रेन कुनीन ली, जो कि सामान्य मनुष्य के लिए एक दिन की खूराक है, पर बापू उसे भी अधिक मानते हैं। पहली खूराक के ३ ग्रेन, जो उलटी में चले गये थे, निकाल दें, तो उन्होंने ३३ ग्रेन कुनीन खाई।

बा की स्मृति में कैदियों को सब्जी, कढ़ी और खिचड़ी खिलाई गई। सिपाहियों ने भी खाया-पिया।

दोपहर बाद ३ से ४ बजे तक सबने काता। डा० गिल्डर ने एक घंटे में ११० तार निकाले। यह बड़ी अच्छी प्रगति है।

शाम को ७.३५ से ६ बजे तक प्रार्थना, रामायण और गीता-पारायण हुआ।

२३ अप्रैल '४४

आजकल खूब लू चलने लगी है। बापू के कमरे में पारसाल की तरह दोनों ओर खस की टट्टी लगी रहती है। पारसाल जब बा को बापू के कमरे में लगी टट्टियों की ठंडक न सहन हो सकी और जब बापू ने देखा कि बा भाई के कमरे में सोने जाती हैं तो खुद गरमी सहन करना पसन्द किया और कमरे की टट्टियां निकलवा दी थीं।

बापू की देसी मच्छरदानी इतनी मोटी थी कि उसमें हवा भी ठीक से न जा पाती थी, इसलिए श्री कटेली से कहकर दूसरी बारीक कपड़े की मच्छरदानी बनवाई है। बहुत अच्छी है।

बापू ने सुबह-शाम समाधि पर जाने का समय आठ बजे का रखा था, मगर सुबह खूब धूप होती है, इसलिए कल से पौने आठ या उससे भी जल्दी आया करेंगे। दो-तीन रोज से, जब से बापू समाधि पर आने लगे हैं तब से'''वगैरह सिपाही समाधियों को हमारे आने से पहले अच्छी तरह सजा रखते हैं; पर आज बापू कहने लगे, "अपने हाथ से सजावट करना ज्यादा अच्छा लगता है।" इसलिए मैंने कल से सुबह साढ़े सात बजे जाकर फूल सजाने का निश्चय किया है।

मेरी भजनावली की जिल्द टूट गई थी। बापू की बताई हुई विधि से सुधारी जाने पर अब वह अच्छी बन गई है। महादेवभाई ने इसे मुझे भेंट किया था। उनके अवसान पर उनकी जेब से एक गीता निकाली थी, जो मेरे ही पास है।

बापू में अब काफी शक्ति आ गई है, इसलिए घूमते समय खूब हंसी होती रही।

वे अच्छी तरह घूमे।

भण्डारी के आने पर बापू ने पूछा कि छत पर जाने के विषय में वे क्या कहते हैं। भण्डारी ने कहा कि छत पर से मधुमक्खियां उड़ा दी जाएं तब जाया जा सकता है।

बाद में मधुमक्खियों की ही चर्चा होती रही।

२४ अप्रैल '४४

आज बापू का मौन है।

मेरी आंख दुखती थी, इसलिए खाने के बाद आंख पर मिट्टी रखकर सो गई। बड़ा फायदा हुआ।

भाई की रामायण की जिल्द सुधारी और रात को टॉमस की किताब पढ़नी शुरू की।

बा की मृत्यु पर सहानुभूति के पत्रों का एक ढेर और आ गया है, जिसे बम्बई सरकार ने भेजा है।

२५ अप्रैल '४४

बापू पौने आठ बजे फूल चढ़ाने गये और सवा आठ बजे वापस आये। शाम को भी इसी तरह आधा घंटा घूमे। दोपहर को बा के विषय में लिखी टॉमस की किताब मैंने पूरी कर ली और कुछ डाक्टरी का अभ्यास किया।

२६ अप्रैल '४४

आज शाम को पन्द्रह मिनट डा० गिल्डर से फ्रेंच सीखी। भाई का आग्रह था कि संस्कृत तो है ही, फ्रेंच भी सीखनी चाहिए।

२७ अप्रैल '४४

आज मैंने भण्डारी से बापू के रक्त की परीक्षा कराने तथा हृदय की धड़कन का फोटो लेने को कहा। आजकल बापू का रक्तचाप बहुत कम रहता है। चढ़ाव पर १४० के आसपास और उतार पर ८०-९० के बीच है, इसलिए दिल की धड़-कन का फोटो लेना अच्छा है।

भंडारी कहने लगे, "कुनीन का असर तो यह नहीं है?"

डा० गिल्डर ने कहा, "नहीं, कुनीन तो उल्टी नाड़ियों को सिकोड़ती है, इसी-लिए तो कुनीन से अन्धापन हो जाता है।" इसपर से नस में कुनीन देने की बात चली और पेशाब में शक्कर आने की बातें भी होती रहीं।

भंडारी बापू से बिना मिले ही चले गये। बापू उस समय स्नान-घर में थे। भाई ने बापू को स्नान करा दिया था। मैंने कपड़े धो डाले।

मैंने मसानी की किताब पूरी कर ली है। मनु के साथ 'मार्गोपदेशिका' पढ़ना शुरू किया और पन्द्रह मिनट तक डा० गिल्डर के साथ फ्रेंच भी सीखी।

प्रार्थना के बाद बापू का रक्तचाप १२६।७८-८० रहा। यह बहुत कम है। मैंने बा के स्मरण लिखने शुरू किये हैं। मैं उनके इतना निकट रही हूं कि यही नहीं तय कर पाती कि क्या लिखूं और क्या न लिखूं। ज्यों-ज्यों विचार आते हैं, लिखती चली जाती हूं। बापू जब देखेंगे तब पता चलेगा उसमें कुछ तथ्य है या नहीं।

२८ अप्रैल '४४

जब भंडारी आये तो पूछने लगे कि बापू का खून परीक्षा के लिए कब भेजोगे? डा० गिल्डर ने बताया कि डा० नरोना रक्त-परीक्षा करने आ रहे हैं, तभी वह भी कर लेंगे। इसलिए दो-दो बार बापू के शरीर में सुई क्यों चुभोई जाय?

भंडारी ने जाकर इन्तजाम किया। श्री कटेली ने बताया कि डा० नरोना बारह बजे आवेंगे। भंडारी उसे लेकर करीब साढ़े बारह बजे आये और नरोना ने परीक्षा के लिए बापू का रक्त लिया।

बा की मृत्यु पर लिखे गये बहुत-से संवेदनात्मक पत्र आज फिर आये। जल-सेना के एक अफसर के पत्र में लिखा है—"आज मैं ऐसे धन्धे में पड़ा हूं कि आप कल्पना तक नहीं कर सकते कि मैं आपका कितना भक्त हूं। आपकी तरफ देखता हूं और आपके आदर्श को मानता हूं। इस लड़ाई के अन्त पर बहुत-से लोग यहां ऐसे हैं जो आप पर आशा लगाये बैठे हैं।"

साढ़े चार बजे शाम को भंडारी के कथनानुसार श्री कोयाजी की मशीन आई। बापू के दिल की धड़कन का फोटो लिया गया और मशीन वापस गई। छह बजे ही खबर मिल गई कि कोई नया दोष नहीं है। हृदय के बाएं तरफ का जोर तो पुरानी चीज है।

२९ अप्रैल '४४

प्रातः ५ बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। उस वक्त रोज की तरह शहद और पानी पिया। नाश्ता छोड़ा, खाट पर पड़े रहे। यूरिया क्लीयरेंस टेस्ट[1] के लिए

---

1. गुर्दों की खून में से यूरिया निकालने की गति

डा० गज्जर आने वाले थे, पर सवा आठ बजे श्री कटेली ने कहा कि 'फोन किया गया था, लेकिन डा० आये नहीं। बापू को नाश्ता करवा दिया जाय।' इतने में डा० गज्जर अपने दो सहायकों के साथ आ पहुंचे। बापू का पेशाब इकट्ठा किया और साढ़े नौ बजे बापू का खून लिया। खून की सामान्य परीक्षा यहीं कर ली गई। हेमोग्लोबीन (Haemoglobin) ८५ प्रतिशत, आर. बी. सी. ३७ लाख। मेक्रो-सिटिक एनीमिया (Macrocytic anaemia)[१] लगता था।

खून की रासायनिक जांच के ख्याल से डा० गज्जर वगैरह ने पौने ग्यारह बजे की गाड़ी से जाने का विचार किया, इसलिए मनु ने उन्हें नाश्ता कराकर भेजा। उनका नौकर बापू का पेशाब लेकर दोपहर की गाड़ी से जायगा।

: ८१ :

सरकार की चिंता

साढ़े दस बजे बापू को संतरे का रस दिया। बाद में जब वे भोजन कर रहे थे तब थके-से लगते थे। अभी खा ही रहे थे कि १२॥ बजे श्री कटेली आये और बोले कि जनरल कैण्डी आये हैं। मैं नोटबुक लेकर उनके पास गई और उन्हें बापू का सारा हाल बताया। इतने में डा० गिल्डर भी आये। कैण्डी ने आकर बापू को देखा और ज्यादा मात्रा में कुनीन खाने और 'आयरन टानिक' लेने को कहा। बापू की खूराक कैसे बढ़े, यह भी समझाते रहे। कुछ देर बाद वे कहने लगे, "देखने में तो खासे अच्छे दिखते हैं, मगर उसका कुछ महत्त्व नहीं है। अगर रक्तचाप १४० डिगरी से नीचे न जाये तो चिन्ता की बात नहीं।"

उन्हें लगा कि बापू को शायद इन्फ्लुएंजा हुआ होगा, मगर हमने बताया कि खून में मलेरिया के जन्तु मिले हैं। टानिक वगैरह देने की बात करके वे चले गये।

दोपहर के समय मैंने अखबार में देखा कि बापू की बीमारी के कारण सरकार बहुत घबरा गई है।

आज ९ बजे रात को बत्तियां बुझाकर हमें मच्छरदानी में घुस जाने का हुक्म

---

१. रक्तहीनता का एक प्रकार का रोग

मिला। शहद की मक्खियों को भगाने के लिए आदमी आया है।

३० अप्रैल '४४

बापू ने 'हाउ ग्रीन वाज माइ वैली' पढ़कर पूरी कर ली। मेरे पूछने पर बोले, 'अच्छी है, मगर तू न कहती तो मैं अपने-आप इसे पढ़ने वाला न था। यह किताब ऐसी नहीं है कि न पढ़ा हो तो ऐसा लगे कि कुछ रह गया।"

रात को खबर मिली कि कल डा० विधान राय बापू को देखने आवेंगे। पांच बजे की गाड़ी से आकर आठ बजे की गाड़ी से वापस जाना चाहते हैं। यहां साढ़े पांच बजे सुबह आने वाले थे।

कल से बापू ने प्रार्थना में रामायण की एक चौपाई नियत कर दी है, बाद में उसका अर्थ गुजराती में कर देने का आदेश दिया है, ताकि डा० गिल्डर भी अच्छी तरह चौपाई को समझ सकें।

१ मई '४४

डा० विधान राय ५॥ के बजाय ७ बजे आये। कहने लगे, "कल मैं यहां से गुजरा था, तब मुझे नहीं बताया गया कि बापू को देखना है।" भण्डारी ने कहा, 'मैंने तो कल कहा था न कि ग्यारह बजे तक ठहरो, मगर आप ठहरे ही नहीं।" डा० विधान राय बोले, "उपवास के बाद के कड़वे अनुभव के बाद मैं इस तरह कैसे ठहर सकता था।"

डा० विधान राय ने बताया कि बापू को छोड़ने के लिए विलायत में बड़ी हलचल हो रही है। हिन्द-मंत्री को समाचार मिला है कि बापू अस्वस्थ हैं। दूसरे ही दिन श्री कैंडी की रिपोर्ट छपी कि 'बापू पहले से अच्छे हैं। रक्तचाप और रक्त-हीनता की दशा पिछले २४ घंटों में काफी सुधरी है।' पिछले वाक्य से लोगों, खासकर डाक्टरों को अवश्य ही लगा होगा कि रिपोर्ट विश्वास के लायक नहीं है। रक्तहीनता एक ही दिन में कैसे सुधर सकती है? डा० गज्जर की रिपोर्ट छपी कि गुर्दे अच्छी तरह काम नहीं कर रहे हैं। इस पर डा० विधान राय ने पूछा, "हमें ठीक-ठीक बताना था कि क्या हाल रहा बापू का?" भण्डारी ने कहा, "मैंने तो कई बार कहा था कि आप आवें।" खैर जो कुछ भी हो, डा० विधान राय आये, यह हमें अच्छा लगा।

बापू को देखकर वे हम लोगों से सलाह करने बैठे। डा० गज्जर को वे कल फिर बुला रहे हैं। 'यूरिया क्लीयरेन्स' फिर करावेंगे और कुछ दूसरी परीक्षाएं

करेंगे। तब अपनी रिपोर्ट देंगे।

पौने आठ बजे डा० विधान राय चले गये। डा० गज्जर की रिपोर्ट से जनता में कुछ चिन्ता बढ़ गई। आशा है कि गुर्दों पर यह असर स्थायी नहीं रहेगा।

मनु की उंगली पर 'व्हिटलो' होने की तैयारी है। मैंने और डा० गिल्डर ने बापू के लिए आंख का डाक्टर और मालिश के लिए दीनशा को भेजने के लिए भण्डारी से कहा।

२ मई '४४

डा० गज्जर अपने सहायकों के साथ छः बजे सबेरे आये। ६-२० पर बापू उठे, तब उनकी परीक्षा करके वे लोग सवा आठ की गाड़ी से वापस आ गये। साढ़े आठ बजे पेशाब लेकर जमादार···११-३० की गाड़ी से गया।

कल फिर २४ घंटे का पेशाब लेकर जाना पड़ेगा।

बापू जब खाना खा रहे थे तब भण्डारी आये। कहने लगे, "आंख का डाक्टर भेजेंगे। दीनशा के बारे में पुछवाया है।" शाम को खबर मिली कि दीनशा आ सकेंगे। मैंने बापू से पूछा, "दीनशा यहां कितने समय तक ठहरेंगे?" बापू बोले, 'मैं इस तरह बंधना नहीं चाहता। बांधोगे तो मुझे दीनशा नहीं चाहिए। आवेगा तो जितना समय उसे आवश्यक लगेगा, रहेगा।"

जेल-बदली के विषय में बापू को भण्डारी ने बताया कि विचार किया जा रहा है। बाद में डा० गिल्डर से कह रहे थे कि क्या सौ मील का मोटर-सफर कर सकेंगे? सोचा कि अहमदनगर ले जावेंगे? अगर ऐसा हो तो किस-किस को साथ ले जावेंगे? वहां बापू को वर्किंग कमेटी के साथ रखेंगे या नहीं?

दोपहर को बापू का रक्तचाप १२६।७८ और रात में १३४।७६ रहा। थोड़ा ज्यादा रहे तो अच्छा हो।

यहां से बदली करने के बारे में बापू कहने लगे, "ये लोग दूसरी चीजों पर करोड़ों रुपये व्यर्थ ही जाया करते हैं, इसलिए मेरे पर भी कुछ करें तो क्या हुआ—यह दलील गलत है। मैं हिन्दुस्तान का पैसा इस तरह से क्यों खर्च कराऊं? ये लोग अपनी जेब से कहां निकालते हैं? निकलता तो सब मेरी जेब से है न, हिन्दुस्तान की जेब से ही तो! यहां दो मृत्युएं हुई हैं, इसीलिए ये मुझे यहां से हटाने की बात करते हैं। मगर मेरे सामने वह सवाल नहीं। उलटा उस कारण से तो मुझे यह जगह प्रिय है। समाधि पर जाना मुझे अच्छा लगता है, मगर हिंदुस्तान का

पैसा बचाने के लिए मैं वह त्याग करने को तैयार हूं। मलेरिया का भी मेरे सामने सवाल नहीं। हिंदुस्तान में ऐसी कौनसी जगह है, जहां मलेरिया न हो ? मेरे सामने एक ही सवाल है—खर्च का। वह कम होना ही चाहिए।"

मुलाकातों के बारे में बापू कहने लगे, "मैंने अपने लिए एक नियम बना रखा है, इसलिए केवल रिश्तेदारों से ही मैं नहीं मिलना चाहता। बा की बात और थी।"

अपनी बीमारी के कारण छूटने के विषय में बोले, "इसमें मुझे रस नहीं है। बा के जाने का मुझे बहुत आघात पहुंचा है। अभी तक है, मगर बुद्धि से मैं जानता हूं कि बा के लिए इससे अच्छी मृत्यु हो ही नहीं सकती थी। जो बात बा को लागू होती थी, वह मुझे भी लागू होती है। इसका यह अर्थ नहीं कि मैं मरना चाहता हूं। मैं जिन्दा रहना चाहता हूं और भगवान से मांगता हूं कि मुझे यहां से जिन्दा बाहर ले जाय और जब मैं बाहर जाऊं तब मेरे लिए कार्य-क्षेत्र तैयार हो। बीमार होकर निकलना मुझे चुभता है। सत्याग्रही को वह शोभा नहीं देता और आज की परिस्थिति में मैं निकलकर करूंगा भी क्या ?"

मैंने कहा, "पहले तो शरीर को फिर से संगठित करना होगा। अपेण्डिक्स के आपरेशन के बाद उसी तरह जाना पड़ा था न।" बापू बोले, "सरकार छोड़ ही दे तो मैं क्या कर सकता हूं, मगर मुझे यह अच्छा नहीं लगता। इस हालत में बाहर मैं चुपचाप पड़ा भी नहीं रह सकता।"

३ मई '४४

दोपहर को भंडारी आंख के एक डाक्टर को लाये। उन्हें 'फण्डस' (Fundus[१]) में कुछ मिला नहीं। बात-बात में पता चला कि डाक्टर ने मेरे कालेज की एक पंजाबी लड़की से शादी की है। उसके जाने के बाद बापू पूछने लगे कि क्या डाक्टर पंजाबी था ? मैंने कहा, "हां पंजाबी ही तो लगता है।" वह बोले, "मैंने उसके साथ हिन्दुस्तानी में बात शुरू की, मगर वह शाहजादा तो अंग्रेजी ही चलाता रहा। अगर जरा भी बैठता तो मैं डांटने वाला था कि हिन्दुस्तानी जानते हो या भूल ही गये हो ?"

सुबह बापू की मालिश करने के लिए दीनशा आये। मालिश के द्वारा शक्ति किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर में भेजी जा सकती है, इसपर बातें होती रहीं।

---

[१] आंख के भीतर का एक अवयव।

मुलाकात के बारे में बापू ने सरकार को लिखा है कि पिछले साल की तरह मुलाकातें देनी हों तो आश्रमवासियों, मित्रों तथा रिश्तेदारों--सबको देनी चाहिए। केवल रिश्तेदारों से मैं नहीं चाहता।

बापू के अन्दर जितना पानी पहुंचता है और जितना निकलता है, उसमें ४०-५० औंस का फर्क दो रोज से मिलता है।

आज बापू का २४ घंटे का पेशाब जमादार'''डा० गज्जर के पास बम्बई ले गया। उनकी रिपोर्ट आने पर हम अपनी रिपोर्ट भेजेंगे।

भण्डारी बता गये हैं कि कनु आ रहा है।

४ मई '४४

आज डा० गिल्डर के पेशाब में 'एल्ब्यूमिन' पाया गया। बापू ने मुझे भंडारी को इस बारे में लिखने को कहा।

बापू की बदली को लेकर अनेक अफवाहें उड़ रही हैं। देखें आखिर क्या होता है। दोपहर को कनु आ गया। कह रहा था कि बा के स्मारक-फण्ड के विषय में कठिनाई हो रही है।

: ८२ :

रिहाई की खबर

५ मई '४४

प्रातः रोज की तरह पौने पांच बजे प्रार्थना के लिए उठे। फिर कल की डायरी लिखी। रात को शहद की मक्खी उड़ाने वाले फिर आये थे, इसलिए रात को लिख न सकी थी। स्नान आदि करके नीचे जाने के लिए उठे तो बापू की घड़ी में पौने आठ बज गये थे। साथ-साथ नीचे गये। समाधि पर प्रार्थना करने के बाद थोड़ा घूमे। सवा आठ बजे ऊपर आये। बापू की मालिश करने मेहता आये। उस समय डा० गिल्डर मेरी तरफ देखकर हँसकर कहने लगे, "यह छोटी-सी लड़की आपको लोहे के चने चबवाने वाली है क्या ?" बापू ने दवा मंगाने की इजाजत दे दी, खाने या न खाने का निश्चय बाद में करेंगे। मगर मंगवाई है तो खायेंगे ही—ऐसी आशा है।

डा० गज्जर की रिपोर्ट कल आ गई थी, इसलिए उसके आधार पर चार बजे शाम को मैं अपनी रिपोर्ट लिखने बैठी, ताकि गिल्डर का और मेरा मत सरकार को भेज दिया जाय। पत्र तैयार करके डा० गिल्डर को दिया, जिससे उनके सुझाव भी जाने जा सकें। बापू का एक्सरे कराने के लिए भी हमने भण्डारी को एक पत्र डाला। हमारी रिपोर्ट कल सरकार को भेजी जावेगी। छ: बजे खेल के बाद बापू को खाना दिया। मैं खाने बैठने ही वाली थी कि भण्डारी आये। आश्चर्य हुआ कि इस समय क्यों आये हैं। कुछ पहले ही सब कैदी भेज दिये गए थे। उन्हें आज जल्दी आने का हुक्म था।

भण्डारी अचानक बापू के पास आकर बैठ गये और कहने लगे, "कल सुबह आठ बजे आप लोगों को बिना शर्त छोड़ दिया जायगा।" हम हैरान हो गये। बापू बोले, "आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं?" भण्डारी ने उत्तर दिया, "नहीं जी, आज पत्र आया है। अब दया करके फिर वापस न आना। देखिए, चिन्ता के कारण मेरे तो बाल भी सफेद हो गये हैं।"

बापू हँसकर बोले, "मैं कहां आता हूं। सरकार लाती है।"

छूटने की खबर सुनते ही मेरे मुंह से निकला, "तीन महीने की देर हो गई। अगर तीन महीने पहले बापू को मलेरिया होता और वे छूट जाते तो शायद आज बा जिन्दा होतीं!" बापू ने कहा, "हां, वह बिल्कुल सम्भव था।"

बापू तो इस खबर से बिलकुल घबड़ा-से गये। एक तो बीमारी के कारण उन्हें छूटना अच्छा नहीं लग रहा है। दूसरे, वे कहते हैं कि बाहर जाकर करूंगा क्या! एक बार कहने लगे, "क्या यह सचमुच सेहत के ही लिए है? मुझे इसमें शक है।" फिर कहने लगे, "नहीं, बस हमें यही मानना चाहिए कि जो वे लोग कहते हैं, वही सही है। वे मुझे सेहत के कारण ही छोड़ रहे हैं।" हम लोग खाना खाने बैठे और तब समाधि पर गये। प्रार्थना के समय जोर की वर्षा हुई। मुझे लगातार बा का विचार आने लगा। उन्हें कितना शौक था बाहर जाने का! मगर उनके नसीब में यहां शहीद होना लिखा था। आगाखां महल में मृत्यु पाकर उन्हें जगदम्बा होना था। और आखिर तो वे मां थीं न! शायद उन्हें लगा हो कि महादेव को बिल्कुल अकेले कैसे छोड़ा जा सकता है।

श्री कटेली प्रार्थना के बाद बापू को प्रणाम करने आये। सुबह तो अफसर बनकर खड़े रहना पड़ेगा, सो अभी जाकर बापू का आशीर्वाद लिया। उनके हर्ष

का पार नहीं है। वे हमेशा यही कहा करते थे, "सब लोग यहां से अपने-अपने घर जायें तो मुझे अच्छा लगेगा। दूसरी जेल में जाना, बिखर जाना, मुझे अच्छा नहीं लगता। सब लोग मेरे लिए तो बिलकुल कुटुम्बीजन-से हो गये हैं, इसलिए मन में रहता था ही कि किसी दूसरे सुपरिटेण्डेण्ट से वास्ता न पड़े तो अच्छा है। खैर, अब उसका तो सवाल ही नहीं रहा।" उन्होंने बापू को सुबह प्रार्थना के लिए जगाने को कहा। बोले, "सुबह नहाकर प्रार्थना करनी चाहिए।" डा० साहब ने भी उन्हें उठाने को कहा। मनु बड़ी ही खुश है। उसे हमेशा यह डर लगा रहता था कि न जाने कब बापू से अलग कर दी जाय। कहती थी, "मैं हमेशा समाधि पर जाकर प्रार्थना करती थी कि महादेवभाई और बा आशीर्वाद दें कि मुझे बापू से अलग न होना पड़े। ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली।"

मगर बापू को कोई हर्ष नहीं है। गम्भीर विचार में पड़े हैं। बोले, "मेरा सिर चकरा रहा है।" मैंने कहा, "बापू, बाहर जाकर बड़ी संभाल रखनी पड़ेगी।" वे कहने लगे, "मैं जानता हूं। बाहर जाकर मुझपर सब तरफ से प्रहार होने वाले हैं। यहां की शान्ति अब खतम हुई। मुझसे जितना बन पड़ेगा, उतना आराम तो लूंगा, मगर कुछ आराम तो छोड़ना पड़ेगा ही।"

श्री कटेली प्रार्थना में हमारे साथ रामायण पढ़ा करते थे, इसलिए रामायण की एक नकल, जो देवदासभाई लाये थे, बापू ने उन्हें दे दी। कनु ने एक भजनावली और भाई ने 'एपिक फास्ट' की एक प्रति कटेली को दी। बापू का एक फोटो भी उन्हें दिया गया। सब वस्तुओं पर कटेली की इच्छानुसार बापू ने दस्तखत कर दिये। बापू ने पहले ही पुछवा लिया था कि चीजें दस्तखत के साथ हों या बिना दस्तखत के? बापू की मालिश के बाद हम लोग अपना सामान बांधने लगे। बापू ने नोटिस दिया था कि कल सुबह पौने आठ बजे सब कुछ तैयार रहना चाहिए। एक मिनट भी अधिक नहीं मिलेगा। तीन बजे तक सबका सामान बंधकर तैयार हो गया। बापू का सामान, खाने का सामान और दवाइयां वगैरह संभालने में बड़ा समय गया। भाई का सामान तो सबेरे ही बांधा जा सका। चार बजे नहा-धोकर मैं खाट पर पड़ी और पौने पांच बजे प्रार्थना के लिए उठी। एक मिनट भी नींद नहीं ली।

: ८३ :

रिहाई

६ मई '४४

प्रातः पौने पांच बजे सब लोग प्रार्थना के लिए उठे। भाई का सामान बंध रहा था। कनु खूब नींद में था। चार बजे तड़के सोया था। मनु भी थोड़ी ही सोई थी। बापू ने भी रातभर में आध-पौन घंटे की ही नींद ली थी। सब लोग स्नानादि करके प्रार्थना करने आये और 'वैष्णवजन···' वाला गीत गाया। कल रात 'हरि ने भजता' गाया था। मीराबहन ने 'ह्वेन आइ सर्वे दि वण्डरस क्रॉस' गाया था। आज प्रार्थना के समय वे नहीं उठीं।

प्रार्थना के बाद श्री कटेली ने बापू को पचहत्तर रुपये भेंट किये। बहुत खुश थे। कहने लगे, "आप बाहर जावेंगे तो अनेक लोग भेंट लावेंगे, मगर सबसे पहले कटेली की भेंट आपके हाथ में पहुंची है।"

प्रार्थना के बाद मैंने कटेली से बिदा ली और भूलचूक के लिए माफी मांगी। उनकी आंखों में पानी आ गया। विवेक की भाषा में बोले, "माफी तो मुझे मांगनी चाहिए।" प्रार्थना के बाद बापू सोये नहीं, एकदम तैयार हो गये। कटेली ने चाय तैयार की थी। उसमें से केवल मैंने ही ली। दूसरे लोग दूध लिया करते हैं। हम सबने बचा हुआ सामान बांधा और व्यवस्थित कर लिया।

साढ़े सात बजे समाधि पर गये। आज की प्रार्थना में 'नम्यो हों', 'ईशावास्य-मिदं सर्व', 'असतो मा सद्गमय', 'अउज-अ-बिल्ला', 'मज़दा' और 'ओ गॉड अवर हेल्प इन एजेज पास्ट' आदि सभी भाषाओं के भजन और गीता का बारहवां अध्याय पढ़ने का कार्यक्रम चला। सबने प्रार्थना के पश्चात् समाधियों को अंतिम बार कैदी-ढंग से प्रणाम किया। मेरे हृदय से निकला, 'बा, बापू की रक्षा करना। उन्हें सेहत, दीर्घायु और पूर्ण विजय देना। महादेवभाई, बापू की रक्षा करो और मुझे अपनी ही भांति बापू की सेवा करने की योग्यता और उन्हीं की गोद में कूच कर सकने का वरदान दो।'

पौने आठ बजे भण्डारी आये। आठ बजे के पहले छूटना नहीं था। बातें करते रहे। मैंने यह देखना चाहा कि अपने साथ कौन-कौन-सा सामान ले जाऊंगी। सामान देखने पोर्च में गई। देखा कि वहां कलक्टर और एक पुलिस का अफसर

बैठा है। मुझे साथ में सामान क्या लेना चाहिए, इसकी चर्चा करते देखकर पुलिस वाला बोला, "आधे घंटे में सारा सामान आपके पास पहुंच जायगा।"

भण्डारी की मोटर में बैठकर मैं बापू के साथ तार के अहाते के बाहर निकली ही थी कि एक सिपाही ने कार खड़ी कराई और मुझे एक नोटिस दिया। नोटिस में लिखा था—"आगाखां महल में जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा करने के बारे में तुम्हें मनाही है।" सिपाही ने मुझसे इसपर दस्तखत करने को कहा। मैंने बापू की ओर देखा। बापू ने कहा, "कर दे।" मैंने कर दिये। बापू बाद में कहने लगे, "यह तो मुझे भी दस्तखत करने के लिए दे सकता था, क्यों नहीं दिया सो पता नहीं।" मैंने कहा, "अधिकारी डरते होंगे कि कहीं आप यह कहकर अड़ न जायं 'तब तो मुझे जाना ही नहीं है', तब वे क्या करेंगे? हां, एक बात बताइये, इस तरह के हुक्म को हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं?" बापू बोले, "पहली बात तो यह है कि दस्तखत किया सो उसका अर्थ यह नहीं है कि स्वीकार किया और दूसरे यह कि मुझे तुम लोगों से किसी तरह का तूफान नहीं करवाना है।"

बाहर के दरवाजे पर चालीस-पचास आदमी थे। उन्हीं में शान्तिकुमार, स्वामी आनन्द, जमनादासभाई और सुशीला पै थे। बापू ने किसी को नहीं देखा। मोटर सीधी हमें पर्ण-कुटीर लाई। कल भण्डारी ने कहा था, "आप यहां रहना चाहें तो रह सकते हैं, मगर मेरी सलाह है कि न रहें। यह फौजी इलाका है। अपने लोगों के झुण्ड आने लगे तो किसी के साथ भी झगड़ा हो सकता है। पर्ण-कुटीर में मैं खबर कर दूंगा।" बापू मान गये, सो हम लोग वहीं गये। वहां पर बापू के स्वागतार्थ खड़े हुए लोगों में से बहुतों को मैं नहीं पहचानती थी। जमनादासभाई ने बताया कि उन्हें आयंगर ने बुलाकर सारा हाल बताया था और यहां इसलिए भेजा था कि मैं बापू से कहूं कि वे धीमे-धीमे चलें; क्योंकि वे नहीं समझते कि उनकी हालत कितनी गम्भीर है।

बापू हँसी करते हुए बोले कि मनाही वाले नोटिस के हुक्म की व्याकरण गलत है। मेरे हस्ताक्षर करने के बाद भाई व डा० गिल्डर ने भी मनाही के हुक्म पर दस्तखत किये थे। डा० गिल्डर को पहले कुछ शक हुआ था कि नोटिस पर दस्तखत किये जायं या नहीं, पर जब भाई ने कहा, "दस्तखत करने में क्या हर्ज है। उससे यह अर्थ थोड़ा ही निकल सकता है कि हम उसे स्वीकार करते हैं", तब सबने कर दिया।

मिलनेवाले अधिक-से-अधिक संख्या में आ रहे थे। कई लोगों ने तो बापू से खूब ही बातें कीं, यहां तक कि शाम तक बापू एकदम थक गये। सबेरे बापू का रक्तचाप १९२।१०६ था। वे मालिश में भी नहीं सोये। दोपहर को एक घंटा सोये। उसके बाद रक्तचाप गिर गया।

यहां पर बेहद गरमी पड़ती है। आगाखां महल में खस की टट्टियों के कारण बापू का कमरा ठंडा रहता था, मगर यहां ऐसा इन्तजाम नहीं है। उनके बैठने की जगह भी सीढ़ी के सामने ही है। आते-जाते सब उन्हें देख सकते हैं और पास बैठ जाते हैं। आराम की दृष्टि से घाटे में ही रहे।

शाम की प्रार्थना में देशपाण्डे ने 'हरि तुम हरो जन की पीर' वाला भजन गाया। बापू ऊपर छत पर बैठे थे, लोग सामने नीचे बैठे थे। प्रार्थना के बाद हरिजनों के लिए चन्दा इकट्ठा किया गया। तब बापू थोड़े घूमे।

गरम पानी पीने के लिए बापू वापस आने ही वाले थे कि श्री मुंशी और श्रीमती लीलावती, श्री रामेश्वरदास बिड़ला और दूसरे कई लोग आ गये। दस बजे बापू उठे और थोड़ा-सा घूमे। थोड़ी देर में पृथ्वीसिंह की पत्नी वगैरह और दो-चार लोग आ गये। उनके जाने पर ही बापू सोने की तैयारी कर सके। करीब ग्यारह बजे मैं बापू की मालिश वगैरह पूरी करके आई। आकर कमरे का सामान ठीक किया। डायरी लिखने बैठी। बारह बजे उठी। सोने को जा रही थी कि देखा—बापू बरामदे में खड़े हैं। वे बाहर खुले में सोये थे, पर मच्छर इतना काटते थे कि सो नहीं सके। मैंने उनका बिस्तर भीतर लगाया और मच्छरदानी लगाकर पंखा चलाया। मैं स्वयं बरामदे में जमीन पर सोई। बेहद गर्मी पड़ रही थी। खूब मच्छर लग रहे थे।

७ मई '४४

पौने पांच बजे बापू प्रार्थना के लिए उठे। बाद में वे पाखाने गये। तब आकर गादी पर बैठे। थोड़ा नाश्ता किया। कुछ तार-पत्रों के उत्तर भाई को लिखवाये। घूमने को निकले तो थोड़ी धूप निकल आई थी। आगाखां महल में, जिसे हम 'शिमला' कहते थे, बहुत देर से धूप आती थी, इसलिए वहां बापू देर तक घूमते रहते थे, वहां सब तरह की सहूलियतें थीं। यहां के पाखाने छोटे-छोटे हैं और बापू के हिसाब से गंदे रहते हैं। पढ़ने के लिए पाखाने में बत्ती कहां से आये? बापू के लिए पाखाना और प्रार्थना-स्थल, दोनों एक-जैसे साफ चाहिए और पाखाने में पढ़ने

और किताब रखने का साधन होना चाहिए।

दीनशा ने साढ़े आठ बजे से बापू की मालिश की और एक घंटे से अधिक की। बापू सोते रहे। उनके स्नान करने के लिए कोई टब नहीं है। एक हौज है। वह इतना लम्बा है कि बापू उसमें नीचे खिसकने लगते थे। एक बार तो दीनशा ने पैर पकड़कर और मैंने शरीर थामकर उसमें गिरने से उन्हें बचाया। थोड़ी देर में वे स्वयं उठ गये। पानी भी अच्छी तरह गरम नहीं था, नहीं तो वे आधे घंटे तक पानी में लेटे रहते हैं।

साढ़े ग्यारह बजे स्नान-घर से जब वे वापस आये तो उनका दरबार खचाखच भरा था। श्री मुंशी ने तो खूब ही उनसे बातें कराईं। सरोजिनी नायडू सुबह आ गई थीं। उन्होंने जाकर सबको टोका। श्री मुंशी और ठक्कर बापा ने बा-स्मारक फण्ड के बारे में बापू से खूब बातें कीं।

दोपहर को श्रीमती भण्डारी आईं और कहने लगीं, "मेरे पति के तो बाल सफेद हो गये हैं, मेहरबानी करके अब जेल न आना। अगर आवें तो दो महीने पहले नोटिस दे दें, ताकि मेरे पति छुट्टी पर चले जायं।" भण्डारी आये तो बोले, "अब तो आप यरवदा जेल से दूर ही रहें।" रात को गर्मी और मच्छरों के कारण रातभर जागने के कारण बापू अत्यन्त थक गये हैं और सोना चाहते हैं, पर सो नहीं पाते। कह रहे थे, "मैं सोना चाहता था, बहुत प्रयत्न किया; मगर नींद ही नहीं आई। बस राम-नाम लेता रहा। आखिर यह कहने वाला मैं ही तो हूं न कि राम-नाम लेते रहो—एक लाख बार लो, एक करोड़ बार लो, अन्त में शान्ति मिलेगी ही। यह धन्धा मैंने किया। इसका परिणाम आज प्रत्यक्ष देख रहा हूं। रातभर का जागरण है, दिन में भी इतना श्रम पड़ा है; मगर मैं ताजा महसूस करता हूं। मुझे कुछ सूझता ही नहीं कि मैं क्या करूंगा, क्या कहूंगा; मगर जिसने आज तक मुझे रास्ता दिखाया है, वही अब भी रास्ता दिखायेगा। मगर मैं कबूल कर लेता हूं कि मैंने कभी इतना अंधेरा महसूस नहीं किया, जितना आज कर रहा हूं।"

मैंने कहा, "बापू, इसका मुख्य कारण तो शारीरिक दुर्बलता है। उसी से दिमागी थकान भी है। शक्ति आने पर सब ठीक हो जायगा।"

दोपहर को लोग आते ही रहे। काफी भीड़ रही। सीढ़ी के सामने पर्दा लगाया, मगर कोई लाभ नहीं हुआ। सौन्द्रम् और रामचन्द्रन् आज आये। सौन्द्रम् से बहुत-

के समाचार मिले। आंध्रवासी गप्पाजी अपनी पत्नी समेत आये। उनकी पत्नी डाक्टर हैं।

शाम को मुलाकातियों का तांता लगा रहा और बापू पर बहुत बोझा पड़ा। उन्हें बहुत थकान लगने लगी। प्रार्थना में रेहानाबहन ने भजन गाया। बाद में हरिजनों के लिए रुपये इकट्ठे किये।

दीनशा हम लोगों को शाम के वक्त समाधि पर ले गये। और कई लोग भी साथ थे। फूल चढ़ाकर अगरबत्ती जलाई और प्रार्थना की। हमारी इच्छा थी कि जितने दिन हम यहां हैं, समाधि पर प्रार्थना करने जाया करें। कल की थी और आज भी कर ली।

समाधि पर से लौटे तब बापू मौन ले चुके थे।

हम लोग समाधि पर थे, तभी से तूफान की तैयारी थी। रात में थोड़ी वर्षा हुई। हवा ठंडी हो गई। बापू रातभर अच्छी तरह सोये।